

प्रमाण सं०

विषयः धर्मशास्त्रम्

कम सं०

नाम कर्मविपाकः (महार्णवनिबन्धस्यः)

ग्रन्थकारः विश्वेश्वरभट्टः  
पद्मिभट्टात्मजः

पत्र सं० १-४७, ४७-६७, ६७-३१९

श्लोक सं०

अक्षर सं० (पंक्तौ)

४२

पंक्ति सं० (पृष्ठे) १०

आकारः १४.१" x ५.४"

लिपिः दे. ना.

आधारः का.

वि० विवरणम् पू०

१३६३३

पी० एम० यू० पी०--७५ एम० सी० ई०--१६५१--५०.०००

आ० ७३२२.



६३-वैश्याभ्यामिति  
 ६४-वारापणवित्तिः  
 ६५-महासौरमंजाः  
 ६६-रुद्रविधिः

४-परिभाषा  
 ६-कर्मविषयग्रन्थो  
 ७-तारिभाषा  
 ८-कर्मविहितविधिः

६७-विनायक  
 ६८-पुनर्विनायक  
 ६९-पत्नीव्यतिहारः  
 ७०-हिकाहरी  
 ७१-कोतव्याविहारी  
 ७२-रत्नवातप्रशमन  
 ७३-वातरक्तहरी  
 ७४-जितहर  
 ७५-वातजितहर  
 ७६-श्रीमत्स्येण  
 ७७-कनकरत्नपायाभिः  
 ७८-नीतशेषप्रतिमदा  
 ७९-रत्नावलहर  
 ८०-प्रवासाग्रेरत्नवि  
 ८१-विजयप्रतिमदा  
 ८२-श्रीधरहर  
 ८३-पत्नीव्यतिहार  
 ८४-निकिरे-कफहर  
 ८५-श्रीशेखर-प्रतिमदा  
 ८६-अपम्यारहर  
 ८७-श्रीशेखर-प्रतिमदा  
 ८८-अपम्यारहर

३२-विनायकप्रकार  
 ३३-विनायकप्रकार  
 ३४-विनायकप्रकार  
 ३५-विनायकप्रकार  
 ३६-विनायकप्रकार  
 ३७-विनायकप्रकार  
 ३८-विनायकप्रकार  
 ३९-विनायकप्रकार  
 ४०-विनायकप्रकार  
 ४१-विनायकप्रकार  
 ४२-विनायकप्रकार  
 ४३-विनायकप्रकार  
 ४४-विनायकप्रकार  
 ४५-विनायकप्रकार  
 ४६-विनायकप्रकार  
 ४७-विनायकप्रकार  
 ४८-विनायकप्रकार  
 ४९-विनायकप्रकार  
 ५०-विनायकप्रकार

७२३-विनायकशक्तिः  
 ७२४-विनायकशक्तिप्रयोगः  
 ७२५-नवग्रहपत्र  
 ७२६-नवग्रहप्रयोग  
 ७२७-निर्वाणप्रमाण  
 ७२८-पान्यमान्य  
 ७२९-सिमान  
 ७३०-परिमाण  
 ७३१-केशविषय  
 ७३२-नीप्रत्यय

३१-विनायकशक्तिवर्ग  
 ३२-नवग्रहप्रयोगप्रमाणः  
 ३३-पुण्यवर्गप्रमाणः

२१६-नालिकारेणहराति  
 २३०-मृगविहारि

७५५-प्रायश्चित्तोपक्रमद्वारा  
 ७५६-अभयशाहराति

२४-अरि रोगहर  
 २६३-वैद्याहर

शक्ति

२७३-देशतल्लिखितकेशहरि  
 २७४-रुद्रहरि  
 २७५-अभयशाहराति  
 २७६-प्रतापहरि  
 २७७-अरिहरि  
 २७८-अरिहरि  
 २७९-अरिहरि  
 २८०-प्रतापहरि  
 २८१-अरिहरि

७५७-अभयशाहराति  
 ७५८-अभयशाहराति

७५९-अभयशाहराति  
 ७६०-अभयशाहराति  
 ७६१-अभयशाहराति  
 ७६२-अभयशाहराति

पुणसिद्धिः॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ दक्षिणामूर्तये नमः॥ ॥ नमः सकलकल्याणलाजनाय पिनाकिने नमो बह्वीनि  
साय देवताये गिरानमः॥ ॥ प्रवालाद्विप्रसूद्व्यतिनिचयपर्यायवदप्रणो नमो विघ्नश्रेणीविघ्ननपरिष्य  
महसे जगत्याडुर्वास्थितिलयनिराया सस्वनाधिनो दासाक्ताय प्रणतफलसिद्धिप्रतिलुवा ॥ १॥ शयदिदि  
नाथ सुंदराद्यैराधिते सक्रिसरानती गै श्रीश्राद्धैण श्रृणार विद्वंदमदेनः कुलदेवताय ॥ १॥ प्रकष्टसल  
कुंडलस्य प्रकृष्टुष्टुगंडल्ले म्हादेमणे मेरु कर्म परकता कुरश्यामलो करोतु कस्यो सदा कलितपेवषा ५५ कुमोम  
हः किमपि मोरुन कपटशे शवंशेशवे ॥ ४॥ क्रोते कतागसि रुषापुरुषुवाणा कुंठी कृतधरसना ५६ जिये प्रलोना  
मोनेनमानमधिगच्छति याददावसापार्धती दारवितकृतनुः शिवं वः ॥ ५॥ आसीदसी मयुणयः कुकुलोवुराशा वुद्य  
त्यस्तस्य लकी विंध्यन प्रकाशने कौः सदा दरदतौ गुण संनिविष्टः श्रीरक्षपाल इपति उच्यते नैकरना ॥ ६॥ तस्यात्मजो सरद  
पाल इति प्रसिद्धः सिद्धंगता जनसमाजसमृद्धकीर्तिः दानेनयः सुकृतिनां क्षिपितस्मै स्य मेनेन वैष्णवसदृशः प्रतिद  
पतीनां ॥ ७॥ सुतास्पजातोलुक्तो न्नतस्पनलस्य कश्चिस्वदृशो वदवत्यां म्भवल ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥

घनानागतस्यात्मजो रदनप्रतापः साधरणो रमिपतिर्चेदाभ्या अरुत उच्चो महती नमो देवताय ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥  
श्री ॥ १॥ ॥ तस्यात्मजो विपुलकीर्तिमिहाश्रितार्थं कृत्वा परवचतथा इह लोक देवुकीनाशापाश च यवद्विमा  
नीर्धे त्रयीकर विमुक्तिमवीकरणे ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥  
नैपज्ञो जितं त्मकां तारसमाश्रितो ररा ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥  
धियदिपज्ञो नितां तं कां शस्ममाश्रितो लधर्मा धनानि सनि वैभंश्च कृत्वा श्वकीर्तिमकां मदिदशो तिसे दे  
लयता कला कलापं प्रहृधने नं ररिशः प्रवंधमः ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥  
सकलत्रयुगेयतस्य पुत्रो जगत्रयविष्टवरकीर्तिपुरो जातो प्रिया प्रतिहसंप्रथम न्तिमनस  
गो ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥  
गौ ॥ १॥ ॥ यच्छे शवावुकरणं सुवानदृहः शक्नोति कुरुं परः क्रतुसदगो पि दानं निदानं मसि मत्रमव  
यत सदीया ॥ १॥ ॥ २॥ ॥ ३॥ ॥ ४॥ ॥ ५॥ ॥ ६॥ ॥ ७॥ ॥ ८॥ ॥ ९॥ ॥ १०॥ ॥ ११॥ ॥ १२॥ ॥ १३॥ ॥ १४॥ ॥ १५॥ ॥ १६॥ ॥ १७॥ ॥ १८॥ ॥ १९॥ ॥ २०॥ ॥ २१॥ ॥ २२॥ ॥ २३॥ ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥

॥१॥ विनयं सुकृतं धिक्कृता रिपुकलनिदनेर्षिता तिमो भ्रता विद्वसुखेन मतिमानसात्कतिरत्नमदम्  
 गाताखण्डप्रचित्रकीर्त्तिसवायस्याविकानामतःशकल्यापरमूर्तिरार्यचरितः अपि हि सः प्रितासा  
 केशरूपमणिः श्रीसहविश्वेश्वरो वै देवमात्रमतेन येन सपदेवाको हृतीर्षितो ॥१॥ मतिर्यो ज्ञास्ये  
 त्यत्पत्र इतिः पराशरिनिष्ठा ह्यजगति ननु घसेक तिपये अत्र विभ्रंतेषां सुकरतलहृति मियादि  
 एष्वरमुनिशिष्यस्यतितिः ॥२॥ अतिसूतिपुराणानिसमाली क्ययथामति निवहृतेसमासेन  
 ह्येष ॥२॥ तत्रतावद्द्वयमाणसकलकर्मोपयोगि त्वेन कर्म विपाकपैरु परोगादिनिहृयेथे प्रायश्चि  
 यकत्रैव्यताप्रतिपाद्यते ॥ तद्यथा ॥ ब्रह्मदाह्यरोगस्यादियादिरोगनिदानकथनादितिदा  
 चव्याधिनिहृतेरवगतत्वात् निदानो ज्ञेय इत्येवादि लक्षणसंग्रहः ॥ अत्रैव दिशुः वर्षिकादिप्रायश्चि  
 त्रतिकृतिमिदानादिकवर्ष्या अत्रकेचित्प्रयवतिष्ठते ॥ तथा हि ॥ एतद्द्वयस्य ह्यथायप्रायश्चिना  
 व्यमितियुद्यते नैतस्मात्प्रतौ नदियास्त्वफलस्य न शोकिमपि यो जन्मत्सि ॥ २ ॥ य

वर्ष्या

२

ति५

शे३

लक्षवैधरूपफलायथापत्तिः रतः शरोवेदुसद्वापास्ववाचर एरुपस्यासित्वं नापेक्षते तथारोगरूपफलोप्राप्त  
 रस्वकाररतस्योपापाप्रदं मपसत्रीनापि ज्ञेता अथरोगादिरूपफलोनाशस्येष्टत्वात् निदानात्मकदुरिता र्ज्ञे  
 शायप्रायश्चिदिकर्ष्यमिति वेदांसमावाधिकारणशरीरनाशने वेतस्परोगादेर्नामिन्नकारणपैरिह  
 नाशिनयथाष्टदादिनाशने वृष्टादिनाशो न देवकादिनाशो ना ॥ न च सदृजसिद्धं कोनरथादिकं प्रत्यादि  
 त्वमेते ॥ अपि च ॥ अत्र कार्यं च्छादिजन्युः खवंपरंपरा मभुस्ततवतः कोनरथादिको विको अत्रमफला ॥  
 उत्पत्तिमात्रेण च्छकारणदुरिताप्रदं मोशो जन्मो मंथनजनिता सुखद्विणिनेवारणिरूपक्षया रतस्मान्पा  
 वेनाशार्थं च्छतत्रयेति च्छत्तलौ न तावन्नरमफलमिति निश्चैतुं शक्यते यत एकस्मिन्नेव जन्मनि जनिता कोन  
 दिनिश्चये च्छरमफलत्वनिश्चयो न वेत्त ॥ अनेकजन्मोपसो ग्पत्वात्स्य ॥ तथा च्छाता तपीयकर्म वि  
 को ॥ मदापातकजं चिह्नं सप्तजन्मनि जायते ॥ उपपापोद्भवंपंचत्रीणि पापसमुद्भवमिति श्रिया च्छाता त  
 पकर्मविपाको सप्तजन्मनि च्छिव्यायेत्यर्थः ॥ ननु सप्तस्वपि जन्मस्विकमेव फलमभुगतमिति तस्य च

३३

३५

तथा ३

Indi...  
 Ce...

मुत्पन्ने चरम फले विभिन्न कारण स्पष्ट रिता इव स्पष्टयमेव तसु त्वात् तदर्थे प्रायश्चित्तादिविप्र  
 शोभ्यन्ति दिद्योनि मित्रकारणं वापि दत्ते ह्युद्यमानः सप्तपञ्चनममुत्पन्नमित्युत्पत्तियुक्तौ न  
 तत प्रवृत्तं जन्म अथ्यमान एवाथ वस्तुं तरा नुतावात् अथ वापि जन्म निचमव कौ नर्या दिवा मुस  
 रनि मित्रं दु रिता इव इव वत्तं डतो अतश्चेदं सप्तममवा जन्म प्रथमः दिवा जन्म जनिता त्पक्षे संला वि  
 रई तसु वत्तं डतो अतश्चेदं सप्तममवा जन्म प्रथमः अडि निवृत्त्यर्थं प्रायश्चित्तादिकं विधेयमेव ॥ ३  
 तातपीय कर्मा विपाके ॥ अति जन्म सवेत्रेषां विज्ञे तत्पा पर्युक्तं प्रायश्चित्ते कृतं याति पश्चात्ता  
 नैति ॥ अमुदकं न च कौ न रव्यादि न प्रव्यादे पुत्रा क्यत इति तद्व क्रिये त्मान मि वि वि दे इति तत्र त्याय  
 तां पुन रि ति घनं च रमे वत तत्रै ग नि वृत्त्यर्थं इत्ये त्वा च यत्र वा कि ह ति सत्र कर्म वे उ प्प न र म ज न्म यं  
 नि मि त्र त्वा दु रि ता इ व स्प प्रा य श्चि त्ता दि नि मि त्र तां स भ वा यि कार ण इ त वि प्र म भ र्त्वं च श री रा ण्य  
 र्स्याऽपि री गा दी न इ ति न प त दे व पा पा इ व स्प दि ना शि यो ज नो इ व च ष डं उ ल त्वा दे र नि वृ त्ति ३

३४ २२

गणनेकजन्मीपसोमपषडंयुलत्वादेर्जन्मांतरेनिवृत्तिः प्रायश्चित्तादिके कृते सतीत्यवगंतव्यो तस्माद्दोगनिवृत्त  
 र्कत्रेयं प्रायश्चित्तादिकं ॥ आमाता छुण्य च रित्रकां वि वि त वा य स्यां बिकानामतः सा क त्या पर म् रि रा र्यं च  
 रेतः श्रीपेदि तदृ पिता ॥ सोयं कौ शिकं चं शर प्रणमालः श्रीसद्विश्वेश्वरो वेदे स्मा र्त्तमते नये च स भ दे वा क्य कृ त  
 र्हेतौ ॥ सामतिर्येषां शास्त्रे प्रकृतिरमर्णाया व्यं हतिः पराशां लं श्रा घ्यं न गति अज व स क पि ति प्र यो वि र चि वे  
 नेषां मु कुर त ल र्हे ति मि या दि यं या सा र ण्य प्र चुर मु नि शि ष्य स्य स णि ति ॥ इ ति श्री पं ष ट पा रि जा त क  
 इ र म ले त्या दि वि रु द र ज्ञा वि स त्म मां त्री म द न पा ल यु त्र स मी भू त नि वं शे म हा ष व स धि धा ने नि वं शे क म  
 वि पा के प्र थ म च रं गः ॥ अथ पराशा ॥ अतश्चात्तातपीय कर्मा विपाके प्रायश्चित्तविहीनानामह  
 गतकिंनोऽप्याशानंरकंतेसवेजन्मविज्ञो कित शरीरिणां प्रतिजन्म सवेत्रेषां विज्ञे तत्पा पर्युक्तं प्राय  
 श्चि त्ते कृतं या ति पश्चात्ता प व तां पु नः ॥ म हा पा त के वि ज्ञे स प्र ज न्म नि जा य ते त प पा यो इ व पं व त्री णि पा प स  
 पु न्न तौ दुः क र्म जा र णा श री गा र्थ्या ति चे वं क्र मा द्भू भो ज ये ह रा च ने हे मे ह नि चे षां श मी ल च व र ॥ अ र्त्त ज न्म

गपंनरकस्यपरिचितेति वाधते व्याभिरूपेण तस्य कृत्वा दितिः सोमः कुसं अगजयन्मात्रमदोशदलीतथा ॥  
 तद्वाग्मरीकासा अतीप्सारसंगदरो दुष्टत्रणंगडमलापहीयातीतिनाशनां इत्येवमादयो रोगामहापापोद्वय  
 गाः जलोदरं यत्कृच्छ्रिष्टलशाफत्रणानि च आसाऽर्धोद्वरुद्धिं लममोदगलयहाः रक्ताब्जेद्विसर्प्याद्या  
 ॥ पोद्भवंगादाः श्रेडाषातनिकाश्चित्रवचः कश्चिचञ्जिकां च लीको उडरीकोद्याः रोगापापसमुद्भवाः तथा  
 ॥ एरोगात्रं अतिशापोद्भवति विद्युत्सेववदवोरोगजायंति दोषसंकीरार्जुं संयतेयानिदाननिप्रायश्चित्त  
 क्रमात्तमहापापेषु सर्वेष्वप्यत्र दध्युपातकितदद्यात्पापेषु पुण्यात्तं कल्प्यन्नाशिवदावत्तमहापापेषु सर्व  
 देव्यादिसमर्थविषये योज्याः असमर्थस्य तु प्रह्लाधिकदिक्स्थितिः ॥ अथ साधरणं तु गोदानादियुक्त्यते ॥  
 निष्कस्युक्तागोः सुशीलासुपर्यस्विनीं वृषदाने सुसीनं चोत्सुकं वरकोत्सुना निवर्तना निवृत्तानं दशदद्या  
 त्यतो निवर्तनस्वरूपपरिमाणप्रकरणे च द्यातो तथासुवर्षपरिमाणे च दिस्यप्रक्रमे मपिसुवर्षे द्वयनि  
 तदर्थं प्रमाणतः सहस्रतश्चाश्वदाने त्वस्य सोपस्करं दिशो तमद्रिषीमद्रिषीवाने दद्यात्सुवर्षे च द्यातो सु

व४

३४

४

वर्षे चोत्सुकं चैति विद्युदः दद्यादनामजादाने सुवर्षे पलसंयुतो पललक्षणमपि परिमाणप्रकारेण च दद्यात्तानि न्यमु  
 च्चावचं सुष्यं प्रदद्यादेवता च्छनीदद्याच्चित्रसहस्रायमिष्टान् द्विजसौजनो ब्राह्मणसौजनं सहस्रं संख्यासुष्पुल्लहामि  
 त्यादिसर्वैशकविषये ॥ ॥ अत्राकस्यशक्ताउसारणकल्प्यां रुद्रजापेलज्ञासुष्येः प्रजियित्वा त्रियंशकोत्पाकादश  
 जपेदुद्रादशांशं सुलेन तु कुला निषिचने कृत्स्निं त्रैर्वर्षेण देवतैः शौतिके गणशौतिश्च दशांतिकसर्वकांश्च  
 दानिसुसंभारौषारीषष्टिसमश्चितीं च सुदाने दुःखले च देयं कर्षुरसंयुतो रुद्रजपस्य्यादिकं द्रव्यरूपं कश्चिदेवतादि  
 चाये च्छते मंत्रैश्चरुणदेवतैर्विदशांसेन सुगुल्लहोमानंतरं वारुणे मंत्रैर्यजमानमसिषिं चैत्राये देकादश वारा रुद्र  
 जपेत् तत्रापकवारं रुद्रादद्यात्तदोमः कार्यः अथैव च दशांशदोमात्तत्र च प्रतिमंत्रं च्छादाशब्दमुच्चार्यं सुदुयाचां स  
 कल रुद्राव्यैकवारं सुदुयाचां मंत्रविदंश्चाध्यायनादेवावगम्यतो अथवाऽप्येदिदृशति ॥ गणशौतिके  
 णेश्वरशौतिकेः स चाम्ये विश्वास्पतो यदशांतिर्न वयदशांति सवाप्ये नियुक्तं प्रदशपेति र्वारी लक्ष्यं तु परिमाणं प्रक  
 रणे च द्याते ॥ प्रायश्चित्तोपक्रमप्रकारमादादत्रापंचाय चतुरश्रपवेषुपदि जाशुभुत्वात्तेषामनुज्ञयांसर्वप्र

यश्चित्रमुपाक्रमे विभयत्रैलवंध्राहंसंकल्पं निजकान्तया ॥ धेनुंदद्याद्विजोस्यथदक्षिणां वस्त्रशक्तिः तेषाम  
 उन्नयेत्यादिनेषां ब्राह्मणेषु मुनुज्ञया प्रायश्चित्तं सवतीति सवतेरध्याहारः ॥ उपक्रमे प्रायश्चित्तस्योपक्रमे विष्णोः  
 मुच्छिष्यथा द्वे विदधीतो अहयाद्यीयतरति प्राहो एतच्चयै नैतत्वं संकल्पं पितृदानसंदिती धेनुंदद्यात्सताया रूप  
 वेशितानोत्रा ह्यणानो ब्रह्मदे उल्लेखे दक्षिणादिकं तु प्राहो गत्वेन ब्रह्मदे उल्लेखेन च या धेनुदीयती मानप्रसह्य धेनुः  
 अपि प्रत्याप्रायद्दारादीं कुतश्च ब्रह्मस्य यदे कादीयती तद्वदतिः सा विक्रीया स्यात्वा विक्रयश्च निषिद्धो गिरसा ॥ न  
 कुस्योनप्रदेया निगोर्ददेशय नं चिन्त्या विनक्ति दक्षिणाहतादातारं तारयेति द्वि एका एकस्य दातव्या न ब्रह्मस्यः कथं  
 वनगीसा उ विक्रयमापनाददद्यात्सप्रमेकुलेति धेनुंदद्याद्विजोस्यथदक्षिणां वस्त्रशक्तिः ॥ इत्युक्तं ॥ तदभेतर  
 कृत्यमाद ॥ अले कृत्ययथा शक्या च स्वां संकरणे हि जाशयावेतदे उवन्नत्वा प्रायश्चित्तं यथा वित्तघातेषाम उन्नया  
 कृत्वा प्रायश्चित्तं यथा विधिं युनस्यारिघस्यैर्मन्त्रेये द्विविद्विजाशदशाद्रतांगदानानि तैस्यः प्रहासमचित्तः ॥  
 ब्रतांगदानानि गोत्रदिरापरजततिलवामो वृत्तगुडभक्ष्यलवणदानानि अन्यानि विविश विदितानि दानानि च

मि४

तांगदानानीत्युच्यते ॥ संतुष्टोत्रा ह्यणदद्वरद्विद्वं ब्रतकारिणो अद्धिद्रमस्विती देवाकंदक वृषरित्यर्थः अथवा  
 ब्रह्माणवचनमेवा ब्रिद्रवाक्यं ॥ ब्रतद्विद्वं तपद्धि द्रयच्छिद्रयज्ञकर्मणि सर्वसवतुते द्विद्रयस्य वेदंतिवो द्वि  
 जाः ब्राह्मणाया निताषत्रे मयंते तानि देवताः सर्वदेवमया विप्रानत इवनमन्यथा उपवासी ब्रतं वै वचानं त  
 र्थकृततपः विप्रैः संपादितं यस्य संपन्नं तस्य तद्देवैर्ब्राह्मणा जगमंतीर्थं निर्जले सार्धकामिकां तेषां वाक्योदकेन  
 वसुधंतिमलिना जनानां संपन्नमित्यद्वा कौवदेति द्वि तिते देवताः प्रणम्य शिरसाऽचार्यमभिष्टं मफलं लज्जते स्ये  
 वज्ञामिति प्राय प्रतिपद्यतथाऽशिषः सो जयित्वा द्विजा रसक्रां तुं जीतसहबंधुति ॥ इति शातातपः कर्मविप  
 कोकपरिभाषा ॥ अथ कर्मविपाकसारोक्तपरिभाषा ॥ अथ कर्मद्वयोपायो कृत्वा शिवि विपर्ययोः केशासह  
 त्वासत्राद्येगां दद्यात्स्वाधिकारितः कृच्छ्राद्येन धाद्रयणादीं सुयेतो तेषां सर्वेषां केशसाद्यत्वात् तत्रज्ञानि  
 चाये सिधस्य तो प्राजापत्यादिककरणमेकाकोटिः त्वाधि विपर्ययोनामप्याधि प्रहं पितानो इदं त्वपराकोटिः  
 वंचाद्येपक्षे कृच्छ्रकरणपक्षे साक्षात्कृच्छ्राद्ये चरणस्य केशात्मकाः त्वात्रां रुतं स्पवले केशासद्वत्वात् दिष्टुं कृच्छ्र

प्राजापत्यच्छ्र ३ निरं

सद्वादि

दृष्टेति

जायमा

व्याभ्यायत्वेनगां दद्यात्सर्वव्याभ्यायत्वेनगावोदातव्या इत्यर्थः ॥ तत्र कस्मिन्नकस्मिन्किं संख्याकागावोदातव्या  
 इत्यातआह ॥ एकोऽत्रेहः तिस्रश्चाद्रयणत्रतेगवामसावेनिष्कं वासाशीतिशतकृद्दः नपदानेपितत्सकं  
 य्मांडगणदोमकृत्सं सर्वपापप्रशोत्यर्थमथवाधिविपर्ययः एकोऽकृद्दइत्यादि ॥ एकोऽगं कृत्त्रेयाजापव्योऽ  
 तज्ञेणपरिमाणप्रकरणेनिभस्यतोसाशातिशतकृद्दः षड्भाषिकेवाप्रायश्चित्तोऽश्रीसुत्ररं कृद्दणशतसवति  
 षड्भाषिकेवाप्रायश्चित्तप्रदर्शनं च प्रायेण कर्मविपाके ॥ इहाणपापत्वेन षड्भाषिकेवाप्रायश्चित्तपक्षया अथिकेवा  
 यश्चित्तस्येवाशसातीतिशतकृद्दप्रव्याभ्यायत्वेनगावोदिकं ददातीति साशीतिशतकृद्दः ॥ अथवा ॥ इ  
 कृत्वावाकृद्दसहस्रायाः षडद्वैकृद्दमाचरेदिति संसावितपापनिवृत्त्यर्थं इति कदवातीति साशीतिशतकृद्दः ॥  
 मायत्वेनगावोदातानवेदित्यर्थः ॥ जपश्रुदाने जपदाने तत्रापि कुर्वीतात्तत्रपेत्संज्ञां तद्वापश  
 पनार्थं कृष्मांडगणदोमकृद्दवेदित्यर्थः अर्थव्याधिविपर्ययः ॥ वक्ष्यते इति शेषकर्मज्ञेयोपायत्वेनोपायद्वयमलि  
 ष्वाहंते सौरादिस्तकृतं वतीत्यर्थः ॥ दानं गोऽरिणादानां तानि च पूर्वमनिहितानि ॥ सर्वपापप्रणुत्पर्थी

तै४

६

३२

४२

हितं कृद्ददिकरणं व्याधिनिप्रेकृतिदानं चेति तत्र कृद्दराहस्यपः प्रधानं कर्मवष्टो कृष्मांडगणदोमावपितपः प्रधान  
 वितितावपि प्राजापव्याधिकं कृद्दकोटावेवां नपेनेवसाः अतः समथो कृद्दकोटिमिभयां व्याधिप्रतिकृतिदानं वक्तव्यं  
 तस्मात्कृष्मांडगणदोमावतिथीयेतोयत्रकर्मणियदेवादेवदेयमनिसादयो मंत्राद्यैस्त्रिरियाऽरण्यकेसामाप्ताः सर  
 ष्मांडदोमाः यस्मिंश्चानैषेषपथेति च तथा अश्रमं तेषे प्रथमस्य प्रचेतस इत्याद्याः अचक्षेत्रियशाखायां समाप्ताः ॥  
 ॥ सगणदोमः ॥ तत्र जमदग्न्यमैसिदितकृष्मांडदोमविधिः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि कृष्मांडविधिं च जमदग्न्यमै  
 स्तुनसहस्राणां प्रायश्चित्तं तु वैदिकं अकुर्वीति हितं कर्मनिदितं च समाचरेत्वा प्रसज्जं श्रेयार्थं सुप्रायश्चित्तं तत्रेद  
 हिजः केशशर्मप्रदीपयित्वा स्नात्वा उपजलासेयेथं आद्यसागोनेतेषां कृष्मांडेनेद्वयाद्विजः चतुर्विंशतिरात्रि  
 सुपरवित्रोपदीक्षितः द्वादशस्वर्गादिषु षड्भाषिकीर्यावदेव पिस्वर्गादिषुः ज्येष्ठेऽर्कताधाने सतिकनीयान्यथा  
 रक्षति तदा ज्येष्ठः स्वर्गादिषु षड्भाषिकीर्यावदेव पिस्वर्गादिषुः ॥ तिस्रो रात्री सुकुनखीदीक्षितो भवति हिजः नमोसम  
 न्नमश्रीयानोभियाला मिनोमपिनोपथ्याः ॥ नानां चार्थं उच्येते ॥ इति हिजः पयो व्रतं ब्राह्मणस्येवागुरुं विव्यस्यत्वा

४ इदं वेत्तु न वाकैश्चित्रिर्कृत्वा जम्बवत्सं वै चानरा येत्येता निस्त्रिमभिः उपपत्तिश्चेत् ॥ यदि न्याध्यायसामिधं जयादिप्रतिपद्यते ॥ कर्मदि  
 श्ववजुजायाः स्वर्गसिम्भुते ॥ रारं वलं तदुप्रासं विदीरं हाद्विजः ॥ ४

अभिधाचैव तैरपस्यत्रायश्चित् प्रकथ्यतोसावित्रीचजयेनित्यं पवित्राणैश्चक्रितः प्रहेषितत्रतेष्वेवप्रायश्चित्ता  
र्यमिष्टते॥ ॥ इतिज्ञोमदन्ने कृष्णोडदोमविधिः॥ ॥ अथबोधयनपोक्तकृष्णोडदोमविधिः॥ ॥ अथकृष्णोडेर्द्वेज्या  
त्वेद्योप्रतः मन्थित्यास्त्रिनोयथासूत्रहेवमेवसवतिथोभ्योनौरतःसिंचतियदवाचीनमेनोब्रणदत्यायास्त्रास्मा  
सुच्यतइतिअयोनौरतमेकेकंस्वप्नादव्यत्रासूत्रणदयाब्रह्मादत्यायोवापवित्रकामोत्रामावास्यायांवापोर्षमास्यायां  
वाकेशश्मश्रुलोमन्त्रवाणिवापइत्वावहोरिकल्पेनद्रतसुपेतिसंवत्सरमासंवत्त्रिंशतिद्वादश्राण्ड्रिशोवारात्रा  
नमोसमभ्रात्यान्त्रियुषपेयासोपरिवासेषीत्तत्रप्रसेतान्त्र्येतोत्पयोत्रतीतिप्रथमःकृष्णाःयावकंचोपसुंजीतक  
ईद्वादशारात्रंवाचरेत्रासिद्धेत्वादिप्रिच्छित्तिं तद्विधिमुक्तंइत्येतोत्पयोत्रतीतिप्रथमःकृष्णाःयावकंचोपसुंजीतक  
सकादीन्त्रियादयेदित्यर्थःयत्वापराजन्त्यःआमिहोतैर्यःयदिमन्थेतोपदस्यामिर्तिर्द्वेभ्यःसकृन्नुतमिस  
नुन्नतयेत्रैतेदाक्षमनोऽनुपादासायतित्राहणापाकयज्ञिकधर्मेणाग्निमुपसमाधायसंपरिशीर्यबंधनप्रचत्प्राग्नि  
मुत्थांतकृत्वासावित्रीपुरोष्ठवाक्यामनूयसावित्र्यापक्वाडुहोतिअथखिद्यकृतांदद्यवाहमन्त्रिमातिषादंरक्षोदने ७

दश्या

रवा

तय

७१ १२

२३

एतनासृजिभुंज्योतिष्मंसदीप्त्यंतंरंधिममिद्विद्यकृतमाडुवैमोमिदस्यस्वप्नसिद्धमन्त्रेयेअलितत्यणादि विश्वादेव  
तनांसिष्यासुगन्धंपंथोप्रद्विशंदिनादिज्योतिष्मंधैद्देजरत्नआयुरितियाज्याचरुशेषंजुद्धदेतिअथकृष्णो  
डेयद्देवादेवहेडनोयददीप्यंत्तणमवस्त्रवआयुषेविवश्वतोदवदित्येतेस्वितिरुवाकेप्रतिमंत्रमाज्यस्यडुत्वावि  
देव्याघ्नतिचतस्रःसिस्वाडुतीःअग्नेत्यावर्द्धिन्नेअग्निर्सेपुनत्सोसहरयतिवडुत्वासिंदेव्याघ्नतिचतस्र  
पतिष्टवाडुतीःअग्नेत्यात्रेसमित्याणिर्यजमानलोकेधेवस्त्रायवेश्चन्नरायप्रतिवेदयामाइतिद्वादशत्रेनस्त्रकेने  
पतिष्टतोयन्मयामनसावष्वाकृतमेनःकदाचन॥सर्वास्मान्मलितोमोधिर्वेदिवेक्ष्ययातथोस्वाहेतिसमिधम  
धायवरंददातिजयादिप्रत्यतिसिद्धमाधेमुवरत्रसादनत्रा॥इतिबोधयनोत्रोक्तकृष्णोडदोमविधिः॥ ॥  
अथकृष्णाएवैमविधिर्मेत्रपाठानुष्ठानक्रमसहितःप्रदर्पते॥ ॥ तत्रैकोनामदस्यप्रोक्तः॥ ॥ एकहो  
मादिरहितोलघुकल्पःप्रदर्शितः॥प्रअपरअपकृद्दोमादिसदितोयुरुकल्पोवैधायनप्रोकोनिरूपित  
संघशाखाधिकरणान्यायेनवडुत्वासिर्निरूपितः॥कृष्णोडदेव्यापक्वाडुहोतौपसंहारन्यायेनाविरुद्धास

निदरातियोःपवित्रत्वकामःरूपांहेमंप्रकृतीतयान्वाधानादिकमणिःविकारितस्तोपिकर्मादिषु

३

३१

3-2

कलोपोपसंहारकर्तव्यः। अथवापतसियुरुणिलवुनिश्चितीतमस्मरणत्र। अथपुनोद्यथापाःप्यवेत्तुपुण्ड्रैकार्योऽ  
संशयानुरूपंरुद्रादरइतिव्यवस्था। योमहापातकदिदोषइष्टतःकृतप्रायश्चित्तोपिमन्परितोषंनप्रतिपद्यतेयथा  
योनावयोनोवारेतःसिंचति। यश्चरुद्रहृत्पावासाद्वाद्वावार्जिकः। द्वियुरुप्रायश्चित्तानामविषयाणि। महापातका  
दिः। कृष्णाएडीसिद्धेइयात्र। अथप्रयोगः। अमावास्यायांवापोर्लमास्यावाअथत्रविदितकालेइष्टोक्तेयश्च  
शूलोमनस्वाणवापयित्वा। तीर्थांवांगाहनाऽचमनमंत्रप्रेक्षणखण्डपादवाचनादिनां। चंडिलसुपकल्पस्वरु  
होक्रविधिनाऽभिप्रतिष्ठाप्योप्राणान्वाहयन्भिप्रतिष्ठातः। यैपश्चाद्वाविधयश्चुक्रप्रयोजनार्थं। रूपांहेमंरुद्रोमंकरि  
ष्येति संकल्प्या। चरुहोमपह्येयथाशास्त्रीः। वितादेवतासकदेविः। आध्वारवेवमिष्याद्यसिलापनिर्वापपात्रासाद  
नरुचपाकोः। चयथाष्टहोविधायपक्वश्चरुमतिवायेद्वास्पप्रतिष्ठितमसिष्मयविदानधर्मणावहायसावित्रीपुरो  
वाकामनूयसाधिवैव्याप्यायउद्धयात्वागायत्र्याविश्वामित्रमणिः। सवितादेवतागायत्रिहंदाः। चरुहोमेविनियो  
गः। ॥ ३ ॥ तत्प्रविभुर्वरेणसंगोदिवस्पर्धिमहि। धियोयोनःप्रवोदयात्वीर्यमिति सावित्रीपुराववाच्यमनूयपुरनरपिस

८

शतियाऽप्यवामुक्त्यात्। अथोमयोदिवेदेवात्प्रयः। अग्निःखिष्टकृदेवता। अनुष्टुपविराट्छंदः। खिष्टकृहोमेविनियोगः। एववाहनमनिमा  
वाहरुको। हलोहृत्तनासुजि। लु। ज्योतिष्मतेदी। घतंपुरंभिम। प्रि। खिष्टकृतमा। कुवेमो। ३। नितिपुरोनुवाकामनूयस्विष्टममे

वित्रीमिषयोर्ज्यं पवित्रास्वाहास वित्री इति जुहोति ततः खिष्टकृतमवादात्पादमवाहमिति पुरोनुवाकमस्य खिष्टममयेति  
वाक्यया उद्धयात्। इयोरनयो द्विषेदेवात्प्रयः। अग्निः खिष्टकृदेवता। अनुष्टुपविराट्छंदः। खिष्टकृहोमेविनियोगः। ॥ इत्य  
वाहमसिमाजिषादंरुद्रोहणं घृतनासुजि। कृत्वातिष्मंतेदी। घतंपुरंभिम। प्रि। खिष्टकृतमा। कुवेमो। ३। नितिपुरोनुवाकामनूयस्विष्ट  
ममयेति। अतिसृणु। हि। वि। अ। दे। व। घृतनासुजि। कृत्वातिष्मंतेदी। घतंपुरंभिम। प्रि। खिष्टकृतमा। कुवेमो। ३। नितिपुरोनुवाकामनूयस्विष्ट  
जुहोति। अत्रामये खिष्टकृतसुदेहासागं। इतरोपममोः। पुनरुच्चादश्चर्षणनिदधति। अथयदेवादेवदेडनमिति निरु  
वाक्तेराज्यहोमकेचनसावित्राप्राणान्वाहोमानंतरं खिष्टकृतमवदायत्वाप्यदेवेत्यादितिराज्यहोमेविधयाततः खिष्टकृहोमेमि  
हैतियेवपक्वहोमंनकुर्वितेणमाज्यसागानत्रमेवतिरिनुवाकेरेवाप्यहोमः। तत्रयदेवादेवदेडनमित्येकविशर्ज्यस्य  
प्रथमानुवाकस्य ब्रह्माख्यं चर्षणः। तिगोक्तादेवता। आदित आरस्यक्रमेण घृतमृणामनुष्टुपछंदैर्षुचमि। विषुप्राण  
धीपुडवसानात्रतिजगतीसप्तमजगती। अष्टमी त्रिष्टुपानवमी। षड्पदाजगती। दशमी हृदती। ततो द्वेषट्पट्टे शक  
यो। त्रयोदशी त्रिष्टुपचतुर्दशी। सप्तपदायष्टिः। पंचदश्यष्टुपशरणी। दशपनुष्टुपजिराट्। सप्तदशगायत्रीततंतिसखिष्ट

स्वाहांतो ४  
त्रि ५

पस्थापयि

सां एकविंशत्पुत्रां अल्पदोर्नयो गमः ॥ अथ मन्त्राः ॥ यदेवा देवदे उने देवापश्चक्रमावयं । आदिसास्रस्मान्मये  
 चतुर्नस्यै नमामि नः स्वाहा अदिने स्यः ॥ १ ॥ स्वाहा आदित्ये स्यः २ ॥ सुदेवाय गो नमंत्रां नः पातित एषु चरत्रापि विज्ञेयां देवा  
 जीवनका म्पाय ह्यनाद्यत मृदिम । तस्मो न इष्टं चतर्विश्वे देवा स जोषसः स्वाहा विश्वे स्यो देवे स्याः ॥ ३ ॥ अनेन द्यावा पृथिवी  
 अनेन द्ये सरस्वती कृतां न पाही न सीय किं वा च तदृदि मस्वाहा द्यावा पृथिवी स्यां स्वसुरस्वदेव ॥ ३ ॥ इन्द्राग्निं वा वरुणे  
 सोमो धाता वदस्पतिं ते तेषु च विनसो यदव्यक्तं तमारि मस्वाहा इन्द्राग्निं वा वरुणे सोमं धतवृहस्पति स्युः ॥ ४ ॥ सजातं सा  
 ष्टुदुत जा मिशं सा क्रुणाय संसे सा हत वा कनीयसः । अनाद्युष्टु वक्रुते यदेमः तस्मात्वा मसो जात वेदो मृदुषि स्वाहा  
 जात वेद सौ ॥ ५ ॥ ॥ यद्वाय यन्मनसा बाहु स्यात्सु स्या मर्षु वही विश्वे र्यदृष्टं स्वै क्रुमावयं । अग्निर्मातस्मा देन सो गा  
 दे पश्यः प्रभुं चतुर्दुरिताया निव क्रु मया निडुक्क ता स्वाहा गार्हपत्याग्रयो ॥ ६ ॥ ॥ अनेन वितो अर्षवा निवेत्त वृयेन सूर्यं तमसो  
 निरुमे च जिनैर्द्रो विश्वा अजदा दरा तस्मिना दे ज्योतिषा ज्योतिरा नशान अक्षि स्वाहा अग्रयो ॥ ७ ॥ यत्कुसी वि मत्पती तिमये ह  
 र्यं नय मस्य निधि नाच रा मि । एतत्तदमे अष्ट णो तवा मि जी वने वप्रति बने दध मि स्वाहा अग्रयो ॥ ८ ॥ गायन्मग्निमाता गार्हसति ए

२३५

६

यदा वासा नि लसा यत्य तत्रासा यदेन श्रु क्रुमा नूत नं मत्सुराणं । अग्निर्मातस्मा देन सा गार्हपत्याग्रमुच्यते दुरिताया निव क्रु म करोतु माम्  
 नेन सी स्वाहा गार्हपत्याग्रयो ॥ १ ॥ ४

वैश्वकारययिता अग्निर्मातस्मा देन सः गार्हपत्याग्रः प्रभुं चतुर्दुरिताया निव क्रु मा करोतु मामनेन सं स्वाहा गार्हपत्याग्रये  
 णा ॥ यदापि पे न मातरं पितरं सुत्रः सुदितो धयत्र अदि दंसितो पितरो मया तत्र तद्वमे अष्टु णो तवा मि स्वाहा अग्रयो ॥ १ ॥  
 यदेत रिद्धं पृथिवी सुत द्याय न्मातरं पितरं वा जि हि सि मा अग्निर्मातस्मा देन सः गार्हपत्याग्रमुच्यते चतुर्दुरिताया निव क्रु  
 म करोतु मामनेन सी स्वाहा गार्हपत्याग्रयो ॥ २ ॥ अतिक्रामा म्मिद्ध रि तं यदेनः जुहामि रि तं परमे सध क्षो यत्र्यं हि सु क्रु  
 तो ना पिडुः कृतः स्या मा रो दामि सु क्रु ती डिलो कं स्वाहा अग्रयो ॥ ३ ॥ त्रिदेवा अष्ट जते तदेनः त एत न्म सु षु षु मा ष्ट जो तने  
 माया हि के वि दे न सीः अग्निर्मातस्मा देन सः गार्हपत्याग्रमुच्यते चतुर्दुरिताया निव क्रु मा करोतु मामनेन सं स्वाहा अग्रयो ग  
 र्हपत्याग्रयो ॥ ४ ॥ दिवि जा ता अशु जा ता य जा त ई प्र धी स्यः अथो या त्र प्रि जा पः तानः सु ध्रुं शुं प्र नीः स्वाहा ज्ये अद्वा ॥ ५ ॥  
 यदा पो न कं दुरि तं च रा म यदा दि वा नू त नं य सुरा णो दि रण्य व णो स्र त उ सु ना त नः स्वाहा अद्वा ॥ ६ ॥ इ मं मे व रु ण अ धी द  
 य मा द्या च मृ द्यां त्वा म व सु रा व के स्वाहा व रु ण या ॥ ७ ॥ त वा या मि त्र ह णा वं द म न स्र दा शा स्त्रे य ज ष्ट न स्र दा शा स्त्रे य ज  
 मा नो द वि र्तिः अ दे उ मा नो व रु णे द वो धि त रु शं स मा न अशु प्र मो प्री स्वाहा व रु ण या ॥ ८ ॥ व नी अ ने व रु ण स्य वि ह

चदेवस्य हेतवः यथासि सीष्ठां यजिज्ञो वक्रितमः शोच्यन्वो विश्राद्धे प्रंसि प्रसुग्धस्मरस्वाहा असीवरुणात्वा ॥ १ ॥  
 यदापोनकैडुरितं वरा मयदा दिवा व्रतनं यसुराणे हि रण्यवर्णाकृतउत्तुनातनः स्वाहा अद्मः ॥ २ ॥ सत्वे नो अग्ने तमो  
 तवोतीने दिष्टे अस्या उपसो मुष्टौ ॥ अत्रय दक्षणी वरुणं राणे वादि म्दीकं सुहवो न एभिस्त्राहा अग्नीवरुणात्वा ॥  
 त्वमग्ने अयास्पया स नमसाहितः अया स दक्ष प्रदिषे यानो वेद्दि तोषतं स्वाहा अग्ने ये ॥ ३ ॥ इति प्रथमो नुवा  
 कः ॥ ॥ यददीर्घं मिति द्वितीया नुवाकस्य त्रयो वरा ॥ अत्रय दक्षणी वरुणं राणे वादि म्दीकं सुहवो न एभिस्त्राहा अग्नीवरुणात्वा ॥  
 द्वितीयाद्या अत्रयः त्रिष्टुभः ॥ अष्टी गायत्री ॥ सप्तम्याद्या शिञ्छिष्ठुषीं दसे सप्तम्युष्टु प्राणकादाशी च उं सुहो सिञ्च व  
 योदशी विसुष्टु आ ज्यहा मे विनियोगः ॥ यददीर्घं त्वणमदे वववाय द्वाष्ट्युष्टु प्राणकादाशी च उं सुहो सिञ्च व  
 से विदानी प्रमुं चती स्वाहा अग्नेये ॥ ॥ यदस्मात्प्रां चकार किञ्चि प्राण्य ज्ञाणां वदुष्टु प्रणि ज्ञमानः ॥ उत्रं पर्या वराय च चन ॥ ३ ॥  
 यस्वर सावतु वना मृणानि स्वाहा अग्नेये ॥ ॥ उत्रं परंपरा इत् किञ्चि प्राणियद ज्ञायां वदुष्टु प्रणि ज्ञमानः ॥ उत्रं पर्या व  
 राय च चताय पर सावतु वना मृणानि स्वाहा अग्नेये ॥ ॥ उत्रं परंपरा इत् किञ्चि प्राणियद ज्ञायां वदुष्टु प्रणि ज्ञमानः ॥

३  
१०

७५

१०

वने प्रमर्ग नृणा इत्स मानोयमस्पृकीके अर्धं कुरा यस्वाहा मंत्रो कदेवताये ॥ शोच्यन्वो विश्राद्धे प्रंसि प्रसुग्धस्मरस्वाहा असीवरुणात्वा ॥ १ ॥  
 देववित्तः ॥ इत्यं नस्मस्य मसुर प्रवेतो राज्ञे नो शिप्रयः कृतानि स्वाहा वरुणाया ॥ ॥ उद्वं मं वरुण पाश मस्रदवाध  
 मे विम द्युमं कुर्याया अथा वयमादित्य व्रते तवाना गमो अदितये स्माम् स्वाहा वरुणाया ॥ ॥ इमं मे वरुण तव्या मि  
 व्रतो अग्ने सत्वात्ना अग्ने इति चतस्रः प्रथमानुवाकस्मिताः अत्रापि ग्राह्याः ॥ श्रीं संकु सुको विमुको त्रं आय अ निखनः ॥ ॥  
 ते ये स्माद्य रूपमना गमो ०० ॥ एरा हरं म्बु वं स्वर्भं त्रो कदेवताये ॥ ॥ दुःशं मातुस्सा र्पा र्थं ना अथने न च तेना न्वा सत्वा र्हा ततमस्र प्रकुं वा  
 मृच्छां तैतमस्मे प्रकृवा मि स्वाहा मंत्रो कदेवताये ॥ ॥ दुःशं मातुस्सा र्पा र्थं ना अथने न च तेना न्वा सत्वा र्हा ततमस्र प्रकुं वा  
 मसि स्वाहा मंत्रो कदेवताये ॥ ॥ श्रीं संवर्त्तं सापयसासेत द्वाशिः रगन्नादि मन्सा मंशि वे नो वस्मानो अत्र विदं रात्रा यो इमाष्टु  
 तवो ईय द्वि लिष्ट स्वाहा त्वमं ॥ ॥ इति द्वितीयो नुवाकः ॥ अथ तृतीया नुवाकस्य प्रयोगः ॥ आद्युष्टु इति तृतीया  
 नुवाकस्य मर्दं शं अत्रय दक्षणी वरुणं राणे वादि म्दीकं सुहवो न एभिस्त्राहा अग्नीवरुणात्वा ॥ ॥ द्वितीया नुवाकस्य प्रयोगः ॥ आद्युष्टु इति तृतीया  
 ॥ सप्तम्यष्टम्या त्रिष्टुप्तौ ॥ ततः षडष्टमुनः ॥ पंचदशक कुदनी ॥ जिदय प्रकुष्टु प्रां मर्दं शं पंच पदश कर्त्यं अष्टि वा अद्मः

१५

२३

होमेर्विनिर्गमः ॥ आद्युर्देवत्वतो देव्यमभिर्वरेणः पुनस्त्रे प्राणां आयाति पचायं सुवर्गिते स्वादा अमयो ॥ आ  
युदी अमे हविषोऽपणो घृतप्रतीकौ घृतयोनिः त्रिभिर्ममया आद्युर्देवक प्रतिगमने जो वरुणशंशो भिर्दुर्तपीत्वाम  
धुवावगर्भपितेवत्रुवमन्त्रितनादिमन्त्रात् आद्युर्देवत्वमयो मातृवासा अदिनेशमय हविषे देवान् देव्यथा ॥ १३ ॥  
मन्त्रास्वादा अमयो दिमंत्रो क्रुदेवतासा ॥ १४ ॥ अमया अं २ लिपवसत्रा सुवोर्जनिपं चनः ॥ आरिन्ना भवदु ह्युना स्वादा  
अमयो ॥ अमे पवस्व पाशमस्व व्रत्रं सुवर्गिते देव्यमभिर्वरेणः पुनस्त्रे प्राणां आयाति पचायं सुवर्गिते स्वादा अमयो ॥ १५ ॥ अग्निः त्रुभिः पूर्वमानः पाचन  
न्यः उरोः देवताः तमिमे हेमदाग्यं स्वादा अमयो ॥ १६ ॥ अग्ने जाता अणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सु  
मनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सुमनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सु  
स्वेव वदेद्वादिदस्य सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सुमनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सु  
२३ समिधं कृत्वा छस्ममये पिष्टध्रस्वादा अमयो ॥ १७ ॥ योनः शपादशपतौ यश्चनः शपतः शपात्र उपाश्चस्मिनि सु  
२३ ॥ सर्वपापसहतां स्वादा उपसे निष्टवा ॥ १८ ॥ योनः सपत्न्याः यारणो मन्त्रा लिहासति देवाः इध्रस्ये वषदायती मातृसा

१३

तांजा ६

११

(५ अस्मेदादि हि सुमना अर्चनं चर्मते स्या मात्रिवरुष्च औस्वाहा अये जाते वेदसे ॥ स ॥ सजा  
ता अणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सुमनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदानः सपत्न्याः सजाते वेदोर्देव्यो अग्निः अदि सु

योमा देहि जातवेदोयं चा देहि प्रियत्रमोः सवोः नमस्ते देव्योः चा देहि प्रियेवमोः स्वाहा अमये जातवेदसे ॥ १९ ॥

२३

२३

क्षेपिकिं चिन्त्वादा देवेत्या ॥ यो अमस्य मरातीया इच्छन्तो हेतवोः जनः निदायो अस्मां विसात्र सर्वतो मस्य सा उरु  
स्वाहा मे जो क्रुदेवतायो ॥ १९ ॥ अंशितं मे व्रसंशीं तं वीर्यां आ वलां से चितं व्रत्रं निष्कयस्याहमस्मि उरो द्वितः ॥ २० ॥  
पांवाह्य अतिरमुद अत्रियावती ॥ द्विणो मित्रहण मित्राणु न्यामि र्वां अर्धे स्वादा मंत्रो क्रुदेवतायो ॥ २१ ॥ पुनर्मनः  
पुणरायुर्मा आगो सुनश्चुः पुनः आत्रम आगाश्चुनः प्राणः पुणराहूते म आगाश्चुनश्चि त्रं पुनराधीते म आगात् ॥  
वैश्वानरो मे दशस्ररुपा अत्रवाधती डरितानि विश्वास्वादे वैश्वानराया ॥ २२ ॥ इति ततो यो सुवाकः ॥ २३ ॥ सुववाक  
त्रेयेणा ज्येष्ठा अति मंत्रं कृत्वा यजमानोः श्रेयश्चिणतः समियाणिरुदरुखप्रिष्टं वैश्वानराय प्रतिवदयामि इति  
दशर्द्धेन सकेनाभिमुपस्थाप्य न्याय प्रनभे यजया स्वाहा तं यासमिधमग्नौ प्रक्षिप्य न्यायि दशो मं कुर्वीता एतन्नम  
दग्निमतो वैश्वानरम तैः सुववाकत्रयेणा जहामानं तं रं शिं देवाद्यज्याद्या निश्चतस्तरिः स्त्रियवाङ्मतीराजस्य प्रये  
कं कृत्वा तथा अग्नेसावर्तिन्याद्या निश्चतस्तरिः पिष्टवाङ्मतीराजस्य प्रयेकं कृत्वा तथा अग्नेसावर्तिन्याद्या  
निश्चतस्तरिः पिष्टवाङ्मतीः प्रयेकं कृत्वा यजमानः शवोः कप्रकरणे समिधं शर्वी क्रमंत्रेण भौ प्रक्षिप्य न्यायि

२३

धमादाया प्रिमुपस्थापयसमि १

एवमुक्तं पञ्चाणामध्ये अन्यतपसा प्रयोगो न कर्तव्यो यावत्कर्मसमाप्तिं प्रयोज्यते तत्राल्लक्षणं यथाऽत्र नैतन्न्यस्येति ज्ञातं तद्विषयस्यादि मन्येतप योज्यतादिर

५ विधि

सिद्धत्वाप्रणीतमोक्षत्रयविसृज्यते कुर्वीता ये वा ज्यहोमानंतरं खिष्टकृद्भोमं भवति समिदाधानागेनंतरं तेऽथै  
वत्रं खिष्टकृतं ह्रत्वा जयादिकं कुर्वीता एतन्न कर्म पापतारत्तम्पाठसारेण प्रवृत्तविरात्रादिभिः द्विगोचवामि  
तितदा ईधनधानादिभिः प्रवृत्तिः शरीरधारणं कुर्वीता एतन्न तमिदादि रयमर्थः पय एव ब्राह्मणः सप्तर्षी न त  
याद्यविद्योयवारं वैश्वामिप्यंमिनिः ॥ अथासिंदेव्याघ्राद्वाद्योमंत्राः अण्पादिसहिताः प्रदर्शयताः ॥ सिंदेव्या  
घ्रादिति च तृणोसामप्रभिरैव तात्रिष्टुष्टं दः ॥ अथाज्यहोमविनियोगसिंदेव्याघ्रादुत्तयाष्टदां विजिरतो  
हाणैस्त्रयोऽइंद्रयादेवी सुसगान्नानासानाग्राग्राह्यैः सिंदेवानखात्वा विष्णोः ॥ श्याराजस्ये दुंडुवायता  
यां अथ स्पृकं तेषु रूपस्य माया ॥ इंद्रयादेवी सुसगान्नानासानाग्राग्राह्यैः सिंदेवानखात्वा विष्णोः ॥ श्याराजस्ये दुंडुवायता  
युरुषे लुगोऽइंद्रयादेवी सुसगान्नानासानाग्राग्राह्यैः सिंदेवानखात्वा विष्णोः ॥ श्याराजस्ये दुंडुवायता  
यादि ॥ ॥ अग्नेत्यावर्तिनिष्ठचतुस्रणामधिकभिः अग्निरस्यावर्तिदेवता आद्यास्वपदां भिक्षुद्वितीया पंचपदामहा  
द्वत्ती इतरहेगायत्रौ आज्यक्षोमे विनियोगः ॥ अग्नेत्यावर्तिनिष्ठचतुस्रणामधिकभिः अग्निरस्यावर्तिदेवता आद्यास्वपदां भिक्षुद्वितीया पंचपदामहा

१२

५

अग्ने

ता

मेनखात्वा अग्नेत्यावर्तिनिष्ठा एव उन्नरमन्त्रेष्टदेशागः अगिरमेतत्रे संवाहृतः सदस्वै उपाहृततासां पोष्यस्यपो  
षेण पुनर्नो नष्टमोक्षविखाहं ॥ शापुनरु आनिवृत्तं वृत्तं नरप्रदं प्रमाणां ननु पादिविश्चतःखादा ॥ ३ ॥ सहस्रया नि  
वर्तस्वमेपि ब्रह्मधरतया विश्वस्या विश्वतः प्ररिखादा ॥ ४ ॥ अथसमिधमादयोपधानं कुर्वीत वैश्वन्नरायेत्यनेनस  
क्रेनाअस्पृश्यकस्य द्वादशैस्त्रैस्त्राहास्वयं रक्षपि वैश्वन्नराघालिङ्गीकृदेवता ॥ अद्यैष्टुसो ॥ इतीया चतुर्थ्या वि  
श्वैष्टुसो ॥ ततः सिस्रः खिष्टुसः अष्टमी पंक्तिः ततो द्वे त्रिष्टुसो एकादशी द्वादशी च पंचपदेशकयो ॥ उपस्थाने विनियोग  
वैश्वानराया प्रतिवेदयामोय दीर्घासंगरो देवतासु स एता न्याशान्यसु च न्यवेदसो मुंवां इति तादव्याचाशा वैश्व  
नरः पवयात्रः पवित्रैर्गम्ये गरमसिधो वाम्पात्रां ॥ अजानमनसायात्त्वमानोयदवैमनो ॥ अतत सुवाभिः अमयि सुत  
जे दिविष्टुसो नाम तारको श्रीदा मिनस्य यद्यतामेतद्वचकामो वनो ॥ विजिहीर्षुलोकां कथिबंधान्मुचामिवदकी  
योनेरिचप्रसुतो गलेः सद्यो न्ययो अडशा ॥ सप्रजानप्रतिगर्हितविद्वाभ्यजापतिः प्रथमजारितस्या अस्मानि देसो नर  
सपरस्ता दक्षिणे लुमभ संवरं मती ॥ पाततु मग्ने के अथ संवरं तिये प्रादत्रै पिथमायन चत्रं अवेष्टे के ददन्नः प्रयद्य

ते

नार

रुर घे



दाउंवेदकवाऽं सःखर्गणां॥ आरसेयामनुसंरयेयां समानं पथा प्रवथो छि तेन यद्वांघर्षे परि विष्टं यद्गो  
 तस्मिं गीत्रये हजाया पांती संरसेयां॥॥ यदंतरिहं घथिवी सुतद्यो यन्मातरं पितरं वा जिहि सिमा अग्निर्मति संरसे  
 गार्हपत्यमज्ञो नो षडुरी तया निव क्रमां॥ नान्दमिमां तादं त्रिहं घथिवी सुतद्यो यन्मातरं पितरं तीर्त्तात्त रिचमसि  
 सस्रतः धो नो पित्या च्छु सवामिनामितवामा विविस्मि लो कात्रा॥॥ यत्र सुदाहः सुकृ तोति विहाय रोगं तं वा आ  
 स्वायां॥ अश्वनां गौर हता स्वर्गपतत्र पर्यो मिपितरं च्छु उवां॥॥ यदा नम म्पु म्पु तेन देवदा स्य वा दस्यो बुत वा करि ष्यां च  
 यद्देवानां च दुष्प्रागी अश्विय देव किं निप्रति जया ह मनिर्मा तस्मार रुणां कृणां॥॥ यद्दत्र म्पु म्पु द्वा भा विरु पं वा  
 यो हिर ण्पु म्पु गाम जा म्पु वि यद्देवानां च दुष्प्राग इत्यादि ॥॥ एवमग्नि षु पा स्या यय म्पु म्पु ये स न य च्छु म्पु म्पु म्पु म्पु नि  
 दधीत अस्या ऋचो र्द्वर्ह स्वयं च्छु कां जिः अग्नि देवता अ उ टु प र्द्वं हः समि हो गो वि नियो गां य न्मया म न सा वा चो र्कृ त  
 मेनः कटा च्छु नाः स र्धे स्मान्मे नि तो मो षि त्वे दे दे द्य या त थीं स्वा हा अ प्र यो ॥॥ अथ जया हि हो मः अथ हो मा र्ध्वं  
 मे व स्वि च्छु हो मा करण पक्षे च्छु व त्रे न दि वि षा स्वि च्छु कृ त उ द्वा तित त्र र्द्वी का वध पि मं वा सो का या र्थे धु न र पि च्छु

तस्मार

३३

१ देवता अनुष्टुप्ति गच्छ दः स्वि च्छु हो मे वि नियो गः॥ एव वा ए न म नि पा ति षा हं र दो ए ण वृ त ना सु जि ह्नुं ज्यो ति ष्मं तं दी घ तं पुरं धि म्पु नि सि  
 एहा

दृश्यंते ह्यपवाहनमित्येतेषां पुरोखवाक्यास्विष्टमग्रसेषायां आह्योरनयो विश्वे देवा क्रुपया अग्निं स्विष्टकृतं मा  
 कुवेमो नि ति धुरो भवा क्वा म्पु य स्वि च्छु म्पु अ सित तृ णा दि विश्वा दे व घ त ना अ सि धु र्गो न्न पं थो प्र दि श वि ना दि  
 ज्यो ति ष्मं थे स ज र ण्ण आ ख रि ति यो ज्यं स्वा ही त्रं प वि त्वा सु द्वा या त्वा अ प्र ये स्वि च्छु कृ त इ सु दि श या ग ॥॥ अथ इ त  
 शेष म्पु म्पु र्द्वी द श्च ष्च प त्र त्रे षु नि धा य क र्म स म्पु द्वा र्थे ज या दि हो मं क रि ष्य इ त सि ल य ज या दि हो मं कु र्त्वा त त व  
 त्र यो द शानां य र्द्वी रू पा णो ज या दि मं त्रा णो वि श्वे दे वा क्रु प यः प्र ति मं त्रं मं त्र प्र थ म ष्य हो का षु ण वि शि षा दे वां ता  
 आ व्य हो मे वि नियो गः क र्म स म्पु द्वा र्थे वा वि नियो ग ॥॥ चि त्रं च्छु स्वा हा ॥॥ चि ता या ॥॥ अत्र स्वा हा चि ता ये सु  
 श द्या गः प व मे व स्वा हा प्र च्छु सु त्र र्द्वी पि च्छु च्छु म्पु ॥॥ चि त्रि च्छु स्वा हा चि त्रै ॥॥ अत्र ते च्छु स्वा हा अ रू ना या ॥॥ अ  
 आ रू ति च्छु स्वा हा रू त्र यो ॥॥ वि ज्ञा तं च्छु स्वा हा वि ज्ञा ना या ॥॥ म न च्छु स्वा हा म न से ॥॥ श क्रू री ये च्छु स्वा हा श क्रू  
 री र्पः ॥॥ गी द र्शं च्छु स्वा हा द र्शा या ॥॥ ग र्ण मा सं च्छु स्वा हा र्ण मा सा या ॥॥ वृ ह च्छु स्वा हा वृ ह्ती ॥॥ ध र्थो तं च्छु स्वा हा र्थं  
 त्र या ॥॥ अथ ना प ति र्ज या नि द्रा य वि शे प्र वि च्छु द्यु च्छु त नां ज्ये षु त स्मे वि च्छुः स म न म त्र स र्धाः स य स महि तै यो व च्छु

३ x पविज्ञानं च्छु स्वा हा वि ज्ञा ना या ॥

३ स्यामात्रिष्य

॥अथान्यातानाः॥अष्टदशानां

स्वादाप्रजापतयोः॥१२॥इतिजयाः॥ अथान्यातानांके विवेदेवाप्रययैप्रतिमं प्रथमयैदोक्तौ वृणुणविरिष्टा  
 देवतायनुश्चान्दो नियमः॥आजहीमेकर्मसद्व्यर्थवा विनियोगः॥ अत्रिदशानामधिपति समावत्वस्मिन्  
 हीनास्मिन्ज्ञेयैः स्यात्पुरोधयामस्मिन्कर्मत्रयो देवहृत्यावादाप्रययैरतानामधिपतयोः उत्तरमंत्रेषु सामाशिष्टा  
 स्यात्पुरोधयामस्मिन्कर्मस्यो देवहृत्यावलि सादि रठुवर्गः॥१३॥इदं ज्येष्ठानामधिपतियै समावत्वस्मिन् रंद्रायस्वत  
 वानामधिपतयोः॥स्यमः८॥थिद्यात्रधिपतिःस्मात्वात्वस्मिन्मया यद्यथिद्यात्रधिपतयोः॥शीवापुरत्ररिद्यस्यधि  
 पतिः समावत्वस्मिन् रंद्रायवे अत्रिद्यस्यधिपतयोः॥१४॥सूर्योदितोधिपतिः समावत्वस्मिन् र्सूर्योदितोधिपतयोः॥१५॥  
 वैश्वानरत्राणामधिपतिः समावत्वस्मिन् वैश्वमेतद्राणामधिपतयोः॥धीहृदस्यतिवैश्वणोधिपतिः समावत्वस्मिन् रद्र  
 स्यतयेज्ञेयो धियतयोः॥१७॥मित्र सदानामधिपतिः समावत्वस्मिन् मित्राथसदानामधिपतयोः॥नावरुणाणामधिपतिः  
 मावत्वस्मिन् रंवरुणायअपानामधिपतिः॥श्वोमूर्ध्नि धीनामधिपतिः समावत्वस्मिन् र्सोमायूर्ध्वनामधिपतयोः  
 १०॥सवितायसवानामधिपतिः समावत्वस्मिन् रंसवित्रेप्रसवानामधिपतयोः॥११॥रुद्रः पशुनामधिपतिः समावत्वस्मि  
 २ ससुद्रः सौत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् रंससुद्रायसौत्यानामधिपतये॥ अन्नः ॐसाम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन्  
 रन्नायसाम्राज्यानामधिपतये॥२॥

३ ल

१४

१ अतः परस्योत्तमोः स्वतः स्यात्तः अधिपतिः समावत्वस्मिन् रंवरुणाणामधिपतये॥१॥  
 र्सुद्रायपशुनामधिपतयोः॥१३॥विष्णुः पर्वतानामधिपतिः समावत्वस्मिन् रंपर्वतानामधिपतयोः॥१४॥मरुतो गणानाम  
 धिपतयस्मिन् रंसेमिवेवस्मिन् रंमरुदाङ्गणानामधिपतिस्यः॥१५॥पितरः पितामहाः पर्ववरैर्नातासुतर्माहातुर्सेमावत्वस्मि  
 र्पितृस्यः पितृः पितामहोः परैर्वरैर्ज्ञेयस्यतामहा इदं समवेवस्मिन् र्गणामहोः ॥१७॥इत्यस्यातानाः॥ अथराष्ट्राद  
 त्तः अत्राप्त्यापातेन हाहृदशमन्त्रा अर्थे तस्यपवहा विंशति र्युक्ता विवेदेवाप्रययैस्वस्वमंत्रैकवृणुणविरिष्टायां वधा  
 ३ अथरसस्य देवताः॥अत्रान्नायपातेनसप्तमस्य ह्याहसास्यत्तुधनस्यतिर्देवताः॥आजहीमे विनियोगः॥कर्मसद्व्यर्थव  
 विनियोगः॥१०॥क्रतापाडु अतधामासिर्गंधर्वा इदं ब्रह्मज्ञं पाठुतस्मेच्चाहा जतसदे क्रान्तिः अग्रयेर्गंधर्वायाः॥११॥सो  
 २ पृथयोः सरसः॥ज्ञानांतो इदं ब्रह्मज्ञं पाठुतास्यन्वाहा ऊर्ध्वसो सरस्युः ॥१२॥स इदं विविश्रसामस्योर्गंध  
 र्वाः स इदं ब्रह्मज्ञं पाठुतस्मेच्चाहा संहिताय विश्रसामस्योर्गंधर्वायाः॥१३॥तस्य तस्योः सरसः आसु वीनाम त  
 इदं ब्रह्मज्ञं पाठुतास्यन्वाहा मरीचीस्योः सरस्यः आयुर्योः ॥१४॥सुखी र्श्मिः र्शमार्गंधर्वाः स इदं ब्रह्मज्ञं पाठुता  
 र्स्मेच्चाहा सुखुनायस्यो र्शमये वं सद्रमसेर्गंधर्वायाः॥१५॥पातः ऋणाण्यस्योः वेनुः र्योनामता इदं ब्रह्मज्ञं पाठुतास्य

६२

तस्य सरस्य

(सर्वप्रजायां धर्वायां तस्य दक्षिणं अस्सन्नावाना मता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः सा ता दक्षिणा १

रुक् २

स्वाहा म ज्ञेयो शरो स्यो वेदुः स्यात् ॥ वासुदेव सुषो यज्ञी गंधर्वोऽस्य इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा सुव्यवे सुप ॥ स्यो  
असो स्यात्वात् ॥ पप्रत ज्ञापति विश्वकर्मा ज्ञानो गंधर्वः स इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा प्रजापति विश्वे य २  
कर्मणे मनसो गंधर्वीया ॥ तस्य सामान्यं शरसो वक्तव्यो नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा सामस्यो म  
रो स्यो वाङ्मस्योऽपि रो विश्वव्यवा तो गंधर्वोऽस्य इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा प्रिराय विश्ववसे वा वा ता य ग  
धीया ॥ १२ ॥ तस्यापी शरसो मुद्रा नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा प्रिकी शरस्यो मुद्राया ॥ १३ ॥ व्रतस्य पतेत्यस्य  
त उपरि यद्वा इह वसा तो रा प्रा निराय स्यो प्रं सुवी र्यं संवत्सरी णां स्मिन् स्वाहा सुवनस्य पश्ये ॥ १४ ॥ परमेष्ठि पते  
तु गंधर्वोऽस्य इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा प्रिराय विश्ववसे वा वा ता य गंधर्वीया ॥ १५ ॥ परमेष्ठिने त्रिपतये स्य  
वे गंधर्वीया ॥ १६ ॥ तस्य विश्वमस्य सो सुवो नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा विश्वमस्य सो सुवो नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः १७  
तिर्न इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा विश्वस्यो शरो स्य कर्मणोऽपि ॥ १८ ॥ तस्यै स्वाहा सुदितये स १९  
कृते सुपसायै र्जन्मायै गंधर्वीया ॥ २० ॥ तस्य विद्यतो शरसो कृते नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा विद्यतो शरसो

सुक्तये २

तः २ रुक्

निरमृदयो मृत्युं गंधर्वस इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा इहेतवे अमृताय यत्स्य वे गंधर्वीया ॥ नस्य प्रजा अस्सो जीरुवो नाम  
शोचंती स्यः ३ ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः स्वाहा प्रजास्यो शरो स्यो चीरु स्य ॥ ४ ॥ वारुः कृपणकारिका मी गंधर्वः स इदं ब्र  
ह्मं पातुताभ्यः स्वाहा चारुवे कृपणकारिका मी गंधर्वीया ॥ ५ ॥ तस्या श्रयो शरसः शोचंती नाम ता इदं ब्रह्मं पातुताभ्यः  
पातुताभ्यः स्वाहा श्रयो शरसो सुवनस्य तस्य तस्य परिश्रुहा इह वसु सत्राणे सेदो ज्ञत्राय मदिशर्मयमं  
स्वाहा सुवनस्य पश्ये ॥ १२ ॥ इतिरा सुवतः ॥ १३ ॥ जाया अस्या ता नाराष्ट्रं त्रैतिगणत्रयं मंत्रोपक्षो माशु सुवतो त  
थासमने तर्कव्यमालाः प्रजापतस्यारस्य ॥ विश्वकृद्वाः पशुपदीमाः अस्मि भूयं तो एते पशुत्रायश्चित्रार्थं मपितत्र  
पे चार्थो मंत्राणां प्रजापत्यादीनां मध्ये प्रथमो मयोर्यद्विश्वेदेवा क्रपयः मया छेता नो व्यसनां निमृणां या द्वनीणां क्रमेण  
जमदग्नि सरहा जगं गो क्रपयः आदित आरस्य प्रजापतिरग्निर्वासुः सूर्याग्निश्चिष्टकृदिति वेदता प्राजापत इति  
सुप्रश्नाद्याद्या हतर्द्विगायत्री द्वे उल्लिहो यदस्ये प्राप्तिष्येत्तत्रा आशुपदीमे कर्मसमृष्ट्यै वा विनियोगः प्रजापतेन  
त्वादे ताभ्य न्यो विश्वाजाता निपतिना ब्रह्मवा यत्कामा चेत्तु इमं द्विजेत्तु वस्ये स्या मपतयो र्याणां स्वाहा प्रजापतये  
शास्त्राद्या अभये ॥ २३ ॥ सुवः स्वाहा वायवे ॥ २४ ॥ सुवः स्वाहा सुवस्ये ॥ २५ ॥ यदस्य कर्मणो शरिरी वैयद्वां कृतमिहा कारं अग्नि

ति २

एनं

एतस्मिन् विद्वद्भिः स्वयं मुहूर्तकरोत्स्वाहा अग्रयेस्विष्टकृते ॥ ५॥ अथात्र्यानां विधिमग्रयेस्वादेोत्पन्नवाभ  
 यपक्षक्षोमपक्षोवदिरजनपरि विप्रहरणसंस्वावहेमांस्कुर्वीताविश्वेस्योदेवैः संस्वावसागैः स्मृतिसंस्वावेजुदो  
 तिअथवाप्रजापतिदृष्टं संस्वावसागदेवैः संस्वावसागस्यैतियुः पठित्वा सुहुयाएमेव सुं संस्वावसागस्यैषा  
 हस्तः अचरेषु सुहुदिषदश्च देवा इमां प्रजापतिविश्वेऽणंत आसद्याः सिद्धिदिषिर्मदं धामिति ॥ अथ पायश्चित्राज्जतयः ॥  
 तत्राऽनाज्ञाततंत्रयथमतो सुहुयात्र ॥ अनाज्ञातत्रयस्य विरुदेवाक्रणयः अग्निदेवता ॥ आद्यो सुहुयाः अनाज्ञाततदोपनि  
 ष्टयर्थविनियोगः ॥ अनाज्ञातयदाज्ञातयज्ञस्य क्रियते मियुः अग्रेतदस्य कल्पयेदं हि वैद्वयज्ञातयोश्चाहा अग्रये ॥  
 १॥ पुरुषसमिन्नो यज्ञो यज्ञः पुरुषसंशितः ॥ अग्नेतदस्य नस्येसादि ॥ यदा कत्रा मनासा वनाद वानयज्ञं मना  
 तेमत्रोसः ॥ अग्निश्चैमा क्रवविद्विजानय जिज्ञो देवाः क्रवशो यजात्स्वीहा अग्रयो ॥ अथ वज्रो अग्रशतहा  
 स्यो देवः ॥ एतद्वयोत्राहा स्वयं वक्राणिः अग्निवरुदेवता विष्टु पृच्छं विपयसात्ररायदोषनिष्टयर्थविनियोगः ॥  
 त्वन्नो अग्रे वरुणस्य विद्वान्र देवस्पदे डोः धयासिसीप्रोयदिष्टो वक्रतमः शोष्ठवाभ्यो वित्रा चहेषांसि यमुग्रया

कुजो रतीया विप  
 स्पष्ट  
 ६

योः

१ सत्वन्नो अग्रमो नवोतीनेदो अस्यापसोबुद्धौ ॥ अय यज्ञेनो वरुणो पराणो वा ॥ इह लीकं सुदो न एधि स्वाहा अग्नीकण  
 १ वासीतनया मुकृति ॥ अस्यात्र ह्यास्वयेरुद्विः अग्निरया देवता अतु दुपुच्छेदः सर्वयाश्चित्तो विनियोगः ॥ अग्रये  
 समस्वहा ॥ अग्निवरुणयोः ॥ १॥ अथ यजेत्सर्वपरिहाराय सुवः स्वादे निहृदुयाव ॥ अत्र कथ्यादि प्रागेव तिहिति ॥ अथ तदंष्टेति स्व  
 हा अग्रये अग्रयो ॥ १॥ अथ यजुस्तैष परिहाराय सुवः स्वादे निहृदुयाव ॥ अत्र कथ्यादि प्रागेव तिहिति ॥ अथ तदंष्टेति स्व  
 सिदेति वा स्यो सुहुयात्र ॥ एतयोर्विश्वे देवाः क्रणयः इन्द्रो देवता अतु सुपृच्छेदः ॥ इन्द्रोऽनातिरेक परिहाराय विनियोगः ॥  
 यतदंष्टस्यामहेततो नो अग्रयं क्रुषिमघं वंछश्चितवतं क्रवतयो विहिषो विष्टुधो जदिस्वहा इन्द्राया ॥ १॥ अथ सिदा वि  
 स्यं सं विवत्रद ॥ विष्टुधो वशी ॥ इषं सुपुश्यैः ह्रमः स्वसिदा क्रवतयं करः स्वाहा इन्द्राया ॥ १॥ अथ यज्मता अत्मानयुनरगि  
 तिवेतिहास्यो सुहुयात्र ॥ क्रमेण यजेत्तत्रा अग्रयोरनयोर्विश्वे देवाः क्रणयः आद्यस्याग्निर्जातवेदा देवता ॥ द्वितीयाग्निः  
 हस्यस्यो देवता ॥ अतु सुपृच्छं ॥ ॥ कर्मणः सयुणार्थं विनियोगः ॥ ॥ अथ यज्मता अत्मानो निहृदु दद्विष्टुयुनं हानो त्वेव  
 विचर्षणि ॥ स्वाहा अग्रये जातवेदसे ॥ १॥ पुनरग्निश्च सुवः द्या सुनरिन्द्रो हृदस्यतिः ॥ इन्द्रं मर्म अग्निना सुवंचहुरा धर्म  
 स्योश्चाहा अग्रये इन्द्रा य हृदस्य तयेम अग्निना स्यात् ॥ १॥ अथ इदं विष्कृष्ये वकमित्रा स्ये हिमः ॥ तत्र क्रमेण सोमो वि  
 श्वे देवाः क्रणयः ॥ विष्टु रुद्रश्च देवते यथा क्रमेण गायत्र्युत्तु सुपृच्छं ॥ नियमासनवग्रेप होषनिष्टयर्थं विनिय

अग्नीकण  
 यः १  
 यः  
 १६

गाः॥ इदं विष्णुर्विचक्रमेतन्निदधेपदांसमृद्धस्यमेपांस्त्रिस्वाहाविक्रतो॥॥ अथ कंयजामदेसुगं धं प्रथिवर्द्धनं च  
 वारुक मिव वेधानान्मृशोर्ध्वीयमाप्नुतात्वादा रुद्रया॥॥ अथ अस्मिंस्त्रिरसनया उज्जयात्रं अस्या विश्वेदेवाश्च  
 णयाः इन्द्रो हरिवादेवता त्रिष्टुप्रबं देवी वर्षकालस्वरस्थानयोपरिहागर्थे विनियोगः॥॥ अस्मिंस्त्रिरदतो नगेन  
 माप्यायुषहरिवोवर्द्धमानः पदास्त्रिभुवो मदिगोत्रा रुजा सिद्धिप्रदाजो अथ ते स्यामस्वाहा इन्द्रया हरिर्वतो॥॥ अथ  
 यधुनस्ते स्यनया ययुष्या व्याहृति तिस्रुदो मं व्याहृतीना मृष्यादीनि प्रागितिदिता निधुनस्ते स्य स्या अग्निः ऋषिः प्र  
 रुद्रादित्या देवताः विष्णुप्रबं देः भं च त्रुष्टयस्याप्युपघातदोषपरिहरार्थे विनियोगः॥॥ अथ व्याहृतिर्देव्या अथ न  
 स्ते स्यनया उज्जयाद्विपरीतं वा उ न स्वादिसा रुद्रावसवः समिधतां पुनर्ब्रह्मणो वसुनीथ्युदोः घृतेन वंत उवे च  
 र्दयस्व सत्याः सन्धय न मानस्य कामां स्वाहा वसुस्यो रुद्रेभ्यः आदिसेत्य अस्मिंस्त्रिभुवो अग्निः अथ विनियोगः॥॥ अथ  
 वः सुवः स्वाहा प्रजापते ये इदं न मा अथ परिषेवना दिवस वि सज्जं ब्राह्मे कर्म कुर्वीता एतच्च कर्म यावत्तित्रतदिना  
 नि तेषु प्रतिदिनमावर्त्तनीयां अथ रुद्राणां देवो मते त्रिरीयशासा समात्रया उग्रहीता मन्त्रा अंगर्ता वंत जज्ञ इति तत्र  
 अथ समस्तानिर्वाहती निर्दुज्यात् अथ स्पमंत्र स्पत्रमदग्नि रक्षा जन्मो रूषयः प्रजपतिर्देवता देवी हृती षेदः॥॥ १०

कांडा उक्ते मेषां मंहितो अतः शाखात्र रासुरोणा र्धे त्रेषु पिन विरोधः एवमेवोन्नरगणदेमेष्वरांतव्यशाः॥॥ महाएव  
 स्वो मदिश्वेधे मोक्षदणो भोर्मदनात्मजस्यो संकर्ममालि क्यगणे नर्ण प्रलो द्वितीयः अथिवचरंगः॥॥ माता उ एष  
 वरिचकी त्रिविचव्यास्यो विकामा मतः साकन्या परमर्त्त रार्थे चरितः श्रीपेदितः पितृा सोयं कोशिक वंश लक्षणमनिः  
 श्रीतद्विश्चखरो वेदस्मात्ते नये च सपदे वाको कतीर्द्धे तो॥॥ मतिर्येणो शास्त्रे प्रकृति रमणीया व्यवहृतिः पराश  
 ले स्नाद्यं जगति आज च स्त्रे कतिपयो चिरं विज्ञतेषां सुकुरत लब्धते छिति मियादियं व्यासा रण्य प्रधरसु निशिष्यस्य  
 सणि ति॥॥ इति श्रीपंडित पारिजातकंदार मल्लेयादिविरुदरजी विराजमान श्रीमदनया लघुत्रयस्य मोक्षोत्तरे च  
 धे कर्म विपाके द्वितीय चरंगः॥॥ अथ गणहोमः॥॥ सचा मुं पश्ये वमता सुसारेण तावदति श्रीयतो॥॥ आभनस्य व  
 काम्यानां कर्मणां वा अदौ पवित्रत्वा दिका मर्नया वायदा तदे त्कर्म कर्त्तव्यं॥॥ येषु कर्मसु पतिपत्ते सहाधिकारः॥॥  
 तेषामाभनादीनामादौ पत्नी सदितो न्यत्र पवित्रत्वकामर्नया वायदौ एकैवै एव कर्मयं जमानो दत्ते प्रासीनो दसो  
 धारयमाणः प्राणानायम्यां च सुकप्रयो जना र्थे सदा दंसवनत्रयंगणहोमा होष्यामीति संकल्प्या च्छुग्दहो नु

गारेणभिस्त्वापनप्रत्तित्वालीपाकव्यतिष्ठितवर्षेतिभरणंतं कृत्वापात्रं प्रयोगकाले चोष्णीपात्रे संद्वेषणीता  
 पात्रंतं तु सिद्धेति तं कलशं च रश्म्युनक्ति प्रणीता प्रणयकात् प्रणीता आसाद्य कलशे सपवित्रे प्रपन्नानिये स्वस्तिनिद  
 भ्रति आम्बुविलापनप्रत्तित्वाभिमुखोने कर्मणि कृत्वा च त्रैलोक्यमाणोप्यदर्थेषु पत्नीर्यं चिस्वदाया सिभ्यर्थां मेन  
 येतिषड्यै नस्त्रै नसहस्रत्रयैतिष्ठेत्वा चै न अनेर्मद्येति ह्यविशति त्वेन अक्षिद्रपठिते नो गस्त्रै नयो ॥ १४  
 वामिन्द्रावरुणे त्पने न चतुर्मंत्रेण यो वामिन्द्रावरुणे त्पने न वाष्टमंत्रेण च पवमाना सुपरित्पने न वाष्टमंत्रेण पव  
 मांसा वारित्पने न वा तु वाके न सप्रदशर्द्धे न यद्देवा देवहेतुमिति विशतत्वेनाः छिद्रपठिते नासुवाके न वै स्वा  
 तरो न त्रैलोक्यमंत्रेण एवमष्टसिगणै प्रतिमंत्रं जुहोति अपि वा स कृद्दुपदस्यं जुहुयादाद्यत्रौ तोजया द्याः न वा  
 तया दद्याः जयादि होमहेतुपादीं कृत्वा चिष्टकृतं जुहोति तत्रो कृद्दुपदरणं स हृदयदानं हिरण्यभरणं मन्त्रं वा  
 सत आ वशिष्टं कर्म यथाष्टहं कृत्वा अस्पकर्मणः प्रायश्चित्तार्थं बोशम्पाः परिश्रमप्रकारे तत्र वै परिश्रिप्रहर  
 णं च वति तत कलशमादाय वतुष्यं गत्वा पादप्रक्षालनं कृत्वाः चम्य प्राड्मुखं आशीनः कलशमादाय सिद्धे ॥ १५

५ गलेन

४ त्व

१४

१५

५३

स३

अ२

मसुरित्पुत्रवाकेन कलशस्त्रां स्वात्मनः स्थायां हृत्वा पत्नीतिः सह कर्तव्ये स्वस्वात्मनः स्थायां हृत्वा सुमित्रान् आप  
 र्थं प्रधयः संवित्तिस्त्रां किं विज्ञलमानो यदुमि अस्मै च स्मै रया सुमित्यादिना दृष्टतः कलशो द्विपेत्रां यस्याम  
 स्यं दिशि द्वेषे त्वति तत अपुत्रस्य परदा च्छेत्र एव स प्राहं विषुसवने सुकृत्वा अंति आशीर्वाचने कारयेत्वा  
 ज्ञानोजने कुर्वीता स प्राहं सवनत्रये मेमौ चती सकृद्विष्याशा नित्यं तं द्वियसुसवेदिति ॥ १६ ॥ इति आपुत्रे वियोग  
 ण होमविधिः ॥ अथ वैश्वानरमते गणहोमविधिः ॥ का म्यानां को म्य कर्माणां बाधनस्य वा आदौ यद्वा पापि  
 त्रकः मना तद्यगणहोमं कुर्यात् प्रवृत्ते भि प्रतिष्ठापनो वं कृत्वा प्राणानाय विम्य सकल पापज्ञयार्थं शेषकमा  
 नुष्ठा नयोग्यता सिद्धार्थं वा गणहोमं करिष्ये तत्र सुविता देवता आद्या रक्षत्रमियादि संकल्प्या पकं होमांस्त  
 कृत्वा वशिष्टचरो प्रक्षतमाज्यमानो यमे ह्ये नो पद्यं तं जुहोति अनेन यतिषड्चेन पवित्रस्त्रै न सहस्रशीर्षितं त्र  
 रुणस्त्रै नाऽष्टादशर्द्धे न अनेन त्वेति गरास्त्रै न ह्यविशतत्वेन चतुष्पती किं नयो वामिन्द्रावरुणे ति चत्वारो मे वा  
 षसवुषं गायो वामिन्द्रावरुणा म्प्राविसष्टौ सानुषंगः इत्यहोष्टवांगणायो पवमाना सुचरित्पेते नासुवाके न सप्त

अ२

अ३

दशर्चेनयहेवादेवहेउनमिसुद्धिदपठितेनासुवाकेनविंशत्तरेनैकैकैयैष्टिगणेःसुत्रंशतंवरुपाङ्कवाखिष्ट  
 कृतमवदायव्याहृत्यखिष्टकृतौदिवरदानंरुत्वादपात्रमादायनेर्भतीभिर्गोत्राचतुष्यथउपवेशपुत्रपात्रंशरो  
 निधयेत्रत्रात्मनोरूपमवेदमाणःपात्रनोविनिर्धीत्रपात्रानेविविधतत्रतत्रनिधायविनिर्धीत्रात्रसिद्धेमेम  
 तामनुवाकंनिगद्यनिनीयापःपरस्परंअनवेद्यमाणआगत्यहृष्टपादंप्रहात्मनैवयथैतेमेत्यत्त्वानंकुर्यात्त्राण  
 वमेवसमाहंसवनत्रयेकृत्वासर्वात्रेनेपायसेनसर्विषात्राहणाचनोजयिवा।तेस्योगोस्तरितलदिरण्यानिद्व  
 सर्वेस्यःपात्रास्यःप्रमुच्यतेमहतःपातकादपिकाभ्यानांकर्मणामाधुनिकर्मणाचयोग्याचवति।त्रमाक्रियामा  
 त्पार्यपिष्टमृगणामात्मनश्चकुर्यात्त्रानान्यस्यअन्यस्यकुर्वेनस्यतिकारयित्वा।सर्वपात्रात्प्रमुच्यतेअहंअनर्थ  
 मासपद्मात्रस्यविकल्पिताःकालाःअष्टानांशानांशोममात्रमपिकुर्यात्।एकंवागणंमुद्रयित्वात्रपद्मादश  
 षोदशशंशोदशापरान्मानंवेकविंशत्वात्प्रपत्तिंतावमुनातियएतद्वारयन्त्रियञ्चेतदहह्यस्माएतदहह्याद  
 सगवाञ्चोभयनः॥इतिबौधायनप्रोक्तोगणहोमविधिः॥अथमंत्रपाठंछान्दोग्यक्रमसहितोगणहोमविधिः

नर नार

स्मा४

व्यासंकप विषय

पदार्पते।॥अनापियरुलघुकल्पादेरुत्सर्वांउदोमोक्तैवयवखायाद्या।आधानंधिकीर्षःकम्पकर्मणिवा  
 विकीर्ष्यसदादौयदावांसाद्याद्वादशवार्षिकादिभ्रदायायश्चिन्नातिथेय।रतपापनिवृत्तिकामनासदाचयज  
 मानंथद्वात्वानियंकर्मनिर्वृत्त्येखकर्मसुपत्वासदाधिकारसत्रपत्नीसहितःपत्नीबद्धत्वेअनिषिधालि  
 स्वातिंअसदितभापद्वयार्थत्वेइत्यस्यकर्मणस्वयमेवैकःषवित्रपाणिदत्तैश्चासीनःप्राणानायश्चम्पास्यक  
 त्रयोदशार्थसप्राहंसवनत्रयेणहोमाहोयामीतिसंकल्प्यात्सर्वेषुआवायथाएष्टमग्निप्रतिष्ठाप्ययथाशारव  
 वधोभनवरुहोमात्यागंगंरतपक्वदोमकरेणपद्मेतत्रसविताधेवताआधारतीवत्रमिद्यादलिलपाच्छाली  
 पाकवर्षावहत्रीसादिप्रतिष्ठितवर्षेसिंकारणांतंकृत्वा।भात्राप्रयोगसमयेत्रोदणीपात्रेणसद्व्रणीतापात्रे  
 तथातंतुसिद्धितेकलशश्चप्रमुच्यप्रणीताप्रणयनकालेप्रणीताप्रासाद्यततःसपवित्रेकलशेअथपक्व  
 नयोत्तर्यप्रणीतापात्रस्योत्तरतोनिदृशीतान्तअत्रसप्रतिष्ठापनाज्यविलापनप्रसृत्यनिमुखवंतंकृत्वाअ  
 गस्तपक्वदोमकरणपद्मेवरुमवदानधर्मेणादायप्रज्ञोक्तेरवमंत्रैर्मन्त्रेणोपधातंतुद्रुयात्॥अत्र

७

४

होमोक्तरीत्यापात्रोपुरोवाक्यामन्त्रव्यतांमवयात्प्रोपठित्वास्वादेनिजुहेति।सवित्ररुद्रदत्तांग।आपस्तंबमतेअग्निमुक्तानंतरमेवप्रधान  
 वरुहे।बौधायनमतेत्वंगस्तपक्वहोमानंतरं।अथर्ववेदोप्रचरतं द्युतमानो।यद्व्यासुपस्तीर्यद्विरवदायानिघायन्निनयेत्किंहेनअग्निश्चवरुपमात्तः  
 उरुपस्तीर्यादिनिस्तुत्रंशतंप्रतिमंत्रंमुद्रुयात्।बौधायनमतेत्ववदानधर्मेणावदाय।

नयेति ध्रुवः रूपपवित्रस्रक्तस्य विश्वे देवाः कण्डयः अग्निर्देवता त्रिष्टुभ्रं दः वरुहो मे विनियोगः ॥ अग्नेन  
 यमुपयाराये अस्मात् विश्वानि देवव्युनानि विद्वात्रयुयोद्यस्मात्तुराणमेनोस्यिष्टानेनमुक्तिं विधेम  
 स्वाहा अग्नये ॥ १ ॥ अथः षड्कायसानवेत्त रघ्वं ह्यमेति अग्नेयसुप्रतीयो देवानि मातृपाजुष्यंत विश्वानि  
 विद्मनां जिगीदिति स्वाहा अग्नये ॥ २ ॥ ॥ अग्ना गिरो मतये ह्वयुतीरग्नेय त्रिष्टुभ्रं विणसि हामाणः ॥ ३ ॥ इहो सु  
 प्रतीकं वै देव्यवाद् मरुतिमातृपाणां स्वाहा मग्नये ॥ १ ॥ अग्नेये मस्रं द्युयो दामवा अग्निना अस्पमवतं  
 षीं पुनरसमस्यं ॥ २ ॥ अविताय देवज्ञो विश्वेति रजते सियजत्र स्वाहा अग्नये ॥ ३ ॥ अग्नेव्यपारय नवो अस्मात् स्व  
 स्त्रितरतिदुर्गाणि विश्वं स्त्रुष्यं षीं च वहुतानुज्वी सवती कायतनया यशसा स्वाहा अग्नये ॥ ४ ॥ इत्येकं  
 स्रक्तं अयमे को गणः ॥ ॥ सदस्यशीर्षे व्यस्यां चैसादरीं चैस्य पुरुषं च स्रक्तस्य तज्जापतिः कण्डिः ॥ ५ ॥ पुरुषो  
 नारायणो वा देवता आद्या पंचदशां लुष्टुः अस्याश्चिस्त्रिष्टुसः चरुहो मे विनियोगः ॥ सदस्यशीर्षो वसु  
 षः सदस्वाहाः सदस्यपात्वं स्रक्तं विश्वं श्रुतो वद्वा विश्वदशां लुष्टुः स्वाहा ॥ जगद्दीप्ताय पुरुषाय नारायण

सं ४

जगद्दी ३

२०

४४ प्रकारबो मननावयमाना देवदीप्ती नय धदे वयनः ॥ दक्षिणा बाह्या जिनी प्रायेति ह्वितरं त्रय्येष्टता वी स्वाहा अग्नये ॥

४ नि  
५ स्वयं

३ बां

यत्रो यदियुसुषो देवतात्वेन विवक्षते तर्हि उरुषाये सुदृश्यागा अथ नारायणस्य दानारायणातिथेति एवमुक्तं  
 तेषां पि ॥ १ ॥ पुरुष एवेदं स ईयद् तं यज्ञस्यं वृक्षात् तं त्वस्ये त्ना नो यदने नातिरो दति स्वाहा ॥ २ ॥ एतावानस्य म  
 हि मातो ज्यः प्रसुरषः ॥ पादो स्पवित्रात् तानि त्रिपादस्याष्टतं विदि स्वाहा ॥ ३ ॥ त्रिपादं द्युयो देवसु रूपादोस्ये  
 दासवो तु मंगततो विश्वयुजां क्रामवांसना नशने अति स्वाहा ॥ ४ ॥ त्रिपादो रजजायतो विराजो अग्निं पुरुषः स ज  
 तो अस्परि अत पश्चाद्भूमि मथो वरुः स्वाहा ॥ ५ ॥ यसु रूपादेव विषादो वायु इम तत्र तां वसे नो अस्पसी दा ज्ये श  
 ओ इन्द्रशरद्विः स्वाहा ॥ ६ ॥ सप्तस्यं सन्यरिधयः सिः सप्तसमिधः कृताः देवाद्यज्ञं तन्वा ना अवघ्न्युसु रूपापुषु  
 स्वाहा ॥ ७ ॥ तं यज्ञं बर्दिषि औ ह्यसु रूपात् जात मयतः तिनंदे वा अयज्ञं त्रसाध्या अणयश्च ये स्वाहा ॥ ८ ॥ जातस्माद्यथैतं  
 त्सर्वं कुतः संस्रतं षण्णदा ज्यो यश्च ॥ ९ ॥ अत्रैवायमाना नारायणाग्रा म्याश्च ये स्वाहा ॥ १० ॥ तस्माद्यज्ञो त्सर्वं कुतः  
 वः सामानि जग्निरो ब्रह्मं सिजग्निरेतस्माद्यज्ञं देजायते स्वाहा ॥ ११ ॥ तस्मादश्चाजायतयेके वो तया दत्तः गावो रू  
 मिरे तस्माज्जातं अजा वयस्वाहा ॥ १२ ॥ यसु रूपापुषुः कति क्षयकल्पय च सुखं किमस्य कौ बाहू का ह्युपाद

तस्मा

तस्मात्

उच्यते स्वाहा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

५३

२१

वित्री

४ जाया ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

२ यस्येदं प्राणनिमित्तं घटे जति यस्य ज्ञानं ज्ञानमानं च देवलो ज्यौष्मिन्नाथितो जोहवीमिसनो मुंबवं ६ सः स्वाहा ३ प्रयो ॥ २ ॥

हे विष्टौ चरुहे मे विनियोगा ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

७ बोवां रथरजुरभिः संत्यधर्मिषु बरंतमुपयाति ह्ययन्तौ निमित्रावरुणाथितो जोहवीमिनो मुंबवं तमागसः स्वाहा ३ प्रयो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

प्रेतां वा वं विद्या मर्वतु २

पुंवा

अथ द्रुवे सुयमा वृत्तये नो जिनसः स्वाहा मरुद्गः ॥ १ ॥ तिग्ममासु वै वीरितं स ह्स्वर्दिग्मं शं द्रुतना सुजिष्ठां शौमिदेव  
 न्मरुतो नाथितो ह्वीमिते नो सुं च वेन सः स्वाहा मरुद्गः ॥ १ ॥ देवानां मुने अग्नि नो सु वृत्तु विश्वे अथ द्रुवे सुयमा वृत्तये नो  
 नो सुं च वेन सः स्वाहा विश्वे वे स्या ॥ १ ॥ यद्विदं मा ति शो व ति पो रु भे ये न दे वी नं शो मि विश्वे दे वा ना थितो जो षुं च  
 वेन सः स्वाहा विश्वे वे स्या ॥ १ ॥ यद्विदं मा ति शो व ति पो रु भे ये न दे वी नं शो मि विश्वे दे वा ना थितो जो षुं च  
 नो षुं च वेन सः स्वाहा अ भु म यै ह्स्व वा दे अ भये वा ॥ १ ॥ अथि द्रुम त्रै वे म न्या सौ च्चनः कृ धि कं दे हा  
 य नो ह्यि ए न्ना युं षुं पितारि षुं स्वाहा ॥ १ ॥ अथि द्रुम त्रै वि षुं प धी रा वि वे च वि श्वान रः वि श्वान रो न ह्स्व  
 प्रया नु प रा वतः अग्नि रु न्फ न वी ह सः स्वाहा वि श्वान रा य प्रयो ॥ १ ॥ अथो दि वि षुं धो धिः अथि षुं अ थो वि श्वान रो न ह्स्व  
 वे शो वि श्वान रः स ह सा षुं धो धिः स नो दि वा स रि षुं या तु नं स्वाहा वि श्वान रा य प्रयो ॥ १ ॥ अथ प्र ये ता म नो रं तै ति यै  
 अ ति षे अ न व तां व सृ नां शौ मि द्या वा षुं धि वी ना थितो जो ह्वी मिते नो सुं च न मं गी सः स्वाहा धो वा षुं धि वी स्या ॥ १ ॥  
 उ च्चो रो द सी व वि वः कृ णो तं ह्ये त्र स्प प त्नी अग्नि नो वृ र्यं तां शौ मि द्या वा षुं धि वी ना थितो जो ह्वी मिते नो सुं च न मं

स्वीमिते नो ३  
 ३  
 ते नि  
 २२

द्विदष्टोत्र ५

४ जो

विश्वानो साहा अमये यथा त्वत्सवो गौर्यं विवत्तदिति तामुं चना यजत्राः एवाव मस्वत्सुं च वं तः प्रातार्यग्ने प्रतरान्ना आहुः स्वाहा अम २२

गंसः स्वाहा धावा षुं धि वी स्या ॥ १ ॥ शो य त्रै व यं सु रु ष वा य वि षुं धि वा स श्रे कृ मा कृ ष्णे ना सं गः कृ वी ह्स्व वा अ धि ते ना गा वे  
 नं सि शि अथो वि षुं म प्र ये ॥ २ ॥ ॥ इ ति षुं ती यं स कृ मा ॥ अथ षुं वी यो ग णा ॥ ॥ यो वा मि द्रा व रु णे षुं धो षुं च नं यं सु  
 र्मं व्रा णां विश्वे दे वा न्ना म यः इ द्रा व रु णो दि व ता च रु दे मि वि षि यो ग ॥ यो वा मि द्रा व रु णा य त म्या त र स्य ये म द इ षुं धो  
 सुं च तं स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा य त र स्य ये म द इ षुं धो नो सुं व तं स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ इ स्या त  
 र स्य ये म द इ षुं धो व तः स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा ले षुं स्या त र स्य ये म द इ षुं धो सुं च तं स्वाहा इ द्रा  
 व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा ले ये स्या त र स्य ये म द इ षुं धो सुं च तं स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ इ ति षुं वी यो ग णा ॥  
 ॥ अथ अ लु थे ग णा ॥ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा वि षुं धं यं सु र्मं ना णां विश्वे दे वा न्ना म यः इ द्रा व रु णो दि व ता च रु दे मि वि  
 षि यो ग ॥ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा सुं च न्ना म सं व मि ते ना व यं जे स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा  
 स्यं गो षे च्चाम सं वा से ते ना व यं जे स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा स्यं गो षे च्चाम सं वा से ते ना व यं जे स्वाहा  
 इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा षुं धी सुं च न्ना म सं व मि ते ना व यं जे स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा  
 ३ द्रौ च्चाम सं वा से ते ना व यं जे स्वाहा इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥ यो वा मि द्रा व रु णा वि षुं धं यं सु र्मं ना णां विश्वे दे वा न्ना म यः इ द्रा व रु णा स्या ॥ १ ॥  
 यो वा मि द्रा व रु णा ३ १ ५ यो वा मि द्रा व रु णा सुं च न्ना म सं वा से ते ना व यं जे स्वाहा इ द्रा  
 व रु णा स्या ॥ १ ॥

वसुणावनस्पतिषुसाधमस्त्रेवामेतेनावयस्त्रेखाहाइंद्रावरुणस्यगान् ॥ अथपंचमोगणः ॥ ॥ पूर्वमानः सुवर्ज  
नेतिसमदशस्त्रेयाकुवाकस्पसोमअणिः लिंगोः क्रोदेवतापवमानयोवादेवता ॥ अत्रैंगायत्रीहृत्तीयात्रसुब्रूपस  
मैंगायत्रीततोद्वेषुतोः ॥ अत्रभायत्रीततोऽष्टावसुसुसन्नदशत्रिस्तुप्रथसहोमेविनियोगः ॥ ॥ पावमानः सु  
वर्जनः पवित्रेणविचरणेणान्यपोतासुपुनाठमास्वाहापावमानीस्योवाउत्ररसवेधायोपवमानः सुवर्जनः पवि  
त्रेणैवेऽतिवावेउदेश्यागाः ॥ ॥ युनेठुमादेवजनायुनेठुमानवोधियायुनेठुविश्रायत्रेवेऽस्वाहादेवजनेस्य  
मर्तद्वेगोविश्वेस्यः अयुस्यः ॥ ॥ शाज्ञातवेदः पवित्रवत्रपवित्रेणपुनाहिमासुकुणदिव्दीद्यत्अमेकास्वात्ररु  
खाहाजातवेदसेअभये ॥ ॥ शयत्रेपवित्रमर्षिणिअमविततमंत्रराप्रसुतेनउनीमरेखादाअये ॥ ॥ उतास्यदे  
वसवितः पवित्रेणसवेअनवाइदेवसुपुनमरेखादासवित्रे ॥ ॥ ॥ वेधदेवीयुनेतीदेवगाथस्येवदीसुबवेत  
तष्टथाः ॥ तयामदंभः ससमाद्येऽयुवयत्रामपतयोः रयीणास्वाहावेधदेवोदये ॥ ॥ वेधनरोरुमन्तिमापुनाठ  
वातः ॥ आनेनेभिरोमयोः ॥ द्यावापृथिवीपयसापयोसिअस्यवरीयन्नियेमापुनीतोस्वाहादेवस्वानरायवातस्य

वउपा१२

म४

२३

धर

३ सर्वमसूतमन्त्रातिस्वदितं मातरिघनास्वाहापावमानीस्यः ॥ पावमानोयेन्नोतिस्तः ॥ केनिसीद्धतैसां  
लोटं ब्रह्मर

रसिरायमयोऽनुवेद्यावापृथिवीस्योऽसुवर्जः सवितस्यतीनीः ॥ स्रिष्टेदेवमन्त्रिः अग्नेदशेउनादिमास्वाहापवित्रेअभये  
वागान्येनदेवाअयुनः ॥ तयोः ॥ नोऽप्रीयं क्वंतीमदियमन्नहाउनीमरेखाहादित्यायब्रह्मणे ॥ ॥ आयापावमानीयोऽद्वे  
तिक्रणितिः संस्तोरसः ॥ स्रमेसरस्वतीः ॥ उदेहीः रंसाप्यिभामद्वेऽस्वाहापावमानीस्यः ॥ ॥ पावमानिस्वैस्यः स्वस्येमी  
उंसुहादिपयस्वितिः ॥ अणितिः संस्तोरसोऽब्रह्मणेस्वसुतेहितस्वाहापावमानीस्यः ॥ ॥ ॥ पावमानीइशंठनइमंलो  
कमस्योऽत्रसुंकामायमद्वेअंतोदेवीद्विसमास्तास्वाहापावमानीस्यो ॥ ॥ पावमानीस्वस्योऽनीः सुदधादिष्ट  
तस्यतः ॥ अणितिः संस्तोरसोऽब्रह्मणेऽतैः ॥ हितस्वाहापावमानीस्यः ॥ ॥ ॥ अयनेदेवाः पवित्रेणअस्मंतुनतेससुतेन  
सहस्रधारेणपावमान्यः सुनंतुः स्वाहापावमानीस्यः ॥ ॥ अजापस्यपवित्रंवातोद्याहिरण्यंमेमन्नसविदेव्यस्तस  
सुखनीमहोः स्वाहापावमानीस्यः अजापस्यपवित्रंवातोः ॥ ॥ इंद्रसुनीतोसहमापुनाठसोमः स्वस्यावरुणस्य  
मीच्याः ॥ अमोराजाष्टिपासिपुनाठमाजातवेदास्रुजयंत्रापुनाठस्वाहापुनीत्यासहिताययेद्रोः स्वस्यासहितायये  
मायसमीच्यासहितयवरुणस्यप्रष्टणासिः सहिताययमायेरुद्रोः सुजयंत्र्यासहितायजातवेदसे ॥ ॥ ॥ अयंठ

५वो

३२

अपनुष्टुपयं च द ३५४

आ५

शीविष्टुष्वयोद३

पद्योगणः ॥ यद्देवदेवदेहनमित्यदिद्वपडितस्य विशिष्टवस्यासुवाकस्य विशिष्टेदेवात्तत्रयः सिगोक्रादेवताः आद्यम  
 वृष्टुप्रद्वितीयापठ्यसानाङ्गतीमहापक्रात्वात्तृतीयाः वृष्टुप्रवृत्तुर्थी वृष्टुप्रवृत्तुर्था वृष्टुप्रवृत्तुः सप्तपदा अतिशकरि षुष्ट  
 वृष्टुप्रवृत्तुः षुष्टवृत्ताना अतिजगती अष्टमी षुष्टपदा जगती नवमी षुष्टतीतुते द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस  
 प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस  
 यद्देवादेवदेहनमित्यदिद्वपडितस्य विशिष्टवस्यासुवाकस्य विशिष्टेदेवात्तत्रयः सिगोक्रादेवताः आद्यम  
 वृष्टुप्रद्वितीयापठ्यसानाङ्गतीमहापक्रात्वात्तृतीयाः वृष्टुप्रवृत्तुर्थी वृष्टुप्रवृत्तुर्था वृष्टुप्रवृत्तुः सप्तपदा अतिशकरि षुष्ट  
 वृष्टुप्रवृत्तुः षुष्टवृत्ताना अतिजगती अष्टमी षुष्टपदा जगती नवमी षुष्टतीतुते द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस  
 प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस  
 यद्देवादेवदेहनमित्यदिद्वपडितस्य विशिष्टवस्यासुवाकस्य विशिष्टेदेवात्तत्रयः सिगोक्रादेवताः आद्यम  
 वृष्टुप्रद्वितीयापठ्यसानाङ्गतीमहापक्रात्वात्तृतीयाः वृष्टुप्रवृत्तुर्थी वृष्टुप्रवृत्तुर्था वृष्टुप्रवृत्तुः सप्तपदा अतिशकरि षुष्ट  
 वृष्टुप्रवृत्तुः षुष्टवृत्ताना अतिजगती अष्टमी षुष्टपदा जगती नवमी षुष्टतीतुते द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस  
 प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस प्रदंशोपदा षुष्टीः वृष्टुप्रवृत्तुः द्विषड्पोदेशक्यै द्विदेशीस

रुतेन ४

शंसात्रुत्प्रायसः रां२ ५३ आ  
 आमशीव

वर ३२ ताग ४ य ४

निचक्रमकरो तुमामनेन संखाहा ॥ अययेगार्हपत्याया ॥ १॥ यदां प्रास्यो चकार धि ॥ २॥ आलि अर्हणं क्यमुपतिग्रमानः  
 हरे पश्यां रात्रे च ॥ ३॥ तान्यसंसावडदत्रा मृणानि स्वाहारा अचरते अपुरोस्पश्र ॥ ४॥ आदित्यं मृणं यदहं चकार यद्वा  
 स्यस्य इभारा जनेयः अग्निर्मातस्मादिरे नसः गार्हपत्या प्रमुं वृत्तु ॥ ५॥ दुरिताया निचक्रमकरो तुमामनेन संखाहा ॥  
 अययेगार्हपत्याया ॥ ६॥ अयन्मया पितामार्त्तस निने स्पकारं पिता ॥ ७॥ अग्निर्मातस्मादिरे नसः गार्हपत्या प्रमुं वृत्तु ॥  
 अययेगार्हपत्याया ॥ ८॥ अदिदैसितो पितरो मया तत्रातदमे अत्रणोत्तवामि स्वा ॥ ९॥ अयये ॥ १०॥ अयदत्तरि सं प्रथिव  
 सुतर्ह्यन्मातरं पितरं खाजिदि ॥ ११॥ सिमा अग्निर्मातस्मादिसादि ॥ १२॥ अयदाशसातिशसायत्पराशसायदेन संश्रु  
 मातेरे नंयपुराणे ॥ १३॥ अग्निर्मातस्मादिसादि ॥ १४॥ अतिक्रामामिदुरियं तं यदेन ॥ १५॥ जीमि रियं परमे सध्रष्टे यत्र यं  
 सुकृतो नापि हः कृतः स्रमारेवा मिश्रुतां वृत्तोकं खाहा अयये ॥ १६॥ त्रिदेवा अयते तदेनः त्रितये तन्मनुष्ये  
 सामृजे ततो मायदि किंचिदानरो ॥ १७॥ अग्निर्मातस्मादिसादि ॥ १८॥ दिविजाता अी सुं रंजाताया जाता ॥ १९॥ अयये  
 जीमिजा आपः तोपैः तानः सुधं वृष्टुं धतीः स्वाहा ॥ २०॥ अयदापो नक्रुडुरिते च रामयद्वा दिवा च तनं यपुराणे ॥

तंखा लोवी हिमडीकुल्लो नर धि ५

सुत्र २

दिरण्यवर्षे स्वदत्तुनी ननः खाहा अग्रः ॥ १५ ॥ ममेवरुणश्रुधीद्वमघाचमूडय्यत्वं मवस्फराचकखाहावस  
 र्णय ॥ १६ ॥ तव्यामिन्नक्षणावेदमानस्रदाशाद्येजमानोहविति अदेडमागोवरुणदत्तो विउमानात्रायुय  
 मोषिंखाहावकणाय ॥ १७ ॥ त्वीअमेवरुणस्पविहात्रदेवस्पदेकेव्यासि सीष्टाः यद्विष्टोवन्नि तमः शोषवानविश्व  
 द्वेषीसिप्रसुसुग्रास्वखाहाअग्नीवरुणस्यास्य ॥ १८ ॥ सवन्नोअमेवमोसवीं देवोत्तनिदीष्टाअस्येणसोमशो  
 अवयसुनोवरुणसंप्रसुं ॥ १९ ॥ सैस्खाहाअग्नीवरुणस्यास्य ॥ २० ॥ त्वमग्नेअयास्पयसन्मानसाहितः ॥ अयासदृमा  
 मूदिष्येयानो धेहितेणजंखाहाअमयेअससो ॥ २१ ॥ अयमचुवाकांसप्रमोगणः ॥ २२ ॥ वैश्वानरो ननु त्रैपथानामं  
 त्राणा विश्वेदेवा ऋषयश्चैश्वानरो देवता अथेगायत्री तया जगती ततश्चिस्त्रिष्टुतः सधर्मजगती अथम  
 त्रिष्टुप्रचरुहोमे विनियोगां वैश्वानरो ननु त्राणां पराश्रतौ अमीरुक्तेन वाहसाखाहाअग्नेयैश्वानराया ॥ २३ ॥  
 वैश्वानरस्पदंसनास्योद्देहरिणादेकः स्वपस्यसकविः ॥ २४ ॥ अनापि तरामहयन्नजयताग्निद्यवाद्यथिवीस्त्रिरे  
 तसाखाहाअमये वैश्वानराया ॥ २५ ॥ अष्टोदिविष्टोअग्नीष्टथिव्यां अष्टो विश्वार्थी रविवेश्वैश्वानरः सह

२५

३ स्तनाबानं वैश्वानरमृतस्पजोतिषस्पतिः ॥ अजस्वंधर्मनी महस्वाहा अग्नेयै वैश्वानराया ॥ ३

अ

सदानर

दी ४

य

साष्टोर्षीसो दिवासरिणः पातुनक्तं खाहाअग्नेयैश्वानराया ॥ १ ॥ जातोयदये सुवनारं वपुंमगोपाइत्यर्षी अविश्व  
 नरअज्ञाणविदग्मार्थयपातांस्वस्तिर्वाहाअग्नेयैश्वानराया ॥ २ ॥ त्वमग्नेशो विपारो श्रुवानागरोदसी अष्टाणाजाय  
 मानात्वादेवं अतिराचेरुषी वैश्वानराय जातवेदोमहित्वाखाहाअग्नेयैश्वानराय जातवेदसे ॥ ३ ॥ अस्माकममेम  
 प्रवस्युदिदिद्यधस्ममीवात्प्रयतोदस्मनी अवायर्षी अमतीर विदेवममेव अत्सुपरिजर्षराणं खाहाअग्नेयैश्वानरा  
 या ॥ ४ ॥ वैश्वानरस्पसुमतौ स्या सराजादिकं सुवनानामातिश्राः इतो जातो विश्वसीदिदेवैश्वैश्वानरो यतते स्यैण  
 खाहाअग्नेयैश्वानराया ॥ ५ ॥ अयमष्टमोग ॥ अष्टाणि गणः यतिमं प्रसुत्तरं रातं सुगुणं ज्ञानं जयादिहोमपदो जयादिदे  
 मानंतरंसकृद्पस्त्रीयसकृदवहायद्विरतिवार्य अमये त्रिष्टुक्त्वेवादेतिस्त्रिष्टुक्त्तं कुज्यात्वाजयाद्यकरणे  
 प्रधानहोमानंतरं स्त्रिष्टुक्त्तं सुदुयात्रात्ताः पक्षं ब्रमंतं विधानं मते उप्रधानवरुहोमानंतरं अर्वादनधर्मोणस्त्रि  
 कृतं सुज्यात्वं मत्रौ त्वेद्यवर्दिनमसिमात्तिपाहंरुहो हणं प्रतनास्त्रिष्टुक्त्तं त्रिष्टुक्त्तं त्रिष्टुक्त्तं त्रिष्टुक्त्तं त्रिष्टुक्त्तं त्रिष्टुक्त्तं  
 तमाहुवेमामितिपुरोडुवाक्यप्रचर्यात्स अष्टिष्टमग्ने अतिताष्टणादिविश्वादेवष्टतनापतिष्पोऽस्रानं पंथां अ

५ मादि होनान्मु सुयात् ॥ नवाजयाद मोजवन्ति ॥ जयादिमंत्राः कृष्णाडहोमप्रदं त्रिताः ॥ यदस्वकर्मणोत्परा विनियतदताः ॥  
 र भवदायविश्वेवापविशिस्त्रिष्टुददेवतावनुष्टु बिराट्छंदस्त्रोयाज्यानुवधमंत्रौ पठित्वा र

द्विश्विसाहिहोतिभ्यधुनंश्चास्यस्वाहाअग्रयंस्विष्टकृतेपुत्रस्विष्टकृतेहुवाब्रह्मधरदानांतकर्मकृवीता  
 आप्रसंबमतेउस्विष्टकृतेहुवाअग्रयानसमिधमनयेस्वाहेअग्रावाभयसुदयतनीवोराम्भवादेतिश्चभवंर्नि  
 पिहुवा।ततश्चास्यकर्मणंप्रायश्चित्तार्थंवेपरिधिप्रहरणानेवप्रकारोतत्वेतुवर्हिंरंजनपरिधिप्रहरणस्वाकरो  
 मांतकर्मकृत्वानतःप्रायश्चित्तार्थंतेहुवायासंश्चावादिहोमप्रकारोपिसमग्राकोविश्वेत्पोदवेस्यसावसा  
 गैश्यादिनायथेनंतरंशुभोहोमप्रकरेणदक्षिणोअथमतेह्ययोपिब्रह्मविसर्जनत्रिकर्मणिमनिहृत्तृतीसंवि  
 तकसेमादायनेवर्तेतौद्विंपावावतुष्प्यथपवित्रपातौप्रज्ञालव्यथाशुरवउपवित्रपकलेशापुरोनिधयतवपत  
 तिकांतेहेताविंसहअथैकस्यैवकवृत्तंतदाख्यमेवयजमानकलशाश्रान्णोर्ह्येवमवेद्यमानोविनिपिसंशुक  
 मंत्रसमुदायात्कसिंहमेमत्पुरित्तुवाकेवेभयनावायंश्रान्तकलशश्चैवपदेशअथ्याहुवाकास्पसोद्वादिवे  
 नअथादयःप्रवर्षिताः।सिंहमेमत्पुरियांघ्रमेतरामयोहकेमेहुदध्वेमेहृद्वनिमेपीपासाराजहृदमेहदशना  
 याइशमनिमेतद्विर्दरेमेरीरिवाःशयंकेमेद्गिरश्चैवैवपशुकर्मांभकारोवक्षेमेपसयाप्रीयमेष्टपुष्ट्रमेपामा

स ५४  
 म ५४

सं  
 २५  
 २६

सि २ ७२

स्वयोःकललेमप

मत्रायं३

बाधियंमते

सपत्नेमेनिर्जतिदुष्कृतिमिद्विःपरस्वतिमेःशुद्धिःपदुमेअत्रिगवयेमेआथंगोरमेशोकोगोअयामेखेदेराजायंमोहि  
 माःकृष्णशकुनेमेःशुद्धीस्वस्वकोमिपापगंधुस्वकेमेभ्रत्यराःकोममइश्यामहृतेमदुहोदिःकुललेमस्योलले  
 मेप्रद्याउष्ट्रमेहृत्स्वस्वपेमेहोमउर्वकोरुमेमांशःकुमार्यामालंकारःशकरमेकदसेहृदाकुनिमेस्वजोङ्गरमेदुःख  
 शोविहृतिमेस्ययोलोतायामेकदःशरस्वमेपाभूलिहीस्त्रीषुमेद्वतमजासिमेकवृशोत्रास्वोमइश्याश्रुदेमेक्ये  
 वेप्रपेमेकर्मकृत्यौराजन्त्यंशुनिमेइजानेनेपदेमेब्रह्मदयाकुलिंगेमेंदिलासउदिनिमेवमितिःकिंपुसुषुमेतोई  
 दौद्विपिनिमेतिष्णहृत्तिनिमेकिलासःशुनिमेदरिष्टंश्चावच्येषुस्तेहोविदेहेषुमेक्यथ्यामहावर्षुमेतोई  
 जवत्सु(तित्त्वाडंडुतेमेकाशिकाइहृकुसुमेपिक्कलिंगेषुमेअमश्चतयामेहृप्रजस्वाउष्ट्रमेअमात्रदेमेमेका  
 मेदत्ररोगोमदिकार्यांमेश्वरकेशःशुकैमेहरिमामहरमजत्यावभेमेतरावाणेमेपापवाहअसुमेअमात्रदेमेमेका  
 त्विषमपेहिपापस्युनरभनाशिनोसवानःपाप्मात्सुकृतस्यलोकेपाप्माशुचिविदुतोयानःपाप्मानजहातित्सु  
 त्वाजहिमोदयंअथत्रासिन्निविरतांसहसाज्ञोअमत्रायोनौद्वेष्टिसाविष्पतियमुद्विषअमुजक्षितिसंभय

मे २

जो ३

यर

स्यामस्यादिशि द्वेषं सवती तां दिशामेता अय उपसिचेत् पृथगतुर्मी प्रासमे सुपाशु संयस्माद्देष्टुं यंत्रवयं हि पृथी  
 अथाप्युपपात्रमानवेकमाणी येते देवजमानं प्रविशो जतत्स्ना देवो वसे प्रादेष्टुय सवने सुकृत्वां देवाया  
 वीचने कारयित्वा पायसेन माप्येत्पायत्रां ब्रह्मणा ज्ञातव्यत्वात् तस्येभो वृत्तिसदिरण्णास्त्रिदद्यान्नाया वृत्तं  
 सवनत्रयेण मौनी ससूद विष्णुष्यां चानियतं देय्यश्रतवेर्णवेकुर्वैर्यः प्रमुच्यते ॥ इहा लोकास्वाम्य महिते प्रवर्णे  
 मां भूतनाम्ना म्मदनात्सतस्यांसक्त मर्ममणि कर्णणेन प्रसंघे र्णस्वती यः प्रथितः सुरंगः ॥ माता उष्पचरित्रकी द्वि  
 विसवायस्यां बिकानामृतशाकल्या परमृत्नि रायं वरितः अपि हितदः पिता सायंको ब्रिकवेश लणामणिः प्रोत्त  
 दृ विश्वेश्वरो वेदेस्मात्रं मते नये वसपदे वाके इती ईर्ष्ये ॥ मतिर्येणं प्राप्ते प्रकृति रमणीया व्यवहतिः पराशा  
 लीश्याऽप्यजगति जवषेक तिपयो चिरं विरंतेणं मुकरतत्स्वते छि तिमियादियं सा सारण्य प्रवरमुनि विष्णुस्य  
 लितिः ॥ ॥ ॥ इति श्री पंडित पाणिनात कश्चरमज्ञो ज्योतिरुदरा नी विराजमान्यु मरुमपात्तु उत्रपमो भाव  
 स्रि संभे महा लघ्वाति धाने कर्म वि पाके स्वती यश्चरंगः ॥ कर्म वि पाके परितो जाया प्रासं गिरी परिसमाय प्रकृ

२७

व्याह

तादेव ५

२१

तमसरा ममा ॥ अथ कर्म ह्ययो पथो कृत्वा धि विपर्ययो क्रोशांस ॥ ह वात्पाद्ये मंध्या द्या धि कर्शि त्पांर्कं कृत्वे  
 इति कृत्वे हेतिश्रं द्राय प्रतो गवा मसा ॥ वेति कं वारा ॥ तिशतकृत्वा ज्ञापदाने पितृ त्कं कृत्वा ऽंगण द्वे मकृ  
 शं मुहो पापयुष्ये व्यर्थं मथं ॥ धि विपर्ययं इमे ते शोकाः कृष्णो ॥ ॥ ॥ इहा लोकास्वाम्य महिते प्रवर्णे  
 तं अथ व्याधि विपर्ययस्य नेन व्याधि वृत्तिदानं वदत इति प्रतिज्ञानोत्तादिदानीं व्याधिप्रतिकृतिदानं विवदुः  
 स्रडुपयुक्तं किं विदह प्रतिमा धि प्रकारा ॥ धि देवतात्मिका ॥ आंतको देवता तत्र व्याधि देवता व्याधि प्रकृतिः  
 जा कर्मणि वा धि देवतात्मिका ॥ प्रयेण सूर्येः सर्वे आरोगाणां मधि देवती आरोगं सास्करदि हे दितिस्यो अति ॥  
 कतिः तत्र व्याधि प्रतिमायां आंतको नाम देवता प्रतिमा ॥ अथ परिमाणं साह ॥ देवो पत्तं तदधीना तद्वत् प्रक  
 येत्वा ॥ सूर्य प्रतिमालक्षणमाह ॥ ॥ सूर्ये हि लोचनं पद्मे इदं ध्यानं कर इयो व्याधि प्रतिमालक्षणं तौ तद्व्याधि  
 दूरकर्म प्रकरणे प्रथमं कृत्वा धि भ्रमस्तो व्याधिते दास्यति मालक्षणा ग्यपि जिज्ञानि मंड ॥ परिमाणं वेदिकाप  
 रिमाणं वाह ॥ प्रोडशा ॥ घे वाह स्यायेर्मंडोपकृतो तत्यादे नोत्र प्रार्चं हि स्तोत्रायो च वेदिका म्प्रोडशा वाह्यदि

आधि धि कृत्वा ॥  
ॐ

त ३

शाशदा

नवति अमुना व्याधि प्रतिकृति ज्वपरिमाणमधि देवता प्रतिमा ४

नहीं

अथोपनिषत्सु

मंडल

वमंड

शवाश्रये वा ह्यश्रयि मितशांतिकर्मसर्ववृत्तितैर्देसैश्चत्संख्याकदृशः परिमितं चैतवैश्वानरमिण्डपेक्ष  
 तौतव्यादेनमंडपंस्पृशत्तथाशेनवेदिका मेकहसौमतां ऊर्ध्वीतापस्पृशत्तथाश्रया मश्रुत्तथाश्रयायामश्र  
 वेदिकायासवतीत्यर्थः उत्तरं प्राप्या मंडपान्तरं इति शान्तिशालां च वेदशास्त्रज्ञांदां तां कंडुं विना सस्यं  
 धंमदाचारं युवानां करुणां मृदुं हरिद्रं मंत्रं त्रं न विवर्तयत्प्रतियहस्युत्तथाचार्यं युं यो यो ह्युत्तमः सत्कारं  
 र्वकां शक्तिं निमः शक्त्यां च सायं एव च्छंलंकारादीनां चार्याय वरणकले गे च्छाया च्छायां शिनिस्त्वित्शक्तिं  
 मश्रुत्तयत्तैस्कारो गंधपुष्पादिभिः पूजितः ॥ आचार्यं कुरुमाह ॥ ॥ कृतोपसंस्कारं चो प्रतिमा मधिव्यास्पृशत्  
 प्रतिमं रोगप्रतिमं मधिविदेवता रूपप्रत्युपतिमां च आतं कौनामी मयुक्त्वा धिदेवताये नमः इति षोडशोप  
 चारं पूजितं विदधीत् अथवा वक्ष्यमाणं ॥ ॥ अक्षरं मंत्रेण वा मृदु जयेत्वा एव रोगदेवता मधिव्यास्पृशत् अथिदेवतां स्मृत्या  
 मपि मृत्युं प्रतिमाया मधिव्यास्पृशयेत् ॥ ॥ ततः सौराष्ट्राद्वरुणं प्रजयेत् ॥ ॥ ततो नंतरं कुरुमाह ॥ ॥ अक्षरं मंत्रेण  
 विवेच्य त्वर्चिर्मंडपाद्विद्विः प्राच्या पायसमांसादीन् बलिं क्षिप्यथं मंत्रैश्च विवेच्य तत्रावायं बलिदानमंत्रैः ॥ ॥  
 ४ नामाधवासयामातिवेदिकाया उपरि प्रतिमायां गंधपुष्पाद्युत्तराधिवास्य आतंकनाम्ये मयुक्त्वा धिदेव ४

३५  
३६

मंत्रादिना २  
२६

नि

५ अक्षरेण

या ३

स्तयेदिति ७

बुजा ३

आदिवायसवोरुद्रादेवौ ब्रह्मता निपन्नगां बलिदाने नदत्तेनशां विदुर्ब्रह्मसर्वैति नापीत्याडुषसिन्नावाह  
 भास्यं च्छासती नवैनिमोक्षे च्छुक्ते च्छुक्त्वा ल्यां च्छुले पनासांकारं सपर्याति मंडपस्याधि वेदिका मश्रुप  
 स्यसपर्याति मंडपस्याधि वेदिका मश्रुप स्यसपर्याति मंडपस्याधि वेदिका मश्रुप  
 तत्रोत्तं परिक्रमात् तिलानां च्छुक्त्वा  
 रक्षतेः पूजितो रणोत्तं पितापे तु गये नदत्तेनशां विदुर्ब्रह्मसर्वैति नापीत्याडुषसिन्नावाह  
 च्छुक्त्वा  
 र्चकमीति च्छुक्त्वा  
 णां संख्यां च्छुक्त्वा  
 लराशोपचक्षुः च्छुक्त्वा  
 पितृभ्यस्य च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा च्छुक्त्वा

नर

नर

अक्षरेण





यावेदसामसङ्घेरज्ञितासापुरदञ्जः स्वस्तये॥१॥ स्वस्तिनः इन्द्रो ह्यश्रवांस्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्व  
 स्तिनः चाक्षो अरिष्टनेमिंश्चक्षीनो बृहस्पतिर्दधातुं पदमकतः प्रथिमातरं सुतयावानो विदथ्यु  
 जगन्मथः अग्निर्जिह्वामनवः सरस्वतो विद्योनि देवाः अथसागमिन्द्रे॥२॥ इतद्रकणेलिप्रणयामदे  
 वाः सङ्घस्ये माज्ञातिर्यजत्राः खिरेरोगैस्त्वेषु वा सस्त्रयिष्यो मदेवहितेयदायुः॥३॥ इति श्रुत्वा  
 अतिदेवायत्रानश्चक्रा जरसंनयना॥ पुत्रसायत्रपितरोत्तवंतिमानो मञ्जारीरिणंतासुगंज्ञाः॥४॥ अदि  
 तिर्घोरदिस्त्रिर्त्रिर्दमदि॥ तिमातासपितासपुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पत्न्युना अदितिर्दुनिन्वा॥५॥  
 इदमेकं शक्रम्॥ स्वस्तिनो मर्मात्पामश्चिनासगः स्वस्तिदेवदितिरनवंपीः स्वस्तिष्णा असुरोदश्  
 तुनः स्वस्तिद्यावाप्रथिवी सुवृहना॥ स्वस्तये वासुपुत्रवामिदेसोमं स्वस्ति सुवनस्पयस्यति॥ बृह  
 स्पतिसर्वगणस्वस्तये आदित्यासोमं वंदुनः॥ विश्वेदेवानो अद्यास्वस्तये वैश्रानो वसुरग्निः स्व  
 स्तये देवा अवंतं वं स्वस्तये स्वस्तिनोरुद्रः पात्वेदसः॥ स्वस्ति मित्रावरुणास्वस्तिपंथेरवतिस्वस्ति

ज्ञतिमदिति

३१

स्वस्तये

न इन्द्राग्निश्च स्वस्तिनो इन्द्रो ह्यश्रवांस्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनः चाक्षो अरिष्टनेमिंश्चक्षीनो बृहस्पतिर्दधातुं पदमकतः प्रथिमातरं सुतयावानो विदथ्यु  
 जगन्मथः अग्निर्जिह्वामनवः सरस्वतो विद्योनि देवाः अथसागमिन्द्रे॥ इतद्रकणेलिप्रणयामदे  
 वाः सङ्घस्ये माज्ञातिर्यजत्राः खिरेरोगैस्त्वेषु वा सस्त्रयिष्यो मदेवहितेयदायुः॥ इति श्रुत्वा  
 अतिदेवायत्रानश्चक्रा जरसंनयना॥ पुत्रसायत्रपितरोत्तवंतिमानो मञ्जारीरिणंतासुगंज्ञाः॥ अदि  
 तिर्घोरदिस्त्रिर्त्रिर्दमदि॥ तिमातासपितासपुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पत्न्युना अदितिर्दुनिन्वा॥  
 इदमेकं शक्रम्॥ स्वस्तिनो मर्मात्पामश्चिनासगः स्वस्तिदेवदितिरनवंपीः स्वस्तिष्णा असुरोदश्  
 तुनः स्वस्तिद्यावाप्रथिवी सुवृहना॥ स्वस्तये वासुपुत्रवामिदेसोमं स्वस्ति सुवनस्पयस्यति॥ बृह  
 स्पतिसर्वगणस्वस्तये आदित्यासोमं वंदुनः॥ विश्वेदेवानो अद्यास्वस्तये वैश्रानो वसुरग्निः स्व  
 स्तये देवा अवंतं वं स्वस्तये स्वस्तिनोरुद्रः पात्वेदसः॥ स्वस्ति मित्रावरुणास्वस्तिपंथेरवतिस्वस्ति

स्याः

४ राघुनः



तु ब्रने नि य नो भवे

व संस्र उदे श नौ अत सः प्रदि शो त व ह्यु श नः प र्वे तौ क र्व यो त व ह्यु से नः सिं ध वः श मु सं श्रा षः ॥ १ ॥ श नो  
 अ दि ति र्त् व लु म रु तः ख काः ॥ श नो वि लः से मु प्र णा णो अ सु श नो त व चि क र म सु वा यु ॥ १ ॥ श नो दे  
 वः स वि ता त्रा य मा णः श नो त व ष सो वि सा तीः अ न्नः प र्जा शो त व ह्यु प्र जा स्य र मे न दै त्र स्य प ति र सु शो  
 वा ॥ १ ॥ श नो दे वा वि श्वे दे वा स व ह्यु मे न स र ख तः स द धी ति र सु शो म ति णा वः से मु रा ति णा वः से मु रा  
 ति णा वः श नो दि व्याः पार्थि वा श नो अ ष्याः ॥ १ ॥ श नः स त्प स्य प त यो त व ह्यु श नो वी तः श मु सं श्रा गा वः ॥ १ ॥ ३५  
 स वः सु रु तः मु ह स्य श नो त व ह्यु पि त रो ह वे ॥ १ ॥ श नो अ न्न एक प र्दो अ सु श नो प र्वे तः से मु श ह्यु गा  
 वः ॥ १ ॥ अ न्ने र्दि तु भ्या ष् सं स मु दः ॥ अ स नो अ पान्त प त्ति तु र सु श नं ष मि से व तु दे व सो पा न र सु श नो ष मि र्  
 वै तु दे व गो प णा ॥ १ ॥ आ दि व्याः रु द्रा व स वे ज्ञ सं दं ब्र ह्म किय मा ण न वी ॥ १ ॥ श व ह्यु नो दि व्याः पार्थि वा सो मी  
 जा ता उ त्त ये य ज्ञि या स् ॥ १ ॥ ये दे वा गं य ज्ञि या नां म नी य द्वा अ मृ ता क त ॥ १ ॥ ते नो रा सं ता मु रु गाय  
 म द श यं पा त ख सि सिः स दानं दे ॥ १ ॥ ॥ इ दे म र् स र्क म ॥ १ ॥ र द्वा ह ए वा जि न मा जि ध मि मि चं प्र

यज्ञियार ते ३

थि वे ष प या मि श म् शो श नो अ मिः क व तिः क र्व सिः स मि ह स नो दि वा स रि षं वा तु न कौ ॥ १ ॥ अ यो मु र्वे शो अ र्दि र्त् व या उ  
 धा ना तु प स्य श जा त वे द स मि ह्म ॥ १ ॥ अ जि ह्म या म र दे वा न स स क थ्या दे व क्वा पि ध म् त्वा स वा ॥ २ ॥ उ नो स या त्रि तु प्र  
 वे दि दं श्रा र्दि स्वां शि वा श नो व प रं प र्वा उ तो त्र रि द्यो प रि धे हि रा ज न र्ज नैः सं वे द्य स त्ति या तु ध न म् ॥ १ ॥ अ यो रि षः स  
 म मा नो अ मे वा चा श ल्ये अ रा मि ति र्दि हा नः ॥ ता ति र्वे द्य ह द ये या तु धा ना स्य ती वो वा द्य स्य ति र्वे ष जी ॥ १ ॥ अ मे नै वं य  
 तु धा न स्य ती र्धि र्दि स्वा सं नि र्द र सा चै र्वा ॥ १ ॥ प्र षा मि जा त वे द्य क्णी ह्मि क्थ्या क थि ल्म र्चि वि नो तु र्त् वी ॥ १ ॥ प य ने दा नी प  
 अ मि जा त वे दा सि षं त्र म नू त वा च रि त्तै य द्वां न रि ह्य प थि तिः प तं न म स्या वि द्य श र्वा शि शा नः ॥ १ ॥ इ त ल्म र्चि स्य पु दि यो  
 या त वे द आ नो ता ना दृ ष्ति ति या तु धा ना शो अ मे षु र्वा नि ज दि शो सु चा न ॥ १ ॥ आ मा दं ह्मि का स म दे स्य ना ॥ १ ॥ इ ह प्र वृ दि  
 य त मः सो अ मे यो या तु धा नो य र्द क्णो ति त मार न ख मि धा य वि ष र्त् व द स अ द्य षे र्ध ये ना ॥ १ ॥ इ ता मे ज ह्यु षा मे र  
 न्य जे षं धै व स्यो प्र ण य ष वे त ॥ १ ॥ र्दि र्वा र द्यो स्य ति शो सु चा नां र्म वा द न या तु धा ना र्त् व द सः ॥ १ ॥ र्वा द्य र्त् वः परि प थ्य दि  
 द्यु त स्य र्वा णि प ति क्णी स या त स्या मे ष र्द र सा णा ॥ १ ॥ हि न्ने धा मू र्त् यो या तु धा न स्य र्त् व ॥ १ ॥ वि यो तु धा नः प्र सि ति त्र प र्त्

जा शो षो १४

तं यो अत्रेतेन देसितमा विष्णुसूक्तं यज्ञात्तयेदासमन्मनेनं पणतेन वृद्धिः ॥ तद्व्ये च ह्येति धेहिरेनेशाफाजुजे  
 ये स पशु मियां तु धनं ॥ अथवा च ज्योतिषा देव्येन सद्यः सुखं तमचिन्तयेत् ॥ १॥ ॥ यदमे अत्र ज्यमिषुमात्राया तोय ह्यव  
 सूत्रं ज्ञानयं हरेकाः ॥ मन्योर्मे नमः सद्यो जायते यातया विद्या हृदये या तु धाना ॥ २॥ पराश्रुणी हितप्रसाया तु धान्यरमि  
 रत्नो धिसाष्टणी दिपरा विषाष्टर देवां षणी दिपरा सुसां सुखाना ॥ ३॥ पराश्रु देवाहृ जिनश्रुण सुज्यगी एष पथायं हृद  
 साः वाघास्रं नवाव संहं तु मर्म विद्युत्सु प्रसितिया तु धनः ॥ ४॥ ॥ यपो रुषे येन ह विषाख्ये नवना या तु धनं स्यो अ  
 श्याया सूर सिद्धी रमयेने वां श्री यो हिरसा षिट्वा ॥ ५॥ ॥ वत्सरी एण पय उच्चि पाया सस्य मासे या तु धनो रुव हाने प  
 वृषमये तस्ये विष्टु पाते पयं अम विष्णो विद्या मर्म वा ॥ ६॥ ॥ विष्णो वां यां तु धाना पितं वाट्टुत्तम मवितये दुरेती परे न देव  
 सदिता दहा तु परं ता गमो धीना हं नैयं ता ॥ ७॥ ॥ सना विष्णो सिया तु धाना सवां र्वां सिट्वा ननु सुजियु ॥ अमुद हसद ह  
 गच्छा दो मनि देत्वा सु हतः देया या ॥ ८॥ ॥ वनो अत्रे अर्थो दुक्ता त्वं पत्नी दुतर ह्यपु स्यात्ता प्रतितं असे स्रपिष्टा  
 अच संवो शुवतो ददत्तु ॥ ९॥ ॥ कविकायेन परिष्वादिग जगो सखे मत्क यम जये अरिणे नैव तं अमर्ष स्व नो ॥ १०॥ ॥ परिष्वा म्प ३३

४५

रा

दत्रे  
पश्यात्पुरस्तादधरादुक्ता

२२ २२

रं वयं विष्णुं सहस्य धीमहि धृषद्वर्ण दिवेदि रं विदेता र्नीयराधनी ॥ १॥ ॥ विष्णो नं तु सैव तः प्रतिष्ठा र्हसो दहा अमे  
 ति मे न शो विष्णान खराया सिर्वाष्टिः ॥ २॥ ॥ प्रत्यमे मिषुमाद दया तु धानो किमी दिना संवा शिसे मिजा एष्टं दग्ध  
 विषमन्मसि ॥ ३॥ ॥ प्रत्यं भप्रे मिषुमादं हया उधा वा किमी दिना संवा चिसा निभाष्टर्षं दग्ध विषमन्मत्ति ॥ ४॥ ॥ प्रत्य  
 प्रेदरं सो हः श्रुणी दिधिश्च तपति या तु धानं स्व र्हसो बर्त विषु च विष्णो ॥ ५॥ ॥ प्रत्य तं देत मयं रं सूती ॥ ६॥ ॥ आशु शिशोने  
 वृषलो नती मावना धनः की तप अर्षणी नां ॥ ७॥ ॥ सीकं दनो निमिष एक वीरः वा तं से मा अजय सा कमिद्रा ॥ ८॥ ॥ हे स कं दनेना  
 निमिषेण ॥ ९॥ ॥ स्या तं से ता अजसत्सक मिद्रि जिषु ना सुक्ता रेण अवनने न धु सुना ॥ १०॥ ॥ तदिद्रेण जय त तस्य दस्यो न  
 सुद से न हसा ॥ ११॥ ॥ स दुष्ट दसै सनिषं मि तं वृथी सी सष्टी मधु सुष्टे प्राणो ना सी सृष्टि सो ह्य सुभे न र्ख दसे न हसा  
 म्पा वा डवा धू उअथ वृपति हि ता स्तिर सा ॥ १२॥ ॥ हृदस्य ते प रि दी यो रथे न र्हो हा मिर्वं अप वाध मानः पन दस्ये ना  
 पष्टणो युधा जेय त्सा क मे द्या चित्ता र्थानां ॥ १३॥ ॥ स्थ विरः प्रधीरः सह स्वा धाजी स दमान उयु ॥ अत्रि वीरि अति सवा स  
 हो जा जै व मिद्र रथ मा ति गो वि सा ॥ १४॥ ॥ गो वति र्द गो श्री वि र्द व का वा डे उय स म अप मृण स्र गो जसा इ र्म स जा त अ उ वी

३६

४

बलविज्ञार

२ रं ब्रह्मा स्तानेता हृदस्य निर्दिष्टाण्यद्वाः पुर एतन्मोमः देवसेनानामजि-रंजतीनां जयंतीनां मरुतो यंत्रयां ॥ २

रयश्च मिर्दं सखायो अत्र सैरं च ॥ अग्निगोत्राणि सहसा गाहमानो दयो वीरः शतमं सुरैर्दो इष्टुश्च वनयुतनाषा  
लसुहो म्मार्कसेना अवरुं च परं यो सुर्द इत्यु विमोवरुणसराज आदित्यानां मरुतीनां उर्यो मद्मनसो सुवनस्ये  
व्याना नौर्घो देवानां जयता सुदस्ता ॥ उद्वष्य म्मद्य वन्ना युधा न्युत्सवा नो मा मकानी मनीसि निहृदवा जिना  
वाजिना न्युत्सवानी जयतीं न्युधाषा ॥ अस्माकमिर्दः ममिर्दु वृजे अस्माकं पाइषवसा जयन्तु अस्माकं वीरा उवरे  
सर्वस्वमं देवा अव ताह वे ॥ अत्र मिर्षा चितै प्रतिलो स्ये ती प्रहाणां गान्धे पारहि अत्रिषो दिनिर्दं सुवो कैरि  
ना मिर्दं मसा सवन्ना म्मो धे ता जयतान र ईदो वः वर्म्ये ह्यु उग्रा वं सन्नु वादवो ना शृष्या यथा सत्ता ॥ शापत दंत मय  
सूक्तम ॥ सुवा मिहृद्वा ह विषा जीवनाय क मद्वा तय द्वा उता र जय द्वा ता ॥ या हि र्ज्या द्य दि वै त देन त्स्या इडा मी प्र  
सुसुक्तमेना ॥ ह्यदि द्वि ता डुर्य दिवा परे तो य दि सृचोर नि कः नी ता ए व न मा द रा मि ति नि र्जै त्पु र स्हा द स्या र्धे मे न  
त सौर द्वा य ॥ सह स्वा द्वा ज्ञा त सार दे न शाना युष्मा ह विषा द र्धे मे नै श ती यथे मं शार दो नया ती दो वि अस्व डुरि त स्या प  
री ॥ अत्र ते जीव शर दो व र्द मानः शानं हे म त्ता छ ते सु व र्सा ता च ई द्या मी स वि ता ह ह स्या तिः शाना युष्मा ह विषे मी उ न र्द ॥ ४ आ हा

६५

३३

शतमिं

गसर्व

र्षं च विदवा उ न र माः उ न र्ने वाः सर्वां ति न्युः सर्वं विदवाः सर्वं मा युश्च विदिवा ॥ इ द म न्य सू क्त म ॥ त्व सू च वा जिनां दे  
व जै र सह वा नं स यु ता रं र्थानौ अ रि षे ने मि ए त ना ज मा श्रु च ध ये ता द र्मि हा डु र वे मा ॥ इ द स्ये च सं मा जै ड्वा वा स च सं ये  
ना व मि वा रु हे मा उ र्ध्वे नि ए र्थी व ड्वा ग र्ग रि मा वा मे तो मा परे तो रि षा मा ॥ स द्वा खि द्यः श व र्सा र्प व क्श्री सृ यै इ व द्वा ति षा  
ष सा ता नां स द्द स शी श त सा अ स्य रं हि त स्मा व र न्ने यु क्ती न्न श यो ॥ ए त दे क सू च स अ व सं हि ता व सा न ता ग र्हे अ ह  
यं प रि शि ष्ठी प ति वा न मो व ह्म ण इ या दि र्क प त्ति ॥ त व थ या ॥ तं हं यो रा व णी म दे गा तुं य इ या गा तुं य इ प त्त ये दे वः च क्षि त  
स्म नः ख क्षि मां नु षे च्यः उ ष्ण जि गा व र्से ष जी व नौ अ स र्दि प दे र्जी व नु ष्य दे न मो व ह्म णे न मो व ह्म ण ये न मः ए थि ये न म अ ष  
धी त्यः न मो वा व च न मो वा च स्या त ये न मो वि ष्ण वे म ह्ने न के री मि ति त्त्रि प ते र्वा त इ न्नो अ पि र्गो ता य ने मेः शानिः शानिः ॥ इ र  
शु ला य नी षो ष शं ति ॥ अ थ ते त्रि री या णो षो ष शं तिः ॥ त व श न्नो वा तं प व ता मि त्त स्या तु वा क्श स्य सो म का एं पा ति वा  
व सो म का षिः वा ता दा यो र्त्वि गो का दे व ताः आ घा ष ट् प दा ज ग ती हि ती या गा य नी ॥ इ डा र्थे र्क्वि सी ति प्र ति ष्ठा सी ति हे य नु  
षी आ र्वा दी ति हे अ नु सु तो ॥ य द हो वा त त श ति पं व प दा यै पी क्तिः वा त आ वा खि ति हे ॥ गे गा य यो ॥ शृ ष प द्य त श ती अ त रि

वात

यार

तः ३





योदेवतासवतीतितदस्तिपायेणमंत्राणामितिवचैवंकिंपकस्मिन्नपिकर्मोणिआतंकसृयोदियहनदवाणांप्रुप्यवा  
 तदस्तिपायेणामित्राणामितिवचवचनोअतएवमूलमीवजपेवउरोवावासाणोणीतोइतरमवजपिवेकमेक्यथा  
 र्मनवंचा॥तत्रजपसंख्यामादा॥अयुतेनमितिरव्यादिनाअयुताहतेत्यर्थः॥अमितेवोवासेअयुताधिकेत्यर्थः॥अ  
 यदेनैवतादेनैवराणेनअयुतपादेनाअयुतसंख्याप्रधानमंत्रजपेथीसूर्यव्यातिरिक्तस्ययहनदवमंत्रजपेव  
 त्पोधेखुसारेणप्रधानमंत्रजपसंख्यातोन्पूतनसंख्याकर्तव्येःपरिवारितप्रतितावाचार्यःब्रह्मप्रवृत्तिर्किडेवास्थदि  
 लेवापरिवारितैतत्रुद्धताचानंस्थापयित्वेइत्यत्रयोअक्षरसमिधोददितत्संपद्येति।तस्मिन्दोमेअक्षरसमिधोतवंति।द  
 विश्वसवेतिद्विनमाज्यंअक्षरसंपाद्योआज्यसंसादांनीस्वरद्योक्तप्रकारेणसंस्कारचरोक्तयादेवतायष्टव्या  
 तत्संबंधित्वेनचउरोमुखीस्त्रिभुवतीत्यादिविधिनवरुनिरूप्यप्रवणंसीपादनी।ततःपादोअज्यसंसादासिच्यार्यवा  
 ततःपाकावैरपाव्यीरुस्थास्यंअवसिच्योअतिघातंविप्रत्यतिचार्यसमिधोद्ववाअज्यप्रद्ववासेतश्चरुतिलोषुसु  
 यावास्वादानंमूलमंत्रमुदाहरन्मूलमंत्रवाद्यादिअक्षिप्रतिमादेवतासूतवायुवरुणादिदेवताप्रकाशकोर्मंत्रा  
 रोग्येनास्करादिहेदितिवचनादधिदेवतासूर्यप्रकाशकःपागसिहितोद्यणिःसूर्यइत्यष्टाहरमंत्रोपिमूलमंत्रः॥दोमस

इति

परिकल्पिते

४दि  
३ने

तदनंतरंवरुमुत्तरतद्योस्तत्रनिघा ३

३३

लोमेर

ख्यामादा॥तद्वरुसहस्रंवाष्टशतमष्टाविंशतिमेववेति।अत्रप्रधानदोमोव्याधिप्रतिमादेवतोदेशेनदोमसूर्योद्देशेनदो  
 मश्रीअतएवसूर्यव्यातिरिक्तयदोदोमेनद्वत्रैप्रधानदोमपेक्षयापूरुतसंख्यापरिकल्प्या॥इत्याप्राणीद्विती।चात्रेणो।तमो  
 क्षमावैराणोपर्वीप्रवेक्तिप्रकारेणइवाअत्रेप्राणीद्वितीमपिवद्वमाणमंत्रेइवाप्राणीतामोदोएरणपात्रेविमोचनेकुर्यात्।अ  
 यदेवतालीगमंत्राणांमित्येननपदेनसूचितोपिअशिविद्येनपदेनपिअमंत्राःप्रदस्येते।तन्नामूलेप्रदोदिपोवाणो  
 शुक्रोपारबुधास्ततः।युरुमंदेइकेदेअनदत्राणित्रिशास्त्रिवाःत्रिवाइत्येतदोपावाकमेणयहमंत्राप्रदस्येते।।व्याधिप्रति  
 मादानेयत्रयादेवतावायुवरुणादिरूपातदेवताप्रकाशकोवैदिकेर्मंत्रोआद्यः।अथत्रासर्ववद्याधिप्रतिमादानेसोर्म  
 त्राएवयाद्याः॥।सवृष्ट्वेक्तिष्टीसूर्यइत्यष्टाक्षरोर्मंत्रः॥उद्यत्रयष्टवोवाउद्यनेद्योतिष्टवस्यकएवंप्रस्फएवकाषिसूर्यो  
 देवता।असुष्टुप्रहंद-जपेविनियोगः॥।विनियोगस्याक्रियमाणस्यजपदोमप्रज्ञानेवोनपार्थक्यस्तन।तिउद्यमद्यमित्र  
 मद्द्वारोहंत्वरदीवो।दृष्टोर्गममसूर्यद्वरिमाणंचनाशय।शुक्रेशुमेहरिमाणंरोपणाकासुदध्वासीदोअथोहारिद  
 वेष्टुद्वरिमाणंनिदध्वासिउदगादयमादिव्योविश्वेनसहसासदोद्विषंनेमद्वीरंधयन्मोअदीद्विषतेरयो।इत्यर्थंत्रिचःसौर  
 मंत्रः॥।शुक्रंनेअनदितिशुक्रमैवस्यत्तरद्वजमभिः।शुक्रोदेवतात्रिष्टुष्टदः।प्रज्ञादोविनियोगः।।पावसुत्तरवापि

२मे

रि वि

विनियोगो ज्ञेयः शुक्ले अथ्यं जतं ते अन्प द्विषुरूपे अहनी द्यौवा सिंश्चा हिमाया अथमिस्वा क्षवो सदा ते पूर्षानि हरा  
 निरस्तः अग्नि मूर्द्धं च गारं मे वस्य विर्यं त्रिषिः अगार को देवता गायत्री ह्रीं दः अग्नि मूर्द्धं द्विषु ककुत्पतिः यद्विष्टयि वा अयं  
 अयं पारं तां सिजि चै ति ॥ गउं धुयु सेति बुध मे वस्य अग्नि त्रिषिः बुधो देवता विष्णु प्र ह्रीं दः उं दुधु स्व अग्नि त्रि जी गृधे न मिष्टा  
 पूर्त्सिं चं सृष्टे थाम ये बा पुन क्वा क्वा पितरं सुवान मवाता अश्वयि तं तु मे चै ॥ कथान श्रि व इत्य स्य रा ड् मं वस्य वाम देव  
 काषि रा ड् दे वता गायत्री ह्रीं दः कथान श्रि व आ पु व इती मदा वधः सखा किय सं विष्टया वृता ॥ इह हस्यते अन्प स्य र हस्य  
 ति मं वस्य गृह म द काषिः इह हस्यति र्दे वता इष्ट प्र ह्रीं दः ॥ इह हस्यते अति ग द र्या अर्हा हि म हि सा ति क तु म ज्जु ने पु य दि र्द र्य ह  
 वं स ज त पर्ज म त द स्मा सु द वि णि श्रे दि वि व मु ॥ अ नो दे वि गि ति श नै श्व र मी व स्य सिं धु ही प का षिः ज नै श्व र दे व ता गाय त्री  
 ह्रीं दः अ नो दे वि र वि ष्ट य आ पो न क तु पी त य मी थार ति र्दे व तु नः ॥ ॥ अ प्या य स्वे ति सो म मं व स्य गौ त म का षि सो मो दे व ता गाय  
 य त्री ह्रीं दः अ प्या य म मे उ ते वि श्व तं सो म वृ ष्य त वा वा ज स्य म रा ड् ॥ के र्दं का षं ति ति के तु मी व स्य म धु र्दं का षि के त वो दे व  
 ता गाय त्री ह्रीं दः के र्दं का षं के त वं पं चा म र्या अं मे से ॥ म सु षा इ र जा य था ॥ इ ति अ द मी र्वा ॥ अ थ न द व र्म वा ता त व तेषा  
 मा षा र्थे नि धी य ता ॥ अग्नि चै पा तु क ति कं वा दी नां न रु चं धि पि रि प ति ता नी मी वा णां वि श्वे दे वा क ष थ क्र मे णा ग्नि पं ज

पति

कं

द३

३७

१२

विष्णु

नृप

नत्रत३

पतिः सोमो रुद्र अदितिर्देहस्यतिः सर्पाः पितरो ईर्यमात्सगः सविता वासु शिशाभी मित्र ईडो षजापतिरुणविशिष्टा निर्र्मि  
 तिभ्राणा विश्वे देव वा र्दे व्ना विष्णु र्दे वः इन्द्रात्मको वरुण अजापक पादः इन्द्रो अग्निः इषाश्चिनो यम इति देवता विष्णु प्र ह्रीं  
 दः अग्निः अग्नि मूर्द्धं च गारं मे वस्य विर्यं त्रिषिः अगार को देवता गायत्री ह्रीं दः अग्नि मूर्द्धं द्विषु ककुत्पतिः यद्विष्टयि वा अयं  
 गो वा च्यः अथ मी र्वा ॥ अग्नि र्जः पा उ क ति कान द वं दे व मि ट्टि यी इ द मा सो वि व ह णं ह वि रा र्थं सु द्यो त न ॥ ॥ अ य म् नो त्रि र्म  
 जो य म् के त वां य स्ये मा वि श्वे स्थे सु व ना नि स र्वा सि क त्रि का नि रा ति र्दे व सा नः ॥ अग्नि र्दे व स वि त्दे व्वा तु ॥ ॥ अ प्र जा प ते रो  
 दि णि वि तु प त्नी ॥ वि श्व रू पा वृ द न वि व रा सुः सा नो य म् स्य सु वि ते द्धा तु य था जी वे म् श र दः सां वी र ॥ ॥ दि णि दि सु द ग  
 त्प र सा त्वा वि श्व रू पा णि प्र ति मो द मा ना ॥ ष जा प दे ति र्दे वि षा व ह य त्नी ॥ षि या दे वा ना सु प क्षा तु य त्नी ॥ सो मो ग जा म् ग र्वा  
 र्षे णा आ ग ह व शि वं न रु चं प्रि य म स्य ध मः आ प्या य मा नो व ड् वा ज ले षु रे तः य जी य ज मा ने द धा तु ॥ ष्य त्ते न रु चं वृ ग र्वा  
 र्ष म सि ॥ प्रि य र्वा ज च प्रि य त र्म प्रि या णां त र्मे ते सो म द वि षा वि धे म र्म ॥ षि हि प दे र्वा व तुः प दे ॥ ॥ आ र्द यारु डः ॥ य थ मा न णि  
 ॥ अग्नि दे वानां पतिरग्निः ॥ न द व म स्य द वि षा वि धे म मा नः य जा री रि ष म् नो त वी र रा ॥ ॥ इ ती रू रु द स्य प रि णो ट्ण कुं  
 र्वा न रु चं सु ष ता द वि र्चः षु चं व मा नो ड रि ता नि वि श्वा अ पा द्य र्म सु द ता म र ति ॥ ॥ उ न र्ने दि यो दि तिः स्म णो वृ षं उ न

जा४

मंत्रात्र३

द्विनियोगो ज्ञेयः शुक्रते अथ्य वृजते ते अन्प द्विषुरूपे अहनी यौवा सिंश्चा हिमाया अत्र सिंखा क्षवोच इते एषं निदर  
 निरस्का अग्नि मूहं वंगार मंत्रस्य विद्वं ऋषिः अंगार को देवता गायत्री ह्रीं दः अग्नि मूहं दिव ककुत्पतिः यदिएषिया अय  
 अपरितो सिजि च्छे तिगा उं दुध्य सेति बुध मंत्रस्य अग्नि ऋषिः बुधो देवता विष्णु प्रहृं दः उं दुध्य स्वा प्रेप ति जगृ घेन मिष्टा  
 प्रहृं सीं सु जेथामयं वा उं न क्रां वं सा पितरं सुवान मवातां अचियितं सु मे वै ॥ कथान श्रिच इत्यस्य राहु मंत्रस्य वाम देव  
 ऋषिः राहु देवता गायत्री ह्रीं दः कथान श्रिच आयुव इती सदा वृधः सखा कियसे विष्णु या हत ॥ एहस्य ते अन् इत्यस्य वृहस्य  
 तिर्मंत्रस्य वृहस्य मद ऋषिः वृहस्य तिर्द्विना वृष्णु प्रहृं दः ॥ वृहस्पते अति यदयो अर्वा हि मा हि सा तिक वु मज्जने पुय दि इत्यह  
 वसे जत प्रजमत वस्मा सु इ विणधे दि विवम ॥ अन्नो देवी रि ति श नैश्च र मी वस्य सिं धृ दी प ऋषि वा नैश्च रो देवता गायत्री  
 ह्रीं दः अन्नो देवी र वैष्णव आपो न कृत्तु पी तयं सी योर तिसै र्वं वु नः ॥ अण्या यस्त्रे तिसो म मंत्रस्य गौ त म ऋषि सो मो देवता गा  
 यत्री ह्रीं दः अण्या यसं मे उ ते विश्व तं सो म वृहस्य त वा वा जस्य संग ॥ के र्ठ का वे नितिके तु र्मंत्रस्य मधु र्द्वं ऋषि के त वो देव  
 ता गायत्री ह्रीं दः के र्ठ का वन के त वे पे त्रा मय अं मे से । समुष द्वि र जाय थाः ॥ अग्नि य ह म र्मंत्रः ॥ अथ न ह त्र मंत्राः तत्र ते षा  
 मा धा र्थे च ति धी य तो ॥ अथ मि न्त्रे षा वृ क्तिके त्वा दी नां न ह त्रे षि षि परि प तितानी मंत्राणां विश्वे देवा ऋषयः क्रमेण सिधं ज

क  
क  
३  
३

पक्षि

२२

२२

नक्ष

तत्र ३

पतिः सोमो रुद्र अदितिर्दहस्यति सर्पापितरो ईर्यमात्तगः सविता वासु मिद्राभी मित्र ईर्दो षजापति गुण विशिष्टा निरक्षि  
 ति न रा षो विश्वे देव वा र्वा ह्या विष्णु र्द्वसवः इंद्रात्मको वरुण अजा एक पादः ॥ हिवुः द्विषः प्रजाश्चिनो यमः इति देवता विष्णु प्रहृ  
 दः अष्टोः सुष्णु प्रहृं दः राये ति ज गती जपे विनियोगः ॥ अथ वयं कर्म दे मा द्विकर्त्तृ च व तितत्र कर्मणि हो मा दौ विनियो  
 गो वा च्छा ॥ अथ मंत्रः ॥ अग्नि मंत्रः पा उ कृ निकान ह त्रं दे व मि द्वि यी इ द मा सो वि व द्वा णं द वि रा र्मं सु हो त न ॥ १ ॥ अथ स्य नो त्रि र्वम  
 यो यस्य के त वा य स्ये मा विश्वे स्थे नु व ना नि स व स कृ त्रि का नि रा नि र्मि र्वसा नः ॥ अग्नि र्द्वि व स वि ते द धा त्वा ॥ प्रजा प ते रो  
 द्युर स्या द्वा विश्वा रू पा णि प ति मो द मा ना ॥ षजा प द्दे र्ति र्द वि षा व द्द य त्ना ॥ षिया दे वा नां सु प धा वु य जै ॥ सो मो रा जा सु ग र्वा  
 र्षे ण ॥ आ ग ह त्रा शि वं न ह त्रं षिय म स्य धा मः ॥ आ ष्या य मा नो व द्ध षा ज ले षु रे तः प्र जी य ज मा नि द धा तु ॥ ए यं ते न ह व र्म ग र्वा  
 र्षं म क्षि ॥ षि र्य राज त्र षिय त र्मं षिया णीं त स्मै ते सो म द वि षा वि धे म र्मं ॥ षि द्वि प दे र्वा व तः प दः ॥ आ ई य रू दः ॥ अथ मान प  
 ॥ अथो दे वा नां प ति र षि या णो ॥ न ह त्र म स्य द वि षा वि धे म मा नः प्र जा री रि ष न्मो त वी रा च्छा ॥ इ ती रु द स्य प रि षो ष ण तु ष  
 दी न ह त्रं सु ष तां ह वि नः ॥ ष सुं च मा नो डु रि ता नि वि श्वा अ पा द्य धी स सु द ता म र ति ॥ ॥ उ न च्छे दि यो दि तिः स्म णो वृ षं उ न

जा ४

मंत्रा ३

महा

पुनरेतां यज्ञं पुनर्नो देवा अनियं उ स्वो पुनः

ति

देवानी

वसुतः पुनर्वेद विषाय जामा ॥ एषा वाने दद्यादिति रनञ्चो विश्वस्य सत्प्राज्ञ गतः प्रतिस्या ॥ पुनर्वेदो ह विषो वद्वयं नी पि  
 यं नाम प्ये उ पाथः ॥ एतद्दस्यः प्रथमं जायमाना निष्पन्नं तत्र मानसि वचनं वा अथो देवानां च तना सु जिष्णुः द्विषो वसवो अत्र  
 यन्तो अस्मा निष्पद्यु रसा इत मध्यतो मः एतस्यै च परि पा उपपन्नं वा धेती द्वेषो अतये कपुतो सुवीर्यस्य पतं श्यामा ॥ यः  
 इदं सोपेत्यो ह विरक्त जाये ॥ अस्मेषाम सुयति वेतः यत्र त्रिरीष्टि वी क्षियन्ति तेन सप्यसि ह व मा ग मित्यः ॥ ११ ॥ ये रोचते स  
 र्कस्या पिसर्प्ये दिवं देवी मनुसी च री तियिषामा म्प्रिषाम सुयति कार्म तेत्यः सप्येत्यो म धु म जु हो मि ॥ १२ ॥ उपपन्नं पितरो ये म  
 धा सु मनोः जक्स सुकृतः सुकृत्याः ततो नै ह वे ह व मा मी मिषाः स्वधानिर्यज्ञं प्रयतं ज्ञार्थं तो ॥ १३ ॥ ये भिदु धाय इ न रिद म्भः  
 ये इ न रिदं भ्रये सु लो पितरः क्षिर्यं ति यंश्च निद्रयो उ च प्र विद्वा धा सु य जै सुकृ ती ये षं ॥ १४ ॥ ग वं पतिः फाल्गुनी नाम सि वी त  
 द्यमि चरुण मित्र वा र्कं तं वा प वं प स वि ता रं सु नो नो डी वा जि वं त्त सु प सी विशो मा ॥ १५ ॥ ये नो मि वि धा उ व ना नि सी जि ता य स्य दे  
 वा अत्र सी र्यं ति वे तः ॥ अर्जै मा रा जा इ न रं क वि ष रं फा नी वृ ष तो रं वी अथो देवानी त्ग वो त्सा ग सि द द्या वि दुः फाल्गुणी सस्य वि  
 ज्ञात्वा अस्मत्स्यं हं द्र व ज म ज रं सु वी र्यं भो मे तं दे वी व दु प स नु दे हा ॥ १६ ॥ स गो दि वा ता स ग इ त्य द्वा ता स गो दे वीः फाल्गुनी रा वि  
 वेदा स ग स्ये म ष स वं ग मे म य व दे वः स ध मा र्द म दे मा ॥ १७ ॥ आ या नु दे वं स वि तो प यो या तु हि र ण्य ये नी सु वि ता र ये नां व द नू र्त्

यः

पकं

४ त्वा

म ४

८३

८३

३२

३३

सुक्तं विद्वान्पापसंभ्रमे प्रयच्छं प उ रिं भं म ह्यो ॥ १ ॥ राणा ह सः प्रयच्छ व म तं व सी य रं द क्षिणे न प्र ति रू द्नी मा र्शं दा तार म य  
 स वि ता वि दे यं गो नो ह सार्थं सु वा ति य ज्ञो ॥ २ ॥ श्व श्वा म ह व म म्भे ति वि चां सु चं सु सी सु व ति रो व मा नी ॥ नि वे श य न्न म्भो वि श्व  
 रू पा णि वि श्वं सु व ना नि क्षि त्वा ॥ ३ ॥ श्व गो वृ ष नो रो व वा णः समी र या तु र न्मा मा त रि श्वा ॥ अ प द्वेषो सि मु द ता म रा तीः त नो वा यु  
 स्र दु नि ष्य शृ णो ह्यो त न्न स्र ष्य त द्वा वि चा वि वी षां त न्न द व र्त्त री ता अ स्म म त न्नः प्र जी वी र व ती स नो वा गो ति चो अथैः सम न  
 कृ य ज्ञां ॥ ४ ॥ वा यु र्त्त नै ह व म स्ये ति नि षां ति ग म ष्ठी गो वृ ष तो रो व वा णः समी र या तु र न्मा मा त रि श्वा ॥ अ प द्वेषो सि मु द ता म रा तीः ॥  
 त नो वा यु स्र दु नि ष्य शृ णो ह्यो त न्न द व र्त्त री ता अ स्म म ह्यो ॥ त नो दे वा सो अ उ ज्ञा न उ कार्म य था त र म ड रि ता नि वि श्वा ॥  
 ॥ १२ ॥ ह र म सभे वो यं व र्त्ती नाः त दि द्वा मी कृ ण ता न्नि दि शारो त नो दे वा अ उ म द नु य ज्ञं प थ्या त्प र सा द स य न्नो अ स्म ॥ १३ ॥  
 न च वा णो म धि प न्नी वि चा र्खे श्रे षा वि द्वा मी नु व न स्य गो पौ वि श्व वा श न्न प वा ध म नो अ प दु ध नु द ता म रा ती ॥ १४ ॥ रु  
 ध्या हे स्म ये न म सो प स ध मि वं दे व मि त्र धे य न्नो अ स्म अ नु रा वा र्त्त वि षा ह ह भ सः श तं जी वे म श र दः स वी रा ॥ १५ ॥ वि व न  
 द व सु द भा उ र स्रा व अ नु रा ध्वा स भ ति य ह दं ति न्नि मि त्र प ति पा थि ति र्द व यानैः हि र ण्य ये च्छि त तै र न रि द्यो ॥ १६ ॥ इ चो  
 ज्ये षा म सु नं द मे ति य स्मि चूर्त्त व ज्ज र्ये त त रा त स्मि व य म मृ तं ड ह्ना ना द्धु र्ध त र म ड रि त ड रि ष्ठी ॥ १७ ॥ उ र द रा य वृ ष

म २

५४

३१

सायधुसवेआषाढायसहमानायमीढुषोतस्मिन्वयममृतं तु हानाङ्गधत्तरेमडरिर्तंडरिष्टी॥३॥पुर्नदरा  
 यचषसायधुसवेआषाढायसहमानायमीढुषेइद्यायज्येषामधुमहुहानाउरुं ह्राणोवयजमानायनेकी  
 ॥३॥मूलेषजांवीरवतीं विदेयपरायेवंनिर्मातिंपराजीगोनिर्नहर्धपशुतिःससकं।अहर्नूयायजमानायमधी॥  
 ३३॥अहर्नेअधुसुवितेदधाउमृलंनक्षत्रमितियददातीं।परावीवात्रानिर्नतेमुदानि।विंप्रजायेजिवमकम  
 ससायादिद्याआपःप्रयसासैसंबृहृवःआअत्ररिहउतपाथिवीर्याया।सामोषाहाअधुसैतिकामीतामंतीणआपः  
 वीस्योनआपःवीस्योनालर्वती।३५॥अधुसुप्यायाअनद्याःससुदियाश्चिनेत्रीरुजप्रासवीर्याः।यामोषाहा  
 मधुलक्षयान्तितानआपःवीस्योनातयेचु॥३६॥नानोविश्वेउपक्रावंवृदेवाःतदश्रीषाढाअनिशयंतुयज्ञं।  
 तन्नहर्ज्ञप्रथतीपशुत्यरुषिदृष्टियजमायकल्पती॥३७॥अधुचांकन्यायुवतयःसुपेशकैःकर्मकृतःसुतीवी  
 र्यवतीविश्वेदेवांहविषावर्द्धमत्रीः।आषाढाःकोसुप्रांउयज्ञीः॥३८॥यस्मिन्ब्रह्मात्यजयसर्वमेतजअधुसुलो  
 कमिर्दमृत्ससं।ततो नहृत्रमसिजित्याश्रयं दधीत्यहणीयमानं॥३९॥तुनोको ब्रह्मणारीजितेमोर्नहृत्रम  
 सिजिद्विवष्टीतस्मिन्वयंपतनासंजसेमननेदेवासाअधुसु।नंतुकामंस्मिन्वयंपतनासजयेमतनेदेवासीउ

३५  
 तत्रो २  
 ३०

उप्रविष्टाः।पुण्यं नक्षत्रमति संविशामः

३३॥श्वेतिश्रोणाममृतस्पगोपां पुण्यामस्याउपक्रणोमिवावंमदीद्वीविष्कपत्नीमज्योप्रतीचीमीनीहविषा  
 यजामः॥३४॥श्वेक्षविलसुरुगायो विचक्रमेमदीद्विष्यष्टिदीमत्रविदंतकाणप्रतिप्रवइहमानावृणंशोकयद  
 मानोयक्रयती॥३५॥अष्टेदेवांसवःसोम्यसां चतस्रोदेवीरजराःअविष्टाःतिजज्ञपाठरजसःपस्त्रावसेवत्सरीण  
 ममृतस्वस्त्रि॥३६॥यज्ञेनःपाठयसवःखुरस्यारदक्षिणतोसियेदेवेस्पःकृणुतेदीर्घमायुःशतेतिप्रथसिष्टे तौदेवैःक  
 णुतेदीर्घमायुःशतेसदस्वात्पजा निधत्र॥३७॥यज्ञेतेराजावरुणतुपया।तुतबोविश्वेअस्थियदुदेवा।तंनोनक्षत्र  
 शतसिषसुषाणादीर्घमायुःप्रतिज्ञिषजानि॥३८॥अजएकपाडुजगासुरस्यारविश्वस्वतानिप्रतिमोदमानं॥  
 तस्यदेवाःप्रसवंतिसद्वैप्रोसुस्वविष्टाः।पुण्यं नक्षत्रमति संविशानमनोअरतिरघंशसागश॥३९॥जह्वराज  
 रुणाधिराजःनक्षत्राणेशततिषयसिष्टेअपदासोअमृतस्पगोपाः॥४०॥वित्राजमानासमिधनउयःअत्रि  
 ह्ममनुहृदग्या।तंस्यर्धदेवमजमेकपादंशोषपदासिअनुपात्रिसंबे॥४१॥अदिद्वुंज्ञेयःप्रथमानएतिदेवा  
 नायुतमावृषाणांतंरह्मणःसोमपास्तोम्यासःश्रोष्टपांदासोअतिरंतिसत्रे॥४२॥स्वत्वारएकमतिकर्मदेवा

६२

३४

३३

शोषपवसर्जतिया च्छंदं किं ॥ तेषु भ्रियं परिषदं च्छुं तं अदिं रं नं ति नमसो पस्यथ ॥ १ ॥ एषा एषो वै वै वेति  
 पंथा पृष्टि वती पशुपावा ज्वयो ॥ इमानि दद्यात्पयन्नासु पाणसु ॥ न्नीया नैरु पांयं तां यज्ञा ॥ २ ॥ इन्द्राद्यस्त  
 च्छुं छुरे वती नः गावो नो अश्वी अत्रे उरणा अरुं र्दो त्रौ च्छुं धा विरूपा जसु तां यज्ञमा न्नाय जज्ञौ ॥  
 ३ ॥ तदश्विनावश्च्युजो ज्युतां मुत्तंग मिथो खयमेति रश्चैः च्छुं च्छुं च्छुं द विषा यज्ञं त्रौ मधु संप्रकौ यज्ञ  
 प्रासमकौ ॥ ४ ॥ यो देवानां तिष्य जौ द्यवा दौ ॥ विश्वस्य द्वा वा द्यतस्य गो पा ॥ ति नदो वं नुं या णो पयती ॥ ५ ॥  
 नमो श्रिस्यां दृष्टमोश्च्यु रयां ॥ ६ ॥ अथाप्याम न सरणी स रं सु तयमारा ज्ञा स ग वा च्छि च्छी तौ कृ स्यरा जा म  
 द तो म द्वा हि सु ग नां पथाम सत्यं कृ लोत् ॥ ७ ॥ पप्यास्मि न्न ह व्रिय म्पतिरा जायस्मि न्नो नमस्य भि र्गौ द वा नं  
 दस्य वि र्वे द्वा वि णाय जा म अथाप्याम न सरणी स रं सु तयमारा ज्ञा स ग वा च्छि च्छी तौ कृ स्यरा जा म  
 सधु द्वा द्वा मिरिति वृ च्छस्य गौ तमो वा म देव ऋ णिः अ नि र्देव ता वि शु र्छं दः मूर्धान दि व द्य स्या वा र्द स्य स्या स र  
 द्वा ज ऋ णिः वै श्वान रो देव ता वि शु र्छं दः पु न र स्था दि यो म स्या अ मि ऋ णिः व सुरु द्वा दि स्य देव ता वि शु र्छं दः ॥

३५

४१

व्यन्तामप्रववामाहृतेनास्मिन्यज्ञेधारयामानमोभिः ३

स्प३

३३३३

परि उदरदुपार

एषां दर्वी तर्कस्या विश्वे देवा ज्ञाप्यः शत क्रतु र्दधता विंशु र्छं दः स स ते अग्र इत्यस्या अग्नि र्जी णिं सप्त वा म सि द्धे  
 वता ज ग ती शि शु श स र्वे णां मंत्रा णां प्र णां डु तो वि नियोगं स सु द्वा र्द्र मि धु मिं शु मा नां मृत त्व मान द्वा ॥ दृ त स्य ना  
 म ग्ने सं य वि त्रि जि ज्जा दे वाना म मृत ना ति ॥ उप व द्वा अ व ण ङ् स्य मानं च लः शृ गौ व मी न्तो र ए त च्छ ॥ १ ॥ व त्वा रि शृ गौ  
 ज्यो अ स्या पा द्वा द्वा शि स न्न दृ द्वा सो अ स्य वि धा व दौ शृ ण तो रो र वी ति म हो दे वो म र्त्य आ वि वे द्वा ॥ २ ॥ मूर्धान दि वो  
 अ र तिं प्र थि व्या वै श्वा न र मृत तां उजा त म धिो क वि स र्वा ज म ति थिं ज ना ना मा स ना पा वि ज न यं दू दे वा ॥ ३ ॥ न स्वो रु द्वा  
 व स यैः स मिं ध तां पु न र्द्र द्वा णो व सु नी थ य ज्ञो ॥ दृ त न त्वं त मु वो व र्द य स्व श ह्वाः से तु य ज मान स्य क मा मां ॥ ४ ॥ प्र णो द  
 विं प रा प त सु व णां पु न रा प ती ॥ व स्ने व वि क्ता व द्वा इ म्भ र्त्त श त क्र मं तो ॥ ५ ॥ स स ते अ ऋ से स मि धः स स जि द्वा स  
 क्षि क्क्षं सं र्धे अ ण्य स स भ्र मा प्रिया णि स स नो जाः स स धा वा य जे ति स प्रयो नी रा य ण स्या दृ ते न स्वा र्द अ प्र य ये क्ख  
 नारा य व सु रु द्वा दि श्रे स्यः श त क्र त वे अ ग्र ये स स व ते वा ॥ ६ ॥ इ ति प्र णो ड्द्र मि मंत्रा ॥ ७ ॥ ए वं प्र णो ड्द्र मि मंत्रा ॥ ८ ॥ इ ति प्र  
 ता मो द्वा स्य वानं तां किं कुर्या दित्य त आ दा ॥ ९ ॥ अ व लो मा द्य था लि ग म द्दी स्या म उ पा कें तः प्रा ड्यु र्व स्या ये स्ये  
 ३ ति लो ३

दिया ५

६१

३५

तेरस्य्यामानिरोगिणः अस्त्रिजायेणदतीणां हेमगतेण सुष्ठिना निःप्रसृज्यततः प्राप्तिश्चावयं चाल्लोः सदा ॥  
 तेः खाने कलशोऽतो तिरसिभिच्यस्वयं पुनः मांर्ज्येव्यथाष्ट वैदसेगतेण वाससां ॥ ३ ॥ अतिवृत्तिः ॥ अस्त्रि  
 क्षिणमथाऽत्रः ॥ अत्ररासिखर्वो अत्रे तवस्त्रमात्पाऽनुलेपनः ॥ अत्रिप्रहाणं निर्वैर्यं बहानां तु विमोघनो प्रवृत्ति  
 सुखमाचार्यमस्य प्रतिमां तुतां प्रदद्यादसिणांतस्मै मथाक्नेसुपुच्छितो अत्रुतो मां अथासिगमिसादि अत्रुतो मां  
 अत्रुतो म्येऽनां अत्रुपादतः ॥ अत्रुपादपर्यंतमित्यर्थः ॥ अथासिगं अत्रुतत्तदेव चारोगिणि निराकरणघोतकमंत्रप  
 दलिगंतदनतिक्रमेण अत्रुस्पां अत्रुस्पां सिक्तास्पामित्येतत्सकं पठत्रां अत्रुसंपातैः ॥ दोषकाले ॥  
 वादुत्वाप्रत्याङ्कति एकास्मिन्यात्रे अत्रुद्विदं वः स्थापनीयां ॥ तिबिंदव अत्रुस्यं संपाताऽत्रुस्यं अत्रुयमर्थः ॥  
 अत्रुसंपातौः प्राडुसुखस्य रोगिणं अत्रुगं अत्रुलोम्येनाप्ये अत्रुवाच्यं अत्रुद्विस्पामित्येतत्सकं पठत्रां अत्रु  
 नायेणदतीणा सुष्ठिना सुवर्षशलाकी गतेण शिरसी प्रवृत्तिपादपर्यंत रोगिणां गानियथासिगं निःप्रसृज्यत  
 तः शत्रिपठत्रां अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥

३५२  
३५४  
३५३  
३२

३५४ ५५३ ३२

चार्य सुनर्यथा प्रवृत्तौ अत्रुलोम्येन अत्रुस्पांमित्येतत्सकं पठत्रेनेवदसेण वासा परिमार्जयेदिति अत्रुवाचि प्रेव  
 काले प्रवृत्तौ स्थापितकलशश्चित्तमंत्रं पठत्रे पठत्रे परिशेष्ये दये मंगलवार्थं अत्रुत एव पात्रं विरे मंत्रं अत्रुप  
 योष्टद्विस्वाशरवोक्तशांतिपठत्रे कुब्जद्विस्वाशरवोक्तशांतिपठत्रे कायात्रुत्वा अत्रुवृत्तिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥  
 अत्रुपरिपाटी ॥ ॥ रोगिशांति प्रकृत्यस्य ॥ ॥ अत्रुसदक्षिणया अत्रुप्रतिमानं प्रतिवृत्तीती अत्रुवाच्योदिः प्रतिवृत्तीया  
 अत्रुहरी गी अत्रुतवस्त्रादिरले कृताः ॥ अत्रुरासिखर्वः सवप्रवृत्तिः अत्रुवमाचार्यमस्य अत्रुतां प्रतिमां अत्रुवाचि प्रतिमां च दद्या  
 वयदे शांति काराटदे बहानां विमोघनं निर्वैर्यं बद्धविमोघनं अत्रुसति संसंबो अत्रुद्विगादिः सचः अत्रुद्विगादिः ॥  
 अत्रुअस्य प्रतिमाया अत्रुवस्त्रादिरले कृताः ॥ अत्रुरासिखर्वः सवप्रवृत्तिः अत्रुवमाचार्यमस्य अत्रुतां प्रतिमां अत्रुवाचि प्रतिमां च दद्या  
 तिति मुख्यापदानः असमर्थश्चेदावरणप्रलयैव अत्रुदरजानि वत्रे तिगोणः पदानां प्रतिमां दद्या ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥ अत्रुद्विगादिः ॥  
 अत्रुप्रतिमादानं संवमाहा ॥ ॥ पयोद्धवः पथमकरं सभास्वस्थवाहनं प्रतिमानेन दत्तं ननु अत्रुप्येत्सर्वजगद्गुरुसंज्ञ  
 दं ननु जिन्यथा अत्रुमन्यजमनि वाहतां सप्रसया स्यात्तस्य सर्वशमयत्वसोमं वेणानेन दत्वा तं अत्रुण पसं हमा अत्रु

सूर्यप्रतिमां

५२

ज २ प्रत्ययाः प्रत्ययोज्ञानं ॥ ६५३

आसीमंत्रमधुव्रज्यतसुरवेनाश्वलोकयेत्रासमुरवेप्रतिहृदीवर्षेणां आचार्येणास्यनुज्ञातः प्रविष्टोसव  
 नेनिजां आचार्यस्याप्रतिहृदीवपद्मेतद्वर्षेणैवां आखियेदक्षिणादत्वात्काराधनमश्चिनौ ध्वजनेरुस्रसं  
 तर्प्यदीनानाश्रीं उपस्थिताः ॥ अखियेदक्षिणादत्वात्काराधनमश्चिनौ ध्वजनेरुस्रसं तर्प्यदीनानाश्रीं नुप  
 स्थाताश्चैमंगलध्वनिनातोयेसर्वेषामिधिसपक्षवेः मित्रसिर्मावितेः स्नातृमनकोत्तुक्रमेदणः प्रसन्नचेताः  
 रूपादेवाचेयित्वाशतं ह्येतावां महर्षेवातदहं वा क्रियासाङ्गुण्यमिदयो मिथानेनो जयित्वाथरथ्ये हं ज  
 तं सुखिः ये ये रोगाः प्रधीधं तेराजयद्महारादयः तेषां तेषां प्रतिच्छेदादनेरिष्टाप्रयत्नतः प्रतिच्छेदः  
 ॥ अक्षिस्वामित्येतासु क्रमनरोगिणां गानिपरिमां ज्येदियुक्तोतदिदानीं स्वकृपदश  
 ते ॥ अक्षिस्वामितेनासिकास्यो कर्णास्यो हृत्स्यो कक्षस्यो मित्येस्यो मण्डस्यो मण्डस्यो विहृदामितो ॥  
 अक्षिस्वामितेनासिकास्यो कर्णास्यो हृत्स्यो कक्षस्यो मित्येस्यो मण्डस्यो मण्डस्यो विहृदामितो ॥  
 अक्षिस्वामितेनासिकास्यो कर्णास्यो हृत्स्यो कक्षस्यो मित्येस्यो मण्डस्यो मण्डस्यो विहृदामितो ॥  
 अक्षिस्वामितेनासिकास्यो कर्णास्यो हृत्स्यो कक्षस्यो मित्येस्यो मण्डस्यो मण्डस्यो विहृदामितो ॥

३५१

४३

४ति  
०

३५४

शि

मर

श्री

व

३ अक्षीत्यामित्यस्य हृत्स्यस्य कक्षस्य कर्णास्यो विहृदामितो ॥ अक्षिस्वामितेनासिकास्यो कर्णास्यो हृत्स्यो कक्षस्यो मित्येस्यो मण्डस्यो मण्डस्यो विहृदामितो ॥  
 ३ मास्ति काजि क्षाया विहृदामिते ॥ श्रीनाम्स्तत्र लिहायः कोकसा न्यो अत्र क्पाद्वा यत्तदेोषणां ३

अंगादंगा ह्योत्रो लोत्रो ज्ञातं पर्वणि पर्वणि यत्सं सर्वस्माय त्वनस्तमिर्मे विहृदामितो ॥

रवर जे२

हंसर्वस्मादात्मनस्तामिमं विहृदामितो ॥ अस्य सूक्तस्याऽश्वनायनवास्वाऽनुसारेणायं पाठ्यार्थः ॥ तैविरि  
 यशास्वाऽनुसारेण तु अमिको ज्ञातः पाति ह्यदमिनाणिः ॥ अस्मादिदं स्यात्सुवीं किञ्च मन्वैर्योर्षेदः ॥ अहं समानो ॥  
 ॥ मदाहर्षे वा अहं हि ते प्रहं धेर्मा धट्टनाम्ना म्मेदनात्मसस्यो सत्कर्ममाणि कृगणिनमृणैरिणं अतुर्थः प्रथितस्वरे  
 गः ॥ माताङ्गुण्यचरित्रकीर्तिविलवायस्यो विक्रानामत्पशाकल्यापरसुर्विगार्थं वृत्तितः श्रीपेदि सङ्घः पितामोयं  
 कौशिकवेक्षन्त्पणमणिः श्रीतद्विश्वेश्वरो वेदस्मान्मतेन ये सस्येदवाको हतीर्बहेते ॥ मातियेपं तात्रे प्रह  
 तिरमणीयध्ववहतिः पराशले श्वाघ्नजगति अजवसेकतियो चिरं वित्रेते प्रां सुकरतलरुतो स्थितिमयादि  
 थं व्यासारण्यप्रवरखनिशिष्यस्य जिति ॥ अतिश्रीपठितकारिजातु कदास ह्येत्यादिविरुदविरदावली वि  
 राजमानश्रीमदनपालपुत्रस्य मं ध्रुत्तुनिवंधे मदाहर्षवा सिधनेकर्म विपाके अतुर्थस्तरंगः ॥ रोगप्रतिमा  
 दानविधिरुक्तगोशाश्चित्रिधुक्तकर्मजा दोषजा अयं ज्ञाथेति ॥ मातथावर्षेदे ॥ कर्मप्रकोपेनेकदा वि  
 देयेते दोषप्रकोपेने सवेति वाग्या तथा परे प्राणिसुक्त कर्मदोषप्रकोपजाः कायमनो विकाराः ॥ इति ॥ ॥

४२

४२

तेरोगाश्चेत्तरोगाः कर्मजा उच्यन्ते तत्र प्रथमस्तः प्रायश्चित्तं विधेयं प्रायश्चित्तं तदिदानीं दिक्कृती ॥ तत्रा  
 चकर्मविपाकसंयुते ॥ ॥ प्रायश्चित्तम कृत्वा तत्र कुर्यात्कर्म किंचिन्ना ॥ अनिशीर्षं मथे नि संवदेते द्विगुणं उ  
 नादादेर्दयादिसि ॥ तैरोगाः ये चरोगाः कर्मजा उच्यन्ते तत्र प्रथमं प्रायश्चित्तं तदिदानीं दिक्कृती ॥ तत्रा  
 तिस्रश्च जपे श्रुतौ सि ॥ इत्युक्तं ॥ एतन्नियमोऽपि न्यायानां प्राक्यापुन्यात् तमश्च संश्रमं न्यत्रि विद्वान्ना वेद वि  
 द्वा लक्षणं ज्ञा वेदवृत्तिका र्त्तना ॥ प्रणतिसिः देवतानमस्कारैः आरोग्यं सास्करादि तिस्रानमस्कारः प्रियः सूर्य  
 इत्येदं पि चमरं एण ॥ ॥ तथा प्रणति शब्देनाश्च प्रदक्षिण क्रिया फलव्यते ॥ ॥ जपेः वेदपारायण ॥ महा  
 सोरः शतसु द्रापुसु प्रसन्ननामाः पामार्जनाः विष्णु हृदयादि जपेः ॥ ॥ अशु संरोगी तथा ॥ ॥ इष्टोप  
 चारजः कश्चि कश्चि त्र्योपचारजः ॥ तत्संकरं द्रवंत्यन्तो व्याधिरेवं विभ्रामता ॥ इष्टोपचारदोषो ल्या इष्टो  
 पचारजः कर्मजा संकरज उच्यन्ते जपे दोषो ज्ञानोपायमाह ॥ ॥ अथानिदानं दोषो ल्यं कर्मजा हेतु  
 सिर्वा नामहारे तोत्य के देता वक्रको दोषकर्मजाः ॥ यथानिदानमनति क्रम्या समन्तर द्रव्यमानं महारवेप

६ आरात्र इत्यस्या अशिकां शतः पाणिः खेन अग्निर्दीषिः वनस्पति देवता अनुष्टुपु बंदः वनस्पति मंत्र लो विनियोगः ॥  
 ३२

२२२

त्रणमं

म्यादिभिः दानमतिक्रम्य यज्ञाय ते तद्दोषो ल्बो हेतुर्त्त विद्वान् शनं वरद्वयमाने ॥ ॥ हेतुर्त्त विनायदा दोषस्य  
 महारसः कर्मजा दोषाः अल्पके देता वक्रकः स्वल्पनिमित्तं अधिक्यो धो अत्रिकाः अतिमहतीयः पद्मो सवेश ॥  
 तमेवाह दोषकर्मज इति तथा निष्कृत्यो दोषे जन्मा तु दोषे जस्वो षधेनादि ॥ उच्यता ज्ञायमान सुनिष्ठ  
 ल्यो षधे से वयी अपगो हे विव्यर्थः ॥ ॥ अदोषजन्मा कर्मद्वयस्यैः यथापिकर्मजत्वा दोषजत्वानि  
 श्रयः तत्र प्रायश्चित्ताद्य ॥ ॥ अदोषं चक र्त्तमस्य ॥ ॥ प्रणति शब्दे नीः श्व ल्ब प्रदक्षिण क्रिया इत्युक्तं तत्रा  
 स्याः पति मंत्र ॥ ॥ आरात्रे अग्नि र्स्वारा त्यरश्चरु सुती निवाते त्वाति वर्ण ॥ ॥ स्वचिते सुवने स्पती स्वस्ति मे सुवन  
 स्यते ॥ ॥ तथा पौरालिकश्रीको पिसर्यते ॥ ॥ अद्विस्पं दे उजस्पं दे उः खं दे उः द्विविंतिता ॥ ॥ त्रुणां सय सुस्य  
 नमश्च यो मय स्वमेति शत्रुणां संबधि सौ सयुत्त संसयं से मय स्वव्यर्थः ॥ ॥ शत्रुणां समुत्थानमित्यपि पा  
 परि ॥ ॥ ॥ इत्युक्तं तत्रा ॥ ॥ अथ वेदपारायण विधिः ॥ ॥ इति लेकृत्य यत्वा ॥ ॥ मंत्रोपसमाधाय  
 परि ॥ ॥ ॥ तास्या देवता त्पोऽनुहोति अयमे सोमाये द्याय ॥ ॥ विश्वे स्पं दे वस्यः ॥ ॥ प्राप्स्योऽप्रयो यजुस्य

सौराजिपर

श्री मन्त्रः



तसततः४

तस्मिन्मन्त्रागम्यानिनास्यान्तरानध्यापेनास्यान्तराजननमरणेअशुचीनांतरावहरेनान्तराविरमेतःप्रावदक्रमे  
 धीयत्रैयवद्वाराविरमेतंत्रीत्राणायामर्नावस्पणवन्वायविधाययावकालमधीयतेतःसर्वेनिशांनि  
 शात्ररसंभामाऽरण्यकैलिलेलोप्यपरिददोद्वात्रआदधत्रेवद्वाहणलोजनंदक्षिणादानप्रदद्यात्परते।  
 नविधिनावेदमधीयाद्यतोवेदोसवतिमगःशुद्धिश्चसवतिद्वास्यांपारायणास्यांमसिश्चानोजनइहाधीति।  
 अदतेत्यःप्रसुच्यतेविलिङ्गस्यःपतनीयपातकेस्यःशुद्रायोरैःसिकींगाशुनिमज्जेसवतिचतुस्यःशुद्रा  
 न्नामोजनानात्वेधनात्स्वीमेवनाअपअतिरयाअज्ञेनादतोसवतीअयाद्यद्दहणाद्दहणाद्यसंयुपा  
 नांअपद्रिवाहणस्यलोहितकरणास्यशुद्धनभासुवर्षेयत्यतिसेयोगाअमत्रतिःयाजापद्यानांदानावर  
 णाहयज्ञोपवेष्टेनाअप्रष्टतिश्चांवायणस्यानाचरणादुरुतल्पगमनइज्जखनागमनाअनवृत्तिमुरापीनंनइ  
 शतिरश्राविययाजनादसोममानीदन्नायतश्चएकादशतिवह्निणदननाद्वाद्वाशिष्टर्षिजग्मेइहजन्मक  
 र्त्तैःप्रवैःपापैःप्रसुच्यतेखगलोकंगच्छतिपिदेखगलोकंगमयतिअभिष्टोमादीनुकृत्स्यात्तितेःकृत्स्नाः

सा  
४६

३४

एणाञ्जीलोहितकर४  
४१

ऊर्नहनार

ब्राह्मणोक्तिकः इदिति२

कृत्

रिष्टंभवतिवेदाध्यायीसदैवःस्यादप्यामासपवात्रौषिंयंयंकामयतेकामंतंतंवेदेनसाधयेत्असाध्यानादि  
 यत्किंचिद्ब्रह्मणोहिफलमहेति॥समाधेयेनायसुष्णातर्पयतीति।समाधेवेदपारायणेसमाधेर्नदेवतः  
 प्रवैःक्राःअभिषोमाद्याःयस्यप्रातर्पयतीति।यस्यवेदेनसहितर्पयतीति।यस्यवेदेपारायणेत्सप्येदस्यप्रा  
 धान्यमुच्यते।अथवाहारादिमादतिचतुष्टयात्सकंयजुःशशेरुचतेनैतदुक्तंभवति।तद्वैःपैःसूर्यामि वां४  
 स्यनेनप्रकारेणतर्पयिष्यामिमादीन्सर्पयतीति।नास्यान्तराजननमरणेअशुचीति।नाशुचिःहेतुस्ते  
 ष्विष्यं।नाह्नात्माहरेदिति।उपक्रांतवेदपरायणमध्येनव्याहरेद्वाह्यापयेत्वात्थालोकिकवचनमि  
 षिपिनइत्याद्याविदितैर्नैमित्तिकमर्माद्युपयुक्तं।किन्तुकर्यादिसर्थः।निशानिशांतरसंभामाऽरण्यसलि  
 लेलोप्यः।परिददोद्वाहिति।लोप्यः।शिव्वापरिहाप्यतर्जयिष्वेति।आवर्षपरिदद्यात्समापयेत्।निशांतरनिशयः  
 मंत्राव्याहारेकसमीपीस्त्रमिकावा।निशादिकालादेः।शोअवर्जयिष्वत्समापयेदित्यर्थः।द्वास्यांक्रा  
 षिष्टीति।क्राशिःपावमानाशिःपारायणद्वयैपावमान्यश्मिलित्वोक्ताफलायकल्पनइत्यर्थः।एवमुत्रय

५दि

४ नित्य

सतिलंर

तामु

पारायणांशं

त्रापिपारा ॥ अथमदासोरमंत्रा ॥ उडुसंजातवेदसंदेवंवहंतिकेतवः दशेविश्रायसूर्यशा ॥ अययेता  
 यवोयथानहत्राययक्रुतिः सरायविश्ववक्षसे ॥ १ ॥ अथमस्यकेतवोविश्रमयो जनां अत्रुनाजंनो अय  
 योयथा ॥ २ ॥ अतरणि विश्वदर्शिते स्वैतिष्कदसिमर्या ॥ विश्रमासासिरोचनशा ॥ अयं देवतानां विश्रः प्रस्युदुं दे  
 षिमात्रोप्रात्यदिश्वं स्वद्वैत्रो ॥ ३ ॥ येनापाके वक्षोः सारण्यते जने अत्रा ॥ अरुणे पश्यसि ॥ ४ ॥ अथमस्यकेतवो  
 मेविरनः स्पष्टहानिमानो अक्रुतिः पश्यं नमानि सूर्यये ॥ ५ ॥ सप्तस्वा हरितोरथे ॥ वदंति देवसूर्यशो विक्रसे  
 विवैणा ॥ अयुक्तं सप्तसुं वक्षोरथस्यनस्यः ॥ तालियातिस्वस्यक्रि ॥ ६ ॥ उडुयंतमस्यपरिष्पोतिष्पपुनत्र  
 रं दिवं देवत्रासूर्यममना ज्योतिरुत्रमशा ॥ ७ ॥ उयत्रयमित्रमदआरोहंनुतरादिवं ह्रदोगंमसूर्यं हरिमाणं  
 यिवेनासैय ॥ ८ ॥ अत्रेयमेहरिमाणरोपणाकासुधमसि ॥ यथोहारिद्वेषुमदेरिमाणं निदधु ॥ ९ ॥ अय  
 दगादयमादिद्योविश्वेनसदससहाद्विषत्रेमखं रंधयन्मोहं अहं द्विषते रधु ॥ १० ॥ अइदमेकं त्रयोदशं अ  
 सूक्तया ॥ त्रिं देवानासुदनीकं वद्धुमित्रीं वरुणस्यभिः ॥ आप्राद्यावापथिवी अंरिहं सूर्यं आत्माजगतस

3 ज्यो  
६६

लि ६  
४९

गाद स्प

घार

ने

सुषुपशा ॥ सूर्ये देवी सुखसंरोचमानोसर्पेनयो अत्रस्योतिपश्चाद्ययवानरो देव्यत्रो सुगानिवितवै प्रीतिना  
 द्रायैतद्व्याशा नद्रा अश्वा दूरितिः सूर्यस्य विवाएतेद्या अत्रुमायोसाः नमस्यत्रो दिव आष्टमसुः परिघात्त  
 थिवीयं तिसय ॥ १ ॥ तत्सूर्यं स्पष्टदेवत्वमसिद्धं मडाकतीर्वितरं संज्ञतारयदे स्युक्तं दरिभसंखडात्रा  
 वाससुत्रसैतेसिमसै ॥ २ ॥ तन्मिअस्यवरुणस्यात्तिरक्षेयैरुपेकृतेदौरुपेकृ ॥ अनन्तमव्यदुशदस्यपाज  
 इहमव्यहरितः संतरंति ॥ ३ ॥ आद्यादेवा उरितासूर्यस्य निरं हसापिष्टतानि स्वर्गावन्नो मित्रावरुणोममहवो  
 मदीतीं सिंधुः पृथिवीउतद्यो इदमवषं सुसक्तया ॥ ४ ॥ इदं मित्रं वरुणं मग्निमादुरथोदिव्यः सुपषो गिरुत्मात्रा  
 एकेसद्विप्रावद्धभवंदस्य अिये ममातरिश्चानमाडु ॥ ५ ॥ अथ नित्यानेउस्यः सुपषो अयोसाणां दिवसुयतेति अ  
 वद्वत्ससना इतस्यादिघतेन पृथिवी सुघते ॥ ६ ॥ अयं इव अहं सः सुविषद सुतरिज्ञसहोतावेदिति थिडुगेण  
 सत्वादिपद्मसदं शब्दो मसजागोजा कतजा अदि जानं ॥ ७ ॥ इयमेका ज्ञेयत्वा सूर्यं स्वती उचमसाविदादु  
 सना अत्रेव त्रिद्याया सुत्रो भुंघतान्य दीवया ॥ ८ ॥ अयमप्येका ज्ञेयत्वा सूर्यं स्वती उचमसाविदादु  
 रः

दा ३  
त ४

तर उ

रं व

संतर

देवता

४ अ

कलाय रथो बंधे दिने स्यात्प्रियसो अर्थमश्नत्पुत्रः ॥ एषां केशवः ॥ सूर्यो विदध्वीं श्रेष्ठो रुक्मिणी  
 जनिमना बुधालो सो मोदि वा दृशो रोचमानः कृत्वी हतः युक्ततः कर्त्तुं तिर्त्वा ॥ असूर्य प्रतिवरो न उजा  
 पुलिभो मे शिरे शो निरे वेः प्राणो मित्राय वरुणास्त्रवो वीनागसो र्यत्रे अमयो ॥ शिविनः सदस्ये सुतैश्चरेदं कृता  
 वानो वरुणो मित्रो मित्राय बंधुं चंद्राड्यमत्रो अर्कमानः ॥ शैत्र्यं च का उच्चं ति सुसंगो विप्रवधाः साधारण्य  
 ये मित्राणां च बुद्धिर्मित्रस्य वरुणस्य वैश्वमेव्यसमा विष्कृतम्मासि ॥ ता उद्वे निप्रसेविता इना नामं महो के  
 वरुणं च ॥ सूर्यस्यासमानं प्रक्रम्य विद्वत्सम्यदेतसो वदति ॥ अर्थे कः ॥ ॥ विना जमान उपसामुपस्थाद्रेक  
 देस्य बुद्धमानः ॥ एष मे देवं विना च च्छयः समानं विनिं क्षमः ॥ ॥ शिवो उक्त उ स च्छा उदः ति हरे अ  
 र्यं चरणे लाजमानः दूतं जनी छर्येण प्रसूता प्रथमं ॥ इत्थं पासि ॥ ॥ यत्रा च्छुरमो गृता गाह मस्ते तो  
 नदीयने ॥ ति पायः ॥ ॥ च्छयं मे को द्वे च्छा उदयं चो व सुदिव ए ति प्रतिके रो पदमं सुर्वदति देव तशो  
 विश्वमेव द्वा से अरं ॥ ॥ शीर्षः शीर्षा जे जगत स्त सुषुष्यति समा विश्व मो रजः सद्य सार सुदिता य सूर्यं वंते

३५  
४५

नेर

न ४ न ५ या १ कर  
जिहाण  
६२

रत्रा पिपारायणत्रयं गां गानं मिलि च्छा साधनं निमज्जं च्छवति ॥ प्रतो च्छनी त्र्यर्थः ॥ प्रजापत्यहाना वरुण  
 अकां त्र प्राजा पत्याना मंडुछा नो एवं चंदाय ण स्या ना चरणो यत्तो पवे धनं यत्र विनाशः ॥ ॥ इत्यनं प्रत्या राय  
 ण विक्रिः ॥ ॥ अथ महा भौ रं मंत्राणां च्छ्याद्या चिधी यतो अथ भौ र्यो णां मंत्राणां भू क्संख्या ष्टौ द्विवतं च्छं  
 मित्रवद्व्यामः प्रवी चार्थ क्रमे णो दु र्यं ज्ञात वेदमं मि नित्रयो दश च्छं सु कं क धे न प्रक धे न दृष्टो ॥ यत्र मत्रा  
 त्पने सुष्टु नो त्रे वा घनय नृत्वा रो मद्रं प्र निष दं त्या द्वि प्रत्रा शनी चित्रं देवानो सुद गादिनि ष्टु चं सुकं मं  
 गिर से न कृ ये न दृष्टं त्रे षु समि द्रे मि त्रं वरुण मि ति ह्व व थ्ये न दी र्घ त म सा दृष्ट त्रे षु तो रं मः शु चि पा द्वि  
 त्रे षा गो त म प्र त्रे ण वा म दे वे न दृष्टा ज ग ती य वा सूर्ये त्रे षा च्छु त्रे णो दृष्टा ॥ ॥ उष्टु प्र य द म् सूर्ये  
 त्रे का उ सूर्य इ ति ति सु उद्वे ती नि च त म्मो द्वै च्छु त्रे उद्वे र्य त मि ति ति च्छि ए ता मे त्रा वरु णो न च मि ष्टे





३ ज्यो

६८

त्रापिपारा ॥ अथ महासौरमंत्राः ॥ उडुसंजातवेदसंवेदं वदति केतवः शोविश्याय सूर्यया ॥ अथ येत  
 यवो यथा न ह्यत्राय ह्य कुमिः सुराय विश्ववहासो ॥ अथ मस्य केतवो विश्वमयी जनी अत्रेनाजनी अथ  
 यो यथा ॥ अंतरणि द्विश्वद्वीतीत्यै तिष्ठदसि मयी विश्वमाता सिरोचनया ॥ अथ देवतानां विश्वः प्रथमं दुर्दे  
 षिमात्रपी प्रात्यदि स्वर्देवो ॥ येनापाकं चक्षुः साधुरण्यं तर्जनं अत्रुः ॥ अथ पश्यसि ॥ अथ विश्वे विश्वे विश्वे  
 मे विरजः स्पष्टदानिमानो अत्रुतिः पश्यं जन्मानि सूर्यया ॥ असप्रत्वा हरितोरथे च दं नि देव सूर्यशो विक्रं सं  
 विवेषाणा अत्रुक्तं सप्तशुं च वृषोरथस्य नयः ॥ तालियां ति स्वयुक्ति ॥ अथ यंत मस्य परिज्योतिष्यपुन्यं उत्र  
 रं दिवं देवत्रा सूर्यममन्त्रा ज्योतिरुत्रमशा ॥ अथ च यमि त्रमद आरो दं च त रा दिवां इद्रो गं मम सूर्य हरिमाणं  
 सी वैना सीया ॥ अथ सुक्रे लु मे हरिमाणं रोपणा का सुध धासि ॥ यथो दारिद्र वे लु मे हरिमाणं नि द धा सि ॥ अथ  
 वगादयमादि ज्योतिश्चैन सदसमहा द्विषं मं सं रं धयन्मो दे अहं द्विषते र धश ॥ अथ इदं मे कं च यो द रा ई स  
 सूक्तया ॥ चित्रं देवाना सुदनी कं च कुर्मि जां वरुणस्य ॥ आ प्राद्या वा वृथिनी अत्रुं सिद्धं सूर्यं आत्मा जगत्स

नि ॥ ६

४९

गादं स्प

रत्रापिपारायणत्रयंगं गास्त्रानं मिलिन्नासाधनं निमज्जं चरवती प्रतोचवती अर्थः प्रजापत्यहानाचरणि  
 प्रकोत्रप्राजापत्यानाम उच्छानो एवं चांडायणस्यानाचरणेभ्यो प्रवेधनेयं जविनाशः ॥ इत्यनम्रवाराय  
 णविधिः ॥ अथ महासौरमंत्राणाष्टध्यायानि धीयते अथ मौर्योणो मंत्राणा मृकं संख्याष्टपी द्वे वतं सं  
 मित्रवद्व्यामः प्रवाचार्यक्रमेणोडुव्यं जातवेदममि त्रयो दशं संसक्तं कं च नृप्रकपे न दृष्टं गो यत्र मत्र्या  
 तस्यो सुष्टु नो त्रेवो घनद्यत्रा रो मद्रं प्र निषदं व्या द्विषत्राशनी चित्रं देवानो सुदगादिनिषदं संसक्तं  
 गिरसेनकुचेन दृष्टं त्रेष्टुसमिदं मित्रं वरुणमिति ह्यववथ्ये नदीर्घतमसादष्ट्यैष्टुतोदं सः शुविषदि  
 त्रेषागौ तमपुत्रेण वामदेवेन दृष्टा जगतीय वासूर्ये त्रेषाक्षमिपुत्रेणाष्टष्टः उष्टुप्र्यदस्य सूर्ये  
 त्रेकाउसूर्य इति तिस्र उदेतीति वतसो द्वे अत्रुडुव्यद्व्यं तमिति तिस्रपतामेवावरुणो नवसिष्टे

नष्टास्त्रिष्टुतउदशदशंनमिनिवहतीशंशराह्मइरिमतोवहतोतबद्धुशितिउरुभिक्वणमदंअ  
 सीनिधुचोचुउत्रेणजमदमिनाटधधूरवाकहसुचरासतोवहतीनमोमिस्सोत्रेनद्वदशत्रंर  
 कंस्त्रयउत्रेणासितपसादष्टंजागतंशत्रोववेतित्रिष्टुस्त्रयोनिदिक्कात्रितिपत्रचंस्त्रकंस्त्रयउ  
 त्रेणचक्रुषादष्टंगायत्रंविनाद्वहद्विनिचउर्कचंस्त्रकंस्त्रयउत्रेणावित्राजादष्टंजागतंविना  
 जंज्योतिषेवासाशरपंक्रिराणंगोबिद्वचंस्त्रकंसापरात्रार्धगायत्रंस्त्रययदिवातात्पंस्त्र  
 कंकोविदात्मस्त्रवंमन्त्रत्रेयःऋषिःसोहमितिध्यातव्योयएतेनसौर्योणास्त्रयमहूरहमप  
 तिष्टंतेतत्रायुष्पवचत्रारोणवंत्रोसवंत्रिसर्वकामवत्रोनवंच्यत्रेस्त्रयसायुज्यगच्छन्ति  
 ॥ ॥ इति महासौरमंत्राणामृष्याद्यजिधानं ॥ ॥

४७

शोधपत्रं ४७ पत्रे द्वितीय ४७ पत्रे

घार

ने

सुषष्ठाशास्त्रयोदेवीसुखसंरोचमानंसर्पोनयोषाअस्योतिपश्चाद्यज्ञानरोदेक्यतोयुगानिवित्तैर्घातिता  
 द्रायतदत्राशासद्राअश्वाहुरितिस्त्रयस्यवित्रापतेयाअभुमाशोसाममस्यत्रोदिवत्रापष्टमःपरिधाताष्ट  
 शिवीयंतिमद्यशातस्त्रयस्यदेवत्वत्रमद्विवंमहाकन्तीवित्तंसेज्जारायदेरस्यकदरिलसिधच्छात्री  
 वासस्त्रसैतेसिमस्मे॥शातन्मिअस्पवरुणस्यातिरदोहयेरुपेकृष्टेद्योरुपस्त्रोअनन्तमन्यदुशदस्यपाज  
 ष्टकमन्येहरितःसेतरंतिपाशाद्यादेवाहुरितास्त्रयस्यनिरहसापिष्टतानिखर्वातन्त्रोमित्रावरुणमामहत्रो  
 मदितीसिंधुःप्रथिवीउतद्योदुदमवर्षेस्त्रकंसा॥१॥इमित्रंवरुणममिमाहुरयोदियःसुपसंगिरुत्माश  
 एकंमद्विप्रावद्वक्षवदस्यमियंममातरिश्चानमाहुःशाःऋष्यनियानंतस्याःसुपसंगिपोसाणादिवसुत्यतेतिअ  
 नष्टस्यदनाइतस्यादिष्टतेनप्रथिवीसुचतो॥शाअयंरुवभाहंसःसुचिषदसुतरिहसहीतावेरिषेदितिषिडुरेण  
 सवन्निपहरसहस्रशोमसक्रागोजाकतजाअदिजाहं॥२॥इयमेकाऋष्यत्वास्त्रयस्वतीउचमसाविद्यादस  
 सःअत्रैत्रविद्ययासुप्रोभुंघतान्यदीवद्या॥३॥इयमप्येकाऋष्याःयदहस्त्रयंनतोनागाउद्यमिन्नायंव  
 सः

दा३

त४

त३

२३

संत३



देवः स विता वस्तु र्जत पर्वतः । वस्तु र्धाता दधातु नः । वस्तु नो धे ह्वस्तु पे ९  
 वे अकुसिः । अनागास्तेन हरिकेशं संयाज्ञानां नो वस्तु सा वस्य सो दि वि । शत्रो स वै चक्षसाशनी अज्ञानो संतातु न  
 शो हि मा सै घणे नयथा शम संस्र मस दु रोणे तस्य द्रविणं धे दि वि त्रं । अस्माकं देवा उभया यजनै शर्म य  
 ह त द्वि पदे वृत्तु प्य दे अ वि पि व ह र्ज य मान मा शितै त दस्मे सं यो र यो ह भ्रा न । यद्वा दे वा अ क्र म्मा जि न  
 या य रु म न सो वा प्र यु ती दे घ ह ले नै आ रा वा यो अ सि दु सु ना य ते त स्मि न्ने दे नो व सं वो नि धे त ना । अ दं ह  
 स र्चं च क्र म्मा । स यो नो नो दि व स्य लु वा नो अं न रि ह्वा रं अ भि र्भः पा । धि वे र्पः । यो जा स वित य स्य ते हर  
 शतं स वं अ र्हे ति पा हि नो दि द्य तः प तं याः । व द्वा नो वि वि द्वा कि वे त न स्यः सं वे दं वि ष प थ्य म्मा । अ दं वृ  
 स क्र म्मा । अ यं गोः घ णि र क्र म दि श दं मा त रं ख र्सा पि त रं वं अ यं त्वा । अ त्र अ र्ति रो च न स्य अ र्मा ह पान ती ।  
 सु व य न्म हि षो दि व म्मा । त्रि र ह्वा म वि रा ज ति वा ह्म तं ग य धी य त्वा प्र ति व श्चो र इ द्यु तिः । अ दं ह  
 क्र म्मा । इ ति म ह्मा सो र मं त्रा । म ह्मा र्ण वा ष्ये म ह्ति र्ब्र व्धे मो धा घ म्मा म्मे द ना त म्जा स्यां स क्म र्मा णि क्पु णे न  
 र्हे र्हे र्म रं गः । व लु पं च मो त्र । मा मा ता उ ष्य च रि च की र्ति वि त वा य स्यां बिका न । अ न्ना क्म र्मा पर म्म त्रि रा यं च रि

नातमधर्म दिवो  
 उर हा स प न ह र्मा  
 इ दं ह्म र्मा ति  
 वा ज्ञो ति स त्त  
 ने र मं वि च्चि न्त  
 न जि ड्य ते ह ल  
 वि ष न्ना जा जो म  
 दि स र्थ दि व उ म्  
 प प्र ये म्म र्जो ड  
 यु त्ते वि न्ना र्ज  
 ज्यो ति वा त्वा अ  
 ग णो र व नै दि व  
 ये न मा वि षा ज्ज न  
 म्मा र्ता वि व क्त  
 ४९ एा दि ह्मे व  
 व ता ४९

युक्त ५ विजातीयेष्ट

तन्धीपे हिसहः पिता सोयंको शिक्वंशरूषणमणिः श्रीसहविश्वेश्वरो वेदस्मार्तज्ञानेनैवाक्पेहतीर्द्विदता  
 मतिर्येषांशास्त्रेप्रहृतिरमणीवाचवहतिपराशीलंश्रष्टयजगतिअजवस्त्रकृतिपयो विरं विष्टतेसांयुक्तर  
 तनहतेच्छ्रितिमिया।दियंयासारण्यप्रवस्तुनिशेष्यतणिति।अतिअनडेतपरजातकौर।अस्याति  
 किरुशरजाविराजनेनअमिपासुअस्यमं।अतुदि।अमहा।असिधने।अवेक।अपाके।अमृरं  
 अथ।असि।अधिः।अतत्रतावडुपत्रैवेनविनियोगादिकं।अस्येता।विनियोगानामसंबंधो।असचांगोलाय  
 ण।एकस्येयमंत्रस्यविधिवलाहनेदेस्यजातये।अचक्रमं।अं।अमस्त्रि।अतायसि।अकर्मणियदांगतावंसज  
 ते।अतदातं।अकर्मविनियोगे।अतएवचयद्यपिचर्मयामिष्टकायाशुसुद्रीयं।अज्ञे।अयादिसि।अहाएव।  
 रण।अत्रिचयनेवरमेष्टकायामेकादश।असुद्रा।अवाकेशे।अमि।अति।अहा।अस्येकर्मण्यगत्वो।अद्रा।अवाक  
 नीतया।अत्रि।अवाल।अतौ।अजु।अना।अतं।अं।अदिशतसं।अकृ।अणो।अतितया।अइ।अया।अयु।अते।असै।अपा।अरि।अत  
 थारु।अणो।अप।अदी।अम।अन।अधि।अ।अर।अया।अम।अ।अया।असि।अति।अमृ।अति।अरा।अवा।अकै।अप।अहो।अम।असि।अके।अयु।अनि

१३  
१५



योगज्ञांपादिसंभगवत् मस्त्रियसिनयेसाध्येजपेविद्योगाः हेमेसाध्ये हेमे अतिषिकेसाह्ये क्तवलिषेकें विनियो  
 गीहेयाः प्रथमेववितागः नमः कर्मादिमन्निपातयो दितिआपक्षेवांमे वांतेर्मन्त्रमया  
 कितिः कर्मादीनकामोपक्रमत्वांन्निपातयेथान्प्रमसमर्थमेवंपवित्वाकर्मसन्निपातयेथान्किर्यावित्यर्थः  
 मद्येषानमस्त्रेमद्यवउतो नहप्रवेनमः नमस्त्रेअध्वयेनेवाहुत्पामुतेनमस्त्राहेतिखाद्यकारंस्तेदविरो  
 प्रक्षिपेरुद्रयेत्युद्देशयागः कार्योतींमेववितागंवरुद्राः उवाकेषुनानाविधितः कर्माणावरमायप्रकार  
 योजुहोतीसुक्तेत्रेभूमिमेकं उहोतित्रयः इमेलोका इतिविभ्रसुद्राः सुवाकैनामेकादशानाविग्रहः अतथा  
 तिखउत्रस्य्राज्जतिं उहोतिषडंपडं ह्येतिषोः वितागंमेववदितिः नमस्त्रे मद्यवउतेनाः सु  
 केनामेकदशानाविनागः अतथापितिखउत्रसत्राडुतिं उहोतिषडंपडं तेषु द्वाकं वदति उद्देशयागोपि  
 रितः नमस्त्रे मद्यवउतेनाः उहोतींखैवै विन्यापिष्यापिवाप्रथमाहुपैक्रम्यां नमस्त्रस्य इतिआहुदनेभ  
 रयामालोरथकारेयत्रइधुपक्रम्नमस्त्राध्वयेतिनात्किाहनेशेषेत्प्राद्वयद्वेनेस्यः आस्पदञ्जेत्वासह्य  
 गवता

शद

त्वा पंचदशार्क

तोदेवानां हृदयेत्यतिद

तोप

निंसदेवैतिश्रुवाः नमस्त्राहोइति नमोस्त्रेस्ये प्रथममित्तानुददे वरायामणेनोकरेयोयैतइति  
 नासिदन्नोभारथमालोमनास्त्रेस्येथेदिशिपुमपुत्रेद्वेषित्विभ्रसाह्रथमं विरुगोवर्षिभैः मद्यवेत्ता  
 अपरः प्रकाशतमप्रथमोः उवाके प्रवदशमं नमसितीये प्रयैदशयुंति इतिथोः स्यादती अथउथयोः प्रत्ये  
 केसद्यथयइधौ कृष्णिषुवाके सुस्यतोवमस्तामंमण्यचमस्यतः कियोः प्रत्येकं नमदवाये विप्रिमन्त्रसेषे  
 दशाअमेसद्यशानवमे एकोनविंसीतिः एषंपवत्सुवाकोः प्रवेकसरोनमस्कारंमेवप्रः अतन्निषुफ चामुमस  
 रानवमा उवाकेनमोवः किस्कोत्योदेः नाहृदयेस्यः इतीतदुमरंमत्रवउस्ये म्मणनतिः नधयां नमोवि  
 दीणकोस्योदेवांनोहृदयेस्ये इतीतदुमरंमत्रवउस्ये म्मणनतिः नमोविविचकेस्योदेवानोहृदयेस्योदेवां  
 नोहृदयेस्योऽमः आमींकेस्योदेवानोहृदयेस्यो इतिआयथा सुपंयोग्यचरोमादिषुतेपंमेवार्णोऽथयुक्तुपथसि  
 सत्यप्रयोगंस्त्रैवायथाहुनापादवण्डवकणो नमोः विहृदवपयनंवाः पार्वसद्येय्युत्प्रेमस्त्रे  
 छुजेयां अत्रचद्वितीयादिनवमोः तेऽववाके सुनमास्तामदिससका रथसेकं यन्नुतिविताकदा

निहृते

नमश्चामीवक्तेनोदेवानां हृदये म ३ नकर

अत्र द्वितीयोऽन्यतरतोः

स्कारद्येकेयं चुरितियास्काः अष्टाष्टवाका अष्टौयं चुरितिकारीके कृत्स्नतत्रयाकी भूषिष्य इत्यतेन  
 मस्कारे सुसुक्रो मंत्रविनागाः अथेन मस्कारे छेव सुहाः तद्यथा नमो सत्राय च नमः शर्वाय च नमः  
 शर्वाय च पञ्चपतये चेतिये नमः शहः शर्वाय च मंत्रस्यातत्वेनात्वरं मंत्रस्पर्षादि त्वेने सुसयौ र्थसमाप्ता  
 तः काका दिसु दुल यत्र च नमः तथैव नमो तत्राय च रुद्राय च नमः इत्येको मंत्रः पुनरपि तमेव नमः शहः  
 सुसुक्रो मन्पादाय नमः शर्वाय च पञ्चपतये च नमः इत्येव प्रो मंत्रः एकस्य सत्रा पिविद्वेयो अथानि मत्वा रुद्राय  
 चेतिये च महिषु च शहे न प्रथमो नमः शहः अत्रु कृत्स्ने पर्वे कृत्स्ने तो मस्कारे मंत्रा मंत्रवतियास्काः पहे तु यत्र न्यतर  
 तो नमस्कारे भवे मस्कारे सुसुक्रो मंत्रविनागाः उल यतो मस्कारे सुहाः तद्यथा नमो हिरण्यवादे वे सेना नि  
 दिशां च पतये नमो नमो हृद्वेया हरिकेशे स्पष्टमं पतये नमः इत्यत्र नमो हिरण्यवादे वे सेना च दिशां च  
 पतये इत्येको मंत्रः सुसुक्रो हृद्वेया हरिकेशे स्पष्टमं पतये इति  
 अथ मंत्र एव द्वि मस्कारे श्वीकार्य एवं विधम अत्र विनागा यद्द्वितीयो मस्कारे सुपात्ता इति तद्द्वयं सतः प्रचीत्तः  
 का द्वितीयो मंत्रः एव सुत्रत्रापि वृथा तु वा के वर मंत्रवर्जी वर मस्तादौ द्विनमस्कारक अंत एकतरनमस्कारक इत्युच्यते नमस्कार

परांतं मंत्रादत्रामे तु वा के द्वादश वै द्वादश मंत्राः एकैव चो तु वा के अंते वि यजु के द्वादश वै त्रयो द्वादश मंत्राः एव मेकादश स्वरु वा के पु  
 मंत्रा एको न सत न्युत्तरं इति ५

३३

२११

परि

एव विनागोऽस्वांतय च समाक रणपाहिनिरपिन विरोधः इति यद्युत्तु यो तु वा के वि  
 द्यायो नमस्कारा दिन मस्कारे संमैके यजुरिति शाक रणिराहः पंचमा दिन यमा तु वा के विनागो नमः  
 स्काराद्येकेके यजुरितियास्काः का शकृत्स्नः अष्टाष्टवाका अष्टौयं चुरितिकारीके कृत्स्नतत्रयाकी भूषिष्य इत्यतेन  
 अन्यान्यपि त्रिवात्र महावाकानि वेदना यो सः इत्यस्करे अदर्शिता नि यथे अदृश्यं ते तस्मात्स्वोक्तं  
 अथानादि तत्रारपने वस्व तु वा के सु च उच्यते अस्विदेशे विक्रं संवति तौ हति रुद्रा तु वा के पु मंत्रविनागाः  
 अथ च मंत्रं तु वा के सुके वले सुतथा च मक नमकयोः द्विशिष्टयो मंत्रमंत्रविनागाः इत्यत्र अथा विष्टसजो  
 प्रसेति च उर्ये ही तं इवे तु पक्रम्पं वा जश्च मे प्रशंश्च मश्चि सं नरी ती वसो हारं पुटो त्या मंत्र समापनादिति चो  
 धायने न प्रथमा च मंत्रं स्या वरिष्टस्पचमकस्येक मंत्रत्वे वसो हारया मदि तांति ने वै च्या ये न यदा एकवारं नमः  
 तु वा का हृद्वेया अत्रेन प्रति मंत्रे युवद्दो म क्रियते तदा तत्र च मके धम मष्ट चं पठित्वा वं र्हे ही तिन हृत्वा वं  
 छिनचमके न संतां धारं तु हुया र्थे यदा तु तिमादिति हे मी नमके न तदा तिनादिति र्वद्रव्ये संतती धरयाः

३१

४ कमे  
नय

अनिथते रयज्ञसंयुक्तैकर्मणिजपादां तु वा दैत्ययुयुञ्जन्त्वेन सुधानात्प्रथमाङ्गकोमं प्रजापतमभ्युया  
 स्पाठवाकां त्रैपरमेवः प्रवशिष्टा दशा तु वा का दशमे चाष्टयेवंहा दशातिर्मंत्रैर्दुज्जवात्त्रैव सुभारामपि  
 धीतायसो हाराम्या अक्लिषितया मिहेतुत्वाच्च यथापि सत्रा तु वा कानां दशमे का दशात्त्रैव त्रैवो मंत्रैः होमं तत्रा  
 नमस्त्रैरुभयवदये का दशानाम तु वा कानामेकैः सपेदितिवो भूयनेन एकवारसो का दशा तु वा का पयत्त्रै  
 एकं प्रथमं चमका तु वा कं पवेत्तु रपिस्य नमका तु वा का षोडशैः के सुक्रमेणैके का तु वा कां आवा  
 का तु वा कां मावत्रै येश एवमेव सम्युनमकानां प्रयावर्ति चमका तु वा के सुक्रमेणैके का तु वा कां आवा  
 यइत्यासिधना श प्रतिमंत्रं रुद्रा तु वा कं होमं ते एकं प्रथमं चमका तु वा का मेकं मंत्रात्मकं पठित्वा इत्या  
 रपि प्रवृत्तिन्यायेन रुद्रा तु वा के इति द्वितीयं चमका तु वा के ननु इत्यारइत्येवमेका दशा रुद्रा तु वा के इ  
 त्वा द्वितीयं चमका तु वा के ननु इत्यारइत्येवमेका दशा रुद्रा तु वा कानामेका दशा रुद्रा तु वा होमं प्रया  
 वृत्ति चमकानामेकमेकं मनुवाकं क्रमेण इत्यांते च वसो हारं रुद्रा तु वा च अथैव होमं प्रकाशो इत्युद्रवसा

वा ५

(इका दशिन्यां महा रुद्रे अतिरुद्रे व इत्यं) एतच्च सप्तानिवा लशा तात पः। षडंगैका दशारुद्रो रुद्रो  
 एका दशानिरेता निर्महा रुद्रस्तु कप्यात् ४

२व  
३इ  
५त  
६न्यठन्

धारणं सवैव सुधारात्वा ज्येष्ठ एवमेव चिन्तयेत् का दशारुद्रत एका दशानिरेता तिर्मंत्रैः रुद्रैः का दशिन्यां महा रुद्रे  
 अतिरुद्रे व इत्यं एतच्च सप्तानिवा लशा तात पः षडंगैका दशारुद्रो रुद्रो का दशानिरेता तिः म्हा रुद्र  
 श्वकं प्यते। एका दशमहा रुद्रे अतिरुद्रे त्ति रित्तु र्ना। तथा विप्रितो नाम कं वृत्ति रुद्र एका दशा निष्कारुद्र  
 का दशा इत्यारुद्रैः का दशिन्यां महा रुद्रे अतिरुद्रे त्ति प्यते। अनयोरर्थः। कृष्णान् एवमभ्यासं द्विप्रवृत्त  
 मेका दशानां नमका तु वा कानां जपानां समं चमकं प्रथमा तु वा कं जपेत् रुद्रः प्रवृत्तं चमकं जपानंतरं द्वितीयं चमका  
 वा कं एते श एवमेव का दशवारं चमकां क्रमेणैकमेकं चमका तु वा का सुदीरयेत्। अनेन प्रकरणे का दशा तु वा कानामि  
 दशा मया वृत्तिप्रयोगे का दशा तु वा च एष एव रुद्र इति मोक्षं लक्षणे का दशारुद्रतः। षोडशस्य रुद्रस्यैका दशा तु वा हो  
 मः। एका दशारुद्रतोरुद्रा इत्यत्र यः। इत्यं च रुद्रस्यैका दशा तु वा चिरे रुद्रा तिरुद्रैः का दशिन्यां विप्रिते पदशदयसा  
 यवति। एका दशानिरेता ति रित्तु र्ना। तिरुद्रैः का दशिन्यां ति पर्यायना म्नी तिरे का दशा संख्या का तिर्महा रुद्रः कथं ते म्हा  
 रुद्रस्यैका दशा तु वा चिरे तिरुद्र इति। इति चमकं नमकं योर्मंत्रं वितागः। अथमंत्रं वितागं कारणा मनेकेषां द

नमो

महा

वित्तव्यात्कस्मिन्निनभेकतिमंत्रा इतिमंत्र संख्यातथा क्रुत्रमंत्रविज्ञेद  
एकोशततन्त्रवागोनुवाकाभुष्योरा एवमशनुवाकागतः अवशिष्टानुवाकत्रयंरतायोशः। एवंचानुवाक ३  
४ संज्ञानदन्तस्वा विक्रुत्रघुयस्याप्यदिन स्व्यवसंज्ञान्दस्तराणां वृत्तांशुविज्ञो रता यिनशति  
ततोवशिष्टानोचउर्णादिनइति ४

इत्येतेष्वप्रदर्शितां तथा दशोपाधोमौदिकत्वाद्भूतय इत्येतत्प्रदर्शयति धर्मस्य तो भित्रभुयात्रैः अशोभारविज्ञो  
द्वितीयांशुतंत्रभ्रविनागंमत्सिद्धियोः। बोध्यनोप्याह ॥ नमस्वेसुद्रमन्त्रं चैतानुवाकं श्रेयं कित्तये  
ति अत्रच विज्ञे चनामनुवाकानां अकरणे पक्षे आद्याश्च वारो भुवाकां भये विज्ञे दमत्ररणे विधुष्यत  
तथा अर्चयेत्ते दक्षिणे त्रयो अशु विज्ञो दक्षिणांशु ॥ तद्यथा ॥ नमः भुवस्तरमं क्रुत्रघुयस्यापि म इति ॥  
श्रांशतेगाधो विदुद्यातव्याः तात्राप्यनियमः ॥ अर्चनामं ईदृशे तथैतत्पुत्रे शः पादिनोचत्तुयेशा इति ॥ अर्चो ननु नो  
श्राता ईषं चाशु शक्रावो सवंती एवं च क्रियमाणे द्वितीयादिनां पंचात्रातं द्वे पंचविंशति ॥ इति नो पंचाशततयार्  
क्रियमाणे पञ्च शतं वंति गो द्वयमवशिष्यते तच्च त्रैलोक्ये सुविचक्षणस्थापितुमशक्यं इत्यद्वारा च विज्ञो नि  
द्वः तस्मादद्विनाम श्रांशत्वा ॥ ४ ॥ द्वितीया मे च उर्वि श्रिता ॥ ४ ॥ ४ ॥ तथीमोपोश्रा ॥ ४ ॥ ४ ॥ पादिनां दश ॥ ४ ॥  
इति गो द्वास्वरूपा विदुद्याश्राते वीं गावो विज्ञो ॥ अनेन गत्ये न प्रकृति पिका दशां अनुवाकं चैव्यपि च्छेदा  
यस्वैकिरीत्या चरमानुवाकं प्रस्येक मंत्रे मंगी कार्या एवंचमका अनुवाकानामेका इत्याजयंते यद

गवांश ४

पञ्च

त्र प्रथमादिनां

२२

त्वि ४

समुदीयो

२३

५१

त्रिषु ४  
दिना ३

न १

ना २ नामनुवाकर

त्रयापरत्रिधा विनागो नमके सु। अत्र वमूल संज्ञा विनक्तं क्रु हो ता ते तदेव क्रु तिवाक्। तत्र वने नमस्ते सु नम्य व इत्या रभ्यस्मां पतिस्त्वभिन  
म इत्यंत एको प्रागः। नमो अत्रे न्य इत्या रभ्या वायु यित्स्वतो द्विता यः। नमः प्रतरणय वेत्या रभ्या समा ते सुता यः। एवंचयो मंत्रा इति जपांगो  
म अनेन गदत स्वतंत्र हो म बा तिस्रः आक्रुतयः ॥ १ ॥ श्रुति यत्र कारः ॥ ॥ ३

ति १

देमंकर्तविकीर्णाको द्विदोममात्र एव वा तदा तस्मिन्नेत्रयो मंत्रा इति तस्व आक्रुतयो स्तः एवंचमका अनुवाकानां  
मेघनपत्रे हो मं विकीर्णा यो केवल हो म मा त्रै जपां वाच्ये के सुप्रथमा क्रुगे का मंत्राः। शिशोप का दशा अनुवाका एको  
दशमं च प्रति द्वा दश सि मंत्रैः सावंपत्रा क्रुतयः व सुभारो उष वै क र हो व ॥ अत्रैक प्रकारः ॥ अथा ग्यः प्रका  
रः षोडश विनागात्मकः तत्र स मंतरं प्रद्वैक्ति विनागप्रकारेण व प्रथम द्वितीयो ग्राहो ॥ तत्र पि विनाग छनमः प्रत  
णाय वेपारो स्य एता वच इत्ये वासा हिता को मंत्राः ॥ एवंच त्रयो मंत्राः ॥ नमो रुद्रे स्यो य एथिव्या मित्पाः इत्यु ॥ नो नि य इ ॥  
अत्रचनमो रुद्रे स्य इति च ॥ ये षामित्येतस्य देव इ ष व स्य इत्ये सि मां शेयो वाक्य शेषः स चैते त्रि तं त्रि षा प्ये सु  
अनु ष ज तित तथा च नमो रुद्रे स्यो इत्ये यो या ये षामा न भि ष व स्य इत्यु पक्र म्प समा नि पर्यंत मे ॥ त्रः नमो रुद्रे सो  
ए अरि द्वेयो वा ता त ई ष व स्यो इत्या दि द्वि तीयां नमो रुद्रे स्यो य दि वि ये षां व पर्ण मि ष व स्ये स्यो या दि द्वि तीये मंत्राः एव  
त्रैः को विनिर्मै त्रै सह षां मंत्राः अस्मिंश्च विनागे त्रै प्रा विकें सु हो ती सु पक्र म्प इ म पर्यंत इ मं ता क्रु तिः प्रमाणत्वे  
न प्रद्वै प्र दर्शिता अधुन विनियोग सं प्रह वा क्यं प्र मा णा क्रियेता प्र शुभ पे च मे या काः शतारू द्वीय हो म काः स चाप

३३

न

तिस्पष्टयेत एकौ मंत्रः प्रकीर्तितः वा यो यत्संज्ञक एकस्य तन्मासीत् पञ्चतराः उनमो रुद्रस्य इत्येव पृथिव्यादिविने  
 दत्तमत्रे धृतिवत्ततो दोमे षष्ठे तत्र इत्कीर्तितः इति अस्मिन्त्रिणागे षडाङ्गुतयो सवति जपणदमे मे वा ॥  
 इति चतुर्थः प्रकारः ॥ अथ षोडशं ध्रुविगोला गवान् अधरर्षितंत्रममन्त्रे इत्यारूपमनमो रुद्रस्य इत्येव पृथिव्यादिविने  
 रथकारे स्वेष्टवदस्युपक्रममन्त्रस्य ध्रुवो र्थातो द्वितीया विसागाः श्रुतिविवेत्पारस्यसहस्राणि सदस्रशः येतदहूप  
 यंतं तत्तृतीया विसागाः ॥ इति त्रयो मंत्राणां सहस्राणि सहस्रशः इत्याः च सदशाष्टचोदशमंत्राणां सवत्तुः सहस्रायदशा  
 नमो रुद्रस्यो ये पृथिव्यमिति अविशिष्टं वाक्यं प्रहोत्तरी सा त्रिणियं च त्रयो मंत्राणां एवं प्रहोत्तैः क्विसद्व्योडशा अत्र  
 विसागो बोधयन् वचनं ममाणां तत्र अहं पित्र्यथमाहुपक्रममन्त्रस्य सहस्रादियथा ममेव दर्शितं वा इत्येवं  
 पांगो हे मे अत्रंक्षे त्रदमेवा षोडशाङ्गुतयो सवति ॥ इति चतुर्थः प्रकारः ॥ अथाष्टावत्वारिंश मंत्रा विसागात्मकप्र  
 कारः तत्र प्रथमाष्टा वाके पंचदशा र्थपंचदशमंत्राणां ततो द्वात्रिंशो वाके द्वादशा एते प्रहोत्तैः सहस्रं पंचदशं मंत्रां  
 एकादशो अष्टवाके अष्टादशा त्रिणियं च त्रयोदशा एते प्रहोत्तैः सहस्राष्टावत्वारिंशो वा अष्टो जपणदो मे स्वर्णा

स्वतंत्र होर  
अथ  
रूपकांतेप  
५४

२ वाका अष्टौयज्ञं धिका राज्ञं मनेने त्यादित आर रूपवत्त्वु वाके पुत्रयो विंशतिः दशमेतुर

व ३२

दो मे एता वक्ष्ये वा हुतये ॥ इति पंचमः प्रकारः अथो को न सप्त त्रिंशत् शतमंत्रे विसागष्टकं अथ तमः प्रकारः स  
 विनियोगप्रकरणानां त्रमेव त्रयमाष्टवाके पंचदशा र्थपंचदश्यादिना अथ द्वैश्रितः अथ जपणदो हे मेपिको न सप्तस्य  
 त्रंशं तमाहुतये ॥ इति षष्ठः प्रकारः ॥ अथैकवारं नमकांतुष्ट्रौ मंत्रे विसागं निदिनपट्टप्रहोत्तैः सद्विर्ताः सदरुद्रे  
 कादशिवा दिवो कपदसंख्याना महतिले दाहसंख्याः तेषुः प्रदप्रपेता नमका न्नामेकार समाह्वोदशांशयो मया शिरे  
 वनास्त्रिंएका दशधा दियुक्तैः रुद्रस्य विपद्यते तत्र दशांशदे मे कर्त्तव्ये त्रैधा विसागपदद्वैती अथो न इति स द्वाद्दु  
 तयाः ततो वसोर्हारा संपूर्ण हो मपदे प्रतिरूपकं तिषा सि सत्राहु तयः इति त्रच विंशत् ररूपकां त्रे वमका अवा केने के  
 कैका आहुतिरियेता एकादशा र्थो तिस्रः सदं चतुश्चत्वारिंश त्रं अत्रे वव सोर्हारा षोडशा विसागपदा अथो नो दशांशदो मे  
 प्रदहुतया तातो वसोर्हारा समुद्यो हे मप्रतिरूपकं षड्भू इति षड्भू त्र त्रंशो रा प्रद्विंशत् ररूपकां त्रे वमका अवा केने के  
 दशो तिस्रः सप्त त्रिंशत् तया प्रहोत्तैः मकस्ये कादशा त्रिंशत् तिस्रः सद सद्याशी तु त्रंशो ततो वसुधा अष्टा वा वरिणो मे  
 त्र विसागपदां गकारे दशो वदो मे अष्टा वत्वारिंश देवतदनु ह्वरं वसुधारा समग्र हो मे प्रतिरूपकं अष्टा वत्वारिंशो दधैव वा  
 ३ चामं सगति मेतु पतिवारं षोर्हारा इति षट्सप्तस्यु त्रंशं तमा हुतये ॥ एवं वचनं कस्ये कादशोति  
 स्त्रानि सदसप्तशांशु त्रंशं तातो वसुधारा अष्टा वत्वारिंशं त्रंशं विनागपदां गकारे दशांश हो मे अष्टा वत्वारिंश देवा न  
 दने त्रं वसुधारा ३

पु २४

स्वतंत्र होमे  
अथ  
रूपकांतेप

रिशादिस्यष्टाविंशत्तुरपंचशतीं महर्षेवृद्धमकाशुवाकानामेकादशेति मिलित्वैकोनचत्वारिंशद्वत्तरणि एवैवाशतानि ॥  
 ततो वसुधाराचा एकोनसप्तसुत्रशतमंत्रविनागपद्माश्रयणितुदशांशदीमपकोनसंयुत्ररंशतेमाहुतयं अत्रिवसीही  
 रामस्य हेमि तु प्रतिरूपकमेकोनसप्तसुत्ररंशतेमेकोनसप्तसुत्ररंशतमित्येकसहस्रमष्टैशान्येकोनषष्टिश्रुत्यां  
 तयोऽनवतिंशत्तुरपकाशुवाकानामेकादशेति मिलित्वा एकसहस्रं अष्टैशतानि सप्तसिखततो वसोहारा ॥ इ  
 तिरुदेव्याहुतिसंख्या ॥ अथ रुदेकादशिन्यामाहुतिसंख्या ॥ अथैकविंशत्तुरंशतेस्यैकादशेति अतः शतं  
 शतं मंत्रावतिष्ठते अथकाशसंनवाह्येदाशतांशदीमः तदाशतरूपकानामेकरूपकाहत्या दोमं तत्रापि त्रयो  
 हे शोऽद्यादि मंत्रविनागमेदनामैकेपदाः संनवेयुः तत्रैभविनागेशतरूपकाणामेकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः  
 पकामेकविंशतिखशिष्येतेतदर्थेन मन्त्रैरुद्रमन्त्रकल्पनया प्रथमपक्षो एकाहुतिः नमोरुद्रेभ्यो यदि विषेणां वर्णमि  
 पत्रस्यैव इत्यादि निनां सुषोपापरा आहुतिः चमकानुवाकेरेकादशेतिषोडशाहुतयः अत्रिवसीद्वारांशतांश  
 दोमपद्मपक्षांदाविनागशतरूपकाणामेकरूपकाहत्याहुतयः अत्रविष्टैकविंशतिरूपकाणां कृतो नम

त्वारि

रूप

पु

३ लं

य२

केरुकादशेति हर्षोक्तानिः सहस्रं विंशत् ५ पा.

स्त्रैरुद्रादिसिखिस्यसिर्वादिः प्रत्येकमेकैकाहुतितिलिप्रतिनिमोरुद्रेभ्यो यद्यथ्यामिस्यादिति रवेक्तिप्रकारस्युक्तैः सि  
 लियं हुतिसिख आहुतयः अतिरुद्वैकानिः सहस्रादशचमकाशुवाकेरेकादशेति मिलित्वा अत्रो विंशतिः अत्रैव वा इ  
 चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्याणोऽशाहुतयः अत्रविष्टैरूपकाणामेक  
 विंशतेः प्रथमपक्षो एकाहुतिः प्रत्येकमेकैकाहुतिः अत्रो विंशतिः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्याणोऽशाहुतयः  
 सिनिष्टवैक्तिप्रकारस्युक्तैः अतिः प्रत्येकमेकैकाहुतिः अति मिलित्वा चतुर्विंशतिः चमकाशुवाकानामेकादश आहुति  
 तिः सहस्रं च विंशत्तुरंशतौ वसुधाराचांशदीमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्र  
 करूपकाणामेकरूपकाहत्याः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्र  
 शिष्टरूपकाणां कृतप्रथमपक्षो एकाहुतिः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्र  
 वा केरेकादशेति मिलित्वा चतुःषष्टिः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्र  
 अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्र  
 मेकरूपकाहत्या एकोनसप्तसुत्ररंशतमाहुतयः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः अत्रैव वा इ चकतो वा दोमपद्मपक्षांदाविनागमाकाररूपकशतमित्येकरूपकाहत्यातिष्ठत्याहुतयः

या३

४ वृ

सिखिति

महा

त्याहुंत्वेति एकोनसप्तसुत्रं शतमिति द्वे सत्त्वे अष्टाविंशतिश्चाहुतयः प्रथममवयं का अत्यय उपायास्ता वमका सु वा के रे का दश  
 तिद्वीतिः स षडस षट् एक वत्वा रिंशाः अथ रुद्रेका दशिन्यामेव स मथलेमपदे तथा वित्रे धामंत्र विनाग एक किं तु पुत्र शत रूप  
 का णां प्रतिरूपकं तिचत्तिस्व ६ × १०

मा३ स्व३ वा२ द्वासत्तिय

त्येकमेकैकेति तिचः एवं दृष्टीतिः सहाष्टाधिकसप्तसुत्रं रश्ममाहुतयः चमका उवा कैरे का दशो तिप्रिलि व्वेकेन  
 नचसुत्रं शतं ॥ अथ रुद्रेका दशिन्यामेव दशो रा हो मपद्वा अयणेतथा प्तिधमंत्र विनागो गीकारो क विंश सुत्र श  
 तरूपका णां दृष्टी विनागः द्वादशो पप्रत्येकं तिचः सति षट् विंशदा हुतयः प्रथममवयं का अत्यय य उ  
 प्राचे के ति मिनि व्वा षट् विंशो वमका उवा कैरे का दशो तिद्वीतिः सहे कोन पंचो शरा अत्रेव मोहो रा उरा दश  
 रा हो मपदो षो ढा मंत्र विनागे दश मीत्रो द्वादश रूपका षे शुप्रया षट् षट् षडिति रा हुतयः प्रथममवयं का अत्यय  
 प्राचे के ति वृत्तः सप्ततिः चमका उवा कैरे का दशो ति मिनि व्वा पंचो शरा तिः नौ तौ वसो द्वा रा दशो दशो मपदो अथ  
 मंत्र विनागे द्वादश रूपका णां प्रया षट् षट् शो ती षडिति द्वाधिकं वल्लुत्रं शतं माहुतयः अत्रे व वल्लुत्रा चादशो श हो  
 मपद्वा षट् वारिंश मंत्र विनागे द्वादश रूपका णां प्रया षट्  
 तीनां प्रथममवयं का अत्यय य उपाय प रा चमका उवा कैरे का दशो ति मिनि व्वा एकोन सप्तसुत्रं पंच शतं ॥ अत्रे व सुध  
 रा चादशो व हो म एकै कोन सप्तसुत्रं शत मंत्र विनागे द्वादश रूपका णां प्रो वि ति शी णा ता नि षष्ठ्या हुतयः सवे

५६

४ प्रथमवयं का अत्यय य उपाया परा वमका उवा कैरे का दशो ति मि नि व्वा पंचो त्रं शत वय मा हुतय य ४  
 ४३ उशो न ४ नि १

३ मस्यत्तुका णां प्रतिरूपकमष्टा वत्वारिंशति पंच सत्त्वा णो यो शता नि अष्टाना हुतयः सप्तत्रो मपद्दे एवै कोन सप्तसुत्रं शान मंत्र विनाग  
 जानिषद्विंशतिश्चाहुतयः संशर्णलेमपदे एव यो उत्रा धामंत्र विनाग एक विंशतु पुत्र शतं रू पैका णां एक विंशतु पुत्र ३

३३५

ति स मय हो मपद्वा षो षो ढा मंत्र विनाग एक विंश सुत्र शत रूपका णां प्रतिरूपकं षट् षट् ति सप्तशतं रूपका णां प्रति  
 रूपकं षो दशो उत्रो ति एक सत्त्वं न व शतानि षट्  
 शतानि एकोन पंचाश मी हुतयः स मय हो मपद्देषु संवैधयै का दश रूपका अमकस्पदे इति तत्र प्रतिरूपक मेका द  
 शा उवा कैरे का दशो का हुतयं रति च मका हुतयार क विंश सुत्रं शतं सवे ति तत्र प्रतिरूपकै का दशा उवा कैरे का द  
 शो का हुतय रति च मका हुतयार क विंश सुत्रं शतं सवे ति तत्र प्रतिरूपक मेका दशा उवा कैरे का दशो का दशा हुत  
 यः इति व मका हुतय एक विंश सुत्रं शतं सवे ति स चंत्रे व मोहो रा हुति संख्या ॥ इति रुद्रे का दशिन्या मा हुति  
 संख्या ॥ अथ महा रुद्र आहुत संख्या ॥ तत्रै वै क विंश सुत्र शत सं का दशानि य एक मस्ये वी णि शता न्ये का  
 विंश सु रू पका र सं वि त्रु त्र व शती शत्रयो दश रूपका रू पका णा मे क विंश द व शिं य शी ए व शी शतो प्र हो मपद्वा गी  
 कारे तत्रापि त्रै धमंत्र विनागे शतांश म्यत्रयो दश रूपका णां प्रतिरूपकं तिचः सति षट् विंशदा हुतयः

वांटे ४ कशतस्पे ३ वर

३ ति

अवशिष्टानामेकविंशतोरूपकाणां कृते त्रिंशद्विंशतिर्निरूपितः प्रत्येकमेकैकेतितिसः अथोष्टद्विक्रमकारयु  
 क्रैस्त्रिंशद्विंशतिसिः प्रत्येकमेकैकेतितिसः इति मिलित्वा पंचवत्वारिंशदाहुतयः चमका तुवाकैरेकादशानिः मेकैकेत्येका  
 दशा इति द्वौ क्रांतिः सदृशं पंचाशत्तं अत्रैव सोहारा वाशतांशहोमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशरूपका  
 णां प्रतिरूपकं षड्भूषडिति अष्टसप्ततिराहुतयः अत्र शिष्टैकविंशत् ०० इपकाणां कृते आद्या निर्वृत्तिः २४  
 प्रत्येकमेकैकेतितिसः अथोष्टद्विक्रमकारयुः एवं मिलित्वा चत्वारिंशतौ शदीमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशत्रयो  
 दशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 मगुलिस्त्रिसंश्रययुत्तिसिस्त्रिसप्ततिषड् प्रवदेव चमका तुवाकैरेकादशोति मिलित्वा द्वैशते पंचविंशतिश्चात्र  
 तेव सोहारा वाशतांशहोमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशरूपकाणां प्रतिरूपकं षड् चत्वारिंशद्वि  
 तिषड् शतानि चत्वारिंशतिश्चाहुतयो सवन्तिः अत्र शिष्टैकविंशद्विपकाणां कृते प्रथमालिस्त्रिसिस्त्रिसिः प्रत्ये  
 वेराते ४

प्रत्युवाकर

२४

५१

२ श

४ स्ति

६ क

कमेकैकेतितिसः अथोष्टद्विक्रमकारयुः कैरंशं संयुज्जितिसिस्त्रिसः षड्भूषडमका तुवाकैरेकादशोति द्वौ क्रांतिः सदृ  
 ष्चत्वारिंशदुत्तराणद्विंशतीनां ततो वसुधारा वाशतांशहोमपद्म एवैकोनसप्तत्युत्तरशतमं त्रिंशत्तं गोत्रयोद  
 शरूपकाणां प्रतिरूपकमेकोनसप्तत्युत्तरशतमिति द्वैसदृशैकशतौ सप्तवतिश्चाहुतयः अत्र शिष्टैकविंशद्वि  
 पकाणां कृते षड्भूषडिति अष्टसप्ततिः अथोष्टद्विक्रमकारयुः एवं मिलित्वा चत्वारिंशतौ शदीमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशत्रयो  
 दशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 दक्षिणस्यैकशतस्य रूपकाणां प्रतिरूपकं तिस्रश्चाहुतयः अथोष्टद्विक्रमकारयुः एवं मिलित्वा चत्वारिंशतौ शदीमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशत्रयो  
 दशरूपका सवन्तिः तत्र प्रतिरूपकमेकादशा तुवाकैरेकादशोति मिलित्वा द्वौ क्रांतिः सदृशं द्वादशरूपकाणां प्रतिरूपकं षड्भूषडिति अष्टसप्ततिः अथोष्टद्विक्रमकारयुः एवं मिलित्वा चत्वारिंशतौ शदीमपद्म एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशत्रयो  
 दशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 तिषड् शतानि चत्वारिंशतिश्चाहुतयो सवन्तिः अत्र शिष्टैकविंशद्विपकाणां कृते प्रथमालिस्त्रिसिस्त्रिसिः प्रत्ये  
 वेराते ४

१ सप्तकं षड्भूषडिति प्रतिरूपकमेकादशोकादशोति द्वौ क्रांतिः सदृशं द्वादशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 एव षोडशमं अत्र विनागोत्रयोदशत्रयोदशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 द्वादशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट  
 द्वादशरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोडशोति अष्टवत्याहुतयः अत्र शिष्टैकविंशतोरूपकाणां कृते षड्भूषडिति अष्ट



प्रतिरूपकमेकादशैकादशोति एकशतं द्वाविंशोऽङ्काः सदैवाइससंसेहस्येहचशतेष्विंसंस्त्रोऽङ्कतयोः।  
 अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसाग्रे विंशतेरूपकाणां प्रतिरूपकमष्टाचत्वारिंशत्तिसा  
 विंशदिदिष्यसदस्त्राणिचशतानिचत्वारिंशतिश्चेत्याङ्कतयः। इदं वैवस्वमकोद्वादशरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशै  
 कादशोतिद्वादशमधिकमैकादशां पत्ताश्रयवर्द्धतिः। अइसहस्त्राणिपंचशतानिषोडशचतवृत्ति। अत्रैवसोऽङ्क  
 चादशांशहोमपद्मोऽथैकोनसप्तसुवराशतमंत्रविनागेत्यत्रिंशड्भ्रशतसूरुकाणां प्रतिरूपकं शतमेकोनस  
 ४ ति द्येतिश्चेतिमिलित्वाद्वाविंशतिसहस्त्राणिचत्वारिंशतानिसप्ततिश्चाङ्कतयः। इदं वैवस्वमकोद्वादशरूपकाणां प्रति  
 रूपकमेकादशैकादशैकशतं द्वाविंशोऽङ्काः सदैवाद्वाविंशतिष्यशतानिमचचतवृत्ति। अत्रैवसोऽङ्क  
 राचा। अथमहासूत्रेणसमयहोमपद्मेतत्रापित्रैभ्रमंत्रविनागे एकसहस्रं त्रिंशतान्येकत्रिंशत्त्रैतिरू  
 ५८ पकाणां प्रतिरूपकं तिस्रस्त्रिंशत्तयः इतिमिलित्वात्रिंशत्तिसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कतयः। अत्रैवसोऽङ्क  
 सुत्रैकशतरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिमिलित्वैकसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कतयः।

सहस्राणिनवरातानिवि२

१ स पत्ताश्रयवर्द्धतिसदपंचं हस्त्राणित्रीणिशतानिचत्वारिंशत्तिसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 पिषोढामंत्रविनागे एकसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 ससहस्त्राणिनवरातानिषोडशतिश्चाङ्कतयोनर्धति। चमकस्यैकविंशत्सुत्रैकशतरूपकाणां प्रतिरूपकमेका  
 दशैकादशोति एकसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 चाङ्कतयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 तिरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 २ वा शसुत्ररसं त्रैतरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिमिलित्वैकसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 सिः सदैवाद्वाविंशतिसहस्त्राणिष्यशतानिसप्तविंशतिश्चाङ्कतयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 २ वा द्येतेतप्यष्टचत्वारिंशत्तिसाग्रे एकसहस्रं त्रिंशत्तयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा  
 त्वारिंशदिदिष्यसदस्त्राणिचशतानिचत्वारिंशतिश्चेत्याङ्कतयः। अत्रैवसोऽङ्कशित्तोऽङ्कशित्तोमपद्मएवाद्याचत्वारिंशत्तिसा

वि१

बला

नवरातानि एकोनवत्वारिंशच्चतुस्रयः। वमकस्यै कविशानुत्तररातरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशौकादशौति प्रवृत्तानिः सहेताध  
द्वेषद्विशतिसहस्राणि ४ पञ्चरूपकानवति। अत्रशतानि चाएकशतं षड्वत्वारिंशच्चरूपकाः। एकवत्वारिंशच्च

कादशौकादशौति एकसहस्रं त्रीणि शतानि एकविंशच्चतुस्रयः। एताश्च प्रवृत्तानि मिलित्वा पंचषष्टिसहस्राणि  
द्विशते एकोनविंशतिश्चाङ्गुतयः। अत्रैव सोद्दाराचा अत्रैव समग्र होमपक्षे एकोनसप्तसुत्रं प्रोक्तं भवविनागे एक  
सहस्रं त्रीणि शतानि एकविंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
सुत्राङ्गुतिसंख्या। तत्र चैतद्दशसहस्राणि षड्शतानि एकवत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
सहस्रं त्रीणि शतानि एकविंशच्चरूपकानवति। अत्र शतांशस्त्रयोदशरूपकाः एकविंशच्चरूपकाः अत्र शिष्यतो  
तिरुद्रवमकस्यैकसहस्रं त्रीणि शतानि एकविंशच्चरूपकानवति। अत्र शतांशस्त्रयोदशरूपकाः एकविंशच्चरूपकाः अत्र शिष्यतो  
इपकाः अत्र शिष्यतो एवं स्थिते शतांशपक्षे त्रैधा चमेव विनागे षड्वत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
पकंति सुत्राङ्गुतयः। इति अष्टविंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
तेऽर्थातिः कश्चिः प्रत्येकमेकैकैतिसः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति

१५

१५

स्तिस्त्र  
तिस्त्रनि

काणां प्रतिरूपकमेकादश

क३

स्तिस्त्र निः ४

स्यत्रयोदशरूपकैकैकादशौति द्विचत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
विष्णुसजीपसेत्पथं मयैकाङ्गुतिसंख्या। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
हएव षोडशमंत्रविनागे षड्वत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
ङ्गुतयः। अत्र शिष्यतो एवं स्थिते शतांशपक्षे त्रैधा चमेव विनागे षड्वत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
इति षड्शतानि एकवत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
अत्र शिष्यतो एवं स्थिते शतांशपक्षे त्रैधा चमेव विनागे षड्वत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
शतिसंख्या। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
एकाङ्गुतिसंख्या। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
इति षड्शतानि एकवत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति  
यः अत्र शिष्यतो एवं स्थिते शतांशपक्षे त्रैधा चमेव विनागे षड्वत्वारिंशच्चतुस्रयः। अत्रैव सोद्दाराचा इति महारुद्रश्चाङ्गुतिसंख्या। अथाऽति

शौकादश

प्रवृत्तिश्चाङ्गतयः। अत्रैवसोद्धारो शतोशतोशहोमपद्मएवाऽष्टवत्वारिंशन्मंत्रविनागेष्वष्टवत्वारिंश  
 डुत्ररैकशतरूपकाणां प्रतिरूपकमष्टवत्वारिंशदष्टवत्वारिंशदिति सप्तसहस्राण्येवाङ्गतयः। अवशि  
 ष्टैकप्रतिमष्टवत्वारिंशरूपकाणां कृतेष्टवत्प्रथमालिखितिर्मात्रिंशत्। प्रवृत्तिक्रियण्येष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 ज्जितीष्टवत्प्रतिपद्मवमकस्यत्रयोदशरूपकाणां कृतेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 मकशतमोङ्गतयः। अवशिष्टैकविंशदुत्रररूपकाणां कृतेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 सप्तसहस्राण्येकशतमष्टवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 ज्ञानमंत्रविनागेष्वष्टवत्वारिंशदुत्ररैकशतरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 रंशतमिति चतुर्विंशतिसहस्राणिषट्शतानि चतुःसप्ततिश्चाङ्गतयः। अवशिष्टैकवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां कृ  
 तेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 सः। चमकस्यत्रयोदशरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर

६०

ति२

कविंशदुत्रररूपकाणां कृतेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 चतुर्विंशतिसहस्राणिषट्शतानि चतुःसप्ततिश्चाङ्गतयः। अवशिष्टैकवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 कचत्वारिंशदुत्रररूपकाणां कृतेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 ष्यतेतथाचमकस्यैकसहस्रं त्रिंशदुत्रररूपकाणां कृतेष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 ति। एकपत्ररूपकोऽवशिष्टोत्पत्तेतत्रचमकेनेभमंत्रविनागे एकसहस्रं चत्वारिंशतानि चतुःसप्ततिश्चाङ्गतयः।  
 काणां प्रतिरूपकंति सप्तविंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 चमकस्यत्रयोदशदुत्ररैकशतरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 निषिष्टिश्चाङ्गतयः। एताश्चष्टवत्प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 वादशांशहोमपद्मएवजोडामंत्रविनागे एकसहस्रं चत्वारिंशतानि चतुःसप्ततिश्चाङ्गतयः। अवशिष्टैकवत्वारिंशदुत्रररूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशोतिविवत्वारिंशदुत्रर  
 एकंषट्प्रतिमिति मिलित्वाऽष्टोसहस्राणि सप्तशतानि चतुराशतिश्चाङ्गतयः। चमकस्यैकशतस्य च

मन्त्र

विंशतिसहस्राणि अष्टौशतानिसताशीतिश्चाङ्गतयः ततोवसोर्द्वावाद्वात्राहोमपक्ष एवाथावत्वा रिशान्नत्रविनापरत्वं सत्तद्वत्  
दशातानिवृत्तः षष्टिश्चेतिरूपकाणां प्रतिरूपकमष्टावत्त्वा रिशदिनिमित्त्वा सप्तसहस्राणि द्वेचतस्रसप्ततिश्चाङ्गत  
यः चमकस्यत्रयस्त्रिंशद्भुतं तदेकवत्तरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशौकादशौनि ८

त्रयस्त्रिंशद्भुतकाणां च प्रतिरूपकमेकादशौकादशौतिमिलित्वैकसहस्रं चत्वारिंशतानि त्रिषष्टिश्चाङ्गतयः।  
एताश्चष्टौक्रांतिः सहस्रसहस्राणि द्वे शते सप्तचत्वारिंशद्भुतयः। अत्रेवसोर्द्वावाद्वात्राहो  
मपक्ष एव षोडशधर्मत्रविसागे एकसहस्रं चत्वारिंशतानि चतुःषष्टिश्चेतिरूपकाणां प्रतिरूपकं षो  
डशषोडशौतिमिलित्वा त्रयोविंशतिसहस्राणि चत्वारिंशतानि चतुर्विंशतिश्चाङ्गतयः। चमकस्यत्रय  
स्त्रिंशद्भुतरैकशत रूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशौकादशौतिमिलित्वैकसहस्रं चत्वारिंशतानि चतुःषष्टिश्चा  
ङ्गतयः। षोडशौक्रांति सहास्रं चत्वारिंशतसहस्राणि सप्तशतानि षोडशौत्रिंशद्भुतयः। ततोवसोर्द्वावाद्वा  
त्राहोमपक्ष एवैकोनसप्तसुत्रशतमत्रे वितागे प्रतिरूपकमेकोनसप्तसुत्रशतमिति मिलित्वा द्वे  
लक्षे सप्तचत्वारिंशत्सहस्राणि चत्वारिंशतानि षोडशश्चाङ्गतयः। चमकस्यत्रयस्त्रिंशद्भुतरैकशत रूपका  
णां प्रतिरूपकमेकादशौकादशौतिमिलित्वैकसहस्रं चत्वारिंशतानि त्रिषष्टिश्चाङ्गतयः। षोडशौक्रांतिः सहेता  
सिद्धे लक्षे अष्टाचत्वारिंशत्सहस्राणि शतान्येकोनाः श्रुतिश्चाङ्गतयः। अत्रेवसोर्द्वावात्त्वाः। तिरुद्र ६२

एताश्च

६२

एतन्नशतानि त्रयोविंशतिश्चाङ्गतयः। चमकस्यैकसहस्रं चत्वारिंशतानि एकत्रिंशत्त्रेतिरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशौ निरुद्धात् त्रैकादशौक्रा  
यतिमिलित्वा चतुर्दशसहस्राणि २

वसमयहोमपक्षे चतुर्दशसहस्राणि षडशतान्येकचत्वारिंशत्त्रेतिरूपकाणां त्रेभामंत्रे वितागे प्रतिरूपकं तिस्रस्त्रि  
सश्चाङ्गतयः। इति मिलित्वा चत्वारिंशत्सहस्राणि षडशतानि एकचत्वारिंशद्भुतयः। षोडशौक्रांतिः सहेता अ  
ष्टापंचसहस्राणि षडशतानि अत्रुः षष्टिश्चाङ्गतयः। अत्रेवसोर्द्वावाद्वात्राहोमपक्ष एव षोडशधर्मत्रविसागे चतुर्द  
शसहस्राणि षडशतान्येकचत्वारिंशत्त्रेतिरूपकाणां प्रतिरूपकं षडशौत्रेति मिलित्वा समाश्रुतिरसहस्राणि  
अष्टौशतानि षडशत्त्वारिंशद्भुतयः। चमकस्यैकसहस्रं चत्वारिंशतानि एकत्रिंशत्त्रेतिरूपकाणां प्रतिरूपक  
कामेकोदशौकादशौतिमिलित्वा चतुर्दशसहस्राणि षडशतान्येकचत्वारिंशद्भुतयः। एताश्चष्टौक्रांति  
ः सहेकलक्षे सहस्रं चत्वारिंशतानि सप्तश्रुतिश्चाङ्गतयः। अत्रेवसोर्द्वावाद्वात्राहोमपक्ष एव षोडशध  
र्मत्रविसागे चतुर्दशसहस्राणि षडशतानि एकचत्वारिंशत्त्रेतिरूपकाणां प्रतिरूपकं षोडशषोडशौति।  
मिलित्वा द्वे लक्षे चतुर्विंशत्सहस्राणि षडपंचशतं चतुर्दशसहस्राणि चत्वारिंशतानि एकत्रिंशत्त्रे  
तिरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशौतिमिलित्वा चतुर्दशसहस्राणि षडशतानि एकचत्वारिंशद्भुतयः।

अनंतविविनानेवदशमहस्ताणिषट्शतान्येकवत्वात्वि

तयः। ततो वसोहीरासमग्रहोमपक्षे एवाः श्चत्वारिंशच्चैतीरूपकाणां प्रतिरूपकमष्टा चत्वारिंशदष्टा  
 चत्वारिंशदिति मिलित्वा सप्तलक्षणि द्वे स हस्ते सप्तशतान्यष्टप्रश्चिञ्चतयः। चमकस्यैकसद्वंतीणि  
 शतानि एकत्रिंशच्चैतिरूपकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशेति मिलित्वा चतुर्दशप्रंशतान्येकचत्वारि  
 ष्चिञ्चतयः। षड्विंशत्क्रांतिः सदैः ताः सप्तलक्षणि सप्तसप्तदशानि चत्वारिंशतानि नवाङ्कतयः। अत्रैव  
 सोहीरासमग्रहोमपक्षे एवैकोनसप्तत्युत्तरशतमत्रुचिञ्चतयः। चतुर्दशप्रंशतान्येकचत्वारि  
 शच्चैतिरूपकाणां प्रतिरूपकमेकोनसप्तत्युत्तरशतमेकोनसप्तत्युत्तरशतमिति मिलित्वा चतुर्दशतिलज्ञा  
 णिचं सप्तप्रति सप्तलक्षणि त्रिंशतान्येकत्रिंशच्चतयः। चमकस्यैकसद्वंतीणि शतान्येकत्रिंशच्चैतिरू  
 पकाणां प्रतिरूपकमेकादशैकादशेति मिलित्वा चतुर्दशसद्वंतीणि षट्शतान्येकचत्वारिंशच्चतयः  
 षड्विंशत्क्रांतिः सदैः ताः अत्रुचिञ्चतिलज्ञाण्यष्टाशति सप्तलक्षणि षट्शतान्येकचत्वारिंशच्चतयः। षड्विंशत्क्रां  
 तिः सदैः ताः अत्रुचिञ्चतिलज्ञाण्यष्टाशति सप्तलक्षणि षट्शतान्येकचत्वारिंशच्चतयः। तैतश्च वसोहीराः ॥ इत्यति

सहस्राणि ३

तिनि ५

२२

४ त्रुः

अनंतविवेवचतुत्रमधो हस्तं यो निवर्तकं समेत्वेत्। चतुरंगुलविस्तारामेखलातदुच्चिता। हस्तमात्रं समं चत्तरष्टादिहस्तसमं हस्तमात्रं।

रुद्रश्चाङ्कति संख्या ॥ ॥ नमकादिविते देन जपहोमविधौ विधिः। युरुलेद्युश्चदशोयं योऽप्यत्राकाधपेक्षया ॥  
 इति नमकरुद्ररुद्रैकादशानी। महारुद्राः तिरुद्रेषु मंत्रविद्येदकारा आङ्कति संख्या विशेषश्चा ॥ अथ हो  
 मेच्छं डिलकुंडनिर्माणदिविधिः ॥ तत्र स्वल्पसंख्या कदोमेच्छं डिलसंमतो हस्तमात्रं द्विसहस्रपरिमितं  
 वाहोमात्रं सारेण कल्पयेत्। अत्र कुर्यात्कदोमेच्छं कुंडं च कल्पयेत् ॥ तत्र नवग्रहमन्त्रेण कर्करेण  
 ॥ स्कंदप्रयोगे ॥ नक्षत्रमखे कुंडं दशमीं नैवेत्। चतुरस्रीं चतुर्कोणं अक्षीं हस्तौ। अथः श्वातमपि हस्तौ परि  
 मितेयस्य त्रयोक्रं यो निवर्तकं कल्पमाणलक्षणलक्षिताया निवर्तकं यस्यात् ॥ ॥ मेखला प्रमाणमा  
 द्वा ॥ ॥ चतुरंगुलविस्तारो दिनात्तद्विज्ञा ॥ चतुरंगुलोन्नता ॥ एतच्च कुंडमयुतदोमात्रुसारि ॥ ॥ यो निलक्ष  
 णं कुचिं सामणौ ॥ ॥ वितस्त्रिमात्रं यो निः स्यात् षट्सप्तौ गुलविस्तारता ॥ क्रमैश्चोन्नता मध्येर्ष्ययोः श्रांयुलो  
 छिता ॥ जोषसदृशी तद्वद्युता ॥ द्विसंयुता ॥ एतत्सर्वेषु कुंडेषु यो निवर्तकं मुच्यते। मेखलापरिसर्वत्र  
 अश्वत्थदलसन्निधा ॥ वितस्त्रिमात्रमिति ॥ एतच्च यो निदर्शयं षट्सप्तौ गुलविस्तारं तौ व्यायामे विकल्पः। तद

४ त्या

शयनेति अनेमदैर्धेणप्रमाणं चरमाद्य ॥ उक्तलक्षणलक्षितागजोष्मदृगी अक्षुल्हपचसदृवीवायोनिर्वव  
तीसर्थाः ॥ इयं चयोनिः कुंडस्यपश्चिमदिशागमेखलोपरिकर्या ॥ अं डपलक्षणं क्कंदपुराणे ॥ गुरुहस्योत्तर  
ईणमंडपंकारयेद्दुःखः ॥ रुद्रायत्नमीत्तमौवा चंस्वमुदकवृद्धीदसहस्रमथाः शैवाहस्राकुयोद्विधमन्त  
त्स्यहाराणि चवारिकर्त्र्यानि विवृणो ॥ प्रसुदकप्रवणोत्तमिकारयेदुज्जितो नरः ॥ प्रायुक्त्स्वमासाद्यप्र  
देशं मंडपस्युत्तशोचनेकारयेत्कुंडे यथाक्वक्षणादिति ॥ अथप्रकारं तरेणकुंडनिर्माणादिविधिः ॥ इह  
सुविस्तरंतद्वचतुर्दशायत्नं पुनः ॥ लक्ष्मणेन वेत्तुं इत्योनिवृत्तिमेखलो ॥ प्रथमं प्रथमोदंस्तरवातं चतुरस्रं कुंडं  
विधेयमित्यर्थो निलक्षणं लक्ष्मणं ॥ इत्तं हि रं यलोत्ति ताकाया प्रथमामेखलाडधे ॥ त्रिंशुणात्त्रनात इद्वितीया  
समुदाहता ॥ लक्ष्मणविचाराणां चतुर्था चतुरस्रला ॥ इत्युल्लस्रविचाराः प्रथमोरपि सप्तमो घट्टयोर्द्वितीयो हता  
ययोमेखलयाः चतुर्दशकुंडे मंडपस्य ॥ तथापि उदाहस्रं ॥ मंडपस्य चतुरस्रं ॥ मंडपपुराले ॥ नदी  
नासंगमे वैवसुराणां मयतस्तथा ॥ सुसमेत्तु मिलागे च देवताः ॥ विष्टिते यथा ॥ अविष्टित्युक्ता वैवसां च तं परि

सवैवा ५

६३

णमा २

दयविसृते नदक्षिणे त्रयोऽष्टतु र्दस्तायत्नं च उ र्दस्त ५

त्रयोत्राखने द्वे तत्र कुंडे च सुसमं दसमाधकां विद्युणं लक्ष्मणे मेचकोटिदो मेचतुर्णम ॥ अथम ० शोअविदायोर्के  
अथीतेवे दपारागाः ॥ कंदसुलफलाहारादधिद्वीराः ॥ शिरोपिवा ॥ अष्टाष्टतिजः ॥ इत्युपलक्षणं ॥ अतोयत्रांतिकर्मा  
दिवेगेन निर्वाहं सवति तत्रयावद्विक्रिषिः कर्मवेगेन निर्व्वेदं न्नितावतो अखिनो हणीतं यथापि स्वस्वरागोयत्नमा  
नेनेवकार्यं स्त्रयापि बहुकं चैके हेमेत्वागस्य सिन्नकाले त्विनयागकालस्ये द्वाहमश्राक्यत्वादि मोफ्रमा एव च य  
देवताः सुत्वायजनीय इयं ममनसि निक्षयं देयथा देवतमस्ति तिव्खः ॥ व्यागः कार्ये यिजमाने ॥ ॥ अथवसुधारा  
कास्तः ॥ ॥ विंतामणे ॥ ॥ घट्टकुंडं सवसोर्द्वीरां शैथी पातयेदनि लोपि ॥ अहुं बरी मथा द्रो चक्रही कोटखडितो ॥ वा  
कुमात्रं सुवेकत्वाततसं सइयोपरि ॥ घट्टधरो स्त्रया सम्पत्तेरुपरि वासयेत् अत्रवसुधारायो मंत्रास्यकाउ  
वाकाः ॥ ॥ मंत्रांतरा एपि युर्युत्ते ॥ प्राचयेत्सकमगुं यंत्रैर्लक्ष्मणैर्देवो महवै श्रमरः सम्पत्तेरु संसपातयेत् ॥  
प्रतिस्थं डिलकुंडनिर्माणादिविधिः ॥ अथवेधयनं प्रोक्तं पंचांगरुद्रयासविधिः ॥ ॥ पंचांगं रुद्रशहस्रपण्डे  
गरुद्रशहस्रपवायमर्थः ॥ पंचप्रकारं अंगान्यासां यस्मिन् पंचांगं तत्र पंचांगान्यासेषु तीर्थैः ॥ युष्टामे संशिखाव

ना ५

मं ३

३मै ३  
१ रुद्रः एवै बडंगरुद्रोपि १

दं

स्वात्मके कविशं ग्यासः अशुभमः सर्वदिपादांतं पंचांगन्यासो द्वितीयः पादादिरर्द्धं त्रैपंचांगन्यासः तृतीयः युष्ट  
दिमस्तुकांतं पंचांगन्यासश्चतुर्थः। हृदयाद्यखा तं पंचांगन्यासः पंचमः शंखं पंचांगन्यासः षष्ठमः प्रजननादिसर्वापंगण  
यं त्रैपंचांगन्यासः अपरः। अयं च षष्ठीन्यासः। ध्वजीक पंचमकारन्याससहितः। पंचांगरुद्राणां न्यासप्रद्वैकं  
पदोमाऽर्जनविधिं व्याख्यास्यामः॥। याते रुद्रेति शिखायामस्मिन्महत्स्यस्विति शिरसि। सहस्राणि तिलानि  
देहंसः। सुचिप्रदितिलवोर्मध्ये। ध्वजकं यजामहेतिनेत्रयोर्ममः। सुहायितिकर्षयोर्ममः। नैकेतिनासिकार्या  
त्रये मुखे। नीलप्रीवो ह्येकं वीनमस्यैर्ऽर्द्धं स्वास्तु धृत्येति बाह्योर्थांते। हेतिरिसुपवाह्योर्थांनीति हस्तयोर्ममः।  
श्रीजातमितिपंचांगवाकं पंचं श्रीशुक्लस्य। नमो वाः। किरिकेस्य। इति हृदये। नमो गणेशे। इति ध्येनमो हिरण्य  
वाह्वेति पाश्र्वयोर्ऽहिरण्यगर्भेति नासौ। मीलुष्टमेतिकर्चां। यिस्रतानामधिपत्येति यक्षो। सशिराज्ञातवेदास्त  
पाते। नमो गन्धर्भे। मित्रश्रेणतेति जाचे। येष्यामिति पादयोर्ऽहिरण्यसो। वदितिकवचं। नमो विल्मिनऽस्युपकव  
चं। नमो अशुनीलप्रीवायेति त्रितीयनेत्रो। अमुच ध्वजनऽस्येयपतावेतश्रेतिदिग्बंधं। नमो सगवते रुद्राय

ति

३ ३

२५  
अप

२४

३३

तिनमस्कारं न्यसेत्राकारं मूर्द्धिविच्यस्पनकारं नासिकायतः। मोकारं तु ललाटे वैलकारं मुखमध्यातः। गकारं का  
पठसे। तु वकारं हृदिविच्यसेत्राकारं दक्षिणे हृदये। लकारं वामतो न्यसेत्। दाकारं नासिदे। देशे तु यकारं पादयो  
न्यसेत्। अष्टमकारं पादयोर्ऽर्द्धं स्पवामं न्यसेत्। अमध्यतः। अधोरे हृदिविच्यस्पुसुवेतसुरुषं न्यसेत्। इशानं मूर्द्धि वि  
च्यस्पहंसो नाम सदा सित्वाहंसहं सेतियोऽत्र्याहंसो नाम सदा शिवः। इशानं मूर्द्धिविच्यस्पे०० तस्यायमर्थः। इशा  
नं मूर्द्धिविच्यस्पहंसहंसं सेतियुत्त्राएवं कृतं सतिहंसो नामेति प्रसिद्धा शिवोत्तरे। अमुमेवार्थं। मीनैव कति  
हंसहं सेतियोऽत्र्याहंसो नाम सदा सित्वेति। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः संषुटमारसेत्। धाता रमिंद्रकृत्नी अ  
श्रेयुः गंगः पंथा मसुचंतत्रवायाम्यानीनियुद्धि त्रैयं सोमतमीशानं स्पोनाष्टयिवीच्यते। संषुटमिद्वृष्टी द्विहुविच्य  
स्येवमात्मनि रौद्रीकरणं कृत्वा स्वगच्छि गते पापैः प्रसूयते। सर्वसुखेषु राजितो भवति। यद्गोर्ध्वं इत्यतः प्रेतमिश्रा  
चत्रहाराहस्यमहत्तया किनीडाकिनी सध्वापदतस्करा रक्षपदवाः सर्वहंतै तेष्यति। मारुती मनीषे

३२

तिरबोधप्रियमूर्धनिमर्माणितेजातवेदाइतियद्योसिद्धदयाधतिमंत्र्याभारहाकर्तव्याशिवसंकल्पं हृद  
 यंउरुसुप्रसूक्तेशिरंरनारायणांशिरवाअप्रतिरथं कवंचंशतकवीयमखंपेचांगंसकृजपेददछांगेपणम्या  
 ध्यात्मानंरुद्ररूपध्यायेत्शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं पंचवक्त्रं कांगगाधरं दशशुभं सर्वांतरणसुमित्त  
 नीलश्रीवंशशांकांकांनगयज्ञोपवीतिनां व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमस्य प्रदां कामंडलुं हस्तत्रास्या  
 मखिंशंशूलपानिनां ह्यलेतेपिंगलजटाशिसमुद्योतकारिणो अमृतनालुतेहृद्यमुमादेहाह्वारिणं वि  
 व्यसिंहासनासीनं दिव्यसौगंसमन्त्रितां दिदेवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् नित्यं च शाश्वतं श्रेयं सुव्र  
 वमहोरमव्ययशंसर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणं एवं ध्यात्वा द्विजः सम्पूज्य ततो यज मनमारते ॥ ३ ॥  
 तिपंचांगरुद्रन्यासविधिः ॥ अथ रुद्रासिंक्रविधिः ॥ अग्निषेकेष्वेकैक्यासाअपिसच्छीयतेथया  
 तोरं ग्नानाञ्जनविधिं व्याख्यास्यामः ॥ आदितपवतीथदिकेसूक्तोयं त्वसुतिप्रयतो ब्रह्मचारी सुक्लवासं  
 सास्वपदक्षिणाप्रत्येद्वेगुस्वस्त्रित्वात्तनिदेवतांश्च पर्येत्प्रजननेब्रह्मासिष्ठउपदयोर्विष्णुसिष्टेर्नम

२५

त१

द२

१ लयोहिरसिष्ठ बाकोरिंरसिष्ठउ। जवरेप्रसिष्ठउ। हृदयेवावसिष्ठउ। कंबेवपदसिष्ठउं वक्त्रेः सरस्वती तिष्ठउ। नासिकयोर्वयुस्तिष्ठउ।

४ सं

त१

३२

नयोः सूर्याचंद्रमसौ तिष्ठतां नासिकयोः प्रणः सिंष्टं कर्णयोश्चिन्नौ तिष्ठेत् ललाटे रुद्रासिष्ठं त्रामूर्द्धां हृदयासिष्ठ  
 उरुष्ठे पिनाकीं चिष्ठ उरुतः शूली तिष्ठतु पाश्र्वयोः शिवशं करौ तिष्ठेतां सर्वातो वासुसिष्ठं देतो वक्षिः सर्वतो  
 अग्निहोत्रामालापरिवृतसिष्ठ उसर्वेष्टं गेयुसर्वदेवतासिष्ठं उमंरुद्रासिष्ठं अग्निर्मवा विष्णुः त्रियथा लिगं  
 गाः सिंष्ट्यायेनेगंश्रुप्याहृतपदीपेरात्मानं तपाराधयेत् आराधितो मनुष्ये स्वसिद्धेः देवैः सुरादिसिंष्ट्या  
 वाह्यामिसक्ताबोमांशहाणमदेश्वरं अंबकं यजामदइत्येनमाराधयेत् अग्निर्मवा विष्णुः त्रियथा देरयमथ  
 अग्निर्मइयादिसिंष्टं माणां मंत्रैर्यथा लिगं गंगानिसंष्टेत् ॥ तत्र मंत्राः ॥ अग्निर्मवा विष्णुः त्रियथा देरयमथ  
 मथि अहममृतो अमृतं ब्रह्माणि इति ब्रह्मः स्पृशेत् शं वायुर्मंत्राणि अतः प्राणहृदयो हृदयं मथि अहममृतं अ  
 मृतं ब्रह्माणि इति वज्रं ॥ अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति अत्रोत्रो अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति  
 वक्षः ॥ दिशो मे श्रोत्रे अत्रोत्रो अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति अत्रोत्रो अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति  
 हाणि शरीरं शेषं धिवनस्पतयो मे लोमसु अत्रोत्रो लोमानि हृदये हृदयं मथि अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति

१ इति

३ प्राणस्त्वानं हृदयो। सूर्यो मे वज्रु विष्णुः। वज्रु हृदये। हृदयं मथि। अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि। इति ३  
 २ आषोभे नसि अत्रोत्रो अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति वज्रं ॥ अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति अत्रोत्रो अहममृतं अमृतं ब्रह्माणि इति

मत्ता

मस्तकी। इति नो मे मन्यो भिन्नः। मनु हृदयो। हृदयं मयि। अहममृतो अमृतं ब्रह्मणि। इति २

४ रा

रोमकृपात्रं इदं मे बले श्रितः। खलं हृदयो हृदयं मयि। अहममृतो अमृतं ब्रह्मणि। इति सर्वोपांगोपकृत्या मे  
मूर्द्धि श्रितः। मूर्द्धा हृदयो हृदयं मयि। अहममृतो अमृतं ब्रह्मणि। इति क्रोधविद्वानं हृदयो आत्मा मयात्मनि  
श्रितः। आत्मा हृदयो हृदयं मयि। अहममृतो अमृतं ब्रह्मणि। इति क्रो विद्वानं वदः। पुनर्मा आत्मा पुनरा  
युगोत्तरं पुनः प्राणं पुनराहृतं मगारा वैश्वानरोरक्षितं विवर्धनः। अतश्चि त्वमेव तस्य गोपाः। इति सर्वशरीरं  
सुदोत्रं एवं मंगानि समुत्पायेन गंधादि सिरात्मानं सत्याराधयेत्। एवं सुदमात्मानं प्रसाराधयेत्। रुद्रस्वपि। इति।  
त्मानं स्वशरीरे रजयेदित्यर्थः। तत्र आवाहनं मंत्र आराधित इत्यादि आवाहन व्यतिरिक्तं ततोपचारं स्वपं  
चसुपुष्पवाच्यं बकं यजामहे इत्यर्थं मंत्रा अमृतं वेद्यमपि मानसं परिकल्पयेत्। एवमात्मज्ञानत्र  
रं सिव प्रजापकारमाक्षं ॥ आवाचं हृदयः सवेतसः श्रेः सदेकं तु मस्य स्वता जरे क्वं वृद्धिर्मनो जवे  
श्यादिशि श्रमं वायसेवै। मित्वा वाहयामाः इत्याः। वाह्यं संस्थापितो इत्याः। आहनेः सद्यो जातं प्रपद्य  
मी इत्याः। आहने ददाति सद्यो जाताय वै नमो नम इत्याः। सने ददाति तवे सवेनाः। तिसवेतसखमा मिति पा

जी ५

६२

चैतेर ३

इत्येकादशानामनुवाकानामेकमेकं जपेत्सर्वेषां परे पुनरा राधयेत् उत्र मारा  
धने न तदेतद्विधानं प्रोक्तां सत्रतधारामिति सत्रतधारापदसहस्रं कलशा  
सिषेकस्याप्युपलक्षणां पूतदेवघटी स्नानमित्यस्युच्यते। अत्र मन्त्रानविधावपि  
प्रवृत्तिपंचांगन्यासादिकं कार्यं। सर्वेषां पारश्व्यादि। सर्वेषां अलिखितं नमस्का  
वृत्ति विशेषाणां परे समाप्तौ उत्र माराधने न पुनरा राधयेत्। अतिषेकानंतरं पू  
र्ववदेव पुनः प्रजायेदित्यर्थः। पुनरा राधयेदुत्र माराधनमिति पाठे उत्र माराधनम  
सिषेकानंतरं पूजां पुनः पश्चादा राधयेत् कुर्वीतेत्यर्थः। पुनः शब्दः प्रथमप्रजापिद्वयान



वृत्तिषेकात्रेद्विःप्रज्ञोपेक्षया। तदेतद्विधानं प्रोक्तमिति। आदावेवै प्रजाविधानं प्रोक्त  
 मित्यर्थः। अथवा तदेतद्विधानमसिषेकादिषु प्रोक्तमित्युपसंहारः। उत्तमाराधनं तदेत  
 द्विधानं प्रोक्तमित्युक्तं। अधुनाद्याधिविमोकार्थे असिषेककर्मणि विशेषं दर्शयन् अधिक  
 रिनेदाद्विज्ञानिफलानि दर्शयति। तेनासिषिको नोदकेनाहीत्यामि अत्रुवाकेनाङ्गिगाति  
 आपादात्संभृज्यात्पापद्वयार्थी व्याधिविमोचनार्थी जीवनार्थी श्रीकामः पुष्टिकामः  
 ऋष्टिकामो मोक्षार्थी च कुर्यादेवं कुर्वन्सिद्धिमाप्नोति आचार्ययदक्षिणाददाति दक्ष  
 गाः सवसाः सुवर्णं चूषिता वृषत्तैवीका दशास्रदत्वा तकागादृष्ट्या हस्तगवात्रो धायनः॥

शांति काम

६७

सोषपत्रं द्वितीयं पंक्तौ श्रीकण्ठकौ सोधु

शर्वोदवंतर्पयामि ४ पुण्यं पुण्यं ददाति स्वर्गं तदमनाय नमस्ति भूपददाति मनो ननु यदतिदीपं ददाति भवो ज्ञवाय नमस्ति ४  
 दददाति नवो ज्ञवाय नमस्ति लिगाति अत्रानंदं ददाति अङ्गिगाती आपोहि ज्ञोत्याद्याः अथाइस्यर्पयति सर्वं देवं त  
 र्पयामि इदं देवं तर्पयामि पशुपतिदेवं तर्पयामि रुद्रदेवं तर्पयामि अथ देवं तर्पयामि इदं देवं तर्पयामि  
 महान्तं देवं तर्पयामि अथैश्वर्याय नमः इत्याः च मनंददाति अथैश्वर्याय नमः इति मधुपर्कं ददाति कालाय नमः इति गी  
 ददति कालविकरणाय नमः इति कानिनेवेद्यं ददाति अथाः इति मंत्रैरेषोषपदं ददाति नवाय देवाय नमः इति  
 यदेवाय नमः इति शान्ताय देवाय नमः पशुपतये देवाय नमः रुद्राय देवाय नमः उवाय देवाय नमः इति  
 नमो महते देवाय नमः अथास्याघोरतच्छरघोरस्यः सुपतिश्च तो अथास्याघोरतच्छरिवास्याः यमर्थः अथ प्रोक्त  
 दृष्टान्तं नमः स्याघोरतच्छरघोरादिशरीरानुपतिश्च तो अथाघोरस्यः अथनुवाकत्रयेण तद्वानुवाका अथेन्द्रवर्षा  
 नाः अपि सौकर्यार्थं मंत्रलिख्यन्ते ॥ अथारि स्याथघोरस्यः घोरतरेत्यः सर्वेस्यः सर्वे सर्वेस्यो नमः अथुविश्व  
 पेस्यः विविस्यः ॥ तसुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्र प्रचोदयात् ॥ इदं शान्तः सर्वविधानामेश्वरः सर्वे  
 तानो ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माधिधोमे अमुसदा विवां अथास्याघोरतच्छरघोरस्यः सुपतिश्च तो अथुर्कं

यामीति 3

४ स्वरु 5

लिप

६

दन्तरं कृत्यमाद ॥ अत्रैतत्पदिरण्येन मरुत्तिलकलौ संततधरं निषिचिन्मधुना सार्पिणा पयसा चिह्नरसेन नालि  
 केरसेन वा आभ्ररसेन वा तदलात्ते मुदकेन वा न मस्के रुद्रमयवद्वृष्टादी स्यामिच्छुवाको रोगप्रतिमादान विधे  
 रंत्वेद्विर्तम आपो दिष्टे त्पादयश्चाल्लिगा क्रव आश्रलायनघोषणा वैघाक्रु प्रवर्तितम ॥ इति रुद्रा लिपेचन वि  
 धिः ॥ अथांगमंत्राणामुच्यते ॥ अथ नमिकं गान्या समंत्राणामुच्यते देवतहं दं सितत्रायेति रुद्रम सुव्या  
 यनमो वः किरिवे स्यो सुभ्रमयत्मानं मनो ज्योतिर्यमाय स्वादिभेषामग्नि रश्मि नम इत्पसेवे स दस्त्रासि स दे स जो  
 नी न त्री वा यं ~~...~~ एस्प इति वैषी दुर्बो सा दे सः सुविषव्वो अत्र इत्यनयो वाम देव वृष्टिकं यना म्  
 आनी लि ~~...~~ रस्येन यो वसिष्ठो मानसा केन मस्के अस्वायु क्षयया ते दे ति र्मो विस्मिनेन मो अस्मृनी लय वा  
 येत्येषां संनवानवतयधुः प्रसु च धवः इत्यनयो धी रदोये तीथानिये लतानं ये यथा य एता वं नु च्छेप्ये पा दे  
 वतः सद्यो जाता दिपंचा मुवा कनी तथा ता मभि वर्या रतना जितमिति द्वयो र्द्वे स हि ती र्द्वे वता उपनिषु दी नमो  
 द्विरण्यवाहव इत्यस्य मंडू को द्विरण्यग लेय प्रणत इत्यनयो द्विरं लेमी दु धम शिव तमे इत्यस्या देरा जो ना व

एप

५५

स्या

वेद स इत्यस्याः काशपो मे र्परा यो गे न ये स न यो रंग स्या विश्वानि न इत्यां च सु क्रतो मा नौ महां त्रमि इत्यस्य देव वा इ  
 रणते रुद्रा गः सुगन्ः पंथानि इत्यनयो र किः सै न्तु तमित्यनुवाकं स्पत्र ह जज्ञानं या ते अत्र इत्यनयो र्द्विच्छेदे वा अथ  
 वो विदे न स्याः का एव स्या तार मिद्र सु पंथा सये स न यो र्ग र्बे त्वा यमी इत्यस्य शुनः शो पो श्वं सो मे इत्यस्याः शुनः र्द्वि  
 क्यं सो मे इत्यस्य बंधुं श्रमी शान मि इत्यस्याः राहू गणे इ सै रु द्रे इत्यस्याः प्रगा थो स्या ना प्रथिवी मह विो रि इत्यनयो र्द्विभ्रति ए  
 र जो ध्य शिर इत्यस्याः सुभंग विष्ठ रो मृ हान मि द्वा स्य विश्वरूपो भर्मा णि इत्या स्याः पा सु ज्ञा त वे दा इ इत्यस्याः स्वयं लब्धे हा  
 वा ज्ञायतः इति र्क स्य शिवसे क स्यः सहस्र शी र्षे स्य द र्द र्थे स्य स्र क स्य प्रजा पतिः प्रो ड र्द र्थे स्य स्रो त र ना रा यणः  
 आशु शिशान इत्यनुवाके स्या अतिरथ र्द मशेरु इत्यनुवाकं स्य द व्वा डि प्रार्थ मथ्य देव तं हं सः शुचि प्र दि इत्यस्याः  
 सूर्यो मानसो केन मस्के अस्वायु क्षयया ते दे ति वि त्य व र ग वा श्री द्विरण्यग लेयः प्रणत इति प्रजा पति ज्ञा ति वेद से  
 तामभि वर्या म मे र्वा पराय विश्वानिनः प्रतना जितमिति जात वे दा अग्नि र ध्य वो च त्र मो विस्मिने न मो अस्मृनी ल यो वा  
 येति र्वां सुखा तार मि र्द स्या आशुः शिशानं इत्यस्यानुवाकं स्यै र्द सु त्थ्यो ह ह्द स्य ति त्र यो द र्पा वा णा स्व नो अत्र

अनबंधुः

५१

५१

अबोधमेवयते अत्र द्युधिः सुगन्धं यामयखा हेतिय मो सु चंतमिति निर्को तिरुवायामा तिवरुणं अमि  
 नानियुक्तिः रितिर्द्वैतसोमे तिसोमस्वमीवान मितवानोस्मे रुद्रा ब्रह्मास्यो नापथिवी त्वं च वः पथिवी वामनो ज्यो  
 तिरि सुषोमिर्द्वैतसोमस्वमीवान मितवानोस्मे रुद्रा ब्रह्मास्यो नापथिवी त्वं च वः पथिवी वामनो ज्यो  
 यकृत्यत इति सक्तस्य ममः सहस्रशीर्षे तिरुक्तस्य जगद्दी जं पुरुषो नामे रायणो वा अद्भ्यः मे च न इत्युवाक  
 स्य नारायणो महीद्योः रितिद्यावापथिवी पश्चात् सति तिरुक्तस्य जगद्दी जं पुरुषो नामे रायणो वा अद्भ्यः मे च न इत्युवाक  
 जय रुद्रस्वमगुरु रुद्रस्य नृवाकस्येभ्यः कौसुद्र इति देवतमथ च्छंदो देसः सुविषदि तितैविरायके तिरुजगती  
 वद्भुवानं जगतमान् श्रीके मानो मर्द्वैते मीवानोस्वमे रुद्र इति गत्यः सद्यो ज्ञातमिति इह ती हिरण्यगर्जे ज्ञा  
 तवेदसेतामभिवर्षामये त्वं पारथ्य विश्वानि निः पतनो जित्वा तितैव लूक्नः सुगन्धं अत्र तवायाम्या नो नियुक्ति  
 रस्मे रुद्रामो ज्योतिश्चो द्विष्टुर्दानं मर्माणि ज्ञातवेदस्य ज्योत्स इति सक्तं सहस्रशीर्षे तिरुक्तस्य जगद्दी जं पुरुषो नामे रायणो वा अद्भ्यः मे च न इत्युवाक  
 पञ्चानं मं त्वाप्सिस्त्रो द्याः संस्रत् इति द्वैतस्यः शिवान इति सक्तं माश्वलायन पाठे व्यामपास्यां च्छंदो वधा वे द्यादया

पवौ  
मद

सु ३  
६८

अत्र २

इति शिरसि सल्ल्वाणि सल्ल्वाणो ये रुद्रा अचिरस्यो तेषां सल्ल्वाणो जने वधन्वानित न्मसि ६

अधोरे न्य ३ पा मर

२ दे

दिव्यं अंशवर्जं यिवां अज्ञानमपु पश्चात्सोमेन य इति ता रिरुक्तो मी दुष्ट मति पंच पथिवी रुद्रा ज्ञानं पतिष्यतीति रुद्र  
 जगती विशानः सधं विद्याना मित्युवाको वरुणो स्या नापथिवी महीद्यो रितिगायत्रीते अद्भ्यः शिराकृत्य वधि  
 एतन्नयोल्लुप्तो याते रुद्र इत्यारस्य इति च्छं रा उरुष्टु र विष्णु नियेयं जे एति इंदः ॥ इति नमकां गन्या समं ज्ञाण  
 ४ त एषि देवै र्वेदासि ॥ अथ नमकां गन्या समं ज्ञाः अद्भ्यः तेषां नयते रुद्र शिवात्तूर्यो रा पापका विनीतयान् सस्रुवा  
 शत्रमयगिरिशं न्ना सिवा कौशी हि ॥ इति शिरवायां ॥ अस्मि न्मह ॥ त्यर्षं वंती रिक्षेदा वा अधितेषां सहस्र  
 यो जने वधश्चानित न्मसि ॥ इति लला वे रं सं सुविष्वत्पु रं त्र रिह सद्भो त विदि षट् ति थि डे रोण सत्रां पृषट् र सद्भ  
 ४ जा तसद्यो मसदजा गो कतजा अद्भ्या कं रुद्र ॥ इति रु वामं य ॥ अंबकं यजामे दे सुगो धिं सुष्टि वहे नो उर्वी सु  
 कमिव बंधना म्भ्यो र्जुं हीयसा मृता ॥ इति नेत्रयो ॥ नमः सुत्याय च पथ्याये च नमः सु धाय वसरस्याय च नमो  
 लाद्याय वै रात्राय च ॥ इति कर्णयो ॥ नमो श्रीके तनयो मान् अष्ट पिमानो गोशुमानो अष्टधुरी रिणः धीरा न्मानो स  
 ४ वर इत्नामि तो वधी नी लयी वां शितकं ज्ञाः सैवं अथः इमत्तराः ॥ तेषां सहस्रयो जने वधश्चानित न्मसि ॥ नी लयी कः शिति

का द्या यवनाप्या यव नमः सदा ३

इविर्भंतो मनसा विधेमते इति नासिकायां अ वत त्प धनुं स ल्ल्वा च्छाते पुधो निवार्य तात्यानां मुधा शिवानः सुमना जव इति कुवा

पञ्चेष्टायनमः त्रेष्टायनमो रुद्रायनमः कालायनमः कलविकरगायनमो बलविकरगायनमो क्वायनमो ५  
नेर्षामः सयोजने वध्वा नित नमसि ४

कंठदिवं रुद्रापप्रिनाः शिपांसदत्रयो जने इव ध्रानित नमसि ॥ इति हस्त्याके नमस्त्रैश्च स्वायंभ्यानातना  
हृदे उवाचपायनतेन मो बाहुयंत वध्वनो ॥ इति वाक्ये ॥ ॥ याते देति मी दुष्य हस्ते बलवते धनाः तया स्मा वि  
श्रत स्वमयं प्रयापस्त्रिजं ॥ इत्युपवाहो ॥ उपवाहो इत्यमो णिर्बध्ने रनागाः प्रीती श्री नित्रज र त्रिष्ट कावत्रो  
निर्षा गिणाः ॥ इति हस्त्यो ॥ सद्यो वातं प्रपद्या मि सद्यो ताता र वि नमः ॥ सदैव तेना तिसै वत जभ्व मो सवो इवाय न  
मः ॥ इत्युष्टयोः ॥ ॥ वा मदे वायन मो वस प्र मथ नायन मः ॥ स ही त्र ल द म ना य न मो न मो न ना म न म ॥ इति त न  
यो ॥ अघोर रे सं य धै रे त्यो धोरै रे त्यः संवे ना सं वे दे त्यो र्म म से च सु रु प्रे स्या ॥ इति मध्य म यो गा त लुरु  
प्राय विदु दे म्वा दे वा य धी म शि त न्नो रुद्रः प्र चो द या शि ॥ इत्यनामिक यो ॥ इवा नः सर्व विद्या नामी श्रय म  
ई ल त नां ब्रह्मा धि प ति र्ब्रह्म णो धि प ति र्ब्रह्मा शि वो मे अस्तु ॥ सदा शि वो ॥ इति कानिष्ठकयोः ॥ नमो वं कि रि की  
स्यो दे वा नां ह द ये स्या न मो वि हि णि के स्यो दे वा नां ह द ये स्या न मो वि वि च्छ के स्यो दे वा नां ह द ये स्या न मः आनि ह  
स्यो स्यो दे वा नां ह द ये स्या न मः आमी व के स्यो दे वा नां ह द ये स्यो ॥ इति ह द ये ॥ नमो गणे त्यो गण प तिस्य

धोर

रूप

वैनमः ॥ इति ष्टुधे नमो हिरण्यबाहवे से नान्यो हि सां चपत ने नमः ॥ इति पार्श्वे ॥ हिरण्यगर्भः समवर्षताये  
सूतस्य जातः पतिरेक आसीन्नस्य चरु रथि वी धा सु ते मा क से दे वा र्थ हृ दि प्रा वि धे मः इति नातो ॥ ॥ इपी दु  
ष्ट म शि व त म वि धे त म् शि वो नः सु म ना स वा प र मे ह द्वा आ ख धे नि ध य ह्म ति च्च सा न आ चो र पि ना के बि च्छ  
गद्दि ॥ इति कं धां ॥ ॥ यो ल त ना ना म धि प त र्यै वि शि ख षा सः क प र्दि नः तेषां सह स जो जने वध्वा नित नमसि ॥  
इति यु ह्यो ॥ ॥ जा त वे द से मु न वा म से म म र्ता य तो नि द्वा ति वे द स नः प र्ण द ति दु ग णि वि श्रा ना ये व सिं धुं ड रि त  
त्प न्नि आ ये व द्वा मा णं ह र्वं म व स्य वि र इ सु य ते ॥ ॥ तद्यथा ॥ ॥ तामि न्नि र्व लं त प सा ह लं तो वै रो च नी क म क ले  
सु ड्डु षं डुं दे वी श र ण म हं प्र धे सु त र सि न र से न मः ॥ अग्ने ह्रे प स्या न वो अ स्मा स्व सि लि र तो दु ग वि श्रि श्रि ध  
श्र य थै व ह्म तान उ वी त वा ती का य त न या य र्थे यो वि श्रा नि नो दु र्ग द्वा ना त वे दः सि धु न ना वा ड रि ता नि प णि श्रे  
अग्ने अ नि र्वं स षा र णो नो स्मा कं वै श्प वि नां र्त्वां ॥ ॥ ए त ना जि तं स ह्म न उ य म रि ङ्ग वे म प र मां स धृ षा शं स न  
प र्ण द ति दु ग णि वि श्रा हा म दे वो अ ति दु रि ता य प्रि ॥ ॥ इत्योः पा नो ॥ ॥ नो म स्त न्मु त मा नो अ तं के मा न न्द्र

रत्र

तर



रमिंद्रहवेदवेदवेदवेदश्चमिंद्रो विमवाओषरुहं तमिंद्रैश्चिमीमवध। अखिद्रो...  
 देवस्य देउं अर्षायासि सीक्षाः अजिघोव क्लितमन्त्रोश्च वानो विद्यादेवा...  
 यं कपोतुय चिन्नश्च वेयं मरुतिराणां यस्मिन्नेनमल्पजित्वा...  
 यज्ञमानमिन्द्रनेत्रो यो अक्षरं चिभिः अच्यमस्मदिद्वसार्तयव्यानमो देवि...  
 वेदमानस्य दाशस्त्रियजमानोश्च विदिभिः अदेइमानो वरुणोश्चो...  
 तिना सिरघं सदाक्षिणी तिरुपयाक्षियज्ञां वायो अस्मिद्विभिमादयस्व...  
 सवमनस्य सुखं बिलतः प्रजावंतस जे मदि...  
 आ वेदसोम सद्द्वैरक्षितायां सुरदंबस्त्रयोणां अस्मिद्वमिदनाप...  
 ते सुवते अथिषज्जइद्वेषा अत्र वंसु देवोः...  
 ति सं उदीकराया अथे द्वादिनमस्कारे अत्रापि एवी क्रि...  
 स्मर

४ स्या

२२

स्मर

२

३२

५ ति ह्द्वेया मम ति तेवमि जिष्ठा हया मितो मस्त्वा राजा मतेना जिवन्ती। उरोर्वरीये...  
 अस्तु जयते त्वाम उदे मवेनाः ॥ ५

अं२

दुलि

१३

अकायाया इति नियमो ननु श्वेकि एवमं आया...  
 म्ना ॥ पनो ज्योतिर्गुणतामा...  
 ना ॥ इति युधो ॥ अथे धात्रिः समिधजनानां प्रतिश्रेष्ठमिवायती...  
 सूतेनाकमस्य ॥ इत्युदरे ॥ इह नं दिषो अरतिष्ठथियावे...  
 नामा संत्रापां ज्ञानयत्स देवाः ॥ इति युक्तां जातवेदाय दिवा पावको...  
 यजमानाय लोकां सुज्जं उष्टिं दृष्ट्या वचस्य ॥ इति विरसि...  
 ति वातरहावेति वपदिश्यते ॥ अथ शिव संकल्प्यादि...  
 दैति देवं तदु सुप्रस्य ॥ तथे वेति ॥ इहामं ज्योतिरं कं त्रन्नेमनः...  
 नाभिणोय हे कृष्णं तिविदये सुधरां ॥ यदरुवं यज्ञमनः प्रजा...  
 संवेतो इति श्रय ज्योतिरं तरं सृष्टं प्रजाश्रुयस्मान्न सृते किं च न कर्म क्रियते...  
 मनः शिव संकल्पमस्य ॥

प्रव३

६२

प्रांज्योति३





२ नस्त

मा२

६३

पथाराये अस्माच्चिश्चानिदेव चपुना निविहारायुयो अस्मत्तुङ्गरामेनोच्युष्टेनमउक्तिविधेयान्ते  
 नेयज्ञियातयिहारो ह्यत्मानं अश्वावस्त्रनिष्कषस्मेनयापु रूणि यज्ञोत्स्वायज्ञमासीदस्वायानिजातवेदो  
 लुवत्राजायमानः सद्भयपदि॥७॥ अथावः स्वामयेवशेभपरीदुलिसिर्चतवद्विधद्वयेः तैतौ सिन्धोत्रे अश्रमि  
 म्महोसिः शतं प्रतिरायसीनिन्नादि॥७॥ इत्यंगप्रणामं अथाः तिषेकेषधेन्यासां सधाः तिषेकेषु विधान एव  
 प्राक्प्रपेवितः एवैत्यासविधिं कृत्वा ततो यजमानमारुतेरायजने प्रपुष्टजादाम्साः इति नमकां गध्यासमं  
 त्राः ॥ अथानमकस्याप्राप्तिसिधीयतोतत्रर्धममुकदेवो अशुककाले अशुकमोतमृजपंरुद्रजपंरुद्रैका  
 शिनी जपंमहा रुद्रजपं अतिरुद्रजनेपवा करिष्येतथानमकादिष्यत्यतमेनदोममतिषेकेषु कतिष्येति संव  
 स्पयेरापरेषु पितृषु करिष्यामीत्यसिलयेयं रक्षतत्र अंगन्यासानंतरमाणीदिना नीयात् ॥ तद्यथा  
 अथनमकाः उवाकान्मृषिदेवतर्द्धंदां स्पुक्मिष्यामो नमस्ते रुद्रो तैरुद्रैर्यतयोः कश्चपयायात इत्यु  
 त्स्मात्त्रयैः शान्तिषु मितिद्वयगौतमो गौहृषीवाधुः श्रीवदिस्यस्माकं एव अस्तौ अस्मांश्च इति ह्योः काप्वा

का६

४ आराह स्यात् अत्रिषु विष्कृतमित्यस्यावेयाधोमादुष्टमेत्यस्यावेराजोये हतो धित्पारभासमातेद्वैल इत्यथोथदेवता असौ यस्त  
 दिव्यात्मानो यो नेकः प्रोक्तस्याः स्वरूपी रुद्रो मानो न होतमित्यस्यानन्वीवरा ४  
 १ अवशिष्टस्याग्निप्रभुं वधन्व न इति तिस्रः स इत्तौ तिस्रस्तुरीत्या सो नारदो ६९

श्रुतिद्वयोरा

२ त्ये

मरुत्वाः ॥ नान्मो अर्धं नीलप्रीवाययाति देविरिति तिस्रस्तुरीयपंचमसप्तमस्यमासु अथानवमासु वा देवैर्गोत्र  
 किरिकेस्य इति प्रमानस्य के परिणः ॥ इत्येतेषां लगनाश्रुतेषां नीलायुवाकस्य सप्तमस्य अथानवमासु वा देवैर्गोत्र  
 दस्योतिवतश्चणवदुष्टासाः सप्तमासु वाकस्य देवमकेशोद्वापे अंधस्य नीलिकिरिदेवोप्योः अथानवमासु  
 रुद्रि वै अस्याः सप्तमस्य मरुत्वायेति ह्योर्मदयोमानो मदांतमित्यस्याः ॥ इत्येतेषां लगनाश्रुतेषां नीलायुवाकस्य सप्तमस्य  
 नमो अर्धं नीलप्रीवाययाति देविरिति तिस्रस्तुरीयपंचमसप्तमस्यमासु अथानवमासु वा देवैर्गोत्र  
 अमोत्तुवाके नमो वः किरिकेस्यः इत्यंतः प्राकमानस्य के परिणः इत्येतेषां लगनाश्रुतेषां नीलायुवाकस्य सप्तमस्य  
 थर्द्धंदां स्यां सोयश्चात्रोद्वापे अंधस्य तस्य नयो रश्ना रपंकिराद्यापंकिः ॥ सोयश्च सप्यतीति प्रदपदा जगती  
 इमारुद्रायेति वतस्वानगत्य अरात्र इति तिस्रस्तुरीयपंचमसप्तमस्यमासु अथानवमासु वा देवैर्गोत्र  
 उष्टु नोयाते रुद्रैः तिस्रारुद्रैः उष्टु प्रया मिति हृद उष्टु न भवो वदिस्यु उष्टु निहृदा विद्या नियमं शिस्तवाप्यरा  
 मोदिसीथायश्चात्रुवाके उष्टु अथमोदिसीथाय ततीयुक्तेषु प्रदपदा जगती इत्येतेषां लगनाश्रुतेषां नीलायुवाकस्य सप्तमस्य

ति ५

पंचपदा ४

वाको नवमासु ६

ति २

१ तुष्णिगितिनतो द्योर्महाविराडथमलपंक्तिः स्योर्महानु इति १

॥ अथ प्रथमाऽप्यतः ॥ सक्तस्य पिनमकसमुदायस्याऽपिकांशः ॥ पातिलादग्निर्वापिः रुद्रदेवतामहाविहृदः ॥ अथवा नारायणः ॥ अथ रुद्र  
वतां रुद्रो महाविहृदो वा ॥ ३ नत्र प्रथमानुवाकः ॥ नमस्ते रुद्रमन्वज्जिते न इषवनेनमः ॥ नमस्ते अशुभं चानिवा कुन्याशुतनेनमः ॥ ५३

तीनमकस्योर्पादिः ॥ अथ चकस्य ॥ अथकारुवाकानामग्निः कां उरुषि आद्यागायत्री अग्निर्वैश्वीति द्विवैश्वी  
दयोन्नादिविशेषादेवतां जपे विनियोगाद्ये मे क्रियमाणे दोमे विनियोग इति वाच्यं ॥ अथ यैत्रिरीयशाखा उसा  
एनमकां उवाकाः अद्वयं प्रथो ॥ यातश्चुशिवतमात्रिवं चरुत्तत प्रुः शिवाश्रयाया अततयानो रुद्रमृद्वयं ॥ २  
यातो रुद्रशिवतश्चरुधोराया पकासिनी ॥ तयामचरुवाशं तयागिरिशोतानि चाकशी द्विया मिथुगिरिशंतद्वे  
विसर्पश्चवोशिवंगिरिजातो रुद्रमहिसीः पुरुषं जगदीशिवेन वचसात्वागिरिशां ह्यवदामसि यथाः ॥ २  
वृत्तिरुगव्यहं मुमना अस्म ॥ ५ ॥ अथवो चदधिवका अथमो देवो लिपश्चा अर्द्धं अस्म ह्यं तयस्य अथिया रुद्र  
न्यः ॥ शां अ सोय्युधा शो अरुणवत नक्षत्रैः सुमंगलाः ये वै मो वसुधा अस्मितो दिक्पिताः सहस्रशो वैर्षे उरुमहा ॥ १  
असो यो वसर्पं तिनी लप्री वो विलो दितः ॥ अथ रुद्रमृद्वयं उतेन विश्वं च तानि सहस्रं मृद्वयं तिनी  
॥ नमो नीलश्रीवाय सहस्राशयमो ह्यो अथो यै अस्म सक्तमो ॥ त्रिं स्यो करुणमो ॥ अथ सुशुभं च नमो नयो सार्थियो जी  
यश्च ते हस्यं प्रथः परातो सगवो वषो ॥ अथ वृत्तं सधुस्व स दसा दसा ते युधे निशो अथो नानं सुखाशितो नम

यजुः ॥

६४

२ अशु

ऋः ४

नदरं ३

स्वर

मनासवा ॥ री विवंच वरु कर्षे हि नो विवा ल्या प्रा लवो ॥ अत अने शम्भ स्वयं अशु स्य निजं शिवो ॥ यो तं ह्मि दुष्टम  
ने अस्त्वतो धनुः ॥ तथा स्म विवंच वरु म पद्मया परिशुजा ॥ नमो मने अस्वा अथानातयं ताय हस्यो उसा स्या मुततेनमो  
वां रुद्रो तं धध्वं नो परि ते धन्व नो देति रमा च्छुण्ड विवंचना ॥ अथो य इडा धि सुधरे अस्मि निवे द्वि नो इति प्रथमो ॥ ५  
रुके ॥ नमो हि स्ये वा ह्वे से ना च्छे दिशो चपतयेनमो ॥ नमो रुद्रो त्यो रुद्रिके रो स्य पशुर्नो पतयेनमो ॥ नमो सधिं ज  
रीय द्विर्षो मते पर्यना पतयेनमो ॥ नमो वसुशाय विष्वा धिने नानो पतयेनमो ॥ नमो हस्विनायो पवीति प  
नो पतयेनमो ॥ नमो चवस्य ह्ये उमा तो पतयेनमो ॥ नमो रुद्रयाता सिने च्छे वा णो पतयेनमो ॥ नमो रुद्रि  
या ह्वं याय वना नो पतयेनमो ॥ नमो रो ह्मि ता य च्छपतये च्छा णो पतयेनमो ॥ नमो मन्त्रिणे वा णि नय क्शो णो प  
तयेनमो ॥ नमो भुवंचये सारिष्कृतयो पधी नो पतयेनमो ॥ नमो उरुवेर्षो आया र्द्धयते पक्षी नो पतयेनमो ॥ १  
नमः कृत्वा वीताय भवते सवानो पतयेनमो ॥ २ ॥ तिद्धितीयो नुवाकः ॥ नमो सद्मानाय निष्वा धिने अ  
धिनी नो पतयेनमो ॥ नमः कञ्जराय निष्वा धिने नानो पतयेनमो ॥ नमो निष्वा धिने अशु धिने तयो पतयेनमो ॥

४ वा

॥ १ ॥



चक्रज्ञाय च ॥ नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च ॥ नमः आशुमेणाय च सुरियाय च ॥ नमः श्रुतय च वाचि च  
 तैवा ॥ नमो धर्मिणे च वङ्ग रूषिणे च ॥ नमो विद्विने च कवी वतिने च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च  
 श्रुतसेनाय च ॥ इति षष्ठोऽनुवाकः ॥ नमो दुर्बुधाय च दनयाय च ॥ नमो दुर्बुधे च दुर्बुधाय च ॥  
 नमो हताय च प्रहिताय च ॥ नमो निषिङ्गिणे च धिमतै च ॥ नमः श्रुतय च नीयाय च ॥ नमः श्रुतय च नीयाय च ॥  
 ध्रुवमुधचने च ॥ नमः श्रुतय च पथ्याय च ॥ नमः कंठाय च नीयाय च ॥ नमः श्रुतय च नीयाय च ॥  
 नमो नाद्याय च वैशात्राय च ॥ नमः रूष्याय च वावधाय च ॥ नमो धर्ष्याय च ध्वष्याय च ॥ नमो मिथ्या  
 य च विद्युत्पाय च ॥ नमो द्विष्याय च तप्याय च ॥ नमो वात्याय च रेष्मिन्श्रीयै ॥ नमो वात्याय च  
 वास्तुपाय च ॥ इति सप्तमोऽनुवाकः ॥ नमः सोमाय च रुद्राय च ॥ नमः श्रावाय च राणाय च ॥ नमः  
 गायत्र्युपतये च ॥ नमो उग्राय च लीमाय च ॥ नमो अग्नेय च वृक्षाय च ॥ नमो अग्नेय च वृक्षाय च ॥  
 से च ॥ नमो हृदये च हरिकेशे च ॥ नमः श्रावाय च राणाय च ॥ नमः श्रावाय च राणाय च ॥ नमः

य५

३४

३५

कराय च मकराय च ॥ नमः शिवाय च शिवस्य च ॥ नमो ह्रीं च कुरुतमव च ॥ नमः पायां च वावाय च  
 य च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 नमः शिवस्य च मकराय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 ह्युपाय च ॥ नमः कपर्दिने च कुलक्षये च ॥ नमो अग्राय च उग्राय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 नमो ह्याय च गङ्गारेष्याय च ॥ नमो ह्येते च विद्विने च धर्ष्याय च निवेष्ट्याय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमो लोप्याय च लोप्याय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 य च ॥ नमो मोपयुरमाणाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 ह्येते च ॥ नमो विविब्रके च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 आपे च श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥  
 वातश्च शिवा विश्वाश्च लेभजी ॥ तैयानोऽष्टवजीवसो ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥ नमः श्रुतय च प्रतिश्रुतसेनाय च ॥

३४

४ नि

शिवास्तु स्यनेषजी प्रतिश्रुतय ४

अर्कमानउं संतमुत्मानउं हितं। मानो धाः पितरं मोतमा त्प्रियामानस्तनुवो रुद्रीरिष्यमास्तो वे तनये मान आशुषिमानो गो ५२

न

नाशमसद्विपदे चतुष्यदे विष्टु उं यामे अस्मिन्ना उं शाशु डानोरुद्रो तेनो संयस्का प्रि ह्ययदीरयं नमसा विधेमतीय  
हं चयोश्चमभराय जेपितात् दश्यामतवरुद्रजणीतो ॥३॥ मानो प्रदां नमुतमानो मे मानो अश्वेष्टुरा विष्णुवी वा  
नानो लइतामिदो वधीर्द्विष्मन्तौ नमसा विधेमतो ॥३॥ आरा त्रेगो धृजत पूरुपु प्रे दशदीराय सुभ्रमस्ते अ  
रुद्रा नो अत्रिच देवदुद्रा धं वना चर्म मय्य हृदिव ह्यो ॥३॥ सुदिष्टे गे सदे युवाग्मे नती भिमुप देव सुयो रुडा उरि  
त्रे सं चवानो अयं चै अस्मिन्नि यपुह सेना ॥३॥ परिणोरुद्रमुदे तिर्दो ॥३॥ परि विष्णु सं पुं भो ति र्थायो ॥ अ वस्ति र  
मथं वदु सनु प्रमी दु सो कायां तनया य्यु डयो ॥३॥ मी दुष्ट म वि धत म रि वानः सुमानो चो पय मे आशु अ  
नि धय हृत्ति वा सा न आ चर पि ना कं वि च द्वा दि ॥३॥ वि कि रि द विलो हिन म म्पे अ सु स ग म्पे या च्चे स ह हं च  
तयो न्य म ध्मि न्नि व प मु त मा ॥३॥ स ह लो णि स ह स यो य ह द्वा ॥३॥ स ह लो णि स ह स यो य ह द्वा ॥३॥ स ह लो णि स ह स यो य ह द्वा ॥३॥  
अस्मि न्म ह य ल्बे च्च रि द्वा र्दो र्गं वा अ धि ॥३॥ नी लयी वाः शि तिक पुं ॥३॥ सर्वा अ ध द्वा म अ र ॥३॥ नी लयी वाः शि तिक पुं ॥३॥  
दिवं रुद्रा उप अ त्ता ॥३॥ ह ह्ये पु सं धि ॥३॥ सर नी लयी वा वि जो हितो ॥३॥ अ लो सा म म्पि प त्त ॥३॥ वि श्र वा साः क व दि न रा ॥३॥  
उ स ह न्ना णि स ह ह्म ॥३॥ धा वा रु बो स्त व ले त यः ॥३॥ ता सा मी गानो न्ग वः परा ची ना मु र वा द्वा ॥३॥ ॥३॥

५५  
५६

हृदर

नोत्रनाव ॥ ये पथां पथिर ह्यरे ल ह द्वा आशु युष्म ॥ ये तथा निष्पवंति स्फकावंतो निष्पंगिण ॥ ५५ एतावत ॥

ये अत्रे सु वि वि धं वि प वि सु पि म् अ ह्यो स च्च दि यो रु द्वा वि त स्ति र्णो स ह्म यो ज ने व क्थ नि न मा स ॥ न म ॥  
स्यो ये च थि यं यै ल रि द्वा यो ण म न्ने र्ती व र्ण मि ण क्थे स्या द श्वा वी र्दे श द क्षि णा द श अ ती ची र्दे शो धो षो यो न म  
सो नो ग ड य पु ते यं दि ष्मो म्प नो द्वा ष्टे तं व जं ने र्ध म मि ॥ ५६ ॥ मे को द शो नु वा क ॥ ५६ ॥ ति वी णि य र्ध णि ॥ ५६ ॥ न म ॥  
इ यो ५६ ॥ सै त्रे ध वि ना ग प्र क र र्धु णो ड श क्ति ना ग्म क म व वि ता म्प क र णे प्रा कृ प्र द धि त ॥ ५६ ॥ इ ति तै रि रा य चा र वा  
५६ ॥ सु सा र ण न म का ५६ ॥ सु वा क ॥ ५६ ॥ अ प्रा वि ष्ट स जो ण से प्र मा व र्धं वं गि र ग पु म्ने र्वा जे ति रा ग ता ॥ ५६ ॥ वा ज प्र मे प्र स व  
५६ ॥ मे प्र अ ति अ मे प्र शि ति अ मे कृ त् अ मे धा क प्र मे अ ति अ मे ड्या ति अ मे वे सु अ मे प्रा ण अ मे ष्या न अ मे य न  
५६ ॥ अ मे सु अ मे वि ष्ट व म आ धी तं च मे वा क् म् व ह्यु अ मे धी तं च मे व द्वा मे व ल व म् वृ ज् अ मे स ह्म म्पु अ मे म्प र च  
५६ ॥ मे आ त्वा व मे त च्च अ मे वै र्म च मे गानि व मे पं र्खि व मे त र रा णि च मे ५६ ॥ ति प्र थ मी नु वी का ॥ ५६ ॥ नि ष्ट व मे आ धि  
५६ ॥ प र्थ व मे म सु अ मे ता म अ मे त च्च मे जे मा व मे म ह्मि म् च मे वि र मा च मे प्र थि मा च मे व च्चो वा मे द्वा ष्ट या च मे र्ध  
५६ ॥ अ मे स त्पं च मे अ हा व मे ज ग व्ध मे प्र न च मे व श अ मे लि षि अ मे र्ध म् वा मे द्वा ष्ट या च मे व ह्म अ मे च मे

ये वि वि र  
५५  
ध ति च्च मे  
च र्म च मे ३

स्वर अमे ५  
छानि वाम ३



३२

बमत्राधवनीयश्चमेद्यानीधश्चमेदविर्मानश्चमेददाश्चमेसदश्चमेपुरोडंशाश्चनिपवताश्चमेवल...  
 कारश्चमे... इतिश्चमे... वाक... अमिश्चमे... अमिश्चमे... अमिश्चमे... अमिश्चमे... अमिश्चमे...  
 तिश्चमे... शर्कर... र... य... यो... वि... श... मे... य... क... ल... प... ता... क्र... मे... मा... व... मे... शो... म... ध... मे... य... उ... ध... मे... द... ह... व... मे... धो... श...  
 तपश्चमेरु... रु... श... मे... प्र... त... श... मे... शो... र... क... यो... र्द... ह... पा... वृ... द... श... त... रे... अ... मे... य... जे... न... क... ल... प... त... रा... श... इ... ति... न... य... मो... सु... वा... क...  
 गसाश्चमेवत्साश्चमेत्रियविश्चमेत्रियवीनमेदिश्वबाश्चमेदियाहीचमेपांचाविश्चमेपंचावीचमेत्रि...  
 वत्साचमेस्ययवाइमेउयेहीचमेपृषवाइमेपशोहीचमेउत्राचमेवशावसुत्रमणलचमेवेदश्चमेन...  
 श्चमेधेउश्चमत्राहजेनकल्पतोप्राणायजेनेकल्पतोभ्यानीयजेनेकल्पतोचतुर्थजेनेकल्पतोप्राणय...  
 जेनकल्पतोमनीयजेकल्पतोवाग्देनकल्पतोचतुर्थजेनेकल्पतोप्राणयजेनेकल्पतोमनीयजेनेक...  
 ल्योतंवाग्देनेकल्पतोमात्मायजेनेकल्पतोप्राणयजेनेकल्पतोप्राणयजेनेकल्पतोमनीयजेनेक...  
 चमेतिसश्चमेपंचमसदश्चमेनवचमेएकादशचमेत्रयोदशचमेपञ्चदशमेसप्तदशचमेअष्टदशच

चत्वारिंशत्तमेऽ

मैकेविशतिश्चमेअथोविशतिश्चमिपंचविशतिश्चमेसप्तविशतिश्चमेअष्टविशतिश्चमेपञ्चविंशतिश्चमे...  
 अथविशत्तमेऽतश्चमेअष्टौचमेद्वादशचमेओडशचमेविशतिश्चमेचत्वारिंशत्तमेअष्टाविंशतिश्चमेअत्रिंश...  
 यश्चमेषड्दशचमेचतुर्विंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमेवाजश्चमेअष्टचत्वारिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमे...  
 यश्चाथ्यायैध्यायनश्चाश्चलोत्तमसुवनश्चाधिपतिश्चम... इत्येकादशा सुवाक... इतिनेत्रिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमे...  
 मकानुवाक... अथनमकेअष्टचत्वारिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमेअष्टचत्वारिंशत्तमे...  
 चाणोप्रयोगफलगोवरानमस्वेरुइइअस्यासुरश्चरणसिद्धयोप्राजापतिश्चरिजेकांजपेन्मंत्रमहंतस्यापत्ता...  
 दशमहसाणियहकालेनिरंतरोप्रदक्षिणनमस्कारोक्रयादीशस्यमंत्रतानिस्तरमितिनिष्कयसीविरुद्धे...  
 शीथाद्विपतिरिक्केचकालइअथ... मंत्रे... महेरुइइअनेनेचमनेणप्रतिदिनंप्रदक्षिणनमस्कारोडापि...  
 रोधिकारोस्वशात्पापंचअष्टविशतिरष्टौत्रशतंक्रुतीतेत्यथ... चकतउरअष्टौतयतिर...  
 अकर्मद्विष्पाशिनाकर्तव्यीद्विष्पाशित्वेनानरमंत्रेअपिसमानीयेथा... नियकस्यदिकमपिउरअष्ट...

सिद्धस्य दक्षिणस्य त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 तत्ररघुविभनेनछापथित्वाङ्गतासनां पापसंश्रयपथित्वाङ्गतासनां तत्रद्वययाद्विदिशांसंश्रययापथित्वा  
 द्वाद्वैसुपस्पतिवतेतिदक्षिणस्य त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 द्वययाद्वैसुपस्पतिवतेतिदक्षिणस्य त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 धरणसिद्धेनाश्रुदेन्यायजन्मनाकारयेद्वर्गलिमेततो लिगस्पदक्षिणां त्रिंशत्कंठं विनिष्पाद्यमथित्वात्रिं  
 निक्षयघानित्यवच्छापयेत्त्रसपिंडं त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 रवाजपदसंज्ञापापंश्रयतिदिवलयस्य तत्रसंख्याः अत्रदक्षिणस्य त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 वेत्तस्यैव उक्तसंख्याकसंख्यायां तत्रैककर्मसिद्धस्य त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 वामिंशुर्वैसाख्यतीसदध्मनां ध्यायेन्मदेयं महतीथवेणदिव्यासुधयोद्धतं सुवांश्रुतिमन्त्रैरुद्धयसाधये  
 गः ॥ अथ जितदशुरिभ्यस्स प्रयोगः ॥ दिनानि द्वादशोवायं चरुतेजजपेन्मनुष्यनिषिद्धे सुकालेषु कालेषु

त्रि  
या ४

स्वरणसिद्धये विनियोगं सवेद्योभ्यं त्रयथापि वत्तनां तिलतेडुलसंमिथ्यात्कां बुधकेसंश्रयकादशसहस्राणां  
 उद्धयादत्रसिद्धयोरजाश्राष्ट्रमसुखवेदुसिद्धेस्योपि सांतयेकारयेद्विप्रवयेणदोमंलक्षणेसंश्रययास्वायौहवि  
 सत्रचरुयं त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 लेकतास्योकरस्योश्राकांश्रुयमानंश्रुयेति याते त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 प्रयोगः ॥ वासरेवितयंयावजितं नृजपेत्तत्रनिसकमोविरोधो नश्रुश्रणयासंश्रयतः प्रयोगे  
 त्रिसन्निधौ एकादशसहस्राणां जपात्सर्वाथनाशनांततोसहजपदसंज्ञापापंश्रयति  
 युताङ्गतीः वैकं कताप्रपाभागं समिद्धो मधुसायिणा अर्कसूत्रद्विवेकमावाश्रांतिककर्मणि समिद्ध  
 विकल्पस्यथामधुनिसपिषिवाद्द्वयोः अथाः पूरः प्रकोरोयं गवांश्रांतिककर्मणि कलशोतर्धज  
 पाथः कृत्वागंधादिसामप्रविप्रवयेजपित्वाथमंत्रलक्ष्मणुरतः श्रांतयेद्वैतवेदांति संश्रयिषि निष  
 दनी सोराजनमं चंद्रकलावैसंगाधरं नैलुतासदायां विलोचनं तस्मलुजंगलजपं श्रयैत्यश्रुनापति

मंत्रितारयः इतियोनेरुदेयस्यप्रयोगः ॥ अथयामिच्छंतिवेनवसेत्यनयोः प्रयोगः ॥ एतद्व्यमपि  
 कोमंत्रः ॥ निरंतरं जपेन्मंत्रं दिनानामेकं विनातिष्ठत्पश्चरणमेवंस्यात्प्रयोगोऽस्ति ॥ तत्रैतत्तत्रैतत्कालम  
 णाद्वाज्यासेमासादयेद्यदि ॥ मन्त्रीपतिः शौचिकर्मकारयेद्यजमनी ॥ मस्यामस्यातिलत्री ॥ शिगोधसयवक  
 ल्यितमृद्विः प्रभुद्वयास्तद्वेवासरेखेकविंशतौ ॥ अकालमरणाद्वातेसाधुमेत्रातिष्ठत्तिष्ठत्तिष्ठत्ति ॥ लादीनस्त  
 संतवसेसमुच्चयः ॥ अलातेविकल्पः ॥ संगामिकेनवपुणप्रविणजमानोदृष्यपुत्रयजिनासिनिमंदहासोदेवा  
 दिभ्युमवलेखस्वापपाणि ॥ ध्यायेत्पुरारिममरोधरथादिहृद ॥ इतियामिच्छंतिवेनेत्रनयोः प्रयोगः ॥ अथ  
 ध्रवाचद्विप्रस्यप्रयोगः ॥ अर्द्धकुरुचरिष्यवासरान्यजसंयतं वाक्यमलवेयं ॥ नोत्रादिवातिष्ठत्ति  
 तौपुरश्चरणमेवंस्यात्प्रयोगः ॥ अनियोः ॥ जयेत्रास्त्रापुरस्वरं राज्ञां कामयंचविरजादितोकास्येद्विधिनाक  
 र्मवद्दामाणं द्विजमनां श्वेतसर्पहृद्यैर्यैः संपुंजमिप्रिते ॥ आश्रितैः शिरात्मनोमोमथितवानवेदुतिश  
 निलंपंचसदस्रस्रसहस्रगणनाशिसा ॥ तिलेयुंउपयेत्साधुमिश्रणचश्चैः सुनः ॥ दोमथाष्टसहस्राविरा

३२२ ॥ ३०० ॥

रुदः प्रकृतिर... योपुष्पेनासंशयः ॥ अथान्योर्गर्भगतानानेकेभ्योतविधिः ॥ स हस्त्रदत्तौ मनुनासहृद्वोथवपुत्रप ॥ अनिमंय पत्वंसम्पकनागरं पयस्तिष्ठियेव ॥ ४  
 ॥ एजादावतेचदक्षिणमुत्रमामध्यमांकनिष्ठं वा शक्तिदोदद्यात् ॥ एवमेव हस्तौ तेषु कल्पमाणेषु कर्मसु शक्तितोदक्षि ॥

दा

युज्यति च प्रदक्षिणां शक्तितोदद्यात् ॥ दावन्नेत्रकर्मणि दक्षिणामिसादित्रासंक्रमणिकर्मणादनेक  
 मंत्रिणो अत्रत्वादावनेचदक्षिणां नानेवापेवह्यत ॥ अथयापरः प्रयोगोयं तस्मीकपथमं मा क्रमाशंकण  
 र्वाबीजलवणसिद्धार्थमनुना एकादशविधस्यासेना तिष्ठत्तिष्ठत्तिः ००० स्वयंगम्याशावर्जयित्वेताद  
 क्षिणामुप्रतिक्षिपेत् ॥ काथयित्वा ततश्चाग्नेहोमः कार्याविभननो तत्रैवैष्टोसहस्राणि शतानि वा शि  
 पिवे ॥ अथप्रयोगं रोगेषु प्रशाम्पतिवद्वाह्मेलांकालास्थियालयज्ञोपवीतितोहलत्यावकसेका  
 श्रथात्वादेवितोचनम् ॥ अथोध्योचद्विप्रस्यप्रयोगः ॥ अथोसौत्रोसोयोचपर्यतीत्यनयोः प्रयोगः ॥ अ  
 थापिच ॥ मेकोमंत्रः ॥ कुरु मेकं चरस्रैततः ॥ षोडशवासरान् ॥ निरंतरं जपेन्मंत्रं नित्यकमां विरोधिना काले  
 दविष्यत्पुरं पुरश्चरणसिद्धये ॥ अनी वृष्टिवेधोरसमुपनो समेतुं अनिनविधितारुद्रप्रजयेज्ञाकरात्  
 कां पुरश्चरणसंसिद्धान्यवाह्यसुधी च द्विजाशर्कर्मकं करलाजहृषोष्ठी ॥ शिषुकेः सुते ॥ इजयेतानथो  
 कर्मते कुरु र्वेष्टिसाधनां कर्मणोपक्रमोवास्यात्तस्य माप्रिरुताईतेदवीनिपायसंतत्रतेकुलाश्चतिलायवा ॥

४६  
वा ३

यस्तार



वैतस्यं समिधश्चापि तत्रेयु संतुलादयामध्वकासर्वियुक्ता वा दुग्धाकाः समिधसुना एतैः सह स्वसंख्यापि  
 मक्षेयुद्ययकृद्ययकृद्विशतिर्हिसहस्राणि सुज्यात्या यदिनापंचानां तु जपेदेकश्चत्वारो सुज्याद्विजा एका  
 दशादिनैसाध्यमविलंकर्म वाष्टिदो दीनांतिमदिनेरककमनेः पूजयेत्तौ सहस्राण्यष्टसुष्याणि सकृज्जप  
 सिमंत्रवदिवमावाहमात्रे उमेकेकेनाथपुजयेत् कर्मकालेन च वेताः कर्मकुर्याद्यथाचितं यथादिसवलि  
 तचितः स्याद्दुपस्यथतदारविनिरीक्ष्युनरासीत्प्रयश्चित्रीयतेन्यथात्रसमाप्तेरशिरद्वाकस्यैवैकतेततः  
 अत्रसानदिनेदेवोमदहृष्टिप्रसुंचतिप्रथाऽपरः प्रवश्यमियोगोयंरविप्रोएनांवेनसैः कुसुमेहोमिअसुत  
 स्यात्तथारविजलेस्त्रिधापतिष्ठतसेध्योसुसयोरपिनांवासरनिथ्याद्यप्रयोगमपरविडांकं गदनेजलेस्त्रि  
 त्वाजलप्रथोजलिरविध्यायः द्वापेनतिदिनेमसुमसुसहस्रकश्रैविकृतेमनकांमददायाक्छिरंरविं  
 धृककुसुमेः कुर्यात्मां धृकैपावकेहवघाहोमसंखानिवेत्त्रसहस्राण्येकविंशतिजातिस्मरोत्सवेदेकं  
 उर्ध्वं कुलेजनिमंडलोतगतदिरएमयोवाजमनकडुं संविस्मितश्चांउदीधितिमस्वेडमेविंचितयेसुनि

६१

३ सहस्रं सुज्यादकं सुज्यैर्दशादिनाधिनिबदेयत्तदंतं च देवाय हतपायसे । पुरश्चरामिदं स्यात्प्रसुंजीततो म्मुं ३

सहस्रसेवितया ॥ इत्येसोयस्यस्यसोयोवसर्पतीत्यनयोः प्रयोगः ॥ अथ नमो अस्तुनी लयी वाये इत्यस्य प्र  
 योगः ॥ आनुयेपश्चिमेद्वारे महेशस्य समीपतां जपिवादिक्साम्यं च सततं संयेत हतः समंत्रतोरत्तिमात्रे  
 कुंडे उभमथितनली संख्याप्यं सुज्यदिने समारस्पदिने दिने सुप्रकामः उरोहं तु रालये चोत्रमेधुरोनदीतीरेथवा  
 कर्मवहमाणं समाचरेत् नदीतीरे च गोष्ठे च देवमावाहयेद्दुटो इशस्यपश्चिमे सागे संख्याप्यविधिना नदीं श  
 मीसमिहिरकाविहं ड्राक्रेमधुना च्छो एकादश सहस्राणि होमः कामां वधिः पुनाः दिना नित्रीणि वापंचकाले च  
 स्मिहमेनेदिनो अष्टो सहस्राण्यहं वाशता न्यष्टा विचिह्वापेकरुद्राणि शिरसि विन्यसेदाशस्य इनि एवं कृत्वा  
 त्रं दिवसेवाहणा च उप्पसंख्यया शतं चो जयेदं गदद्याह रिरखशक्तिं एकादश द्विजात्ररुद्ररूपां स्रष्टुते  
 जयेत्तं तस्य दक्षिणां दद्यादाचार्यविशेषतः आचार्यदक्षिणां च स्यादुस्रवी जातु नमितीं निवारतिप्रमाणेन  
 देउनाशतीत्किं दिनेदिने पादनिष्कं मे तस्मै विनिहं शो निमाय कुंडले तं न तस्मा एव निवेदयेत् ॥ अ  
 द्या तस्मै को स्प पात्रे मे काश्रे रवमेवादि एवं कृते महारुद्रः पुत्रमस्मै प्रयच्छति वर्णमध्ये सवे किं वित्सन्नजना

विन्यसेत्तदनागत  
 यमीपत्राणि न्यवे  
 ति

४ अतिमं चतुर्वेनाथजुः कृत्यानुः कर्कटकान् नत्तमिकंततो द्वेषा नद्रासुः समरंगणोऽ  
एतेन एकादशसहस्राणां दीपानाम् अनुत्तमो लोकपालेः सहजानंतत्राध्यायतत्कृत्यानुः जपेदमुं चतस्रिं तद्विना न्यत्र दिने दिने अस्मै रश्मि ६६

नुं कं फलां यो वदति दक्षिणात्तमिता वत्सं तति संततिं शब्दप्रकारिणं वखुपा श्रीतलाद्युतिषा ध्यायेत्सिंहासन  
सीनमु मया सहितं शिवं ॥ इति नमो अमुनी लप्री वाये त्रस्य प्रयोगः ॥ अथ प्रसुंध ध्वज नश्यादीनां तिष्ठ  
णामृवां प्रयोगः ॥ अथ चतुर्वा एकी मंत्राः ॥ कृष्णमेकं चरि त्वादी नपेत्त्र नववा सरात्रा एवेकते प्रवे सिद्धि  
पुरं ॥ मर्मणो मदी पतिरायु धनियुद्ध काले समागतो उद्यद्वा स्वरकोटिप्रकाशमादी प्रसूहानां तीषण  
सुजंगरु शण ध्यायेद्वि विधुधु सुं ॥ इति प्रसुंध ध्वज नश्यादी नपेत्त्र नववा सरात्रा एवेकते प्रवे सिद्धि  
स्य प्रयोगः ॥ पुरश्चरणमा सो ध्ये स्यात्त वै काना मवामि वा सुधु काले च सं प्रये द्वेषो तै नै वि निष्टो र्वा मंत्र  
इतेन तेन वा एकादशसहस्राणि दीपानां रोप्य वै रि पि प्रयासने पुरो गच्छे से नाना पार्थिवं विना दध्या हानं  
प्रदी पानि शत्रु सेना विन शपति ॥ अथान्यं सू मित्त पाल विना शायान् मित्रा रुकां कर्तव्यं त्रिसिद्धे वेष्पय्य मंत्र  
रिणां नियो जयेन्मही पाल सत्र वायी विधिः क्रमः उपर्युक्ते न पायि सुत्र स्यथी शपत्वा थसं स  
पुरश्चरणं तस्य सिद्धि युष्ये माययो जयेन्मही तै वा ला सु चान्य सु वगरो गु नि द्वि प्र प्र ष्ये दध्या ह्या त्वा स्यस्य ५४  
तथा र्कं सहस्राणि मंत्रितं शत पट्णे दिवा लयेत पादि वा रमे वा पि च उ ष्यथे ॥ चान् सि ३

चर ४

५४

श्वार

नार दिने ४

वीशानि रूप इवौ स्वराज्य सहशी दद्यादाचार्य युद्ध दक्षिणा मां प्रणे म् व मुं लोकमौ लिमाला कु सु मर सी रुण  
पाद पदाद्यु मो अ न व र त मु सु म रे म् या स द्धु त ग धां पि न्ति क पा णि म् ॥ इति या ते हे ति रि ति च स्य प्र योगः ॥  
इति नम के श प्रथमं वा क सु मंत्र प्र योगः ॥ अथ द्वि ती या वा क स्य सक ले स्य प्र योगः ॥ अथ कृष्ण च र  
त्वा दी स ह सा ण प र्क ज ये श च रु से जी शि वा गा र्था समा धि र्दि नो ए का द श प्र कु वी त ०००००००० इति सं धं प्र  
दक्षिणां समा प्रो दे व मारा ध्य द श चै कं द्वि ज न्म नो जी ज ये द्वि दि वा चारा न्पुर श्र र ण सिद्ध ये हा व ये दु धु तं रा  
तै ला क्रो त सं पा र्श क ता व र्वा वे व श्चे ना शं श यु ग लो रि ला पि न्ते न र्घा ण स्य सु छ लि प्या थ सं ज ये श  
सहस्राण पृ ष्ठ शो ना म्य ह ण र्घ र्का ए का द श नि त्त म ध्ये द्वै रे ण म द्वा ह त्वा वि ना श मा शु र्म या ति स प त्रः सु म  
दान पां प्र ष्या सन्ने त्त्र सं या मे मे नि षा के न वा स सा ॥ अथो द्वा दे व म शा नं स्व यं प्र य त मान सः स वे त र का र  
यु ष्ये नै त ज्ज षे सु दी र य श नि र स्ये मं व वा क न्ने दि न लि मि र थो क्ते ता दि ना नि पं च त त्रा षे स ह सा णे ज पं स्य तः ॥ ए व  
कृ तेश चुरा ज स्ना ना ड न छ ति दु त य व शी क र ण का मं त्र धा त् घ र्म्ये थ या क्र मा च्य म मि द्वि र्घा मा णा ति र्घु ड

३४

२२

3 अथैकं पवकेऽनुतं। एतेन कर्मणा चरन्तं राज्ञः प्रजास्तु पापप्रयत्नं अथ श्रीकामनायस्य सखेतकमलैः पुनैः। अयुतं तु ज्ञेयम् ॥

आदयुतं पुनः। पर्वजां पिप्यलो ह्युता अपामार्गं समुद्रवां विकं कतो ह्यसमिधे होमः कर्मणि संस्मृतां यं यं सु  
द्विष्य कु रते तं तं दशसु पानयेत् शृङ्ग सु ब्राह्मणां द्वारौ कारयेदिति नियमः। तस्य त्रयं गनधिकाराः  
ज्यकामो मदीपालं कुमुदा न्युत्सलानि वासो गंधिका नि उड्या इक्षौ श्रीमास्व वतिमानवा मिभ्रकाम सु सु  
ड्यादयुतं किं चकान्यसौ। कपिलास्य प्यिष्ठा क्रानि मिध्वी जायते विरात्रं जेठु कामं सपत्न्या सु जपे व्ययत मा  
नस्य। एकादश हसाणि सखे सु द्विजित द्विषः। दिने दिने नमस्कारा होमश्चैव दशांशतः। मुक्ता लं कृतं सर्वांगि  
डु उंगंगा धरं हर मां ध्यायेत् कल्पतरो र्शरीरमासीनं स होमया ॥॥ इति नमके सु द्वितीया युवा कस्य प्रयोगः  
॥ अथ तृतीया युवा कस्य प्रयोगः ॥ सहस्राणि जपे त्वं च राजा पत्यं चर सुर मी सुर चरण मेव स्यात् व्योगा हे सुतो  
स वैत्रं रा स्य व्याधि समुत्पत्तौ राजा शीति प्र कारयेत् ॥ द्विजन्म विर्मंत्र सिद्धिः कर्म स्या दी श्वरा ज्ञेयो एकादश  
सखे सु खे सं खि ज स्त्रे सु पं च सिः ज प स्या त्वं व सि हे म एको ब्रह्मा तिलो दन म्। सु ही ति ब्रह्म णो हो मं त्राः स  
दशा प्यते ॥ आद्यं ततो नमस्कार अत्र उवा के र्शरीर्यको ब्रह्मा तु उड्या देव्या व हो मो न्य निर्मितः शती

५५

स होमिने नैः सु र्ज पत्सो पि वल ह्युतं अ न्य हो मितु मंत्र स्यादनुवाकं सम्प्रतः। द्रव्यं तु गवमा ज्य स्या देव्या धि  
अशा स्यति। एको पि व्या धि मान्य स्या त्सा पामार्गं जतं डुलेः। आ ज्य मिथैः सहस्राणि जुड्या दष्ट संयुतः। एकं हते  
रोग शीति लेवे तस्य न संशयः। अमात्यस्य समुत्पत्तौ वा भव श्वर से नि श्रो तं डुले राज्य सं मिथैः शुक्ले ब्रह्मा इति  
स वैश्वं अमात्यस्य रूहे पश्चादपामार्गं जतं डुलेः। इहो ति अ प्रति द्रव्यं सहस्राष्टकं संव्यया। अनेन कर्मणा प्रा  
त्पि व्या धिना मुच्यते क्व व म्। राज्ञो व्या धि समुत्पत्तौ शान्ति कर्म कारयेत्। मंत्रं तु ह्य द्विजा स्रवत्त विज स्वै क  
विशतिः। तत्र ब्रह्म मदीपाल मा मुक्तां तु सर्वतः। अमि कुं डं विनिर्माय वक्त्रि संस्था प्यशा सु त भूत तौ नियो ज  
येद ग्या चर खि जो हो म कर्म णि अथा ते जुडु सु च्च त्र दं दे र्ब वा ह वीं षि ता तं डु ला श्र तिला त्री द्वि श्या मा का श्र  
अ क्य थ क्रा नी वारा श्र तया या द्या अपामार्गं स्य तं डु ला। इहो क म ल किं ज ल्का मथा सु द्वा द नै। इ त मी द शो  
ता म्य च र मं व ड्वा थि ले त रा णि ता ग वा मि श्रि ता निः सुः कुं डे द द्वि ण प श्रि मो क् ली शी ज ल सै र सं स्मृ श्वा ब्र ह्म  
उ सं ज पे श द श आ र स्य द क्कं त मि दे क र्म समा व र श। प्रा तरा स त्र दं डं ता ह्म वा डो मो नि रं त रं थ दि वे द प्र को

रोगः आतरेत्येति संशयः आसायं बुद्ध्या ज्ञावत्रहाणिकल संज्ञपे शस नदं उव भौ हो मे प्रत्यर्चं प्रतिदुरुपं  
 अर्द्ध निधं दहिणा स्यात्तद्वै उपपदिवाङ्गुतौ त्रस्तणो द्विरुणा सा स्यात्ततः कलवापायसा रज्ञो पतोग्पवसूनि  
 संश्रै श्वास्मेनियोजयेत् एवं कृते विरेणै वरा जारोगा द्विस्तुयते ॥ अन्यदप्युच्यते कर्मरा ज्ञारोग विना वाङ्गुतः  
 अनेने वाऽनुवाके मनिसवहो ममाचरेत् अथौ सहसाप्या ज्येन मिषा श्रितैः शुक्तं तु लो रानि त्वमरा गस्य  
 हीर्घापुर पित्राय त्रैयस्य कं स्पसमुत्पने रोगे तच्छां तये पुनः होमः अतिनमस्कारं सहसाष्टक संख्यया तिल  
 त्रीहिय वैरा ज्यमं ध्रुक्तेर पिवातवैश एवं कृते तस्य रोग द्विप्रशा म्पति अस्मिन्नृत्तीया अनुवाके सप्रदशय  
 स्यत्तत्पतो नमस्कारं म्वाः अस्याऽनुवाकस्येकमद्युत्तरवचः शब्दा वृथा वा शौसहसापिस प्रवाङ्गुतयोत्वं  
 ति एव अतिनमस्कारं कृत्वा कृत्वा पुनः कलशां अनुवाक वृथा एकाङ्गुतिर्द्वया एव चाद्योत्तरं सहसाप्याङ्गुती  
 नां संश्रितौ तिल त्रीहिय वाः संश्रिता एव दधिः एव सुक्र प्रकारे ण न्यत्रापुक्र संख्या तं तेल्याऽधिक्य  
 पिदाषः अथवा अनुवाके नवद्वैक म्वाऽचित्चारकां पररा ज्ये रोग मिह्वरा जेवकारय क्रिया वरा दादनि

अष्ट ७६

न

प्रत्याङ्गुते वसुत्तरे वरिचुराष्टसमुद्देशाद निवारं क्तो मिफट् स्वाहेत्येव कते हो मे तु व्येत्न वा र्व प्रजाः अथा परः प्रयोगोत्र होमस्य  
 इत्त संख्यया १

मांसा नि बुद्ध्या ज्ञात संश्रयाः अनुवाकं पठित्वा त्रैयस्य बुद्ध्या ज्ञातं वैकं कल्पसु समीरं कृत्वा सुवेष्टिताः  
 उर्येन वनिर्दिष्टाः समाप्तायाः समिद्धुतौ रात्रु गात्रे प्रजायते तद्भव गोचिरा च महाशं अथान्यदुच्यते  
 स्मिन्निरुराज्य विना वाङ्गुतः परराष्टमनुष्णाणां मुपयो ज्यजलदिकसाष्टवावाची रूपवा कुर्यात्तपंश  
 संश्रयकां यद्दसद्वयसंयुक्ते वत्सरा वा सुनशपति अथाऽपरः प्रकारोयं स शाना वनिपावकां सा  
 मित्रोर्कं समुद्रता बुद्ध्या ज्ञात संख्यया ध्यात्वा निरुत्तरं शयते को वनं पुरी अथाऽपरः प्रकारोऽवा  
 सुष्णमृत्सिन्धौ द्विदिगासि सुखा च्छ्वातिना के स्तिलमाषवो एकादशसदसाणि बुद्ध्या वी अनुवाकतम  
 मस्तरिकालिर्वा अत्रे परराष्टः अज्ञाततः अथाऽन्यकथ्यते कर्म पश्चिम द्वार संयुतो रुद्रो मदे शस्य पाद  
 पीठे न संस्मरेत् अत्र स्मारा द्वयं सहसाणि जपे बुविः स्रत्वा तु शत्रु रानं मंत्रो त्वे वसुत्तरे शं प्रहल ज्ञाल  
 मस्मारि नित्यपस्मा र्वास्त्रिणां अथाऽपरो वि श्रिचत्र सुक्तं तु लनिर्मितैः पिष्टैराङ्गुति संमाने होमस्य  
 लक्ष संख्याया रानानं सद्दं गत्वा स्मत्वा शत्रुं कृति संवैशत नौ लि रिपो राजयद्मायते तेन पश्यति स्म

२६

रोगः प्रातरेत्येति संलक्ष्य आसायं बुद्ध्यात्रावत्रहाणिकलसंज्ञपेशसप्रदं डावधौ होमेप्रत्यर्च्यतिप्रसूयं  
 अर्चनिकं दक्षिणास्यात्र हैयं पदिवाङ्गतो ब्रह्मणा द्विगुणासास्यामेवतः कलशापायसांराज्ञोपलोगपवसूनि  
 संप्रेक्ष्यास्मेनियोजयेत् एवं कृते विरेणेवराजो रोगादिसुच्यते ॥ अन्यदप्युच्यते कर्मराज्ञो रोगविना राह्यं  
 अनेनैवाऽनुवाके मनिसवहोममावरेत् अष्टौ सदृशाण्याद्येन मिषाप्रितैः सुकृतं दुर्लेः राजानित्यमरोगासा  
 हीर्घासुरपिजायतीत्यस्य कंस्पसमुत्पन्ने रोगे तच्छान्तयेत् नः होमः अतिनमस्कारं सदृशाष्टकसंख्यया तिल  
 त्राहियवैराज्यमेध्वकैरपिवात्तवेश एव कृते तस्य रोगक्षिप्रं शांतिं अस्मिन्वृत्तीया अनुवाके सप्रदशयश्च  
 स्युस्तेऽतीनमस्कारं च्वाः अस्याऽनुवाकस्यैकसप्तसुत्रसुत्रः शशापृथ्यात्राष्टौ सदृशाणिसप्रवाङ्कृतयोत्तवं  
 ति एव अतिनमस्कारं कृत्वा कृत्वा पुनः कलशाऽनुवाकादृशाएकाङ्कति हैया एवं वाष्टौ चरं सदृशाण्याङ्कती  
 नां संति तिलत्राहियवाः समं चिना एव दृष्टिः एव सुकृतप्रकारे णान्पत्राणुक्तसंख्यातं वेत्याऽधिक्ये  
 पिदोषः अथवा अनुवाकेन वदकर्मोऽतिचारकोपरराज्ये रोगमिह्युराज्ञैवकारयेत् क्रियात्राहादीनि

अष्ट  
७६

प्रत्याहुत्वे बहु चरेत् रिपुराष्टसमुद्देशादनिवारं क्तो मिफट् स्वाहृत्वे वं क्तो होमे सुष्ये रन्वात्तव प्रजाः अथापरः प्रयोगोत्र होमस्य  
 इत्त संख्यया १

मासानि बुद्ध्या लक्ष संख्या अनुवाकं पतित्वा त्रेऽनुवाकं कर्मसु समिधेरकस्रवसुवेष्टितः  
 येन विनिर्दिष्टाः समाधायौ समिद्धुतौ शत्रुगाने प्रजायतन्नखे गोविराह महाश्र अथान्यदुच्यते  
 रिपुराज्यविनाशकृत् परराष्ट्रमनुष्णाणामुपयोत्पजलदिकस्य स्रवावाचीपवाक्यार्थाङ्कपेश  
 इत्त संख्येदं स्रष्टुपसंयुक्ते वत्सरादाशुनश्पति अथाऽपरः प्रकारोयस्मशानावनिपावकोस  
 मित्रोर्कं समुहता बुद्ध्या लक्ष संख्यया व्याधिना पिखरे नश्ये जायते कीचनं पुरी अथापरः प्रकारोऽनुवा  
 सुष्टाभूत्रे सन्निधौ द्विगुणासिखरे वात्तवात्तैः सिलमाषकौ एकादश सदृशाणि बुद्ध्या वीनुवाकतः  
 मस्करिकालिबीधने परराष्ट्रः अनाततः अथाऽन्यकथ्यते कर्मपश्चिमद्वारसंयुतो रुद्रं लामि मदेशस्य पाद  
 पीठेन संस्मरेत् अस्माराद्वयं सदृशाणि जपे बुविः स्रत्वा लशत्रुरा नैमं तंते वेवसु चरेत् अहलक्षान  
 मस्मारिनित्यपस्मार्वा विष्ठा अथाऽपरोविधिश्च सुकृतं तदुलनिर्मितैः पिष्टैरङ्कति संमाने होमस्य  
 लक्ष संख्याया राजानं सर्वदंगत्वास्मत्वाशुं कृतिनेवेशततो सिरिपौराजयद्मायते तेन पश्यति रूप

२६

योवनसंपन्नसर्वैर्धनदेवता राजानंसर्वथा देयकार्योयत्नेनसर्वदा। पुष्पितोऽत्रो कषुन्नागसदकार  
 त्रिभुवमभंपंचविंशतिनक्षत्रोमायूरकृतत्रोपरः। अकल्पेकवारस्पर्षेचंद्रशिखिसमञ्चितस्यपीतवडक  
 सुदीगोवसानश्रमकेरुमलां संख्यापसव्यविश्रुतकृतमालावितरुषिताश्वराकदंबुजेननासिदेशेप्र  
 संखिना। आजेधंघेद्वणीयेनवेदुणीयोपिशत्रुसि। नार्यास्यचारुसर्वांगिध्यालंकारोसिता। आदश  
 सविशोतानांवन्यनामिवनिर्मलासैतस्याइस्त्रेधुद्धंवात्रारमेकेचनिर्मलमृद्धितीयमांसमालंब्य  
 शिखंवामेनबाहुना। सुगंधिषुष्पस्रवकमाद्यायाद्यायणाना। वीक्ष्यमानोमंदमेदंनवपल्लवशाय्यास  
 तोबालकैश्चलिश्चापिमानोदरे। गच्छद्विरयतोदृष्टैर्ध्यातव्योजगतीयुरुभएवंचलोमृदातेजाःकिरा  
 'शुचीश्वर' ॥ इतिनमकेषुदृतीयानुवाकस्यप्रयोगः ॥ अथचतुर्थानुवाकस्यप्रयोगान्नाप्राजा  
 प... दहं चरित्वादेततो नपेशं सदस्नाणिनवाशिराः स्नयेतस्यप्रदक्षिणमकुर्वीताश्रमदस्नाणित  
 वाऽयंनियमः स्मृतौयावत्पदद्विणावृत्तिजपेत्तावन्निरंतरशुश्रूषणसिद्धस्यात्यथुंजीतथ्यमेवचरिशा

जोर

खर

७७

जयन्मावृत्तौमन्योर्विद्वांसंविप्रउंगवमर्नि योजयेत्संतिहृत्वेसोथवेशमनिशोणिः। कुर्यात्कुंडवाङ्मात्रंतकु  
 डस्यधुरःखनःवेदिकुंडेवाङ्मात्रं कृत्वा तत्रनवेघटांतंनसिद्धंछित्तोयंपरिधर्षणंविनिक्षिपेत्तद्वेदिकुंड  
 स्थितेकुंडस्यनुवाकेनधूर्जोटीं आवाहयंघुषुष्याद्यैश्चैत्रयेदेवमीश्वरमर्षांधःकर्षणवाचंउष्णतांशर  
 संस्मृतमधूपः प्रोक्तउशीरादिद्वैपोगव्याव्यनिर्मतः। एवमारगधनंनुंनोखावग्याराधनंथा। एकादश  
 दिनान्पत्रदीक्षाकालः प्रकीर्तितः। वारामेकादशध्यानं कुर्वीताः। रंतवासरे। वेदिकुंडादीभ्यकुंडेप्रणयेदोगि  
 णानलातस्मिन्नेकादशावृत्तेनानुवाकमुदीरयत्। आद्यंप्रतिनमस्कारं कुडुयात्यथमेदिनातत्संनि  
 धयेकविंशसदस्नाणजपः सृत्तः। सर्वकार्योजपोदीक्ष्यादिनेशेवावकाशांतं। एकमदिनेसाप्तिरेवंकुड  
 वाथवासरो वृतीयेषुवाकस्यतद्वावृत्तिमाचरन्सुकुर्यात्प्रतिनमस्कारंदोमत्रत्रोच्यतेहविः। तिन... नाड  
 वृदितथाहर्षीयवाश्रनासुसर्पिणा। मधुनाश्रापितेकास्फरथाऽङ्गितुचतुर्थके। प्रह्वं वद्वानुवाकेनउड  
 यान्मधुसर्पिणी। पंचमेदनिषदेषिमंघ्रणंवेधेलेवत्रदिनहृयेथनुडुयादथत्यसमिधंघृथाः। त्रपासा

नामः  
तः

होम

४ पं

ग्रीष्ममिक्षेमंत्राद्यदिष्टवशादोमसुनवमोसुर्येस्योद...  
 कस्यमंत्रच्छेदश्चद्वेषवशात्सर्वस्यैद्विः प्रोक्तमंत्राद्यदशमादिनेनिरवत्रंजयेत्कालेनित्यकर्मविरो  
 धिनाततः समाप्तिदिवसत्रुवाकसुदीर्यत्रसहस्राष्टकसंख्याकः कर्मैः प्रजयेद्विधांतत्रप्रति  
 नमस्कारश्चैत्येत्सरसीरुदशांततो गोरिसमारोधयोगस्यास्पविमोचनुराश्विमेधंवाचयेत्तद्वि  
 नाराश्याच्छेदपारगात्रांशानंदद्याततो निष्क सहस्राष्टकसंख्यायाददद्वेषवशात्तान्यशौ राजादातावे  
 यद्विप्रतरोषाशतंवापितदद्वेषं वंविंशतिं... प्रदा... स... कर्मो गदक्षिणां एवंकर्मसमाध्याथ  
 मदेशानेविसर्जयेत्ततो घटजलेनासुरो गिणीं स्नापयेदुत्तं प्राहृतयेद्वाक्ये चैव राजयश्माविनश्यति  
 अनेनैवाशुवाकेन होमैर्वातिरथोच्यते होमवास्थाने होमं कुर्यात्तद्विद्वेषस्यैवात्तत्रप्रतिनमस्का  
 रंमंत्रविच्छेदश्चेरितिः संख्या नवसहस्राणि होमैर्हो विनश्यति ॥ अथेषामपिकृष्टादिरो गणांशा  
 वयंपुनः गवाश्वमधुना होमैर्निहिष्टेष्टसंख्ययात्तद्वेषवशात्त्रविच्छेदोमंत्राणां होमकर्मणि लक्ष्म  
 रघात्प्रतिदिनं निष्कमेकमिति स्थितिः अंतैवेतुः प्रदत्तव्यासैर्विकर्मो गदक्षिणा ५

८७

४ नि

कंजोपदेनमनुवाकस्यथाकृतं... विंशुषादिसेगाणां जायतेनावसंश्रयात् अथहरेसमुत्पन्नेदारुणो सान्निपातिके  
 राक्षो द्विजो नातिदग्नेश्चिद्व्यासो तो सिषाथसिबकपयसहस्राणिमष्टत्रा विनिक्षिपेत्तच्छेदः प्रतिनमस्कार  
 मंत्रस्योक्तो मनीषिभिः प्रजां चैगिरदैः कार्या विशेषेण प्रकर्मणि एवं कृतं सान्निपातक्षरक्षिप्रविनश्यति ॥  
 तस्माद्दलितसर्षीं गंजतोमंडलमंडितमध्यायेत्प्रहो वृषारूढां गणेश्वरयुतं हरम् ॥ प्रतिनमके शुचवृथ  
 नुवाकस्यप्रयोगः ॥ अथपंचमप्रश्नाः अनुवाकयोः प्रयोगः ॥ अनुवाकद्वयस्यास्पुदश्चरणसिद्धयो विरा  
 त्रं चरुलोड्यात्पेदथनिरंक्रम्यैकादशदिनान्ये वंछरश्चरणयुसवेशं अथराज्येसंमो वृद्धिः कामो राजह  
 कारयेत्प्रमंत्रसिद्धेर्हि जैः कर्मवद्दामाणा दृष्टविति ॥ तास्यामनुवाकास्यां मासे प्रतिनमस्कृतिभिलिंगस्योपनि  
 शुत्राणिकमंलानिविनिक्षिपेत्प्रयावदेकादशाष्टत्रिरुलयोरनुवाकयोः तावदेवसपर्यास्यात्तत्रैकानुवि  
 नेदिने एकादशप्रतिदिनं लोजयेत्त्रिजुनापि ॥ एवं कृते राज्यालक्ष्मी निष्पद्यंते विवर्द्धते ॥ अथाऽपर  
 प्रयोगोयं दक्षिणाशुर्जिसान्निधौ रक्षाजन्मदिने तस्य स्वाशौ वामथितान्त्रे अश्वत्थसमिक्षमो ज्यष्टका

नामेकविंशतिःसहस्राण्यत्रमुद्रयात्रयादृष्टोक्तुरानपि।एकादशसहस्राणि।कृतं।महीपतिः।चिरायु  
 द्विजयी।उत्पादेवदेवप्रसादतः।अथायद्विजयायीचन्मासिमासिजयं।कारयेत्तसंख्याकमनयो  
 रमुवाकयोः।असासनेतुसंयामेम्हानसो।तानलोमहाजनसाधिपकै।सोपदंसेनवीध्रसा।मद्राव्याक्रेन  
 उड्डया।अत्रप्रतिनमस्कृतिः।विज्ञेयोमंत्रविद्धेदद्याद्विगुरुवाक्यो।भाकादशमिकाहेया।इत्वेवंदुतरी  
 पतः।निदधीतबलिंरमाड्डियाप्रितदेवताः।समादायबलिंसर्वेहेमेशेणमेलयेत्।तेरोपेपरसेना  
 यामधोपुपरितः।क्षिपेत्।अचिरेदेवसासेना।नलवेकड्डासामः।सिमंत्रयेरांतानिस्पुअडितेजांसिराड्डसे  
 द्विजयोत्तवेभूश्याः।रिसेनासखलउयतेकंरुडाकफोसमुद्विषाकसमिधोमुद्रयदादृष्टो।अनुवा  
 कद्वयाद्यत्रिंशत्काद्वादशसंख्यया।तत्रप्रतिनमस्कारंमंत्रातेध्रवमुद्रस्यपरसेनासंतंकरोमिधोमुद्रया  
 दादृष्टकृत्वास्वाहेतिमुद्रयाद्विः।एवंकृतेशनुसेनातवतिद्विजिताविरो।अथराज्ञेयदीक्षास्यापरसेना  
 विशोषणोहरिणस्पवराहस्पृक्षागस्पवराशस्पृक्षांसेकापिजलस्यापिकलविकस्पपक्षिणोतथाः॥

स्वस्तित्ति  
७९

त्रयानसंख्ययत्रध्वानंदुनैः।उक्तैस्तौकुलउत्सवविवा।शूलनिक्षिपेठेभंनरेपुः।शत्रवोतिरातुभाक्तुः।सर्वाण्युधानिस्पृ  
 २।वरात्ताभ्यामनुवाकाकांशरादः।सेनासिमंत्राणां।उत्पत्तसर्विकसूतामेवमसानिमंत्राणां।इद्धेनैतत्रनावात्रसर्वममृतंनवेत्।१

पस्युहृतिनवरध्मावमधुनावापित्तेमेसंख्याविधायते।एकविंशतिसास्त्रीकिंतादेवानुवाकयोः।यावंतः।सुनमस्कारास्तसंख्या५

७४

प्रांश्याणां।वपिशितैर्लक्षसंख्यया।उड्डया।अत्रप्रतिद्वयंश्रयगोहा।दुतानलो।तथा।द्वतिप्रमाणेन।दुपैर्लक्षद्वि  
 सेवेरा।अत्रप्रतिनमस्कारमंत्रातेध्रवमुद्ररेरापरराष्ट्रप्रजाज्ञोषणंकरोमित्वा।हेति।शुष्येरेन्ध्रिमाचर्षिपर  
 रास्पृगताः।प्रजा।शुवर्षंरजतंगावोरुमिध्रवाहिकंतथा।दक्षिणात्रनवेदेतत्कोक्तं।कर्ममहीक्षितिंश्रया  
 ति।धीयतेदौषा।अस्पस्यासुत्रकामना।स्वाधौ।प्रतिनमस्कारमेतास्यांसमिध्रस्वसौ।अडुंवर।अनुड्डया  
 ददकास्य।कलशात्रसुतात्रतंहुलिध्नवैधेर्वैष्टि।तौजलहरिता।स्थापयित्वा।नुवाकास्यामेतावेवज  
 पेसुनः।स्थापयित्वा।नुवाकास्यामेतावेवजपेसुनो।सप्तदंडावधौकालेततः।कुर्यात्पदक्षिणांशसहस्र  
 शकमीशस्पृततः।पिष्टविनिर्मितसमंडं।प्रशयेदेधतदनुवाकासिमंत्रितानदीप्रवाहे।स्त्रिवेताव  
 नुवाको।शुचिर्जपेत्प्रवारमेकादशे।शांती।तत्रप्रतिनमस्कृतिः।प्रजयेत्समीपत्रैः।कर्मदंडं।अकामदंधवि  
 शकर्मणा।रुद्रसदृशो।जायतेसुतः।अष्टविंशदध्रवयो।धिकस्त्रीपुंसयो।रपि।प्रयोगेणासुना।उवाजाय  
 तेनात्रसंशयक्षसतुवंशकरः।पुत्रश्रुत्वाकः।सुस्पृहस्येयोः।अन्ये।रपि।पुणोयुं।कश्चि।वतकश्च।जायते।अलि

६ मन्त्रिमंत्रपृथक्पृथक्।प्रतिनमस्कारमनिधिवेवदंपता।प्रतिदंडं।नक्षत्रवित्सेनुवाकद्वयंततः।अपे।वास्सस्त्राणि।महोरात्राणि।स्वयंवा।आभ्यामे  
 वा।नुवाका।आ६

मंयसुसंज्ञगलिणीनांकरयोः निवध्नीयात्तोगर्सेनाशोवैनसवेकस्त्रिअतिमंत्रितमेतास्यात्सम्  
 द्रपेचनिदिशेत्कुमारादियद्वयस्रस्रबालरक्षाख्यकर्मणि रात्रौ शिखां निवध्नीयात्वास्यामत्रैवक  
 म्मणिगोरीकरोजुनेन्यस्पखर्णवोलसरासनघाइशुहसंनरारुहंनरनार। तमुंस्मरेत् ॥ ५ ॥ तिनमके  
 सुपंचमणश्राववाकयोः प्रयोगः ॥ ॥ अथसममानुवाकस्यप्रयोगः ॥ ॥ एकोपवासेकुर्वीतततश्चाष्ट  
 सं ॥ ॥ तजपेत् ॥ पुरश्चरणमेवंश्यात्प्रयोगोदिसतोसवेअचातुर्द्विष्यसवश्यंयः कामयेचात्मनोनरः ॥ उदु  
 वरवलसत्रनयोधुधदत्तरुईअसमिदोदधिमहाज्यसंपुकाजुज्यादसो। अयुतंहोमसंख्यासा  
 दृश्यमेवंसमष्टुतैभ्रकामसुजुज्यात्सदस्राणांनुपंचकर्मकापिलाज्यहविःप्रोक्तमेवमेशंसमः  
 क्ततोउष्टिकामष्टुकुर्वीतहोममाहुतिमन्त्रके ॥ अष्टपेनैवसाहस्रीसंध्यासंप्रदोमकर्मणि। यास्वा  
 रागंपकामुयतेसइत्यहोमयाचरेत् ॥ दधिमहाज्यसंपुकास्वमानातिवोत्रमश्रयः श्रीकामः सकांता  
 रेस्यकीर्त्यरसमित्तमं अमि कुंडरवनेत्रस्थापयेन्माथितानलशततः पंचसदस्राणिश्रेतान्येत्स  
 १ का  
 २ वाहिर्यसमिधोच्छाहविद्वनविदिहाः पंचसाहविकाहुनिः हसकामसुजुज्यादयुतंहतपत्रवान् ॥ दधिमहाज्यसंपुकात् २

हाणिउजुज्यादहसादधीर्नसुपतिष्ठतोअर्च्यथावदस्यस्यात्वावदेवाधिर्देतेस्वोपासधंकांमकुर्वी  
 नेकापांसंसेलवैः ॥ मकुंरुतंहोममचरेहोममापुयात् ॥ अनुवाकं जपेत् ॥ वेधनुकमिगवांश्रजत्रप्रदक्षिणकि  
 यांजुयादयुतेनैवसंख्या। पुत्रकर्मपलाशस्यासमिदोमधुसर्पिणासम्प्राप्ताः अनुजुज्यादयुतेनैवसंख्या।  
 शनुवंशकरंयुवंलसतेनाप्रसंश्रयः ॥ आयुः कामं तुहृद्वीणां। घृताक्रान्तं तथायुतमं प्रतिवर्षं जजुज्यादतासु  
 मदिनायते ॥ विद्याकामोघृताक्रान्तं मश्रुससमिधंशतोसदसाणिउजुज्यात्सावित्रिद्याधतिगोतवेत्सस्य  
 कामसुजुज्यात्पंचलक्षणिसंयुतोसौगिधिकानिमर्त्तान्येवंसांयाट्रजयते ॥ अथपूर्वांगकामश्रुदादौ  
 वोद्रायणचरेत् ॥ अनुवाकं जपेत् ॥ आत्सदस्राण्येककिंतिमितः पंचसहस्रीवसुववाकमुदीस्वैरप्रदक्षिणकि  
 योऽर्च्यमानेदेशायतनेततः ॥ अर्च्योत्पंचसहस्रांतेषाणायामक्रियात्तरां। पश्चात्सहस्रीमहेशस्यसमीपेहो  
 ममाचरेत् ॥ पलाशाश्रुत्ससमिधंघृताक्रानोहुतिर्सेवेशलक्षत्रयंततोमुक्तेलवैश्वप्रसादतमं ॥ अन्येच  
 तेकुलोत्पन्नारोरवाधिषुयेच्छितां ॥ तेरमत्रेशिवशुरेयावदासपंचकंयावत्प्रथिवीताववृद्धेततकुतो  
 दि

इवायथासिद्धं वमानतिः स्रज्यंतः सलयप्रदशदेवं सुचिस्मितं ध्यायेद्वा प्रवर्त्मपरिष्कृतम् ॥ अतिनम  
 केसुसत्रमोडवाकः ॥ अथोपरितनमंत्रप्रयोगः ॥ तत्राष्टमोऽनुवाकमारस्पनवमोऽनुवाकियाचन  
 मोवः किरिकेस्पतिको मंत्रः ॥ इह द्यं चरिवाहावयपंचराती जपे शं पुरश्चरणमेवं स्याद्योगार्हं सतो  
 सवे शं राज्ञः सांम्राज्यकामस्य कर्म हं मसि धीर्यतो काले च सस्य से दे शं तो वायतने पि कात्ररे वापि  
 देवस्य सन्निधौ सर्वमधरे शं तत्र देवो कार्यसिद्धिं वाचयित्वा द्विजे स्वराश्रमिं स्योपपन्नो दे शं आर्हं यो  
 क्यथारुचि सुवर्षं वायुं क्रीतमंत्रसिद्धां प्रजन्मना वा सोऽलेकार सुष्याद्यैः सत्राण्याचार्यप्रहक  
 यमंत्रसिद्धा द्विजासवे ॥ आचार्यो मंत्रकल्पकः स मयः सिद्धं र द्विजान् कुर्यात्तद्विभूतमथो ज्योतोऽप्रा  
 चार्यान्मंत्रसं सिद्धान्तं त्रमादाय ते द्विजा निरंतरं जपे कुर्यात् ॥ सराष्ट्रापंचसासद्यः सिद्धा सन्तकामिं यो  
 षा द्विज उं गवाः एकदशासवे यु सत्रा विज्ञा होमकर्मणि नृहयादस्य पर्यंतं हो मं च परतो सवे शं दिनां चि  
 देवस्य होमद्वयं मथो व्यतो तिस्रः ॥ द्वियथाः साऽप्यामंत्रं अतिनमस्कृति होम मंत्रे परश्चात्र सः ॥ पात्रं

सु

रु

निर

सदा वं शं अमुं धारा समासु क्रं द्ये मकाले विनिश्चिपे शं यावत्कर्म समाप्ये तता वदेव स्य जित्पत्रां अयजन्मा  
 असाहसी सुक्ति पर्याजमो दनमने वे द्यं स्यात्प्रतिदिनं तावतो सो जये द्वि जान् मथो ति मिदिने नियद्विगुणं से  
 जनादिको प्रजायां तु मदेशस्य गंधः कर्षरदीरितः सुष्याणि पंक जानिः सुधूपः कर्षर मिश्रितः तथा गवा  
 ज्पसंशुक्रोरुगुः परिकीर्षितः शं शं शं तद्विणा स्या दृखिलां मां धी गवती ॥ आचार्यो द्विगुणा सा स्याद् द्वि स्या  
 भ्रिका सवे शं प्रति संवत्सरं रुद्ररजामिं ह्यं करये शं एवमाराधनात्संघात्तत्रा जान् संशयः ॥ राजानो ये द्विम  
 ध्यस्थारुद्रैः तैः सुते खिलां ह्यमाना होमकडु वे शं तिष्ठति किं करण एवमाराधना द्रा जान् सुको सवं वि सुधरा  
 मारुद्रहोतृ मानस्युत्रे शि वसुरं वने शं रुद्ररूपी वा वपुरं सुक्का कल्पानु तं सुखस्य स प्रदी पा वती ॥ जान् शि  
 वसत्राः सुजायतो कारये स्य स ह शं पिता कां कः सुशो तमः ॥ अथो च्यतो प्रयोगो न्यारो हो विन सं कामिनः ॥ मं  
 नु प्रसा वसु के न स द्वि प्रणे प्रकारये शं वा दिरं हो ससु हं हं वा वैरि मदी हितः वि वि के दे शं कृत्रा पि जल प्रले घटे  
 मं हो आवा ह्य समि धो तस्य वि धि नं ॥ वै पावकां नु कुर्यात्तद्वै रं स्य मंत्रः अतिनमस्कृतिः शमी त रू तसु हं ता स

५३

५४

ना

मिधः कं टक्रे चैतारकाकारुधिरंशस्त्रेवेडालमिद्वर्कमेणिततस्त्रेवादिंरूपंप्रतसंश्रीद्वीकुलितसम्प  
 कप्रतिनमस्कारंवाद्यित्वात्सुखादिरोरूपकेविन्यसेत्यादेव्यासकालेयुरुज्जपेनततोविचिशतंराज  
 तोजयेहेदिमाततो। संवत्सरवत्यानष्टपरराजंनवेक्रवांश्रुन्यंशुकशय॥ तैकर्मप्रवेवखादिराकृतिश्री  
 कृत्वात्तुष्टेखलांपश्चाद्वैवदोममाचक्रततो। तिमंत्रितेसम्पेयुः सर्वतः। उरे। एवंकृते। श्रुवति तश  
 ३० श्रीश्रीप्राजायतो। अथाः परः प्रयोग्यशत्रुत्वमिपतेः परो मंत्रमिहा द्विजासुत्रराजापुस्यसंयुतः। विकृता  
 कृतिस्त्रे। लिनाचयेषुवचतुःष्ये। देवतायतनेराजादारेवेवसतासुचामंत्रातिमंदि। नारुअन्यसे  
 ४३ दिसेकैकात्राततो। तिमंत्रितेसम्पेयुः सर्वतः। उरे। एवंकृते। पुनंनस्येयात्वद्वर्षत्रयोदशभरवादिगद्या  
 रोद्वेत्प्रहारो। एषाजयतो। अत्रवध्यामश्लोकारूपेयुः। वनसंपनेयवमादीयस्वतीयाशुवाकस्यययोगा  
 काडुश्रव्याः। इत्यष्टमाशुवाकमारुस्यत्वाकात्रमकामंत्रः॥ पराकंप्रथमं कृत्वाजपेयंवादसुंमडोच  
 त्वारिंवात्सहस्राणि। उरश्रणसिद्धये। उडुया। मथितामोवा। लक्ष्मला। तैः। प्रथमं। एवमस्यघतिसय

गोप

४३

२२

२२

२२ अथमोवः किरिकेन्य इत्येतत्पर्यंतस्य प्राः। अथमोवः किरिकेन्य इत्येतत्पर्यंतस्य प्राः। इत आर

१ मंत्रसंशोधनापठिततः परिस्तरपुरोः। उपवेवेवा। एसा। एसा। प्रयोगारुक्तो नवेव। मंत्राणानेनः। साधनं किं वितपि विधत देवस्य दक्षिणं रूढिः। तनि धौस्वजातनी।

धर

सुवर्णस्यैदुयहाश्रुन्यथा। दुवतेकर्मतत्रप्रादुताडुतिं। अपर्मोर्गो। लिबीजा। लिवैणवनि तयायवा।  
 दक्षिमन्वाजपसेष्टकाद्विराजडुतोसवेष्टावर्णानसहसेव होमे। नो। मृतेक्रवां। कन्याकामिप्रसुतेनस  
 ष्टकन्यासमाकृतिं कृत्वा। तामुपलस्येवजपेत्वंकमदसकोदिव्या। तौसद्व्याणिपवेवडुडेतेयाहु। किलनेत  
 कन्यकामिष्टसंघोरेणवृषितां। राजप्रीकामनायस्यतस्यलक्ष्मी। दुतिर्नवेष्टा होमदयं। तपया। तिकुसुयु  
 त्तलानि। चापेकृतेराजा। लक्ष्मीः। अयदाजायतेविराजकशय। मिहा। निशावादेः। पालाशा। नाशुलांकरैः। लक्ष्मीकं  
 प्रउडुयाशपिवाचायदरा। हमा। इत्याकर्षणं। जायतेदेवेदेवप्रसादतः। अथाः परः प्रयोग्ये। मदाकांवार  
 वतलो। आत्मप्रमाणे। उडु। श्रुतिवावा। दरा। हसा। प्रकृ। येषु। कुं। डेसे। स्थाप्यमथिता। नलश। अशुतं। उडु  
 यादित्वैः। सतः। पंचसहस्रकामुष्टिमात्रे। बिल्वपत्रे। होमकर्मसमाचरे। तत्रबिल्वफलाः। कारं। सुवर्णमुपजा  
 यतो। स्यशेवधीतवेदे। मपि। डो। बिल्वपत्रे। होमकर्मसमाचरे। तत्रबिल्वफलाः। कारं। सुवर्णमुपजायतोस्यशेव  
 धीतवेदे। मपि। डो। बिल्वफलाकृतिं। साधने। मशुताथी। तुराजावैकथी। मकारये। शदेवस्योपरिशुभालिग

येनाक्रानिसर्पिणाकमलानिअमुद्रयाकृतसाहस्रसंख्यायाउपहृतेसर्वसोमसुतोदेवप्रसादत  
 अथाभ्यक्तमंत्रस्याह्युतं हवनक्रियासमीसमिद्धिरक्रानिर्द्विद्वौइहृतेऽथुतोएवंकृतेसुतस्यस  
 शिवसक्रोसिजायतीकवित्त्वेहरेण्यपविश्रतकर्णवद्वयप्रःचूर्णमद्दप्लेक्षेष्वाकपिलात्यमलोड  
 यत्रततस्रदृशतीहृत्पात्रैकृत्वाःतिमविततर्षान्वेतस्वयमिहोक्ततेसंजायतेकविःतीगकामसु  
 मुद्रयादुदुबरतफुडवांसमिद्धोदविमद्भाज्ययुक्रोसंख्यापिचायुतसुदेवदेवप्रसादेनमदाचोगाः  
 सिजायतीयोमनोयेशकामस्याहृत्तमाणस्राचरेशंश्रश्चरणमंत्रस्याविशेषणतडच्यतीकृष्टसंवत्स  
 रंक्रत्वाततश्चाद्रायणंवरेशंश्रय्येसंशोधवात्माःमथाःषादशवासराशचहृशाकफलेरुलेराचर  
 देहभरणानिरंतरंजपेद्दुद्धिषवैनिर्ज्ञानवेननाअमुदिषर्चकेखनेस्नात्वापश्चाजपेन्मन्त्रं। त्रयोत्रेय  
 रुवेदद्यानिष्कपंचकाकाचनघततोयरोवादेवस्यसन्निधौजपमाचरेशसंख्यात्रस्रष्टिष्णालहस्या  
 हंततःउनासाज्ञादुमातीहृद्रप्रत्यक्षस्रस्यजायतीतत्ससादान्नोविगयुक्रोसतवतिमानवाः। ययदेव

१०

१३

कामयतेतंतदेशयुरुस्थथास्यत्वामंत्रंजपेदष्टशतंअदेशासप्तत्रेःअथाहरपलकरणमंत्रप्रवृत्तवद  
 रेशपुरश्चरकंमार्थकसेयसिद्धदशमालोहितवंदनमुत्तंविपेत्रंमुत्तउष्यकोकपिलाप्रयसासुहृम  
 संहुद्याहृदेषपत्रके। शोदेनिधयतंस्रष्टासहस्राण्यष्टकंजपेशतेनोपलिप्त्वात्मानेस्यष्वास्मृत्वाचशंकर  
 प्राणायामायकुर्वीतततोदश्यासवन्नर्या। अथाभ्युत्तकर्मराजवत्र्यकरंपरंशोदेहृत्वालोहित  
 स्पर्वदनस्याथतंउनः। अतिमंत्रायुतीहृत्पात्रैकृत्वाःतिमविततर्षान्वेतस्वयमिहोक्ततेसंजायतेकविःतीगकामसु  
 म्। एवंश्यातवेयुस्तेराज्ञानोरत्तस्रुष्णादेवस्पदक्षिणंमूर्त्तिसन्निधौवैत्पवनमुत्तंजपेदष्टशतंराजउस  
 षेसोस्यन्नद्विष्येहेनाशमस्यासोनामयहणघर्षकांमंत्रंजपेदेकपादोस्रवेवाहंतसंख्या। देवस्य  
 सन्निधौवेवंवत्सरादाशुनश्यति। विश्वतःपाणिपादौत्रैविष्कतोऽशिशरोसुरैः। हलंतंविष्मभादिमतेजो  
 शिंशिवंस्मरेश। शतिनमकेयुनमोवाःकिरिकेस्यःइत्प्रपमंत्रस्यप्रयोगः। अथद्रापिअंशस्यतड  
 त्प्रययोगना। कृत्वोपवासमेकंउजपेन्मंत्रमथाः। सुतस्रापुरश्चरणमेवंस्यादथवेदुनकामना। आद

यु४



रत

यां बुद्ध्याद्वाह्यं कापितं प्रयतो युतम् । धनुर्बद्धं सवेत्स्यमदेशस्य प्रसादतु । हरेजाते सुशांशुर्थे शिव  
 स्मर्ये निनम् । बुद्ध्यात्सं वसाहृष्टी दृष्टीणां हरेशांतयो । अलिचारस्य शांशुर्थे कंकतत रूद्रवोसमिद्धो  
 बुद्ध्याद्वाह्यं मसं स्यात्तत्रा । युते सवेत्स्यमहाजनकतद्रोहशांशुर्थे होममाचरेत् । ह्युपमाहैनसं सिद्धं हवि  
 संख्यापित्राः युतमांसवेत्स्यमप्यनतयशांशुर्थे माचरेत् । होमं तत्राः युते संख्याहोमद्रव्यमथोच्यते ।  
 अहुर्व्यंशुसमिद्धः तिलाश्चेत्तथायथा । अनेन सर्वैस्त्वत्स्योत्तयमासु विनश्यति । अथाऽपरः प्रयोगः  
 ज्यामस्पनगरस्य वा मध्ये वृक्षे समावायुतं पिष्टेति नो तथा । अयुते बुद्ध्याद्वाह्यं नलिमस्योत्पन्नको  
 निक्षिपेत् । पुनर्होमसदस्याष्टकसंख्यया पिष्टेत्कृते सैरवात्मारुद्रो हते । अयुत्सुताः दृश्यो जायेत् । अथोत्पन्न  
 हासिद्धिं प्रजायते तद्दुपसंस्मरेत्वापथापेस्यश्च प्रसूयति । आशुकोसितकं बुकोद्गमरुकी विधोत्तयत्  
 डलांशुलाकुंडलनीश्रवासतिलकोमं सुकण्डूप्रसंश्रीमान्निर्मलदंतपत्रिकिरणश्चेतायमानान  
 नादिवासे रववेण्डपतितनु ध्येयोऽष्टदानीपतिः ॥ इति नमकोऽष्टुद्रापेत्स्यस्य प्रयोगात्ता

ज्ये ३

नक्षर

त्फ ३

स १

जुलार

अथैशतानि कुर्वीत प्राणयोर्भूतः परमांसदेहाणि जपेत् । अथुरश्चरणसिद्धयो कन्यार्थं लतते कथां बुद्ध्या  
 जलोद्यते यथा मार्गसमिद्धा मे लक्ष्मी नारायणे । अथैकं लक्षणं नाशाय बुद्ध्यात्प्रतिबुद्धी । ब्राह्मणा  
 दीवरो क्रुयाद्द्वारवदिरसेतव्यं सितरक्तैर्नीतपत्तिसूत्रैः संवेष्टिता क्रमात्तलहं बुद्ध्यात्सर्वकामान् । नो  
 तिसाधको बुद्ध्याद्द्वारकामं सुकृष्णैः कुसुदादिभिः । यद्वर्णं बुद्ध्या सुस्पतद्वर्णं वस्त्रमाभूयात् । दृष्टिका  
 मः सुचोदेशो गोमयेनोपलिप्ये शरकद्रव्येण तत्रैव मंडलं परिलेखयेत् । मंडलस्य पुरस्तात्तु नवकुंभं तिधाप्ये  
 रासुत्रेण विष्टं तस्यैम्पकं हरितं गंधवारिणां आवाहयेत् । ततः कुंभे सूर्यमेकाग्रमानसः । तत्रस्थो मन्त्रेये देवं सं  
 यतः साधको त्रयीपायसं बुद्ध्यात्तत्र शतमष्टौत्सं बुधाध्यायैकाधी चर्यं जपेत् । मंत्रसदस्रकोऽप्यं कुर्वी  
 तसत्राहं ह्यदशाहमथापि वा । ततः प्रसन्नो स गावां मूढावर्षं प्रसूयति । अद्रोरात्रं पोष्येत् । बुद्ध्यात्तत्र काम  
 शुचिन्नतः पायसं बुद्ध्यात्तत्रावषोत्सं शतं । तत्रैतौ ज्ञानांततो ज्ञानार्थं शुचीं वस्त्रा मलं हृती शो जयेत् । दुत  
 शोभं तु तपेन शतं बुधाः ब्राह्मणात्रतो जयेत् । अथैवकारयेत्स्त्रिवाचनं शतं तत्र पुत्रमवाप्नोति तेषां चित्तम

वृत् ३

नस्यमा अनिष्टदर्शनं चैव तथा दुःस्वप्नदर्शनो अतिचारकत्वे हे जिह्मा च समावृते ॥ विषदाह्यपसर्गे च  
 चो गतुमुपस्थितौ तथा च यद्वापि जायां च च तत्रावकाशे च एवमादिषु च ॥ अथो देवेषु ॥ पौहिते सुवै  
 वीके मंडले कृत्वा न वक्तुं सेतुं यैव वा गंधर्देके न संसर्षसर्षमंगलसं ॥ अथो एनालवंगकपर निजुजाती फले  
 युंते देवमावाद्यकलशे स्वयं यैतत्र हो मये शंभुत्रेणानेन संदेवमष्टोत्तरसहस्रकां अतिमंत्रतत्तयेन सा  
 नोवा परस्परां अतिभेदं प्रकुर्वीत सबेदो ज्योतिष्यते यत्सु मंत्रजपे नि संप्राप्तं गत्वा सुहस्रकां श्रीगरो  
 मंत्रं तत्रैतजश्रवते तत्सप सहेदा संवत्सरं जपेद्य सुहीराहारो जितं द्रियं ॥ अत्रैतं त्रयथा शक्तिं कवेन सुत  
 मंत्रं च ह्यसंमिद्धिमठलांग ह्येदं ॥ णि द्रिये सुतं गी कितं स्पमात्रुपैतंगे असन्ने वेजगयने ॥ कडकिं जे मि  
 दोके नत वित्रघ्नरायणं तद्देवता विमं ज्ञापे न्युक्ते संवेन्युनि डुतचामि कुरप्रव्यं शक्तिपाणि प्रदान  
 नो मयूरवाह नारु डंके दरु पेशो वस्मरे ॥ इति नमके सुयाते रुद्रस्य स्पं प्रयोगः ॥ अथ ह्यमा रुद्र  
 यमृडानो रुद्रे इत्यनयोः प्रयोगः ॥ अथ ह्यत्रः प्रोक्तं मंत्रं ॥ आदौ कच्छं चरित्कं जपेन्न वसहस्रकां ॥

शनी ५

५५ उते

३३

रश्मरणमेव स्यादथ दर्शने वक्रः पथे अभिमाक्षयजुह्वयाद्भिसारमिहासुतंगवादीनां तवेहंति रक्षां न्यत्कर्मवे  
 यतौराजवाहनशौत्ये जले स्थश्चाः युते जपे शश्र्मादि पाथसातेन वाहनानां महीक्षितः ॥ सौलां संप्रोक्ष्ये  
 सप्रातः कलेन विमिश्रितो कृत्वा पयोगं यत्किं विवाह नोस्य प्रवापयेत् ॥ एवं वाहनशान्तिरिति रश्मिशांतये मुनः ॥  
 उपशंभो अतिलानी तुजुह्वयादयुतायुंती ॥ अथेनांशांतये होमं ह्योणा मयुतंतवेत्तद्विद्यासिंहासनासीनां स्य  
 मानं महर्षिनिः प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सोमं सोमार्द्धं धरिणं ॥ इति ह्यमा रुद्राय मृडानो रुद्रे त्पनयोः प्रयोगः ॥  
 अथमानोमदां जमित्यस्य प्रयोगः ॥ उपवासत्रयं कुर्वीत जपेत्येव सहस्रकां अति संवत्सरं वा ज्ञानं जपे स्या  
 दुपक्रमो ॥ यथाणां तिलमिश्राणां जुह्वयादयुतां जती अथत्यसमिधो होमं अयुते यं देवस्युतो एव कते सुदारा  
 दिननस्का प्रजायतो किं वा न्ये वा मिवाभ्यादावयुते जपमाचरे चारा ज्ञासुसर्वशां यथेमाद्रियां मयुतां ज  
 तिं होमयेत्यतिमा संतु कत इहोमही पतौ अंतःपुरादयः स्यो म्पाद्वंते नात्र संशयः ॥ बाले बुभुक्षु कट्टे देवं त  
 सजादिपविद्यह्मं ध्यायेन् देवैश्च गकारंगणे श्वरसमावृते ॥ इति नमके सुमानोमहा जमित्यस्य प्रयोगः ॥  
 सुरश्चरणासादिः स्यात्प्रयुंजा नाथकर्मणि स्वायस्वला लहृद्वानां रातिमिद्धं त्रिदं वरेत् ॥ ५

३३

अथ मानसोक्तद्वयस्य प्रयोगः ॥ कुरु मे कं चरित्वा हो पात्रं अदं वरे धृतीनि ध्यायकापि जंतस्पृश्यं  
 वातिं मंत्रणं सदस्र संख्यया तेन स्वामी वा मथ्यते विवा सुकृयादष्टसाहस्री मशो हति निःशतां कुत्वा षण्  
 मशिखात्रिंशत्त्रिंशती तवेत् तत्सु कुरु कुरु पं ताव सद्ग्राणि वै जपे शो गुरवे पंचनिष्कानि दद्यादेवं कृत्ये तु  
 नः ॥ ३२ ॥ अथ सिद्धिः स्यात्प्रयोगार्थं सतो लक्षं त्रयसुः कामो महीपालो निवृत्तौ यथावको माथिते वा न  
 ले हो मै कुर्यादयुत संख्यया हो मद्रयं तिलासिक्तासिर्णिवे वात्र कर्मणि स्वर्गकर्म ही पालो ब्राह्मणे क  
 र्मकारयेत् अष्टशत्यात्मका दद्यात् ॥ ३३ ॥ स्म कृत्वा सिंघितं तदा तदा या छ केशसुराज्ञानमसिद्धि  
 तैः ब्राह्मणो न्ति पवकार्यो रङ्गकर्म महीपती किं रणं वा अरज्ञा स्याद्द्विष्टस्वपितस्मना रा इथी  
 वृद्धि कामसु मंत्रसिद्धि द्विने र्ण का रये दद्यात्कर्म यद्य सिद्धे द्विने र्ण संघसिद्धि प्रकारे सुदे  
 चार्यो दसं मही एकरात्रे उपोष्याथ त्रिरावं सतने जपे च सद्यः सिद्धे सवेदेवं कर्मा र्थे प्रजायते ए  
 कादत्र द्विन्मानो सदृथात्वात्ता शीती वधेम द्वाभ्यसंष्टकैः सुकृयात्कमलेः सितैः एव कृते राज्य

५

८३

वं

लक्ष्मीर्द्धतेनात्र संशयः ॥ आयुः कामो महीपालो कारयेदयुतं इति इहो एणामाद्ये उपकानामे जीवितं चिं र्णं अ  
 थरही जन्मा देने राजता कुल शो सुलाशतां भ्रणति इति वापि सद्ग्राः एक संस्मिता रा अष्टो शतानि वाप्यथापरि  
 प्रली विनिक्षिपे शं मगलानि वव सु निकलत्रो विनिक्षिपे श नववीं श्रेण नो मर्षी चेष्ये चेष्य कृष्टय क् दिवं  
 खुसमाराथरात कृत्वोऽनिमं वि आचार्यं धापयेत् इत्तं कुं जोऽतो सिंघय कथं कृण्वं कृत मही पालो मुच्यते स  
 वै किं त्विषेः अथ राज्ञोऽसिद्धयर्थं सदस्वाष्टक संख्यया क्तरयेत् जपमेकेन विप्रद्ये र्ण एणित्यशः अतिवृद्धि र्ण  
 विदेव मनेन जपकर्मणां शंति मिच्छन्मही पालो रत्ना नारादिमध्यतः वा हना सुवशाला सुसो र्णं पमासिमा  
 सिवाशा ल्पार्थमस्युता द्यर्जपं हो मं चकार येत् आयुः कामो महीपाल अयुतं हो ममाचरेत् अस्वैः मिथस्र  
 द्दं पा मर्गा इवात्र पिदधि मद्वाभ्यसंष्टका हो मद्रव्य मिहसृ तमगा ता युषोप्ये नना सुर्वे हते हो मकर्मणा  
 र्णैः वै प्रवहारे च मंत्रमेतं जपेत् नराः एव कृते प्रजायेते कर्मस्यैत्रा पराजितो सुवर्णकामनायस्य सत्रि  
 रात्रमुपासनां च निरंतरं जपं कृत्वा चरुती जीततोयुतम सुकृयात्कमलेः सितैः एव कृते राज्य

पौथः २५

नांसहस्रं तलतनात्र संशयाक च्याकामसु सुहृयादसु तं सुदाच्यमीदधिमधा ज्यसंष्टका विंशतेकन्यके  
 ससं अथाऽन्यद्वयते कर्म वरुतो जीवुवत्सलमनिनयमष्टसहसाणि उड्ड जीव्यापपावको अष्टोशता  
 निवाइयं कापिलघुतसु चतोर्यं कृते प्रष्टयतमदंतः पातकाद पिंवरुपकामोम यज मसिमं अल  
 लातको धरये अंतं दं सवे वरुपातवं तिहि प्रीतिस्वज्ञाने होमं कुर्यादष्टसहस्रं का होमद्वयं वपामा  
 गंसमिन्ने न कर्मणा अपम्युर्न विंदे तदेव देव प्रसादतः प्रदी कामः सूर्यवारं मंत्राणां ननु वास्करयथा  
 राधये ज्ञापसु व्यैरुते स्रक माणिरको सौ दी रां वा सारं कर्गं धानु लेपनं च त्वा स्वयं कृते सूर्ये मद्रा वृष्टिः प्र  
 मुंचति। यो ह्यरु मार्ग गामी सः गृहीत्वा दशशक्रां। अष्टसाहसिका वृथा त्वति मं वना पुनः। विम्यस्य विदुः हरा  
 सुगच्छे देमी तौ तवे स कर्मणा समा रं ने सर्वे विप्र जिष्टु ह्या। अयं तु जप देव मं नो ग वि त्कर्मणा। पुत्रका  
 मसु सु हृया लक्ष्मणै न संयतः। ततो वै शकरं सु वं छणि मं न तते क्र वम। यं यं जने यं तु मिष्टे तं तं वै सि कृ ता कृति।  
 विधाय तस्य तिकृते र्द्विच्छि त्वाऽयु तै जपे श अ व श्ये कर्मणा न न सर्वे अ विजयी तवे र्द्वि। देवान मे कं दश वा

३४

३२

जन्मर्दमात्मनः। प्रत्यार्जनं वक्तव्यं तत्र पमष्टसहस्रं। प्रत्यार्जनं प्रति ३ व्यं ५

विसंकेदं देवं विष्णुः स्फटिकप्रकाशांते जो निधिं श्रुतिनिर्मिदुमौलि विसिं तये छे वरुदे सु सं।। इति नभे के सुमान  
 लोक इत्यस्य प्रयोगः।। अथाराव इत्यस्य प्रयोगः।। दिनत्रयसु पोष्याथ विरात्रे सततं जपे शं सुरश्चरणमे  
 वं स्यात्प्रसुं जीताऽथ कर्म सु अ सुः कामः स्वकीया न्नो नित्यां वां सु हृया हृ तो अष्टो सहसा ण्य पि वा तथै वे  
 हशतानि वा दधिमधा ज्यसंष्टकानां हृ वीणा मपि वा ड्डी।। स्वकी करी त्या ज्ञया देव मा यु प्र क र्त्ते।। अथाऽपरः  
 प्रयोगो यं प्रति सु हृया हृ यु ता ड्डी।। होम द्रव्या णि हृ वा अ तथाऽपामार्गं संत वा सी मा तरु सु हृ ताऽसमि अ अति  
 ला स्रथा।। पाता न्म कृ ते दध्या अ मधु तिः स्फोरथो नित्रा।। याव तं च सदसा णि जपे ता वं व दक्षिणां कुर्या देव कृ  
 ते दी र्घं मा युः प्राज्ञो त्प संशयं विरं जी वन का म सु रा जं जन्मा दिने सु तो सु हृ या व द्र मा णे सु द्र वे प्र ये क मा द  
 रा दधिमधा ज्यसंष्टका अपामार्ग शमी ति न्ना।। ई त्रौ अपि व हो म र्द इ द्र वा ण्य चो दि ता नि वै।। अने न क र्म णा रा जा र  
 वी मा यु र्वा सु या र्वा क्ति हो मे व रा क्ता नां हो मः श्रो त सि जा य तो हो म मा त्रे ष श क्ता नां ज प र वे ष सा ध नं लि द पा न्ने  
 ति श्या म सु ष्पी सर्व काम फल प्र दे।। श्री कामो क्त्स्य क्त्सु मे र यु तेः प्र ज ये छि वां उ च्च रा य न ष सं वी मे के कं कु सु मं च

३३

नक्षत्राणां नामनायस्य जु कुर्यात्सोऽभुता कृतीः। मधुतैः संकुलैः सुकैः वर्धत तस्य प्रा सु पी २

सेवा अने नुकर्मणा लक्ष्मी वर्द्धते नात्र संशयः। आलये पश्चिमे द्वा र्दिव स्यार्णाः लये पिवा। प्रत्यार्द्ध सं ब्रह्मचारी  
 स्त्रियायी संजिते द्वियः। विगतं द्वा र्दिव स्तवने क्वतो जी जपे ननुं प्रति त्मु मदेशान मे मेकं सहस्रकां एव कर  
 कृतेशत सुसुतवै त्वा त्त्र जन्म सुा घ्नो काः द्वा र्दिव नियमे स्यार्का मे द्वा मा द्देश कुर्वाणं सन्निधौ देव्या देव  
 माने घंतां उवशां इता शनं घं रंध्या ये त्त्र प्रकां वन सन्नि त्शाः ॥ इति नमके आरा द्द्व्यस्य प्रयोगः ॥ अथ सुदि  
 स्त्रे त्तमित्यस्य प्रयोगः ॥ एको रात्र सुपोष्याथ त्रि रात्रं सततं जपेत् रात्रं अरण मे वं स्यात्प्रयोग हे सुतोस्त्वेश  
 विद्विद्वा नाशकाम सु उड्डया लक्ष्मा इती विषतैल समां का सु विकंक तन रुडवा। समिधो दधिमंत्र स्यात्सु  
 शाना ॥ यो इति र्त्वे शत्रवो नाश मया ति वेगे नानेन कर्मणा ॥ अथाऽप्युच्यते कर्म मंत्र देवस्य म  
 त्रिधो। सस्मा पाणिः सप्त त्त्र स्पर्मि ना मय हण एवै क मा सु विरि पे दं मंत्र संख्या त्वत्र सु तं स वे श एव क ते रि  
 पो दे दे ह्य री जा ये त वै म हा श्र स्वै त सि द्वा र्थ केऽह्येः उड्डया द युता इती म सरिका स्यो जा ये त रोगः शा व  
 गान्के ॥ शत्रो र्द्वे श वा त स्पष्टे आ दि आ पि वा व रं वा त यि ल्का त्र नि व ने द सुं मंत्र सु दी र्यै त्र श क र्ग अ त था क

कर

वर

लरो मा ख्वा दि व कु त्ति तां ए वं कृतै स पन्न स्य ना शो वे गो न जा य तो उ च्छ्वा स्कर को टि प्र का शार्मा का शानि लय म  
 लि ती म र्शान्ति द्वा र्म सय व र दं ध्या ये दु ड्डे सु री अ न तां शर सा र्मा म हे र्नि ध्या त वा इति के व न ॥ इति सु  
 दि स्त्रे त्तमित्यस्य प्रयोगः ॥ अथ परिणो र्द्व्यस्य प्रयोगः ॥ कृ ड्ड मे कं व र्त्वा थ ज पे ड्ड न व वा सरा त्र त त्र  
 प्रति दि नै पंच स ह्वा णि ज पे न वे शं पु र अ रण मे वं स्या द थ वो सु व का म ना दा वा न ल स मा ली ड प ला श र्ख दि  
 रो द्वा शं समिधो द धिम ध्रा ज्य ष क्वा वै श्रान रं यु त म् आ ड्ड या त्प श्चि मे द्वा रं म देश स्या लये सु तो ए त क र्म  
 सु यु तं स्या क र्म णा ने न वै कृ व श ल स ते रु द स ह शं पु त्र वं श क रं पर म् अ थ याऽपु र यो गोऽत्र या रं स स्या द्मा क  
 धाऽष्ट म्पा न ता सो स्या द्वा ड्ड या म पि वा छ नः स वे तां दं प ती त त्र व वी क श्रु रु ता जि नौ ख र्द वे वा थं गो षे वा ड्ड या  
 यां पि प्त स्य वा ॥ क र्मे नि दा ड्डे र्द्व्यस्य क्रिये षाः प्र की र्त्ति ता ॥ मंत्रा द्वा रा णि या व र्त्ति ता वी तः क ल शा अ सु ता श  
 तं तु ति र्त्वे छि ता त्थ पा थ सा ॥ पु रि षं ता श व लं स्त्रा प ये म्ध ये षे षे वै क र्म ह ह्वं तां उ च्छे स रं नि ध म्पा व सो  
 म मा वा ह ये न्मू डं आ या उ र ग र्द वे व के ला सा दी ति वै बु व र्त्त आ वा हा गं धु पु ष्या ध्येः र म्प ड्ड व त तः प स्या त्र

दिनेष्ट

परि

ये

रस्यमध्यकलरांकलरोकलरोधुनः। मंत्रोदितो बिंदुयुतौ न्यसेदेकैकमहरशततोनवसहस्रानिजपेन्मंत्र  
 समाहितः। ततो मधुघृताक्रानां श्यामाक्रानांतथा धनः। लाजानां लुसहस्राणि सुदुहयादष्टसंख्यया तत एक  
 सनेनायापतीसंख्यापसंयुतो। मध्यादिक्रमतः कुंसां नानादयश्च कष्ट थकृतत्रदहरूपेण संस्मरत्र  
 न्याविती। पतिशक्तपेक्षो घटांतो वित्रसुणानो धत्तोजयेश्च प्रष्टो सहस्रान्यथवा तावेषां घशता निवाण  
 कावशात्तमथवा जोजयेच्छक्तिो द्विजाशतं कुं चक्रत्रीशां। नो मंत्रये समाप्ये शक्तिं तं नो वि  
 यि त्वस्मिदक्षिणां निष्कपंचकशदद्या निष्कत्रयं वाथ उज्जीयातां उदंपतीं वंतयोः। नवे सुत्रो दीघो सु सुयणा  
 तयोः त्रयोः ककर्मेशः। कृष्णमन्त्रसंस्तुते। महेशं श्यापेये मंत्रं जपेदद्युत संख्यया ततो जपने च म  
 महोरात्रं प्रदक्षिणां कुर्यात्तत्रो ह्यादहसमयादश्चात्तथा ह्याशतत्र विद्याः प्रजायन्नेतस्माद्दिशे शमा  
 ईये शंखरश्मरणसिद्धिः स्यात्कर्मैतसु वकामदे अथया विपरीतं स्यात्तु रंयत्तेन रजये शं अथाऽपरः वक  
 रोऽत्र दीक्षया दिवसानिनां शं अष्टो शतानि वोलैकवत्वादिना निवा। किंचैकविंशतितत्र पश्चिम द्वार

दक्षिणम्यानियानिवै। तेषु हर्षेत्तराम् लादात्तन्पाष्टस हस्त्रकां जपेधा वंति मूलानि र  
 अर उर

संयुतो देवालये ~~वे~~ प्रतिवितं चरुसो जी जपेन्महां अष्टो शतानि तत्राप्यष्टदक्षिणवरा क्रियायां अथ  
 द्दमश्लानितत्रतत्रुपथकृपथकृ। शिवाः सुं च लुद्धिसहस्राष्टक संख्यया। दिने दिने जपेन्मंत्रमेवं कर्म  
 समाप्ये शं दीक्षितां त्राहणां तात्रै ~~मंत्रं~~ जपेदपि। एवैकतेवं शकरंधर्मिष्ठं न च ते सुतशंगजचर्मा इततं  
 स्फुरत्प्रदरणां हलं। सर्वेषां पहरंध्याये हेवं कुं जरवेदिना।। इति नमकेषु परिणो रुद्रस्ये च प्रयोगः।। अ  
 थमीदुष्टमेऽथ स्प्यप्रयोगः।। एकरात्रं जपेत्पंचसहस्रानि सुसंयुतः। उरश्मरणसिद्धिं स्यात्तयो गार्हः सतो  
 तवे शं अर्थनाशानुवे स्यात्तथे वघ्राण संशयो।। तस्करादिषु जे वैव उज्जयात्सुर्षिषाद्युती। पत्रैव त्रसहस्रानि  
 तये स्यात्सु अते स्तं शशं मंगलाय तनं देवं युवानम तिसुं दरमं। ध्यायेद्द्वन बरा कार मग हंतं पिना किन म  
 इति नमकेषु मीदुष्टमेऽथ स्प्यप्रयोगः।। अथ विकिरिद्धे स्प्यप्रयोगः।। त्रिरात्रं चरुसो जी संहस्रानि द  
 शैव लु। जपेत्तदेते कुं धीतसहस्रानि दशैव लु। प्रदक्षिणां न्यसे मंत्रं जपेत्तत्रैव शिवाऽन्ये शं उरश्मरणसिद्धि  
 स्यात्सुं जीताथ कर्मसु। महान्नविरोधे स्यापुत्रु०००००० त्रयोदशिमन्त्रात्पसंष्टकायै जादं समिधोः खिल

उक्तिरोध



असुतं बुद्ध्या देवं सयं तेषां न जायते जितुं कामसुसर्वात्वा अपामार्गसामिदुतिं शतसाहसिकां कुर्यात्  
 समिदं स्यात्सुसर्पिणां कापिलेन मार्गस्यैः स्युरिदं सर्वज्ञयोः तवेति खोजे तु कामसुसमिधं विल्वत्सुदं  
 देवि मन्त्राद्यैः काश्च बुद्ध्या लक्ष्मणमाहुती एवैकतेवराहदेवैरुपमानोयस्यशयाः शालिले जेतु कामसुजन्म  
 ध्येऽत्र पावकां स्थापयित्वा कापिलेनां सार्पिलक्षिके माहुती बुद्ध्यात्कर्मणानेन सयमद्वे निजायते यथैते  
 उंमति सत्रनामपद्यत्तद्वैकमर्का कापिलेन बुद्ध्यात्लक्ष्मणकर्मते हितः योदिस्यैः सत्वेदोः नोः सयं स्या  
 न विदति प्रसन्नवदनं सौम्यं रवितो ह्यहमेदं ॥ अथ सहासिदं ध्यायेत्पुरसंदोरसि सुतया ॥ इति नमके  
 विकरिदेव्यस्य प्रयोगः ॥ अथ सहस्राणि सहास्रं प्रयोगः ॥ कुरु मे कंचरित्वा होजपेत्स्यं सहास्रं  
 कर्मात्पुत्रपुत्रणमेकं स्यात्सुदं जीताय कर्मसु। सक्त्वादिप्रधानीनां पुरुषाणां सुपद्रते तद्धीतये मद्दीपा  
 लः कारयेदसुतं बुद्धिं समिधं सत्रशाल्मल्यो धितं कर्त्तुं इवा स्यात् ॥ श्रीहयश्रयोऽपि होमद्रव्यं तिल  
 अपि सवमेतो घृतां कं स्यात्तद्वै सवसुपद्रवौ ॥ अथ मारणकामं ध्वत्तधनं उ सषस्यैः समिधेदिणात्  
 २५ २५ २५

३४

वार

वेजपेकसहस्रं राततो वल्मीकसंस्तुतमदालिगं प्रकल्पं चामत्रेणानेनां जिषिचेधावह्वीर्षं नवेदित  
 पवंकते सवेन्सुसुप्रभनपुरुषस्य वै ॥ यदिवे न्मारणं देवैरहितं कं हते तदा ॥ अथायती म्देवीणां मापगा  
 यां विनिक्षिपेत्तत्रैरियसुकीयात्तौ बुद्ध्यादसुताहुती ॥ होमद्रव्यं सवेत्तद्वृताः स्युक्तं तुदौ मर  
 णोपशमस्य स्यायते नैके कर्मणां महाकी तारगामी तुक्त्वात्समांभिर्मंत्रिणां अष्टसाहसिकाद्यस्य  
 तेन गात्रांशुलेपनां कृत्वा गच्छेत्तत्सस्यतीतिः कापिन जायते ॥ अहं स्यात्सयु कामसुसाने वै जलमा  
 मिधं बलिं हरेत्तुदं स्यात्कृत्वायां नृशिसंयत्तां ॥ बलिदेशः सत्रां स्यादेवैरहो सयीं नदिः प्रशासक  
 रूपा लकोपद्रवितो तयोः सोवर्षशासकं कृत्वा बुद्ध्यात्सय सनिधोऽत्र शौ सदेसाप्येन ककुटस्य मि  
 षेण तु बलिं हरेत्कते चेंद्रात्रका द्विषयते दक्षिणासु वार्ये न देया स्यादन्नकर्मणि त्रिषिः स  
 विसाख्या स्यात्सुचकर्मोत्सारतः ॥ निष्कत्रयसुतैकं वा निष्कं देमैतुदक्षिणां वसां नां पिदेय स्याद  
 क्षिणात्वेन शक्तिः ॥ अथ देवोपद्रवाविधौ बुद्ध्यात्सुसर्वांतयोः सार्पिणां सहास्राणि स्युतं सुपद्र  
 ४पो  
 २५

३२

वासर्वापापहरं देवं सर्वान्तरणं लज्जितां सर्वोद्युधंधरंध्यायेत्सर्वलोकमदेश्वरम् ॥ इति सहस्रानि सहस्र  
 वेद्यस्य प्रयोगः ॥ इति नमस्केसु दशमोऽनुवाकः ॥ अथ सहस्रानि सहस्रसंख्यास्य चतसृणां प्रयोगः ॥  
 अत्र सप्तसु चतसृषु मप्येककर्मसाधनम् ॥ चोदायणं च रिवादे जपेत्सु च सहस्रकोऽपरश्चरणसिद्धिः  
 स्यात्प्रज्जिताय कर्मसु अतिचारिक कामसुराजा हेमं प्रकारयेत्सिद्धेश्च जाते विद्यायेर्षेह संख्या  
 इतो जवे च शास्त्रमाला लवेणानं वेत्तस्य च राके रस्य चो समिधस्वर्गं च लेन वेष्टिताः शत्रुकस्य चारकेण  
 का इत्याद्या होमद्रव्यान्तया पुनः ॥ किं चिद्वै नमस्त्वोपैण श्रेण कुरु इति कृत्वा कुरु मे एतां द्वितीयां सह  
 स्राष्टक संख्यां सुहृद्यादिह माचक्षि शत्रुवो नश्च मापुयुः अतिचारिदिने श्रेतेर्मन्त्रैः कृत्वा दिने दिने जुहु  
 यादिह माचक्षि शत्रुवो नमापुयुः अतिचारिदिने श्रेतेर्मन्त्रैः कृत्वा संचसादसं होमद्रव्यमथोचातो दधि  
 मद्याज्यसंघका दुर्वा इच्छं कृते सति राज्ञः कारयितुं स्य दोषस्युर्वा अतिचारिकाः देष्टुं करालवदनं जल  
 नमूहं जगद्विचापं शीर्षं दीप्तं स्याध्यायेद्भुजंगरक्षणं ॥ इति सहस्रानि सहस्रत्रयस्य सप्तसु चत

६८

त्रि

सहस्रानि ॥२

७७१

स्यस्य प्रयोगः ॥ अथ ये हृदयैश्चिदाः स्यतिष्ठतां प्रयोगः ॥ अतश्च परश्चरणादिर्ब्रह्मवर्षे नैयी ॥ इति ये हृद  
 यैश्चिदाः स्यतिष्ठतां प्रयोगः ॥ अथ ये पश्चामिति हृदयोः कुरु मेकं च रिवादे जपेत्सु च सहस्रकोऽपरश्चरणमे  
 वं स्यात्प्रयोगो या निधीयते पुत्रकामः स्वदाराणां मृतो गमनवासरो स्वाभावश्च सहस्रानि सुहृद्यादिह माचक्षि  
 त्रता कापिलाज्यविमिश्रं कपिले पयउच्यते इत्वेव मृतुगामी स्यात्सुत्रावशकरो जवेत्सु मदातीर्थफल  
 सुश्रेष्ठता कैतिलतंडुलेः इत्वाचा होमसहस्रानि गच्छतीर्थमनालयार्त्वा तीर्थे जात्वा पठानेत्स्वामिमार  
 ध्यवेततः वागपमे विष्टजे तीर्थफलमृते दृष्टार्थतः ध्यानं तु सहस्रत्रयस्योक्तं विज्ञेयं ॥ इति ये पश्चा  
 मित्यनयोः प्रयोगः ॥ अथ य एतावंतां श्रोत्रस्य प्रयोगः ॥ अथ स्य तु परश्चरणादिकं ये पश्चात्पिदीं शोदि  
 वसिष्ठेक विंशती प्रथमे पंचके दुग्धं द्वितीये लक्षयेत्सो अथो पवा स पश्चात्तृष्टवस्यं चकद्वयो एवं कृत्वा  
 ततः पश्चाद्दिव्या श्रीसदा जपेत् शोतावंति दिवसान्येव ततः पंचदिनातितां गलदन्नने स्त्रिंशत्वात्तापि त्वथेक  
 वा सरस्य अद्य मर्षण कर्मोक्त विधिना संयतो जपेत् शोदात्सु वसंति देशां शोदायैश्च संदक्षिणोः सुश्रुणां

४ यत्रोक्तमनुमं वेद्ये ॥ इति नमस्केसु एतावंतं ये स्य प्रयोगः अथ नमो कुरु स्वस्वत्पराभ्यासनातेय विदुको  
 गङ्गाया संयतो ४

शानि २

वापिकुर्वीतत्रयाः सावेतुतत्समसा एवं कृते तवेत्सिद्धिः पुरश्चरणकर्मणः । अत्रकामः स्यात्तन्निवृत्त  
 कुञ्जया इतमसंख्यो घट्टमदसाणितवेदश्रेतानिचायावृत्तीविलसिताने दुर्वेधनेनकर्मणा अथा  
 ऽपरः प्रयोगोत्रेदशैर्वा कुर्वितेवैरादयंतुकापिनेसर्पिः संख्यात्वष्टसदसकां अथवी विरसिप्रोक्तवि  
 धनेनेवैर्वांस्वैराततउत्पद्यते कृत्वा रक्तो गी रक्तमृदुं रक्तै रक्तनेत्रं तप्रासद्वैसाधयेत्सात्मयमतीकर्म  
 णोसासमारंसेत्रजासुप्रिधविता रं वतुरः कलशांतत्रस्त्रापयिवातिसंयता तप्येयदव्यमांत्माननाशये  
 नैवसंधरधतंतवेधकं लज्जानिकामनासोयुताडुती कुञ्जयात्सर्पिषावक्त्रै कालज्ञानंततोत्वे ॥  
 जातिस्मरणकामसु कुञ्जयादयुताडुती ॥ पयसाकापिनेवक्रमजातिस्मरोत्वेराध्यानप्रकारसुसद  
 साणिसदस्यराधयत्रोक्तो विज्ञेयः ॥ ॥ इति नमकैषु नमो रुद्रे स्याः ॥ ॥ इति नमक प्रयोगोका  
 दशोनुवाकः ॥ ॥ अथपर्वकैषु प्रयोगेषु दक्षिण्यथा निस्पृते ॥ दक्षिणादुत्तमामध्यावाऽधमेति विश्व  
 मता । तत्रौषधनिष्कापां दशासादधिकोत्रमा । तद्वर्धमध्यमात्रोक्तादतीयां दसदक्षिका । उत्रमात्रिशती ॥ १०२

उत्तमात्तुवुः षष्टिस्तद्वर्ममध्यमास्मृता । उर्विशतिरन्पास्यादधान्यो १

वास्याद्विशतीमध्यमा मता । अत्रमात्राऽधमज्ञेया प्राकारः कीर्त्यते परः । विद्विरुच्यते । सदसदक्षिणादेयाद  
 राद्वरुषक र्हेको शतानिपंच देयानि । त्रिणापंचक र्हेको अथेक क र्हेको देयं रातत्रयमिति । त्रिंशत्तिसर्वत्रद्वियुगा  
 दद्यादाचार्यधनुदक्षिणा । बहुषु संपनिभाद्ये उत्रमात्रतिरुषो अथेक क र्हेको क र्हेको सौधोत्रमा मता । रा  
 शीतस्मदशानोचदक्षिणा कथितानमा । अन्येषां मध्यमादीनि दक्षिणादाननिर्णयः । अत्रकदक्षिणा क्के प्रयोगे  
 श्चिद्यमीरिता । विसधेम तियोमीदा न्नक्यादि विविधरां निवतरफलमात्रो त्रिपलाताक्रांतमानसः ॥ इति दक्षि  
 ण्यत्रा ॥ ॥ अथैतान्तिरिक्ते प्रसवाय जिहोष्या ॥ ॥ स्त्रौ मिस्रं वेरमाधी शं चर्मनिर्मितवाससोत्तुन  
 यमहासैखामहा र्हेतसुप्रितासुलकुं उली कुं उलाः लं कृतग्रतिधे नं घनविलसितं डिडुपमिता । च्लडसतकर  
 वाल निषिलनिगमोपगीयमाना सुखरकर वं रं निकरपश्चिच्य विरां वै चरितं धरणशृंगारकं मलकलित  
 कपालासरसिजासनविश्रान्तिसमस्यस्रांसमस्रजग विस्त्रारसंसारं सद्देनद्विनियुणा निरवाध्रिकपरिमाणा  
 निहारपरिमीकर्मरी विविर्षी व्यापारपात्री जलललितजटाजटविगमहरडरितहरे अपरदिगोणिणी

६३  
४जीम

१५

त५

रक३

र निर धिर संतार उरउ

संयोगसौरागपतंगसंपालिगितोत्रमंगभूमधर्नयनमदनमनमत्रमधुकरखंकारसंकारनिजशृंगसंरव  
 किंकिणीकितितेलितेतिपदाहृतिमदिमंडलाधारं ॥ २ ॥ नपतिप्रस्थमानातांडवाडंवरस्पृकारोत्क  
 वंस्वदैस्पदानवसंघातनिरंतरांतसिशांतांतःकरणअनवरतधाराधरधानगंतीरधर्गरगलगयंदाकारसंलि  
 नगह्वरयुद्धाराजविराजमानवससधीशकव्यकातिसंक्रांतिनिजकलेवरैकदेशाश्रितिविजगमदेश  
 नमस्तेनमस्तेनमस्ते ॥ ॥ आर्द्रो कर्मवराहृदयदखिलेलापमल्लोकरपश्चात्पलवितोत्ररस्यद्विषय  
 एतिसमुत्तेषकांअत्रैलोचनमुद्रणविवटनासेगाप्रगल्लमहासालेलोचनमाविरसुपुरतःसंसारसंमोदने  
 आधरचतुरानमस्यकरकासंबद्धपायःस्तुतेरावेयंगिरिकन्यकाकुचतयसोगस्यलागाकृतौअशीपा  
 लकमालवालमखिलब्रह्मांडसोडहृतेरासोपात्राविमोचनयत्रणध्वन्यत्तर्मनसन्मदोशा ॥ इति  
 नमकमम्राणांप्रयोगविधिः ॥ ॥ म्हासंवाख्येमहितेप्रबंधेमांभवनान्मोर्मदिनाऽत्मजस्यासत्कर्ममालि  
 क्यगणेनघण्टेष्टस्त्रीत्रणष्टःप्रथितस्तरंगाः ॥ ॥ माताउष्णचरित्रकीर्तिवितवायस्यांबिकानामतःसाकल्पा

७३  
 दधीवा  
 रंगवित्तवत्रेप

१२

मि

परमर्षिरार्यचरितः श्रीपंडितदृपितासोयंकोशिकवंशरक्षणमणिः श्रीतद्विष्णुश्रोः वेदस्मार्त्तमतेनये  
 चसपदेवास्तेकृतीर्द्धते ॥ ॥ मतिर्येषांशास्त्रेप्रकृतिरमणीयाव्यवृहतिः पराशरिंश्लाध्यजगतिजजव  
 शेकातिपयेचिरंचिंततेषामुकरतलस्तस्त्वितिमियादियंआसारणंप्रकृत्यनिद्रिष्यस्पनणिति ॥ इति  
 श्रीपंडितपारित्तकद्वारमहोत्पादिविरुद्धराजीविराजमानस्त्रीमदनपालसुअस्पमीधठर्त्रिवंधेमहाष्टवै  
 ऽनिधनेकर्मविपाकेषष्ठसंरंगः ममांसकलेरुद्रविभ्राना ॥ ॥ अथषोडशः त्रैस्पकरुषयक्रस्यविधि  
 री ॥ अथिधने ॥ ॥ वेदोवेउरुषयक्रस्यविभ्राने ॥ ॥ विविनेपति ॥ अकार्यजपविधिंश्रोत्रैवतदत्तकोकुर्याद्य  
 शोक्तविधिनाप्राडुगः शुद्धमानसः विधिः ॥ ॥ प्रथमोविन्यसेदामेद्वितीयोदक्षिणेकरोहतीयां वामप  
 देवचतुर्थोदक्षिणेतयापंचमीवामजानोतुषष्ठीविदक्षिणेतयासप्तमीवामकंठोतुषष्ठीमदक्षिणेत  
 थानवमीनासिमभेठदशमीहृदयेतया ॥ एकादशींस्केधदेशोद्वादशीं वामबाहुकोत्रयोदशीं दक्षिणेच  
 आस्पदेशोचतुर्दशीं अहोपंचदशीं चैवषोडशीं मृद्धिविन्यसेत्रणध्वन्यसविधिं कृत्वापंचांगानिसमाचरे



श्रुवाहर्णेस्योद्यादिकातिशयः पंचांगकल्पनाः श्रुवाहर्णेस्यमुखमासीदित्याद्याः पंचस्रवः पंचांगान्यासेत्याह  
 तासांश्रुवालयनद्यावापावक्रमयुक्ताः हृदयंशिरःकवचमध्वंवेतिपंचांगानि। श्रुवाहर्णेस्यमुखमासीदित्य  
 उपविष्टा। हृदयायनमत्रतिहृदयोऽध्वंममनसेतिपठित्वाशिरसेष्वेतिशिरशिनास्याश्रुवासीदितिपठित्वा  
 शिरवायेवण्डितिशिखायांसर्पस्यासन्नितिपठित्वाकवचायङ्गमितिकवचायङ्गिनयङ्गमितिपठित्वाश्रुवा  
 यःप्रडित्येषांपतत्रन्यासद्वयंयंकल्पानंतरंकर्त्तव्यं। तद्व्या॥ अमुकदेशेअमुककालेअमुककामनयापु  
 स्रस्रकंजापुंस्त्रेनदोमंविश्वीरधनेवाकरिष्येतिसेकल्प्यैश्वर्यंक्रियासद्वयैविधयनादिवतांछंदस्य  
 पिविदित्वा। जपादिकर्मसमारखेत्रक्षत्रवयवाजपोहोमोवाक्रियेतौतदापिपरमेष्ठारसमाराध्यानपोहोमो  
 कार्यद्वयाः राधनप्रकारोत्तिजयते। आद्ययाः प्राद्वयैवमन्त्राहंप्ररुणाद्यमयाद्वितीयास्याश्रुसनदद्या  
 स्याद्यैववृत्तीयया। चतुर्थ्याद्यैववृत्तयाः पंचम्याः चमनंतया। षष्ठ्याः स्वानंप्रकृतीतसमस्यावस्रमेववाय  
 श्रुपवीतंअष्टम्यानवम्याः प्ररणंतया। दशम्यांगवदानेचएकादश्याचमाल्यकोद्वादश्याधूपमानंस्याज्योदश्या

एस्य

१०४

दा

द्विर्थगतः प्रदक्षिणंठावाजपैक्यस्मिन्निः। यथावाक्तिजपित्वावस्तुवासासैनिवेदयेत्। ४

५३

मर

चदीपकंचतुदृश्यानिवेद्यंलुपंचदश्यानमस्तुतीं। उद्वासनंतुषोडश्याउपसाराशुषोडशा। सनानेवद्वेनिवेद्येवदद्या  
 दासंनिधकंमौदद्यासुरुषस्रकेनयः। पुष्याएषुएवचाश्रुतिंतेनवेसर्वत्रैलोक्यमधराचरांदक्षिणांलुथयाश्रु  
 काणोडशेनप्रदापयेत्। अज्ञादिना। शुक्लपर्थयादक्षिणादीयतेनाषोडशोनयङ्गिनयङ्गमयजंत्रोयनेनदद्या  
 श्रुदेवस्यांपश्चिमेपार्श्वेकुंडंउद्धितमेववाकारयेत्यश्रमज्ञीतुषोडशणंलुद्धितीयया। श्रुतीयया। निमादश्याचवत  
 र्थ्यांलुसमिध्रनोपंचम्यां। संस्कारशरोध्वप्रणंतया। षण्णानलस्यमधेऽलकल्पयेत्समासनप्रसिंतयेत्  
 उदेवोशंकालानलसमप्रलघा। विद्वत्प्रास्यंवाहृशीर्षरकाः। स्यंकरंरक्तलोचनीवाहोद्वयंशिबुदेवंध्यात्वासधमा  
 द्यासिःपंचतिः। अग्निःक्रमेणगंधादिनैवेद्यंतांपंचोपचारप्रजादेवस्याः। उद्दयाः। कुयोदित्याद्याः। ततोर्ध्वंचलुपं  
 चधूपंदीपंनिवेदनं। अलुड्राणततः। कुयोसमस्यादियथाक्रमघासमिधः। प्रलयेसही। उद्दयाः। दक्षिणारिता। त  
 तोदृतेनलुड्दयास्ररुणाचततः। खनाणवंडुत्वाततस्रस्यसमीपोश्रोत्रध्वरेऽग्निंश्रोत्रोडरीकाज्ञानमस्रैवि  
 श्वत्वावना। नमस्रैसुहृषकिरा महापुरुषहृजांनमोद्विरण्यगर्तीयप्रधानाः। व्यक्ररूपिणाः। उंनमोस्र।

मंत्रेण३

तर

वतेवासुदेवाय शुद्धज्ञानस्वभावने॥ देवानां दानवानां च समाव्यमधिदेवतुसा सर्वेषां चरणद्वंद्वं प्रजामि श  
 रणेतत्रा एकं स्वमसिलोकस्य अष्टासंदारकस्यथा अधश्च अत्र मंता चयुणे माया समावृतः संसारसागरं चो  
 रं मन्त्रैकैशसाधनमालमवशाणं प्राप्य निस्तर त्रिमूर्ती लिंगानं तैरुपेन च युधानि नवास्पदं तथा विपुत्रुषाका  
 रोसक्रान्तिवकाशसो नैव किं विपरोक्षं प्रयत्नो सिनकस्य विवनिवकिं च दसिदं तेन च सिद्धो सिकस्य वि  
 श्रुकार्याणां कारणं सर्वेषु संवाक्युत्तमस्य योगिनो परमां सिद्धिं वदेति परमे विद्वान् अहंसीतोस्मि देवेश संसा  
 रे स्मिन्नयावदोपादिमां पुंडरीकाक्षनजानेशरणं परां काले अपि च सर्वेषु दिव्यसत्त्वैश्चायताचारिरेपि गता  
 वापि वदंते मे मदङ्गयां त्वया दकमलादयन्मज्जन्मोत्तरेषु पि निमित्तं कुशलस्याज्ञियेन गच्छामि सद्गतिं वि  
 द्यानेयदिदं प्रायेयदिदं ज्ञानमार्जितं ज्ञानोत्तरेषु पि मे देवमाद्यस्वपरिज्ञयां दुर्गतावपि ज्ञातायां स्वर्गं ति  
 स्मं मतिर्ममायुदिनायै च गौर्विदेतावतास्मि कृती सदी अकामकसुखं वित्रं मम तेषां दयोः स्थितं कां मये  
 देहवत्वं त्वं सर्वज्ञमसुकै वली इत्येव मनया कृत्या सुवादे वदित्ते दिना किं करोस्मि तच्चात्मानं देवाये वनि

१०५

२२ सु

देव्येष्टा ॥ जितंते पुंडरीकाक्षेऽप्यारस्येवती वृत्त्यंतं शोभा ॥ अथ फलविशेषादितकर्मव्यताविशेषः प्रसे  
 साच ॥ ॥ पुत्रुणस्य हरेः सुकृतं च गौर्विदेतावतास्मि कृती सदी अकामकसुखं वित्रं मम तेषां दयोः स्थितं कां मये  
 पो नृस्यं पश्येतात्मानमात्मनि फलानि तुं कोपवासास्यन्मासमाक्षि अत्रैवैश आरण्यनिवेसे नित्यं वपनि मशुषि  
 मुनिवः सिद्धिपवणं काले स्नायादशु समाहितः ॥ ॥ अत्रिर्मंत्राः ॥ इमं प्रियु कस्य स क्रांतिं त्मकां न सिद्धिं  
 वण मिति पुत्रुणस्य क्रांतिं गतानिः समस्तानि त्रिभिः ज्ञानकालपतानिः अग्निमार्जने मधुमर्षणं च यथाशक्ति ईडु  
 यादित्यर्थः ॥ अदित्यसुपतिष्ठे तस्य कृते नानेन नित्यं संभ्राज्याङ्गतिरणेने वदुत्तैवं विज्ञयेद्युषिं अत्र सपिः सुक  
 उष्ट्रयो नारायण एवाते विज्ञयेत् एवं मासे फलाहारं मासमुदकोदरं वदुत्तैवं विज्ञयेद्युषिं अत्र सपिः सुक  
 सुकं जपेत् शक्रश्चेद्वा दशवर्षाणि एवैकते माहादेवो ह्यपतश्चादुत्तैवं विज्ञयेद्युषिं अत्र सपिः सुक  
 इकं जपेत् शक्रश्चेद्वा दशवर्षाणि एवैकते माहादेवो ह्यपतश्चादुत्तैवं विज्ञयेद्युषिं अत्र सपिः सुक  
 इकं जपेत् शक्रश्चेद्वा दशवर्षाणि एवैकते माहादेवो ह्यपतश्चादुत्तैवं विज्ञयेद्युषिं अत्र सपिः सुक

२२

य न

४३

४ सं

कंपीसगवात्रजायतेपुरुषोत्रमभियनयेनचक्रामिनलनेतप्रयत्नःसदा।ससकामसमृद्धस्याकृद्दश्रनस्यकुर्वीत।  
 होमंवाप्यथवाजाप्यसुपहारंमयोचसं।कृद्गीतयेनकामेनतस्मिद्धिप्रपभारयेराजातिश्रेष्ठंमहद्विद्वैत्यज्ञानो  
 केपरीगतिपापेनविप्रमोहस्येनवेत्सर्जनसंशयः॥ अथाःसिधीयतेकर्मसुत्रकामस्यवेत्सवैशुक्तेपदे  
 शुभेवारेसुनक्षत्रेसुगोचरेद्वादश्यांउत्रकामसुचतेकुर्वीतवैश्रवमादेपत्येपवास्यदेकादश्यासुराभ्य  
 योत्राशिषोडशतिःशम्भमंत्रियेवाजनाईनमा।चरुंउरुषस्रक्रेनप्राप्येसुत्रकामया।प्राप्तुयाइसवंबुत्र  
 मविरासंततिसुगममां चरुंउरुषस्रक्रेनेतिस्रष्टो।कविधिनापायसंबुत्रकाममशोहोमसाधनानुप्रत्येकै  
 दंश्रंप्रपश्रत्वापक्रेनचरुंउरुषस्रक्रेनेति एकवचनात्मकलमापिसुक्रमशोहोमसाधनानुप्रत्येकै  
 मृचः।होमेचसंस्याचंसहस्रांएहदश्याणितो।जपःअथयमर्थः॥ ॥ कृष्णेकादश्यासुपक्रम्याःसुनंजपित्वा  
 शुक्लेकादश्यां देपतीउपोष्यद्वादश्याचरुंअपयित्वासहस्राङ्कती।उरुषस्रक्रेति॥ अथाःपराश्रकारे  
 यमेकादश्यामनोजनमादं पत्योपुरुषःसुत्रानितकममाविरोधिनिकालेजपेदिदेसकमेकादश्यांनिरंतर

श्याःसुरुषस्रः

शोर

१०६

धु४

महादश्यांप्रतिपत्तिसत्वापयसानिर्वेषेचसंश्रद्वादश्यादश्याध्वैपुयसानिर्वेषेचसं।एवमितीएकादश्यासु  
 पवासादिकंरुवेत्यर्थः।इत्यांविधिश्चात्राशिःषोडशतिशुर्वैः।कृत्वाजलीशुर्वैःसत्वाभवेनातिःप्रयोजये  
 त्।तासिरितिषोडशतिश्रीः।शिरित्यर्थः॥समित्तोःश्रुत्वाइत्युक्त्यासुनाः।उपस्थानेइताशस्यधा  
 त्वावषुसुदनमा उपस्थानेइताशस्येति।कृत्वातिवाक्यशेषः।अस्युपस्थानेचाःश्रेयैर्मत्रौदविदमितंतः।कुर्या  
 त्यस्रधंवापतः।शुविः।हविशेषमसकृत्वानाशिनारायणंपतितं।सहयित्वाहविःशेषंलघ्वाश्रांसंविशेषज्ञां।हवि  
 शेषंसहयित्वात्पनेनेइताशस्यप्रतिपत्तिकर्मणि।सिद्धे।लघ्वाश्रात्पनेनेतद्योत्पत्तिद्वादश्यामद्दारांश्रपरि  
 त्यागेनपतीहविःशेषमेकलकैजेद्यानथा।उरुषस्रक्रेतिसंविशेषज्ञामिति।ज्ञांवामसीयिनः।स्रयादित्यर्थः।ततः।कृ  
 त्वात्विदेकर्मकर्त्तव्यं।द्विजतर्पणं।द्वितीयोः।निवर्त्तयवाङ्मनविदति।ययासायांसदेतत्कर्मकृतितां।सु  
 त्कासतिसंलवेः।शांसायांनगच्छेत्॥।कियंतकाले॥।यावदोषागर्जनविदति।अनेकसायांसिःसत्रेनदो  
 षोः।न्यसायांसंमपि।यदाश्रमिष्कर्मण्यननुप्रविष्टासायांसुमतीत्यात्।।तदपिकर्मण्येहप्रविष्टा

गा

श्री

जन्त

यः

हकर्त्तर





सत

स्वाम्यरिधयसोमिधः कर्तः दिवाय्यदंतत्ताना असीं मुकं पद्युं ॥ १ ॥ यज्ञे नयज्ञमयज्ञे देवास्त्रानिधर्म  
 णिप्रथमाद्यसंतिहनेकमदिमानः सुचत्रयस्यैसाद्यसिदिदेवा ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

१००

६३

रमयः परायणा ॥ १ ॥ पवित्राणां पवित्र्यो मंगलानां चमंगलां देवतं देवतानां चरतानां योव्ययः पित्ता ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

धातुरुत्तमः॥१॥ अत्रमेयोद्वेषकेशः पयनातोमरप्रभुः विश्वकर्मा मनुष्यसुविष्टः सुविरोक्रवां॥१॥  
 यासुः शाश्वतः कृषोलोदिताः प्रवृत्तः प्रवृत्ताः॥६॥ विष्णु कुपुष्पमपवित्रमेगनेपरे॥२०॥ इजानाः प्राणदः प्राण  
 ज्येष्ठः प्रष्टः प्रजापतिः॥३॥ दिरण्यगते० स्वर्गतीमाध्रवोमधुसुदनाः॥२॥ इश्वरो विक्रमीश्वर्यमिषीवीविक्रमः  
 मः अत्रुत्तमो० दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवात्रा॥२॥ सुरेशः शरणेश्वरमविश्वरेताः प्रजातवः अदः० संवत्स  
 रो व्यालः प्रत्ययः सर्वेश्वरानः॥२॥ अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरभ्युतः॥१००॥ वृषः कपिरमेयात्मा स  
 योगविनिःसृतः॥२॥ अमुद्वेषमनाः सत्यः समात्मासमिनः समः॥१०॥ अमाद्यः दुंडरीकाक्षी वृषकर्मद्विषा  
 तिः॥२॥ रुद्रो नैऋतशिरावसुद्विषयोनिः सुविश्ववाः अमृतः शाश्वतः स्वाश्रयाः॥१०॥ बंसरो होमहातपाः॥२॥  
 सर्वगः सर्वविज्ञा उद्विषकर्मो जनादे० नः वेदेवेदविद्व्यंगो॥२॥ वेदंगो वेदविक्रविः॥२॥ लोकाभ्यदः सु  
 राध्वहीदमाद्यः कृताकृतिः चतुरात्मा चतुर्दशद्वेषः श्रुतुर्देवः॥२॥ चाक्षिणो जने सोक्रासहि  
 कर्जो गदादिचा अनघोस्त्रिजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्बसः॥२॥ उपेद्रो वामनः प्राणुरमोघः सुविद्वर्जितः

१०२

अतींद्रसंयदः सगोष्ठतात्मा॥१०॥ नियमोयमः॥३०॥ वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरदामाध्रवोमः अतींद्रः  
 महामायो० महोत्साहो महाबलः॥३॥ महाबुद्धिर्महावीर्यमिहाशक्तिर्महाधरतिः अनिर्द्वेषपुत्रुः श्रीमा  
 नमेयात्मा महादौद्रिष्टकः॥३॥ महेश्रसीमहीचत्रीः श्रीनिवासः सतांगतिः अनिरुद्धः सुरानेदंगो विंदो  
 गोविंदोपतिः॥३॥ मरीचिर्दमनोर्द॥१०॥ संः सुपेणीसुजगोत्रमः॥३॥ दिरण्यनासः सुतपाः पयनासः प्रजापतिः॥३॥  
 अमृतः० सुद्वंद्विकेदः संधता संध्रिमांस्त्रिणः अजो दुर्मर्षणः शास्त्राविक्रतात्मा सुरारिहाभ्युत्तमः  
 अमृतः० संयसत्यपराक्रमः॥३॥ निमिषो निमिषां गीवावस्पतिरुदारधीः॥३॥ अयणीयोमणीः श्रीमा०  
 न्यायोनेता समीरणः स दस्रुद्विश्रान्तासहस्राक्षः सहस्रपात्रः॥३॥ आवर्तेनो निवृत्तात्मा संघतः० संघ  
 मर्दनः अहः संवर्तको वक्रिर्निलो धरणीधरः॥३॥ सुप्रसादः प्रमन्नात्मा विश्वघृष्टिषु विसुः॥२॥ संकृ  
 संकृतिः साधुर्जैः नारायणो नरः॥३॥ असंख्येयो प्रमेयात्मा विशिष्टः खिष्टकः० लुविः सिद्धाथः सिद्धसं  
 ल्याः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥३॥ वृषाही वृषणो विसुष्टेषपद्मादकोदरः० वद्वेनो वद्वेमानश्च विक्रः अति

६ती

सागरा॥५१॥ सुब्रजोद्धरेगोवामीमदेंद्रोवसुदोवसु॥२०॥ नैकरूपोवृहद्भुपाःत्रिविधियःप्रकाशनः॥५२॥ ईत  
 स्त्रेजोद्विधरःप्रकाशात्माप्रतापवीनाःसुहृत्पुत्राशरोमंत्रः२००॥ अंदां सुहृत्करकृतिः॥५३॥ अमृतंशुद्धवो  
 सासुःशशविंदुःसुरेश्वरः॥ औषधंजगतेःसेतुःसत्यधर्मपराक्रमः॥५४॥ तत्तमप्रवनाथः००॥ पवनःपाव  
 नोनलः॥ कामहाकामहकांतःकामीकामप्रदःप्रभुः॥५५॥ युगादिहृत्००॥ दृगावर्तनिकमायोमदास्वना॥  
 अहर्षोव्यक्ररूपश्चसदसृजिदिनंतनिव॥५६॥ इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्ट३०॥ शिष्टीननुष्ठावणः॥ क्रोधहा  
 क्रोधकृत्वोविश्वबाह्वर्माह॥ धरुः॥५७॥ अच्युतःप्रथितःप्राणः३२०॥ प्राणदोवासवावृत्तः॥ अपनिधिरधिष्ठा  
 नाप्रममन्त्रप्रतिष्ठिता॥५८॥ स्कंधःस्कंधधरोधुर्योवरदोवसुवाहनः॥३३०॥ वासुदेवोवृहद्भुतःशदिदेवः  
 रंहरः॥५९॥ अशोकःप्राणःप्राणःशूरः३३०॥ शोरीजनेश्वरः॥ अचकलःसेतोक्त्रःपद्मीपद्मनिसेहणः॥५०॥  
 यनाशोरविदाहःपद्मगर्भशरीररत्नः॥३५०॥ महद्द्विदोवृदात्तामहाज्ञागर्भजः॥५१॥ सैत्रुलःशरतोती  
 मसम्ययज्ञोदविहरिः॥३६०॥ सर्वलक्षणलक्षणोपलक्ष्मीवीसमितिजयः॥५२॥ विहरोरोहिणोमार्गेदितुदमी

३१

३२

११०

दरसहःमदीधरो३००॥ महासमीवेगवानमितासेना॥५३॥ उद्भवःशोत्रणोदेवःश्रीगर्भःपरमेश्वरःकरणकार  
 णं३००॥ कर्वाविकर्वागुहः॥५४॥ व्यवसायोव्यवहानःसेखानःखानदोभवः॥ परह्रि३००॥ परमःसुख  
 सुष्टःपुष्टःशुभेक्षणः॥५५॥ रामोविरामोविराजामार्गिनियोनयोन्मः॥५६०॥ वारःशक्तिमतांश्रेष्ठाधर्मोधर्मवि  
 त्तमः॥५६०॥ वैकुंठःशुरुषःप्राणःप्राणहःप्रणवःशुभुः॥५७०॥ दिरण्यगर्भःशत्रुघ्नोव्याघ्रोव्याघ्रधरोः॥५८॥ ज  
 तुःसुदर्शनःकालःपरमेश्वरःपरियहः॥५९०॥ नृपमेवत्सरोदज्ञोविश्रामोविश्वदक्षिणः॥५९०॥ विशारःशुभवरःस्थाप  
 यमाणोबीजमय्योअथो॥६००॥ नश्रीमहाकोशोमहासोगोमहाधनः॥५९०॥ अनिर्घिसःसुविष्टोत्तुहर्मसुपे  
 महामखानक्षत्रनेमि॥६००॥ नक्षत्रीहामःक्षामःसमीहनः॥६००॥ यज्ञःश्रयोमहेज्जप्यक्रतुःसत्रेसतागतिः॥६१०॥  
 सर्वदर्शीविभुक्तात्मासर्वज्ञोज्ञानसुत्रमया॥६२॥ सुव्रतःसुमुखःसुहृत्सुघोषःसुषटःसुकेशः॥६३०॥ मनोहरो  
 जितक्रोधोवीरबाहुर्धियारणः॥६४॥ स्वापनःस्वक्सोव्यापीनैकात्मानैककर्मकेशवत्सरो॥६५०॥ वत्सलोव  
 वत्सीरत्नगर्भोधनेश्वरः॥६६॥ इर्मर्कैःइर्मर्कैःइर्मर्कैःसदसहरमशरी॥६७०॥ अविज्ञातासहस्रांशुर्बिभ्रत

शुप

६३

कृतज्ञानः॥६४॥गन्धिनेमिःसत्त्वःसिंहोत्तमदेश्वरः॥आदिदेवो५००महाइन्द्रोदेवेशोदेवस्तदुक्तः  
 उन्नरोगोपतिर्गोप्राज्ञानगम्पत्रातनः॥शरीरीरुत्तल्लोका५००कपीद्रोस्त्ररिदक्षिणः॥६६॥सोमपोष्ट  
 तपःसोमःपुरुजिष्ठरुषोन्नमःविनयोनेयःसत्यसंधो५१०दोसोहःसत्यतापतिः॥६७॥जीविविनयितास  
 दीमुकुंदीमितविक्रमःअंलोनिधिरनेतात्तमहोदधिशयो५२०तकः॥६८॥अज्ञोमहाहःखानाव्यजिता  
 मित्रःप्रमोदनः॥आनेदोनेदनेनेदःसत्यधर्मस्विक्रमः॥५०॥६९॥महर्षिकपिलाचार्यःकृतज्ञोमेदिनीपतिःवि  
 पदस्त्रिदशाध्वोमहाशृंगःकृतांतकृशा॥७०॥महावराहो गोविदःसुषेणः५४०कनकंगादीयुहोगरीरागह  
 नोयमश्चक्रगदाधरः॥७१॥वेधास्त्रागोजितःकृष्णो५५०दृढःसंकर्षणोऽनुतभवरुणोवारुणोद्वहःखड्कराहो  
 महामर्नः॥७२॥शासगवाचनगवेदानंदी५६०वनमालीहलायुधः॥आदित्योऽपोतिरादित्यःसद्विष्णुर्गतिस्  
 त्तमः॥७३॥असुधखाःखंपरसुधीसणोद्विणःप्रदः५७०दिवस्यक्सर्वदृश्यासोवाचस्पतिरयोनिजः॥५४॥वि  
 सामामगःसामनिर्वाणोलेपनंलिषकः॥५८०॥संन्यासःकृष्णमःश्रीतोनिष्ठःश्रीतिपरायणः॥७५॥असुलंगः

१११

त्तिदःस्रष्टाकुमुदा५९०कुवलेत्रायःगोहिनीगोपतिर्गोप्राज्ञानसाहोदृष्टयः॥७६॥अनिवर्त्रीनिष्ठःप्रात्मासंदेश  
 हेमकृच्छिवः॥६०॥श्रीवत्सवहाश्रीवासःश्रीपतिःश्रीमतांवरः॥७१॥श्रीदःश्रीशःश्रीनिवासःश्रीनिधिःश्रीवि  
 वनःश्रीधरः६२०श्रीकरःश्रेयःश्रीमारलोकत्रयाश्रेयः॥७०॥स्वज्ञःशृंगःसदानंदोनेद्विषोतिर्गोश्वरःविनिताव  
 ६२०विश्वेयात्मासकीर्तिस्त्रिचसंशयः॥७२०उदीर्णःसर्वतःअदुरनीशःशाश्वतःश्विरःनरशयोत्तणणोत्तदिद  
 विशोकःशोकनाशनः॥७०॥अर्चिःमास्त्रिभुवनर्चितःकुंभोविशुद्धात्माविशोधनः॥अनिरुद्धोऽप्रतिरथःअ  
 प्र्यस्रोद्धममितविक्रमः॥७१॥कालनेमिनिहावीरश्वरःश्रीरिजनेश्वरः॥विलोकाम्बिलोकेशःकेशवःकेशि  
 दहृरिः॥७२॥६५०कामदेवःकामपालःकामीकांतःकृतागमः॥अनिर्द्वेषवडर्विभुशीरोनेतोधर्मजयः॥७३॥६६०  
 ब्रह्मणोब्रह्मकृष्णोब्रह्मब्रह्मविबर्द्धनःब्रह्मविद्ब्रह्मणोब्रह्मीब्रह्मज्ञोब्राह्मणःप्रियः॥७४॥६७०महाक्रमो  
 मधःकम्भोमहातेजामाहोरगःमदाकडुर्महायज्ञामहायज्ञोमहादविः॥७५॥स्रवस्त्रवप्रियः६००होत्रसु  
 तिःश्रीर्हरणःप्रियःहर्यःश्रयितास्रवःपुण्यकीर्तिरनामयः॥७६॥मनोजवहःश्रीर्यकरोवसुरेतावसुप्रिय



तिगःसहस्रद्विंशतिःसर्वरीकरः॥१०॥अक्षरःपेशलोदज्ञोदक्षिणःश्चर्मिणांवरःविद्वन्मो॥३०॥वीत  
 स्यःखण्डप्रवणकीर्त्तनः॥११॥उर्वरीणोदुष्प्रतिहाखण्डोदुष्प्रननाशनःवीरहरःक्षणःशोतोजीवन  
 पर्यवेच्छितः॥१२॥अनंतस्वरूपः॥१३॥नैतश्रीर्जितमस्तुतेयापदाःचतुरस्रीगसीरात्माविदिशोव्यादिशोदि  
 शः॥१४॥अनादिचेष्टेवलक्ष्मीःसुवीरो॥१५॥रुचिरोगदीजननोजनजन्मादिलोमोलीमपराक्रमः॥१६॥  
 आधारनिलयोधाताखण्डहासःप्रजाकरःऊर्ध्वगस्तथाचारःप्राणदःप्रणवःप्रणः॥१७॥प्रमाण  
 णिनिलयः॥१८॥प्राणधृक्प्राणजीवनः॥तत्त्वतत्त्वविदेकात्माजनमस्तुर्जराः॥१९॥खलुवःस्वस्व  
 रुस्वारःसविताप्रतिपितामहः॥२०॥यज्ञोयज्ञपतिर्यज्ञयज्ञोगोयज्ञवाहनः॥२१॥यज्ञस्तद्यज्ञकथ  
 ज्ञीयज्ञस्तद्यज्ञसाधनः॥२२॥यज्ञोतद्यज्ञयद्यमर्थेनमन्नादावचः॥२३॥आत्मयोनिःस्वयंजातो  
 वैशानःसामगायनःदेवकीर्त्तनःस्वष्टा॥२४॥द्वितीयाःपापनाशनः॥२५॥शंखचन्द्रकीर्त्तकीशाङ्गे  
 ध्वजागदाधरःरथोगपालिरज्ञोत्पःसर्वप्रहरणाद्युधाः॥२६॥२७॥सर्वप्रहरणाद्युधर्त्तनमः॥२८

११३

तीदेकीर्त्तनीयस्यकेरावस्यमहात्मनःनामंसहस्रंदिव्यागामशेषेणःप्रकीर्त्तितम्॥२९॥यद्दंष्ट्रप्रयात्रि  
 संयश्चापिपरिकीर्त्तयेत्तनाःस्तुतेप्राप्तुंयत्किंचित्सोमृजेवेदेमानवः॥३०॥वेदोतगोत्राहणःस्याह्वयि  
 वित्तयत्तवैश्वेषोधनसमृद्धस्याह्वयिस्वमवाप्तुयात्॥३१॥धर्माथीप्राप्तुयाद्धर्ममर्थीवार्थमाप्तुया  
 त्कामानवाप्तुयात्कामीत्यजार्थीप्राप्तुयात्पुत्री॥३२॥तस्मिन्मन्यःसदोव्यायश्चुविस्रजतमानसोसहस्रं  
 वासुदेवस्यनाम्नामेतस्यकीर्त्तयेत्॥३३॥यशःप्राप्नोतिविपुलंज्ञातिःप्राश्नयमेवच॥अत्रलांश्रियमानोति  
 श्रेयश्चाप्नोत्यनुत्तमम्॥३४॥ननयंकविद्योतिवीर्येतेजश्चवेदित्तिनवयरोगोद्यतिमात्रबलरूपयुगाहितः  
 ॥३५॥रोगात्रोमुच्यतेरोगाद्दृष्टोयंमुच्यतेष्वधनाशतयाद्दन्तुयेतेकीर्त्तयुमुच्येदापन्नप्रापदः॥३६॥दुर्गाण  
 तितरव्याशुयुरुषःपुरुषोत्तमस्यस्तुवन्नामसदशेणनित्यंलक्षिसमचितः॥३७॥वासुदेवाश्रयोमर्षीवासुदे  
 वपरायणः॥सर्वपापविशुद्धात्मायातिव्रह्मासनातनो॥३८॥नवासुदेवसकानामशुनेविद्यतेकश्चिन्न  
 नमस्तुजरायाधिनयंनान्युपजायते॥३९॥इमंस्वमधीयानःश्रद्धानक्रिसमचित्तः॥सुज्येत्सुखकौति  
 ता हो



११४

श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिनि॥१२३॥ क्रोधेन च मात्सर्येण लोभेनोनाऽश्रु सामतिः सर्वं तिकृत उपर्णाणीं चक्रान्  
 उरुपुत्रमे॥१२३॥ द्योः समं वं द्राः क्लृप्तं च त्रसं द शो चर्म ही दधिः वासुदेवस्य कथं येष विधतानि महा  
 त्मनः॥१२४॥ सुराः सुरगंधर्वा यदो उरगराक्षसां जगद्गणेशं तदेकलस्य स चराचरः॥१२५॥ इन्द्रियाणि  
 मनो बुद्धिः सर्वं ते जीव लं धृति वासुदेवात्मकान्याहुः॥ १२६॥ सर्वा गमर्नमाचारः प्र  
 थमं परिकल्पयेत् आचार प्रसवी धर्मा धर्मस्य प्रसूतस्य सः॥१२७॥ अणुयः पितरो देवामहा चतानि  
 धृतवः जंगमा जंगमं वेदं जगन्नारायणो ज्ञेयः॥ १२८॥ योगज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च वि  
 द्याः शास्त्राणि विद्याः न मे तत्सर्वं जना र्दनया॥ १२९॥ को विकर्म दहते प्रथमं न्ये न केशः प्रीति का च  
 व्याप्य च तत्मानुं के विश्वं गुणै व्ययः॥१३०॥ इमं स्वतं गतवतो विलोषी सेनकीर्ति तम्रापवेद्यः ६६ उरु  
 प्रः श्रेयः ६६ सुखानि च॥१३१॥ विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रथममयम्या येन जति उक्तरा होत तैर्यो परा  
 सवं॥१३२॥ ॥ अहं उवाच ॥ पद्मपत्र विशालाक्षपद्मनाभपुरोत्रमक्षक्रानामभुरक्रानोत्रातास्वजनानां

३  
१२४

हृताः तिर

देना ॥ श्रीसगवाचुवाच ॥ योमानामसदक्षेणघ्नो तुमिहसिंधोऽप्यसौ दमेकेनश्लोकेनसुतएवने  
 शया॥१३४॥ नमोस्वन्तायसदस्यै त्रयेसदस्यदाहासिरोरुवाहवोसदस्यनामैषुरुपायशाश्वतेस  
 दस्यकोटीसुगंधारिणेनमः॥१३५॥ योनरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये द्विकालमेककालं वा ज्वरं सर्वं  
 व्यपोहति॥१३६॥ दहते रिवैषेसस्यसोम्याः सर्वसदायदाः विलीयंते च पापानि स्रवेष्टस्मिन्प्रकीर्ति  
 १३७॥ येनाध्यातः सुतोयेनयेनायं पठितस्रवः॥ दत्तानिसर्वदानानिसुराः सर्वसमर्चिताः॥१३८॥ इदलोकेप  
 रं वापिनसयं विद्यते क्वचिन्नानैसहसं यो धीतेहादस्योममसंनिधौ॥ आश्रुसंनिधौ पार्थकृत्वामनसि  
 केशवंपठेन्नामसहस्रं मे गवांकोटिकलं लतेत्वा॥१३९॥ शिवालयेपठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः॥ नरो गु  
 क्रिमवानोति चक्रपाणोर्वचोयथा॥१४०॥ ब्रह्मदस्यादिपापानिकामाचारकृतान्यपि विलसं योति स  
 र्वाणि अथपापेषुकाकथा॥१४१॥ इति श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तं॥ ॥ ठ ॥ अथ ६५ पामा  
 र्जनस्तोत्रं॥ श्रीदास्य उवाच ॥ संगवान्याणि न सर्वे विषरोगाहृपदवेः दुष्पदोपघाते श्रसव

१५

३४

५६

लघुपट्टता ॥१॥ आचारिककृत्वात्सिस्पर्शरोगैश्चदारुणैः सदासंपाद्यमाना सुतिष्ठति मुनि सत्रमा ॥  
 येन कर्मविपाकेन विषरोगादपद्रवाः न सवति नृणां तन्मैयथा वदुःकमर्हसि ॥२॥ ॥ उलस्य उवाच ॥  
 त्रतोपवासेयै विष्णुर्नान्यजन्मनि तोषितं तन्नरा मुनिशार्दूलयद्दरोगादि सागिनः ॥३॥ ॥ ये निमित्त  
 त्यक्वां विष्णुर्वदेव नमस्कृतम्रा विषद्वारदाणां ने मनुष्यादां सागिनः ॥४॥ ॥ आरोग्यपरमो ह्यहं  
 मनसा यद्यमिच्छति तन्नदा ॥५॥ ॥ आति संदिग्धं पश्चात्ततोऽस्तत्त्वधनाः प्रीत्या नोति नव्याधिना  
 विषप्रदं बंधनां कृत्वा स्पृष्टं तं वापि तोषितं मधुसूदनो ॥६॥ ॥ सर्वदुःखशमस्य सोम्यास्यस्यस्यहादि  
 वानाम ॥७॥ ॥ प्यध्वो यो सौ तुष्टो यस्य जनाई नः ॥८॥ ॥ नायः समः सर्वदुःखे यथात्मनितथा परा उपवासादि न  
 तेन तोष्यमे मधुसूदन ॥९॥ ॥ तोषिते तत्र जायते नराः दुर्षमनीरथाः ॥१०॥ ॥ अरोगाः सुखिनो तोगाः तोका  
 रो मुनि सत्रमा ॥११॥ ॥ न तेष्वां सैव नैव स्पृशरोगाः ॥१२॥ ॥ सिचारकं यद्दरोगादिकं वापि पावकार्यं न जायते  
 ॥१३॥ ॥ अवाहानि कृत्वा स्पृशकादीन्वायुधनितशरद्वंति सकलापद्रोयेन विष्करुपासितः ॥१४॥ ॥

११५

उवाच ३

१२

॥ उवाच ॥ अनाराधितगोविदायेन राहुः खसागिनः तेषां ॥ दुःखालिखतानां यत्कवेयं यैदेह  
 सि ॥१॥ ॥ पशुभिः सर्वदुःखं वासुदेवं महा मुनोऽसमदृष्टि रीशेषां तन्मै ब्रह्मवशेषतः ॥२॥ ॥ उलस्य  
 उवाच ॥ ॥ उह्वात्सखलाग्राहकशुद्धी रोगिणां मार्जयेत्सर्वं ग्राहकशायै दास्यशांतिं ॥३॥ ॥  
 ॥ रोगप्रदविषात्राणां कृत्वा च्छांतिमिमांशुनाम्रा विष्णुसक्तो विशेषेण सुखिसूक्तमानसः ॥४॥ ॥  
 देनारसिद्धं च वामं विष्णुमेव च ॥ ध्यात्वा त्वत्वासादा विष्णुर्नामान्यं गेषु विन्यसेत् ॥५॥ ॥  
 उवाच ॥ राजसुदक्षिणे प्रद्युम्नः पश्चिमेः पातु वासुदेवं तथो नरे ॥६॥ ॥ ॥ शान्तरत्नको विष्कराभेयो तु न  
 नाई नः ॥ नैः कस्याप्यनान सुवायव्यं मधुसूदन ॥७॥ ॥ ॥ उद्दगो वृद्धो नैवो धरायं तु विविक्रमः ॥ एतासो  
 दशदिश्यस्य सर्वतः पातु केशव ॥८॥ ॥ अंगुष्ठाये तु गोविदे तज्जन्त्या तु मदीधरा ॥ मध्यमायां ह्यणकेश  
 मनाः मिक्यां विविक्रमः ॥९॥ ॥ कनिष्ठा येन्यसे हिं कर मध्ये तु माधवां शिखायां केशव न्यस्य स्र्जिनार  
 यणं न्यसेत् ॥१०॥ ॥ माधवं तु ललाटे तु गोविदे तु स्र्जितं चतुर्भ्यो न्यसेद्विष्णुं प्रवणं मधुसूदा



वर

नां॥३॥ विविक्तमंकपोलेनुवामनंकर्षमूलयोः॥ दामोदरंदंतपंक्त्योर्धाराहंविबुकेतया॥३॥ जिह्वा  
 यावासुदेवैककृच्छितंगरुउध्वजां हृणीकेशसुत्ररोषेपदानातेऽधरेतथाविकुंठकं वमधेवत्वनेतं  
 नाशिकोपरिदक्षिणेतुनेविप्रविन्यसेसुरुषोत्रमम॥३॥ वामकेतुमहायोगं राधवंहदिविन्य  
 सेशपीतवासंसर्वतनोहरिणास्यं तु विन्यसेत्॥३॥ करे तु दक्षिणे विप्रतत संकर्षणं न्यसेत् व  
 मेरिखुदरिं विद्याकटिमधेजनाई नमः॥३॥ एते द्विति धरं विद्यादसुतर्कचमूलयोः॥ वल्लुले  
 माधवंतुकद्वयोयगिशाथिने॥३॥ स्वयंभुवं मध्ये कर्त्तव्येवगदाधरां चक्रायुर्वेना नु मध्ये जघ  
 योरच्युततथा॥३॥ गुल्फयोर्नारसिंदुपाददृष्टे मितौ जसौ॥ अंगुल्यांश्च धरं न्यस्पपं कनास्यद्वि  
 धियुरामरूपेयुडाकेशं कृष्णरक्तास्त्रिमज्जसुं नभ्येयुमाधवं चैव न्यसेत्पादतलेऽप्युतम॥३॥ मतो  
 बुद्धोरहंकारे विन्यसेत्॥ जनाई नमः एवं न्यासविधिं कृत्वा साक्षात् नारायणोत्तवेत्॥३॥ तनुर्विच्छ  
 मयीतस्ययावकिं विन्नसापतो एवं न्यासविधिं कृत्वा यकार्यशुतद्विजतां॥३॥ विप्रवेन तु कर्त्तव्यं

खं४

३६

वे२

ति॥ विष्णुलोकं सगच्छ२

रू४

ईसिद्धप्रदायिनः॥ घनाकाले तु देवस्त्वानकाले च मेव च॥३॥ श्लोमाः संसेच कर्त्तव्यं त्रिसंघं च विनियम्य असंयसं  
 रतेत्येविष्णुलोकं सगच्छं त्रिमः॥३॥ नमः परमार्थो येत्यपमाज्ञेन मे त्रस्पुलस्वमा विः श्रीनारसिंदो देवता  
 रासुकस्पतिबीजोऽत्रुत्तानंतगोविंदेशक्तिः॥ तत्र हाटककेशी तैतिकीलकांसमसापतिलिखितार्थे विनिय  
 गः॥३॥ नमोऽपरमार्थो यडरुपायमहात्मनोऽत्रुत्तवृद्धरूपायमापिनेपरमात्मने॥३॥ विकल्पपायशुद्धाय ध्या  
 र्थं पापहराय चानमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि यत्र त्स्मिद्वरुमेव च॥३॥ चारा देनरसिंहाय वामनाय महात्मनो नमस्क  
 र्त्वा प्रवक्ष्यामि यत्र त्स्मिद्वरुमेव च॥३॥ वरा देनरसिंहे तु वामने विष्णुमेव चानमः कृत्वा प्रवक्ष्यामि यत्र त्स्मिद्व  
 रुमेव च॥३॥ त्रिविक्रमाय रामाय वैकुण्ठाय नाराय चानमस्कृत्वा प्रवक्ष्यामि यत्र त्स्मिद्वरुमेव च॥३॥ पवरा देनरा  
 सिंदेशवामने शत्रिविक्रमः॥ दययीवेशशशैवा हृषीकेशहराः शुतम॥३॥ अपराजितचक्राद्यैव क्रैतुं परमाशु  
 चोऽत्रुत्तं विंडिताऽनुचा वैस्वसर्वे दुष्टहरोत्तवेत्॥३॥ हराः मुकस्पदुरितंडः स्फुटंडरुपापित्तमः श्रुतुवंसर्विन  
 प्रदंडुरिष्ठस्यं यत्पलम॥३॥ परावधानसहितैः प्रमुक्तेवाः जिचारकम्रां गरस्पज्ञमहारोगं प्रयोगं जरयादरम॥

व१

लि: ३

रिपुसंघ

उगो

॥१॥ वरयेवा सुदेवाय नमस्कृत्वा यथा शक्तिः ॥ नमः उक्तरनेत्रय केशवायादिवक्रिणो ॥ नमः कमलकिंनरूप  
 तं निर्मलवासो महा ॥ द्वासंदाय सुचक्राय चक्रिणो ॥ १॥ दंष्ट्रो धृताक्षिति हृतेवयी सुत्रिमते नमः ॥ महा  
 यज्ञवराहाय शेषतोऽमुतो गिने ॥ इत प्रदाटकै शोत्रं ब्रह्म लया वकलोचन ॥ वक्राऽधिपे कनभस्य र्वादिम  
 सिद्धमो सुतो ॥ १॥ काश्या पायादि कृष्णाय अगपसुः साममृतेयो ॥ तुस्य वामनरूपाय क्रमते गानमोनमः  
 ॥ १॥ वराहोऽशेष दुष्टानि सवै पापहराय वै ॥ महं महं महादे इमं महं चतुर्भुजं ॥ १॥ नारसिंह करालाङ्घ्र  
 वयां नानलोद्गल ॥ सतनं जनिनादे नंदुष्टात्रया ॥ धिनाशन ॥ १॥ अगपसुः सामगतांतिः ॥ वीशिः वीमनरूप  
 धृक्काधशमं सवेदुः स्वानिनयत्सजना ॥ देन ॥ १॥ ऐकादिकं द्वादिकं चतया त्रिद्विसद्वर्णा चतुर्थिकृतया  
 सुप्रंतये वसंततद्गर ॥ १॥ दोषो ह्ये सन्निपातोऽयं चये वागं तु कद्गरमं शमं नया सुगोविंदं हृदो ह्ये स्पवेदना  
 नेत्रदुःखं शिरो दुःखं दुःखं चोदरसेन वै ॥ अन्निस्वास्मतिश्चा र्सेपरितापं सवेपथुं ॥ १॥ युद्धाणां धिरो गंश्चा कृ  
 रोगां सथा ह्यथा चित्रादीनां सयी ॥ १॥ गं शं तवर्द्धि स्थिता ॥ १॥ कामलादी सथारोगान्यमेदाश्चा ति

सप

दण

११७

स्त्रि

उंउ स्तो राग

चप

न

दारुणांशुगंदराऽतिसारांश्च सुखरोगं सवल्गुलि ॥ १॥ अश्वरी यत्र कृत्वांश्च रोगान्याश्च दारुणांश्च ये वात प्रवो  
 रोगाये च पित्तसमुद्भवाः ॥ १॥ कफोद्भवाश्च ये रोगाये वा ये सान्निपातिकाः ॥ आगतवश्च ये रोगाल्लताविस्फोटका  
 दयः ॥ १॥ ते स वै प्रशमं यानुवा सुदेवाऽपमार्जितां विलयं यानुते स वै विष्टो सुवर्णेन तु ॥ १॥ अयं गच्छं तु वा रो  
 षास्त्रे चक्रातिहता हरेण ॥ प्रसुता नंत्रगोविंदनामोच्चारणै सि नै ॥ १॥ नशंप तु सकला रोगां सयं सयं  
 दाम्पदं ॥ सयं सयं सुनः सयं सुधमनुजं ॥ १॥ वेदः शास्त्रापरं नास्ति न देवं ॥ केशवास्परं स्थावरं लंगमं  
 वापि कृत्विमे वापियद्विष ॥ १॥ दं त्रोद्भवेन खोद्भे तं आकारं प्रसवं विषां लतादिप्रसवेयं च विषमस्यं  
 तद्दुःखदम् ॥ १॥ शमं नया सुतत्स वै कीर्तितो स्पजना देनं ॥ अहा प्रेतय हांश्चैव तथा वैडा किनीय हां  
 वेतालांश्च पिशाचांश्च गंधबी रयक्षराक्षसांश्च शकु नोष्ठतनास्यो च तथा वैनायक यहाश ॥ १॥ मुखं मंडि  
 सथा र्शरं खतीं हृद्वरेवतीं हृद्विकार्या यदीश्री यो सथामा त्रयहानपि ॥ १॥ बालस्युन्निष्ठीव रिंदं  
 हृबालयहानिमांश्च हृद्वानं ये यहाः के चिरये वा बालयहां क्विश् ॥ १॥ नरसिंहस्य ते हृद्वनादय

मंडलिकान् २ पा

घांशु

येवापियोवनीसटाकरालवदनोनरसिंहोमहारवः॥३॥अहानशेषान्निःशेषाश्चकरोतुजगतोहिः  
 नरसिंहमहासिंहह्यालामलोहलानना॥अथअहानशेषान्निःशेषादस्वदाशिलोचनायेगायेम  
 होत्यातायद्विषयेमर्हयदा॥३॥यानिचक्ररत्नानिअहपीडाश्चक्राफणाःशस्त्रतेषुयोरोणाङ्ग  
 लागदसिकादयः॥३॥तानिसर्वाणिसर्वात्मापरमाज्ञानाहनेन॥किंविद्मसमाश्रयवा॥सुदेवान  
 मुनाशय॥३॥दिखासुदशनंचक्रंक्रानामालाःतिनीपणमःसर्वदुष्टप्रशमनेकुरुदेववराश्रुता  
 ३॥सुदेवानमदाह्यालच्छिंदच्छिंदश्मारयासर्वदुष्टानिरहोसिद्धपयारिबिनीपणप्रायोप्रतीचा  
 दिशिचदक्षिणोत्तरयोस्तथारहोकरोतुसर्वात्मानरसिंहःसुगजितेः॥सुमत्ररिहोचतथापार्श्वतः  
 षष्ठोयतःरहोकरोतुसगवात्रबद्धरूपीजनाहनेन॥अथयाविष्णुजगत्सर्वेसदेवासुरमानवै॥ते  
 नसत्येनसकलेदुष्टमस्यप्रशाम्यतु॥३॥परमात्मायथाविष्णुर्ध्वदक्षिणपिगीयते॥तेनसत्येनसकले  
 यन्मयाक्तंसेथासुतत्र॥३॥पशोतिरसुशिवंवासुप्रणस्पेक्ष्यसंचय॥वासुदेवशरिरिहैकुरोःसंमाजि

११०

२ यथाविष्णोस्मृते सद्यःसंहयंयतिपातकीतेनसत्येनसकलेदुष्टमस्यप्रशाम्यतु। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२।

५६

तीमया॥३॥अपामाहर्तुगोविदोनरोनारायणस्तथासिमासुसर्वदुष्टानांशमेपुनाहरे॥३॥शात्राःसमसा  
 रोगासुयदाःसर्वविषाणिचाहतानिप्रशमयोतुसेसुतेमधुसूदने॥३॥यतास्वमसुरोगेषुसुतयहसकेश  
 वाअपामार्जनकरासर्वविष्णुनामाःलिमंत्रितो॥३॥एतेकुराविष्णुशरीरसंसवाजनाहनेनोहंखयमेवचा  
 गतः॥इतमयादुष्टमत्रोपमसुखस्थोऽनवलेपयथावैरोदरेः॥५॥अतिरसुशिवंवासुदुष्टमस्यप्रशा  
 म्यतुयदस्यदुरितंकिंचित्तत्सर्वलवनार्षवो॥३॥अतिरसुशिवंवासुदुष्टमस्यप्रशाम्यतुयदस्य  
 दुरितंकिंचित्तत्सर्वलवनार्षवो॥३॥अतिरसुशिवंवासुदुष्टमस्यप्रशाम्यतुयदस्यदुरितंकिंचित्तत्सर्व  
 गादिपीडासुजंतुनाहितमिहता॥विष्णुसक्रेनकर्तव्यमपामार्जनकरंपरम॥अनेनसर्वदुःखानिप्र  
 शमंयादुसंशयांसर्वरतादितार्थायकुुर्यात्समात्मदेवदि॥३॥अथयथाश्रितंसमस्य॥३॥अथ  
 कुरुदयसोत्रं॥३॥अस्यांस्त्रात्रस्यसंकर्षणत्राणिःअर्धेरेरेपुत्रगायत्रीवयथायोगंरुदःश्रीविष्णुःपर  
 मात्मादेवताअतिलपितार्थविनियोगः॥३॥संकर्षणत्रवाच॥३॥समायतः॥३॥विष्णुष्टतःश्रापिके

११

५

१३

रसु-

शत्रुगोविन्दो दक्षिणे पार्श्वे वामे च मधुसूदनः ॥ उपरिष्ठात्तु वैकुण्ठे वाराहः पृथिवीतलात्प्रवाहरदिशो  
 यस्तु स्यात्सुसर्वा सुमाधवः ॥ १॥ तत्र तं क्षिप्रतो वापि जायतः स्वपितृपि वानरसिंहकृतानुनिर्वाहसुदेव  
 मयोद्यत् ॥ ३॥ अथ कौंस्पयोनिवदंति व्यक्तं देहं दीर्घमायुर्गतिं वा ॥ वल्लिवकुं चंद्रस्यैचिनेत्रोदिरा  
 श्रोत्रे प्राणमंजुश्रवाद्यं ॥ ४॥ वाचं वेदा हृदयं नसश्चापश्चिपादौ तारकाभिरूपं ॥ सांगोपांगान्यविदेक  
 ताश्च विद्यासुपुण्ड्रितया समुद्रोत्तदेव देवेशरंणप्रजानां ॥ यज्ञात्मकं सर्वलोकप्रतिघ्नं ॥ अजं वरेण  
 वरदं वरिष्ठं ब्रह्माण्डीशं पुण्ड्रं नमस्ते ॥ ६॥ आद्यं पुरुषमीशानं पुंरुद्रं तं पुरुषुत्तमं ॥ त्रिमिकाहरं ब्रह्मव्य  
 कायकं सनातनम् ॥ ७॥ महासारतमस्व्यानं कुरुदेवं सर्वस्वतीर्थकेशवीं गौचर्मगोचकीं ॥ त्रितावसदिति  
 जात्रं पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ ८॥ उंचूः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो न  
 मः ॥ ९॥ उंचूः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १०॥ स्वः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवा  
 य नमो नमः ॥ ११॥ उंचूः स्वः वासुदेवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय नमो नमः ॥ १२॥ उंचूः संकषेणाय पुरुषाय प

त५  
य४  
११५

३५

रुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १३॥ उंचूः प्रद्युम्नाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १४॥ उंचूः अनि  
 रुद्राय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १५॥ उंचूः तवाङ्गवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय  
 नमो नमः ॥ १६॥ उंचूः केशवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १७॥ उंचूः नारायणाय पुरुषाय प  
 रुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १८॥ उंचूः माधवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ १९॥ उंचूः गो  
 विन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २०॥ उंचूः विष्णुवे पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय  
 नमो नमः ॥ २१॥ उंचूः वामनाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २२॥ उंचूः मधुसूदनाय पुरुषाय रू  
 पाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २३॥ उंचूः त्रिविक्रमाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २४॥ उंचूः श्रीश  
 राय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २५॥ उंचूः हृषीकेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदे  
 वाय नमो नमः ॥ २६॥ उंचूः पद्मनाभाय उंचूः दामोदराय उंचूः मत्स्याय पुरुषाय उंचूः पादोत्तौ जैवितौ उंचूः शानाय  
 पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः ॥ २७॥ उंचूः तत्पुरुषाय वासुदेवाय पुरुषरूपाय वासुदेवा

पुरुष४

घा

यनमोनमः॥३०॥उंसुपुरुषाय।उंप्रणवेद्विष्णुशतसहस्रनेत्रायपुरुषायषुषुपुपायवासुदेवाय  
 मोनमः॥३१॥यत्रदंविष्णुहृदयमधीतिब्रह्महृदयास्ततोत्तवृत्तिमुवर्षमेयस्ततोत्तवृत्तिपतितसंसाप  
 णस्ततोत्तवृत्तिअसयससास्ततोत्तवृत्तिआग्नाग्नास्ततोत्तवृत्तिअग्नीगमनास्ततोत्तवृत्तिअपे  
 यपानास्ततोत्तवृत्तिअसहस्रकृष्णास्ततोत्तवृत्तिअत्रसवारीब्रह्मचारीचक्षुःश्रुतेनक्रुशतसहा  
 स्त्रिणेशंत्तवृत्तिगायत्र्याणशिशतसहस्राणनग्नानिचर्वोतिवत्वारोवेदाश्चाधीतात्तवृत्तिसर्वेषुवेदेषु  
 ज्ञातोत्तवृत्तिसर्वेषुतीर्थेषुआतोत्तवृत्तियदिकस्पविन्नश्रुत्यात्तवृत्तीत्तवृत्तिअष्टौब्राह्मणान्यह  
 यित्वाविष्णुलोकमवानोतिमासेनमृसुर्वेतिनिशपतिमंत्रः॥॥यत्रयत्रगच्छेत्तत्रतत्रोपजायतेस  
 रतिआत्मानंनसगवान्मदाविष्णुरित्याहा॥इतिविष्णुहृदयस्तोत्रं समाप्तम्॥॥अथविनायकशांतिः  
 शातातपीयकर्मविपाकेपरिनाषायां पूर्वश्लोकद्वयंप्रदर्शितम्॥॥तद्यथा॥॥रुद्रज्ज्वालनद्रुष्ये  
 प्रजयित्वाभयंकाणकादराजपेद्रुद्रावदशांशियगुलेनतुडुत्वाऽलिषेचनंक्रुयोन्मंत्रैर्वसणदेवतेःशं

३ च

वि

प्य४

५ तसि ५

१२०

संगेनेवदपारायणविद्यादयोविष्णुहृदयस्तोत्रपर्यताः प्रदर्शिताः अथशांतिकेगणशांतिश्चत्रेशांतिकहर्षकमित्य३

एत

तिकेगणशांतिश्चयुहशांतिकहर्षकमःइतिआरोगप्रतिमादानविधानंतरंमपरश्लोकप्रदर्शितादानैर्द्वयादि  
 निरपिद्विजदेवतागैर्देवैर्वाचनप्रतिनिश्चयपेसपोसिःइसुकुपुण्यनिवृत्तयेरपनीयमानंयाकापुजातमसुसं  
 प्रशान्तयेयन्निर्णयैतौकाय्याख्यानेषुनेनधिनयकाशांतिनेवैयहशांतिश्चसुसयसुपदिशं।तत्रगणप  
 तिशांतिरसिधीयता॥॥याइवव्यः॥॥विनयकःकर्मविधासिद्धार्थविनियोजितगणानामाधिपत्येचरु  
 द्रेणब्रह्मणातथा॥एवंविनायकस्याधिव्यापारमनिधायतेःगृहीतस्वप्नदर्शनानिवाहतिनोपसृष्टोय  
 सस्वप्नज्ञाननिबोधत॥गणानामाधिपत्येचरुद्रेणब्रह्मणातथा॥एवंविनायकस्याधिव्यापारमधिनिधीय  
 तोःगृहीतस्वप्नदर्शनानिवाहतिनोपसृष्टोयसस्वप्नज्ञाननिबोधत॥खनोवगादले  
 त्यर्थजलेसुंडोश्चपश्यातिकाप्रायवाससश्चैवक्रुष्यादंश्चाधिरोहतिअस्यजैर्गदनेरुद्रेःसहैकावितिष्ठे  
 विनेगादनेसर्थजलेसुंडोश्चपश्यातिकणायवासैत्रजेनपितथात्मानंमधुन्यतेसुगतंपरेः॥विमन्मनिफल  
 रंतःससैदयनिमित्ततःतिनोपसृष्टोलमतनराह्यंराजनंदमःकुमारीचनतत्ररिमप्येगर्तमंगना।आवा

मि३

पतिकारकं ५

प्रत्यक्षदर्शनादि

चा३



महा

४ सदीपं च कमुस्तावस्तवैषिगणस्युतः। चत्वारः कलशाः एकवर्णस्य सुकृतिताव्रणाः। रुदोदकमुनापिष्णा निम्नगासंगोदादकं।

१ मृ

वृकारयेत्। इति संमरणात् ॥ इति याज्ञवल्क्येऽथ क्रविनायकशांतिः ॥ अर्थस्योपयोगः ॥ अथोऽभ्यंते  
त्रसंसारोवनापंचमृत्तिका ॥ अथ श्यानाद्गजस्थानाद्दल्मीकात्संगमावक्रवात्वावेदनाद्गुरुकक्षरकिपर  
राद्याः सुगंधयः। गौरसर्पकल्कशुग्गवायिनविमिश्रितः। शुग्गुशुआपिसंशुद्धः। सद्योषात्रिगणस्यया। सुरागं  
सीवचाकुसुंशेलियंरत्ननीह्वयं। सश्रीवापुष्पमारकं। उर्मदानदुहं। या। श्रीपर्षोकाष्टपतिंश्चसदकास्पप  
ल्लवा। अथ अथपल्लवाविशुद्धगंधीसुमनंस्पपि। अजः। शोचनगंधाश्चविचित्रकं सुमानिवा। कलशाविद्यना  
थे। उर्मदस्रत्तृष्टयः ॥ पीठस्याः स्थावनाथे। उर्मदस्रत्तृष्टयः ॥ पंचवर्णानि पिष्णानि स्वस्तिकस्य विनिर्मि  
ति। तिलचसार्धपंतदंडंबर। विनिर्मितः। अक्कुशा। अथ खालीपाकाथेते। तुला। अणिकिं विद्वेति क्रिया  
कृपासंभुलाश्चापरसुथा। तिलापिष्टेन संयुक्तदे। गौरसर्पमेकत्रापकाश्चमत्स्याश्चापक्रागंसेपकमपक  
कंगोडपोष्ठीवमाधीच्येवं वै विविधसुरा। मत्स्यादिकसुरा। तैचनिखिद्वयस्य यज्ञतवान्याद्ये। उविशो  
मणद्वैजेत्याद्यासुरा। द्वा। यजमानसुशुद्धैश्चद्विजैर्चनियोजयेत्। प्रयत्नपरलकं चास्याद्भुतजज्ञ  
५ शुभं चैव च मया परंगणेशाविकयोरथे विषुत्तुम्सुवोचने। अवार्यदक्षिणाथं ५

६ व  
५ दु

१२२

७३

कर

कं ५ वें

३१

याज्ञति। अथ पापरिकश्चैव तथेवं डेरकस्रना। उर्मदस्रत्तृष्टयः। अथोदकमुनापिष्णा निम्नगासंगोदादकं।  
रसेमाख्यया। दध्यान्नं पायसं चैव पिष्टं च गुडमिश्रितशालुकाश्च तथा दृढासर्षपागौरसंज्ञिताः। गणेशप्रतिमा  
चैव गौर्याश्च प्रतिमा तथा। एवं सेव्यत संसारः शान्तिं कुर्यात्तु ते दिने। ॥ विनायकशांतिकर्षे कामः स्वस्फुटतारा  
लोपेते सुते दिने कृतः। बाधाः संपन्नशो वा निष्कर्म। नृवरं। अमुकप्रयोजनार्थमेतत्कर्म करिष्येति संक  
ल्प्याः। अंताध्ययनसंपन्नब्राह्मणमस्मिन्नकर्मणि। त्वमाचार्यकुर्वीत। गंधउष्णाः च तादिति। उणीता। तायाः श्या  
श्चुरोरे। उणीता। अथ। तिः। सहितः। अचार्यकर्मकरोति। गोमयेनोपलिसे खलेकते देशे पंचवर्णेषु पिष्टे  
त्तद्वासनार्थमेकं स्वस्तिकं कार्येत्। तस्य स्वस्तिकस्य अर्चा दिदिद्गुश्च उरः स्वस्तिकाकास्येत्। कलशास्थाप  
थं। तत्र अमध्य स्वस्तिकोपरि स्थापयानदुहं चमोत्तरलोमयाचीनरीक्षसंस्थाप्य तस्योपरि श्रीपर्षोकाष्टपति  
मिति पति संस्थाप्य तत्पतिंश्चेतवस्त्रेण प्रह्लादये शततश्च दुहं स्वस्तिके सुत्रेण सुकृतिताकलकानेक  
वर्षात्। चतुरश्रं दनचर्चितं। अस्यामवेष्टितं कंगुवाहृतवस्त्रं राजिता च कलशा। अथ यराशो निधाय द्वा

५ रुक्मिणी

स्यो ३

३२

मयातोनेविनिहितेत्ननश्चत्वारस्तत्रिजः सर्वादिदिगवस्तिनकलवोऽत्रत्वेत्त्रोअमेवरुणस्पविवादेवस्पदेः

६११

दोदकेनदीसंगमोर्बकेनवाकलशाश्चरयिष्या ॥ ततः उद्धृतासिचराहेणकृत्तेनशतवाहनाभृत्तिकेद्व  
मेपापंयन्मयाड्डकतंक्रुत्तमिद्यनेनमंत्रेणकलशेषुपंचमदः संस्थाप्यागंधद्वारोदुराधर्षीनिमृत्तुंकरि  
षिणीर्इश्वरीसर्वद्वतानांतामिदोपयोअभ्यामितिमंत्रेणचंदनायुक्तकसूरीकर्षणदिग्धात्रगोरोचनीय  
गुत्तुनिहित्युसदकारादिप्रशस्तोपह्वयेर्बधन्यतमानिपह्ववानिद्वत्तरागुत्वेऽुडोवयासिसिद्धा ॥ अजिष्ठो  
वक्रतमः शोखंचानोविश्रांक्षिषासिप्रशुभ्रध्मस्महात्यनेनमंत्रेणमावाद्यजोडशोपचारपंचोपचार  
जांवानिर्धर्मक्रामानोसदाः क्रतवोयंशुविश्रतः इत्यादिकांवासन्नोवातापवतामित्यादिकांवाअन्यार्वस्वशा  
स्वापरिपठितां वाशांतिपठेयुः ॥ एतस्मिन्नेवसमयेऽस्वीत्तद्रासनस्यात्तरसागंशान्यांवाविनायकतक  
नमंभिकंघषोवादिशुप्रतिष्ठाप्यवह्यमाणमंभार्यमावाहनप्रवृत्तिनेवेद्यपर्यंतोसजां कुर्यात्वंमंत्रोत्सुस  
पायविद्यदेवक्रुंउडयधीमदितन्नोदंतिप्रचोदयाशः ॥ विनायकमंत्रः ॥ सुसागयेविश्रदेकममालि  
न्येधीमदितन्नोरीप्रचोदयाशः ॥ अंबिकामंत्रः ॥ अथयष्टोक्तविधिनायकसूरीकादिनिश्रवलि  
स्वास्वस्वशास्वापरिपठितवरुणप्रकाशकैर्मंत्रांनैर्वाउत्तुवः सुवरित्तिवाहतिनिववरुणायनमइतिनाम  
१ अग्निप्रतिष्ठाप्यवरुंअपबिवाततोभवात्पलोलीहनेनौ येष्टि रसर्षपकः केनोघतिनोगंस्वैषधज्ञोत्तयाचंदना

६२६

स्व८

१२३

मंत्रेणवावरुण८

संस्थासंज्ञानधारमृषिनिःपावनंरुते । तेनत्वामजिषिंवामिपावमान्पुत्रंनुतेइत्यनेनमंत्रेणनिषिंचेत्ततोदक्षिणदिगवस्तिनेकलशामादायउ

नार चानिः

अशिरंयजमानंसद्रासनोउपवेश्यस्वयष्टोक्तमार्गेणसृष्टिवाचनेकुर्वीन्निदिगादित्राहणसहितआचार्यः  
स्त्रिवाचनानंनरंउज्ज्वलित्यतिष्ठवास्तिरुपयणशालितिः सुयेषालिः कलशंसांयजमानमसिषिंचेदाचार्य  
तत्रसर्वदेशावस्तिनेकलशमादायांनगतेवरुणोराजाजगसूर्योदृदस्पतिः सगमिंइश्वरापुश्रतसंगसत्रणयेद  
दुरित्यनेनमंत्रेणतदनंनरेपश्चिमदिदेशावस्तिनकलशंरुहोत्वायत्नेकेशेषुदोर्वागपसिमंतोयस्यैर्इजिल  
लाटेकर्षयोरहोरापसुदुसुसर्द्धदेत्यनेनाः सिषिंचेत्ततउत्तरदिदेशावस्तिनकलशमादायांएवोक्तेः  
सदद्यान्मियादितिस्त्रिंमंत्रेसिषिंचेत्तएवमसिषिंचेत्सवपाणिर्हीतकुशंनरितियजमानस्यसुर्द्धेति  
सार्धपंतैलमोडंवरुणश्रवणोदासुवहमाणमंत्रेर्इडयाशः ॥ इमिंसायस्वाहासंमितायस्वाहा ॥ ईंकेके  
वायस्वाहाईंरुष्पांहायस्वाहाउषरुषायस्वाहा ॥ एवंभङ्गिंमंत्रेः सुर्द्धिज्ज्वातदनंतरंएवोपकेनवरुणा  
वोष्णिषड्मंत्रेस्मिन्नेवाश्रोवरुंद्रुवाशैरेडादिंइसिषेकशालायांचेद्रादिलोकपालेस्पस्रन्नमामंत्रे  
र्इलिंदद्यात्रानाममंत्रासु ॥ इंद्रायनमः ॥ अथयेनमः ॥ यमायनमः ॥ निर्ऋत्येनमः ॥ वरुणायन

३४

उञ्जालायस्वाहा

राज२ दि२

महावायवेनमःसोमायनमः। ईशानायनमः। ब्रह्मणेनमः। अन्नंतीयनमः। अथयजमानःस्वात्वा। शुक्लमा  
 ल्यांवरधरोयुरुणासहितोविनायकोयां बिकाये श्रेष्ठताकृतोस्वदुलीअपलजीवनमेववेयादिनावितिई  
 छं कृतकृतद्रव्यज्ञानमुपहारंदत्वा। ततः शिरसासृमिगं कृत्वा कुसुमसहितेनोदकेन प्रयेके दध्वा किं विनायको  
 बिका गायत्रीस्यंमंत्रास्योमर्षदत्त्वा। तथा दधीसर्षपमुष्यांजलिचदत्त्वा विनायकं मुबिकोचोपतिष्ठेती  
 उपस्थानमंत्रं च सुस्यं देहजयं देहि स मंत्रं सगवतीं दिदिमो सुत्रं देहि वनं देहि सर्वकामं देहि मेति। अत्र ५५  
 मंत्रेन गं देहि मेत गामि सृष्टं कृत्वा प्रथमतो विनायको उपस्थ। अपश्चाद्यथापठितेन मंत्रेणां बिका मुपतिष्ठे  
 ततश्चाचार्यः संपुत्रशानास्रीत्योपहारशेषंतत्र निक्षयवतुष्यथेगत्वा तत्र वक्ष्यमाणं त्रेवैलिनिदद्या  
 त्वा ॥ मंत्रं च ॥ चलिगुल्लं विमं देवाद्यादियावसवस्यथा। प्रसतोभ्याः श्विनोरुद्राः सुपणीपत्रो अहं अस् ५६  
 रायातु धनश्च पिशाचामातरो रोगाः। किंचिद्यश्च वेतालयोगिन्यः सतनाशिवा बंसकाः सिद्धगंधुर्वा नागा ५७  
 विद्याधरानगाः दिक्पालाश्च कपालाश्च ये च विद्म विनायको जगतां शीतिकातीरो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः। माविद्म ५८  
 नो

५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८

दत्त्वा विनवानुसारेण २

माचमेपापं संमर्षं मुपरिपंथिनासोम्यासतं तु तत्राश्रितं त्रपेतां सुखावहाः ॥ इति चतुष्पथं बलिदानं मंत्रां ॥ अ  
 नंतरमात्रार्थाय वस्त्रद्वयसहितादहिणास्त्रशक्रां नुसारेण च रिदक्षिणां पित्रास्त्रिगादिस्यो अथ्येस्यो ब्राह्म  
 णेस्य प्रतिपाद्या ब्राह्मणा इतो जयेत् ॥ इति विनायकसंतिः ॥ अथ नवव्ययद्वयः ॥ १। यद्भवत्कः ॥ २। अक्रि  
 मः शंतिकामो वायुदह्यसमारलेत्रां द्रव्याभ्युः पुष्टिकामो वातथेवा सि वरत्रपि ॥ ३। ग्रहानाह ॥ ४। सर्यः सोमो  
 रमिपुत्रः सोमपुत्रो वृहस्पतिः शुक्रांशनेश्वरा राहुकेतुश्चेति यद्वा स्मृताः ॥ ५। यद्ग्रहतिमानिर्माणद्रव्याण्यात् ॥  
 तां अकास्फटिकद्वयं दनाश्चर्षकात्तौ भजतादयसंसीसाल्कां स्यात्कार्ययद्दक्षिणां शस्त्रवर्षे वापठेत्स्य गंधे  
 र्मंडलकेषु वा ॥ ६। जाविधिमाह ॥ ७। यथावर्षं प्रदेयाणि वासोसि कुसुमानि वा गंधाश्च वनयथैव वृषो देयश्च  
 पुगुल्लः कर्षेवा मंत्रवत्रश्च वरवः प्रतिदेवतां ॥ ८। यद्दमंत्रमाह ॥ ९। आकृषेन इमं देवाद्यासि मद्देविककुम्भं ॥  
 उद्दुष्येति च त्रयो यथा संख्यं प्रकीर्तिताः इह स्पते अर्थं यथेवान्नात्परिभुतः ॥ शन्नो देवी स्रथाकोटाके उ  
 कृषं विमास्यथा ॥ १०। हेमियाः समिध आह ॥ अर्कः पल्शः खदिरः स्वपाभोगिथिपिप्लवा तुडुवरः शमी ब्रह्मा

नियदर



कुशाक्षसमिधः क्रमात् ॥ होमसंख्यामाह ॥ एकैकस्य ब्रह्मशतमष्टविंशतिरेव वा होतव्यामहुसर्पित्वो वे  
 दनाक्षरिणवाचन ॥ नैवेद्यार्थं ब्राह्मणसो जनार्थं द्रव्याण्येह ॥ गृहोदने पायसं च हविष्यं क्षीरं पृष्टिकं  
 दध्मोदने हविष्यं गोमयं चित्राक्षमेव वा दद्यात्सह क्रमादेव द्विजेस्योत्तोजने बुधोः शक्तिं वायथा लासेम  
 कृत्यविधिद्वैतं पुत्रमिष्टं उदने गृहोदने पायसं पुत्रपविताने हविष्यं सुपन्नादि क्षीरं पृष्टिकं क्षीर  
 मिष्टः पृष्टिकोदने पृष्टीवा क्षीरं पृष्टिकोदने क्षीरं पृष्टिकं शतं पृष्टिकाभ्यंत्य प्रवेदो तदने क्षीरं पृष्टिकं हविर्घ्नो  
 दना वृक्षं तिलवृक्षं मिष्टं दनः ॥ गोमं सस्यमोसमिष्टं दनः ॥ विवाहे नानावर्ण उदने गृहोदने दीनामसाय  
 यथा लासेमोदनादिसमाह्वानः पृष्टिकं नैवेद्यार्थं ब्राह्मणसो जनार्थं वदद्यादिसर्था ॥ दक्षिणा माहा ॥ ब्र  
 ह्मशंखसथा नडा उदने वामोदयः क्रमात् ॥ कृष्णागोराय संख्या गतं वै दक्षिणं स्मृतामीयस्यो पश्चिमो  
 दना संयत्नेन दक्ष्ये शां ब्राह्मणेणोत्तरो दक्ष्ये जितः प्रजयिष्यथा गृहोदीनामोदना सुप्रार्थयिष्ये ॥  
 सावानावौ च जगतः तस्मात्पृथगतमास्मृताः इति ॥ इति याज्ञवल्क्योक्तं यज्ञशास्त्रे ॥ अथ नव उदय

३४

१२५

यज्ञस्य दत्तुः ३

यदि

ज्ञप्रयोगः ॥ शुभे दिने नित्यकर्माः संसरममुकप्रयोजनार्थं नवग्रहमवमहं करिष्ये इति संकल्प्य स्वर्गो  
 कविधिना स्वस्तिवाचने विश्वयाचार्थं वरणानं सरं ब्रह्माणं वृणीत ॥ अथ वा चतुरोक्तं विज्ञो हणीत ॥ नार्थं च  
 स्कंदपुराणे ॥ नवग्रहं मखेकुक्षीं हविष्यं चतुरः शुभात् ॥ अथ वा चैकं मस्य वै द्विभूना ब्रह्मणा स होति ॥  
 ते द्वौ पलक्षणौ अतश्चाष्टोत्तरसहस्रं संख्याया होमं कर्तुं विवेकं प्रीतिं तर्हिकं मयोगो नियोहाय इत्यहं  
 स्यात्कारं विज्ञो हणीता सर्वत्राचार्यं ब्राह्मणो नीतियतो ॥ अत्र चार्थं वरणप्रयोगः वरणकाले एकं क्वि  
 ग्नेयवांस्त्रालंकारादिद्वियं गमुदभ्युखोपवेशिताय एण वन्नमायेकं सेनाह्मणाय दत्वा स्वयं दत्वा सिम  
 सः सत्रग्रहं यदयज्ञे नयते तत्रोपलब्धं दनं पुण्यां हलं देमां लंकारवासोति ॥ वार्थात्वेन त्वामं दृष्टे भी  
 ति ततो हणीतोस्मीत्याचार्यं चित्र्याशं वं तद्वलंकारं इत्येते तेषां दत्वाः समिधममीलं क्विक्रत्वेन ख  
 मं हं हणीताचार्यो कर्म कुरुया ॥ कुंडोदिनिर्माणप्रकारस्य ॥ स्कंदपुराणे ॥ नवग्रहं मखेकु  
 उं हं समात्रं समं तवै ॥ चतुरस्रमध्ये द्वायोनिवक्रं स मेखलात् ॥ चतुरस्रं लक्ष्मिं स मेखलात्

एतदतिर

ततर दय २

यो निवक्रं वा उन्नवति तच्च दुद्धिता विस्तार वेदवत् उरं गुल्लगुच्छिता । अथमेकमेवला पक्षः । मेखला वित संवा कुवीता तथा नवित  
 तोद्धिता का यत्रिपुमा मेखला बुधैः । त्रिगुलो नृता तद्विद्याया संवदा । उद्धा यविस्तारा ष्यां वटती यावत् उरं गुला ।  
 रः स र्वयोरपि वास्पतो । सर्वयोः अथमद्विती यमेखलायाः । ४

दुद्धिता । मानदीनाः प्रिकं कुंड मनेकं ~~कुंड~~ देसवेत्र ह स मात्रं ममे सवेत्र च तथैष्य पिदिदु कुंडस्य दे  
 स मात्रं प्रमाणं सवति इत्यर्थः ॥ अथो ह स संसं उत मपि दस मात्रं सवतीति यावत् यो निवक्रां कुंडस्य  
 पश्चिमदिग्भागे उपरितन मेखलायामभ्ये वक्ष्यमाण लक्षणोपेताया योनिः सैव वक्रं स्यात् योनिः स्यात्  
 गजो धु सान्नि संयो निवक्रं वा पिप्लपत्राः कृति । यो निलक्षण मपितत्रैव । वितस्त्रिमा संयो निः स्यात्  
 इ स प्रो गुल विस्तरतः ॥ पद्मा सु प्रवेति विकल्पः ॥ इ मं यो न्नाता मध्ये पाश्र्वयोः अथ लोद्धिता गजो  
 धु स संसं दृशी तद्दय तोद्धि संसं युता । एतत्सर्वै सु कुंडेषु यो निलक्षण मप्यते मेखला परि सवेत्र अथस्य  
 दल सान्नि ता अथत्य दल सदशा वा यो नि र्ववति इत्यथ लक्षण लक्षित कुंडकारणो वि क्रो ह्ण्डिलं च तुरसं  
 ह स परिमितं प्रकल्पयेत् ॥ ह्ण्डिलं वा प्रकल्पयेदिति स्थंडिलस्य अथ विद्या नत्वेन विधनात्वा एव कुंडं  
 स्थंडिला वा कृत्वा तस्या त्रघ्रं तं गाग्रहा दिस्थापनार्थं स्थंडिलं वेदी वा विदधीता । तथा स्कंदपुराणे  
 ॥ तस्य चोत्तर पश्चिम ह्ण्डिलं ह स मात्रं कुंडि वत् प्रवत्तु र अं च वित सुद्धय संमितम् ॥ द्वि प्रमित्यनेन वे

श ४

दि कानिर्मा सुच्यते ॥ अत एव तस्य पुराणे ॥ नाग र्तस्योत्तर पश्चिम वितस्त्रिहय धि सुत्तं व प्रइयं हं तां वेदि वि  
 तस्त्रिहय संसं युता शो स्यात्पयो नाय च देवानां च तुरस्य मुदकं च वीगात्रां स्पकुंडस्योत्तर पश्चिम इशा  
 न सागे वय इयं मेखला इत्येतन्न इयं लोद्धायाः प्रथम वक्रः अथ लोद्धाया द्वितीयो वक्रः विस्तार सुद्धय  
 रण्यं गुल परिमितः । उद कल्पते उद मित्रां एव ह्ण्डिलं वेदि वानिर्माय फल उष्कादियुतं तं विताने तत्रो  
 परिकुर्वीता अथ यद्दो क वि धिना म्पः विद्या नि सिं प्रणीय यहा यतने यहा दी चे वां स्या पयेत् ॥ तथा  
 त्रमत्स्य पुराणे ॥ अत्रि प्रलय नं कृत्वा तस्या मावा हये लुरा त्र देवता सत्र संस्था प्पा विंशति द्वादशा  
 षट्शिका । तस्यां वेदिकायां न वसुक्तं तं तुलैः समंततः प्ररयित्वा । ततो मध्ये तां प्रवर्षैः संडुलैः सूर्यस्य मंड  
 लाकारं संस्था प्पा विंशति द्वादशा षट्शिका । तस्यां वेदिकायां तस्युक्तं तं तुलैः समंततः प्ररयित्वा । ततो मध्ये  
 तां प्रवर्षैः संडुलैः सूर्यस्य मंडलाकार मधिष्ठानं कुर्वीता । अस्माकं मंडला इत्यदि सागे सुक्तं तमेरु  
 त्ते अत्तरस्य मधिष्ठानं सोमाय ॥ सूर्यमंडला दूहिणा नै रं क वं द न लि सै र ह तै म्बि को णा कार मधिष्ठाने

मंगलायासूर्यमंडलादेवशान्ध्यां सुवर्षवर्षैरुदितैः बाणाः कृतिमधिष्ठानंबुधयामध्यमंडलादुदितैः  
 सुवर्षवर्षैरुदितैः दीर्घचतुःकोणमधिष्ठानं गुरुमध्यमंडलादुदितैः द्वादशदिशागुहकृतमैत्रुदुलैः पंचको  
 णिर्वा मधिष्ठानं शनिमध्यमंडलादेवपश्चिमदिशागुरुकृतमंडुलेर्धृत्वष्ठाकृतिर्वा मधिष्ठानं शनिमध्यमंडलादि  
 शतकोणसीसंख्यद्वयवर्षैरुदितैः कुरुवर्षैर्विष्टे कृतिमधिष्ठानं गुरुमध्यमंडलादेववायव  
 दिशागुहकृतमैत्रुदुलैः सुवर्षैर्वा धजाकारमधिष्ठानं केतवे कर्वा तासतश्चमंडलाकारचतुरस्रविकोण  
 वाष्ठाकृतिर्दीर्घचतुस्रपंचकोणधराकृतिर्धजाकारेखाताम्यस्पटिकरक्तचंदनसुवर्णरजतलोह  
 सीसकांस्यमयेषु मध्यमोयुली मध्यपर्वप्रमाणान्तरेषु सूर्यादिप्रतिमानिर्माणद्रव्येषु वक्ष्यमाणेषु का  
 रणोल्लिखितान् सूर्यादीन्मध्यमिदक्षिणशानोत्तरपक्षेषु मन्त्रित्वाद्युदित्यागेषु निदधीतान् तत्राऽपर  
 विशेषः ॥ स्कंदपुराणोक्तः ॥ शुक्राः क्रौंचाः उग्रवैश्वानराः सौम्याः तुदयः ॥ सप्तधराः शनिः सोमः शो  
 षादक्षिणतो मुखेति ॥ अथ वा आदित्याः विभुवाने वेतरः मृदादिस्त्रयः ॥ तत्राः चित्तमगो ॥ आ

श्वराया 3

१२९

स्मार

दित्यानि सुखाः सर्वे माधियया धिदेवताः स्थापनीया मुनिः श्रेष्ठानां तरेण पराद्गुखाः अधिदेवताः अथ धिदेवताः  
 सहिताः सोमादियुहासाधिययधिदेवताः इत्युच्यते ॥ नां तरेणेत्यादिस्त्रयः पितृयहस्यमथ्ये  
 अथ्येयहास्त्रापनीया इत्यर्थः ॥ नैतत्पराद्गुखाः स्थापनीयाः ॥ स्कंदपुराणे ॥ ॥ सा उग्रुमंडलाकारं  
 मंडुचतुरस्रकांश्रंगारं विकोणं चतुर्ध्रुवाणा कृतितया ॥ दीर्घसंचतुरस्रचपंचाग्रं सार्गवंतया ॥ धनुस्यु  
 शनिं ॥ विद्याद्वाङ्गं च पश्चिमं ॥ धजाकारं केतवश्चेति सा उग्रुमंडलाकारमिदयादि ॥ अत्र सा चादिशद्वेस  
 त्रहर्षैरुदितैरुदितयहायतनानि वर्तुलचतुरस्रादीनि विष्णुपानिलक्ष्यं तौ तथा सूर्यादिप्रतिस्वना  
 ऽधिकारणानिताम्रादिनिर्मितानि वर्तुलचतुरस्रादीनि वक्ष्य्यपि दीर्घसंचतुरस्रमिति तैः गुरुमंडुले  
 वताधिकरणं तदायतनं वै देवदीर्घचतुःकोणं च कुर्वी ॥ पंचायं पंचकोणं ॥ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ ताम्रकांस्य  
 टिकाः रक्तचंदनास्वर्षकाः तु सौ रजताहयसः सीसांकां स्यात्कार्याः अहाः क्रमात् ॥ सुवर्णैर्वा पटलेषु वा मेषु  
 उल्लेखेषु वा ॥ सुवर्षैश्चां प्रादिवर्षैर्दिशैः के लो श्रीदिवर्षैर्का रक्तवर्षैर्दिशैः नवास्वर्षैः रत्नैः स्वर्षाणां गंधैः ॥

विचरति

तत्र वक्ष्यते कृष्णिकाया

ग 3

तत्रैयदवर्षेः मंडलेन त्रैदस्त्रापयैनायत्नेना ॥ मत्पराणा ॥ मध्ये छत्तास्करं विद्याज्ञोहितं वक्षिणे मण्डले  
एतुं विद्यादुष्पद्योत्रेण त्राक्षर्येण चार्गवं वंध्यात्सोमं दक्षिणार्धे कोपश्चिमेव शनिविद्याज्ञोदक्षिणे पश्चिमे  
पश्चिमोत्तरतः के लंस्थापयेत्सुकृतं तुलैः दक्षिणे नतिपानप्रत्यस्याः पानवौषडितीयत्पनेन सत्रेण तास्करं  
स्यत्र दितिया तास्करं वक्षिणे न तास्करं स्पदक्षिणतः गोलोहितं मंगारकं विज्ञानीयात् अथवा सप्तम्यर्थे प्रत्य  
याः मध्ये छत्तास्करं विद्यातस्य लोहितं विद्यात्रा दक्षिणप्रदेशे त्रैदस्यर्थः ॥ एवमुत्तरत्रापि ॥ सर्वत्रैत्रेण इशानदिया  
गदक्षिणार्धके आग्नेयां विशिदक्षिणा पश्चिमे नैर्त्यप्रदेशो पश्चिमोत्तरतः वायव्ये सुकृतं तुलैः प्रदस्थापन  
प्रदेशे त्रैदिलं वेदिकां परिष्वस्य सुकृतं तुलानामुपरितत्रदस्यं तुलैः पश्चिमे तेषु प्रदेशेषु यदप्रतिमानि धा  
यापश्चात् सुकृतं तुलैः कृत्वा च्छापयेत्प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ग्रहलक्षणान्यपि ॥ मत्पराणा ॥ पद्मासनः पद्मक  
राः पद्मगतं समकृतिः सप्ताश्वत्थं च्छादिसुजः स्यात्सद्वारविश्वेतः श्वेताक्षरधरो दशाश्वत्थस्रणाम् ॥  
गदापाणि द्विबाहु सुकृतं यो वरदः शशीरक्तमालां धरः शक्तिश्रलगदाधरो यत्तु ज्योमेरुगमो वरदः स्या  
तक्षिनेषु प्रदेशेषु आदित्यादीन् ग्रहान् स्वस्वायतनानतिक्रमेण स्थापयेत्त्रिदध्यात् अथवा ततः धातिं तुलो पक्षिः ४

पदक्षिणेन  
४ वा  
३ तं

न४  
ति४  
१२०

सं२

उर्ध्वजोर

नियत

इरासुतापीतमालां कधरः कार्षिकार यत्तद्वर्षात् पूर्वद्वर्षात् गदापाणि सिंदस्यो वरदो बुधः ॥ युरुसुकृतयोर्द्वैतमा  
दिवदेत्युरुतदसीतश्वेतैः ॥ दंडिनो वरदो कयोमाज्ञासुतकमंडुलु इन्द्रनीलसुतिः शशीवरदो दशवाहनः वा  
ण्माणासनधरः कार्तव्योऽक्र सुतः सदाकरालवदनः खड्गवर्मशूलो वरदः नीलः सिंहासनस्य श्राद्धं स्वत्रय  
शस्यतो धृश्राख्ये वा द्वा सद्यो गदितो विक्रता बन्नाः ॥ इरासनागतानित्यं केतवः सुधरप्रत्यानवयहासाधारण  
न्याहं दत्रयेण चतुर्थचरणेन च केतुसंस्थो वाह ॥ सर्वकिरीटिकाकार्यप्रहा लोकादिता वहा ॥ अंगुले  
क्षितं सद्यै संतमोक्षं सदाशतमितिके तु रानेव्यप्रदं नार्थननुसिद्धं प्रजायो वैके वसुक्तिः शिष्टाव  
रावगोस्त्रियनवयहे ॥ द्वादशगुलं लिखेत्कृत्वा सोमं तु द्वागुलं लिखेत्सोमादद्वैतगुलं केतुमहद्वैत  
मंगुला एवमभिप्रणयनानंतरं ग्रहवेदिकाया सुकृतस्थानिष्ठां च्छयादिप्रतिमानि धया व्याहृतिः रावाह  
स्थापयेत् ॥ अत्राध्यं प्रयोगः ॥ अणवस्पन्नान्नाभिः देवीगायत्री छंदः परमात्मा धिर्देवता च्छयाद्यां च्छा  
दनाथो विनियोगः ॥ ३ ॥ सुकृतं स्वः कालिगदशी इव काश्यपसगो वरुण्ये रहा गच्छेत्स्यात्वा सुकृततिष्ठेति

४ दि  
ने  
४ ली

४ दिग्गालिखेत् ॥ २ ॥ उनवंगुलं वैवगुं वैवण्डगुला बुधं च्छमिसुतंसौ विववुत्त्रिंशद्गुलं लिखेत् ४  
२ व्याहृतीनां क्रमेण जमदग्निनरदाजन्गवोत्तपयः अग्निवायुस्यो देवताः २



मुक्तपुष्पमुक्ततंडुले

सुखेवः स्वः इन्द्रहागच्छ इति धेतिसुक्रस्पदक्षिणपार्श्वे इन्द्रा उंचरुवः स्वः यम इन्द्रहागच्छ इति धेतिरानैश्वर  
 स्पदक्षिणपार्श्वे यमो उंचरुवः स्वः काल इन्द्रहागच्छ इति धेतिराहोर्ध्वे क्षिणपार्श्वे कालो उंचरुवः स्वः विष्णु  
 इन्द्रहागच्छ इति धेतिके त्रैलोक्ये दक्षिणपार्श्वे विष्णु उंचरुवः स्वः शततत्र प्रत्यधि देवतास्थापयेत् ॥ उंचरु  
 उवः स्वः अग्नि इन्द्रहागच्छ इति धेतिसुक्रपुष्पमुक्ततंडुलेः स्वः मीस्पवामपार्श्वे अग्नि उंचरुवः स्वः आप इन्द्र  
 हागच्छ इति धेतिसोमस्पवामलागे अपा ॥ उंचरुवः स्वः लसे इन्द्रहागच्छ इति धेतिसोमस्पवामपार्श्वे लसे ॥  
 उंचरुवः स्वः विष्णो इन्द्रहागच्छ इति धेतिसुधस्पवामपार्श्वे विष्णो ॥ उंचरुवः स्वः इन्द्र इन्द्रहागच्छ इति धे  
 तियुरोचोमपार्श्वे इन्द्रो ॥ उंचरुवः स्वः वा इन्द्रहागच्छ इति धेतिसुक्रस्पवामपार्श्वे इन्द्रो उंचरुवः स्वः सुव  
 प्रम इन्द्रहागच्छ इति धेतिसोमस्पवामपार्श्वे प्रम ॥ उंचरुवः स्वः काल इन्द्रहागच्छ इति धेतिराहोर्ध्वे वा  
 मपार्श्वे कालो ॥ उंचरुवः स्वः विष्णु इन्द्रहागच्छ इति धेतिकेतोवामपार्श्वे विष्णु उंचरुवः स्वः सुमा इन्द्रहागच्छ इति धे  
 येत्त्रयधि देवना दक्षिणतो वामे प्रत्यधि देवताः स्थापनीयाः प्रत्यत्नेन व्याहृतीति निःपथकृपथकृपथकृ

४३५।  
 ३ पते  
 २ सपनि

३.६  
 पं। १४

ब्रह्मन् ३                      ११२४                      सपति      ब्रह्मणो २

तिसंयद्दकारः चित्तामणो ॥ अधि देवताः स्थापनादेशः प्रकारान्तरेण दर्शिताः असुर्यस्यैवोत्तरेण सुखासो मस्य  
 दक्षिण ॥ स्कंदमंगाकश्चैव दक्षिणस्यो निवेशयेत् सोम्यात्वाश्रिमतो विष्णो ब्रह्मजीवस्पद्यत्तः इन्द्रमैश्वरि  
 ताद्विद्विमंदाद्येयतोपमोहाः घृष्टान्तरे काले सर्वरतसयास्त्रं केतोचैर्नतिदिसागो विष्णुमंनिधाययेत् ॥ उंचरुवः सुवः विनाय  
 क इन्द्रहागच्छ इति धेतिसुक्रमुमतंडुले राहो रत्तरसागे विनायकस्थापयेत् ॥ उंचरुवः सुवः दुर्गे इन्द्र  
 हागच्छ इति धेतिसोमस्पवामलागे दुर्गे स्थापयेत् ॥ उंचरुवः सुवः वायो इन्द्रहागच्छ इति धेतिसूर्यस्योत्त  
 रलागे वायो ॥ उंचरुवः सुवः आकाश इन्द्रहागच्छ इति धेतिराहोर्ध्वे क्षिणलागे आकाश ॥ उंचरुवः सुवः अश्विन  
 कुमार इन्द्रहागच्छ इति धेतिकेतोर्दक्षिणलागे अश्विन ॥ उंचरुवः सुवः कुमारको ॥ संयद्दकारः के ॥ राहुर्मंददिने शोता सुत्रस्य  
 यथाक्रममात्रेण शोभा वा सुभ्राह्मके बोधदक्षिणे ॥ आकाशमश्विनैवितिपंचैतांस्थापयेत्तत्र अथैवोतापंच  
 उंचरतस्थापयेत्पंचद्वित्रिंशद्देवता आवाहस्थापयेत्तानाममंत्रैः प्रजयैव तद्यथा ॥ उंचरुवः सुवः यम इन्द्रहागच्छ इति धे  
 कुमारो स्थापयेत् ॥ मस्पुत्राणे ॥ विनायकं तथा दुर्गा वा सुमा कुत्रामिव ॥ आवा ह्येव्या कति लिख्यै वा शि ३

मि इति धेत ३

स्वार



योगः॥ त्वन्नोत्रमेव रूपस्य विद्वाश्चेत्स्य हेतुव्यासिसिद्ध्याय जिष्टेव क्लितमः शोभुचानो विद्वाश्चेत्सोसिप्र  
 सुसुप्रथममत्रा तव वायुं तस्य प्रत्यस्य मंत्रस्य च स्वः कृष्णिः वायुदेवता गायत्री हंदा वासुदेवायां विनियोगः  
 तव वायुं तस्य ते त्वसुतो मातर दुता अंतस्या वृष्टिम हो सोमो धेनुमिषस्य मंत्रस्य गौतम कृष्णिः सोमो देवता  
 विष्णु प्रह्लादः सोमप्रजायां विनियोगः सोमो धेनुं सोमो अंततमास्व सोमो वीरं कर्मण्यत्वात् सादृश्यं विद्वा  
 सनेयं पितृश्रवणं यो देवता इति सोमो मीशास्यं न मिषस्य मंत्रस्य गौतम कृष्णिः अज्ञानो देवता जगती हंदा  
 इज्ञानप्रजायां विनियोगः तमीज्ञानं जगत्स्युति धियं जिष्मन्वसे ह्मम देवता प्रणानी यथा वेदः साम स ह  
 षेरज्ञानता पापु रं द्यः स्वस्यो एते च मंत्रा उपलक्षणार्थो अत इन्द्रादिशक्राकै विरं वैदिके मंत्रे इन्द्रादिश  
 जाकाया अथवा इन्द्राय नमः इत्यादि सिद्धं देवता नाम मंत्रैर्वा लोकपाला मद्रजये रां पं लो कपाल  
 संप्रह्या दिव्या किं नाय द्वाणां तत्र ह्मणं क चं दन प्रवृत्ती र्गं भादित तत्र ह्मणानि पुण्या लिख समाप्प्या दिं दौ  
 धि देवता दिलोकपालांता नो अचिद नं यथा पपन्ना निव कुसुमानि सैत पर्ययेत् अथवा चं दना घटा वे अथ

पस्य  
 ७२६:

३३२

३२

खेकि

कजे सुवा३ सिद्धकः पिंडकः। रेव६ च्वा४ ३३

दानां दि स र्वेषा मपियथा लोप पन्न चं दनं पुष्पा णि च समर्पये शततो ह्यपदानं॥ धिता मणे॥ दिवा कर कृजासं  
 दिदापयेद्रु क चं दनं चं देवता गं वे वैव सित वर्णं प्रदापयेत्॥ कुं कुमेन उ संसु कं चं दनं जीवसो म्पयोः॥ अंगारं  
 चं दनं दद्याद्वा कुं कुके ल्वे अं दं पं रं श अ ह व र्णं निपुष्पा णि गा य त्वा हं प मा द रे श र वं कुं सुं रु कं धूं पं श शि न सु ह्म  
 ज्ञता लो मे स ऊ र सं चै व अ ग रूं व बु र्धे स्मृ त म्ना सिद्ध कं उ र वे द द्या ह्म क्रे वि षं ग रूं त य्वा उ ग्गु लं मे द वारे तु लं  
 हो अं के त को कुं डु र्के स न्न क र म इ त्प र्थां विद्वा गुरु वि ल फ ल म ज्ञा स हि त गुरु॥ मे द वार श ने श्च र्था हो  
 के त वे च्छ ला ख्या प्र वृ क्ति कुं डु रु का दि धृ पा ता वे स र्वे णां उ ग्गु लं ह प ना त य च य ज्ञ व क्च यः॥ ह्म पो द स्य अ ग्गु  
 लु र ति आ दि य्वा दी नो कुं डु रु का दि धृ प दाने त त्र ह्म धि दे व ता प्र स धि दे व तो त ए व धृ पा वि ना य का दी नो उ ग्गु लु  
 रे वां त स्य स र्वे स्य सा क्ष र ण त्वा रां धं ह्म प दाना न त्र रं दी पं द त्वा ने वै र्धं व ह्म मा णो क्र मे ण द द्या र्थं॥ धिता मणे  
 यु डे ह न रं वे दं द्या त्सा मा य द्ध त पा य सं लि हि ता य द्ध विष्णु न्नु ध य ज्ञा र ण छि को म्ना ह्मि म्मि त्र ह्म दं  
 द नं सु रो हं द्या ह्म का य च द्ध तो द नं॥ मिथ्यां ते तिल मा णे श्च ने वै र्धं च श ने श्च रो ग हो म्ना सो द नं द द्या के तो श्चि रो व

योरपि४

५९३

५९४

नंतथा ॥ इति ॥ इति पञ्चमं नदीधारादिद्वारप्रथिको द्वारमिथः प्रथिको दनाः प्रथिके नैवेद्यानावेयथाल  
 सोपपन्नमोदनानि निवेदयेत् ॥ तथा ह्याह वल्कः ॥ साकृति वाप्यथला संसक्तव्यभिधिप्रवृत्तेति ॥ म  
 धिदेवताधीनोत्तरे ॥ नैवेद्यं यथाला समोदनादिसामर्पयेत् ॥ विनायकस्य तु मोदकसदिभिर्दनादिभि  
 एवं नैवेद्यं दत्वा तां हूलदानेनैर्ग्रहवेदिकाया दर्शनदिनागो अन्नमकालकं वक्षिं प्रपन्नं विरूपितं ती  
 रनादिपल्लवसंयुक्तेषु स्यात् ॥ अलवटोलैश्च पल्लवसंयुक्तेषु फलवस्त्रयुग्मं चितम् ॥ अंतःप्रक्षिप्तं पंचरत्नेषु  
 निर्मले परिश्रुते सप्रसन्निका सिंसवैषिधिश्रोपेतं दृढं कलशमक्षतानामुपरिस्थाप्य तत्र कलशेषुरूप  
 मावाहयेत् ॥ तथा गंगादीनितीरानि ॥ तथा च ॥ मत्स्यस्कंदपुराणयोः ॥ आयुर्वेदे च समाह्वत् ॥ इत्यंति तत्र  
 चितम् ॥ अतः पल्लवसंयुक्तेषु फलवस्त्रयुगाचितम् ॥ पंचरत्नसमायुक्तेषु च पंचलंगुलं तथा ॥ स्थापयेत् ॥ अंगं कंते व  
 णं तत्र विद्यसतो गंगाद्याः सरितः सर्वासु च आसरां सिचां पंचलंगुलं प्रक्षेप्यैः ॥ आभादिपंचपल्लवाः गजा  
 रथवल्मीकसंगमस्थगोकुंजनाम् ॥ इदमानीय विनेदसवैषिधिशलाचितम् ॥ स्नानार्थं विद्यसेत्तत्र यजमानस्य

मि२

०

६३

५९२

प्रद

शास्त्रविशं सुरामांसीवचास्तुष्टं शैलेयं रजनीहृयं सटीपंचकमुखावसवैषिधिशरणस्यतः ॥ अथ करुण  
 वाहनमंत्रः ॥ तत्वायामाप्यमं वस्यमंत्रः शोषकापिः वरुणो देवता निहृष्टप्रदं ॥ वरुण आवाहने वि  
 नियोगः ॥ इति तत्वायामिति वरुणाखं देमानस्त्रवाशालेयजमानो हवितिः ॥ अहं देवानो वरुणोरुसंशमान  
 आयुः प्रमोषीः ॥ एतन्नो प्रदर्शो मयं अतश्चैरपि वरुण प्रकाशके वैदिकमंत्रैः वरुणाय नमः इति नामं त्रेण  
 वावरुणमावाह्यस्ययेत् ॥ अथ गंगाद्या आवाहनमंत्रः ॥ सर्वसमुद्रसरितस्त्रीया निजलदानदो आयु  
 तु यजमानस्य उरितदायकारका ॥ एवमादिमादि देवताद्याहनादि वरुणस्यार्पणं च कर्म निर्वर्तय ॥ सर्व  
 तिष्ठापिता श्रीवद्गण विधिनाहो मकर्म समाखेत् ॥ तत्रैव अंशं प्रयोगः ॥ अस्मि कर्मणादिद्याद्यानवप्रथ  
 न देवताः सुदद्यानवाधि देवताः ॥ अद्यानवप्रत्यधि देवताः विनायकाद्या इतरा अप्यंग देवताः ॥ समिद्धादि  
 तिलदीहयो हविः अथवासर्वाः ज्ञानि हविः ॥ वर्धाऽपमिश्रितं तत्र संज्ञेन कर्मणा ॥ सद्योऽयं इति द्वैसमिद्ध  
 शो निक्षिपेत् ॥ एवमथाभयानिर्वाणकार्यः ॥ तत्रायं प्रयोगः ॥ ॥ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽस्विनोर्वाइत्यं

होधु३



दानं वि

म्या३

मल

रूप्य इतरासासि वसिदे दाना नीचते देवे सो जु न्निर्वपामो तिच उरो मुष्टी न्निर्वपेत् यदा उ प्रतिग्रह मद्यो न न राते स ह स्रै वाते मं क उ मि छ ति  
तदा मुष्टि च उ ष्य निर  
उत्तरो मुष्टी नि १ वा

सो रूपा स्यात् सूर्या यत्वा सुष्टं निर्घपामो तिरूप्यै वंशो मायं मंगला यत्वे सा दिप्रकारेण ग्रहे स्य अत्र अत्रो  
मुष्टी न्निर्वी पथं संपादितु स्पद्रय स्पहो मप्यो द्वे न घृवी कनिर्घपे नंतरं हो मपयां संद्रयं वरं ही निर्व  
पेत् सा एव निरूप्ये देवार्थत्वा त्रिः प्रहो ल्प च सं अपयि त्वा वि भयो दसु द्वा स्प प्रया ति न्नि र्ग रे त्वा ॥ था ज्ञ  
वत्क्यं ॥ क्रत्रे व्या मंत्र वे त अ च सं व प्रति देव त मि ति एव तु अप नो नंतरं यथा गुहं परि स्त्र गण यो ज्यो  
संस्कारांतरं कर्म करणी नमं न्न रं य ज मानो धं देवतो देशे न हो मी य द्र व्यं ता गं कु र्वा त या ज मानि क त्वा ल  
धं त्वा ग स्यां य ग पदने क त्वि क सा द्वि कर्म ण प्र या ज्ज ति क्त्वा त्वा ग स्य क र्त्तुं म श क्त्वा त्वा त्वा त्वा त्वा  
यं प्रयोगा ॥ अर्थ सो म तो म सु धे ह स्प ति शु क्र श नि रा ह्नु के ड रु द्रो मा र्क डु म श क्त्वा त्वा त्वा त्वा त्वा  
त्रयुक्तां प्रि ज ल व विष्णु श क्रे द्रा णी प्र जा प ति स र्पं ब्र ह्म ण प ति ड वी गां वा यु र्वा मा म्बि क्त्वां ग र्द हो क  
द्वा रा दि देव ता स्यः प्रा यश्चि त्वा ज्ज ति देव ता स्य खि ष्ट क र्त्तुं य ये चे दं संपा दि तं स मि द्वां द्वि ज्य वी दि ति ल  
य वा दि म या स क्र मि त्य ति ल यो न्नि के च न र ह पा का दौ द च्चु मु धू य य हा दि ड्दि श्प च्चु द्द ति त त्र शि र्ति

धा ४

२२४

५ य ष्य

२ अधि देवता दी उ दि र प प्र त्ये के ति स स्मि स र्के की वा त्वा ऊ ती ऊ त्वा स त्त स वि र्वा क्ति नि नि व न स त्वा ऊ नी र

चार एव प्रमाणं एव मुष्टि स्यात् क्रते इ ध्रु मा ध स या ज्य सा गो च द्भु र्पी व ड्द वा स र्वा दी त्र य हा व र्द्वि श्प हो मा र्थं संप  
दि ते न स मि दा दि द्र गे ण अ ति ग्र हं य ति द्र व्यं द शो द श ङ्क ति ड्द वा च त स्य ति वी ड्द ति सि अ त स त्वा ड्द ती ड्द  
त्वा प आ त्य ति य ह म षा विं श ति र षो त्र र श न म षो त्र र स ह सं वा र्त्तुं क्र मे ण हो म कार्थो त त्वा पि सा मि द्वां द्वि ज्य  
ति ना द्य इ र ति क्र मं स मि दा ज्य च सं ति ला द्य इ र ति वा अधि देव ता दी ना मं ध्र ध न देव तां हो मे न्नु न सं स्य  
स्वी कर णो आ सी च स मि द्वां प ला श्प धो ए व म त्प थुरा णो क्त्वा न या ज्ज व ल्क्य थ ॥ अ क्रः प ली श र व दि रे अ प  
मा र्गो थ पि प्त लः अ ड्द व र्ग श मी द्वा क्त्वा श्च स मि धः क्र मा श्प कौ क स्य ध्र श त म षा विं श ति रे व च दि ति  
व्या म धु स र्पि स्यां द न्ना ही र ण वा रु ने ति स्य ति उ रा ण योः स्य तिः प्रा व ल्या त्वा उ रा ण वा क्य स्य र्थो न्नि  
श क्यं र्थो ग्रा ह्यः तथा च म धा दी नि स मि दं ज ने वि क ल्पि ता नि ॥ विं त म णो ॥ स मि ध आ त्र क र्त्त व्वा अ हो त्र  
र स द धि का अ षो त्र र श तं चा थ अ षा विं श ति रे व च स मि धो ल द्वा णं व ह्ये सं र्वा मा सी त यै च त्रा वि शी णो  
वि द ला क्र श्वा व का स ष षि राः कृ शाः अ ति सू ला ण ति दी र्घां अ ध मि ध का र्थ ना शि का वि शी णोः सु ह र्थं क

ति 3

प्य ४

३४

3 वा

५ नै व स म न्चि ता अ ने न व च ने न म धा ज्प द धां स मि दं ज ने स उ ब यो व ग म्प ते । या ज्ज व ल्क्य सु वि क ल्प मा ॥ हो त्वा न धु स पि ष्यां द धा ४

१ सुखिरा व्याघ्रजननी तशा चरिषु वर्धनी ॥ दीर्घविदेद्यगमनी स्तूला वाक्विनावाणी ॥ अ १

गम शिष्यते ॥ इतो यत्ने तर्हि नी कुशला ॥ श्रीयं कान्तानोरत्त सोरहा वि

शुभे तयुद्ध संश  
ता हे तते धर

या द्विदला सुवनाशिनी ॥ कशा सुसुखिनी स्थला सा द्विवसुफला सिनी ॥ प्रादेशो न्नाधिकार्यना समिध  
सर्वकर्मणि ॥ अक्रान्तिशयते वा ॥ धिपलाशः सर्वकामदः ॥ स्वदिरश्राध्यं लालसा ॥ अणामागः सुदर्शन  
अस्य स्थानं सर्वकामाय सोलागपेडि वरस्यथा ॥ अष्टाविंशतिरष्टौ वा एकैकस्य त्वहो मयेत्रां महीमा नैदा  
द्विणां दद्याच्छान्त्यर्थं उष्टिर्वर्धनी ॥ मत्स्यपुराणे ॥ ॥ देवानामपि सर्वेषां सुपाशुपरमार्थवित्रं जिनस्वनेव  
मंत्रेण ह्येतव्याः समिधः पृथक् ॥ होतयं च द्युताद्यत्र चरुनु कादिकं सुनामंत्रैश्च शाङ्गतीर्ह्यादीनां व  
हति त्तिनुना मंत्रैश्च शाङ्गतीर्ह्यादीनां मन्त्रेण विद्यादिव्यं स्वयं देव्यः प्रत्येकं दशाङ्गतीर्ह्यादीनां व  
देवतादीनां प्रत्येकं चिन्तयित्वा एकैकां दद्यादिस्यर्थः ॥ होमं वा हतिलिः ॥ अनरेति च शाब्दे व्याहृतिश्च  
तस्य पुंश्च न स्रग्ं आत्तौ यो यो उदङ्मुखो संति मंत्रेण सोमाय च्छया सुना ॥ अग्निश्चादिवहति स  
सोमा ॥ यकीर्त्तयेत् उदङ्मुखो अश्येवं मंत्रे सोमसु तायवौ बृहस्पते अतिपर्य इति च यरो मंताः ॥ अ  
न्नाखरि ह्यतो रसाः सुक्रस्यापि निगद्यतो रने अराय त्वयुनः शन्नो देवी तिहो मये च कथानश्च त्रया ॥

६ सपा

३ वि  
मंत्र

पाधा ४

३३५

३ प्राशुखा वा उर्ध्वब्राह्मण उंगवाः ॥ मंत्रवंत यकं त्रिया अरवः प्रतिदेवता ॥ ऊत्वा उतां अरुत्सम्यकृततो तोमं सती रनेत् ॥ अक  
सोनेति स्स्याय  
होमः कार्यो द्विजन्मना ॥ आप्यायस्वे ३

२२

२ या  
३ ई

उवेति मंत्रा होरुदीरये च के उह ॥ निति इत्या के दुना मपि शांतये ॥ अखोर जेति रुद्रस्य बाद्ये होमि मा  
चरेत् ॥ आपो विष्टे सुमभस्यने तिसा द्वा मिति स्या ॥ विन्नोरिदं विस्तरिति ॥ मित्ये ति स्वयं तुक्वाः इदं मिदे  
वसानयं दाय जुज्या सुना तथा यमस्य चाः यंगोरिति होमः अकीर्त्तित ॥ कालस्य ब्रह्मयज्ञानमिति मं  
त्रः प्रशस्यतो चित्रगुप्तस्य चाज्ञानमिति वेदविदो विद्वाः ॥ अग्निदती रणामह इति वक्त्रे रुवा हतः ॥ उदुग्मं  
वरुणयै स पां मंत्रः प्रकीर्त्तितः ॥ च मेष्टयिष्यां त ॥ इति वेदे सुपाठतः ॥ सहस्रश्रीषां उरुणः इति विष्टो  
सदा ह्येता ॥ इदं चो मरुत्त इति शक्रस्य कथाते ॥ उत्रानपली सुस ॥ इति देव्यां समारसे ॥ अजापते  
युन होमिः अजापत्य इति स्मृत ॥ नमो सुसपे स्य इति सप्यां नो मंत्र उच्यते ॥ एष ब्रह्मा जी मविज इति ब्र  
ह्मण्युदाहृतं ॥ विनायकस्यात्वात्वन इति मंत्रो बुधैः स्मृत ॥ जातवेदे ये सुनवा ॥ दुगमिंत्रो यमुच्यते ॥ अ  
दिवद्वस्यरेते स ॥ आकाशस्य उदाहृतः ॥ क्राणाशिर्महीनांत देद्वयो अ प्रकीर्त्तित ॥ एषो षा अष्टवैति  
अश्वितो मंत्रः षष्ठीतो षष्ठीं इति च महीनादिव इत्यस्य पांतये ॥ अथ मंत्राः ॥ अक सोनेति स्य मंत्रस्य

५

२ न

जा

३२  
लि

होम

रण्यस्य ऋषिः सविता देवता त्रिष्टुप् छंदः। सूर्यप्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमे विनियोगः॥ १॥  
 आह्नो नरजसावर्षमानश्रुतिमाध्यंदिनपाठः। तैत्तिरीयाणोऽत्रास्ये नरजसावर्षमानो निविशय  
 त्रस्य तं मध्यं च॥ हिरण्ययेन सवितारथेना देवो याति बुधना निपश्यस्वाहा॥ आप्यायस्वे तिसो ममं  
 त्रस्य गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छंदः। सोमप्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमे विनियोगः॥ २॥  
 आप्यायस्वसमे सुते विश्रतः सोमहृषो नवा वाजस्य संगये स्वाहा॥ इमं देवेति मध्यं दिनैश्च ऋषय  
 तिस्य सोमं त्रस्य गौतम ऋषिः सोमो देवता गायत्री छंदः। त्रिष्टुप् छंदः। अंगारकप्रीतये समिदादि  
 संपादितद्रव्यहोमे विनियोगः॥ अग्निष्टुप् छंदः। कक्क सन्तिः अथिया अयो अपोरेता सिज्जति स्वाहा  
 ॥ उद्धुधस्वेति बुधमंत्रस्य ऋषिः बुधो देवता त्रिष्टुप् छंदः। बुधप्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहो  
 मे विनियोगः॥ उद्धुधस्वामे यैः प्रतिजागृधेन मिष्टाष्टके संसृजेथामयं चापुनः कृष्यस्त्री पितरं युवा  
 नमहा तांसां त्वयि तु मे सु स्वाहा॥ अग्ने विवस्व दुष्टा इति मंत्रस्य ऋषिः वंदे स्पति देवता  
 अग्निष्टुप् छंदः। अंगारकमंत्रस्य ऋषिः अंगारको देवता गायत्री छंदः।  
 उद्धुधस्वामिति बुधमंत्रस्य बुध ऋषिः बुधो देवता त्रिष्टुप् छंदः।

१३६

१। इह स्पते अतियदर्यं इति इह स्पति मंत्रस्य गजमद ऋषिः इह स्पति देवता त्रिष्टुप् छंदः।

इह स्पति छंदः इह स्पति प्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमे विनियोगः॥ इह स्पते अतियदर्यं इह इति  
 इह स्पते अतियदर्यं अर्हा कर्मकः साति कुरु मज्जने शुभ्यदीयं च स क्रतुः जाततद्रस्मा सुद्रविणं वेदि  
 शिबं स्वाहा। इह स्पते परिदीयेति इह स्पति मंत्रस्य अतिरथ ऋषिः इह स्पति विष्टुप् छंदः। अनाय  
 रिशुतोरसिमिति तैत्तिरीयशाखा परिपठितस्य शुक्रमंत्रस्य वेददेवकोटोत्पाति त्वा विश्वे देवाः ऋषय  
 शुक्रो देवता षड्पदाजगति। शुक्रप्रीतये समिदादिद्रव्यहोमे विनियोगः॥ अनाय रिशुतोरसिं अह  
 णाः शुभिवद्वात्रं कते मस्य मिद्रिया विपाने शुक्रमंधसाः इह स्पति इह इहं योऽष्टतं तं मधु स्वाहा। अ  
 यं मंत्रस्वे तियं ब्राह्मणं द्वितीयकोऽप्यष्टपाठके द्वितीयां च वाके समाप्रातः। तस्मिन्ननुवाक आद्यंतयो  
 ऋतेन सयमिद्रियां मित्वा दिवा कचतुष्टयौ समाप्रातं मध्ये पितृवत्तत्र वक्तेन सयमिद्रियां मयेकं वाकं  
 पठितं अयं धमध्रपाठः। तेनेदां दिवा कचतुष्टयस्यानुष्ठौत नार्थः। अतएवाः शंतयो वाक्यं चतुष्टय  
 स्पसमाप्रातं अनाय रिशुत इत्यस्येव माध्यंदिनशाखात् सारिणाश्चि सरस्वतीं दाअभयः। शुक्रो देवता।

देवता ३

अतिगतीहं दः शितामयोत्राजापतिक्रमिः जगतीहं दः इ सुक्रं तद्वाष्पाः निप्रायेण सुक्रं ते अन्वदिति  
 सुक्रमं वस्य तरङ्गाजक्रमिः सुक्रो देवता विष्णु प्रहं दः ॥ शने देवी रिति शने अरुमं वस्य सिंधु ही पक्रमिः श  
 ने शरो देवता गायत्री हं दः शने अरु प्रीतये समिदादिसंपादित द्रव्य हो मे विनियोगः शने देवी रतिष्ठयौ अ  
 पो संवं तु पीतये शंयोरतिष्ठवं तु नः स्वाहा शते मभिरिति शने अरु मं वस्य निहरि विष्णु क्रमिः शने अरु देव  
 ता उभि क्रु हं दः ॥ कयानश्चित्र इति राहु मं वस्य वाम देव क्रमिः राहु देवता गायत्री हं दः राहु प्रीतये स  
 मिदादिसंपादित द्रव्य हो मे विनियोगः ॥ कयानश्चित्र आनु व दृ ती सुदा क्रुः सर्वा कया सी विष्णु य ह  
 ता स्वाहा ॥ कांडा कांडे शरो हं ती ति राहु मं वस्य प्रजापतिक्रमिः राहु देवता अ नु सु प्र हं दः ॥ केतु क्रु प  
 न्नितिके तु मं वस्य म धु हं दः क्रमिः केतु देवता गायत्री हं दः केतु प्रीतये समिदादिसंपादित द्रव्य हो मे विनि  
 योगः ॥ केतुं क्रु प न्न केतु वे शो मर्या अपेशो स सु प हिर जय त था स्वाहा ॥ इति ग्रह मंत्राः ॥ अथ देव  
 ता मंत्राः ॥ आवोरानानमिति स्यां वि देवता रत रुद्र मं वस्य वाम देव क्रमिः रुद्रो देवता विष्णु प्रहं दः रुद्र

१०

प्रीतये समिदादिसंपादित द्रव्य हो मे विनियोगः ॥ आवोरानानमंत्रं रुद्रो ही तारं स त्पय जरो देव्योः अग्निं प  
 रातन धितोर विद्या हिरण्य रूप मवसे क्रु य धं स्वाहा ॥ अं वक्र मिति रुद्र मं वस्य वसिष्ठ क्रमिः रुद्रो देवता  
 अ नु सु प्र हं दः ॥ कुं सु शये तिरुद्र मं वस्य प्र क्रु य क्रमिः रुद्रो देवता गायत्री हं दः ॥ आपो हि से ति र्मे मा  
 वि देव ता रत तो मा मं वस्य सिंधु ही पक्रमिः उमा देवता गायत्री हं दः ॥ आपो हि ष्टा मयो नु व द्वा ना के र्जे द  
 धा तु नः म दे रण य र ह से स्वाहा ॥ गौरी मि मा ये तु मा मं वस्य दी र्घ त मा क्रमिः उमा भिका गौर देवता ज  
 गती हं दः ॥ श्री अ ते इ ति उ मा मं वस्य प्र जा प ति क्र मिः उ मा दे व ता अ नु सु प्र हं दः ॥ इ ति तै त्ति री य पा व  
 स्यो ना ए थि वी ति र्मे ग लाः ॥ धि दे व ता र त र्कं द मं वस्य मे धा ति थि क्र मिः स्कं दो देवता गायत्री हं दः ॥ स्कं द  
 प्री तये स मि दा दि संपा दि त द्र व्य हो मे वि नि यो गः ॥ ॥ स्यो ना ए थि व वा च ह रा नि वे श नी य ह्वा न श र्म स  
 प्र थाः स्वा हा ॥ ए दं स्कं द मे धा ति थि क्र मिः स्कं दो देवता गायत्री हं दः ॥ स्कं द प्री तये स मि दा दि संपा दि त द्र  
 व्य हो मे वि नि यो गः ॥ ॥ स्यो ना ए थि व वा च ह रा नि वे श नी य ह्वा न श र्म स प्र थाः स्वा हा ॥ य दं स्कं द मे धा ति

स्कंद इति स्कंद मंत्राः

विष्णु २ वि३

इति स्कंद मंत्राः

थिःकृषिःस्कंदोदेवताविष्णुश्चंद्रः॥वितामणौ॥यदुत्कृष्टंरतिमंत्रस्यमेधतिथिरिषिःस्कंदोदेवता  
 गायत्रीछंदः॥इत्युक्तंनमोत्रांतरं॥इतिस्मृतिविष्णुश्चंद्रोदेवतास्तत्रमंत्रस्यमेधतिथिःकृषिःवि  
 ष्णुदेवतागायत्रीछंदः॥इतिविष्णुप्रतीत्येसमिदादिसंपादितद्वयहोमेविनियोगः॥इदंविष्णुश्च  
 क्रमेवभनदधेपदांसमरुहमस्यपांशुरेखाहा॥सहस्रशीर्षेतिविष्णुमंत्रस्यनारायणःकृषिःउस  
 प्रोदेवता॥अनुष्टुप्छंदः॥त्वमित्सप्रथाश्रुतीतिद्वयस्यत्पांशुदेवतास्तत्रहामंत्रस्यसर्गःकृषिः  
 ह्यादेवताद्वहताछंदःत्रहाधीतयेसमिदादिसंपादितद्वयहोमेविनियोगः॥त्वमित्सप्रथाःस्यत्रे  
 तस्कंधिःत्वांविप्रासःसमिधनदीदिव्याविवादीवधसःस्वाहा॥ब्रह्मणातेब्रह्मयुजेतिब्रह्ममंत्रस्यवि  
 श्वामिवःकृषिःत्रहादेवतांशुश्चंद्रः॥इदमिदेवतायश्चंद्रप्रजापतयेधरोइदंसमाकेवनिनोहवा  
 मइदंइधनस्यसातयेखाहा॥इदयायेद्रीमरुत्तइतीदमंत्रस्यकस्यपःकृषिः॥इदंविश्रुतस्य  
 रीःतीदमंत्रस्यमहच्छंदःकृषिःयमोदेवतागायत्रीछंदःयमप्रतीत्येरुमिदादिसंपादितद्वयहोमेवि

५  
रुत  
वि३

२३५

ति४

अथवाकाशीरसीन्यस्यामधवात्तःकालोदेवताप

नियोगः॥आयांगोःष्टस्त्रिक्रमीदसन्मातरंखुरपितरंघप्रयुःत्वःस्वाहा॥इमंयमेतियममंत्रस्ययम  
 त्सःकृषिःयमोदेवताविष्णुश्चंद्रः॥ब्रह्मज्ञानमितिग्राह्यः॥धिदेवतास्तत्रकालमंत्रस्यविश्वामिव  
 ऋषिःकालोदेवताविष्णुश्चंद्रः॥कालप्रतीत्येसमिदादिसंपादितद्वयहोमेविनियोगः॥ब्रह्मज्ञानं  
 यमंत्रस्तादिसीतःसुसुवेनेत्राविःसुबुद्धियाउपमाअस्यविष्णुः॥शतश्रयोनिमसतश्चविवः  
 हा॥कार्णिरसीतिकालमंत्रस्यायुष्मःसोमःकृषिःकालोदेवताविष्णुश्चंद्रः॥यमायमधुमत्रमिति  
 कालमंत्रस्ययमःकृषिःकालोदेवताअनुष्टुप्छंदः॥आज्ञातमितिकेत्वःधिदेवतास्तत्रविष्णु  
 मंत्रस्यवैश्वदेवकांडेसमाज्ञातत्वात्रविश्वदेवताकण्यः॥विष्णुमोदेवताअनुष्टुप्छंदः॥विष्णु  
 मप्रतीत्येसमिदादिसंपादितद्वयहोमेविनियोगः॥आज्ञातमनाज्ञातमंतंयश्चजातवेदःसंवेदित्व  
 वेत्स्यथातयंस्वाहा॥॥वितामणौ॥आज्ञातमितिसोमःकृषिःविष्णुमोदेवताजगतीछंदःइ  
 त्युक्तंनमोत्रायमतिप्रायःसोम्यकांडेपिसमाज्ञातसोमस्यऋषिःशारवांतराभित्प्रायेणाचित्राकसो

विष्णुश्चंद्रः॥यमायमधुमत्रमिति  
 ५ रुततिछंदः॥यमायसोममिति कालमंत्रस्ययमःकृषिः कालोदेवताप

महं वम ३

आ ५  
त्रि ४

खचित इति त्रिप्रयुक्तमंत्रस्य यजुष्यकांशतः पातिवा इति त्रिभिः त्रिप्रयुक्तो देवता ॥ चित्तमणैश्च त्रिधा वसोः  
 खचित इति त्रिप्रजापति त्रिभिः त्रिप्रयुक्तो देवता अत्रुष्टुप्रबंधः इत्युक्तं तत्रापि त्रिधा त्रिधा यः त्रिप्रयुक्त  
 यत्र त्रिप्रयुक्तमंत्रस्य तद्वा ज्ञानाभिः त्रिप्रयुक्तो देवता त्रिष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥  
 देवता मंत्राः ॥ अत्रिद्वैतमिति सूर्यप्रथमि देवता तर्तमंत्रस्य भेदतिथि त्रिभिः अत्रिद्वैतगायत्री छंदः अ  
 भिप्रीतये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ अत्रिद्वैतमिति सूर्यप्रथमि देवता तर्तमंत्रस्य भे  
 धातिथि त्रिभिः अत्रिद्वैतगायत्री छंदः अत्रिप्रीतये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ अत्रिद्वै  
 तं वृणीमहे होतारं विश्वदेवं सां अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥  
 त्रस्युक्तः शेष त्रिभिः अत्रो देवता त्रिष्टुप्रबंधः ॥ अत्रो प्रीतये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ वं  
 दुत्रमंत्ररूपपाशमसद्वं धर्मं विमर्षां प्रथयात् अथा वयमादिसंप्रतेतवानससो अदितये स्यामस्वा  
 हा ॥ अथिव्योंतरिद्वैतमिति मंत्रं अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥ अत्रुष्टुप्रबंधः ॥

सचित्रचित्रमिति

नाम ४

४२५

संपादि ३

त्रिप्रबंधः अत्रुष्टुवापथिवी प्रीतये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ अथिव्योंतरिद्वैतमिति मंत्रं अत्रुष्टुप्रबंधः ॥  
 दासिधुः अत्रो मरुतो मादयंत धर्मो ज्योतिः स्वाहा ॥ सहस्रशीर्षां चरुभेति सुध्रप्रथमि देवता तर्त विष्टुमं  
 त्रस्य नारायण त्रिभिः विष्टुमं देवता अत्रुष्टुप्रबंधः विष्टुमं प्रीतये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ सहस्र  
 र्णां चरुभेति सुध्रप्रथमि देवता सहस्रश्रीः सहस्रपात्रं सत्समिं विश्वतो हृत्वा सतिष्ठ इशां गुलं स्वाहा ॥ इन्द्रो  
 दो मरुत्वतीति हृदस्य अत्रिदेवता तर्तं इमंत्रस्य कां स्पप त्रिभिः इन्द्रो देवता गायत्री छंदः इन्द्रप्रीतये समिदादि  
 संपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ इन्द्रो देवता मरुत्वते पवस्व मधुमत्तम ॥ अतस्य योनिमादीं सदे स्वाहा ॥ अत्रा  
 नपर्वसुतगेति सुध्रप्रथमि देवता तर्त शची मंत्रस्य इन्द्राणी त्रिभिः शची देवता अत्रुष्टुप्रबंधः इन्द्राणी प्रीत  
 ये समिदादिसंपादित इत्यहोमे विनियोगः ॥ अत्रानपर्वसुतगे देवते सहस्रतिः सपत्नी मे परा धमपथ  
 ति मे केवलं कुरु स्वाहा ॥ चित्तमणोत्त ॥ प्रजापति त्रिभिः त्रिप्रयुक्तं त्रिधा त्रिधा पागनुसारेण ॥ प्रजापते  
 नवैति शय्य अत्रिदेवता प्रजापति मंत्रस्य हिरण्य गर्दभिः प्रजापतिः प्रजापति देवता त्रिष्टुप्रबंधः ॥ प्रजाप

दि

नत

५३

तिप्रतयेसमिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः प्रजापतेन बदेवतां नश्च्यो विश्वाजातानिपरितान् स्रवायका  
मास्त्रे सुहृमसन्नो असुवयं स्यामपतयोरयाणां स्वाहा ॥ नमो असुसर्पेभ्यः इतिरा इद्रव्यप्रदेवतास्तस्य  
देवस्य ससर्पसर्पमंत्रस्य सर्पगङ्गासिः सप्ये विवता असु सु प्रहंदाः सप्ये प्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेवि  
नियोगः ॥ नमो असुसर्पेभ्यो यके वृष्टिमीमंये ॥ अंतस्त्रिये विवितेस्यः सप्ये स्यो नमः स्वाहा ॥ एष ब्रह्मेति  
के लुप्रसविदेवतास्तत्रहोमंत्रस्ये अदेवा अणयः ब्रह्मा देवता द्विपदा गायत्री बंधः ब्रह्मो प्रीतये समिदादिसं  
पादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥ एष ब्रह्मं यत्र बिजैः शोणी मश्रुता गणे स्वाहा ॥ खितामणो हं कस्ये प्रसिः रिः  
कं ॥ तत्रास्वांतरपावे हेतुः ॥ इति प्रयः प्रवेष्टता मंत्राः ॥ अथ विनायकादिपंचदेवता मंत्राः ॥ आत्तन  
ति विनायक मंत्रस्य कुसीदं सपिः विनायको देवता गायत्री बंधः विनायक प्रीतये समिदादिसंपादितद्र  
व्यहोमेविनियोगः ॥ जातवेदसे सुनवामसो मम सतीयते ॥ मिहं हातिवेदांसनः परं दितिर्गण विभ्रानवे  
वसिंधुरितात्मनिः स्वाहा ॥ काणाशिहुरिति वायु मंत्रस्य तत्राणिः वायु देता उभिः पूहं दः वायु प्रीतये

२-आत्तन इंदं घुर्मंतं वित्रं यानं च माया महा हस्ती दक्षिणेन स्वाहा ॥ जातवेदस इतिर्गण मंत्रस्य कस्य पराणिः घुर्गदेवता निः सु पूहं दः ५ गं प्रीतये  
समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥

आदिप्रस्येत्याकाशमंत्रस्य वससपिः आकाशे देवता गायत्री बंधः आकाश प्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥

काणशिशुः

श्वि२

समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥ भ्रमही गौ दिक्कृतस्य दीधितिं विश्वापरिप्रिया सुवदः द्विता स्वाहा ॥  
आदिप्रस्येत्याकाशमंत्रस्य वससपिः आकाशे देवता गायत्री बंधः आकाश प्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥ एषोऽप्येयस्य मंत्रस्य प्रस्ये सपिः अ  
ने देवता गायत्री बंधः अश्विनो प्रीतये समिदादिसंपादितद्रव्यहोमेविनियोगः ॥ एषोऽप्येयस्य मंत्रस्य प्रस्ये सपिः अ  
वः ॥ सुषेवामश्विना हृदत स्वाहा ॥ एति मंत्रैः सूर्याश्विना हृदत देवता नो हृदो क्रप्रकोरेण होमं कृत्वा जयादिस  
होमकरणपद्मे जयादिके वा प्रायश्चित्वा कुती कुत्वा ॥ हृदं नं दिवश्यने न प्रणी कुति जुहुयात् ॥ मही नं दि  
स्य प्रणी कुति मंत्रस्य चरहानत्राणिः वैश्वानरो देवतसि सु प्रहंदाः प्रणी कुति होमेविनियोगः ॥ हृदं नं दि  
वो अरतिं च धिया वैश्वानरं च तत्रात्तातमन्त्रिकविंशो मंत्राजमतिथिजगानो प्रासन्नो वात्रं जनयंत देवाः स्वाहा  
॥ इयं वृष्टि कुतिः फलसहिता च वति ॥ केव नस्विष्टकृदो ममिहंति ॥ अतस्विष्टकृदो मपद्मो प्रायश्चित्तो कुति  
स्यः प्रहं मे वस्विष्टकृत् ॥ अथथा ह्यगो विलः ॥ प्रा कृस्विष्टकृत् अत्रा वापइति ॥ अस्यार्थः ॥ आवापः प्रहोप  
य इहयज्ञे समिदादि होमाविहिता जयादयो हि कर्मसमृद्धिकामे न ह्ययं तो अतः समृद्धिकामेनः त्रयद्विष्य

जयादि होमानंतरं स्विष्टकृत् बोमः जयादि होमकरणपद्मे प्रायश्चित्वा कुतिभ्यः सर्वे २

तस्यैवाप्येजपादयः॥एवमत्राप्यावापशब्दस्यार्थोद्देशः॥आवापःखिष्टकृतःखिष्टकृतोमापशवतीति॥अथै  
 ष्टकृतैस्त्रैस्त्रिष्टकृतोमंत्रोऽथवा॥अथवा॥इहोमप्रकरणोक्तोमंत्रोऽथवा॥अथखिष्टकृतोमापशक  
 शापोक्तोऽकारेणजयादिहोमप्रवर्तनंइहोमाप्रवृत्तानतःखिष्टकृतैश्चत्वाः॥थवदिरंजनपरिधिप्रहरणादि  
 प्रायश्चित्तदेमात्रं कर्मनिर्वह्यै॥एषां कृतिस्तत्त्वाफनखरस्यकामोक्ताहोरात्रहोति॥व्यकारस्युचितामणो॥  
 घृतकुंलं वसोहोरांपातयेदनिशोपरि॥अहंवरमथाऽद्वेषमज्ञीकोटरवर्जितंशुबाहुमंत्रं॥युक्तत्वात्  
 तस्यैवहोपरिष्कृतधरांतथासम्पन्नंरूपपरिष्कारयेत्॥प्रावयेत्सुकृमार्गं॥सिंहेसर्वरोद्रप्रदंमहावेष्ट  
 नस्यस्यगेष्यसामवपावयेत्॥अत्राक्षप्रकारः॥अत्रैरुपरिष्कृतद्वयविष्टतामोदुष्टं॥अत्रप्रणामाणा  
 सुवैविध्यं॥तं दुर्लौपरिष्कृतं विष्टतेन निर्मलघनपरितेन कुंसेनाधोयवमावच्छिद्येत्॥स्यैवचतोरुस्य  
 रिवसोहोरांपातयेत्तस्यां च घृतधरायां सुकृपनालिकयात्तोपस्येत्पामाभेयादीनिष्टकानिप्रावयेत्॥  
 तत्राग्नेयं अग्निमलेषुरोहितमित्यादिमुष्टं दसाभ्यं गायत्रीकृतं॥संविष्टं वंशुविष्टोर्बुकमित्यादिषु

नारबं विचार

वंदीर्घतमस्यार्थे अत्रुष्टं दसं करोदं चोऽत्रातोपितरिति पंचदशर्चयत्समिदार्यत्रैष्टुसांपेदं स्वादिष्टयैति दश  
 गायत्रीमहावैश्वानरीमहावैश्वानरास्त्रैश्चैत्रारण्यकेषु षट्पयावकंसोमद्वयोएतन्नवेष्टां नरदैवतं जगतीपथ्याह  
 हतं छंदस्कं ज्येष्ठसामतुष्टं ह्रीं नदिवऽस्य षट्चीगतेतच्चतस्रं जायते वैश्वानरदैवतं वैष्टुसां वसुधरो  
 अमकात्रुवाकासुद्विधनप्रकरणे दर्शिताः॥ एतेषामाभेयादिसुक्तानामनेकत्वात् षण्णियात्मकस्य साम्नो निरिवृ  
 मशकात्वाच्चेताद्ययेयादिष्टकानि पाठतोमप्रदर्शितानि॥ यानि चाग्निमले विष्टोर्बुकं॥ एतोपितं स्वादिष्टयै  
 यतीकतः सुक्तानि दर्शितानि प्रदर्शनाथानि अत्र अग्न्यापि अग्न्यादिवैश्वानरैस्वशाखीकसाम्नानि य  
 यास्यासं पठेत्तयै च सूर्यसोमादिप्रकाशकाया कृष्णेनेत्येवमादयो मंत्राः॥ सुर्वदक्षिताः तिसुपलक्षणं श्रीं तस्य  
 त्वशाखापरिपठितासूर्यसोमादिप्रकाशकायथास्यासं होमादिकर्म सुधाद्याः॥ तथ्यातत्रार्थाद्यपि विज्ञेयं  
 अथ प्रकृतोपयुक्तमीमांसा प्रसूयते॥ एतद्यथा॥ चतुरवस्यो विधिः॥ ज्येष्ठि विधिः॥ त्रिं नियो गविधिः॥ यो  
 विधिरिति अज्ञातज्ञापनमृत्यान्निविधिः॥ एतन्नमीमांसया द्वितीयध्यायप्रमेयांशोर्बुचतुर्थपंचमध्याय  
 एवज्ञापनं विनियोगविधिः॥ एतच्छ्रुतीयाध्यायप्रतिपाद्यं प्रयोगविधिरितिकर्तव्यताविधिः॥ अंगानां क्रमादिषु विनियमः॥ एत

अधिकार

या विहिताः ३

गविधिः

योश्चमेयं अधिकारविधिः कमिपदसंज्ञो धनं कर्तव्यविशेषविधिः रित्यावशात् अयंचविधिः षष्ठाध्यायसमेयं  
 एवं चितेयत्र पृथग्वाक्यानि तत्र त्रिभिर्विधिभिर्योगादिभिः धनयकानिविद्यंते तत्र चत्वारोपि विधयकानिविद्यंते  
 तत्र चत्वारोपि विधयश्च उक्तिर्वाक्यैः संपद्यंतीत्यत्र त्रीणेषु वाक्यानि तत्र यथाशक्ति विधिरिव वाक्यैः  
 द्विविधवत्तु यन्निर्वाहः यत्र उद्देशतद्वासां विधिं वत्तु यन्निष्पन्नियत्र वैकं तथैकमेव वाक्यं विधिः  
 द्वावस्थानवत्तु यन्मैसवति इत्येवंमीमांसकनिर्णयः एवमेव प्रकृत्या वा द्वावस्थानवत्तु विधिसंज्ञानां  
 तेषु पञ्चारेषु तत्र द्वेवताप्रकाशका आवाहनहोमादिषु विनियुक्ता इवमंत्राः कर्तव्यशेषो लज्जतिथ्य  
 द्यप्यभिमुख्यदिवसस्यादयोः मंत्रादस्यादिप्रकाशकत्वेनाप्यादिवेवतासाहाय्येमादिप्रकाशकाश्चयापि  
 द्यागार्हपत्यांस्तु पतिष्ठत इति प्रकाशकायाः सवशुक्लागाहप्योपस्थाने खैरखत्वाविधिनायंथाकथं  
 त्रिदिशदिपदानमिदिपरमेष्ठ्यं इत्याद्यं चितनेन योगव्योगाहप्यं विवाभिमुख्यदिवसतिमंत्रोमा  
 यकीर्तयेदित्यादिभिः इत्थं प्रदर्शितवाक्यैरभिमुख्यदिवसत्वात्तत्रोपत्वेनाधनादस्यादिपदानं स  
 यत्र यत्र पृथग्नां विहितान्स्त्रतत्रस्तेमवेलेतउपसत्ताः कर्तव्याः येषु चोक्तो विरोधेणेन विनियुक्तमंत्रास्तेषामुपचारेषु

४२  
 ४२

नि ३  
 ३२ रजि

मादिसुयथाकथं विदित्तिरं गंतव्यमसां निरिवांगत्पार्थाशिवतोसिरप्रिशखउयत्रागौर्त्तैमापिगमनशील  
 अथवाभिषण्डौ मस्यामिश्रवात्पत्वं उदुधध्वारां प्रप्राप्यमिश्राहः पूर्ववदध्वेवर्ततेतेनोत्थिष्ठत्वाद्वा उदुध  
 ख्येयस्मिन्मदे बुधवत्संश्रुतेर्वागप्रपक्षरसामर्थ्ये इत्यादिति अतैयथापक्षकः कश्यपोलवति अतिभ्रुना  
 यरिभ्रुत इत्यस्मिन् विपानं सुक्रमेधस इति सुक्रमेधनामसां म्या सुक्रमेधेनां शनो देविरिति मंत्रे मंत्रेण शनिव  
 मस्माकं स्पर्शन इति वर्णद्वयस्य विद्यमानत्वात्समंत्रसंनिधौ तस्य कथानंश्चिद्व्यासुवदिसत्रत्रिपदं प्रयुते  
 चित्रपैराङ्गः यतः शिरसान्धत्तौ अथैवदिशाभ्यां पुद्गनीयो एव तत्र देयताप्रकाशकत्वं मवगंतव्यं यातेनोय  
 तेसादेवतेतिसर्वाः सुक्रमणिकापरिमाणायमविधानात्वात् अथयथाभ्याह उपायन्यासवासिधेयतिविरोध  
 स्यात् ॥ अथ प्रकृतमनुसरामः ॥ एवं घर्षा इत्यं नवरं वसुधारां विधायोः खरुहो कर्मकाथरेण एषोपा  
 त्रविमोक्षकादिकर्मकत्वात् इत्थं स्थापितवासुणकमशमाद्यायवहमाणमंत्रैर्ब्रह्माण्डज्ञानोपेतैर्द्विजै  
 पत्नी उवाचिपरिहृतस्य यत्नमानस्याऽसिधेकः कार्यः ॥ तथ्याचमद्वम्पुराणो ॥ अथाऽसिधेकमेवैणवत्

३४  
 ३४



७४३

६ शानानिमुखा

मंगलगीतकैः सर्वकुंतेनतेनैवहीमात्रेप्रायुदउभरवैः प्रयं गावयवेत्रं लं हेमस्वामिभक्तिः प्रजमान  
 स्पकत्रंयंयत्रुत्तिस्रपनंदिजैः अतिभेकमंत्रेणयेकवनंमंत्रवोपाध्यतिप्रथेणवाद्यमंगलगीतकैरिति  
 हार्थंशुलीयाकुंतेनतेनैवेतिते बुधधर्मशानादिप्रागस्थापितेनाएवंकारेणकजत्रोत्तरणतडुकंमीव  
 ऽतिभेकानिबिद्यते। प्रायुदयुरैरितिस्त्रपनकर्तृद्विजविशेषणं। अयमाभिप्रायः। यदियजमानः स्वर्गा  
 सिमुखस्वर्दित्राविजउत्तराः। निमुखाः शानादिमुखावाः। अययजमानउत्तराः। सिमुखतदाकविभय  
 व्राह्मिदियथावेति कुतः। दिक्कस्यापि मंगलिकत्वात्। चतुर्दशैरिति। एतत्तु तत्रैयपलक्षणार्थं। अथाभि  
 पेकमंत्राः। तत्रैवेदिकाः स्वस्वशास्त्राः। आद्याः। ॥ स्मार्त्तमंत्रासु।। सुरास्वानिषेचतुब्रह्मविष्णुमदे  
 श्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथासंकर्षणो विष्णुः। ब्रह्मनिरुद्धश्चतुर्विजयाय तो। आरंभे उलोप्रि  
 गवाचयमोवौ निर्वृत्तिस्तथा। चरुणः। पवनश्चैवधनाध्वस्तथाशिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वैदिक्यालाः  
 पां तुते सदा कीर्तितं स्मृ। धृतिमेवमुष्टिश्चद्विक्रियामती। बुद्धिर्लजावयुः शान्तिमुष्टिकंतिश्चमातरः।

तिर

एतन्नामनिषेचं देवपत्र्यः समागतः। आदित्यं चंमामो बुधजावसिता कजाः अतो स्वामिनिषेचं उराः केतुश्चतेपिताः।  
 एवं च पत्रिना स्वैककल्पितैः स्वैविधर्गधादिभिः सपत्रीकै यजमानैः न जायेत। सर्वैविधादिभिः शाननामिस्सकत्ररुक्षणैः।

देवदानवगंधर्वायक्षराहसपन्नगाः। अषयोमानवो ग्रावो देवमातर एव च। अथैव प्रवोद्धुमानगा देसाश्चासर  
 सांगणाः। अस्त्राणि सर्वशास्त्राणि राजानो धादनानि च। अथ अनिचरानि। कालस्यावयवाश्च यो एते धर्ममसि  
 षिं च धर्मकामार्थसिद्धये। अत्रुत्तिय्यपश्चात्तिलोदं न जानाततः। शुक्लो वरधरः स च अग्नेः पश्चादवस्थितो क  
 त्विना दक्षिणो दद्यात्। मत्स्यपुराणे। ॥ ततः शुक्लो वरधरः सुक्ता मास्यं तु लेपनं। सर्वेषु श्रीसर्वगोत्रैः  
 ज्ञापितो देवपुंगवैः। यजमानः सपत्रीकत्राविजश्च समाहितः। दक्षिणासिः प्रयत्नेन ही जयेत्तद्विस्मयः।  
 अत्रार्थदक्षिणादानप्रकारः। ॥ वरुणः। क्रमेणोदं शुखोपविष्टाय त्विजे प्राशुखोपविष्टाय जमाणं। कुर्यात्  
 जलपाणिः स च वस्त्रमाणं देवतामंत्रं पवित्राद्यं स्येत्स्य कर्मणः साहुण्यार्थं मसुक गोत्रायाः। मुकशर्मण  
 मुक वेदाभ्यापिनेः। मुक इत्यं दक्षिणात्वेनं दातुमुक्त्वा मतिवावदेति। दक्षिणात्प्रि। मत्स्यपुराणे। अ  
 र्याय कपिलो वेनेदद्यात्। रं वंतथैदवो रं। धुरं धरं दद्यात्। रलो मायक कुदादिकां तु भयजातरुपंतुयुरवेपा  
 वाससी। श्वेताश्वेदेत्युरवे क्त्वा गौरं क्त्वा नवो आय सं राह वेदद्यात्केतवे ह्यागमुत्रमग्रा सुवर्षेन सम

संभददत्तिकादक्षिणात्वेन

६३

तुवत्तन्मूर्त्युसुवर्णदातव्यो तत्राव्यधनेन प्रथमात्तगोमूर्त्यो तत्राव्यक्तयेऽवतमानावेय

कार्याय जमानेन दक्षिणा। पुरंधरो न द्वां जौ तुरुपं सुवर्षं सुवर्षेन समाहति। सूर्यस्य दक्षिणा धनो र्याव  
तामूल्येन याया दक्षिणा चूना च वति तावत्तन्मूर्त्युसुवर्षेन स्यात्तस्याः धरणा यतस्मकात्ममेव तावत्  
नचात्र सुवर्षं मेवः दृशं पठनीया। सुवर्षं मथवा दद्याद्गुरु वा येन तुष्पति। स्वमेव प्रदातव्याः सूर्या  
सर्वत्र दक्षिणा। इति विंतामणौ दर्शनात्। एवं च स्य धन विषयं प्रहलवेनेन च स्वसमं खर्णं दात  
व्यां गवाद्यता वै निष्कं स्यात्तद्वर्षादमेव वेति। दिशाः सर्वत्र परिकल्पनीयां तत्र कमेणं तत्रापि। मत्स्य  
पुराणे। कपिलादानं त्रः। कपिले सर्वदेवानां घननीया सुरादिणीतीर्थदेवमप्रीयस्मा। वत शान्ति  
प्रयच्छमे। शंखदानं त्रः। सुवर्षं शंखसुवर्षाणां मंगलानां च मंगलां विष्कना विष्टुतो नित्यमतः शान्ति  
प्रयच्छमे। हृषलदानं त्रः। धर्मस्वैव प्ररूपेण। मंगलादानं दकारकः। अष्टस्वैरश्विष्ठानामतः शान्ति  
प्रयच्छमे। धर्मस्वैव प्ररूपेण। जगदानं दकारकः। अष्टस्वैरश्विष्ठानामतः शान्तिप्रयच्छमे। प  
तवस्त्रदानं मेवः। पीतवस्त्रसुगीयस्मात्सुदेवस्य वस्त्रसो। प्रदानं तस्मै विष्णुनेतः शान्तिप्रयच्छमे।

२। हिरण्यदानं त्रः। हिरण्यगर्तगर्तस्वै देमबीजं विजावसोः। अनेतु। एकलदमतः शान्तिप्रयच्छमे।

। अश्वदानं त्रः। विकरश्च स्यस्त्रेण यस्मादृष्टतसं संच दार्कवादनं नित्यमतः शान्तिप्रयच्छमे। धेनुदानं त्रः।  
धेनोत्वेष्टिवा सद्यैयस्मात्केशवसन्निसा। सद्यैपापहरानित्यमांतः शान्तिप्रयच्छमे। लोददानं त्रः। यस्माद  
यसकर्मणि त्वदाधराणि सर्वदा। देनोद हंगलादीनि तस्माद्वांति प्रयच्छमे। ह्यगदानं त्रः। यस्मात्वे ह्यग  
ज्ञानामाज्ञांति स्वैश्च वस्त्रिणा याने वितावसो। नित्यमतः शान्तिप्रयच्छमे। तत्र द्वाहीकसुर्यदक्षिणा सावे सद्यै  
आदित्यादित्यो यथाशक्याः संकतामेकैकां गां दद्यात्। गोदानं त्रः। गवामंगे सुतिष्ठंति तु वना नि चतुर्दश  
यस्मात्तस्मात्सुतं मे स्यादित्थं लोके परत्र। सर्वेषु पि दक्षिणा पक्षे सुखर्वे क्रादक्षिणा व्यतिरेके णशय्यारत्ना  
नित्मिअत्रियो वाऽन्येस्यो ब्राह्मणे स्यो दक्षिणा दद्यात्। तत्र सति विसवै। तत्र शय्यादानं त्रः। यस्मा  
दस्य न्यशयने केशवस्य शिवस्य वा शय्याममाप्यश्रव्या सुतस्माद्भूमनिजन्मनि। तत्र शय्यादानं त्रः। यथार  
त्नेषु सर्वेषु देवाः सर्वप्रतिष्ठितौ तथा शान्तिप्रयच्छंरत्नदानेन मे सुराः। हृमिदानं त्रः। यच्छावर्षे  
नस्य कलानां हीतिषोडशी। दानान्यन्यानि मे शान्तिः। हृमिदानाद्भवतिहा। एवं संसृजयेद्भक्त्या वित्रशाब्दविवर्जि

२५४

२५४

नि २

ध्या २



सुवर्ण

तत्र सुवर्णो नितं दे मद्रव्यमेव निःशुशुवाचं नरजतद्रव्यं ॥ द्विक्रमलेरुप्यमाभोधरणो जशैवतेय  
नमानं तु दश विर्हरणेः पलमेव चानिर्धं सुवर्णं अत्वारकार्षिकं स्रामिकः पणः ॥ (तथाऽन्यत्रापि) ॥ माषो  
दशाहं यं जः षोडशमाषो निगद्यते कर्मः सुवर्णः पलमेव चानिर्धं सुवर्णं अत्वारकार्षिकं स्रामिकः पणः ॥  
तथाऽन्यत्रापि ॥ माषो दशाहं यं जः षोडशमाषो निगद्यते कर्मः सुवर्णः पलमेव चानिर्धं सुवर्णं अत्वारकार्षिकं  
स्रामिकः पणः ॥ (तथाऽन्यत्रापि) ॥ माषो दशाहं यं जः षोडशमाषो उत्रमाषो निगद्यते कर्मः सुवर्णः पलमेव चानिर्धं सुवर्णं  
स्रामिकः पणः ॥ पलानि विंशत्या तुला विंशति तौलिको तारः ॥ अस्पृश्रपरा संज्ञा उदतौलिकः तथा चोक्तं ॥ पलानां विंशति  
विंश पंच विंशतुला मता उदतौलिक एव स्याद्दारा विंशति तौलिकः ॥ ॥ इति सुवर्ण परिमाणं ॥ रूप्यस्य सु  
वर्णमाणा द्विजाः ॥ विष्णुयज्ञेन दर्शितम् ॥ अष्टाशीति गोरसर्षपा रूप्यमाणा पातैः षोडशतिर्धरणं नि  
र्कावा ॥ इत्यादि ॥ रत्नादिमानेषु विष्णुयज्ञेन दर्शितम् ॥ विशेषकं ॥ पंचयं ज्ञानवेनाभः शापासै

१४६

श्वत्सुर्णाः कलं जंधरणं प्राङ्गुः मणिमान विमोरदः म्हाटिका कलं न स्यातौ ल्येयं न हयं विदुः मज्जाटिकां वि  
शति सुधरणं तद्विदं प्रतः सुलमभ्याः तिस्रह्माणां सस्रह्माणां मपि स्मृतौ माषकः पत्ररा गम्पादि इतीला  
दिसु स्मृतं ॥ जहसस्रप्रयो क्रम्या नयस्मिन्मानमीदितः ॥ इति रत्नमानं ॥ अथ धन्यमानं ॥ अत्र लवि  
ष्योत्ररो ॥ पल द्वयं तु प्रसृतं द्वियुगं कुडवंत मतां चतुर्लिः कुडवैः प्रस्थः अत्वार आठकः आठकैः सैश्रुतु  
सिंश्रुद्रोण सुकथितो बुधैः कुंतो द्रोण द्वयं सैर्षपारी द्रोण सुषोडश ॥ ॥ तथा विष्णुधर्मोत्रेण ॥ पलं च कु  
डुवं प्रस्थ आठको द्रोण एव चान्यमानेषु वोधयत्क्रमशो मी चतुर्गुणः द्रोणेः षोडशतिः पारी विंशत्या कु  
सपवचं कुं सैश्रुद्रोण विबो हो धन्यसंख्या प्रकीर्तित विंशत्या द्रोणेः कुं न इत्यर्थः ॥ तानि धन्या निकियं ति  
द्वयं ॥ स्कंदपुराणे दर्शितम् ॥ यवो गोधूमधान्या नितिलाः कं युकुल ल्यकाः माणा मद्गामस्य राश्रनिष्पावा  
स्योमसर्षपा गवेधुका अनी वारा आठ संकपो तती नकाः चनका श्रीतका श्रैव धन्य मष्टादशो वहा धन्या नि  
हयः गवेधुकाः कुशकाः नी वारा आरण्यधी हयः सती नका वृत्तं लका इत्यर्थः ॥ ॥ वीनका षष्ठिक विशेष ॥ ॥

अध्या ४

॥सप्तध्वन्यानिषड्त्रिंशन्मतेनदर्वितानि॥ ॥यवगोधूमध्वन्यानितीलःकंगुलुजल्यकाश्यामाकंवीनकंचैवसा  
 सप्तध्वन्यादहतां ॥इतिध्वन्यानां॥ ॥अथसूत्रमिमांसेच्छते॥ ॥तत्रमाहर्षणुयधुराणो॥ ॥परमाणुमहासूत्र  
 मरेणुमहीरजःश्रवणंरेतलिहास्यकाचाभयवोगुलांक्रमुदधुपुंयुद्वैवाद्यष्टततौगुलोषडगुलंपदप्राड्डे ५  
 द्वितसिद्विगुणंमृतां द्विद्वितसिततोदसत्रलतोयविच्छेनो॥चतुर्हस्तेनवेदडेनलिकातयुगेनतुक्रोशोधनुः ५४  
 हस्तेद्वेगुणतश्चिचतुर्युणोद्विगुणंयोजनेतस्मान्नोकरंसेध्यांनकोविदेति॥ ॥वरिष्ठादशहस्तेनदोनादशवंश  
 समंततभंपंचास्यधिकंदद्यादिननीचर्मलक्षणं॥ ॥हृदस्पति॥ ॥दशहस्तेनदंडेनत्रिशदंडंनिवर्तनादशता  
 शेवगोचर्मब्राह्मणस्योदद्यातिया॥ ॥मक्षपशुराणो॥ ॥दंडेनसप्रहस्तेनत्रिशदंडंनिवर्तनाद्विसागहीनंगोचर्म  
 मानमाहःप्रतापति॥ ॥इतिहृदिसिप्रमानेच्छणं॥ ॥अथइष्टपरिमाणं॥ ॥तत्रस्कंदपुराणो॥ ॥पलद्वयेनप्रसूते  
 द्विगुणंकुडवंमतौचतुर्लिःकृत्वेःप्रस्थःआठकेसैश्रतुर्युणीचतुर्युणीसवेदोणइतोतद्रवमानको॥ ॥इतिद्र  
 वमानलक्षणं॥ ॥अथकनकादिनिर्णयः॥ ॥एकसक्रेननक्रेनतथैवायाचितेनवी॥उपवासेनधैवायंपा  
 २ कर्मविपाकप्रकरणोपपुस्तकशुद्धिलक्षणानि। तत्र पादत्रयुस्करुपापतिज्ञानेप्राजापत्यस्वरूपस्य ताउमत्राकत्वात्प्रथमपादत्रयुलक्षणम्  
 निधीयते॥ याज्ञवल्क्यः ॥ १

ला३

१४९

मुक्तर  
 वा२  
 दहङ्कःप्रकीर्णितः॥एकसक्रेनामदिवै॥ ॥इतिध्वन्यानां॥ ॥वोदितमथाङ्गकालिकैकनियमैरेककालकृतेतोजनं  
 नक्रेतुर्युस्योस्वमयानंतरंकलिस्करलोचनमदिवारावोवाःआर्थितोपिनतस्यसहजैजनमयाचितं॥दिवेवा  
 आर्थितोपश्चननोजनमिसपरेष्वकीयस्ववापरकीयस्वचान्मयानेनयस्मिन्नविद्यतो॥तद्वत्तमयाचितंदि  
 वासत्रापप्यतोजनमुपवासः॥एवंचतुरहःसाध्यपाददहङ्कःएकसकादौचयाससेध्याचाक्षस्ययाचनेनयस्मिन्न  
 विद्यतोतद्वत्तमयाचितंदिवारात्राप्यतोजनमुपवासः॥एवंचतुरहःसाध्यःपाददहङ्कःएकसकादौचयाससे  
 ध्याचाक्षस्यपाचनेनयस्मिन्नविद्यतोतद्वत्तमयाचितंदिवारात्राप्यतोजनमुपवासः॥एवंचतुरहःसाध्यःपाद  
 दहङ्कःएकसकादौचयाससेध्यानियमः॥ ॥पश्शरैणोक्तः॥ ॥सायंतुहादशयासाःप्रातःपंचदशसूतांचतु  
 द्विशतिरायाचाःपरंनिरसनंस्मृतैति॥सायंनकोप्रातरेकनकोप्रापक्षेवसुप्रकारेणदहं॥ ॥सायंद्वाविशति  
 यासाःप्रातःशक्यापेक्षयात्रिकल्पः॥आपक्षेवसुचतुर्द्विप्राजापत्यंक्रुंविचज्यवर्णाः॥अक्रमेणपाददहङ्कः  
 व्यवस्थमाह॥ ॥अर्धंनिरसेनंपादःपादश्चायाचितंअर्धं॥सायंअर्धं तथापादःप्रातपादश्चथाअर्धंप्रात  
 मि३  
 ते३

शुद्धिः स्मृताः चतुर्विंशतिरायाचाः परंनिरशनस्यः। क्रुद्धंदप्रमाणस्युपथावस्थवित्रे मुखमिति। अन्योयुपस्योः २

पादं चरेद्दृष्ट्वा यत्रैश्वर्यस्य दापयेत् प्रायश्चित्तं तुराज न्यत्रिरात्रं त्राहणे स्थितां प्रातश्चीद एकं तत्र त्रयं सद्यं पादो  
 न कत्रयं अयाचित मया वितत्रयं त्रिरात्रमुपवासत्रयं अयाचित पाद उपवास पादश्चेति पाद द्वयं मिलित्वा  
 कृत्वा न के पादरहिता मवशिष्टं पादत्रयं पदो न कृत्वा ॥ अन्न एवादाः पशं व ॥ सायं प्रातर्दिना ह्यस्यात्पापो  
 दो न न क वलितं ॥ इति ॥ अर्द्धं कृत्वा स्पृशकारां तैरम्या हस पत्रा सायं प्रातश्चयैके कं दिनत्रयं मया वितो दिन  
 यं वनाश्रीया कृत्वा इति द्वितीयते ॥ इति पाद कृत्वा दित ह्यपाम् ॥ अथ राजापत्य कृत्वा लक्षणं यथा  
 क्वरं ॥ यथा कथा चित्रियुगः राजापत्यो यमुच्यते ॥ अत्रायमित्यनेन सर्वनाम्ना ॥ एकं लक्षणं न कने न तथेवा  
 याचितेन चा उपवासे न चैवायं पाद कृत्वा अकीर्तितेति सचोक्तः पाद कृत्वा परमेश्वर्येण यथा कथं वि  
 दिमने न च त्रापाद्वा उपवासां स्वस्था विद्वद्विरिष्येकः पद्मः तद्यथा ॥ एकं न कत्रयं न कत्रयं मया वितवय  
 मुपवास त्रयं चैकमेकं सक्तादीनां त्रयाणां ॥ करण एकं सक्तादीनां मातुलो म्येन स्वस्थान विद्वद्विरिष्यते  
 ॥ तदहमवुः ॥ अहं प्रातस्महं सायं स्वहं मध्याह्नया वितम अहं परं वनाश्रीयात्वाजापत्यश्चरद्विजात्र

१५०

एकं न कादिना मातुलो म्येन  
 त्रयाणां २

तिलो म्येन संस्था न विद्विरिति द्वितीय पद्म शब्दं परं वनाश्रीयान् राजापत्यं चरद्विजात्रे उपवासत्रयं मया वित  
 त्रयं न कत्रयं एकं न कत्रयं मिति प्रातिलो म्ये न स्वस्थान विद्वद्विः ॥ असं पद्ममादा वासिष्ठः ॥ प्रातिलो म्यं चरे  
 दुरिति वंडकलितव दद्विरिति तृतीयं पद्मः एकं न कनकाया वितो एवासा त्रक्रमेणैके कं कवा पुनरेकं  
 काऽनुक्रमेणाव द्येया श्यमा हं त्रि दंडकलितव दद्विरिति उच्यते ॥ एवं त्रिरात्रा वनै प्राजापत्य कृत्वा सवति  
 अमुमापि पद्मं वसिष्ठ एवाह ॥ अहं प्रात रदं न कं म हरे क मया वितं अहः परा कं तत्रैकमेवं च तुर हो पौ  
 परा क शब्द उपवास परः ॥ अथ अत्रुग्र हाथं विजाणां मनुब्रर्म वतां वरु ॥ बाल दृष्टऽपुरो म्पु वं शि सु कृत्वा सु  
 वात्र हेति ॥ पूर्वोक्तं पद्म त्रय मथः ॥ यत मपद्म पद्मीकारेण वद्म माणस पदो म विवर्जनेन चरणेषु वरुथं क  
 पद्मं पद्म महं ऽगिराः ॥ तस्माद् अहं समासाद्य सद्मौ धर्म पद्मौ स्थितम प्रायश्चित्तं प्रदातव्यं ज पदो म विव  
 र्जितं ति ॥ इति राजापत्य लक्षणम् ॥ अथ ऽति कृत्वा लक्षणं ॥ तत्र मनुः ॥ एकं प्रास मश्रीया अहं वि  
 त्रीणि सर्ववशं अहं वोपवसे द्यः मति कृत्वा चरद्विजः ॥ त्रीणि त्रहाणि न वदिना नि सर्ववरा एकं न कादि

१३

के २

काले तत्रिय मयुक्तः मन्त्रित्यर्थः ॥ याज्ञवल्करः ॥ अयमेवातिक्रुष्ट्यायाणि प्ररात्रो जनः ॥ अयमेव  
वैक्राजापत्यधर्मकण्ड ॥ अयं तु विशेषः ॥ एकसकनक्रायाचितदिनेषु पाणिपत्रमात्रं प्रथमिप्र  
णमात्रमङ्गं ज्ञातनउप्रवोक्तद्विविंशत्यादिगामरितिअत्रवपाणिप्ररात्रमात्रमेवविधेयं ननुसो जन  
अतोयेषुदिनेषुप्राजापत्येत्ताजनंप्राप्तददववादेनपाणिपत्रात्ताविधीयतइतिनेपवासदिनेपा  
णिप्ररात्रो जनप्राप्तिमयाज्ञवल्कोक्तपाणिपत्रात्रयासमात्रो जनयोः शक्यपद्मो विकल्पे प्रो  
क्तप्रतिक्रुष्ट्यादादिद्यवस्थाप्राजापत्यवदेवउष्टयाः ॥ इतिअतिक्रुष्टुलक्षणम् ॥ अथकृष्णतिक  
कृः ॥ ॥ तत्रगोतमः ॥ अत्रुत्तद्वृत्तीयः सकृद्वाऽतिहृत्ः इतिहादशरात्रमित्युववर्ततेतोद्वादशरा  
त्रमुदकेनैववर्तनंनानोनेषुकसवति ॥ यमः ॥ एकैकोपिउमन्त्रीयात्रदकल्पेअहंनिशिअयाचितं  
अहंपिउंवासुभ्रुअहंपरंअतिक्रुष्टुचरेदेवंपवित्रंपापनाशनोचउर्विशतियत्रैतुनियतात्माजते  
द्वियः कृष्णतिक्रुष्टुजर्वीताकस्थानेहोतम ॥ कल्पे प्रातः एकसककालरतियावत्र एकस्थानइतिप

५४

पापाय

५४

६ ॥ अथतत्रकृष्णः ॥ याज्ञवल्करः ॥ तत्रचौरघृतांशुनां एकैर्कप्रत्यहंपिबेत् ॥ एकरात्रोपवासं च तत्र उदाहृतम् ॥ अथचदिनत्रउद्यसाध्यः कृष्णः ॥ यमि  
मलात तत्रकृष्णः ॥ तत्रकृष्णश्चुदिरात्रसाध्यः इत्यप्युदाहृतिः ॥ तत्रचौरघृतांशुनां शुभ्रिः समस्तैरेकदिने नवेवेति ॥ एकाउपवासइतिषुसाध्यत्वंतत्रकृष्ण  
कृष्णरन्विजो जलतीरघृतानिवात् ॥ वति अहंपिबेत्सासकं स्त्रीयोसमाहितः ॥ वतिअहंपिबेदिति ॥ जलादीपलके अहं अहंपिबेदित्यर्थः ॥ अयं वहादरा  
जलादिपरीमाणामा ६ पायत्रारः ॥ अथापिबेत्तु विपत्तद्विपत्तं पयः पिबेत् ॥ पयामकं पिबेत् ॥ अपि विरात्रोक्तमाकृतमिति ॥ त्रितत्रमुक्तोदकस्वाभ्यपिबेद  
एकयनेन प्रवोक्तद्वदशाहर्मभ्यातिक्रुष्टेद्वये नैककृष्णतिक्रुष्टेसवतीत्यर्थः ॥ याज्ञवल्करः कृष्णतिक्रुष्ट  
पयसादिवसानेविंशति ॥ यमेन ॥ चउर्विशतियत्रमात्रेकृष्णतिक्रुष्टेसो जकृष्णतिक्रुष्टेसो जेनादिनेषु  
कैकयासमात्रविधौयताडुक्तो जनेपिपत्रघटिकादिलियासपरिमाणं कृष्णयासपर्याप्तं हृदमन्त्री  
यात्राएवंकर्वममेकृष्णैवीतिक्रुष्टप्रकृतिरतप्राजापत्योक्तरीत्यासायं उदाहदशप्रासात्त्यादिप्रास  
संख्यापाता ॥ वडुश्चपातद्यसो जनदिनेषु ॥ गोतमाहृत् कृष्णतिक्रुष्टपदोक्षयत्रावापेक्षया विक  
ल्पः ॥ ॥ इति कृष्णतिक्रुष्टुलक्षणम् ॥ अथमांतपनं ॥ ॥ ज्ञातवल्करः ॥ कशादकृतुगोक्षीरं दधिभूतस  
कृत्तघृतां प्राश्याधुरैऽपुपवसेकृष्णमांतपनं चरेदित्यपराकर्षपाठः ॥ मितान्नरः ॥ ॥ गोभूत्रेगोमयं  
क्षीरं दधिसर्पित्तसो दकैति ॥ गोभूत्रादीनिषडप्येकी कृत्पपीत्राऽहारात्तररहितसंतिष्ठेत् ॥ परेद्वारु  
पवसेदितिदिनद्वयसाध्यः कृष्णः ॥ याज्ञवल्कोनेत्ररश्लोकंभ्यादीनांषडकृत्तयक ॥ षड्दिनेषुप्राशन  
विधानावत्रमितेनामेकादिनएवप्राशनं गम्यते ॥ परात्तरः ॥ ॥ गोभूत्रेगोमयं क्षीरं दधिसर्पित्तसो द

३ वि

जो २

६४

कांनिर्दिष्टं पंचगद्यं पवित्रं कायशोधने गोभूत्रं तत्र वर्णाश्रयं तयाश्चापि गोमयं। पयः कांचनवर्णा  
 यानीलायाश्च तथा दक्षिणं तत्र कृष्णवर्णाया सर्वं कायिलमेव वा अलासे सर्ववर्णानां पंचगव्येषु यं वि  
 धिः। गोभूत्रे माषकासु यौगोमयस्य तु घोटशौची रूपे द्वदशां प्रोक्ता दक्षिणं दशकीर्तिताः। गोभूत्रवद्भूतस्य  
 घातदंष्ट्रं उक्तशोदकां गोभूत्रवद्भूतस्येष्टाद्दंष्ट्रं उक्तशोदकां गायत्र्यादायुगोभूत्रं गंधद्वारेति गोमयं  
 आप्यायश्चेति वहीरंदधिकाज्ञोतिवैदधि। तेजोसिद्धकर्मिया ज्यं देवस्वत्वात्कशोदकम्। पंचागव्येषु च  
 हृतं होमयेदधिसंनिधौ। सप्तमपात्रास्तु वैदनां अष्टिनायासिकं लिख्यते। एतैरुक्तं न होतव्यं पंचगव्यं य  
 थाविधिः। इरावती इदं वक्ष्यमानस्यो केव संवती। एतां लिख्येव होतव्यं विगव्यं यथाविधिः। इरावती  
 इदं विष्टमानस्यो केव संवती। एतां लिख्येव होतव्यं इतः शर्षपवेद्विजः। प्रणवेन समालोच्य प्रणवेनाति  
 मंत्रवा प्रणवेन समुच्चयं प्रणवेणानुमध्यमेन। पलाशस्य पयः प्रणवेनापि वैश्वानराणां प्रणवेनाति  
 ण वक्ष्यते। अथैतानां यत्र गच्छिगतां पापं देहेति प्रतिमानवो ब्रह्मस्वोपि वससुदहस्यप्रिवेधेन ॥१५०

४५-चेतायस्त्वयगोमयं। पयः कांचनवर्णा यानीलायाश्च तथा दक्षिणं तत्र कृष्णवर्णाया विजक्तं वर्णागोमयं।

रकि

ति। ॥याज्ञवल्क्योक्तदिनद्वयमाध्यसात्तपनमेव ब्रह्मस्वोपि वासुतिवारिस्तिथीयता ॥ विज्ञानेश्वरका ॥  
 ब्रह्मैश्वर्यरूपेष्वापस्मकरीत्या पंचगव्यप्राशने ब्रह्मस्वोपि ति मन्यते मरीचि ॥ देवतासंप्रवृत्ता मित्रा तु र  
 वेणयस्यया ॥ वरुणे देवतासु वेगोमये हव्यवाहनः सोमनीरेरं किं त्रिवायुर्भूतेभ्यो सुदाहृतः। गोभूत्रं  
 ताश्रवांश्चिदकंसर्ववर्णं उतस्यवर्णो न्यस्यते ॥ गोभूत्रस्य पलं यादं अंशं घ्रायेत्तु गोमयं ॥ ह्योस्यपि पलं या  
 दं पलमेकं उक्तशोदकां प्राप्नोति ॥ अथैतानां यत्र गच्छिगतां पापं देहेति प्रतिमानवो ब्रह्मस्वोपि वससुदहस्यप्रिवेधेन ॥  
 नोको गायत्र्या प्रजापतये न वदेवता नित्यात्रैश्वर्यं नदी प्रप्रवणेतीरे रहस्येति कर्तव्यं तथा ॥ सुक्तवा  
 साः परिव्रज्या अहोरात्रे ॥ धितः पिबेच्च पलाशेन च प्रात्रेण च्चिबपत्रेण वा पिबेच्च ट्ठीयंतां प्रयात्रं वात्र  
 ह्यपानाणि तां निवो ॥ प्रतिमासं पौर्णमास्यां ममावास्यां च वा पिबेच्च ब्रह्महापरदारीवये चान्ये स्थिगता  
 मलाः ॥ ब्रह्मस्वोपि देहे सर्वं यथा शिष्टं प्रमेवतु ॥ ॥ जाबालः ॥ गोभूत्रं गोमयं वहीरंदधिसां उक्तशोदकं  
 एकैकं प्रपेदे पीत्वा अहोरात्रं मरणं नश ॥ कृष्णसांतपनेनां मसर्वपापप्रनाशनेति ॥ एतज्जाबालोक्तं मसं



६ सांतपन इत्यादि एकैकस्मिन्ने एकैकं विवेक्य सप्तमदिन उपवासः । एतानि चोदकादि ८

अनेन ३  
१५९

हसाध्यंसांतपनो कृत्वासांतपनेनामसर्वपापप्रनाशनेति। पृक्तजाबालोक्तम् ॥ प्राहसाध्यंसांतपने ॥ ॥ इ  
तिसांतपनलक्षणम् ॥ ॥ अथयति सांतपनम् ॥ ॥ शंखस्मृतिः ॥ ॥ एतदेवत्रयहास्यसंयत्तिसांतपनं स्मृतम् ।  
एतदेवेति मिश्रितं पंचगव्यं पराश्रयते तत्पंचगव्यं दिनत्रयमहोरात्ररनिरपेक्षेण विवेदिपर्यः ॥ ॥ इति  
यांति सांतपनलक्षणम् । विवेकं अहं वक्षिष्ये सर्वपापैः ग्रहं चौरंततः सुविः महासांतपने होतस्वर्वाप्रणे  
धनवे ॥ अथ महासांतपनं ॥ ॥ यात्रवक्ष्यः ॥ ॥ एतच्छांतपनं द्वयं घडहस्योपवासकः । मन्नादेन उरुह्वये म  
हासांतपनं स्मृतम् ॥ ॥ गोमूत्रं गोमयं चौरं दधि घृतं कुशोदकानि प्राशनादीनि अहनिरो निर्वर्कानि । एवमन्य  
त्रापि ॥ ॥ यमः ॥ ॥ त्र्यहं पिबेत्तृणं मूत्रं एतत्पंच दृशाहसाध्यं । जीबालिः । प्रसामेके कमेतेषां त्रिरात्रसुपनो  
जये त्र्यहं जोपवसे देयं महासांतपनं विदुरिति । प्रसामपूर्वोक्तं सूत्रादीनां अथमेव विंशतिरात्रसाध्यो मस  
सांतपनं कृत्वा स च सुत्रवती सिमा जयिष्ये हरिणपवणां सुवयः व्यस्यति । अथोदकतर्पणं । नमो  
हमाय संहमाय सुवतो मापसाय सुनर्वमवेन मोमो ज्यो म्पयिवसु विथय सर्वविदाय नमः परायसु १२७

३ त्र्यहं विगोमयं पबेत् । अहं दधि अहं सर्पि अहं हारंततः सुविः महासांतपनं होतस्वर्वाप्रनाशने ४

पराय महापराय परविभवेन मोमो ज्यो यो म्पयिवसु तिसय सर्वविदाय नमः परायसु पराय महा  
पराय परविभवेन मोरुद्राय पशुपतये महते देवाय व्यंककयैकचरायाधिपतये हराय शर्वाये शा  
नोत्राय वद्विणे द्विणिनेकं पद्मिने नमः । सूर्याग्निदियाय नमो निलग्रीवाया शतिकंठाय नमः । कृष्णपि  
गल्लयतमो ज्येष्ठाय अश्रयाय वृद्धाया हरिकेशयोर्दरे तसे नमः । सस्याय पावकाय पावकवर्णयिका मा  
यका मरुपिणे नमो दीप्राय दीप्तरुपिणे नमः । गार्गीयस्त्रीणस्त्रिपणे नमः । सौम्याय सुसुकरुषाय महासु  
षाय मध्यमुसुकरुषाय तमसुकरुषाय अरुचारीणे नमः । अललाठाय कृतिवाससे नमः । तये न देवादिनो  
पस्थानमेता एवाद्याद्रतयस्ति अस्मार्थः तिष्ठेददनिराबावासीत त्तिप्रकाम इति वसुअजापन्यादि  
कृत्वा यानो व्यात्पापान्निप्रमेकेनेव कृद्देण विमुक्तो जविष्णामीत्येवंकामयाते अयमन्यावश्यककर्मा  
विरुद्धेष्कालेषु तिष्ठेत्त्रिरात्रवासीता तथा रौरवयोद्याजये सामानित्यकर्मा विरोधिकालेषु तिष्ठेत्त्रियत्र  
वासीत तथा रौरवजोद्याजये सामानित्यकर्मा विरोधिकालेषु अजुंजी तपे च अनाशुः । श्रीमधारयेत्य

स्याद्युधिडहानुजद्वरित्यस्याशुश्रीवेनगियमानेसामधीरोरवयोधाजपेअतिधीयते। अत्रसवनोष्ठ  
 दकोपस्फर्नि। मंध्यात्रयेत्वात्रिघ्रवणस्वानमित्यर्थः ॥ हिरण्यवणाश्चिष्ठासिरसिमासुर्नमेवव। एत  
 एवमार्जनस्थानान्नत्रे ॥ ॥ अथोदकतर्पणं ॥ ॥ उदकतर्पणमित्यनेनान्नर्जुनपत्रतर्पणंनस्थले  
 इतिगम्यते। तत्रमंत्रानमोमहायेतेयमादयः कृत्विवासेनमश्न्येतदज्ञाः अत्रमंत्रः संदर्शस्या  
 द्वावतेष्वनमश्न्येअवणान्मंत्रदोमंत्रस्वेनमः शब्देत्तवति। तथावैवमंत्रयोगः। नमोहृम्यायम  
 हमायमहसायधृत्येनयसायधुनवासेनमश्ति एवममोहृपायेइत्यमरच्यमूर्त्विदायन  
 मः इत्येकोयंविवेशात्रद्विच्यहसर्पित्रहृद्विरित्तः सुत्रिमहसातपनेनेनमर्षपापत्रनाशन  
 पतत्यं वदशाहसाध्यावाः ॥ ॥ कणमैकेमेतेषां त्रिरात्रउप्येत्तयेत्र। अहृद्योपवसेदस्यमहासा  
 तपनेंविदुइति। षणोन्नवेकिगोस्त्रादीनांअयमेवविशतिरात्रस्फौदेमहासांतपनकृद् ॥ ॥ इ  
 तिमहासांतपनलक्षणम् ॥ ॥ अथपराकः ॥ याजवल्कः ॥ ॥ द्वादशाहौपवासेनपराकःसुमुदाहृतः ॥ ॥

इतिपराकलक्षणम् ॥ ॥ अयाजवल्कप्रतष्ठा ॥ याजवल्कः ॥ योगश्रीषाहवात्रा ॥ जमामंनित्यंसमा  
 हितः। अत्रंश्रयावकं कुर्यात्सर्वपापाप्रहृत्रये ॥ गोलक्षणार्थयावाद्वातदनंतरंगोमयमध्यनिष्ठता  
 व्युद्दीवातेर्यवैवउत्क्रातेनांतेनैककनकना। निऊर्बन्मासंनयेवा। एतद्यावकत्रतमित्युच्यते। सर्व  
 वदेयवानादायगोशूत्रेणयाकंविधायसर्ववदेवमासवर्तनेनगोशूत्रयावकत्रतमित्युच्यते। अत्र  
 एवाहयोगयाजवल्कः ॥ ॥ अमृतेवारयिवागोगोशूत्रान्यवमिश्रितां। गोमयस्थाश्चसंयुता ॥ गोशू  
 त्रेयावकत्रमिति ॥ ॥ इतियावकत्रमगोशूत्रयावकत्रतलक्षणम् ॥ ॥ अथपयोत्रतथा ॥ तत्रकृद्  
 तिकृद्ः पयमानेकविंशतिमितियाजवल्कोत्तरकारणमासमेकप्रस्थमात्रपरिष्णांप्रथमावर्तनेप  
 योव्रतमित्युच्यते। यस्मिन्न्रतेयणद्रद्येणशरीरवर्तनेक्रियतेतद्भूतेनद्यपदिश्यते ॥ अतएवमाक  
 र्त्तये ॥ पत्रेर्मतःपत्रकृद्ः। प्रयोसकृद्ः। उच्यते। मूलकृद्ः। मृतेमृलेः। अपकृद्ः। मृतेनवेतिप्रयोव्रतं ॥  
 अथवाद्रायणं ॥ गोतमः ॥ अथतः। वहायणंतस्योकीविधिः कृद्ः। अतिकृद्ः। पाजापत्यकृद्ः। विधि

मन्त्रद्वयार्थः ॥ तत्रथा ॥ तिष्ठेदहनिरात्रावासीतस्त्रिकामः सत्यं वदद्देनस्यैर्बमंसायेतरोरव यैधाजपो  
 नित्यं प्रसृजितं अत्रुसवनं पुदके पस्पर्शनां मापो हि सति च तस्य निः मंत्रौ ॥ अथ अत्रैत्रापि द्रष्टव्यं ॥ एतेष्वयो  
 दशमं त्रैश्र्वणीं कुर्यात्त्रातस्य अतदेवा दिव्यो पस्थानमिति तदेवादित्यो पस्थानं कुर्यादित्यर्थः ॥ एता एव सा  
 जतया इति ॥ एतैरेवमंत्रैराज्यहोमः कर्तव्य इत्यर्थः ॥ अयं च होमलौकिकः अथ तिष्ठाप्यकार्यः एवमथात्तथा  
 द्रायणी ॥ तस्योक्तो विधिः ॥ ॥ इत्यनेन साधारणेन धर्मादिष्वं चाद्रयणे विशेष्यमग्निं हतपत्रं  
 त्वरेकुं त्रुते ॥ योर्णमासी सुपवमेदाप्यायसतेपयास्मिनवोनय इत्येतास्त्रिष्यर्षणां आस्पृहोमो हविष  
 श्रात्रुमंत्रणुपस्थानं चंद्रमसोयद्देवादेवदेहनमितिवत्तस्य सिद्धं द्रयात्रादेवस्य त्रैतवात्रैममिहि  
 रोत्तुर्वः स्रजसत्यं यस्तः श्रीरूपिडौ जपुरोधर्मः शिव इत्येतैर्यसिात्रुमंत्राणं प्रति मंत्रनमः स्यादे  
 ति वा स्वर्वात्रया मसमानमास्पृशिकारोक्षशक्काणयाक्कशाकपयोदधिघृतधूलफलोदकानि  
 तविष्पत्तरोत्रप्रशस्त्रानि योर्णमास्यां पंचदशयासावचुकेकापजयेनपरपक्षमश्रीयात्रात्रमा

वस्थास्य पोष्योकोपचयेन प्रवृत्तं पञ्चविपरीतमेकेषायां वांद्रायणो मासयेतदाश्चाविपापोविपाप्या  
 सर्वमेतेह निद्वितीयमाश्वा दशस्रुदिया परान्मत्मानं च पंक्तिं पुनानि संवत्सरे वै द्रमसासलोकतामा  
 न्नोति ॥ अथायमर्थः ॥ तपनं च तं चरेत्ताप्रयति ॥ पापामितितपनं पत्रं च तं चरेत्तापावेत्तं चंद्राय  
 णं पंचेन नमस्त्रिष्यर्षणां योर्णमासीयासोपक्रमतिथिश्च त्रुतां निरीक्ष्य सर्वेतिथौ च त्रुद्वेष्या  
 सुपवासादित्यर्थः ॥ आप्यायत्वेत्यादितिर्नवोनय इत्येते मंत्रैः स्यर्षणां चंद्रमसः स्रुते तैः रेवदिकर्मंत्रै  
 ररूपहोमं विधाय ततो हविरत्रुमंत्रैः पश्चादेतैरेवमंत्रैः चंद्रमस उपस्थानं कुर्यात्ततोयद्देवादेवदेह  
 नमितिवत्तस्य सिद्धं द्रयात्रादेवस्य त्रैतवात्रैममिहि रोत्तुर्वः स्रजसत्यं यस्तः श्रीरूपिडौ जपुरोधर्मः शिव इत्येतैर्यसिात्रुमंत्राणं प्रति मंत्रनमः स्यादे  
 ति वा स्वर्वात्रया मसमानमास्पृशिकारोक्षशक्काणयाक्कशाकपयोदधिघृतधूलफलोदकानि तविष्पत्तरोत्रप्रशस्त्रानि योर्णमास्यां पंचदशयासावचुकेकापजयेनपरपक्षमश्रीयात्रात्रमा  
 मंत्रानेनमः स्यादेतियाप्रसृजितप्रणवादिष्वः पर्यंतानामपव्ययत्वेन नमः स्यात्सायोगेन च त्रुद्वेष्या



क्रिप्रवणं महः प्रवृत्तिश्च वृत्ती प्रवृत्तं नवति महत्सेनमः ॥ महसेघादेति वा एव मन्यत्रापि न  
 नया ह्यया तपसि सययमसे अथैव ज्ञेयै जमे छफाय धम्माय शिवायेति या सप्रमाणमास्या वि  
 रेणा अस्पस्या सुवे आदाने नया र्वदने सुखं विशतिता वदन्नया सप्रमाणं लवती त्यर्थे च कर्त्तव्या सु  
 पोषितस्वपोणमास्या तिथि सुया स संख्या नियममाह ॥ पौर्णमास्यां पंचदश्या सा मित्यादिना ॥ प्रवृत्ति  
 दमि त्यन्नेना ॥ एतच्च पिपीलिका मध्यं द्वादश्या ॥ अथयवमध्या विपरीतये तस्पमिति ॥ अथय  
 वमध्यां द्रायणो अमावास्याया सुपवासः प्रतिपदा तिदितिषे कैकपचयः ॥ पौर्णमासी मतिवाप्य  
 पुनः कृष्णपदा ति तिथिषु मावास्या वधिका श्लेकैकया सा पचयः अमावास्याया सुपवास इति क्रमः  
 अत्र या स प्रहन कालश्चंद्रोदयः अनेन मंत्रेण मंत्र कल्पादयः श्रायै कर्त्तव्यं सारेण कर्त्तव्यता मथ  
 न समये निरूपयिष्यन्ते ॥ याववत्का ॥ तिथिषु द्वादश्या वर्ये ति वा सुको शिष्य संमिता च ॥ एकैकं द्वादशये  
 कश्चेति द्वैव द्वादश्यां चरं उदयेन उक्ती त एषवां द्रायणो विक्रि ॥ तिथिषु द्वादशा ॥ प्रथम द्वितीयादि

वंदकलायुक्त प्रतिप द्वितीयादि तिथिषु द्वादशा श्रेयै र्वा ज्ञेयै शशुक्के कलपद्वे शिष्य संमिता र्मद्वयं  
 प्रमाणा र्वा द्रायणो का स दिव्या वंदस्त्रायणं चरण मिद्वरणं यस्मिन् क्रमो लित द्वादश्याणं संज्ञाया  
 दीर्घः इति पिपीलिका मध्यं द्रायणमथा प्रिवेति ॥ पिउनां च वरिण दधिकं शत द्वयं मासेनो पकुं जी त  
 कथं यथा कथं चि अत्रायं क्रमः ॥ दिने दिने श्रेया सुचं जी त अथवान कं च उरो दिवा च उर इति अथे  
 कश्चिदिने च उरो परस्मिदिने द्वादशा उत राकरा उरुपोषा पशुश्चि र्षो उश दिन द्वय सुपोष्यती  
 यदिने द्वादश्या दिव्या दिप्रकाराणां मध्ये शंतरापेक्षया उं जी ति ति अत्र तिथ्यपेक्षया प्रासन्नियमो नास्ति  
 उपकृष्ण कृष्ण प्रतिपदो न न्यत्र ॥ यस्त्वनैरंतर्योणो वति धवां द्रायणं मुष्णानं करोति तस्पति थवृद्धि  
 द्वादश्वशेन कदा विद्वितीया विद्यारंते लवति तन्न दोषः ॥ वंदग व्युत्तरणं मंत्रेणा ॥ विशद्विजात्मक  
 मावन मासा उधेयवा ॥ अत्र द्वादश्याणं शश्रेणो ष्टद्वर्म अश्रयः ॥ उं उपायना मयने मासमात्रे चो  
 उं उयात्रा अस्मिन् द्वादश्याणं श्रवणं प्रकरा तमेका दृश्य पवत्सा दिन तप्यते तिथे नियमनया सनियमाना

वात्रायत्रवर्तिथिनियमेनग्रामतियमन्त्रवर्षेकाग्रशुपवासादिकमथेनकारयेत्पञ्चेवप्रकारेण  
 कवनमनुनाविशेषसंज्ञादर्शिताअष्टावष्टौममश्रीयानिंडाभस्मंदिनेस्थितेनियतामाहविष्णुयति  
 वांद्रायणंवरत्रावतुरप्रातश्श्रीयानिंडाद्यियसमाहितवतुरेभमित्स्वर्यशिसुवांशयणंवरत्रयथाक  
 र्यंविदितातीस्वीशीतिःसमाहितः। मासेनात्रहविष्णुवचंद्रस्येतिमलोकतेति ॥५५॥ त्रीस्त्रीवर्षेण  
 त्रममश्रीयानियतामाहवताहविष्णुवचंद्रवैमासेष्टांवांद्रायणंस्मृतेति ॥ इतियनिवांद्रायणादी  
 नि ॥ अथगोवधव्रतम् ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ पंचगद्यां पिवेद्रोघोमासिमासीतसंयतः। गोष्ठाशयांगोष्ठाभी  
 गोषदानेनप्रसुष्टाति। कृच्छ्रं वैवा नि कृच्छ्रं च रेखां प्रिसमाहितः। दद्यात्त्रिंशत्त्रयोष्वष्टकैकादश्याः।  
 अत्रव्रतचतुष्टयविहितेऽष्टादशान्तरानिरपेक्षेणपंचगद्यां पिवेत्प्रातरो गोशानाशयनः। प्रातस्नापवगह  
 तीरुगहवतिष्ठंतीरुतिष्ठंतीरुतिष्ठन् अत्रैरपि नियमसुकोमासमासीतातनामासांतेगाबालणा  
 यदवाहृष्टीत्येकं व्रतं। पंचगद्याहारद्यतिरेकेणप्रदोक्तधर्मस्ततो मासं व्रतः। पंचकृच्छ्रं चरेदिति ॥

१५५

तीयां तथैवप्राजापत्यस्थाने अतिकर्तुं मासंचरेदिति तृतीयां त्रिंशत्त्रयोपवासं कृत्वा नोदशगांश्च दद्यात्  
 तिवृत्तीं अत्रेयं च वस्था। अज्ञानतो ज्ञातिमात्रबालणसर्वंधिगोमात्रवधे दद्यात्त्रात्रोपोष्यष्टकैकाद  
 शाशुगा इत्येतत् अज्ञानतः। त्रियसंबंधगोमात्रवधेद्यापादाने। पंचगद्यां पिवेद्रोघोमासमासीतसंयतः।  
 गोष्ठाशयेगोष्ठाभीगोषदानेनप्रसुष्टाती इत्येतत् अज्ञानतश्चैशसंबंधिगोमात्रद्यायादनेमासमतिकृच्छ्रं  
 र्यात्र अज्ञानतश्च अस्त्राभिकगोमात्रद्यापादाने मासं प्राजापत्यव्रतंचरेत्कामसुतेदं प्रपिकल्पं अथवभ  
 वाद्युक्तानि व्रतानि प्रवृत्तिं केशविप्रयेषु विषयांश्चरेत् देशकालात्प्रमाद्यपेक्षया योज्यानि तानि व्रतानि  
 मदनपारिजातेस्मादिः सम्यक्प्रदर्शितानि। कर्माविष्णुकपरिच्छेदेऽस्मिन्नेषामचतोपयोगालावात् ॥ इति  
 गोवधव्रतम् ॥ अथमासोपवासव्रतम् ॥ वितामणौह ॥। नारद उवाच ॥। तगावत्रश्रोतमिहामिब्रतान  
 सुत्रमद्यव। व्रतं मासोपवासस्य फलं चाम्ययथादितम्। यथा विधानैः कार्यांत्रतवर्षा यथावतेव आरभ्ये  
 तयथा सर्वसमाप्याहियथाविधि। यावत्संख्यं तु कर्तव्यं तावद्बुद्धिपितामह। व्रतमेतसुरश्रेष्ठ विष्णवेनसु



मादद्यावृद्धेयावत्वयः साधुमतस्तद्व्यनयोधनायाद्यन्तिततोश्रेष्ठतद्वृष्टवृष्टीमितोद्यराणां वयथावि  
 सुप्रप्यतां वयथागविः मेरुशिखरिणंतद्वृष्टेणतेयश्चपञ्चिणासातीर्थानां उयथागंगाज्जाणां सुयथाव  
 णिक्राश्रिष्टसर्वतानां उतद्वृष्टमासोपवासो सर्वत्रतेष्वयस्युपैतीर्थेषु मेनुष्यसर्वदानोत्तमश्चापिलेना  
 सोपवासकृत्रप्रमितोमादि तियत्रैविविवेच्यैरियद्वृष्टोपतस्युणमवात्रैतियन्मासपरिलंघनात्तनेनजघ  
 ङ्गंददत्ततपस्यप्रकृतस्यथायः करोति विधानेन नरोमासस्यप्रोक्षणश्रविःपवैश्वयज्जतेनाच्यवर्जन  
 दनप्रयुरोराज्ञातोलक्षक्यान्मासोपवासनवैश्वानियथोक्रान्तिरुवाभवत्तानि तु द्वादश्यादीनि  
 दुष्पणानिततोमासमुषोषणं। अतिरुद्धं पराकं वक्रुद्धं चंद्रायणं ततः मासोपवासं कुर्यात् तदुक्तिप्रज्ञयाततः  
 आश्विनस्याऽमले पक्षे एकादश्यामुपोषितः उतमेतद्वृष्टीयाद्यावत्रिंशदिनानि उवापुदेवं समस्युर्का  
 विकेसकलेनरः। मासोपवसेद्दश्यामुपुष्टिफलनाशवेत्। उतस्यालयेत्तन्मासिकालं कसुमैः अने।  
 मालतीदीवरेपदैकमलैः सुगंधिनिः। कुंकुमाशीस्वर्जरेवनिपवरचंदनेः। नेवेद्यधृपदीपादौ रव्ये

उजानद्वेनशमनसाकर्माणावात्ताप्रजयेरुद्धवृष्टीं सर्वसन्नदयायुक्तः शांतदृष्टिर्हिंसकः। सुधोवाम  
 नसंख्योवावापुदेवप्रकीर्तयेत्संख्येवालोकाध्यादिवादानुपरिकीर्तनात्। अत्रस्यवर्जयेत्सर्वप्रासंतं वा  
 लिकाज्ञाणश्रंगान्यगशिरोत्संगताद्वलमविलेपनं। अतस्थो कर्तयेत्सर्वप्रासंतानिकां दृष्टाणं अंग  
 संगशिरोत्संगतां वृलमविलेपनं अतस्थो वर्जयेत्सर्वप्रासंतं। सिको दृष्टाणं यद्यन्यत्र निराकृतधन  
 अतस्थस्येह्येकं विद्विकर्मस्थालयेत्तनाश्रदेवतायतनेतिष्ठेत्तदस्थश्चरेत्तद्वत्तन्मासोपवासं  
 उायथोक्तविधिना रदाभागीवाविशवासाधीवापुदेवं समर्चयेत्। अत्रनाधिकमेवं उव्रतं त्रिंशद्दिने  
 दौ कृत्वा मासोपवासं। सुसंयात्मा विजितेंद्रियः। ततोर्चयेत्तवैषुण्ये द्वादश्यां गरुडघ्नो मृतयेषुष्य  
 मालातिर्गंधधूपविलेपने। दत्ते मासमिति रुद्धं कर्त्तव्यं। अज्ञानतः स्वामिक्रमोमात्रेणापादनं मासं  
 राजापत्यव्रतं कयत्रिका मंतसु तद्वैषुण्यं कर्त्तव्यं। अथवा मन्वाद्याद्युक्तानि। व्रतानि प्रवृत्तिसुविष  
 येषु विषयाचरेत्तदशकालशक्त्वाद्यपेक्षया योज्यानि। तानि व्रतानि मंदनपाश्चिन्तितानिः सम्यक्



दर्शिताः। कर्मविषयकपरिच्छेदेऽस्मिन्नेषामव्यक्तोपयोगात्तावात्रानाप्रधानताः। वस्त्रालंकाराद्येषु  
 तोषयेदद्यन्तरात्तापयेत्तद्वरित्तयातीर्थवदनवारिणा॥ चंदनेनावलिचांगंधपेषुषु रत्नं कृतम्  
 वस्त्रदानादिनिश्चैवतो जयेद्ब्रह्मिजो वमात्रा दद्याच्च दक्षिणां तेन्यप्रणिपत्य संकामापयेत्। विप्रान् कर्म  
 पयिवात्रा विसर्जात्पच्यं दत्तः। एवं विनाऽनुसारेण भक्तियुक्ते न शक्तिमावाप्यं मासोपवासं कृतवासा  
 र्जनाई नमस्तो जयिवादिजंश्चैव विष्णुलोकं महीयते। एवं मासोपवासंश्च सम्यक् कृत्वा त्रयोदशानि  
 कर्षयेत्तस्मात्त्रैविधिना येन तच्छुण्णकारयेत्तैश्चैव यज्ञाकादश्यासु योषितः। प्रजयिवात्रुदेवेशमा  
 वार्यावृज्याहरीतकपास्त्रिवाद्यतो विप्रान् तो जायेत्त्रायथाविधिः। विशुद्धकलवात्राद्विष्णुस्तन  
 तत्परान् प्रजयिवादिजात्रसम्यक् लो जयिवात्रयोदशः। नवनिवृत्तयुग्माप्रिनो जनाः। दानानि  
 वायोगपदानि सुत्राणि ब्रह्मसूत्राणि चैव हि। दद्याद्विविदिजायिन्मा प्रजयिवात्राप्रणम्य वा ततोऽकल्पये  
 द्यथायज्ञाधरणसंस्कृतो। सांघ्यादं सुतोऽष्टासोपधानमलंकृतो। शकारयित्वात्मनो मूर्त्तिको वती

उच्चशक्तिः। न्यसेन्त्या उशय्यां मर्त्रीये ब्राह्मणादिति। आसनं पाडकोत्तं वस्त्रयुग्मानहो। प  
 वित्राणि च पुष्पाणि शय्यायासुपकल्पयेत्। एवं शय्यां तिसकल्प्य प्रणिपत्य तत्राद्ब्रह्मात्रादर्थये  
 वातुमोदार्थं विष्णुलोकं ब्रह्माद्यहम्। एवं मूर्त्तिको विप्रान् ब्रह्मदेय प्रतिनं मदा॥ ॥ ब्रजब्रज नरश्रेष्ठ विष्णो  
 स्थानमनामया। विमानं वैश्वेदेद्यं मशय्यां परिकल्पितघातेन विष्णुपदं याति सदाऽनुं दमनामयां। त  
 तो विसर्जयेद्दिशो वराणि पत्याप्यगम्य वा ततस्तु प्रजयेत्कृत्वा युक्तान् प्रदाय कांतां शय्यां कल्पितां स  
 म्यक् उरुत्तान प्रदूष्येत्। प्राण्यशिरसासंतो गुरवे प्रतिपादयेत्। एवं रज्यं विष्णुवित्रात्रु रूत्तान प्रदा  
 यकं कृत्वा मासोपवासंश्च निरो विष्णुतले विशत्रा कृतं मासेपवासंश्च विष्णुस्तन तत्परान्येहांत  
 मनाः कालधर्मस्थः प्रयतेदियः। कृत्वा मासोपवासंश्च निर्वीप विधिवत्तुने कलानां शतसुष्टपत्रि  
 सुलोकं ब्रजं नरा। यस्मिन्नातो मदाऽणु कले मासोपवासं कृत्वा सर्व पापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं मही  
 यते। नरो मासोपवासंश्च कृत्वा प्रपवतां वरः। पितृमातृकलात्यां वसं विष्णुपुरं वजेः। नारी महा नाय



यथोक्तव्रतमास्थिना। कृत्वा मासोपवासं श्रुत्वा द्विसंमनातनं ॥ नारद उवाच ॥ सुदुर्कमदं देवसूक्ष्मी  
 मानिकं रंष्टं ॥ व्रतमासोपवासस्य न किञ्चिन्नयते तु तोपीति स्यात् शंभुदेवसुसूखो व्रतिनश्च ॥ त्यागो वा  
 सुयहो वाथ किञ्चकार्यं पितामहः ॥ ब्रह्मलोवाच ॥ व्रतस्य दर्शितं दृष्ट्वा कृत्यं तिस्र्यगुग्रहाश्रमं तं पाय  
 मंजीरमिह मानं सकृन्निशेयं देहता विद्युत्प्रेतवाणेऽन्वीडितो व्रती ॥ अतिशुद्धचित्तो व्रती ॥ अशुद्धचित्तो व्रती ॥ अशुद्धचित्तो व्रती ॥  
 इति शंभुपायधिया सुतं व्रती रंष्टो दवा फलानि वा प्रहोरात्रं च यो नित्यं व्रतस्थं परिकल्पयेत् ॥ परिशेषात्साणा  
 दवा विष्णुलोकं व्रजेत्सु माः ॥ एवं मासोपवासस्य मारुदप्राणसंशयो ॥ अत्र तद्दृष्ट्वा णोर्देवोः परिशेषात्साणा  
 दवा नैते व्रतं विनिश्चितं विविधा तु मोदितां च्छीरोषाधियुरो राज्ञा आपो मूलफलानि वा ॥ एवं कृत्वा नित्यं  
 तास्य उपाय संतदा ॥ पायसाद्भक्षितो यस्मात्समाप्तो तिष्ठ न व्रतम् ॥ अथ विष्णुव्रतं विष्णुदाता विष्णुव्रती त  
 थ ॥ सर्वं विष्णु मयज्ञात्वा व्रतं ब्रह्मणीणमुद्धरेत्सदा सुसुखं सुखे च परिश्रानोऽतिशुद्धितः ॥ तदा समुद्धरेत्  
 ण मन्त्रिन् विमुखे स्थितश्च ॥ परिपाल्य व्रती देहं व्रतशेषेन मापयेत् ॥ यथोक्तं द्विष्टं तस्य फलं विप्रसुखो दि

तमस्रं द्रियार्थेषु संशयानां सदैव विमलामतिपरितोषयतो विष्णुं सोपवासो द्विजो द्रियः किं तस्य वदन्ति  
 र्थे ध्यानहोमजपे व्रतैः प्रेने द्रियगणो धीरो निजितो दुष्टवेत्सा ॥ मदासा वै मनो प्रवारर्धं तूतहिते रता वसु  
 देवपरो नित्यं मन्त्रेण कर्तुं मर्दति ॥ कृत्वा व्रतं यथोक्तं वेष्टव्यं युक्तं मया विष्णो कर्मवाप्तो तिष्ठ न राह  
 विदुर्नम्रा ये मरुत्सदा विष्णुं विष्णुदेनांतरात्मना ॥ ते प्रयानितयं त्यक्त्वा विष्णुलोकमना मयम् ॥ प्रना  
 ने वाऽर्द्धं वा त्रैवर्ध्या क्रुदिव मद्भयो ॥ अशुतं येऽकीर्तिने त रंति रवाणवात्र आनेदितायुः खार्त्तकृद्भ  
 शांतेषु वाहरीयोऽुकीर्तयते तन्नामगड्ढे सवंधुरीशगर्तजन्मजरा रोगाः खमंसारबंधनैः ॥ विचार्य  
 नेन नित्यं वा वासुदेवम उद्धरन् ॥ मया वरं गमं वा च मूले सन्ने सुता सुने विष्णु पश्याति सर्वत्र यश्च  
 विष्णुखयं नरा सर्वे विष्णुमया न्यात्र त्रैलोक्यं सचराचरं यस्पशात्तामत्तिस्तेन सजितो गक उधज इति  
 कल्पौकल्पौणं व्रतानां व्रतसु तमश्च स विष्णुलोकमाप्तो यसादावक्रपाणिनः ॥ विधिमासोपवासस्य  
 यथावापरिकीर्तितः ॥ धृतं जेहान्मुनि श्रेष्ठ सर्वलोकहिताय वा कृत्वा कृत्वा व्रतानां नरो विष्णुश्च

जेशानात्कृत्येप्रदानवानंदेयंइष्टवेतसी ॥ इति त्रिपुरस्योक्तं मासोपवासव्रतम् ॥ अथ कुरुवांशय  
 णसाधारणेतिकर्तव्यम् ॥ ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ कुर्यात्त्रिषवणं ध्यायी कुरुवांशयणं तथा ॥ पवित्राणि कुरु  
 कानि गायत्र्या च ॥ त्रिषवणं क्वांतंतद्यत्कुरुममुनासकुर्यायी ममाहितशेषा निवाना  
 पवित्राणि सूक्तानि वाधमर्षणं देवकृतः ॥ अथ कुरुवांशयः शरत्समदिवा सिद्धादिप्रदर्शितानि तस्य यज्ञात्  
 अथस्यानियथाशाखं जपेद्यत्र अवि रुद्धे काले अपि दन्त्यामात्रप्रत्येकं गायत्र्या वा ॥ त्रिषवणं यत्र  
 मातृमंत्रणो गेतभोय इति विवेकः ॥ मनुः ॥ ॥ महाव्याहृतिनिर्हामः कर्तव्यं ध्ययमवहसा ॥ अहिंसा  
 त्मक्रोधमाज्ववसमाचरेत् ॥ त्रिरङ्गास्त्रिंशत्या उतसासाजलमाक्थे ॥ अस्त्रीश्चरपतिवांश्चेकानिसा  
 षेतकहिं वित्रांस्थानाशानासां किर रश क्रोधः शयानवा ॥ ब्रह्मचारी वती वास्पकु रुदेव द्विजार्चनः ॥ क्ष  
 विवीर्यसिनियं पवित्राणि शक्तिः ॥ स्वधेवंप्रायश्चित्तार्थं माहृत इति त्रिरङ्गस्यादिदिवा रात्रिरिति  
 यद्व्रतं सवनेषु तत्रानंतं कविपयापितं नूनप्रथिक्तानान्यपि कुरुपेक्षया यो न्यानि ॥ ॥ जावा १५०

लः ॥ ॥ आरंभे सर्वकुर्याणां समाप्तौ च विशेषतः ॥ आत्ये नैव हि शालयो बुडया व्याहृतिः ॥ अथ रश्मि  
 पत्रितं ते च गोहिरण्यपादिदक्षिणास्त्रीणां होमो न दानव्यापं प्रगव्यं तथेव वा ॥ परात्ररश्मीश्च द्रपंचगव्यस्य  
 विहितप्रतिषिद्धत्वात् ॥ अथ जपेन शालामोहोर्मागहोमः ॥ मनुः कुरुप्रत्याग्रायवचतयोस्तु प्रदान  
 योजपहोमयोः ॥ अथ योरनधिकारः ॥ ॥ तथा जीगिराः ॥ तस्मात्पूर्वसमासाद्य सदाधर्मयथोचित्या  
 यश्चैवं प्रदानं यजपहोमविवाजितम् ॥ अथ प्रश्नद्वयं पलदानार्थं शतयोः समानवर्गं वा ॥ वैशंप  
 यनः ॥ ॥ स्वान्तिकालमेवंसा त्रिकालं च द्विजमना ॥ एवं वासाश्च र्चास्यानद्यांश्च ॥ उलेशय इति ॥ ॥ हरि  
 तः ॥ अतश्च द्रवत्वात् ॥ तस्मात्वाधमर्षणं तजलैर्जापित्वा चैतमहत्तवासः परिवायसां प्रसोम्येनादिकृत्य मुप  
 तिष्ठतेपि ॥ ॥ अत्रिंशन्मते ॥ ॥ जपहोमादियं किं विरुद्धे कंसं च वेत्तवै ॥ सर्वव्याहृतिः ॥ कुर्याद्वायत्र्या  
 व्रपावेन वेति ॥ ॥ शंखस्मृतिः ॥ एवं साचरे किं सांस्त्र्यावासो न पीडयेत् ॥ गायत्र्या दशसाहस्यमा क्लिप्तं  
 पठ्यते ॥ ॥ वैवायनः ॥ ॥ अहत्तवासो वसीत्सा विवीच्या हते चैव जपेदहमहत्प्रहकारं ॥ दितः कुरु

रूपेणैतथादिता। ह्यमौवरासनेयुक्तः कृष्णजिप्पसुसंयतः ॥ आशीतं शल्पवद्धोवापि विद्रव्यं पर्यः स  
 क्त्रागव्यस्य पथमालानेगव्यमेवमवेदधिदशालानेनवेत्कतकात्वात्तेनुपावर्कं पापामघतमभय  
 उतस्यतेप्रतपिवेशशल्पसिद्धिवलक्षणामत्रासीपयःपिवेदित्यर्थः ॥ यमः ॥ अयुष्याग्रेस्थितांप्रं  
 गायत्र्याचामिमिदं ॥ प्राण्यावन्यततउयर्थेदनस्पप्यासिमंत्रणायैतुप्राणाग्निद्विवेधिकाग्निसेवा  
 मपि शानकर्मांतरप्राणाऽऽकृतयोपंचलियस्तेरवैतितत्रचत्वेकिंप्राणावगप्यथादपदमेमंत्रेयासा  
 नस्तिमंत्र्यप्राणायामं स्यादस्त्वादिति मंत्रैः प्राणाग्नौ होमः कार्यः ॥ यदुत्रैकईस्त्रिचतुरेवाप्रासासत्र  
 नोकेविशेषोप्राहः ॥ ॥ तद्यथा ॥ अग्नीत्यात्प्राणायतेप्रथम्यापानायतेद्वितीयव्यानयतेतृतीयसु  
 दानायतेतिउत्थेमपानायतिपंचमयदत्तवारसदाह्याप्रथमंयदातत्रययदाह्यासामेवात्ररमेकं  
 सर्वैरितिभ्यस्यर्थः ॥ ॥ यद्वचचारोयाससुहृतेतदाद्यद्वितीयास्यामेवोत्रमेकंमंत्रास्याप्रथम्यासं प्रा  
 सं ॥ तृतीयेनद्वितीयेनउत्थेनतृतीयांपवमेनवचउत्थेयद्यवदः तदाद्वितीयाप्रथममग्निमात्प्राह्याद्वि

१६०

तीयं ववेकतदासर्वैरुचनेग्रसेदिति ॥ ॥ दारीतः ॥ चंद्रमासं चरुं स्थापयित्वा नव इति द्व्यनुत्सायाश्च  
 रुशेषा विंडात्सा वित्र्याऽपिमंत्रितायाऽग्नीयादिति ज्योत्वाशहनचवंद्रोदयोपलक्ष्यतेति नाद्वीत्रादावपि  
 लोत्रनदोषो नास्ति ॥ ॥ श्रुतः ॥ आर्द्रमूलकमात्रासुयास इंडुप्रतेस्मृतेतथैवाकृतयासत्रशोचार्थं चैव  
 श्रुतिका ॥ ॥ इतिरुद्रुचोदयणसाधारणोतिकर्तव्यता ॥ ॥ अथप्रजापत्यादिकुरुप्रत्याघ्रायः ॥ तत्र  
 ब्रह्मिरीत्याद्वादशदिनातिप्रजापत्यं रुद्रुचरेवातदशकोवेनुमेकां दद्यात् ॥ निष्कलज्ञानं पश्चिमाण  
 करणेव्याधि ॥ अथवागोरजावेदेशकालो विनंगोभ्रुत्पं देयां तत्राप्यशकौतदईपाईदद्यात् ॥ ॥ तथा  
 वमिताहरायां ॥ ॥ गवाम्नावेनिष्कवातदईपादमेववा ॥ ॥ तथा ॥ प्राजापत्यस्पवाशकौधेनुदद्यादि  
 जोत्रमः ॥ सममेतत्तुष्टयंतिनहेमसदसंठवेदपारायणंतथा ॥ समुद्रमाद्यजापत्यं रुद्रु प्रत्याघ्रा  
 यत्रेनद्वादशदिनेषु प्रतिदिनंपंचपंचवित्रात्रनोत्रनीयाः ॥ तेभ्रमिलिवाप्रष्टिर्वेति ॥ तथा मितान्का  
 णां ॥ ॥ रुद्रुपंचातिरुद्रुतिगणमहरहृप्रिदशदेयंशतीयेचवारिंशप्रतशोत्रिगणप्रपनयाविशानिष्य



त्यराके। कृच्छ्रं प्रतिपत्तयेन वंति षडधिकं विंशती। स्येव हीना ह्यव्यांश्चादयणेऽद्यात्तथयशिवनवातावेदि  
 त्रसुव्या॥ अत्र कृच्छ्रे अहरदः प्रवेत्सुवयः॥ अय अहर हरिति प्रत्येकस्य संवद्यते स्वल्पान्पसुद्वादशबाह्य  
 णात्र लो जये वा तथा च उर्विशति-सतो विप्राद्वा दश लो ज्वा या क्कोष्ठि स्यैव वृक्ष्या वा प्रावनी का किमप्य  
 न्याङ्गमनी विणः॥ अत्र न प्रतिदिनं द्वादश किं वद्वदश उण्यतिथ विरक्त प्रकारेण स्यात्वा त द्या म उ धा  
 नी विधाय केशा नाप यिवा उ न विधिवन्ना चा भूर्व केशा संसो ध्या॥ एवं द्वादश स्थाना नि प्राजापत्य  
 कृच्छ्र प्रत्याग्राया॥ ॥ तथा च य राशरः॥ कृच्छ्रे देह उ त्तैव प्राणाया मशत द्वा यं उण्यतीर्थे नाद्रं शिरः  
 स्वानं द्वादश संख्यया॥ अनाद्रं सं शिरो य स्यो स च नाद्रं शिरः॥ अनाद्रं शिस्त्रानं॥ इति प्राजापत्य प्रत्या  
 ग्रायः॥ ॥ अथाऽति कृच्छ्र प्रत्याग्रायः॥ विंशतिकरणशक्तौ जातवत्त्वेन पाणिप्ररात्र लो ज्नु युक्तानि क  
 कृ प्रत्यप्रथयेन धे उ द्यं दद्यात् वा तथा षड्भिः शमते। प्राजापत्ये उ गामे कामति कृच्छ्रे द्यं स्यता एकै  
 ग्रासमश्नीया दिति मत्कानि कृच्छ्र प्रकारा शक्तौ धे उ त्रयं देये। अत एव उ उ विंशति मतो॥ ॥ पराकत

१६२

प्राणिकृच्छ्रे ति षडसहस्रगतयेति। गवामं नावेतावत्रो निष्काद्या वंति गोभूल्यानि देया विंति निष्कानावेत  
 र्द्वयादेशतद्वया निवति तिष्ठा॥ अथ वा या वत्रो येन वधा वत्रो न कृच्छ्रान वंति। अथोत्पधने धने नु मं र्ण्याया  
 द्वादश विप्राणां लो ज्नायाः॥ प्र उ रं धने न उ द्वादश दिनेषु पं च दश विप्रा नो जनीया त तथा च उ उ विंशति मतो  
 कृच्छ्रपां चाऽति कृच्छ्रे ति ग्रा म हर रति। अति कृच्छ्रे ति ग्रा मं च दश विप्रा नो जनीयाः प्रतिदिनं द्वादश उ दिने षे  
 नर्था अत्र वामिनि न्वाशी लु न र पि उ त्त स्या तं ब्राह्मणान वंति अथ वा या वंती धे न व स संख्या या स्या न यत्र  
 अकरण दीर्यता॥ ॥ इत्यति कृच्छ्र प्रत्याग्राया॥ ॥ अथ कृच्छ्रेऽति कृच्छ्र तत्रं प्रत्याग्राय तत्र कृच्छ्रेऽति कृच्छ्रे अथ  
 या वि हे तं न द्या म्नाय न्व उ कृच्छ्रेऽति कृच्छ्र करणा शक्तौ ति स्रो धे न वो दान व्या त द त वि नि ष स र्द्धि नि षो वा  
 दयः। अथ वा गाय त्र अयु तत्रयं दिन त्रय स प वा सो वा त्री णि क्रा ण म्ना मशत द्वा या नि व कर्त्तव्या नि अ पि  
 वा स मृ द्ध आ न्ये न अहरदः। त्रिंशद्ब्राह्मण लो ज्नी या स्य र्थः। एतन्न त्रिंशद्ब्राह्मण लो ज्ना द्वादश उ दिनेषु प्र  
 तिदिनं कर्त्तव्यं नि लिखा षड्या षिकं शत त्रयं शत ब्राह्मण न वंति असमृद्ध्या न्यश्चेत तदा त्रिंशत्पि बी द्वादश



ब्राह्मणतो जनीया ॥ तत्र द्वादशाहसाध्ये तत्र कुरु प्रत्याप्रायश्चित्तेन तिस्रो गावो देयाः पराकत प्राः तिकुष्ठे  
 तिस्रस्रि स्रस्रुगास्रथेति च षड्विंशति मते च लिधानाशचतुस्माध्ये तत्र कुरु वेकाधेनुद्यहरहसाध्ये तत्र  
 कुरु वेकाधेनवः ॥ द्वादशाहासाध्ये तत्र निश्रद्धे वंगवामयावेनिष्कंवेत्यादिकास्रथेप्रत्याप्रायाः ॥ कुरु  
 तिकुष्ठे प्रत्याप्राये प्रकराणोक्तरीत्या बिलेयाः ॥ सद्यश्चाद्यत्वं तत्र कुरु त्रयोविशेषः ॥ द्वादशमदिनेषु प्र  
 तिदिनं च त्रिंशद्ब्राह्मणान्नसोजनीया इति तथा चतुस्माध्ये वा तत्र कुरु प्रतिदिनं च त्रिंशदि ति  
 याचतुर्विंशति मने कुरु तिपंचातिर्यं विशेषः तिकुष्ठे तिउणमदरहस्त्रिंशदेवं वृतीयं च त्रिंश च  
 सप्त इति ॥ तत्रे तत्र कुरु ग्रहचत्वारिंशदित्यत्रयः ॥ इति तत्र कुरु प्रत्याप्रायः ॥ अथशांतपनयति क  
 रुत्रयंप्रेशसांतपनस्पसाहं प्राजापत्यस्थाने विहितवादे तत्रादेकधेनुनिष्काहं देयां दिनत्रयसाहो नि  
 मांतपनख्ये उपंचसहस्राणीत्यनया रीत्या प्रायत्तेदासुप्रजापत्यप्रत्याप्रायप्रकरणोद्दिष्टः ॥ इति  
 सांतपनयति सांतपनप्रत्याप्रायः ॥ अथसांतपनप्रत्याप्रायः ॥ तत्रैकविंशतिदिनसाधो महासांतप

नेप्रत्याप्रायत्रेननवंपंचधनेवोदेयाः ॥ ॥ षडुपवासात्फं प्राजापत्यस्थानमिति मासे पंचनिष्कांतवनी  
 तिकुष्वायद्यापियावकत्रते प्रतिदिनं यावकं उज्यते तथा पिपृक्षे क्रियावकजो जन्मसाधुतं केशसाधनवा  
 उपवासउत्पत्वंतवत्येवापयो ब्रते उयः पने केशानावेपिकयासमात्र पर्याप्तस्यैवपययापा वनासक  
 न्यत्रांगोश्रुत्रयावकत्रते उ केशाधिकास्रत्याप्रायत्रेनवोदातव्याः ॥ एवेगायत्रीजप्रादि प्रत्याप्रायः ॥ अ  
 पिकल्पनीयाः नेकत्वाकप्राजापत्यप्रत्याप्रायप्रकरणे प्रपंचिताः ॥ इति यावकत्रतगोश्रुत्रयाव  
 कं ब्रतपयो ब्रतानां प्रतानां प्रत्याप्रायः ॥ अथवादायणप्रत्याप्रायः ॥ तत्र सद्यश्चनेन चंद्रायण  
 प्रत्याप्रायत्रेनाद्यो गावो देयाः ॥ तथा चतुर्विंशति मते ॥ अष्टौ चांद्रायणे द्याप्रत्याप्रायविधौ सदे  
 ना तथा पिपीलिघामधयवमध्वचांद्रायणयोगेति मोक्षुक्तं अधिकेदिकर्तव्यतमहितयोरपष्टौ चं  
 द्रायणे देया इत्येत प्रोक्षां अल्पधनेन उ तिस्रो गावो देयाः ॥ तथा च पराशरनिबंधे ॥ प्राजापत्यउगामे  
 कामतिकुष्ठे द्वयं सृतां चंद्रायणपराके च तिस्रस्र द्वात्रिणातथेति ॥ एतत्र धनुप्रपादानं बलति कर्तव्या

सहितयोर्यवमध्यपिपीठिका मध्यचंद्रायणस्यथायतिचंद्रायणादिष्वपि विष्टे। एतेश्चक्राद्यपेक्षया  
 यावन्नोवेनवोदीयंतेतत्रतदनावेनिर्धुंस्यात्तदर्थं पादमेववेतिसुत्ररीत्यादातव्यं अथवाप्रतिधेउवा  
 हृतंगायत्रीजपोयातथाधेउसंख्याकानिलदवासावाधेउसंख्यानिप्राणायामशतद्वयानिवाधेउसंख्या  
 कानिवेदपारायणानिवात्संख्याकानिलहोमस्यद्व्यापिवाधेउद्वादशत्रासुणतो जनादिवाप्रा  
 म्प्यात्रायप्रकरणोक्तमीत्याप्रतिधेउदशघानानिवाकर्याणिपतेवविकल्प्यात्रीहियवमत्रौष्ठिकाः।  
 अपिस्व्यादितोऽबुदिनहोमवद्व्यवास्थितव्यजस्थीचटेशकालाद्यपेक्षया॥ ॥ तथाचवोधायकः॥ देयं  
 कानंतथात्मानंद्वयं द्वयप्रयोजनमाऽप्यपात्रिमक्ष्यां जज्ञात्राशौचैप्रकल्पयेति। शौचशब्देन शुद्धिक  
 रणं धर्ममन्त्रिधीयतो एवमन्त्रापि प्रनाधिककल्प्युशक्त्वाद्यापेक्षया विकल्प्यावाध्याः॥ अननैवापि  
 प्रस्थाणमिताक्षरादीनि निवंधेऽनूनाधिकपद्माप्रदर्शिताः॥ ॥ तद्यथा। चाक्षयणं मृषि श्रेष्ठप्राक्नेष्टि  
 तथैवामित्रविदापसुधैव कृत्स्नसुत्रयंतया। तिलहोमाऽसुतचैव पराकद्रयाववागायत्रात्तदना

१६३

षं वसमान्याहु इदस्यतेति उपस्यशंसि मध्येनिसृष्टोद्यान्येनमासावधिकाले प्रतिदिनं चतुर्विंशति  
 ब्राह्मणानेजनीयानथाचतुर्विंशतिमते॥ ॥ ववांशं चतुर्विंशतिमते॥ ॥ त्रयुणान्युणितानिस्वात्पराकं  
 क्षेसांतपनाख्ये संवतिषड्विकांशितस्येवहीनाद्वात्यां चाक्षयणस्यातपसि कशवल्लो जेतयो द्विप्र  
 छव्येति॥ ॥ अथार्थः॥ अहरहरितिसवांचितिकक्षेत्रजापत्योक्षदशसुदिनेषु अहरहः विप्रसुखा  
 तो जयेत्रा अतिकक्षेत्रे क्रलज्ञे प्रोक्तसंख्याकेषु अहरहः किंशं तने तत्र कक्षेत्रानिदितं तत्र क  
 क्षुदिनेषु प्रतिदिनं संवत्त्रिंशत्वापरकिधराकत्र तसंख्यादिनेषु प्रत्यहं त्रिगुणगुणितविंशतिः प्र  
 थिरित्यर्थः सांतपनाख्ये कक्षेत्रे वड्वोऽहरहयणप्रत्याप्रायः॥ ॥ याज्ञवल्क्योक्तवतवतुष्टये  
 आकृदर्थतया॥ ॥ तद्वज्राणप्रकरणे तत्रज्ञानतेज्जातिमात्रं त्रिगुणसंविधिगोमात्रवधेयापादेने  
 विरात्रसुपोष्यादशगाणकोटपत्तोश्च देया विरात्रोपवासऽशक्नोसर्वेक्रागावृषत्सर्व निष्काद्वेदये  
 कामतश्च द्विगुणं अज्ञानतः चात्रियसंविधिगोमात्र्यापिदनापवगव्यपि वेदोद्योमसमाप्तीतस्य

गोश्वेशया उगामी च गोप्रदानेन शुद्धाति इत्यनेन प्रकारेण मासं पंचगयत्रं तं च रित्रानि गौं दद्यात् ॥  
 एतत्क्राणाय शक्रे तस्यै त्रयं क्रोशयुक्त्वा त्वेन त्रयया प्रायविधौ सदेति वडू केशसाद्यत्रा वक्रसमानवि  
 ष्यत्वेन मुक्तमंघ्रये उपस्क्रित्वानीया कामतश्च षोडशधे उव्रणकात्र दक्षिणात्रे ना निषेके तिस्रदश  
 गावः ॥ अज्ञानतो वैश्यसं वधिगोमात्रया पादने मासे न मुक्ति कृत्वा कर्या त्रपतदावरणाऽशक्रे द्वादश  
 दिनसाध्याणि प्ररात्ररोजनमुक्तानि कृत्वा प्रायत्वेन गोह्वयनश्चाभ्याऽत्किं कृत्वा प्रायप्रकर  
 णे दशितत्रादत्र मासात्किं कृत्वा पक्षे गावो लवंति मउक्तया समात्ररोजनस्य कस्य द्वादश द्वादशादि  
 नसावस्थाऽत्किं कृत्वा करणाऽशक्रे तिस्रो गावो विदिता इति माससाद्योतिऽकृत्वे सप्तगावो निष्का  
 र्त्वे वदेथ उच्यते कामतो द्वैयुपेन कामे णदशलवंति गवामरावे निष्कल्याणो संख्यायाऽत्किं कृत्वा  
 प्रायप्रकरणोक्ताः प्रत्याप्रायाः शक्रे द्वादशेन या कर्त्तव्या त्रस्तानतः कृत्वा सामिकगोमात्रया पादने मास  
 जापस्य विद्यावाऽदशक्रे गोह्वयनिष्काद्वेदेयं कामतः पंचगावः तदशक्रे वितरोऽस्वेतिः प्रत्याप्रायः ॥ १६४

रतिगोवधप्रत्याप्रायः ॥ ॥ अथ प्रायश्चित्तोपक्रमप्रकारमाहातत्रकर्मविपाकप्रायश्चित्तानुपयु  
 क्रामपितरप्रायश्चित्तोपयुक्तं किं विदुष्यते ॥ तद्यथा देवलः ॥ कृत्वाणां दापको राजानिर्द्वेषे धर्मपा  
 वका अपराकः अपराधीपुत्रका वराज्ञिता कृत्वा लकः मद्राया प्रकृत्वा षोडशप्रायश्चित्तानि दापको राजा  
 तवति वलरूपा प्रायश्चित्तोपयुक्ता विना द्वितीये प्रायश्चित्तनिर्द्वेषे धर्मपावकश्च्यते यस्मिन्नव  
 कशक्रेनेकाऽप्रयुज्यते रत्नितारा राजुरुधः कृतकृतं प्रयवेक्षणो न प्रायश्चित्तपरिपालकेति कथ्यते  
 प्रकृतमुत्तरामः ॥ ॥ धर्मविद्वेत्तौ ॥ द्वित्रियो ह्यथ वेस्यो वा शूद्रो वा न कर्तव्यं नः प्रायश्चित्तविधानं  
 उक्तं ब्रवीति विदुर्बुधाः ॥ अत्र तानाममंत्राणां जातिमात्रोपनीविताः सतस्य शतसुक्तानां पठेन्नोप  
 पद्यते पातके वशतं पक्षिहसं महदादिषु उपपापेषु पंचाशत्तदनात्रा र्थे धीर्धत्तः ॥ ॥ अतएव  
 श्रवत्सः ॥ ॥ वत्रारो वेदधर्मज्ञः पक्षिजिर्विद्यमेव वा शक्रेतेयं सधर्मात्पादेको वा अध्यात्मवित्तमति ॥  
 मत्ता ॥ त्रैविद्याहे उक्तस्यै नैरुक्तो धर्मपावकः प्रयश्चात्किं न्यः श्रवपक्षिदादशा वरोत्सो विद्या  
 रविमनः

ग्यञ्जः सामात्मका यस्यासौ त्रैविद्याः । हेठकोऽनुज्ञः तर्कोद्यास्त्री तितक्ः । संशये सत्ये कस्मि कोटो प्रामा  
 णिकयो वा रोयो कृते वा धक दर्शनात्प्रामाण्ये त्रुत्तवित्तमिति यः स तर्कः । स देवे देशस्त्रविरो वीयाद्यः  
 एतं विधायः पर्वदसुपस्थाने वक्ष्यमाण प्रकारेण कार्यं च त्रायं दृष्टं समाचरो प्रतय हणदिने तद्यथा  
 ॥ अत्रुजानाः प्रायं काले पर्वदं वदन्ति एतत्कृतस्य कर्मिणो विद्यापयती तितत्रायमाशयः । अगिस्साप्र  
 न्यपयदेसुपस्थानात्पूर्वतो जने निषिद्धी अद्याप्युमा लप्रायाः पश्चात्त्रायवाचने री विलंवे नैवं  
 धायश्चित्रं यद्गीयादिति अथथादीर्घकालं तो शरीरधारणं कर्तव्यं तनस्थलं देवारी स्यात् । अत्रुमय  
 तु कंष्टं प्रतग्रहणदिनवाले जनमन्यते कलौ दृढमना तु तापस्यां संतवा रा उपक्रा दिने शरीरे शुद्धे  
 री सता वस्त्राः । मत्रुः । प्रायश्चित्तीयतां प्राप्य देवात्पूर्वकृतं न संसृगो विजे वसिः । प्रायश्चित्ते कृतो ह्यिः ।  
 अंगिरः । उपस्थितस्यै कन्यायेन व्रतादेशं मर्हति कृतो न संशये वा धर्मं तु जी ता उपस्थितः । अत्रु नो वक्ष्ये य  
 पमसत्यं पर्वदं वदन् संशयोऽनुज्ञो नो कर्तव्यं यावत्प्राप्य निःकृतिः । प्रमंदाश्च न कर्तव्ये यथैवा संशये तथा ॥ १६५

७२

कृत्वा पापं तर्कं यद्देति एह मानस्य वर्द्धते । वदवाधकं जापिकं मर्बिज्यो निवेदये रा प्रायश्चित्ते सस  
 त्ये मानां सत्यपरायणः । अत्रु ग्नीवसं यत्र शुद्धियावेत मानवः । स वैलं वाप्यत्तः संवात्रो क्तिवसा  
 समाहितः । ज्ञात्रयो वापि वैश्वो वापर्वदं कृपतिश्चिन्ति । ज्ञात्रिया ह्युपदानं प्रदर्शनीयां उपस्थयंतव  
 थी धर्मात्रिमं धरणीं वृत्रेण त्रेश्च शिखां वनत्रु किं चिदुदाहरेत् तत्रै प्राणि प्राते न दृष्ट्वा स्ति सुपस्थि  
 तम्रा दृष्ट्वा दृष्ट्वा तिकं कार्यं सुपविस्था यतां स्थिता । किते कार्यं वदसा निः किं वा वं एह से द्विजा तत्रतो  
 त्रु हिनसर्वसंयोगातिशमनः । अस्माकं वैवसर्वेषां सद्यं मेव परं वल्लेयदि वेदुं ससमं निपते प्राप्य  
 सेसुजाद्यायद्यागते स्यसत्ये न न वे सुद्व्यस्य क विने रा एव सर्वं मलज्जातं सर्वं ब्रूयाद्दुशेषं तो ता ननु  
 जीता उपस्थितरुयादि अत्रुपस्थितः । पर्वदं दुपस्थितः । संशयो नाश पर्वदुपस्था तुः संगते पापसंदेह  
 कार्यस्थानिः कृतिः । पापनिश्चयः अथ वा स्कार्यस्थानिः कृतिः । प्रायश्चित्तानिश्चयः संशये ननु तो कर्तव्यं मि  
 त्येतन्मि आ सियोगविषये प्रमादाश्च न कर्तव्यः । अत्रुः पापं न कर्तव्यं । अथ विरकालसंदेहात्

हतौदविष्णो जनादि नशरी रास्त्राणं प्रमादः। सन कर्तव्यं पुनर्यथैवामं शये भसं शये पापनिश्चये  
 देशांतरादि व्यवहितेषु विद्वेषु पर्वदुःस्थानेषु पयथादविष्णो जनाश्च शरीरज्ञानं क्रियते। तथा च  
 शयास्थानमीत्यर्थः। पर्वदे प्रोपायस्था पुनंचदक्षिणादानानं क्रियति॥ ॥ यथादपरशरः॥ ॥ पापं प्र  
 ख्यापयेत्यादिद्वेषे च तथा वृषेति॥ ॥ तथैव विशेषमाह विष्णुः॥ ॥ वा दत्र ते वस्त्रदानं कृद्वा हेतिलदीने  
 तः। विष्णोपायं च कल्पः किं विदवाव्रतं चरेत्। तत्प्रकीर्णकविषयो तत्र च पर्वदये दक्षिणाधे उ वृषत्यो  
 रस्य तत्र उच्यते वादीयते। तत्र धे उ मूल्यनिष्क्रवादात्वा न प्रत्यक्षगो वृषो वा॥ ॥ यथाहांगिराः॥ वदत्ये  
 न प्रदेयाति गोपुं हं शयनं स्रियः। वितं किं दक्षिणा हेतादा तारं रयित्पहि। एका एकस्य दातव्या न वदस्य  
 कथं च न। सत्तु विक्रयमा प्रत्रादस्य। स प्रमूकलीना। एवं च वे कि प्रकरेण स वे लं मान आर्द्रासा मं दं प्रद  
 क्षिणी कल्प पर्वदं दक्षिणा दवा दंडकं श्रवणा पोपं सर्वं विष्णोपायमा उच्यते। शुक्लावर्षदये त्र्ये त्रिंशे हा त  
 नो ब्राह्मणा ससु न्मा र्थे परे परः। प्रायश्चित्त स ह्यपश्चित्तये उः॥ ॥ सथा हांगिरः॥ ॥ यथा निवेदेत्कार्ये उ १६६

अथ यथाः तया पक्षे तान्तरं विष्णोः

यो हि सकार्यं वा शतस्मिन्नुत्सरिते विप्रैरेयथा धर्मपाठकाः। तंतथा तत्र जल्पेषु विष्णुशंतः संगतं चैव क  
 रिणश्च वना क्लो। सन्नेया निश्चितं च वयश्च प्राणा न पीडयेत्। काप्ती न रं वृद्धिमता पात शुभ्रुदि। यद्वप्राणा न्न  
 पीडये राय प्रमाण पीडा कर मरणान्नि क प्रायश्चित्तं विधीयते। नैव शुद्धिमवाप्नोति प्रायश्चित्ते कृते प्रिसा  
 दृष्टा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तवदंतिये। प्रायश्चित्ती न वे सून पापं पर्वदं व्रजेत्। ॥ देवलः॥ ॥ एको ना हेतित  
 कर्तुं मा न्न ज नो प्यनु य होतव्या पंतेषु गच्छंते दिनाशा खं ददातियः। आर्त्तगो मार्यमा णा नां प्रायश्चित्ना  
 नियो द्विजा। ज्ञानतो न प्रयच्छति मेतेषां भूमना गिना। तस्मा दर्त्तसमा साद्य ब्राह्मणे च विशेषतः। जान प्रिर्ह  
 र्मा पापानं ते ना व उं परा सुखैः। अ न च्चि तै र न च्चि तौ प्रे श्वै व र सं स दि धाय श्चि त्रं न दा न तं ज्ञान त कि र्क  
 ल्पितं। एवं धर्मशास्त्राः सु सा रेण प्रायश्चित्तस्य रूपं निष्कृष्य त एके न त त्याय श्चि त्तस्य रूपं भवो दयेत्।  
 तत्रायं प्रयोगः॥ ॥ केया दुपति श्रे ना सु प धाय श्चि ते न वी र्णे नि सां गो पां गे ना। सु क पा प द्वि नि र्बं को त विष्ण  
 सितस्मात्सां गो पां गैः कर्त्तव्यमिति। एवं च्चि त्त्रया र्शिशु समा वार त्रा इयं व प्रयोगे वा क च रणा प्रदर्शनीये।



तस्माद्यनयथोवितं वतथा प्रयोक्तव्यो ॥ अंगिराः ॥ ॥ सर्वेषां निश्चिन्त्यं च यत्प्राणावपानयेत्तद्भय  
 आक्येदं कर्षदा यो नियोजितः शृणोन्मिदं विप्रप्रायश्चित्तोत्पक्रमो प्रकुर्वीता ॥ तद्यथा ॥ दिनात्ते  
 नखरोमादिषु पयैराश्नाने विधाय प्रायश्चित्तं संकल्पकृत्वा तत्र प्राच्यां गानिके विविधं इत्यनिलप्यतते द्वाद  
 शायुजप्रमाणेन निरिद्धेन च्छीरहृत्त्रोऽनेन कंठकटद्वोऽनेन वाक्काष्ठेन दवात्रिशोऽध्याऽवम्पत्समांयो मया  
 मृद्धारिप्रं वगद्यया ऊशोदकेर्द्वौ शांतिर्वैज्ञाणप्रकारेण प्रकारेण दशस्नानाकृत्यावासः परिधाय  
 चम्पवेष्टवन्प्राज्ञं विधानाय गोदानं निवृत्त्याऽनंतरमात्वेनाग्निष्टाविंशतिरष्टोत्तरशतं वा व्याहृतिनि  
 र्द्व्यासमालोप्यततः सप्तयदैवव्रितेः ऊशोपंचगद्यमृद्द्वाराद्यादितिर्मंत्रे दशाङ्गीन्द्राव्रणवैणोव  
 इतशेषमालोप्यप्रणवेनैव निम्नेथ्यप्रणवेनैवापवेत्त आलोऽनशोधनोऽवुहसेन निर्मथ्यनकाष्ठे  
 नापानं वपनाशमव्यर्षणं न पद्यत्रेण व्रततीर्थेन वा जवति ॥ एवमुपक्रांतं प्रतंसमाप्याश्राद्धान्ते गोहिरण्या  
 दिदक्षिणां दद्यात् ॥ अथऽऽक्रमेण मंत्रसहितः सप्रयोगः ॥ अर्घ्यं तोसवैर्ब्रह्मवाक्किन्वासाः अदक्षिणां ॥ १७

न्यपर्षदादिप्रदक्षिणां दद्यात्प्राप्य सर्वं विख्याप्यतदुद्दिष्टव्रतं मनसि निधाय दिनात्ते नखरोमादिप्रका  
 म्पस्नावाप्रायश्चित्तं संकल्पकृत्वा तत्र प्राच्यां गानिके विविधं इत्यनिलप्यतते द्वादशांशुजपरिमा  
 णं दवकाष्ठं मृद्धारिप्रं वगद्यया ऊशोदकेर्द्वौ शांतिर्वैज्ञाणप्रकारेण प्रकारेण दशस्नानाकृत्यावासः परिधाय  
 चम्पवेष्टवन्प्राज्ञं विधानाय गोदानं निवृत्त्याऽनंतरमात्वेनाग्निष्टाविंशतिरष्टोत्तरशतं वा व्याहृतिनि  
 र्द्व्यासमालोप्यततः सप्तयदैवव्रितेः ऊशोपंचगद्यमृद्द्वाराद्यादितिर्मंत्रे दशाङ्गीन्द्राव्रणवैणोव  
 इतशेषमालोप्यप्रणवेनैव निम्नेथ्यप्रणवेनैवापवेत्त आलोऽनशोधनोऽवुहसेन निर्मथ्यनकाष्ठे  
 नापानं वपनाशमव्यर्षणं न पद्यत्रेण व्रततीर्थेन वा जवति ॥ एवमुपक्रांतं प्रतंसमाप्याश्राद्धान्ते गोहिरण्या  
 दिदक्षिणां दद्यात् ॥ अथऽऽक्रमेण मंत्रसहितः सप्रयोगः ॥ अर्घ्यं तोसवैर्ब्रह्मवाक्किन्वासाः अदक्षिणां ॥ १७

रूपेणभिलखितवाशमंत्रपाठेनहृद्येत्वन्नेसमंत्रकाण्येता निखानानिर्कृत्तवैताश्रीशुद्राणांमंत्र  
 कमेवध्वानंस्माद्यतुलेपनेनापिदृष्टादृष्टद्वापपत्तोः तथा मंत्रेधिकारानावाश्वा ॥ जिंघुराणो ॥  
 ईशानेनशिरैदेशतस्युरुषेणात्राहृददेशमघोरेणयद्यंवामिनसुतः सद्योजातंउसर्वांगंप्रणवेनउ  
 शीधयेति ॥ अथक्रमेणमंत्रः ॥ ईशानायनमः इतिशिरसि ॥ तस्युरुषायनमः इतिहृदि ॥ अधोरायनमः  
 इतिहृदये ॥ वामदेवायनमः इतिहृदि ॥ सद्योजातायनमः इतिपादयोः ॥ प्रणवेनसर्वांगि ॥ अथमेकः प्र  
 कारः प्रकाशतां ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वत्रतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोः अधिपतिः शिवो मे अ  
 क्रमदाः शिवो ॥ इतिशिरसि ॥ तस्युरुषाय विवहे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति  
 हृदि ॥ अधोरेव्यो धोरेव्यो धोरधोरतरेव्यः सर्वतः सर्वतः सर्वैर्ष्वेयानमस्ते अक्रविश्वरूपेव्यः ॥  
 इतिहृदये ॥ वामदेवाय नमोऽधोराय नमः ॥ अधोराय नमोऽरुद्राय नमः ॥ कालाय नमः ॥ कालविकरणाय  
 नमोः ॥ बलप्रदानाय नमः ॥ सर्वत्रस्मनाय नमोऽधोराय नमोऽनमोऽनमोऽनमः ॥ इतिहृदि ॥ सद्योजाता १६१

यप्रपद्यामिसद्योजानायवेनमः ॥ नवेनवेनातिलवेनसन्धमांजवोऽनवायनमः ॥ इतिपादयोः प्रणवेनस  
 र्वांगि अथवा अग्निरितिस्मजलमितिस्माद्योमेनितस्मासर्वहवा इदत्तस्मै इत्येतं मंत्रावराणो इतिस्म  
 खानानत्रंगो मयेनस्वायीता ॥ तत्रमंत्राः ॥ मानसोके सैनयेमानत्रायुषिमाणे अथेपुरीरिषाः वीरान्मा  
 नोरुद्रतामितोक्वीर्द्विष्मत्तोनमनसा विधेमता ॥ अथवा ॥ गंधद्वारोद्गुरावर्षी नित्यमुष्टं करीक्षणी ॥ इत्य  
 री सर्वत्रतानांतामिहोक्कयेत्रियं ॥ अथवा ॥ अथमंत्रं चरुवीमानो मोषधीनां रसं वनेतासासृषत्तपनी  
 नां पवित्रं काययो वनां तन्मे रोगाश्च शोकांश्च उर्वगो मय सर्वदा ॥ इतिगो मयस्त्रानेवैकल्पमंत्राः ॥ अ  
 थहृदास्त्राणां ॥ अथक्रांतेरथक्रांतैर्विष्मक्रांतेवसुधेरे ॥ शरसाधारयिष्ठा ॥ मिरक्षत्रं मां पदेपदे ॥ वं नमि  
 त्कृतं ॥ मृत्तिकेव हृदवांसिकश्यपेनास्मिं त्रिता ॥ मृत्तिके देहि मे प्राष्टिन्यसि सर्वं त्रितिष्ठित्वा मृत्तिकेव ति  
 स्थिते सर्वं तन्मनापुं दे मृत्तिके ॥ त्वया हृतेन पापेन गह्वाभिपरमागतिष्ठा ॥ इति मृत्तिकस्त्रानमंत्रः ॥ अथके

वलोदकस्नानम् ॥ तत्र मुंवाः ॥ आपो हि क्षामयो सुवधाना ॥ जजेदध्यातनामहे रणाय चक्षुसो यो वः शिवत  
 धोरय चस्पना जायते हनः ॥ उशत्री रिव मानरा ॥ अस्मात्त्र रंगमानवो स्पयास जिबयः ॥ आपो जनयथा वनः  
 अथवा इदमापः ॥ प्रहतया किं विव रितं मति यद्वा दमति उद्रो क्रयद्वा दश उता घृतं ॥ इति केवलोदक  
 स्नानमंत्रः ॥ अथ पंचगव्यस्नानानि ॥ ॥ गोसूत्रं गोमयं ह्रीं रं दधि घृतं निक्रमेण मी ॥ किना देवता दर्शितानि  
 देवताः ॥ सं प्रवद्वा मि आमु रं वै पायः स्वयमा क्तः ॥ गो देवता सूत्रे गोमये हृद्यवाहनः ॥ मीमः ॥ द्विरे दास्युव  
 सु घृते रक्रिदा हतेति ॥ अतस्त्र देवता प्रकाशकामंत्राः प्रदर्शयते ॥ ॥ अत्र गोसूत्रस्नानमंत्रः ॥ ॥ ध्रुवाम्  
 वामुक्षिति उच्चियजे वायस्मा पाशं वरुण शते ॥ ॥ अतस्त्र देवता प्रकाशकमंत्राः प्रदर्शयते ॥ ॥ तत्र  
 गोसूत्रस्नानमंत्राणां मसुं जडु अवे चवाना अदि ते उ पस्था द्युत्यं वानः ॥ क्षमितिः ॥ प्रदान उपन हण मेत  
 रानस्माद्गुण प्रकाशकाः श्रोतस्मा र्वं वामंत्रया घः ॥ एवं सर्वत्रा वि ॥ ॥ अथ गोमयस्नानमंत्राः ॥ आहिने  
 अथये कया या सु उ न द्यु उ त द्वितीययाः पाहा गी ति सि स्वतिः ॥ हृत्तो पदे नो पाहिवसा सृजि र्वमो ॥ ॥ अथ १६२

रस्नानमंत्रः ॥ उरुष्याणो अलिशस्रेः सोममि पाद्य हसः ॥ मखां सुशेव पधिनः ॥ ॥ रथ्यदधि स्नानमंत्रः ॥ आत्मा  
 नं देवानां सुचनं धर्गा नो यथा वमं चरति देवापः ॥ वो षु र्दस्य सृष्टि रे न त्र पतस्मे वाताय हविष विधे  
 म ॥ ॥ अथ द्रवस्नानमंत्रः ॥ उरुं नियाणं हरहः सुपणा आपो वसाना दिव सुत्य तंति ॥ तत्रा हरे उदना र्  
 त ध्या दिशति नद्या वा पृथिवी सुत्य द्यते ॥ अथ प्रापरा शरिका मंत्रः ॥ प्राचाः ॥ ॥ गायत्रा दय गोसूत्रं गोधद्वारे  
 ति गोमयो आप्याय सति वृत्ती रं दधिका षो मया परे ॥ तेजे सि सुक्रमिया जं देवस्य वा क्रशो दकेति ॥ ते  
 त्रगा यत्री प्रसिद्धं गोधद्वारे त्यमंत्रः ॥ प्राक् प्रदर्शितः ॥ आप्याय सति विधतः ॥ सोम वृक्ष्य स वायस्पमे ग  
 थे ॥ दधिका ज्ञो अकारि षं ति क्षो र्स्वस्य वा जिनः ॥ ख वरिनो सुवाकरं म ॥ प्राण आर्षं धिनारि षं त्रं सुक्रम सि  
 ण्यो तिरसि ते जो सि देवस्य वा स विठ प्र सं व धिनो वा द्वि र्वा धर जो हृत्वा र्ण्यो अत्रा नि धिं वा मि ते वा द्विशो ष  
 स्तृणीयः ॥ एवं स्नानानि कुर्यात्वा मः परिधाय नम्य वै क्षवं श्राद्धं कुर्यात् ॥ ॥ तद्यथा ॥ विष्णु देशे न स्यो धि क  
 त्र युग्मा र्जु लो जये र्श तो जना मं त वे तो ज न पर्या म मा मा र्च हिरण्यं वा दद्या र्श प वे क्षवं श्राद्धं  
 विधाय आदि गोदानमा वरेत् ॥ तत्र गोदानमंत्रः ॥ ॥ शवा मंगो छ ति धं ति उ वना नि व र्दं ॥ यस्मा त्स्मा छि व

१६२



मेस्पादिहलोकेपरत्रवेति॥ इतिगोदानत्रमाज्येनधौ वाहतिभिः॥ रथाविशतिरथोत्तरंवापंचगंधंजुड्य  
 त्वा॥ तत्रपंचगंधहोमप्रकाशः॥ ताप्रवर्णायगोमृत्रंशुभ्रवर्णायगोमयीकांचनवर्णस्याःपयनील  
 वर्णायदक्षिणवर्णायामृतंअथवासर्बपंचगंधंकापिलंवाअसंतवद्यथालोप्रप्रत्रंवापथकृथकृत  
 पादय्यापलपरमितंत्रामाद्याष्टकवाअंशुष्टाअर्धपरिमितगोद्विउणपरिमाणंवागोमृत्रंपलाशमध्यमप  
 त्रनिमित्तवापृत्रपत्रविरचितेवाशुवर्णंमयेवापात्रेनिक्षिपेज्जायत्र्याप्रणवेनवातनत्ररअंशुष्टाईपरि  
 मितवाअर्धंशुष्टपरिमाणगोमयाशुष्टावाअंशुष्टापरिमितगोमयपेज्जयावतुय्यांवाशुष्टतेजोसिन्धुनेनय  
 त्रिमंतत्रैवनिक्षिपःअथसप्तपलंवाअंशुष्टापरिमितगोमयपेज्जयावतुय्यांवाशुष्टतेजोसिन्धुनेनय  
 जुष्टाप्रणवेनवाशुर्वोदितपात्रेस्थापयेत्॥ प्राणवप्रसिद्धागायत्र्यादयोअस्मिन्नेत्रेधाप्रकारेवगव्य  
 ध्वानयथाविश्राकृदशितः॥ एवंगोमृत्रादिन्येकत्रपात्रैःकृवाप्रणवंसप्तचार्यांनसमा लोड्येष्टनाप्र  
 णवसुवार्थयज्ञियकाष्ठेननिर्मथ्यप्रणवेनेव॥ लिमंयसप्तपत्रैर्हैरितैःकुरोः॥ पंचगव्यसुद्वयंश्रावय  
 दिन्मंत्रिणाडतीर्जुड्यात्॥ अतस्त्वस्थानेहरिताःकृगाःएवंमंत्रैःकृगाःश्रावतीवेडमतीहूतोत्रयवसिनी

मनुष्येदशसुशुभ्रतारोदविश्ववेदाधर्थपृथिवीमजितामद्यधौ॥ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदंसिम्  
 लमद्यापासुरोमानसोकेधनयेमानआशुषामानोगेषुमानोअशुष्टरीरिकाधीरान्मानोऋइनामितोव  
 धीहैविष्णुत्रोतमानिदधेमतेशतर्द्रामिनवतामयेनिःसत्रर्द्रावरुणायनद्याशरिषाधीरान्मानोऋइ  
 तामितोवधीहैविष्णुतो नमसाधिमतोमिंद्राःसोमासुवितायसंयो॥ शत्रुड्डष्टप्रणावजसतो॥ अग्रयेश्वाह  
 ॥ इतिस्थाडुजिड्वावतयदणंकरिष्यति॥ ब्राह्मणात्रष्ट्वाकुरुधेतिर्तुउडातोडुतशेषंपंचगव्यप्रणवेन  
 पिवेत्राएतत्रयाभाहृदिःधयंनन्नन्दर्शनेकर्तव्यशुडितिरिष्टंषर्वेयनोहेप्रणीयोअतएकालहृदद्याश  
 न्नाद्यपेज्जयागोमृत्रादीनिप्रब्रैकैकैकाल्यपरिमाणपेज्जयामेलनीयानि॥ एवंत्रतयदणंकृत्वा॥ ततःपर  
 सोनीश्रुवाततोडुकृतमनुमाविक्रयत्रिषथानिशा मयत्रिवाहयेत्॥ एवमुपक्रांतंसम्पूर्यारनीत्वा॥ तत  
 उदीर्वागानिद्वीत॥ तपंकमःप्रायाम्करणकेलायांवेसवश्राद्धगोदानानत्रमेपडुताशेषस्यपंचगव्यत्रत  
 स्ययदीव्रव्राउदीयांमलघानसमयउहामानत्ररंश्राद्धगोदानादुपक्रमेहोमस्यसात्रिहिराण्पादक्षिणवत्र  
 यादिशदेनेपातानिदगदानश्चत्रयापि वसंयह्वाविणप्रदर्शितानि॥ गोत्रमिलहिराण्पाज्जवासीधान्यउडा

निवारोप्यंलवणमित्याहुर्वशदानानिपंडितेति॥॥अत्रक्रमेणदानमंत्रा॥गोदानमंत्रादाग्निसमयेदर्शि  
ता॥॥अथत्रुमिदानमंत्रा॥अथेवत्रुमिदानमंत्रकलोनादतिघोडशी॥दानाद्येनोमिमेशानिचमिदानाहुर्जनेह  
महर्षेगाथवसंस्तःकथ्यपस्पतिलास्मृतः॥तस्मादेषांपदानेनममपापंयदुहृत्वा॥इतिलवणमंत्रा॥॥  
अथद्विरणपदानमंत्रा॥॥द्विरणपदानमंत्राद्विरणपदानमंत्राद्विरणपदानमंत्राद्विरणपदानमंत्राद्विरणपदानमंत्रा  
अथात्पदानमंत्रा॥॥कामधेनोस्मृजुतेसर्वक्रतुषुसंस्थितमहादानाभ्याप्यमादाद्विरणपदानमंत्राद्विरणपदानमंत्रा  
अथवखदानमंत्रा॥शरणं सर्वलोकानांमहापालक्षणापरांभवेयद्यारीवधत्वंमतःशान्तिप्रयच्छमे॥॥अथमाय  
दानमंत्रा॥॥सर्वदेवमयंभान्यं सर्वैर्यो देवाधिभारमावापानिनांतीवितोपायमतःशान्तिप्रयच्छमे॥॥अथउद  
नमंत्रा॥॥यथादिवेभुविद्यात्माप्रवरश्चजनार्दनः॥सामवेदानांमहादेवयोगिनोप्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणां  
पार्थिवीयथा॥तथागसानांप्रवरःसदैवैह्वरसोमतः॥ममतस्मत्परांलक्ष्मींददस्वमुदसर्वदा॥॥अथरजतदानमं  
त्राप्रतिर्यतःपिटृणांरविस्त्रयंकरयाःसदा॥शिवनत्रोन्नवरोप्यंमतःशान्तिप्रयच्छमे॥॥अथत्वणदानमंत्रा॥अथ  
स्माद्वरसाःसर्वेनोक्कृष्टालवणविता॥शंतीःप्रीतिकरनिर्दामतःशान्तिप्रयच्छमे॥॥इतिलवणदानमंत्रा॥पामानंय

रिपाकस्यशांतिकर्मविवक्षया॥उक्तानिपरिष्ठाघायांमुपसृकायशेषतः॥॥मतिर्येषांशाखेपकृतिरमणीया  
व्यवदतिः॥परंशीकंक्षाघ्नंजातिनाजवशेकतिपयो॥विरचितेतेषांभुकरतलरूतेस्थितिभया॥दियंयासा  
रणप्रवरमुणिशिष्यस्यजिनि॥॥मातापुण्यचरित्रकीर्तिविनवस्यस्याविकानामतः॥साकल्पापरमृत्तिश  
र्यवरिनश्रीपेद्दिनदःपिता॥सौर्यकोशिकवंशरूषणमणिः॥श्रीतद्विश्वेश्वरोत्वेदस्मार्त्तमतेनयेक्सपदेवा  
वेषकृतिर्वर्द्धते॥॥महाणवाख्यिमाहितेप्रबंधेमांघाटनश्रीमदनाभमजस्य॥सकर्ममाणिमगणोनशेषेद्विर्ष  
रंगः॥यत्सुसुभमेव॥॥इतिश्रीपंडितपारिजातकहारमन्त्रेयादिविरुदरजीविराजमानश्रीमदनपालभुक्तस्य  
मांघाडनिर्वंधेमहासर्वातिथानेकम्विवाकेसमस्ररंगः॥॥परिष्ठाघायांजसमाघ॥॥अथरोगनिवर्द्ध  
णानि॥॥तत्रक्षयरोगहराणि॥क्षयरोगनिदानमाह॥॥स्याजक्व॥॥ब्रह्महृदयरोमीस्यादितितत्रिदस्य  
बंधउद्धं प्रायश्चित्तंकर्या॥अथप्रायश्चित्तंमहंतिस्त्रियोगिणएवविनारोगिणोद्धं प्रायश्चित्तस्यतेनवाः॥त्रिघान  
वा॥॥इतिक्षयरोगहरप्रायश्चित्तं॥अथक्षयरोगहरकहलीदानं॥॥पयउरणे॥दानीस्यानेत्रमाराणंद्धं

त्रमारण्यमुदकदानादिप्रतिबंधरूपाद्यनिष्स्वराणां अथवाज्ञे त्रेष्विप्रतिघातः ॥ वीधायनसत्रिर्बर्बिकां  
 कदलीदानमाह ॥ कारयेत्कदलीदिद्यांघर्णे सर्वत्र संसृतो फलप्रगेन संसृक्तो सुवर्णस्य पलेन तु यथा वि  
 सक्तः कुर्यात्स्रिणा वेद्यस्रवकैः ब्राह्मणा ज्ञेत्वा पितृज्ञे त्राना विधेः युक्तेः ॥ होमश्चकारयेत्तत्र पूर्ववद्वा स  
 पो न वा तस्मैतं कदलीदिद्याद्ब्रह्मालंकारधर्बिकां क्षजिताय दरिद्राय स्रुत्रस्थायाम् वेदिनाथमज्ञायान्तिद  
 तोयं मंत्रेणानेन उच्यते ॥ हिरण्यगर्तं कुरुषुः नाराज रजगन्मयं रंतादानेन देवेश त्वयं नृपय मे प्रनो ॥ उरण  
 द्वाचनं कार्यं ब्राह्मणेर्वेदपारगैः शिष्टै रिति वं कृतिश्चमहो जनमाचरेत् ॥ फलप्रगेत्यादि ॥ फलानां धराः स  
 मृदः ॥ पलेन तु फलस्रुपं परिनाशायो परिमाणं प्रकरणे त्रष्टव्यं यथा विजवतः ॥ वितानुसारेण समध्वं  
 यलादक्षिकेनापिकदलीकारयेत् ॥ इत्यर्थः ॥ स्रवकैः ॥ सूत्रेणा वेद्यस्रवाद्यतां वेद्येनेन कदलीस्रुजापलज्ञेते स्रु  
 मंत्रश्च त्रवर्कयजा महस्रुप्यां हो मंत्रकारयेत्तत्र पूर्ववदिति ॥ धर्बवद्वेन स्रुजयमंत्रस्यो पलाज्ञितवात् ॥ कद  
 लीदानमंत्रेच परमस्रुपस्य रंजाऽधिदेवतावेनोपादनात् ॥ तथा कर्मणोऽपि स्रुतिवर्हणार्थं वा ॥ ॥ त्रं वकमंत्र

१२२

श्रुपरिजाषायोक्त्याऽप्रकरणे दर्शितः ॥ होमसंख्याश्चाष्टोत्तरशती महस्रुमसृतं वा ॥ द्वयभाज्येति लाश्रकद  
 लीस्रुजानत्र ब्राह्मणा ज्ञेत्वा होमं कुर्यात् ॥ वचनयात्गतक्रमवाक्षेप्रमाणान्नावात् ॥ एवं कदलीदाना  
 नत्रमप्रकर्मनिर्वर्त्येत्स्रिवाद्यामनत्रं शिष्टै रिति स्रुसहस्रं जित ॥ इति ज्ञायरिणहरकदलीदानमाह ॥ अथ  
 राजजन्माहरव्याधिप्रकृतं दानमाह ॥ ब्रह्माष्टपुराणे ॥ ॥ धर्मशास्त्राण्यपि ज्ञायप्रायश्चित्ते ददाति यः राज  
 ज्ञानवेत्तम्यरोगपीडाऽन्तिदारुणाः ॥ प्रद्वेकिनविधानेन नस्यं दद्यात् ॥ तिस्र्यकमां प्रद्वेकिविधिरस्मात् ॥ परिजाषा  
 यो दर्शितः ॥ द्याधिप्रतिमादानविधिप्रकरणे ॥ ॥ प्रतिमालक्षणं कर्मविपाकसाये ॥ ॥ राजयज्ञाकृततः शा  
 खावापासितर्जनीदयस्त्रिनेत्रादंष्ट्रास्योदष्टोष्टो हसुमुद्यतः ॥ ॥ इति राजयज्ञाहरस्रुकृतिदानमाह ॥ अथाऽ  
 साध्यस्रुवैरोगहरव्याधिप्रकृतिदानमाह ब्रह्माष्टपुराणे ॥ ॥ ब्रह्मोवात्वा ॥ सुवर्णस्रुजतेर्यथास्रुत्वा उसारतः क  
 त्रावप्रतिमां द्याधेर्दद्याद्दिप्रायस्रुत्वा ॥ शतेन वा तद्वेन त्रिशता ॥ निष्कसंख्याया ॥ ज्ञातरूपमयस्याधिप्रतिरूपं त्रकारये  
 त्रनिवायपात्रे संघर्णे तं दुलै सितस्रुपकैः ॥ अलं कृत्य च सोवर्णरूपं च सुकलेपनं ॥ वासो युग्मेन स्वेष्ट्यहिरण्यसंघर्ष

धृष्टोः। अलंकृत्याय विप्राय दद्यान्मंत्रमुदीरयेत्॥ ॥ मंत्रमाहा। यो भारोगाः प्रवाधेने देहस्थाः सततं ततः। यद्भीष्य  
 निरूपेण तद्गो द्विजसत्तमः॥ ॥ धृति यदीति कर्तव्यता माहा। वाह्मिन्येव तं प्रपद्येत्कीयाद्याधिनिःसहानतः  
 मरोगी दानावदीर्घां च ध्येयं प्रपद्येत्। ध्रुवर्णं च न रजतेरियादि। सुवर्णापि नशरीसुनिर्माणं च न वक्षुषी। रजतेनास्त्रो  
 श्च तगोलकां पत्येयाप्याकिप्रतिमानुरूपतः। ज्यादिव्यर्थः। निष्कंशरूपपरिभाषायां परिमाणप्रकरणे ज्ञातव्यं।  
 तस्थं सुवर्णापात्रे कास्यं च यज्ज्वाणादेयामिति संकर्मविपाकं दर्शनात्॥ ॥ इति असाध्यसर्वरोगहरयाधिपकं  
 निदानघा॥ ॥ अथ प्रकारान्तरेणासाध्यसर्वरोगहरणात्॥ ॥ त्रिधा नै॥ ॥ असाध्ययाधिना यत्सुवर्णप्रमाण  
 चारिणा॥ ॥ आतेरे द्वेधा घृतेन प्रवृत्तं वाप्यतः। चविः। सूत्रं मा ज्ञात्सिद्धिं त्रिं चा उपस्थायेत्परां कशाशाह विभवे  
 पोत्पादि॥ एकस्मिन्दिने उपवासः॥ अपरस्मिं व र्वैतपकात्प्रम तं द्वितः। अर्णमासे जयेत्सुखं रोगस्य च प्रधुव  
 ने॥ होमकर्मण्यप्युक्तानो जपसा द्विगुणानवेत्॥ ॥ आतेरे द्वेधा त्वादि॥ आतेपी तखियने न सद्देवत्ये न स्तुते  
 ना॥ सूत्रं मा ज्ञात्सिद्धिं त्रिं चा उपस्थानात्सर्वो ह विः शेष पोत्पादि॥ एकस्मिं दिन उवासः॥ अपरस्मि व र्वे वि  
 शेधेण पारणं। च चरुच विश्चरु रेपि न ज्यमेवा तथा च वै रोगिणो मा संशरी रनिर्वाहा उपपत्तेः॥ अतः

११३

अतिदिग्भ्रष्टो मानसमाहं बुभक्षं करोपस्थानं कार्योक्षो माः प्रतिक्रं उपस्थानं घृतेन व्याधितरसा विना  
 मृत्युव्यापुत्रशतं महत्संक्षो मः कार्यो स्वयमशक्तये दा चर्पणकार्ये च आचार्यस्यैका त्तरो पवासः हव  
 वदेव सुसुखे ज्ञेयं आतोपितरित्पस्प देवदश श्रेयसु कस्य गृहमद आषिः सुदो देवता विष्टु प्रहं दः। विदि  
 तार्थे विनियोगः॥ ॥ आतेपि धरि तुरुती सुना मरु मा गि श्रेयस्य स दशा सुयोथाः। अतिनोवीरो अद्रे निष्कमे तत्र  
 ज्ञायमस्ति रुध्र प्रजातिः॥ शात्वात्वेति रुद्रशवनेतिः शतो हेमा आशान्ये तेष जेतिः। या आस्मिन् ज्ञेयावितरो व्य  
 होपमीवाश्चान्यस्वविष्ट्वा। शात्वात् जातस्य रुद्रश्रियास्ततव सवसां वज्जवा हीर्जिनः रमसदः स्रष्टि विश्वा  
 अतीतिरपसो सुयोधिः॥ ३॥ मत्वा सुदव क्रुधमानगो ति मांडु सुती तेष स मासे कुंती उत्रे धिरो ची चर्ययते  
 प्रजे र्निषक मशत्वा तिषजो क्रणैतिः॥ ४॥ देवी मासि देवते ज्ञाद विरि वसो मोती मी उद्रे दिप्रिया उह ह रः  
 सुहवो मानो वस्ये वक्रः सुशिरो रधमानो यैः॥ ५॥ उन्ना मं त्रण सो म्भवा हीयसाययसानधमानो वृषा  
 वच्छायामाप अशय दित्वा शेष सुद्वस्प मुने ज्ञा अस्प ते रुद्र एतया कुं द स्त्री यो अस्ति नेष जो जलधः। अत



तीरस्थसोदेवस्यातीनुमाद्यः तद्वर्णयः ॥ गायत्रवेद्युषज्ञायस्विनीचिमहामाहीसुस्रुतिनीरयामिन  
 म्पकर्मरीकिर्षणमोक्षिणीमसित्वंरुदंस्पनाम् ॥ ७ ॥ शिरेतिरंगैः पुरुषपरुशो वल्लुशुक्रेलिः पिपिशि  
 ल्यैः इशानादस्यनुवनस्यचरेर्ज्ञवाजयोयदुद्राय अश्वर्यं ॥ ४ ॥ देवितर्णिसायकानिधुब्रह्मनिर्णयजतंविश्व  
 स्यात् ॥ अर्धेन्द्रिदं दयसे विश्रमात्वनवाउद्गीयो रुद्रवदस्मि ॥ १० ॥ सुहिसुतंगर्त्रसदंयुवनेमृगंनदीमस्यपह  
 स्रलांजलित्रेरुद्रस्रवानोच्यत्रेअस्मिन्निवयनुसेना ॥ ११ ॥ कुमारिश्चितरं वंदमानं प्रतिना  
 नारुद्रोपपन्नैः ॥ हतेमातरिसम्यतिगृणीयसुतस्वत्तेषजारास्पस्मा ॥ १२ ॥ यावोतेषजारुतः शुचीनियारा  
 नेमादृषणोयामयोनुयानिमनुरहणीतापिनसाशश्रयोश्चरुद्रस्यस्मि ॥ १३ ॥ परिणोदेतीरुद्रस्यष्टषा  
 परिष्वेषस्पडर्मतिर्महीमाशं अश्रिरामसंघवदस्रनुधमीडसोकायतवयायमूला ॥ १४ ॥ एवावचोह  
 षसवेविनामयथादेवनकृणीयेनहेसिदननसुनोरुद्रहवृहद्देमविदयेसुवीरा ॥ १५ ॥ ॥ इति प्रकारा  
 तरेणाऽसाधसर्चरोगहरणम् ॥ अथसातातपत्रोक्त राजयद्महरणम् ॥ राजहाराजयद्मीस्यादेवंतस्या

१४

३५५

पिनिःकृतिः गोदिरण्यनिमिष्टाः ॥ नजलष्वप्रदानतः गुडधेनुप्रदानेन घृतधेनुप्रदानतः इत्यादिसिः क्रमेणैव  
 इत्यरोगप्रशान्तयेनावादीनिति न कुंसातानिशक्तिरोगाद्यनुसरणव्यस्रानिसमस्राष्टेनिदातव्यानिश्चादि  
 शब्देनयद्सोतिविनायकशात्र्यादयो लक्षात्रोऽष्टतधेनुविधिर्मत्प्रशरणे ॥ तत्रगुडधेनुविधानस्यैवघृ  
 तधेनवादायदितिदिश्रत्वात् ॥ गुडधेनुविधिरुच्यते ॥ १ ॥ गुडधेनुविधानस्यैवधेनुद्रूपमिदयत्फलोतविदा  
 नीप्रवृद्ध्यामिसर्षपापप्रणशनम् ॥ कृष्णाजिनचतुर्दशैः प्रयंत्रिं विविच्यसेद्गु विगोमयेनोघनिप्रायादलोनासा  
 र्ययत्नतचतुर्दशैः शोरनिरितिदानकंडि ॥ पापक्षिरजिनेश्चतुर्दशमि तं देयोलघेनाकाकाजिकं तद्वद  
 स्पपरिकन्ययेत्प्रोडुस्वीकल्पयेद्देनुमुदकूपोदासवत्सकां ॥ अडगुरवीलिः प्राकृशिरासवन्मोपितथैव  
 वाउत्रमगुडधेनुस्यात्सदाचारिचतुस्मम् ॥ गृहविज्ञाः चसारतः ॥ तीरलक्षणपरिज्ञाणायोपरिमाणप्रक  
 णस्यधायिगृहविज्ञाः चसारतः ॥ कुंसातानिशक्तिरोगाद्यनुसरणव्यस्रानिसमस्राष्टेनिदातव्यानिश्चादि  
 तस्यहमावराहृतोसुकिकर्षाविडलौक्यादौशुचिसुक्ताफलेहृणोऽप्रमुक्ताफनसाहचर्यादुक्तरिपमु



काष्ठिकैवयाद्याः सितसूत्रसिरालांतोसितकं वलाकं वलोकं वलः सप्ताः ताग्रंगंडकः पृष्ठोती सितवा  
 मरुमकौ गंडकं कडुप्रदेशो गंडकलस्या विद्युदुग्धोपेतौ नवनीतसूनो वितौ हौ मपुष्टौ कांस्पदेहा  
 विंदनीलकतारको तारकात्तुर्भेधसागाः सुवर्णशृंगानरणीराजतं नुरसे सुतौ नानाफलमये हते द्या  
 णगंधक रंडकौ फलमये हतेः संसुता विसृज्यः अत्र उखयत्पुः सारण सुवर्णशृंगादिकं विषये वि  
 ल्लशा वानकारये रइस्यस्य सवैरो मन्वात्रो इत्से वरच यि वततो इपदी ये स्या ईये वा ॥ अर्द्धनमंत्रा ॥  
 धेनो वंद्य धिवी सन्न्यायत्मात्के नव सन्निता सवैपापहरा निसमतः शांति प्रयच्छो ॥ एवं अनेन मंत्रेण सव  
 त्तो धेनु समस्य सवैता धेनु मा मंत्र्याता ॥ ततः मंत्रमाहः ॥ ॥ यालक्ष्मी सर्वं चतानो याच्च देवेभ्यस्व  
 ता धेनु रूपेण सादेवी अतः शांति प्रयच्छता देहस्य यो च सद्गुणो शंकर स्पृश्या सदा धेनुरूपेण सा देवी  
 मम पापं व्यपोहता हित्वा र्धक्षिया लक्ष्मीः स्वाहा या च विता वसो ॥ चंद्रार्कशक्तिया धेनुसु रूपेण स  
 साश्रियो चतुर्मुखस्य यालक्ष्मीया लक्ष्मी धनदस्य चालक्ष्मीया लोकोपालानी सा धेनो र्घरदा सुमो खधा

पृष्ठोती सितवा

पितृमुखां न स्वाहाय च्छत जंतया सवैपापहरा धेनुः स्रमा ह्योति प्रयच्छो एवमा मयता धेनुं ब्राह्मणाय निवेद  
 येत्र ब्राह्मणस्य उद्धदेशे प्रतिपद्यस्व सिकं कुंया चो एवं सु उधे उ विधिमति धये न मे वै विधेष्टत धेया दि अ  
 ति हि शांति विधन मे सहै च नो सर्वो सा मिह पयते नो सर्वो सां प्रसन्न धेनु व्यतिरिक्ता नी ॥ प्रसन्न धेना वपिसु  
 वर्षशृंगपाद्यिया विसवतः समान मे वी पसु पाप विना शि च्यो पश्य वेद श धेनु वंता सां स्वरूपं वदसा मि  
 नामानि च नरा धिपः प्रथमा गु उधेठः स्या ह्य त धेनु म्था परा ॥ तिल धेनु मृती या च वतु यी जल धेनु का  
 क्षीर धेनु अ विख्याता मधु धेनु स्रया परा ॥ समशी शर्करा धेनु र्दधि धेनु स्रया इमी र स धेनु सु नवमी दश  
 मी कुम्भ रूपतः प्रसन्न धेनु रियर्थे ॥ कुंसा सु हंश मै धेनु नो मित्र रा शाशु रा शयाः ॥ कुंनरा हः कं लशा पयो  
 यो अथ वा परिमाण वचनः तच्च परिमाणं परिभाषायां परिमाण प्रकरणे इष्टं सुवर्ष धेनु मण्य क्रै विदि ह्यं  
 तिमानवाः न वरन ते न र्त्नैश्च तथा न्ये पि मर्त्यैः ॥ एतदेव विधने स्या देने वी पस्करा स्मृताः मंत्रा वाहन स  
 युक्ताः सदा पर्वणि पर्वणि यथाश्च हं प्रदातव्यां कुं क्रि सु फल प्रदा गु उधे द्या दयो देया उपरा गादि पव्वं सु



॥ इति उच्यते चार्थि विधिः ॥ ह्ययं ह्ययं रोगनिवृत्तये सर्वोक्तं उच्यते उच्यते ॥ इति उच्यते ॥ इति उच्यते ॥ इति उच्यते ॥  
 निमित्तानि प्रथमं गौरव्यान् अद्वितीयानि अतश्च चतुर्थादिविधिः कल्प्या विदितव्यः ॥ इति ज्ञानात्  
 प्रोक्तं राजयक्ष्महरणम् ॥ माता पुष्पचरित्रकीर्तिवित्तवायस्यो विकानामतः शाकल्या परसूत्रिं गार्थं च  
 रितः प्रपिष्टः सद्यः पिता सोयको शिकवंशचरणमणिः श्रीसदविश्वेश्वरो वेदस्मार्तमतेन येन सपदेवको  
 कृतीर्हते ॥ मतिर्येषां शास्त्रप्रकृतिरमणीया व्यवहृतिः ॥ पराशालेखाध्यं जगति कञ्चनैकतिपयै वि  
 संविद्वैतेषां सुकुरतेन च तेषां मियादियं व्यासो रण्यः प्रवरमुनिशिष्यस्य जलतिः ॥ इति श्रीपंडितप  
 रिजातकदारमलेत्यादिविरुदरास्त्रीविराजमानश्रीमदनपालपुत्रस्य माधवुर्निवृत्तैकस्मै विधाके अष्ट  
 मश्चरंगः ॥ अथश्चरोगहरणम् ॥ याज्ञवल्क्यः ॥ अन्तर्द्वामयावीस्य आमावीशुलरंगवाशाः ॥ अथ  
 अश्वत्थः कुंभे स्याद्दरतो द्विशतोदमः ॥ इति त्रैलोक्यकनिष्ठसाहसं उच्यते ॥ कनिष्ठसाहसं ॥ अथ  
 सुषपातकसमवाडुपपातकत्रयश्चित्रं त्रैमासिकं कंत्रव्यश्च लमात्रस्यातत्रापि रोगी स्यात्साद्यत्वेन

१९६

सुषपातक

दानं च तपापास्यासपरिकल्पनीयाः षण्मासिकादिव्याधेरुत्पत्तेः त्रयश्चित्रमपिकल्पनीयाः ॥ इति शुलरो  
 गत्रयश्चित्रम् ॥ अथ शुलरश्चित्रं शुलदानम् ॥ तदुक्तं शुलवर्गवित्तमणौ ॥ शुलेन शुली च तिममुष्पाणा  
 चदिमकः पलेन वा तद्वैतं  
 स्वादिरणाय वा पुनः क्रवक्षेण संवेष्टितानां सुपरिचरितानां उपरीमाणं द्रौणं वा पितृकृतं तद्वैतं  
 यथाशक्त्वा ह्यजयेद्वा ह्यणशुचिः अर्घ्यादिशुलमंत्रेण वा उच्यते ॥ उपचारकाशक्रियाविद्वाहणः प्रजां कृत्वा ह्येव  
 चकल्पयेत् शुलस्य दक्षिणार्धं छंडिलेभिः प्रीणीयते ॥ समिदाज्यतिलान् कृत्वा ततः श्रांतिप्रकल्पयेत् ततो  
 दक्षेन वा सिंचेत् शुलेन रोगिणो नरः ततो ह्यनवत्ते शुले प्रज्ज्वित्वा स्वशक्तिः ॥ दद्यात्सदक्षिणं तत्र शुलमुष्पा  
 यत्कदंबुखं मंत्रेणानेन परयासक्त्वा सर्वपरिसरे तत्र शुलेन ह्यणशुचं त्रिपुराणां विनाशनम् ॥ देसानां दान  
 वात्वं च शंकरस्यास्युर्ध्वं तथा ॥ कश्चिच्छमथपार्श्वं च मथवा पृष्ठं संगता ॥ शुलेन विनाशमेवमेव महादेवेन धारि  
 तम् ॥ ततः स्नात्वा त्रैलोक्यं तत्राहणैः सह वैशुचिः ॥ शुलदिसासमुत्पन्नो वेदनामाशुनाशयेत्पलेनैत्यादिपलत्रो



अनन्यसौ

णयोर्द्वैतं परितोषायां परिमाणप्रकरणेतिदितं प्रलये द्वाहणश्चिरिति त्राहणः प्रवृत्तिं श्लेषं प्रजये  
दित्यर्थः। श्लेषमंत्रेण अर्घाद्युपचारकल्पयेदित्यत्र यानं श्लेषमंत्रः शेषपंचाक्षरो वा रुद्रप्रकाशको वैदिको  
मंत्रो वा शेषपंचाक्षरस्य वा प्रदेव ऋषिः पंक्तिः श्लेषः त्रिविदेवता प्रजाया विनियोगः ॥ मंत्रासु ॥ ॥ नमः शिवा  
या ॥ केचन प्रणवादिपर्वतिवैदिकमंत्रसु चैव कर्मिया द्योवदवः प्रवर्तिता समिद्धा व्यतिहात इवेति  
समिद्धादिति लक्षणे मेयु कर्मविपाकसंग्रहो आद्ये मंत्रांतराणि प्रवर्तितानि ॥ तद्यथा ॥ ॥ समिद्धो मेताव्य  
उरुष एवेदमित्यस्य मंत्रस्य नारायण ऋषिः छत्रो देवता अर्चु प्रह्वं दसमिद्धो मे विनियोगः ॥ ॥ इत्य  
एवेदो सध्वय इत्यत्र ताव्यं उता मृतस्वचिंशाशानो एद्वेना तिरो हति समिद्धश्च यद्विया ॥ आद्ये होमे च  
वेकमेव ॥ ॥ तिन होमे च यत इंसया मइ ति मंत्रस्य परिताषायां ह्यव्या उ होमप्रकरणे प्रवर्तितया होम  
संख्या अष्टोत्तरशतसहस्राद्युतात्रो व्याधितरतमसावेन कल्प्या ततशांतिप्रकल्पेयेदिति प्राग्निर्घोषश  
तिः तत्रवानोचद्राये इत्यारस्याश्च लायनीयाशत्रो वातः पवतामिनि त्रिरीयाणां एतद्वयमधि पिपरिताषा १२७

अथ श्रुतिप्रमाणं अथ विवक्षितं

यां व्यधितप्रतिप्रतिमादानविश्रैदृश्यो ॥ एतच्चोपलक्षणां ॥ श्रुतौ यस्यां शाखायां याशांतिः सातद्वस्येव्युप्रासा  
एतच्च शांतिवाचनं वा रुणं क नु संस्थाप्य तस्या अर्क्यं वा ततस्तेनोदकेन शांतिदकेन श्रुतिनं नरमासि वैशकं तत्र  
स्थापनाप्रकारस्य नवग्रहयज्ञे सूर्यादिश्रुतानंतरं दक्षितः ॥ श्रुतिकेव प्रकारो पितृवैववसुधारायां दक्षितः स  
र्वपरिस्मरेदिति एवं विधिपापाचरणादयं रोगः संजातः एतस्मिन्निवृत्तये वक्ष्यमाणशूलदानमंत्रस्थितं वि  
षणविशिष्टं शूलं संस्थाप्य ललायदद्यात् इत्यर्थः ॥ एतच्चोपलक्षणां ॥ इति शूलहरविश्रुतदानं ॥ अ  
थ अरुविश्रुतहरणं ॥ ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ ॥ अद्वाही नो धनाद्वा नेष्करतिमानसदानं वायुः सोऽरुवि  
रश्रुलीनायेतत्रैव निस्तरः ॥ चोद्रायणं चाति कृच्छ्रं राजा एतमथा परं होमायुपि च कुर्वीतवाग्धादि रु  
स्पतनं चोद्रायणादीनि वस्त्रानि समस्तानि वा यथाशक्ति रोगाद्यपेक्षया यो ज्ञानी सूर्यो होमश्च शूलहर  
शूलदानोक्तप्रकारेणां प्रादिशुद्धेन विष्णुसहस्रनामां ग्या मार्जनविष्णुद्वये चोत्राणि लक्षपत्रैतानि च  
परिचाषायां दक्षितानि तत्रा चोद्रायणादीन्यापा ॥ इत्यंरुविश्रुतहरणं ॥ अथ प्रकारान्तराणां रुविश्रु

लहरम् ॥ कर्मविपाकसंयुते ॥ साक्षादंगिवादीनियः सुनर्जननात्ररोगी आत्ररोगी श्रुतीवाः सुवि  
 मात्रसवेत्राएतन्निवृत्तयेहेकवार्षिकं द्विनिवार्षिकं त्रैवर्षिकं तदत्रेवगोहिरण्पादिकं दिशो शत्रुवगोहन  
 नेयज्ञसाधनत्वादिगुणविशिष्टगोहननाशयश्चित्रस्यसुखात्वात्त्रादिशत्रुनयज्ञविद्यातोत्सपुत्रस्य  
 व्याधिरुसलघुनविनेकवार्षिकादिप्रायश्चित्तानियोज्यातिगोहिरण्पादिकमिवादिशत्रुननासाविधीय  
 तोतदत्रेवेतिवका उद्यनद्युत्तवजपाजपसंख्यां वासुतो उद्यनद्युत्तवः परिलाषायामा श्रियतिमादानवि  
 श्रोदृष्टयाः ॥ इति प्रकारात्रेणः विशुलहरम् ॥ अथ जीर्णशुलहरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥  
 निदलमाद ॥ शातीतयुक्तः ॥ श्रुतयेवतुक्तानेमत्रतस्यद्विजस्यवाः शुलवाधिसेवनिर्निमित्तं जीर्ण  
 नातिपिडितः श्रुतयेवान्नेसततं जन्मात्रे उक्त्यायसन्निमित्ताप्रायश्चित्तमकुर्वन्नास्त्रेयश्चात्रतस्यद्विज  
 स्यकर्माल्लक्षानरहितस्यवाः शुणिकस्यवान्नेकुक्कुट्येनास्त्रेयश्चलयाधिमार्सवेदिसर्थः ॥ अत्रेमानिःकृति  
 कुर्यादुपवासत्रयंतथा दद्यात्पत्रयं रूपं ब्राह्मणायसकाचनमप्लमितिपरिलाषायोपरिमाषयक

१७

रणेस्यधरियरजतदानमंत्रोपितत्रैवप्रायश्चित्तोपक्रमपद्धतौ ॥ इत्यजीर्णशुलहरम् ॥ अथजीर्णशुलह  
 शुलहरम् ॥ कर्मविपाकसंयुते ॥ विश्वस्यविषदातात्रजीहवाजायतेनरः त्रिशष्टीश्रुतीवाः एतन्निवर्द  
 णार्थं त्रयायश्चित्तं समादिशोत्रांचां द्वायणंपराकंवतथोद्यनद्युत्तवचात्रामाज्ञेनकस्यापिजपसंख्यात्र  
 येतवेत्रा उद्यनद्युत्तवः परिलाषायोरोगप्रतिमादानविश्रोदृष्टयाः ॥ जपसंख्यात्सुतोत्रपामार्जनसौत्र  
 मपिपरिलाषायोविष्णुसदसनामानत्ररं दृष्टयाः ॥ सौत्रजपस्वायाधिविमोचकाविसेधंवां द्वायणप  
 सकयौर्लक्षणमपिपरिलाषायामेवा ॥ इतिजीहृशुलहरम् ॥ अथजवशुलहरम् ॥ कर्मविपाक  
 समुच्चये ॥ कृताध्यनसंपन्न्याचितारमकिंचनोद्वाहाणंरहमाहृयदानार्थंनददातियः संतवे  
 क्त्ररेश्रुतीतथाश्रानीचकदि विरः कृत्वा तिहृत्वां द्वाणिसकुर्याद्विगशांतयोः वां द्वायणं कृत्वादि  
 स्वरूपानिपरिलाषायोदशितानिसंख्यात्सुतंगवादिदानमंत्रः ॥ अपितत्रेवाप्रायश्चित्तोपक्रमपद्ध  
 तोदशिताः सहिरण्पद्युतदानेआज्यविष्णमंत्रः ॥ अलक्ष्मीर्यश्रुदोः सद्गंगान्पवच्छितांतसवैश

मयाद्यत्वंलक्ष्मीप्रतिष्ठवर्द्धया ॥ इतिकटिश्चलहरया ॥ अथदसश्ललहरया ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ दृष्ट्वी  
 जन्मनिनासिकाक्षीयादिरादितो द्विजाहसश्ललीसत्तवतिनिष्कञ्चलदशकं दिवशातो जयेद्बालाणश  
 क्रो जपेत्सौरदिरण्यदः सौरं स्रक्तं मंत्रं वा ॥ सौरमेतच्छास्त्रोवा उद्यन्नद्यत्र चोवाश्रयः स्वरूपं निष्क  
 खरूपं च परिभाषायामुदीरितं ॥ सौरस्रक्तं वा उद्युत्संजातवेदसंमितित्रयोदशस्रक्तानिः प्रकृण्वत्स  
 षिश्च्यतवगायत्राः शिष्टाश्चतुष्टयः सौस्रजेदिवता जपेद्विनियोगः ॥ एतदपिस्रक्तं परिभाषायामदा  
 शौरण्येधो धव्या ॥ हिरण्यदइति तव विशेषः ॥ इतिदसश्ललहरया ॥ अथकर्मश्ललहरया ॥ कर्म  
 विपाकसमुच्चया ॥ मैथुनंशुभ्रय्यापित्रो कर्मश्ललीसवेतुतः स्याच्चैववधिरं किंचिष्कपलेशद्वसह  
 वर ॥ निष्कवित्रातिकंदद्याद्वाणायकडं विनीविष्कप्रकाशकामं मंत्रं पदोपशं तयो अपामार्जन  
 पातेन मंत्रितं सजलं पिवेत्तत्राज्ञेन ब्राह्मणे स्पश्या घदद्यादक्षिणोत्तराभ्यां मैथुनेशुभ्रय्यादिभ्यादिमैथुने  
 शुभ्रशब्दबद्धिर्द्वैशुभ्रय्यादिसर्षः ॥ निष्कस्वरूपं परिभाषायामपरिमाणप्रकरणेतिहत्ता ॥ विष्कप्र

१२५

वचन

काशकामंत्राः ॥ पुरुषस्रक्तं द्विसौरितिहृत्प्रतत्रपुरुषस्रक्तं परिभाषायामेवदश्रीतमातद्विसौरि  
 तिहृत्स्यश्रमिर्भतिश्रिः विकर्षेवतागायत्रीहृदः जपेद्विनियोगः ॥ तद्विसौरिः परमंपदं संपादयेति  
 श्रवः दिक्विहुराततो तद्विद्यासो विपश्यतो ज्ञाश्रवोः सानेहते विज्ञेयस्वरमंपदश्रया मार्जनयो  
 त्रमपि परिभाषयामेवां सजलपिवेदितो गीष्कपुरुषस्रक्तादिसंख्यामाश्रयसारेणोद्यत्रशताद्युत्त  
 ताः कल्प्या ॥ इतिकर्मश्ललहरया ॥ अथनयनश्ललहरया ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ नमोपरस्वियेदृष्ट  
 सूर्येवास्रमयोदयो नित्रश्ललीसवेत्सोपिनेद्विडं हामतेदिशः ॥ वञ्चमि देहिमं वेणो होमस्पाइष्टवायुतं  
 वयसुपर्णइति वचनेनेवेशिवेववारिणाश्रः अज्ञीत्यातइति ॥ जपेद्वाश्ललप्रशाम्यति ॥ परस्वियेद  
 श्वेतिकामतः तथासूर्येदियास्रमपिवञ्चमिदेहीपुनेन वञ्चोदश्रसवञ्चमिदेहीतिदशाश्रमो नो लक्ष  
 त्रो होमकाष्ठेखाद्वात्रः कर्तव्यः अस्पमंत्रस्पश्राज्ञमंत्रस्पपरमेशीवादेवाश्रयः अमिर्देवताशकरीहं  
 दः अष्टवायुतमिति अष्टोत्तरमशुतं वयः सुपर्णाइत्यस्यागौरितिकाणिः इदोदेवता अष्टुष्टुष्टुष्टुः इति

तार्थे विनियोगः ॥ वयः सुवर्णा उपसेडुरिदं प्रिये मे भक्तान्णयो वाधमानाः अपधांतमूर्खदिरुद्धि च दुर्मुखे  
 मुग्धप्रस्मान्निधये च बहुशः ॥ ३ ॥ अद्वात्सावेनासिकात्प्राप्तये तत्सकं परिचाप्यायं रोगप्रतिमादानं वि  
 श्रुत्वा प्रथमं यथाशक्तियथारोगशून्यप्रसंख्याकल्पानि तत्र सेवन्तं यथावद्भागविभुक्तं शूलरोगहंसं यथाश  
 शिके त्राह्मनारत्नो जयेत्सूर्यप्रोमर्थसूर्यदृष्टजावकार्यानेत्रस्वताचक्षुष्यः ॥ इति नेत्रशूलद्वयः ॥  
 अथशातातपत्रोक्तसर्वगिशूलद्वयः ॥ शूलीपतीरोपतोपताये वपुष्पातत्रासोर्द्धदानं कुर्वीत तथास  
 दंजपेहुभ्रावपुष्पातनुःकशशरीरस्यार्थः ॥ व्याधिनरतमचावेनातदानदेरस्यासः रुद्रविधानेपरिच  
 ष्यायै इष्टव्यम् ॥ इतिशातातपत्रोक्तं शूलद्वयम् ॥ अथशूलरोगप्रतिमादानं ॥ प्रकृतिलक्षणव  
 र्मविपाकसारो ॥ अत्रुक्तं सुतुरोगेशुरोषानि हलते ह्यणम् ॥ त्वमंगल्लक्षणं शक्तिशूलपाशो कुशं द  
 ध्रं चक्रखड्गदावजशरद्वारधरं निवानामायन्यस्रज्ज्यन्यस्रज्ज्यस्त्रियार्थगात्रां दंष्ट्रादंष्ट्राश्च  
 रुष्टं हराणिसदक्षिणम् ॥ उद्यन्नसिमुखं भवत्प्रदहं पार्श्वयोः कृशां विशिर्षकं शरोगाणां वृत्तिर

१०

नेत्ररत्नोपनिषद्

प्रेषकल्पयेत् शशांतं तस्यार्द्धमर्द्धं वा देवो निष्कासितेन उता देवं प्रतिमादानं कर्मशांतिष्वपि स्वतः सुतोस्या  
 ल्पिनयोदद्यान्महादानं नरायणप्रतिष्ठातिवातस्पृष्टः स्वशाकावहं सर्वशय्ये रोगाः प्रवाधते देहस्य  
 सर्वजं लक्षांशुलक्षणप्रतिरूपं तु सुहरीगो हृजोत्रमः मेत्रेणानेन तं दद्यात्सर्वरीत्या कृतात्तं नो वाढमिषवश्चक्षुष्य  
 त्रुष्टं प्रयाधितिः सहः ॥ आचार्ये यत्तमानस्य अत्रुयायात्तपदी अत्रुके सुतुरोगेष्विष्यादियत्ररोगप्रतिमा  
 याविशेषलक्षणानातिहते तत्र मेधं विधलक्षणोपेतां कुर्यादिस्यार्थः ॥ शत्र्यादिकं दधच्छित्तमित्यर्थः ॥ ३ ॥  
 द्यनद्यन्ननिष्कस्वरूपं परिभाषणयोपरिमाणप्रकरणेनो धर्मोक्तं कर्मशांतिष्वपि स्वतः इति पादात्र एवमन्यत्र  
 पिकर्मविपाकशांतिष्वतः सामान्यन्ययेन प्राप्तत्वा प्रतिमादानं कर्तव्यं इति मित्यर्थः ॥ यद्यप्येवं तथाप्यत्र  
 चान्यत्र च व्याधियुक्तलघुनावां पेक्षया तत्राप्युत्तरेण च प्रतिमानीं कल्पनेन ह्यशक्त्यविदधीतां शास्त्रं  
 एतच्च तत इति पादात् ॥ तथा ॥ देशं कालं तथात्मानं देयं द्रव्यप्रयोजनो उपपत्तिमवस्थां च ज्ञात्वा  
 शोचं प्रकल्पयेति विधाय नवचने शोचपदस्योचपदस्योपलक्षणार्थं त्वाच्चावगतव्यायेये रोगा इति द

नमः॥॥ इह ब्रह्मं व्याकृतं न इति॥ आतंको देवता देवता तत्रे त्पारस्य परिनायां व्याधि प्रतिमादान वि  
 ध्युक्त प्रकारेणैवार्थः॥ शतं पदमिति शतं पदानार्थः॥ समुदायापेक्ष्यैकवचनं॥ इति श्लो गप्र  
 तिमादानम्॥ मातापुत्रपुत्रिभिरिवितवायस्यां विकानामतः॥ शाकल्यापुत्रात्त्रिरार्यचरिताश्रीपेदि  
 तद्वत्तजः॥ रीयंकोशिकं शतं षण्णमणः श्रीसहविश्वेश्वरो वेदस्मार्तमतेनयेत्सहपदेवाकीर्तनी  
 हते॥ ॥ ॥ इति श्रीपंडितपारिजातक... लेभादिविरुदविस्दावली विराजमानश्रीमदमं पालं  
 त्रस्यमां धनुर्निवेशे मर्दायवालि धने निवेशे कर्म विपाके नमस्य रंगः॥ ॥ ॥ अथ ह्यहं हराणि॥  
 ॥ तत्र गार्ग्यः॥ ॥ ये पुनः क्रूरकर्मणाः पापाः पिमुनयेत सः ते सवेषुः सदा शीत ह्रस्वतस्त्रदेन सः शीतये  
 श्युतसंख्याकं प्रकुर्यात्प्रयतो जपानात् वेद्वामंत्रेण त्राससात्रलो जयेत्ततः सुरामं सोपहाराद्यैः वी  
 लीः सन्नैः शिशस्यतो महसकलशस्त्रानां पानतो जनमेव सः सदा सीतह्रस्वत्रे श्वादिभ्रतिदिने शी  
 तह्रस्युक्ता ह्यत्राडुर्वाविकाले शीतघर्षकं हरेण युक्ता इत्यर्थः॥ जातवेदसमंत्रेण जपं कुर्यादित्यत्र

१५२

५५५

त्राशु तसं प्याकमिसुपलक्षणं रोगयुक्तलघुतात्रेण जपेयुक्तलघुताः कल्पः एवं त्रासण लो जने पी एवं त्रास  
 ण लो जने जपमंत्रं अपरमतिभेकं हरेर्बुधः॥ इति कर्म विपाकसंग्रहे विधेः श्वात्त्रानमकाडुवाकानाश्रुप्यादीनि  
 तथा रुद्रातिभेकप्रकारेण जपमंत्रं अपरमतिभेकं हरेर्बुधः॥ इति कर्म विपाकसंग्रहे विधेः श्वात्त्रानमका  
 मको बुवाकानाश्रुप्यादीनि तथा रुद्रातिभेकप्रकारेण अपरिजाणयो द्रष्टव्यः॥ गुरुषु सूक्तस्याद्यपितत्रैव  
 द्रष्टव्यः॥ जातवेदसमंत्रं स्पकशपमंत्रं जातवेदासि देवता विदु रं हः॥ ॥ विदितार्थे विनियोगः॥ ॥ जा  
 तवेदये उनवा मसो मगा तीयतो निरदत्ति देः॥ सनः सर्वं दत्तु र्गो णि हि श्वानवै वसिं धुं डरितः स हि  
 ॥ इति शीतह्रस्वम्॥ अथ कोष्ठह्रस्वम्॥ ॥ कर्म विपाकसंग्रहे॥ ॥ प्रोगल्पे सुचकारिः सुसतंतं कोपव  
 रः॥ उह्ये ह्यरा ति ह्यतस्या त्रस्यापनुत्रयो महसकलसज्ञानं रुद्रो लो शस्यकारये त्रात्र लुणा त्रलो जयेत्  
 श्रजपेद्वि जातवेदसम्॥ ॥ तथा माहेश्वरं त्रैपि॥ ॥ ॥ अह्ये ह्ये मदेः स्पप्रकुर्यादिति ये वनमिति रुद्रे प  
 शतरुद्रेणं मकानुवाकै रित्यर्थः॥ अस्यार्णादि परिनायां द्रष्टव्यं॥ जातवेदसमंत्रं हपं मृषुं जयस्याश्

५५५  
५५५

पुस्तकालयस्य व्याख्यादितेतिरीयशास्त्रानुसारेणातिशयतोऽयं चकं यजामह इत्यस्य नामस्य च...  
इत्युक्तं यस्मिन् देवतासु बहु भुवः ॥ इत्युक्तं हरदरम् ॥ अथशातातपत्रोक्तं विवि...  
हरणैवैव जायते विविधहरः हरः श्रेयोरोडवैषवणवचोहरः रुद्रनपंक्यानिःसीरु इत्युक्तं देवेभ्यः वेतव...  
यं जपेवां जपेठरुद्रजपमित्यादिरुद्रमदारुद्रादिलक्षणानानिरुद्राभुवाकाणामापाद्युवाकादिव...  
परिभाषायामुदीरितं महारुद्रं जपेद्वैमित्तिरोद्रेरुद्रं सर्वेभ्योनिःसीरुहरः क्विनतमेवमाध्यहरः च...  
महारुद्रं जपेत् विषवैषवैष्वयं रुद्रं जपेत् महारुद्रं जपेत् अथवाः विश्वेननुदिश्यानि वैषवानिपुसुसु...  
सहस्रनामपामार्जुनविष्णुहृदयस्योत्राणि परामृश्यते अतस्तद्द्वयं रुद्रं सर्वेभ्यो विष्णुसंवेभ्यश्च शतसु...  
इत्युक्तं सूक्तदिजपेत् शतसुद्रादीनि च परिभाषायां दर्शितानि ॥ इतिशातातपत्रोक्तं विविधं हर...  
सुम् ॥ अथसर्वं हरं कुंजदानम् ॥ पश्युषाणाम् ॥ अगारदाहीहरवाङ्मयतेतत्रनिःकृतिः सतेकुंजं स...  
मानियमृण्मयं स्वात्रणं षट्कोलाहितं कोष्परहितं स्थापयेत् त्रुडुलोपरिपरिमाणं त्रुडुलोनां द्वापचका

162

7-2-2-1-1-1-1-1-1-1

मिष्यतीति सुद्वांसुलायाद्याश्चेतवसेणवेष्टयेत् मधुनाप्यथवा ज्येष्ठं सुदं नथयुवेनवा। तैलेनार्थमसा...  
वातं प्रजयेत् क्रितानरः श्वेतदुष्पेरः अथैवगंधपुत्रैस्तथापरेऽहोमश्च सर्ववकायः सुमिदाज्यचक्रक...  
सुवर्षेनयथाशक्त्यात्राहणायनिवेद्येत् शतमेजतवते हजस्रतशीलायसक्ततां मंत्रेणाणेनविधि...  
त्रय्यजयित्वा हारीनरः महेन्द्रदेवदेवस्ववासुष्टेप्रसारः ॥ कुंजेनानेनदत्तेनहरः क्षिप्रप्रशाम्पुत्वा...  
रं सन्निपातं तृतीयकचतुर्थकोपादिकमासिकं वापिसोवत्सरिकमेववा। नाशयेत्तां स महिषं वाः देव...  
इत्युक्तं त्रैलोक्यं चकमत्तुष्टेकोपादिकमासिकं वापिसोवत्सरिकमेववा। नाशयेत्तां स महिषं वाः देव...  
अथ ॥ ॥ तं कुंजं गंधुष्येस्तथापरिहितं तथापरिश्चेत् तत्रकृपीतादितिस्त्रिभ्योः होमश्च सर्वं वादितोष...  
सर्ववत्सुर्वोक्तप्रकरणसचप्रकारः शूलहरत्रिशूलदानेइत्युक्तं ॥ तिलस्त्रानेचक्रुत्तेत्वाविरोषा...  
कुंजदानं सर्वस्परुद्रविष्णुप्रकाशकत्वात् ॥ कुंजदानं पिरीद्वेणवैष्णवेषु वा मंत्रेण कार्याहोमोप्यन्य...  
रथातमेन ॥ ॥ तत्रमंत्रः ॥ शैवः पंचाक्षरः शूलरोगहरत्रिशूलरोगहरत्रिशूलदानेइत्युक्तं ॥ इ



द्वलक्षणप्रतिदानं दद्यादित्यर्थः। तद्भवेयं मधुमर्षिहिरण्यवासांति ॥ तत्र मधुदानमंत्रः ॥ अस्मा  
मिश्रणं श्रेष्ठं च प्रीतिं देद्युमृतोद्भवां मधुं तत्र चानेन पादिमात्रं दुःखसागरात् ॥ आज्यादिदानमंत्रं  
सुभ्रायश्चित्रोपक्रमपदतौ प्रदर्शिताः ॥ अग्निं हतं तृणीमह इत्यस्य सक्तस्य द्वादशस्य अग्निर्मैश्रुति  
भिः ॥ अग्निं देवतागायत्री छंदः विहितार्थं विनियोगः ॥ अग्निं हतं तृणीमह इति तारं विश्ववेदसो अस्या  
इत्यस्य सक्तं अग्निमग्निं देवमग्निः स सदो वव त्रविस्पति इत्युवाह पुरुप्रियं ॥ १॥ अग्ने देव इह ॥ वयं ज्ञा  
तो वक्रवर्दिषो ॥ अग्निं देवो तान्द्राज्यः ॥ १॥ त उ श तो विवो धं य दे मे या सि ह या दे वै रा स सि व र्दिषि ॥  
ह मा ह व नो दी दि वः प्र तिष् म र्षि य नो द द्या अ मे खं र द्वा वि ना ॥ ५ ॥ अग्नि नाग्नि स मि द्वा तौ ॥ क वि र्धं ह प ति  
युं वा द व्य वा ड् द्वा स्या ॥ द्वा क वि मग्निः सु प सु हि स्य ध र्मा ण म धरो दे वः मी व च ते न ॥ १ ॥ अ य न्ना स्य  
ह विष्म ति ह त दे व स पर्यं ति ॥ त स्य स्य म प्रो वि श्वा व रा ॥ १ ॥ अग्निः दे वी त य अ विष्मं अ वि वा  
म ति ॥ त स्मै पा व क मृ ल या ॥ २ ॥ स नः पा व क दी दि वाग्ने दे वो इ हा व हा उ च्य य ई उ प य नः ॥ १० ॥ स ज स ॥

१०४

वाज आसुरा गायत्रेण नवी यसापि वीरवती मिषां ॥ १॥ अग्ने सुकेण शोचिष्वा विष्म ति देव तितिः इ म स्म  
ने उ प स्वन ॥ १॥ इत्यग्निं हतं मिति सक्तं म ॥ प्रात सुजा विवो धये त्पे क विं श च स्य मे श्रु ति श्रि न णि ॥ अ  
ग्नि त्वा त्त्र अग्नि न श्रु त्त सः सा वि त्पः दे अ ते यो ॥ ए का दे वी न मे के द्रा णी व रु णाः अ मी यी नो इ द्या वा ष्ट शि  
यो स का पा र्थि वी ष्ठे स व्य ॥ गायत्री छंदः विहितार्थं विनियोगः ॥ प्रात सुजे विवो धया श्रि न वे द ग  
वतां अस्प सो म स्प पी त यो ॥ १ ॥ आः सुर थार थी त मेः चा दे वा दि ति स्थ रा अ श्रि ना त्वा ह वा म हो श्या वं क  
मा म धु म य श्रि ना वा ह वा म हो ॥ १ ॥ या वां क स म धु म य श्रि ना सू स व ती ॥ त या य ज्ञो मि म न्न त म ॥ १ ॥ न दि वा स सि  
ह र के य त्वा र थे न रा दृ त ॥ अग्नि ना यो मि नो ष हं ॥ हिरण्य पाणि च त ये स वि ता न सु द्वा श्रो स वि त्वा दे व ता पदं ॥  
अ पा न्ना पा त व मे स वि तार सु प सु हि त स्य व त न फ ल स सि ॥ द्वा वि न का रे द्वा म हे र वा सो श्रि त्त स्य रा ध र्मः स वि  
ता रं च व द्वा सो स र वा अ अग्नि णो इ स दि ता रं श्रं सि ष्ठं रा ति ॥ १ ॥ अग्ने प नी रि द्वा व ह दे वा न सु श ती नु पा व क म  
सो म पी त यो ॥ १ ॥ अग्ना अग्ने इत्युच्ये दोत्राय विष्म रतौ ॥ वरुं विष्म रतौ ॥ १० ॥ अग्निं देवो रक्वाम ह



शर्मणात्पत्नीः अन्नपत्राः सवत्रां ॥ १५ ॥ इहेद्राणी सुपह्वये वरुणमीश्वरयोश्च नार्यीसामपीतयोनाशाप्रदी  
 द्योः ॥ १६ ॥ शिवीवतौ इमं यज्ञमिमिह ततोऽपि धाम्नात्तरामसि ॥ १७ ॥ तयोरिन्द्रात्तवम्यो विप्रारिहन्निधीतिलिः ॥  
 धर्म्मस्य क्रवेपवो ॥ १८ ॥ स्योनात्पृथिवीतवमृद्धरे निवेशनं यद्वात्रः शर्मस्य यती ॥ १९ ॥ अतो देवा अत्र क्रुणोय  
 तो विष्णुगोविअदास्यं अतो धर्म्मणि धर्यत्रा ॥ २० ॥ अत्रि वक्रमेऽपि ध्याः सत्र धमतिः ॥ २१ ॥ इदं विष्णुर्विक्रमे  
 त्रैधतिद्वेषे पदं सखलमस्य पांसुरे ॥ २२ ॥ त्रिपदा विक्रगोपात्रदास्य ॥ अतो धर्म्मो लिधर्यत्रा ॥ २३ ॥  
 कर्म्मो लिपशतयतो प्रतानि पश्यो ॥ इदं स्पृशुज्यः सखा ॥ २४ ॥ तद्विज्ञोः परमं पदसदो पश्यंति शर्यदिव  
 वृक्षुराततो ॥ २५ ॥ तद्विप्राणो विपश्यधो वपृवासः समिधुतो विष्णोर्यत्परमं पदं ॥ २६ ॥ इति प्राता  
 युजाविधो धृतवृक्षुम ॥ इतिकफद्धरसहितश्रुसकासहरम ॥ अथ प्रकारं तरेण श्रासकासरोग  
 हरम ॥ कर्म्मविपाक्रमं यदे ॥ कुम्भोत्रादिदेशुसो उक्त्विष्णुमिति सुधाः ॥ कंयुपावेव तद्वोगस  
 दोगस्य प्रशांतयो मादृषीयमदेवत्यादद्याद्विज्ञाः कुम्भारतः काम्पयदीयते दानं तत्समं सुखावदो अ सम

१५

यत्तदोपायतवतीदपरवजपेत्रपौरुषं मृकं संख्यसैव सहसका उद्युत्वेन धर्म्मो मश्रायेत्तस्यु  
 तसाहिरपरकवासी सिपवाशदिप्रसोजनस्य सहस्रकलशजा नेत्रकुर्यादो गतातयो निखिदानीय देनि  
 वेददाना निकालयुसुवादीनि ख्यमपात्ररुतो वैदिक कर्म्म उद्यान विरहितः ॥ पति तो वा अत्र निषिद्धान निर  
 ननादीनि यत्रापि दिष्टीयात्र निखिदेष्यादा तस्य पतितादिस्यः मदिनीदान प्रकारः परितापस्यो देय  
 तस्य निरुपण इष्टमद्यमदिषीदान मंत्रसु कालमसुखरूपान्तां मदिषीरकुरणलां सालंकारां प्रदास्यामि म  
 तः शोति यत्र उपुरुषसकानि विकरदसनामा उत्रघटवानामृष्यादिपरितापस्यो इष्टमद्य होम उद्य  
 नद्युत्वेन हिरण्यरकठा सोसिदद्यदि तिशोः स सहस्रकलशानां नमका तुवाको रुद्रस्य हिरण्यदान  
 निमंत्रप्रस्य नमका तुवाको अपरितापयामेव निरुपितां अत्राप्युत्कलशुनावे मदिषीदानादीनि यस्यानि  
 सम ज्ञानिव्योऽनिति ॥ इति प्रकारात्तरेण श्रासकासहरम ॥ अथशातातपत्रोक्तश्रासकासहरम ॥ पिष्ट  
 नोनरकस्यांते जायते श्रासकासवाद्युतं तेन प्रदातव्यं सहस्रफलसंख्यया ॥ उद्यन्नद्यजपकार्यो दि ॥ मश्रा

व्यथारपीपलसूक्ष्मपेखद्यनद्यत्रयत्रयपरिष्ठाण्यमिक्स्मक्षयिजाएहोमयोःसंस्वारोगात्रुकरिण्य ॥ ५७शाता  
 तपवीक्षश्वासकासहर ॥ अथश्वासकासहर धृजपाशदानम् ॥ पदधराणि ॥ श्वासकाससुतीमर्मेविं  
 सांशुतेसवेत् ॥ विधायन ॥ धृजपाशपलेकेनकुर्यात्त्रिरजतेनवापलाहैनायवाशुहास्फटिकोपमम  
 दरात्रारद्वैमरकतौसम्यक्कवधमंगेसुसर्जतःकुंनेचस्थापयेत्त्रतिलानंदिलप्रचकोकुंतस्योपरिसंस्था  
 प्यधृजपाशंजशौचनमानिकद्वयवृतेन उवाहाणायनिवेदयेत्तनमपारास्तेतुस्यंगोकाशधृजायवे  
 जलाधिपतयेत्स्येवयोसर्वजनप्रियायक्योःश्रीतयदेवौ धृजपाशोसुराद्वितौश्वासकासोहरतमिप्रति  
 सर्जननाशनेोएवंकृत्वाश्वासकासीनीरोगसह्याणद्वैशंरजतेनवासुवर्षेनवेत्यथोयदात्रुजतेनतद  
 सुहृत्पटिकोपमोअंगेणुअयवयेसुतअयदेवोसुमरकतरवेईईसुकंधंजपाशंवसुयार्थःकेनेस्थापये  
 द्विवादि।एवंकुंनेस्थापयित्वाकुंनेपेवशोणानिनाहंस्थाप्योतस्यकेचस्योपरिधृजपाशंनिद्विपेनाके  
 दशरियतआहनिष्कद्वयसुतेमितिनिष्कद्वयसैवसंरजतंवानिष्कद्वयधृजपासैत्तकुंनेस्थापयदिस

२५६

सं. ५७-५७५

धेना ॥ उवाहाणायनिवेदं कुंनेटिप्रजानवरमेवा ॥ इजाप्रकारमोदा ॥ वखेणवेष्टयेदितिनिष्कद्वयंअत्रहं  
 नेवसुयवाशुततवसुयशंमेत्रास्यमपाशुणा उवाहाणपरिःश्रजविवाधृजपाशौचनामर्मेःसंस्वारोगापाश  
 एतेतु रमित्यादिमंथणधृजपाशयुक्तलसुणेदद्याद्दोणनिक्रयोर्लक्षणपरिमाणप्रकारेणद्वयमभा  
 मणकयवतत्रौतनवग्रहयज्ञेप्रवर्णितो ॥ इतिश्वासकाशहरधृजपाशदानम् ॥ अथश्वासकासहरिद  
 नम् ॥ तल्लक्षणं कर्मविपाकसरा ॥ श्वासः श्विवाङ्गपशाहाकर्म उल्लुतेजन्म ॥ श्वासः कृतोगसंभनोदि  
 द उध्वरः श्वाकरेणनादयत्र ध्वंविद्यतादोऽविचक्षणश्वासः श्विवाङ्गवितिप्रविश्यात्तदानदि  
 पार्श्वेवाङ्गद्वयंश्रामेयेकोवाङ्गः एतत्पत्रापिनिषमवाङ्गसुलेऽस्ति ॥ इमोगसंभनः कर्णवपुसं कचित्तं  
 गहस्यर्कयदात्रश्रासकासयोःरिक्वमर्त्तिसदाश्विवाङ्गसं कचित्तं गजेवेवंकर्म एतप्रतिमाङ्गविष्क  
 नंश्रुयातंकीदेवतातत्रेसास्यपरितापार्थोवाङ्गवितिमादानविष्कसुक्तं ॥ इतिश्वासकासहरिदंनम्  
 इतिश्वासकासहराणि ॥ अथश्रीः ॥ ५७हराणि ॥ तत्रकर्मविपाकसंश्रद्धे ॥ श्लोफः कृद्द्वयं कुर्यान्ना ॥ अथ



युते जपे तिलहोम सक संवजपे मृगं जयंतथा तिलहोमं या इति सिः गायत्री व्याहृति अं व क मंत्राणा म्प्रादि  
 कृद्वा दिलहोमं च परिनाषायां इष्टयथा मृगं जयंतप संख्या पिस ह्यं ॥ इति कर्म विपाक समुद्रये तंत्रो  
 फहरशा ॥ अथ कर्म विपाक संयदो कशो फहरशा ॥ अद्रो मारं नदी तीरे ह्यायां खलिनैः नः प्रचुरीषे वा  
 केयः प्रमुचे क्लृपे वां प्रपथुया प्रिमात्रो तिवे वमा हसदा शिवः ह्यायां मिति इष्टे देवाः सन्य ह्यायं प्रवपुरी  
 ष्य ह्यं श्रीवना देरुप मङ्गो आद्रादि ग्रहणं वडण्म्या नो फनङ्गणाधी इदं वै तिवे तिमं रं जपे दष्टे तंत्रो युतां अ  
 मादिष्टे होमः स्यात्तुणो सपिण्य सुता इदं वै तिवे तिमं रं जपे दष्टे तंत्रो युतां अ  
 यदष्टया ॥ आपो दिष्टे तिव च सपरिनाषायां मे वरोग प्रतिमादान विधौ इष्टयः ॥ वरुणा सपिण्य युतमिति व  
 रुणाः युते सपिण्य युतमिति प्रयत्ने संवद्यो तो व्या धितरत मसावे न होम संख्यायां म्रनाः ॥ धि कसावः परि  
 कल्पः ॥ इति कर्म विपाक संयदो कंशो फहरशा ॥ अशशा फहरवखदोनशा ॥ तत्र वै प्रयना ॥ ॥ ॥  
 कर्वा च तो कण शो फा सवति तस्य कर्म विपाको कया धिनाश मसत्र मशाने वहा मशो जेण मद्ये ॥

१०७

कविनाशनम् ॥ होमवसं समानीय वड्मृगं अयं इवे रां यका फलानिवन्तीया रवख प्रतिसंमततः कुंडुमो  
 नार्चितं सम्यक् पूर्यारु रू पिता तंडुलोपरि संस्थाप्य तंडुलाश्च चक्रितः उपचारैः षोडशतिः राचार्यः  
 इजये वदा ॥ होमं वापि प्रकृष्टी तसमिदं यतिलैः क्रममा र्जुं दुध्रख विंद विकरथ म्या जति तिस्रथा मंत्रः क  
 मेण मृद्गया वसिष्ठक शततः परम ॥ ज्वा ज्वा वसपा ता तस्मिन् यत्र निवेश्य तु ॥ संख्या वा शो नरा तम  
 षा विंशतिरेव वा ॥ संतापेन मसुत्सु जसधमे वा दिगो गिणः ॥ अहीस्य मिति सक्ते नयथा लिंगं तयैव वा वा ससा  
 मर्जिनं कुर्यात्तमा न्येदं र्मुष्टिना ॥ आचार्यः यथा तद्वदद्या तसदा क्षिणं मंत्रेण न निविधिवद्दक्षिणा सिद्ध  
 खः शचिः ॥ अर्णा शुभ्रव रोगस्यो लोपाय द्रापतिः प्रलुः ॥ होमवस प्रदाने न तुष्टीया धिष्यो हुतावाहणे स्य  
 स्याद्येस्यो दद्यात्क्या च दक्षिणाशा ततः स्नात्वा शुचिर्त्वा वसमा ल्योपशो रितः ॥ ब्राह्मणे वैश्वसिः सा ईदं  
 जीतस्य समादिताः ॥ तंडुलाश्च चक्रितः शतित वती तिविशोणः ॥ आचार्यः इजयेदिति ॥ होमवस मगसदे  
 वसमाचार्यः इजयेदित्यर्थः ॥ इजामंत्रसु ॥ ॥ अगस्य पवनमानः रवनित्रैः प्रजामप्यं वलिमिह मानः ॥

सौवर्णाद्यभिन्नयस्यपोषसत्यदिव्यात्रिभोजगामउद्भुस्यस्त्रिव्यादिउद्भुधस्यनोदंविह्वयाहृती  
 नांश्रपरिसायांनवयहप्रकरणेह्यमोडहोमप्रकरणेवादिदक्षितशतथाविष्टकृद्दोमस्यच  
 कुब्जाकुब्जाचसंपातानितियदात्राप्यहोमस्यदाप्रयाजतीहोमानत्ररंसेपातानाद्याविष्टपात्रांतरेस्य  
 पयेशतेनसेपातेनाप्यविष्टसमुदायेनरोगिणःसर्वगात्रंपरिमाहृत्येवाकेनमात्रेणश्रीरोगानितिस्र  
 केनाएतद्वृत्तंकरंपरिसायांरोगयतिमादानविधौदृष्ट्यांगात्रपरिमाजनसाधनद्वयमाहवासाम  
 जनेनकुप्यादृदिव्यादिप्रजितवासमावृत्तंतरेणवा॥अथमंवासापरिमाजनेपश्चादत्तेमुष्टिनायातद्वृत्तं  
 प्रजितकृत्वाचार्यायदद्यात्आचार्यप्रतिप्रतिगृहीयुपलक्षणम्यातद्वदानसेदक्षिणंतवति॥इतिशोफ  
 हरवखदानम्॥अथशोफप्रतिमादानम्॥तत्रकर्मविपाकसरोशोफःपंचकरस्त्रीकृत्वादेशाज्ञः  
 शरचाषष्टक्रादधनसुरिकोर्ध्वं कृत्वालिशं चकुरंस्थथापिचक्रइतिदक्षिणेकरत्रयः॥वामेहावितिपं  
 चपञ्चाविधनेनआतकोदेवतातत्रेमास्यपरिसायासक्तं॥व्याधिप्रतिमादानविधिः॥इतिश

२००

प ५३०

शोफप्रतिमादानम्॥अथपांडुरोगहराणि॥तत्रकर्मविपाकसमुच्चये॥देवद्विजद्रव्यदारीपांडु  
 रोगरुवेत्ररंसकृद्वाइतिहृत्केकुप्यावांइत्यणमतद्रितःकुप्यह्यमोडहोमश्रवणंवेष्टेणवाश्री॥त्राह  
 रोस्योयथाशक्तिपांडुरोगीस्यंशोतयोदेवद्विजेत्यादिदेवाश्चद्विजाश्चावेष्टेणतिरजतांकृद्वादिह्यमोडहोम  
 पर्यंज्ञानांवरुपाणितथासुवर्णादिदाममंश्रपरिसायांनिरूपिताः॥इतिकर्मविपाकसमुच्चयोक्तयो  
 डुरोगहरयायश्चित्रम्॥अथशिवेदनराहितंपांडुरोगहरम्॥अत्रपांडुरोगहरपञ्चीदानं॥तत्रशोफ  
 नक्तः॥अथजागमनेमर्त्यपांडुरोगीप्रजायतीरजकश्चर्मकारश्चनटोहुरुडाएवचाकेवर्तमेदसिद्धा  
 आसदेतेअथजास्यताःवक्ष्यामित्यतकारंदानहोमादिकर्मणापलत्रयेनकृत्वीतरजतेनवसेध  
 रायातदहंनथवाकुर्याद्विद्वशाथेनकारयेशसपद्येत्वनांकृत्वांसमुद्रपरिधिष्ठिताशानवरनानिनिदि  
 प्याश्चेतवखेणवैष्टयेशंकास्यपात्रेविनिद्विपपलाष्टकविनिमित्तोदेवीमावाहयेत्रत्रसर्वीकारंदधिरि  
 प्रिया॥एवोहिदेविधत्वंरूपेस्मिन्ममगाविशासाहिताःपर्वद्वैतेद्विपेःसमुद्रेःसुमनोहरे॥एवमावाहना



देवीगंधमात्यैः समञ्जयेत्तत्र पवारैः षोडशैः राचार्यैः सर्वशास्त्रविद्वाद्दोमंवापिप्रकृष्टी तसमिदाज्यतिलै  
 रपिचर्मिर्ज्ञोतिमंत्रेणसमिद्धोमः प्रकीर्तितः तथाचर्मिर्चमिनगान्मातामातरमित्यपि मंत्रः प्रकीर्तित  
 श्रमोत्तुङ्गयास्वर्णितिलैः अग्निरत्नश्रापिकुंलस्येणवेष्टितघ्राश्चाप्येदत्रलं सुसंस्तस्मस्वर्णानिदि  
 मृत्तिकाप्रक्षिपेत्तथासुहृदारिणापरिष्कृतं रितम्नाएवमानादिसिमंत्रैरक्षिपेत्कं चकारयत्रशनोवाता  
 त्वाकेनयथासंगसदर्शकम् आचार्यास्तुतर्ताष्टधीदद्याद्दोगीसमाहितः मंत्रेणानेनविधित्वाऽसुखा  
 यद्वारवः अत्रीधरत्री चतानंधरादेणो घृतापुरारत्नगर्जासमुद्रैकवसमासर्वशोसना दानेनानेनसुप्री  
 तापांडुरोगं व्यपोहत्वा पुनत्रयेणकुर्वीतेत्यादिपलस्वरूपपरिमाणप्रकरणेद्रष्टव्यमंत्रांश्रमाल्यैः सम  
 ञ्जयेदिति समञ्जनेतुचर्मिर्चनेत्यादिमंत्रेण प्रस्पमंत्रस्पचर्मिर्चणैः चर्मिर्चवता उपरिष्ठाद्दृहतीच्छेदा  
 ॥ प्रजाया होमे विनियोगः ॥ ॥ चर्मिर्चनेद्यो वारिणां चरिद्धमदित्रा उपस्य निदेव्यदिते भिमनादमन्त्राया  
 दधोसमिद्धोमइत्याप्यतिलहोमयोरप्युपलक्षणमथवातिलहोमोवाहति तिलः होमसंख्याचष्टी

१८९

त्रशतादिसदसंतात्तत्रमिष्टजादोमंत्रविकल्पमाह ॥ चर्मिर्चमिमियाना ॥ आस्यप्यग्निरेवमणिः चर्द्धेवता  
 उहृष्टं दं सुहृदारिणापरिष्कृतं लेखाप्येदित्यत्रयः ॥ कुंलस्वपनाप्रकरणेद्रष्टयाः एवमानादिसिम  
 त्रैरिति एवमानमंत्राः स्वादिष्टयामदिष्टयेत्येवमादयः ॥ एवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाकाश्चादिशस्तेनस  
 क्तांतराप्यनुवाकांतराणि च नानाशाखापरिपठिताश्चलिषेकविनियुक्तानिलसुतोतानिचयथाशारकं  
 स्थानिस्वादिष्टयेतिसूक्तं मंत्रेवाभेदद्वितीयेवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाक्येणहोमप्रकरणेद्रष्टितः ॥ अ  
 लिषिक्तस्यवांगानीति ॥ अहीत्यामितिसुवाकेनमंत्रेणसर्वमंत्रयथावति तथावस्त्रेणपरिमाणं नसाध  
 लिषिक्तं गानिपरिमाणं ज्येदित्यर्थः ॥ अहीत्यामितिसूक्तं रोगप्रतिमादानविधौद्रव्या ॥ एवेष्टधीदानेकतेप  
 लमाह ॥ ॥ अनेनविधिनादत्तंष्टधीदानं प्रयत्नतः ॥ ॥ यज्जानं वैरुतं मंत्रैः त्रैः जगन्नेननुतस्वर्धेनायमाया  
 तिपांडुरोगादिकं महाराज्यर्थे ब्राह्मणैः साहैक्यं प्रुण्याह्वाचनयांष्टधीदानानंतरं कर्त्तव्यम् ॥ अथचादि  
 ष्टयामदिष्टयेतत्सूक्तम् ॥ अस्पदशत्रैस्पसूक्तं स्पसूक्तं स्पवित्रा मित्रोमधुं दं सभिः एवमानः सोमोदेव



तागायत्री छंदः॥ अतिषेके विनियोगांश्च दिष्ट्या मादिष्ट्या पक्वसोमश्चर्या इत्यायपात वेसुतः॥ रक्षो  
 द्वा विश्ववर्षणि रलिया निमयो ह तो णा स धृष्टमा सदशा ॥ वदितो धृतमोतव महिष्टो वत्र ह्यमना पर्षिम  
 द्योतं ॥ ३ ॥ अस्पर्म महानो देवानो वीति मंधसा अलिवा अमुत धवः त्वामद्या चरा मसित दिवथी दिवे दिवो इंदो  
 त्वेन आशस्तः ॥ ५ ॥ एतान्ति पवि सुतं सोमं चर्यस्य दुहिता वारणशश्च तातना ॥ द्योतमी मची समर्थ आठ  
 न्यातियो षणो दिशस्व सा पाये दिवा ता म दि त्वं सु युगध मतिवा क्रु र्दु तो च भ त्व र सो म धु अ वी अ म द्या व  
 त श्री एं ति व न वाः शिशु सो म मि त्र ये ण त वो ॥ २ ॥ अस्य दि द्रो म दे श्वा विश्वा वत्रा णि जि द्यो तो श्री रो म द्या व म ह ते  
 २५० ॥ इति स्वादिष्ट्या तिस्रः क्रमाः ॥ इति पांडुरोगप्रतिमादानम् ॥ अथ ज्ञाता तपप्रोक्तो पांडुरोगहरश्च  
 उच्चनिहते वै वर्षादुरोगी प्रजायते ॥ कश्चुरिकापलं दद्याद्वा ह्युणाय सस्रहयो ॥ एते व यु रु ल धु प ह्या व्वा  
 तरत्नमनावानमुसारेण प्रयो ज्याः ॥ इति ज्ञाता तपप्रोक्तो पांडुरोगहरश्च ॥ अथ पांडुरोगप्रतिमादान  
 म् ॥ तत्र प्रतिमालक्षणमप्युक्तं चरोगे ष्विष्यादिनाश्चलश्चलरोगप्रकरणे लिहिते ॥ अत्रावशिष्टविधिभू

अं. ३. पा. १. पृ. ५.

अतंके देवता तत्रैव्यारस्य परिनाषायां प्रतिमादानं किमनुक्तम् ॥ इति पांडुरोगप्रतिमादानम् ॥ इति श्रीपे द्विसहा  
 स्मजल दश्या विश्वेश्वरि विरचिते महासंवा चि धने कर्मव्याक्य परिच्छेदो पांडुरोगहराणि ॥ अथात्र पीडहराणि ॥  
 कर्मविपाकसमुच्चये ॥ विज्ञानं च एण जायत्रे श्या हेतुः ततः परमो ह्यरो शि ती सुभो दाह अ पाने त नि ह त्र ये  
 कृष्ण इति कृष्ण कुर्यात्त्रा तं जा ह्ये णो ज न म् ॥ उद्यो च च त पश्चात्सा द द्यु ते तत्र से स्य या ॥ आने श क्त न च वी  
 न्यं बुद्ध्या हृतमष्टचा अथवा प्रद्विपी दद्यात्पतिरूपेण कां च नारम् ॥ द्वारो श ती लष्या का क्वा दि शी त न्न र व ह  
 द्वारश्च कृच्छा ति कृष्ण स्वरूप स च न्न य च च स्य परिनाषायां इष्टवम् ॥ आते सू के ने ति आने पित र्म क ता नि ति  
 म् के ने ए त च च क्तं च य रोग प्र कर णे द्रष्टव्यं ॥ चतु र्धा श्रस्य पत्ते क म षो त्र र श न्ते बुद्ध्या च्छा अत्र च स क ल स्य त  
 मंत्रेण प्रतीक्षीम दि पी दान मंत्र सु श्रा म क म प्र कर णे द्रष्टव्यम् ॥ म दि षी अ ति प्रति मा यां सु व र्ण प यि ना णं वि ता  
 सुसारेण कल्पे ॥ ना इत्यात्र पीडा हरत्राय श्चि त्तं म दि षी दान म् ॥ अथात्र च द्वि हर नारायण दानम् ॥ तत्र च  
 ह्यप्रोक्ते ॥ ॥ यज्ञविघ्नकरे मत्री जायते चात्र वृद्धिमात्रं वक्ष्यामि तस्य तीकारं दानं दामादिकर्मणा ॥ ॥ बुभु

१८०

त्वर्षमयं मूर्च्छिषु संनारायणस्पतुर्वावहारिक निष्कास्यामेकेनाथतर्हताः नारायणमूर्च्छिषु लक्षणं पंचारात्र्या  
 गमो नारायणं चतुर्वाङ्गं चक्रं तथोक्ताः प्रादक्षिणेत्तु गदां पश्येनी लज्जितसन्नितमामिभ्रातृल्लोक  
 दक्षा उच्छिः पञ्चकरापरति नारायणेशं वादी निविद्यसे संकथमिभ्यतथा ॥ १ ॥ शंखमियादि ॥ ७ ॥ उत्रैव  
 मनागेशं स्वमध्रस्त्रात्रं चक्रमुपरिदक्षिणेदक्षिणसागोऽपरिगदापञ्चमध्रस्त्राशएवं चतुर्थे वाङ्गुविन्या  
 सेऽपचक्रमुपरिदक्षिणेदक्षिणसागोऽपरिगदापञ्चमध्रस्त्राश ॥ ७ ॥ वामे नारायणस्पवामपाश्र्वे वल्लकी  
 स्त्रादसद्वयस्थितकवल्लकी युक्ता लक्ष्मीस्थ्यापनीया ॥ अत्रपरेदक्षिणे पार्श्वे पञ्चकराणके कपटशक्ति  
 दसद्वयोपेता उच्छिस्थापनीया लक्ष्मी उच्छिप्रतिमं अति हेममये एवं विधनारायणमूर्च्छिषु लक्षणं पञ्च  
 लक्ष्मयेदियादाप्रह्वाल्पपंचगव्यनस्थापयेत्कुंकुमापरि श्रेतक्वेषणसंवेष्ट्यगंधमाल्यः समद्वये  
 उपचारैः षोडशक्षिराचायै विष्णवः सुविः सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो ब्रह्मविद्याश्च निश्चितः होमचकारयेत्  
 चद्यानेयो हि शशास्त्रतः समिदाज्यतिलैश्चैव उड्यान्मूलमंत्रकः तिनज्याङ्कति विड्वा सर्वरोगा

१२१

असुअतोः रोगी तथा च्छयेद्वं नारायणमूलमंत्रयो मूलमंत्रेण विधिवद्भक्त्याः परमया युतः नारायणं  
 एजगन्नाथशंखचक्रगदाधरः पृथङ्मननियज्ञादेर्विभ्राद्याङ्गुलं ममा अत्र द्द्विमहारी गं दानेनाने  
 तोषितः चक्रदक्षगदापाणेशमयाशुजगस्यतो एवं दत्वा उ तं देवं द्द्वमाप्यत्रा लुण्ठतः विप्राणो नो ज  
 नं दद्यात्त्वात्वा उं जीतवं धुविः एवैकत्वा समानोति निरोगत्वं नरो लुविः प्रारोग्यसुके निसेतुमुपरिं सुव  
 मिश्रतोः आश्रयो दिविद्यया दिनारायणमूर्च्छिषु जात्रदेशादज्ञेयोः शास्त्रतः तिः स्वयं हो कप्रकारणादि  
 तिष्ठां विधयेत्यर्थः ॥ मूलमंत्रतः समिदाज्यतिलैश्चैव मूलमंत्रेण नारायणाय दत्वा वशिष्ठेन होमं कुर्या  
 दित्यर्थः ॥ मूलमंत्रतः समिदाज्यतिलैश्चैव विधिवत्संपादनेनामस्वयं हो कप्रकारेण विनिर्घोषा वि  
 धिवत्संकेतं च त्रयपलां मूलमंत्रमाह ॥ नमो ब्रह्मणेति ॥ नमः शब्दादज्ञेयस्य नामाश्च त्रैदिक ॥ नम  
 त्रसु ॥ १ ॥ उं नमो नारायणाय ॥ अस्य मंत्रस्य साध्य नारायणत्राणिः देवीगायत्री च्छेदः नारायणः परमात्मा  
 देवता विहितार्थे विनियोगः ॥ ॥ होमशंखावाष्टोत्रशतादिदेशकालवयः शक्राद्यपेक्षयाः कल्प्या

१२२

व्याहृतीनामथ्यादिक्लृप्सोऽहोमप्रकरणेतथानवग्रहाध्वानेप्रकरणेत्तद्वर्षितम् ॥ ॥ इत्यत्रवृद्धि  
 हरनारायणदीनम् ॥ ॥ अथात्रवृद्धिसृत्रिदानम् ॥ ॥ तद्वृद्धेणु कर्मविपाकसारा ॥ ॥ अत्रवृद्धिः कुरी  
 हृत्वाग्नेदिनिमवलोकयत्राप्रलेवधारीसततंकपालेनपिवम्मद्युप्रालेवधारीतिप्राणं वशहेनात्राण्यु  
 च्यते ॥ अथवाशिकादिप्रच्यस्वितिकर्ष्यताकलापोरंगप्रतिमादानविश्रवातकादेवतातवेहा  
 दिनादर्शितः ॥ ॥ इत्यत्रवृद्धिसृत्रिदानम् ॥ ॥ इतिप्रपिदितहात्मजनदश्रीविश्वेश्वरविरचिते महाएव  
 लिधनेकर्मविपाकपरिच्छेदेअत्रवृद्धिहराणि ॥ ॥ अथत्रहृहराणि ॥ ॥ तत्रशातातपप्रोक्तंमसूक्तप्रणद  
 रम् ॥ ॥ कर्मविपाकसंयते ॥ ॥ कर्मकालेकुरुतेकरवरादीद्याथइदपत्तासनासिकाब्रह्मीवस्यादि  
 त्रश्रजायते ॥ उद्यन्नद्यवदेनात्पुञ्जुयादयुतेश्वरे ॥ अत्रकवजपेद्द्वौद्वौज्ञतनिमिश्रिताशिश्वयं  
 चनिवध्नीयाद्विवसैकल्पमंत्रितामूकर्मकालइत्यादिकाकर्मकालेकुरुतेकरवरादीद्याथइदपत्तासनासिकाब्रह्मीवस्यादि  
 दृष्ट्वापश्चात्प्रायश्चित्तविनाइमनप्राणव्याश्रमादीस्वतकर्मस्वतिहितान्पीनकरोति ॥ एतं विधा

२२

व्याश्रिमान्मवृत्तीश्वर्याः उद्यन्नद्यवदेनात्पुञ्जुयादयुतेश्वरे ॥ अत्रकवजपेद्द्वौद्वौज्ञतनिमिश्रिताशिश्वयं  
 चनिवध्नीयाद्विवसैकल्पमंत्रितामूकर्मकालइत्यादिकाकर्मकालेकुरुतेकरवरादीद्याथइदपत्तासनासिकाब्रह्मीवस्यादि  
 दृष्ट्वापश्चात्प्रायश्चित्तविनाइमनप्राणव्याश्रमादीस्वतकर्मस्वतिहितान्पीनकरोति ॥ एतं विधा



रायाश्चवासाः अनन्तमीः ॥६॥ उपैति मे देव स भः कीर्तिश्च माणिना सदा ब्राह्मणैर्तौराभ्यस्मिन् च कीर्तितं हृदं  
 दातु मे ॥ ७ ॥ इत्यपि सामलयां त्येष्टामलक्ष्मीं नाशयानृदां ॥ अस्तमसि इति सती हृदं मे गृह्णाती ॥ ८ ॥ अथ  
 रांडराध्वं निस्पृष्टां करीक्षिणीं ॥ इति श्रीश्रीसर्वज्ञानांतामिशोपनिषत्प्रथमः ॥ १ ॥ मनसः काममाहृतिवा  
 चीसयमसीमक्षिपस्तीरूपपन्नास्यमयिश्चप्रयतीयशः ॥ १० ॥ कर्हमेनत्रजास्तमयिसंतवकईमाशि  
 यंवासमयेकृत्वाता रयपद्मालिनी ॥ ११ ॥ अपः सजं तुस्मिं धानि विक्तीतवृत्तमेगृहो निवदेवामातरं  
 श्रियंवासमयः कुला ॥ १२ ॥ आद्रातुधरणं यत्रिसुवर्षे देममलिनी ॥ सूर्योदिरण्यपीलक्ष्मीजातवेदममा  
 रुपा ॥ १३ ॥ आद्रातुधरणं पुष्टिपिगलां पद्ममालिनीं ॥ वंद्यादिरण्यपीलक्ष्मीजातवेदममापहा ॥ १४ ॥ अस्या  
 यस्यादिरण्यं प्रसूतं गावोदस्यो उषा द्विदेयं पुरुषानेह ॥ १५ ॥ अथाऽस्येव सक्तस्य फलश्रुतिः ॥ १६ ॥  
 यश्च विः प्रयतो सखा सुहृत् यादाज्यमन्त्रह्यं श्रियः पंचदशैर्नृकामनः संततं जपेत् ॥ पद्मालिनी उरु  
 पद्माया लक्ष्मीपद्मसंतवोतन्मोततस्वपद्मा द्वियेन सोरख्यलताम्पह्य ॥ अथ दृष्टीव गोदायी वनदायी

१७३

गीता ६५ व १०

महाधनी धनं वा शुभं न संख्ये धने व सुधनमिदो वृहस्पत्योः धसुणो धनमुत्कृष्टं ज्ञेयं वेन ते यस्ये मं पिवतु हत्र  
 हासो मंधनस्य सोमि तो ति दं दातु सोमिनः श्रीवई स्वमा सुष्पुं मारोपमा शुभः सुतमा जं महीत्ये त्थान्यं ध  
 ने व इज्जुधला नं सततं संवत्सरं दीर्घमायुः ॥ १ ॥ इति प्रकारं तरेण वानासिकोत्रणम् ॥ अथ हृदयत्रणह  
 रम् ॥ शातातपत्रोको ॥ स्वजातिजायागमनमिति एकः समासः अयमलिधायः ब्राह्मणायः पुंस्ययथाय  
 गं वर्षचतुष्टयं पित्राह्मणा इत्थिया वैश्यांश्च द्वांश्चैति परिणीय स्वस्वजातीयं ब्राह्मण्यादिस्त्रियं यातिस  
 दिदोषोला वेसुप्योगात्परित्यज्यति तस्वजातिजायागमना इति व्यपदिश्यंती वदातेषु विदितान्तरणा  
 त्स्वजायागमनरूपेण विभारकप्रयत्ने न इति तादृशेषु तथैतेन चकालान्तरे हृदयत्रणवत्तो सवत्राति ॥  
 अथवा केवलं स्वजातिमैव स्त्रियाद्वाह्यव्यतिचारादिरताय सुपुत्रे जतेते पिताहृत्तो सवत्रातिजायाग  
 मनमित्यस्याऽर्थः ब्राह्मणस्वजातिः एवं द्वियादिरपि स्त्रियादिनां तस्य जायासवर्णेषु सणात्तरचार्ये त्पुर्णः त  
 स्या उपलोगः स्वजातिजायागमनां ब्रजापत्यलक्षणं प्रकारं गेद्रष्टम् ॥ ॥ इति हृदयत्रणहृरम् ॥ ॥ अथ उ



रोगप्रणहरः॥ ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ ॥ जलासुद्धं धनप्रायनिमित्तप्रियेतैः ॥ लवेदुरसिनिष्ठं हि  
 प्रणतस्यऽपि निःकृतिः सदद्याज्ञीमयसम्पन्नपंचाद्विप्रतोन्नमः ॥ दक्षिणाचयथाशक्तिमुक्तोसवतिरो  
 गतः ॥ अनाधिकारिणीविहितमर्णजलादिमरणे कृतद्वयश्रीगोदानमंत्रसुप्रार्थोच्चैः पक्रमपहता  
 बुक्तः ॥ इत्युरोगप्रणहरम् ॥ अथदक्षिणागप्रणहरम् ॥ ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ ॥ पित्रश्रमालिगमने  
 दक्षिणागप्रणीत्तवेत्तेनापिनिःकृतिः कार्याअत्रदानेनयत्तः ॥ अत्रादानमंत्रसुप्रव्यव्यङ्ग्यकरणे  
 इच्छव्यः ॥ इतिदक्षिणागप्रणहरम् ॥ ॥ अथवामांगप्रणहरम् ॥ ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ ॥ मातृश्रमालिगमने  
 दक्षिणागवामांगेवप्रणीत्तवेत्तेनापिनिःकृतिः कार्यासम्पदासीप्रदानतः ॥ सम्पगितिशक्र्याऽसुसारे  
 णाऽलंकृत्यदद्यादित्यर्थः ॥ ॥ दासीदानमंत्रः ॥ ॥ एवंदासीमयाज्जस्येश्वरप्रतिपादिता ॥ सदाकर्मकार  
 लोपायथैष्टं सद्मभुते ॥ इतिवामांगप्रणहरम् ॥ ॥ अथसुलीप्रणहरम् ॥ ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ ॥ फस  
 लहारीचक्रस्योसद्वैत्रैद्युलीप्रणहरम् ॥ नानाफलानामुत्तंसदद्याच्चद्विजात्मने ॥ इत्यसुलीप्रणहर

१९४

३८६ ३८७

म् ॥ अथचरणप्रणहरम् ॥ ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ ॥ हीनजातिस्त्रिगमनाङ्गायतेचरणप्रणीत्तयातकत्रिभुज  
 र्थजाप्राप्तसमाचरेत्प्राजापत्यलक्षणं कृत्प्रकरणेस्यक्षयि ॥ इतिचरणप्रणहरम् ॥ ॥ अथसगप्रण  
 हरम् ॥ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ ॥ मृतेसंज्ञेस्थानारप्रद्वयविधातिनी ॥ सासगप्रणदोषेणसंज्ञेसुमते  
 नचसंज्ञेगाऽनन्तरतीप्रवेदनाडुरुषस्यचदद्यात्तल्लक्षणं त्रैकम्भुसर्पिष्टिलान्यपि ॥ प्रणदोषेणोति  
 णदोषेणयुक्तात्तवेदित्यर्थः ॥ संज्ञेसुमतेनचक्षुमतेस्यपिभना ॥ तदर्थेयोनौवैवन्नणं वशाद्वास्त्रीसंज्ञोरुस्ये  
 रपितीप्रवेदनात्तवतिनीलक्षणमिति ॥ ॥ लोहितोयसुवर्णेननीलोदणः ॥ प्रदानमंत्रसुप्रव्यव्यङ्ग्यकरणे  
 इच्छव्यः ॥ इतिसगप्रणहरम् ॥ ॥ अथसगंदरप्रणहरम् ॥ ॥ वास्तुपुराणे ॥ ॥ योऽष्टद्वीत्वादिजामोहास्त्रियु  
 क्तोधर्मनिश्चयोनियुक्तः सन्नधर्मवदतितस्याधर्मवदतोसगंदरोत्तवतीत्यर्थः ॥ ॥ पञ्चपुराणे ॥ ॥ आचार्य  
 चार्यागमनोसगंदरतोत्तवेत् ॥ अत्रप्रक्रयामास ॥ इहगोत्रम् ॥ ॥ मालिक्यंपद्मरागंवावक्रं वैदूर्यमेव  
 गोमेदकं मरकतं वज्रपरागं चमौक्तिकं ॥ हरितं वनवैता ॥ निखर्षं पत्रोपरि म्रसेत् ॥ अथवाराजतेतां प्र

गवाङ्मेतप्रहरयेत्रानव्यहाणंप्रीत्यर्थी ब्रह्मणा निर्मितं सुरागं वसुधा हते धृष्टिर्नैवैत्रेचां प्रहजयेत्रा  
 स्वलिंगेथेवमंत्रैश्चाहोमः कार्यं सुप्रवृत्तततो ब्राह्मणमाह्वय सर्वशास्त्रार्थकोविदां आदित्यादिय  
 दाः सर्वे न वरुणप्रदानतां विनाशयं तु महेशः क्षिप्रमेव सगंदरस्य अनेन कर्मणा च तं यथायद्विहिते न तु  
 नरो नैरुज्यमानोतिनिःसंदिग्धं सगंदरा हरितश्रेय्यादिहरितं हरितरत्ने अथ वाराज तत्र ति अथ चैतिविकल्प  
 ष्यस्मिन्नस्वर्षदिपात्रेणानधरत्नानिस्थापितानित्पात्रैर्गवाङ्मेतप्रहरंरिताया। अहाणां पुरतः स्थापयेत्र  
 तांयहास्वलिंगैरादित्यादिकारा कैः मंत्रैः प्रवेवशै प्रहजयेत्र प्रजापकारं सुपरिमाणायामं समासिदक्षि  
 तः आदित्यादियहाः सर्वेतिरत्नोपेतपात्रदानमंत्रः ॥ एवं पात्रं दत्वा न वथ दक्षप्रियोदक्षिणां यद्व्यहृष  
 कारयेदाः सर्वेतिरत्नोपेतपात्रदानमंत्रः ॥ एवं पात्रं दत्वा न वथ दक्षप्रियोदक्षिणां यद्व्यहृष  
 इशेषं समापयेत् ॥ इति सगंदरहरण ॥ अथ प्रकारं तरेण सगंदरहरण ॥ शांतातपप्रोक्ते ॥ ॥ ॥  
 गोत्रः स्त्रीयसंगो ज्ञायते च सगंदरी। तेनाऽपितिः कृतिः कार्यामिषादानेन यत्नतः। मेघदानविधिरेव ॥

१९५

हरणप्रकारः ॥ १९५ ॥

मंदाग्निहरणप्रकारे दर्शयिष्यते अयं तु विशेषः ॥ तत्र रजतमयेमिषः अथ प्रवृद्धमेव इति सोवर्णराजतत्राद्यः स  
 कलोपिविधिरेवापि ग्राह्यः। मेखीदानमंत्रे तु तः कार्या ॥ ॥ नद्यथा ॥ ॥ देवानां यो मुखं हव्यः वाहनाः सर्वे रजितः।  
 तस्य त्वं वाहनं प्रच्यं देवे देवेभ्यश्च मृषितिः सगंदरः सर्वे कर्माविपाको यं सुयन्ममा तस्मै नारायणं प्रसो ग्यं  
 वापि प्रवर्द्धयेति ॥ ॥ इति प्रकारं तरेण सगंदरहरण ॥ अथ प्रयवहप्रणहरण ॥ ॥ कर्मविपाकसंग्रहे ॥ ॥ अ  
 तिमानादतिक्रोधदति क्रोधात्तयादति ॥ यो धर्मान्निश्रयं ज्ञानमन्यथा कुरुते नराः स प्रयशोपि तव हृदये  
 तच्छायथेदितु तत्र कं प्रकृष्टी ततिलप्रसू प्रदो स वैत्रा होमश्च कृता स्या च तिवैरशोत्रं शतोः सह संख्या  
 व्याहृतिः कुर्यात्ततो ब्राह्मणसौजन्यं तत्र कं प्रकृष्टं लक्षणं कं प्रकं रणे इष्टव्यमा प्रसू लक्षणं तु प्रमाण प्रक  
 रणोप्याधियरु लक्षणं तविसह संशते वा होमः ब्राह्मणसौजन्येन शक्यानुसारेण ॥ ॥ इति प्रयवहप्रणहरण  
 अथ नाडीप्रहरण ॥ ॥ उमामाहेश्वरसेवादे ॥ ॥ परेषां प्रणवेदेण छिद्यते न वैवदिति असत्पदनादे  
 वद्विही प्रलभ्युतसथानाडी प्रणी च जायते तस्यापस्यापुत्रयो चां द्रायणे चाऽतिक्रं पति चो द्रायणं

चरेत्वातेरौद्रेण मुक्तेन शतमष्टौ चरा इति । इत्थं अहं होमः कर्त्तव्यः सोमारुद्रजपस्यथा । यत्किंच वेदमिमां  
सस्यञ्जपेदह्युतवेदमिमां सस्यञ्जपेदह्युतसंख्यया । चांद्रायणादीनिष्वाधियुरुल्लुचावेनमस्यानिस  
मस्यानिवायाद्यानि । चांद्रायणादिलक्षणानिक्कृष्टप्रकरणेद्रष्टमानि । आतेपितमरुतामितिसृक्कस  
मसाध्यसर्ध्रोगहृद्रेष्ठस्यस्य । सक्तेरसमयेण होमः परिनायायां दर्शिताः सोमारुद्रेव्यस्यसृक्कस्य  
हं स्पृतिः संयुज्जलिः सोमारुद्रो देवता विष्टुष्टं दानपविनियोगः । जपसंख्याचाष्टौत्तरसहस्रं सोमारुद्र  
भ्ररयेष्टामभुं सुयं त्र्यं यया मिश्रयोरमसुष्टं दामेदमे स ह र नाष्टक्षनाशनात्तद्विपदे सं च तु ष्ये ह ।  
सोमारुद्राहृदस्पतिविष्टुचीमनीवापानो गयवापिवेसा । आरेत्वा धर्था निक्कृ ( तिपरावेरमेतद्रासोअ  
वणानिसंज्ञा ) । सोमारुद्राह्युवमेतान्यस्मे विश्वातस्सुलेषजानिधत्तौ । अ वश्य ते सु वने यन्त्रोयस्त्रि  
ह्युवदं कृ तमेनो आस्मरी । ति आसु यो ति ग दे तं मुसे ध्ये सोमारुद्रा विदसुष्टलतं नः प्राणे षं च तं व  
रणस्य पाशाज्ञोपायनक्रः सुमनस्यमाना । सोमारुद्रेति सृक्कं किंच वेदनिमित्तस्यावशिष्टजलिः वरुण

१६

श्री व ३

मं ५ भा ३

देवताजगती इच्छंति जपविनियोगः । यत्किंच वरुणदेव्ये जने सिद्धो हं मनुष्याश्चरणांमसि अचिंतीयत्रव  
धर्मायुयोपिसमानस्यस्मद्वेनसो देवरी रिष्णः । इति नाडीप्रणह्यम् । अथां उमालाहरशा । वा  
युयुराणे । गलगंडीगणद्वयं ता सवतिमानकादानेनतसतीकारंध्वजामिष्टुतास्कर । माणिका  
पन्नरगं चवङ्गमोक्ति कमेवचविद्युं युष्यरागं च नीलंमस्कतंतथा । एतिर्गलां प्रकुञ्ची तसुत्रागतं । अ  
लासेमोक्तिकाद्वयमेमोलाप्रकल्पयेत्सर्वत्रराजतं सृ त्रमितेदेवं प्रकल्पयेत्संतांमपत्रे विनिक्षिप्यति  
लानामुपरिस्थसेत्तिलानं च परिमाणं दीणपंचकमिष्यते । यदा त ईमेवं स्यात्स्वत्पावापिका रयेत्समदा  
थां शं तितथा कुर्यात् । द्वा ह्णैर्वेदपारगैर्महाशांतिर्नव्यहृशांतिरिति संतांमणेश्वास्मातिपरिलाणयं  
दर्वीता आचार्यसुभूतिहृद्वाः सर्वशास्त्रार्थतत्वविश्रं कृतप्रतोपुसं पन्नः सर्वे प्राणिहितैस्तः । एव विंधं ह  
जयिवावस्यमाल्यसुलेपनेः । होमं च का रयेत्तनसमिदा जपसु कृ टी आसयेन तथा मंत्रसोमं राजानमियं  
मंत्रेण स्विष्टकृ द्वा ह्ण गंडी चवानपतः मंत्रेणानेन विधिवत्प्राडु स्वयं ह्युदु ह्यु र्वाः । मन्त्रियसर्वदेवस्य

न प ३ ४

ब्रह्माविष्णुशिवादिनिर्वाहिलोकपालैश्चतयासर्वभूतैरपि इयमेकं गलगादिभ्रिताप्रतिषर्षे शत्रु  
 लुणायाप्रदत्रेयंगलगंडेवपोहृत्प्रदशातिः कृतायै सुतेस्योदद्यात्तुदहिणा। सुल्पाह्वाचनेकबा  
 उंजीतसहवंधुतिः। होमं वकारयेत्तेनयादि। अयंचहोमोयह्यइहोमएवतेनतलः यथसूतः। अत  
 एवादिवादिप्रकाशकमंत्रोपलक्षणाद्यमासवेनतथांमंत्रकसायकोमंत्रेणस्विष्टकृतमिति।।  
 स्विष्टकृदोममंत्रसूत्रप्रहयज्ञप्रकरणकृष्णोडहोमप्रकरणेचइष्टव्यांगलगंडेवागपतःसत्र  
 ह्यमाणमंत्रेणरत्नमालोदद्यादिसत्रयः। मालेयमित्याश्रयगलगंडेवपोहृत्स्वितोदानमंत्रः। ब्रह्मादि  
 तिरमरेय्यमालाकंवलयासवीधीतिषर्षकंभ्रितासात्राह्वाणायप्रदत्राइयमेगलगंडेवपोहृत्प्रद  
 त्रयः॥ इतिगंडमालाहरम् ॥ अथप्रकारोत्तरेणगंडमालाहरम् ॥ कर्मविपरिकसंयते।। अ  
 ध्याप्यतिशिष्यांस्तुयःप्रतार्यगुरुस्यथा। शिष्योयुरुंवेत्रयिवायाधृतिंतस्यचाज्ञायतेगंडमाला  
 ख्योरोगदुष्टोपशान्तये॥ तथा॥ अतस्सतह्यपापीनां उमालीसवन्नरःकृत्स्नयंप्रकुर्वीतचंद्रा

२५७

यणमथापरसांश्रयेत्तरसहस्रंउजपेत्सुषुप्तकृत्कर्मसौरमंत्रजपंतद्दृष्टीत्पामितिमार्जनंशत्रुहृणा  
 रसोत्तयेकक्याततोरोगादिमुच्यते। कृत्वादिहृणात्किंकृत्प्रकरणेदृष्ट्यानिर्णयमसूत्रेवियमसूत्रे  
 तियमसूत्रमंत्राश्चात्रेप्रदश्यंतीयमसूत्रेनप्रत्यंचमधुसूदनमुद्दिश्यसदसंसापिपासदसमंत्रेनच  
 लुङ्गयात्रा। तीथावयमुद्दिश्यशोमपक्षेयमगुणोपेतोमधुसूदनदेवताप्रमेदोदशोनेहोमविनियोग  
 ॥ ॥ परेयिवांसंप्रवतीमहारुवङ्कस्यःपथामुपपश्यतोवेवस्वतंसंगमंनंनानांयमराजानाहविष  
 डुवस्यायमोनागांउप्रथमोवित्रेदनेषागवृत्तिरतवचातुःयत्रानःप्रहोपितरःपरपुरेनायज्ञान  
 पथ्याअनुस्वा॥ ॥ ॥ मातलीकवैर्यमोंगिरोलिःरुहस्पतिमहलिबोहृधनःछात्रामंत्राःकविशा  
 स्त्रावहृत्वेनाराजहृविषामादयस्वा॥ ॥ यथादेवामधुर्येचदेवास्त्राहोचैस्वज्येयान्येमदेति॥ ॥ ॥ इमं  
 यमप्रस्तरमाहि। सीदो। गिरोलिः। पिशलिः। ब्राध्ननः। आत्रामंत्राः। कविशास्त्रावहृत्वेनाराजहृविषामाद  
 यस्वा॥ ॥ ॥ अंगिरोलिरागादियडियेतिर्यमवैरुपैरिहमादयस्वाविवस्वत्वंतंऊवेयःपितातेस्मिंजज्ञे



वक्षिण्यानिषुत्पा॥५॥ अंगिरसो नः पितरो न यथा अथर्वाणो न गवः सोम्यासः तेषां वयं सुमतो यथिना  
 मपि न देसोम न स्याम गधा ॥ त्रेहि त्रेहि यथितिः सूत्रैः तिः यं ज्ञानः सूत्रैः पितरः परे तु उभाराजानां सुप्रया  
 मदेतामयं परपामिवरुणं सुदेवो ॥ संगहस्रपितृतिः सयमेनेष्या प्रर्णतपरमेवोसत्रो द्विवायावंद्यं सुनरसु  
 मे हि संगहस्रतत्रा सुवर्द्धो ॥ १॥ अतिवृत्तविवसर्पतातोस्मा एवंपितरो लोकमश्रुदो निरहिरकुलित्व  
 कं यमा दृढत्वचमानमस्मो ॥ २॥ अतिवृत्तविसा रमेयो अनाै चतुरश्रौ शत्रुलो साधुनायथा ॥ अथापि यत्सुवि  
 दत्रं उपेहियमानयसध्रमा देति ॥ ३॥ खेतेश्रानो अयमगहितारो वतुरश्रौ पथिरश्रीपत्तमो तास्यमिना  
 परिदेहिराजस्रचित्तासमश्रनमीभवधेहि ॥ ११॥ उरुयासावसुत्रयड्डुवजोयमस्यद्वतोचरतोचरता  
 जनं अश्रुतावसमस्यं हशये चर्यायत्नदीतामसुमत्रे हस्रदो ॥ १२॥ यमायसोमं सुमुतयं मायत्तु जयद  
 विः यमं द्यज्ञो गहस्रमिद्वतो अरं कतः ॥ १३॥ यमाव तवद्विज्ञे होतपवितिष्ठति समा देवैश्चायमदी  
 र्धमायुः प्रजीवसे ॥ १४॥ यमायमधुमममं राजी तना ॥ इदं नमः ऋषिभ्यः सते स्यः प्रब्रै स्यः पथि कृद्मः ॥ १५॥

१२७

सुवेतन

सुवेतन

कडुकेलिः पतति खलु वीरिकमिदृद्वत्रिष्टुष्टु गायत्री द्वंदं सिसर्वातायमश्रुदिता ॥ १६॥ १७॥ इतियमस्र  
 कश ॥ इतिसपित्वप्रणहरम् ॥ अथप्रणप्रणजदाना ॥ इदृगोतमः ॥ पलेनवात्सर्द्धेनतद्वेदं द्वेनवात्त  
 कारयेद्वाहनं देमं चतुर्दंते तुवारणमदन्नात्वर्यमयाः कार्यारत्नेनाविशेष्टता ॥ सत्रोऽ सरणसंयुक्तं  
 रिणोपकारको अचार्यः प्रयतात्मा तुः तस्य पार्श्वसमाहितं उपचारिणोऽतिरत्नेनेध्रुष्यकेः ततोत्र  
 हणमाह्वयत्सर्वेश्वार्थको विदंश्रुतत्रोपसंपन्नमसुद्वेगकरं वृणस्र ॥ सत्या उमं प्रज्यवस्रद्येर्होमते  
 नचकार्ये त्रमंत्रे पौराणिकेः सम्पन्नसंदिताशास्त्रवोदिते ॥ चत्वारो दिग्गजाय च सुष्पटं तादयश्रयासा  
 र्वसोमादयो ये च आहृत्वा तोष्या मितश्रंसमिदा ज्यतिलेर्होमो गजस्य प्रीयतो च वेत्त ॥ तस्मै इतवसे तस  
 म्प क्रा गज प्रीत्यर्थमाहृतः ॥ मंत्रेणानेन विधिं कर्त्तव्यात्तस्मिन् क्रिसमाचिता ॥ आ इन्द्रुखसुव्रणीचोदरुखस्येद  
 स्यवाहनघोषरावणश्चर्द्धं तो गजानां नायकश्रयः ॥ दिग्धं देतिनां सुष्पतमो व्रणं ह्यपयिषु प्रभुः अनेतरं  
 मं प्रज्यतमाचार्ययुनः ॥ १८॥ ब्राह्मणत्रलो जयिमा च स्वयं बुंजी तवाग्रतः ॥ एधं कृते गजेर्दंते सत्कृणा देवना

श्यति तेनेतद्वृत्तिर्विर्नकार्यमारोग्यहेतवोपलेनवातदहेनेत्यादिअत्रमाधिदानंमपित्रप्रणहरोक्रमेव  
 यथाप्लनज्ञाणंउपरिमाणप्रकारेइष्टव्यवाहमितिइदम्यवादनमेरावणमित्यर्थोउपकारकमितिउ  
 मिभरणादिनाविश्राएकारकंपार्श्वइतिसमीपइत्यर्थः।मंत्रेपौराणिकेरित्यादिपौराणिकैः।राणादिनिर्म  
 हितशास्त्रचोदितैःसंहितामंत्रविमर्गोवेदःसेवसेदितशाशासनाब्राह्मीअथवात्र्याशास्त्रंस्थितिःतत्रचोदि  
 तैः।एतदुक्तंनवतिद्वैदिकैःस्मार्त्तिश्रगजप्रकाशकैःमंत्रे।इति।तेवगणपतिप्रकाशकावैदिकाःस्व  
 शास्त्रोक्ताग्राह्याः।तत्रकेचनयज्ञप्रकरणेदृशिताः।तथात्रैतस्मान्नेपिमंत्रोगणपतिगायत्रीविनाय  
 कशांतिप्रकरणेदृशिताः।अथवापौराणिकैःखराणविदितैःतदेवप्रकृतयनि।संहिताशास्त्रचोदितैरि  
 ति।संहिताशास्त्राणिमहाभारतादीनिसर्वेपुराणार्थसारत्वाद्भारतादीनिपुराणानि।सुप्रचोतत्रोदितैर्म  
 त्रैःअथवापौराणिकाःअथसेदितशाशास्त्रोदितशास्त्रपरगतत्रैकोमंत्रः।एरावणश्चउद्वैतइति।गजदानमंत्र  
 एकंज्ञाहोमयोरपिग्राह्यः॥ अत्रोमंत्रः॥ चत्वारोदिग्गजावेषत्रैवर्षत्रैः।मंत्रोतरंउासुपीतकगजं

१९८

इत्वंसरस्वत्यासिपेधनंइदम्यवाहनंश्रेष्ठंइदंवेदंइदंइदितेति।एतेमंत्रास्विकल्पेनग्राह्याः।पतेषुमंत्रेषुसुप्रत  
 कादीनिपदाभ्यवरद्विस्तैनामपुपलद्वयैकानि॥ इतिप्रणमगजदानं॥ अथपार्श्वस्फोटहरम्॥।कर्म  
 विपाकसंयदे।।स्वरकादिर्मासानांनक्षत्रकःस्फोटकीस्वेष्टपार्श्वयोः।सन्निरुद्धार्थंकृच्छंसांश्रायणं चरेत्  
 अतिकृच्छ्रकर्त्र्योजपश्चाच्छ्रावणयुतम।शिवसंकल्पसक्तंउपरिचाणायोरुद्विभनेप्रदृशितग्राह्याः।धित  
 रतप्येकृच्छ्राद्यावृत्तिःकल्पनीया॥ इतिपार्श्वस्फोटहरम्॥।कर्मविपाकसंयदे॥।चांडालाकृतपापि  
 षतडाडागाकृपकादिषु।आत्वापीत्वाचसंबीगेदाहवात्रदस्रपादेयोः।स्फोटयुक्तश्चसवतिकृच्छंसीत  
 पनेचरेत्योगाद्विरण्यवसा।श्रदेयाहृत्क्र्याडसारतः।रूपएवकृतः।चांडालेनयजमानेनकारितंवाप्यादि  
 सुअनातुरोज्ञानद्वेमेसकृन्नियनैमित्तिकादिस्नानादिकर्मकृततत्त्वबीगदाद्यादिमात्रा।इत्यर्थः।इति  
 हस्त्रपाटतलस्फोटहरम्॥।अथाऽस्त्रीस्त्रनस्फोटहरम्॥।कर्मविपाकसमुच्चयोः॥।अथमयमुचनैरिज्ञा  
 तमालिगपमेवचासर्वेकीडतियानारीतमेवाऽनुसरत्वापीतस्यासुनुयोःस्फोताजायत्रेजननात्रैरौतगे

चरकं स्वतितद्रोगस्य प्रशांतयो दद्याद्वाजाः पंचलवणं हरिद्रां धन्यमेव च । उमापामे श्वरं चैव प्रजयेच्च  
 सति निष्कं द्वादशकं दद्याद्वाजापेतामभिस्सूक्तकर्मप्रथमव्याख्यादि । प्रथमयत्नुसर्तारमित्येव च विक्र  
 णं । जातनलिंगे व्यादिकां गाः पंचदद्याद्वाजापेतामभिस्सूक्तकर्मधने सति निष्कं द्वादशकं कुर्यात् । शिष्यार्थं ।  
 वणादीन् अपि विनवाद्यनुसरणदद्यात्तामभिर्वर्णां इत्यनेन जातवेदस्य इत्यस्य सप्तसप्तस्य च वाक  
 म्यात्किं कीर्तव्यता उपनिषद्सप्तम्याः दुर्गाभिर्विषमवायथायोगं देवताः स्वसुप्रसंदः जपे विनियोग  
 जपसंख्यावाच्यतां जातवेदसे सुनवासनो मम रतीयता विदहाति वेदासनः पर्षदति दुर्गनि विश्राना  
 वेवा सिं सुडरिताय पितामभिर्वर्णां तपसा ह्यलेती वैराघनी कर्मफलेषु सुष्ठु दुष्टां दुर्गां देवीं शरणमहं  
 प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः ॥ १ ॥ अमे तं परयानयो अस्मात्सिंहातिर ति दुर्गालि विश्रा । मध्यस्थी न दुर्गा  
 उर्वी च कृतो कायतनया यो श विश्रानिनो दुर्गाज्ञातवेदाः सिंधुतनावा डुरितानि पश्री अमे अस्त्रिवन्म  
 नसा गृणोस्माकं वा ध्यविता तच्छनी ॥ ४ ॥ घृतनाजितं स देमा बुभुयमभिं ज्वे मपरसा तं धस्य स्था त्रांस

200

संयोः २ पू

म. न. प. ५०. म. न. द. २०२. म. १५. म. न. ५०.

म. २. ५०. म. १५.

न्यपर्षदति दुर्गा विश्राहाम देवो अति डुरिताभिः ॥ १ ॥ अत्रोष्णिकमीशो अत्रं रेखुसना खदोतां न्यथै  
 स्वां वाग्ने तसुवं विप्रयस्वास्मस्यं तु सोऽग्नये जश्ना ॥ १ ॥ गो लिङ्गं मयुस्य निषिक्तं तवे इ विहोर तु सं च  
 रेमाना कस्य छमसि सं वसानो वैलवी लो क इह मा देवो ॥ इति स्त्री सूत्र न स्फोटहरम् ॥ अथ नाना  
 स्थानां गस्फोटहरम् ॥ उपवासत्रयं कुर्यात्तोजये द्विशति द्विजात्रा ॥ इति नानास्थानगनस्फोट  
 हरम् ॥ अथ तगं दरोग छर्त्विदानम् ॥ तद्भल्लक्षणं च कर्म विपाकसारी ॥ तसं दरः प्रांशुशीर्षिक  
 शोहं न्नासि वेधनः पंगुः पोशां कुशधरः पीठसीनः ककु घृतं । ककु घृषां गं तदयी वां पश्चाद्वागे कृत्वा  
 तत्र हतः प्रहारसूक्तः कर्त्तव्य इत्यर्थः । अथ वा ककु घृषे न मकुसुके लक्ष्मी तत्र हतः । एतत्सूत्रादि  
 विधानं तु परिशेषायां रोगप्रतिमाधनविधवात् । को देवता तत्रेति दिशितम् ॥ इति तगं दरोगा  
 र्त्विदानम् ॥ अथ गंडमालारोगप्रतिमादेमां तद्भल्लक्षणं कर्म विपाकसारी ॥ गंडरोगकरेः षड्भिः शंख  
 वक्रपरस्वधशोपाशचापशरात्रविनाश्रध्वशशीर्षं शिरो रुदः ॥ इति कर्त्तव्यता कलापुपरिशेषा

मातृको देवता तत्रेत्यादिना रोग प्रतिमादानं विश्वे निरूपितम् ॥ इति त्रणमृत्त्रिदानम् ॥ इति श्री विद्वत्  
 सत्तज्ज नदश्री विश्वेश्वर विरचिते महाणवालिघाने निर्वन्धे कर्म विपाक परिच्छेदे त्रणदराणि ॥ अथ वात  
 रोगहराणि ॥ ॥ कर्म विपाकसंप्रहे ॥ देवानां ब्राह्मणानां च वाधना पहरा तथा ॥ घामिद्रोहाद्वात रोगी त्वे  
 र स्यापि निरुतिः ॥ कृच्छ्रातिक्रमैः कृत्वा तवां द्रायणमथापरम्यायात आवातमंत्रे हि जपे वसुतं संख्याया प्रा  
 मि रत्रमी नृवंवा पिजपे वसुतुयादपि ॥ कृच्छ्रादिस्वरूपाणि परिताप्याय कृच्छ्रप्रकरणे द्रष्टव्यानि वात आवा  
 तने प्रजसंश्रु मयोऽनहो प्राण आच्छादिता अघ्नवा अन्जा अयुत संख्याया ॥ जपस्य यद्युत संख्याया हेम  
 श्रापवमामि रत्रमी व्यनया मि अस्पदे वा अति दारपी अग्रिद्वे वात रूडुष्टं दः विहितार्थे विनियोगः ॥ ॥  
 अग्निभिजमस्मज्ज नवेदाहृत सोचद्गुरथतं आमर्षा अर्क धप धा रजस्यो विमाने जस्रो धर्म ह विरक्ति  
 नाम हो मद्रथ माज्पयथाशक्ति हिरण्यदानमपि कृत्वा तः ॥ इति वात रोग हर प्रायश्चित्तम् ॥ अथ प्रक  
 रांतरेण वात रोग हर मा कर्म विपाक संप्रहे ॥ ॥ अथ प्रत्यर्पितं धीते घृति रोगी त्वे वरः नाम त्रयेण कृत्वा त

जप हो मंचा कृच्छ्रायनमः ॥ अनंताय नमः ॥ गोविंदाय नमः ॥ इति नाम त्रयं मंत्राः ॥ ॥ अस्पना मत्रय स्पवशि  
 छकश्य पाना रक्ष मघयः ॥ महा विष्णु महानारसिंहो महा वरा दश देवता ॥ अनुष्टुप् गायत्री छतला निह  
 दासि ॥ विहितार्थे विनियोगः ॥ ॥ जप हो मयोः संख्याया ॥ अमुसारेण सक्ष्मं दिलज्ञानि कल्पो ॥ हो मद्रथं वा  
 जं के वन लिगपुराणो कं प्रठः शंशुरुमापतिरिति नाम त्रयं वर्णयति ॥ इति प्रकारेण वात रोग ह  
 रम् ॥ ॥ अथोनादवायुहर मा कर्म विपाक संप्रथये ॥ ॥ मोहयि त्रापरा वसुतुके वसु विगर्हिते म  
 सोन्मादवातयुक्तः स्या कृच्छ्रं चां द्रायणं तथा ॥ कुर्यात्सारस्यं तं मंत्रं जप ब्राह्मण तर्पणमा मोहयित्प  
 रा अथात्र शिष्यकवेन सवस्थिता रपिना वायसि रस्यं तं मंत्रं जपे राजा दीरमोहयि त्राप्रताय विगर्हिते  
 शस्त्रानि दितवस्त्रे म्मुनादिद्या ध्यापनोदनादिनिमित्तं तरेण यो नु कुर्यात्सर्थः ॥ कृच्छ्रादिलक्षणं कृच्छ्र  
 करणे स्या यिभारस्यतो मंत्रे सद्वाडुहेपयाः सिकाश्चिदथाः परमं जगा मदेवी कचमज्ज नंत देवा स विश्व  
 याः प्राशवो वदंति ॥ तानो मत्रे मर्जंडहानो धेनुवर्गिस्मातु पशु धेनु ॥ ॥ अत्रापि जप संख्याया वाच्यं

सारेणासुतादिकाकल्प्या। ब्राह्मणतर्पणेनमिति कुर्यादित्युषंगः। यथाशक्ति ब्राह्मणाऽनोजयेदित्यर्थः  
 ॥ इत्युन्मादृवायुहरशा। अथथनुवतिहरशाकर्मविपाकसमुच्चये ॥ ॥ अमिहंती यतांताचउपुक्तेपरखि  
 योवलाद्यकमसनरः सर्वसंभ्रिवेदनाघाती ब्रामाभोत्यरुचिमाऽधनुवातउतोतवेत्राक्षरीतदइपुन्यर्थ  
 महीषिदनमाचरेत्। कृच्छ्रातिकृच्छ्रैः कृच्छ्रीतवांदायणमथापरशा उद्यन्नद्यजपश्चेवथत्वा ब्राह्मणतर्पण  
 प्रानामत्रयंत्रपेन्मन्त्रारोगशात्र्यर्थमात्मनः। सहस्रनामकंवापिसोत्रं समाधिधानतः ॥ असुतानं द्योविदेत्ये  
 नामंत्रयंत्रद्विजः। असुतवत्याह त्रयत्रपेद्रेगम्यशातयोऽरुमधुक्रंजपेहिह्वान्ततोरोगायमुच्यते अमिह  
 तीक्ष्णतामिति इत्यादि। अत्र तोक्षनयाऽरुमोपलोगहरेतामिनियावत्रमहिषीवस्वत्सादेयाः। प्रदद्या  
 न्माहिषीकृष्णांस्वत्सांक्षजयेन्नतेति ॥ ब्रह्मांडपुराणवचनात्। महिषीदानं मंत्राक्रमासकाशहरेद  
 शितः कृच्छ्रादिष्वरूपं उरुक्रुप्रकरणे द्रष्टव्यम उद्यन्नद्यजः परिनाषायारोगप्रतिमादानविधौ द्रष्टव्या अत्र  
 जपसंख्याउत्तंत्रितयोः एवं सहस्रनामादीनि प्रपिनामत्रयद्यार्षादिनिष्कारांतरेण वा नरोगहरेत्येवार्थे २०२

पश्चात्तः किं

विष्णुसहस्रनामानि उरुमधुक्रंजपरिनाषार्थानिरूपिताः ॥ इति धनुर्घातहरशा। अथपञ्चाघातह  
 रशांशानातपश्रोकः ॥ सत्तार्योपज्ञपातचिजायतेपज्ञघातवात्रानिष्कृद्दयमितं हेम सदद्याच्चिद्विज्ञान  
 येऽश्राद्धं वैश्वदेवैरुर्वं कुर्यादान्नोदितमिह्यता। सत्तार्योपज्ञानिदद्याच्चगोदानं मंत्रकास्ये चानिष्कृद्दरूपं परिमा  
 णप्रकरणनिरूपितमाश्राद्धं वैश्वदेवमिति। अश्राद्धादीयतइति। अश्राद्धीतदेवविष्णुदेवत्याद्विष्णुदेशेन ब्राह्मणा  
 त्रशक्तिनोजयेदित्यर्थः। सत्तधान्यानित्रीह्यदीनि यथा लानोपपन्नानिद्राणादन्यपरिमाणानिदेया  
 निष्प्राणध्वरूपं परिमाणप्रकरणे द्रष्टव्यम् ॥ इति पञ्चाघातहरशा। अथहिक्काहरशाकर्मविपाकस  
 मुच्चये ॥ अक्रुत्रा ब्राह्मणशुक्लेवातहोमजपादिकं। महिषारोगसंयुक्तस्यत्वापस्थापुत्रतयोवां प्र  
 यणत्रयं कुर्यात्कृच्छ्रात्समाचरेत्। तामयिवर्णमिति च जपेऽरुक्रं समाहितः। तामयिवर्णमिवेतसूक्तं  
 कृच्छ्रीघ्नस्फोटहरेत्येवार्थे। जपसंख्या उवाधः। उमारेण सहस्राद्युतांताकल्पः ॥ इति हिक्काह  
 रशा। अथवातव्याधिहृष्टगदानं ॥ अस्यानिदानं वाऽपुसुराणो वातव्याधिऽतस्त्रेयीति शोऽपुपाचमाहा ॥

वैधायनः॥हरिणांकारयेत्रामंघनंउदशक्तिःपुलैः॥तदद्वेनतदद्वेनशृंगरीप्यमयेहृदोतंडुलोपरिस्म्य  
 प्यकांमपात्रउद्ययवावायुदेवतमंत्रैश्चदेमत्रप्रकल्पयेत्समिदाज्यकरुंकावाशतमद्योत्ररशप्र  
 अष्टाविंशतिरेवाधमंत्रेणानेनतंदिशेयवायोवरकिरूतानामंतस्त्वलोकपावनावाहनस्पृशदानेनवा  
 तद्याधिविनाशयाअनेनकृतमंत्रेणयथोक्तेनविधानतः॥वातयाधिविद्युकोसौनिरुजःसुखमेधते  
 घनंउदशक्तिःपुलैर्विवादिघनंनिविडंढमिनियावत्रपुललक्षणं परिमाणप्रकरणेतिहितघात्रा  
 ह्यणायतिवेद्येदितिहरिणांवायुवाहनायनमाः॥इतिमंत्रेणचोडयोपचारैःपूजयिवावन्नमाणहो  
 मंत्रनिर्वच्योपश्चात्तदहरिणांवायुवाहनायदद्याद्विपर्ययः॥तंडुलयरिमाणमाह॥आह्वकत्रितयामितिश्च  
 ढकस्वरूपमपिपरिमाणप्रकरणेनिरूपितंवायुदेवतमंत्रैरितिवायुदेवतानावाह्यत्रादयोघानिश्चाप्य  
 परिपावितानासुपुलक्षणार्थेअथश्चशाखेकोमंत्रोक्तेनयथा॥अथवसमिदाज्यकरुंनिमंत्रिवा  
 त्रदपेज्यावज्जवात्रतद्युक्तवति।समिदाज्यकरुंकेवतिप्रादेशमात्रः।समिघइतिसमिघःकरणं

मिधश्चयज्ञियाःशुष्ट्योक्तविधिनाअष्टसंस्कारअष्टप्रकाराणांशुष्ट्योक्तविधिनेवाविद्यद्वासनप्रतिष्ठिता  
 तिधारान्नसंस्कारेश्चानिष्पादतवकरणं।वायुस्वरसीनिदानमंत्रा॥इतिवातव्याधिहरमुगदान्म॥अथरु  
 वातप्रशमनम्॥शातातपत्रेके॥॥रुक्वस्त्रप्रवलानांहारीस्पृशकवातवात्रसक्वामहिषीदद्यत्प्य  
 रागसमचित्ताश्वस्त्रप्रथिरकमेवामहिषीदानमस्तथासुकासहरेदृष्टयः॥॥इतिरुक्वातशमनम्॥अथ  
 वातरुक्वहरणम्॥पित्रहस्तस्त्रीनारायणदानम्॥॥इद्वैधायनः॥सवर्णंगमनेवातरुक्ववाजायतेनर  
 मवर्णांगमनेवातपित्रवानपितायतेलस्त्रीनारायणस्वरूपंसुवर्णनिप्रकल्पयेत्।पलेनवातद्वेनतदद्वे  
 नाथवाहनः।लस्त्रीनारायणंरूपं सर्वदासर्वकामिकं।पश्चासनगतंकर्यादिवदेवैवकुर्जुमदक्षिणाधक  
 रेपञ्चशंखसूक्तंकरुंयमेवा।मोहवकरेचकलस्त्रीष्टकेकरः।रावा।मोहसंगतलस्त्रीरत्रपात्रकरान्ते  
 त्रदक्षिणाश्चकुजोदेवः।ष्टष्टेद्वस्यवक्रिपाः।गुरुंउरजतंकर्यादेवदेवस्यवाहनंशपद्मौवतस्यसोवर्णोषि  
 वणैनिवनासिका।वस्त्ररूपंतरुविरे।परिधायतिकौतुकांशुकावामपरिद्विभवंदनायुरुलेपितम्।ध्रुयत्त

समानीयस्ययेद्वस्त्रकंडलेःकंमायुक्कपरैरुपवीतांयुलीयकैः। प्रवेत्तिनविधानेनदोमंतत्रनुकारयेत्।  
मंत्रेणानेनुतंदद्यात्सर्वलोकनमस्कृतशालस्त्रीपतेदेवकिन्दनेशस्त्रीराक्विशाथिबजसाममया। गोविंददामो  
दरवातस्कविनाशयेत्तेदितवैरिव्यः॥ तथा॥ प्रवेत्तिनविधानेनेति। दोमंकारयेत्त्रयारस्यो। तत्रो। तद्विद्व  
रनारायणदानोक्तप्रकरणेत्यर्थः। यदा उवात्पित्रहरणाथीमिदं दानं क्रियते यदा पलस्त्रीपतेदेवकिन्दनेशे  
यस्मिदानमंत्रे। गोविंददामो दरवातपित्रमिष्टहंकार्यो ॥ इति वातपित्रहरवातस्कद्वलस्त्रीनारायणदान  
या ॥ अथ वातपित्रद्वस्त्राकर्मविपाकसमुच्चयोलसु नंयंज नंतालफनेवात्रोतियोद्विजः। सवातपित्ररोमी  
वत्वेवांदायणंवेरंअथयतिरेकेणलसुनालसुनादिनद्वणोसचांदायणाज्यराणांवांदायणलद्वणं। कृच्छ्र  
प्रकरणेद्वद्वयम् ॥ इति वातपित्रद्वस्त्रा। अथ वातस्कदायश्चित्रम् ॥ शातातणः॥ स्कवस्त्रप्रवालात्रोहारीसा  
प्रकवातवात्रयांदायणंद्वयं कदादिदोमस्यशांतयोवांदायणंस्वरूपं कृच्छ्रप्रकरणेत्यथायि ॥ इति वातस्कद्व  
रवायश्चित्रम् ॥ अथ प्रकारोत्तरणवातरस्कद्वस्त्रायश्चित्रम् ॥ द्दवैधायनः॥ सवणगामनेस्कवातवात्रवा २०४

गणपति २०५

येनरापतद्वेगनिद्वयर्थेप्रदंरुद्धयाजापत्यरुद्धाणामसां सु नरंशतंनवतितमाचरेवाद्दं च प्रायश्चि  
त्रंघ्न्यरोगस्यापिधनवतःअथनुस्याथःधिकरणेगवतोवा ॥ इति प्रकारोत्तरणवातरस्कद्वस्त्रायश्चि  
त्रम् ॥ अथ वातरोगप्रतिमादानम् ॥ तत्रद्वणो। कर्मविपाकसारे ॥ वासुदेयंकरंप्रयुपाशास्त्रधावंस  
मंततःविकीर्णकिशाःकाश्चस्थान्तर्दयत्रेणवाहनः। प्रजाविधानंतुपरिताप्यार्योद्याधिव्रतिमादानविधा  
वातंकोद्विषतातत्रेत्यादिनादर्शितं ॥ इति वातरोगद्वस्त्राणि ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ वैद्यशास्त्रमदायध  
रुबौषधमथःअथाप्रयोजयेत्वरःसौर्यस्कपित्रसुतोसवेत्। अद्योत्रसुतंवाकावाधंइतमित्तुवुव  
वर्वाज्यास्यंप्रभुंइयाद्वक्तपित्रापुत्रये। वैद्यशास्त्रमदंजानामिन्निगवद्विषधमथशास्त्रविरुद्धक  
वाप्रयोजयेत्। अथवात्रधंशास्त्रविरुद्धमेवकवाशाखा। उरुक्रमेणियोद्व्यासरकपित्तपित्रवाज्या  
तेइत्यर्थः। अथवैद्यशास्त्रमदाह्यनेननिघडिष्यावरणमत्तिहितंशात्रनोद्याधितरतमत्तावेनतिघडिष्या  
वरणप्रायश्चित्तानि। तांवांदायणद्वस्त्राः। निठ्ठुपराकादीनिद्वस्त्रानिसमंशानिवायोप्यानिवांदायणादी

नितथा प्रवेक दोमश्चेति मिलित्वा द्वयमपि रोगनिवृत्तिसाधनां चांद्रायणादीनि धरूपाणि कञ्च प्रकरणेव  
 गंतव्यानि अश्रुतं वृणीमहेत्युपस्थात्तन्मादिश्चासकासहरेदृष्टव्या अथ उच्यते विषयः नत्र सूक्तं विनियु  
 क्तं मंत्रं उच्यंथमात्रेति श्रुत्याऽप्युतार्द्धं अजिनार्द्धं मित्युत पूरणीया अथवा वाधिशक्ताद्याधिके च स  
 णाऽप्युतमाप्तेनाऽप्युतं होमं ॥ इति रूपापि नहरश्च ॥ अथ प्रकारोत्तरेण रूपापि नहरश्च ॥ शातातपप्रोक्ते ॥  
 मद्यपौरतिपित्रीत्या नृदयांससर्पिष्विति मद्युनार्द्धघटं वैवसां हि राणं विमुह्येति अद्यापि मद्युपप्रायश्चि  
 त्तानि त्रेमासिकादीनि षडष्टपर्यंतानि द्याधिशक्ताद्यपेक्षया योऽप्यानि एकस्मिन् मासि माद्विद्व्यं प्राजाप  
 त्यकञ्च परिगणनीया त्रेमासिकप्रायश्चित्ते साद्वसन्नप्राजापत्यकञ्चाणि नवंति एवमन्यत्राप्सुर्होत्रा  
 ज्यप्रज्यदानं मंत्रसुप्रायश्चित्तोसाद्वसन्नप्राजापत्यकञ्चाणि नवंति एवमन्यत्राप्सुर्होत्रकमपवतासुक्तः  
 ॥ मद्युदानं मंत्रसु ॥ ॥ ७ ॥ अथ रसाहितश्चासकासहरेति हितं ॥ इति प्रकारोत्तरेण रूपापि नहरश्च ॥ अ  
 थपि नरोगप्रतिमादानश्च ॥ नत्तद्वर्णवचकेषु उरोगे चित्यादिनाश्च रोगप्रकरणोक्तमेव प्रापि विज्ञे

204

अर्धे १४ रणे प्रा. १

यांश्च जाविधानपरिचाषायां रोगप्रतिमादानविधावातं को देवता तत्रेत्यादिना प्रपंचितम् ॥ इति पित्र  
 प्रतिमादानम् ॥ इति श्रीपिहित्टामजुतदृष्टी विश्वेश्वरविरचिते महार्णवाविधाने निवृत्ते कर्माविष्य  
 कपरिह्वेदोपि त्रोगहराणि ॥ अथ श्लोभहराणि ॥ नत्रशातातपः ॥ त्रपुहारीवपुत्रुषो जायते श्लोभ  
 लसदा अत्रवदद्याणां माल्यासाराणां स्रेयं कृत्वाऽथैवमनः खेप्सीतपंतं कृत्वा मिति मवृक्तं सांतपनंचरे  
 त्रासांतपनलक्षणं कञ्च प्रकरणे च धारि ॥ इति श्लोभहरश्च ॥ अथ प्रकारोत्तरेण श्लोभहरश्च ॥ शातात  
 पप्रोक्ते ॥ त्रपुहारीवपुत्रुषो जायते श्लोभलसदा उपोष्यदिवसं सोपिदद्यात्पलशतत्रयं प्रापलप्रमा  
 णं परिमाणप्रकरणेव गंतव्यम् ॥ इति प्रकारोत्तरेण श्लोभहरश्च ॥ अथ विकित्सकफहरश्च ॥ यमः ॥ इ  
 त्याऽबध्नातविमुखः कफरोगी जितेन्द्रयापरातर्वसमात्रो त्वित्वाह नगवात्रयमः परातवे श्लोभराण्यु  
 तिश्च समाधोतिवर्थाः तद्वान्तये मासमेकं लक्ष्यन्तः ॥ अथ हसनमपात्सहोमश्च ॥ श्लोत्ररायुतशानाम  
 त्रयेणाकृत्वा त्वात्तपि चहवित्तिवैत्रायावकप्रतसन्नपकञ्च प्रकरणो निहितम् ॥ तैर्नियमैर्मुक्तं मासं वा



एकत्र तं कर्मात्रात् इत्यर्थः ॥ विष्णुसहस्रनामानि परित्याग्यं दर्शितं श्रीनिनामत्रयेऽर्थात् दिवात रोगहरेऽत्र  
 च्यवनामत्रयेण होमः ॥ सहस्रनामस्तोत्रमज्ञायाः जपसंख्याचयाध्यानुसरणाऽश्वेत रसहसादिकां क  
 ल्पा ॥ इति विद्विवाकफद्याधिहरम् ॥ अथ श्लेष्मरोगप्रतिमादानम् ॥ तल्लक्षणं तु शूलरोगहृत्कर  
 णे अत्रुक्तेषु रोगेषु त्वादिनातिदित्ता ॥ इति श्लेष्मप्रतिमादनम् ॥ इति श्रीपिहितहात्मजतरवि  
 श्वेश्वरविगर्हितमहाणवालिधाने निवंधे कर्मविपाकपरिच्छेदे श्लेष्मरोगहरणम् ॥ अथोपस्मारह  
 रणम् ॥ शानतात्प्रोक्तम् ॥ इति उपस्माररोगीऽर्थात्स तदोषस्य शोतयो ॥ ब्रह्मकुर्वन्नयं कुर्वाणः प्रयुज्यते  
 इति श्लोकः ॥ ब्रह्मकुर्वन्नाशुक्लप्रकरणे दर्शितं प्रयुज्यते इति नवप्रहयज्ञप्रकरणे दर्शितम् ॥ इत्य  
 पस्मारहरणम् ॥ अथ प्रकारान्तरेणोपस्मारहरणम् ॥ कर्मविपाकसंयत्ते ॥ श्लेष्माग्निनिवायसुप्रतिहृत  
 समाप्तस्योपस्मारीत्वेन वृज्यते ॥ इत्युक्तं नरः सत्स्य निमंत्रेण त्वर्षिभ्यः कुक्यात्रया कयम  
 तिमूर्त्तुजपद्मोत्पणतर्पणशुक्यादिरण्यदानं च शकारेण स्पशान्नयोर्वाद्यायणलक्षणं कुरुषु

करणोद्दष्टं च वाचस्पतिलेखितमेव होमसाधनं पृथक् पृथक् कर्तव्यं कर्तव्यं होमसंख्यारोगोपसारेणोपश्वेत रस  
 ताः सुतोताकल्पा ॥ एकं मूर्त्तुजपत्तयेऽपि सदस्य निमंत्रणं मेधातिथिं क्रापिः सदस्यतिर्देवतागायत्री ब्रं  
 दः होमे विनियोगः ॥ सदस्यति मधुताः प्रियमिन्द्रस्य काम्योऽग्निमेधामयाः सिधेकत्रानश्चित्राः सुवर्वा  
 तिपंचदशार्चं मूर्त्तुजपत्तयामदेवकाधिः इन्द्रो देवता ॥ गायत्री ब्रं दः होमे विनियोगः ॥ सदस्यति मधु  
 ताः प्रियमिन्द्रस्य काम्योऽग्निमेधामयाः सिधेकत्रानश्चित्राः सुवर्वा तिपंचदशार्चं मूर्त्तुजपत्तयामदेवकाधि  
 इन्द्रो देवता ॥ गायत्री ब्रं दः जपविनियोगः ॥ कयानश्चित्राः सुवर्वा तिपंचदशार्चं मूर्त्तुजपत्तयामदेवकाधि  
 वता ॥ शकस्वासत्वोमदानाभादिघोमत्सदेषसः हडाविदारुसज्जवत्तु ॥ अतीक्षुणः सरवीनामगविता  
 जरिठणाशर्तलवास्यविधिः ॥ अग्नीनवत्राव्युक्तं मरुतमर्वितः ॥ निरुद्रिः अर्धांगिनीनां ॥ प्रविपत्तिद्वि  
 नामाहापदे गच्छसि अतिद्विभ्र्ये विसापसंपत्तं इमन्यवः संवक्राणि संवक्रादत्रिरे अधवेष्यस्यो ॥ इति  
 उवस्माद्द्विवात्मक विन्ययवानंश्वीपतेः क्षताग्निद्विभ्र्युः ॥ इति स्मार्त्तस्य इत्यपिशसम्पनाय सुसुब्रौतोरु

चीनांसेवसा। गानहि श्री तशतं च न रेवो वर व आसुरः स्माः विप्र अलिषया ॥१०॥ २० ॥ २ अस्मिंद्रहा द्वाणी धराम  
 व्यापवद्यये अहोरायेदिमते ॥ ११ ॥ अस्मिंद्रहा द्विषि देव शया प्रीणसा अस्मा विष्वा मित्रा मित ॥ १२ ॥ अस्म  
 स्पतं अया द्विषि ब्रजे अस्मि अगो भतः नवा मिरी त्रै तिनः ॥ १३ ॥ अस्मा वस्त्रयार थो कर्म इन् पस्ततः रा सु  
 रश्च युती यत्वा ॥ १४ ॥ अस्माक म्भत मं कधि अवाो दे वै सु मूर्यः वस्त्रिष्ठे द्या मिवो परि पा ॥ १५ ॥ इति कयान श्री  
 त इति प्रकम् ॥ ॥ इति प्रकारा त्रेण ५ पस्मार हरश्री ॥ अथ ५ पस्मारोग हर विनायक वन म् ॥ ॥ त  
 अ वोधायन ॥ ब्राह्मण ध्या द्विशे न द्य पस्मारी च वे त्रः। वस्येत श्य प्रनी कारं दान हो म क्रिया दितिः। पले न वा त  
 दद्वै न त द्द द्वै न वा डनः। विनायक प्रतिकृति क्रय विवर्णे न शो ल न म्। राज तं च तथा नाग सु प्र वी तं प्र कल्प  
 ये वा तस्या षंगे प्र दे यानि र त्रानि वि विधा निवा मा णिके न प्र कु र्वी त व द्यु प्री त स्प शो सने। प्र वै कर्म ड पं क  
 वा म् न रैः प्रो ड्य ति ह्टो य द्द षं द श तिः कुर्या दष्टानि वा प्रिय त्रतः। मंड्य म् च त्र सर्गं वे दिका मा पि कल्प ये  
 रा रा त्रै वै नायक म्या पि ह्द दि वा स न मि धने। व व र्ति त्र स्र लोः सार्द्ध माचार्यः सर्व शस्त्र वि उच्य मे व तथा २७१

चायै धर्मैः सत्य वाक् शुचिः क्लीन कश्च दृढश्च सर्व प्राणि हिते रतः। रा त्रौ जा ग रा णं क्त्वा म च्च रा त्ने व लि  
 ह रे व। मा स्य मां से न म् हितं तथा द्वी रो द्के न चा। अचार्य प्रयतो र्त्वा मं त्रे णाने न सं यनः। प्र वृ म्भ्यां दि शि तं  
 द द्या ह लिं च मार्त्त का मि कां आ दि त्या व स वो र्त्वा दे वा श्रु ता नि सर्वा शः। सर्वा पि शा चा डा कियः पं थ  
 दे व ताः। अ पस्मारा नि दे वं च वे ता लानै त्र त म्भ यथा। वलि दा ते न द ते न शान्ति कु र्वे तु श्च र्शः। ततः प्र ना ते  
 विम ले त्वा वा प्र ह्नु न वा स सः। र भिता र्त्वा प्रो स म्भ य उप वी तां छ ली य कैः। छंडा नि दि द्यु प्र वा रि मे ख ल म्  
 द ता नि चा कुर्या ते प्र कु र्वी त ही म मं वै च्छ क्के स थ या। र्त्वा स्मि न्द्र ह व नं कुर्या त्मि द ष्य म् च ल्क ट वि  
 नायकं स द्द द्वि ष्य गा णा नं व्ने ति मं त्रि तः। अ ध्व र्यु र्द द्वि णे कं डे कुर्या द्धो मं स मा हितं। छं दोगः प्र च्छि म्भ  
 डे स म्भ यो ग्ग्यं स मा ज रे वा अथ वा ण श्रो त रे च्छ डे हो मं प्र कल्प ये त्वा वि नायक स दे वा य सर्व र्त्वा त्ति ता  
 य चा स मि द ष्य च रं कु र्त्वा प्र णां ड्ज ल्पे त म्ि व हि। आचार्य प्र ति मां तां तु ब्रा ह्म णोः स ह्मं सु तः। आ स नं वे दि  
 का म धो वि ता ना दि परि श्रि तौ। तिला नां सु परि स्थाय गंध पृ ष्ठे श्च म्र ज्ये त्वा व र्त्वा वि वैः शु क्तैः क परिक

टकादितिः उपचारैश्चोऽपि नैवेद्यायश्चमोदकांयथा देवे तथा चार्येऽप्यलंकारादिकल्पयेत्वा  
 चार्यः परयानत्रागणेशयप्रकल्पयेत्वा अथ पादितथायाश्चकार्येऽपि क्वचित्तानिवेद्यपार्वती  
 वापि देवदेवं मन्त्रेश्चरमाद्यजयेत्परयानत्राचार्यश्चयमेव हि तथैव रोगी चक्त्वा उ सं प्रज्जगणना  
 यकांगणानां त्रै तिमंत्रेण तस्त्रींश्च प्रज्जु घजयेत्वा उदुखोपात्रेण यत्राखणाय हतकितः। विनायक  
 प्रपत्रा त्रिहरे विघ्नविनाशकः। ब्रं देवैः पार्थिवैश्च विघ्नविघ्नपरायणैः। ब्राह्मणस्यात्तिरोधेन यज्ञान  
 मम वैकृतोऽसर्वकर्मविपाकेन ह्यपस्मारो मदादिकं शत्रुं वाप्यथवाधिर्यमनाश्रिकिं च्चक्रा प्रपत्रा  
 वदचार्या प्रमादे रोगमाश्रु विनाशयः। व ठर्णा ब्राह्मणानां वदद्यात्तत्रां च दक्षिणापवैरु च्चगणाय  
 तेर्द्वानिमंत्र्य सुखी च वेत्वा पलेन वा तद्वेत्नीत्यादि पल्लव दानं परिमाण प्रकरणे इष्टयश्च उक्तरा मितिः।  
 करं श्रुं डादंड विनागः। दस्र मितिः दस्रं श्रुं डादंड उच्चुषीतस्येति तस्य विनायकस्य विनायकवाहनात्  
 विक्रमस्य मांसेनेत्यादि मत्स्येन मांसेन हरेण उदकेन सहितं विचित्रमंत्रं लिदद्यादित्यर्थः ॥ वालि

दानमंत्रमाह ॥ आदित्यावसवोरुद्राश्यादिनाश्रोकद्वयनाहोममंत्रैस्वकैरिति शकैश्च शार्वकैर्वि  
 नायकप्रकाशकैर्मंत्रै रित्यर्थः। तत्र विनायकप्रकाशकामंत्रो विनायकमंत्रो न वयं ह्यज्ञे प्रदर्शिताः। होम  
 संख्याद्योत्रशतानि सत्संताशक्त्वाद्युत्तरेण कल्प्यात्सर्वस्मिन्नङ्गवश्यादिभिरविनायकाधिवास  
 नैवेदिकालः। प्रवृत्तिदिशो याह्या। मति स मवे चंते सुदिदु वङ्गवादिनिहोमकारयितव्याः। वेदचउद्ययवि  
 दामनावे स्वशास्त्राब्राह्मणेन तस्थाप्यलावे नुस्मिन्नकर्मोण्याचार्येन योऽत्र नश्च स्वशास्त्रानुसारेण।  
 धिवा सने वेदिकालं प्राय्यादि शिकुं डादि धार्यां द्विष्ट होमच उर्युपाकारयेत्वापवचार्याः त्रिविक्रसहितो  
 होमविधाय घृणाङ्कित्येते सर्वं धिवा सितां विनायकप्रतिमां पुनश्चोऽशोपचारैः पूजयेदित्याह आचार्य  
 प्रतिमां त्रिव्यादिना। नक्षिकावितमाघृणादिनैवेद्यार्थं कारयेदित्यर्थः। विनायकप्रपत्रा त्रिहरेत्याः  
 स्परेण माश्रु विनाशयेत्त्रो विनायकदानमंत्रः। वदचार्याः प्रदानेनेति आचार्यः अर्चितायाः प्रतिमायाः।  
 इत्यप्यप्ये रोगहर विनायकदानम् ॥ अथाऽपस्मारसूत्रिदानम् ॥ तत्र शणैः उरु केषु उरुगे मधित्यारच्य

नहरश्चरणेदर्शितमेवात्रापि विज्ञेयं प्रजाविधिषु परिनायां रोगप्रतिमादानविधावातं कोदे  
 वतातत्रेत्यादिना प्रदर्शिताः ॥ इत्यपस्मारो रोगप्रदानम् ॥ इति श्रीपेक्षितहामजतद्विद्विश्वेश्वर  
 विरचिते महाणवालिधाने कर्म्मविपाकपरिच्छेदे अपस्मारो रोगहराणि ॥ अथ शिरो रोगहराणि ॥ शाना  
 पत्रोक्ते ॥ नागद्वारी चमततं फुष्यशीर्षरोगवात्र तस्य प्लथतं दद्यादुपोष्य सुत्रवासरश्रीनागशीसां ॥  
 इति शिरो रोगहराणि मदानम् ॥ अथ प्रकारेतराणि शिरो रोगहराणि ॥ कर्म्मविपाकसमुच्चये ॥ युरो  
 रोधी शिरसि रोगवत्प्रजायते नरः ॥ कृष्णाति कर्ष्णकुर्वीत चांजय फमथापरम् ॥ प्रकारेतराणि शिरो  
 गहराणि ॥ अथ कर्म्मविपाकसंयहोक्त शिरो रोगहराणि ॥ प्रायोपवेशनादीनां ब्राह्मणात्यागकारण  
 शिरो रोगमुतोपूयात्र निष्कृतिश्चास्पृश्यत्वे ॥ गीहत्यायात्र तं कुर्यात्पंचस्य द्विप्रलोजनम् उच्चं जपे  
 त्रैवहोमं कृष्णादसंजकः ॥ सवेदित्शिषः ॥ इति कर्म्मविपाकसंयहोक्त शिरो रोगहराणि ॥ अथैकांश  
 शिरो रोगहराणि ॥ नारदा ब्रह्मचारी यदाश्रिया किंचिन्प्राये विषयतः ॥ एकांशेन शिरो रोगी ज्वतीत्या

२०९

संस्कृतं चित्तं चित्तं चित्तं चित्तं

हनारदः ॥ अहीत्यां तमिसनेन मधोत्तरशतं जपेत्तु रुद्रतास्योचते नैव रुद्रया ज्वतथैव दित्रप्रधानि प्रदद्याच्च वि  
 द्याद्वा दवाचो जयेत्सिन्धुपात्रे विशेषत इति सुवर्षं जतपात्रमतिरिक्तसिन्धुपात्रो जने रोगनिदानं विशेष  
 तो सिन्धुकोस्पपात्रो जने मिसर्थः ॥ अहीत्यां तेनासिका प्रणहरति मिसृक्तं परिलायां रोगप्रतिमादानविश्र  
 रष्ट्यां रुद्रया ज्वतथैव हीति ॥ अष्टोत्तरशतमिसर्थः ॥ चरुणाऽष्टोत्तरशतं हतेन चाष्टोत्तरशतं अत्र समं प्र  
 कंमंत्रेन तु प्रमेकं अषधनिवेद्यशास्त्रे शिरो रोगहरत्वेनोक्तानि ॥ इत्येकोश शिरो रोगहरम् ॥ अथ सूर्याव  
 हरम् ॥ शानातपत्रोक्ते ॥ अथ प्रस्यापिहरणात्सूर्यावर्तः प्रजायते तेन सूर्यः प्रदातव्यानिष्के कस्य यथा  
 विधिनिष्कपरिमितसुवर्षनिर्मितसूर्यप्रतिमा दद्यादिसर्थः निष्कस्य ह्येपरिमाणप्रकरणे स्यात् ॥  
 इति सूर्यावर्तहरम् ॥ अथ शिरो रोगघ्नयज्ञोपवीतदानम् ॥ एतन्निदानं यथापुराणम् ॥ ब्राह्मणह इति  
 शिरो रोगीति अत्र निष्कृतिर्घायुपुराणे ॥ उपवीतं हरत्पेन निर्मितं सुपलाईतः ॥ तद्वै नतद्वै नयथा  
 विसवतोपिवत्तरीयं राजतं च तानं स्यात्संख्या कृतम् ॥ ब्राह्मणाय ब्रह्मविद्ब्रौवियाय निवेदय च संवैणा

नेनविधिवत्प्रजितायांयलीयकैः॥अताविधत्तजगत्संपरमात्मात्तुर्मुखंवाविनस्ययत्तुमेक्षिप्रंरोगवेगंशिरो  
गतयत्रयज्ञोपवीतविश्रयतंयज्ञोपवीतंअज्ञानाप्रोक्तप्रकारेणदद्यात्तत्रसुज्ञानमित्यादयोत्रसुप्रकाश  
कामंत्रानवयह्यज्ञप्रकरणेप्रदर्शिता॥पलाङ्गनेति॥पल्लवज्ञानपरिमाणप्रकरणेनिरूपितश्रीयथाविस्वते  
पिवेति॥समृद्धनेनपलादप्यधिकपरिमाणेनसुवर्षेनयज्ञोपवीतंतावन्मानसुत्ररथंनवता॥इतिशिरो  
गद्ययज्ञोपवीतदानम् ॥अथशिरो रोगप्रतिमादानम्॥तत्रज्ञानंजाडकेषुतुरोगेक्षिप्वादिनाश्रुत्येगहरप्रक  
रणेकमेवात्राप्यनुसंधेयं॥सुज्ञाविधनंनैवातैकोदेवतानवेयादिनापरिताषायांरोगप्रतिमादानविधंरुक्तं॥  
॥इतिशिरोरोगप्रतिमादानम्॥इतिश्रीपेहिवद्यात्मज्ञतदश्रीविश्वेश्वरविरचितेमहासंवालिधनेनिबंधेक  
र्मविपाकपरिच्छेदेशिरोरोगहरणम् ॥अथसुखरोगहरणम्॥अथप्रतिवक्रत्वहरम् ॥कर्मविपाकसंय  
दे॥धर्मकर्मोपुपक्रम्यमध्येत्यजतियोनरःअविद्यामानदोषान्नापरिणयःप्रकाशयेत्संनवेष्टतित्र  
कसुकृत्यांजांश्रायणप्रतम् ॥धूपस्वर्कंदनादीनिमुग्धानिस्त्राकितः॥दद्याद्विप्रायंपंचाशद्वाहणान्नसोज

२१०

३५२०

येत्रतः॥जांश्रायणस्वरूपेकसुप्रकरणेदृष्टम् ॥इतिप्रतिवक्रत्वहरम् ॥अथप्रकारंतरणसुखरोगहर  
म् ॥कर्मविपाकसंयदे ॥प्रवाचांविध्नकत्रसुखरोगीधजायुतामर्माद्वाटनतोद्येषासुखरोगीप्रज्ञस्य  
तोसकृद्भ्रितयंक्रयनिंत्रैर्व्याहृतितिर्हृतस्युज्जयाविसहसंनवेदद्याद्द्रीहादिकांवनयाजापत्यकृद्  
स्वरूपेकसुप्रकरणेसंध्यात्रिहादिदाद्यात्कांवनंदद्यादित्यत्रयः॥आदिशश्चेत्यवगोश्रमादयोदृष्टंता  
द्रीहादीनिश्चयक्रानुसारणदद्यात् ॥इतिसुखरोगहरम् ॥श्यातातपप्रोक्ते ॥स्वमाज्जारादिसिःस्फुटं  
सुक्कादुगंधवात्रसवेशपीबात्रिरात्रंगोमूत्रंलो जयद्वाहणत्रयं॥दुर्गांधवात्रसुखेदुर्गांधवात्रसुखे  
सुक्कतितो जननिमित्तत्वेनोपादानात् ॥इतिप्रकारंतरणसुखरोगहरम् ॥अथसुखरोगहरणम् ॥का  
र्मविपाकसमुच्चये ॥कृत्सहस्रीनवेहक्रोगीश्रीणितपित्रवाशकृत्वा॥तिकृत्कोकृद्भ्रप्रकरणेदृष्टंता  
यांचांश्रायणदीनिमपिपरिभाषायेमेवाकृत्मांहेहोमश्चकृत्मांहेहोमप्रकरणेसंध्यात्रिहादिगणादिपरि  
माणप्रकरणेवोध्यांत्रिहितिलादीत्रयक्यमनुसारणदद्यात् ॥इतिसुखरोगहरम् ॥अथसुखरोग

द्वगजदानमाद्येधाययनंवाप्रिधंयुरोःकृत्वासुखरोगीतवेन्नरः। तस्यदानिनविदितप्रतीकारोयस्यमती  
 मोवर्षराजतंतांभूपलेनाईपलेनवा। कारयेत्करिणंसौम्यथ्यविवतोपिवा। तस्यैवकारयईतो। सुदेनरजतेन  
 ला। सुदंःसो। किंवेदेईरनाममक्षिणीतथा। संवेद्यपीतस्त्रिणंगं। सुदुष्पलतादिनिः। अत्रयेद्व्यराशिस्त्रंभ  
 न्यद्विणाकंमतं। प्रतद्वेत्तोपसेपनेत्राहणं। साज्जितं। इयंदातेकुलीनेधमिष्टंममुद्धेमकरं। यणामाह्वयपर  
 यासक्या। बन्धा। संकारदषणेः। प्रजयेष्यतोसुखातेनेनकर्मकारयत्र। अग्निनाशितथा। ज्यायो। सुकज्याति  
 रितिक्रमात्रमंत्राणतेविनिर्दिष्टा। इधमत्राश्रकइष्पती। कृत्वाविष्वणीतासंततोहस्यजेनतवेत्। स्वाहा। क  
 र्मकृत्वाथप्रणीतामोक्षणतथा। पलेनाईपलेनवेयाधि। पलस्वरूपपरिमाणप्रकरणवंगंतया। तस्यैवकारये  
 दवाविस्यादियोवैहस्त्रीसुवर्षेनतानिनतांभनिर्मितमृतस्यसुदेननेरजतेन। मयैश्वर्यदारजतेनहस्त्रीनिमि  
 तःतदारजतेनदत्तविश्वरूपयेतंरजस्यधाप्रत्वा। त्रौणस्वरूपंधमय्यक... असीसमिदादिहोमेकर्म  
 एमंत्रानाह्वा। अग्निनाशिरियादिना। अग्निनाशिरिस्यमेधतितिष्ठापिः। अश्रवादेनिर्मय्या। अग्निराह्वनी

२११

याग्निश्चदेवतागायत्रीहंदाःसामिहोमेनित्योगमत्रग्निःसमिभतेकविर्दृष्टतियुवांइस्ववाङ्गंउज्ञास्याआद्या  
 मेअग्निमिधतेइसस्यास्त्रिंशकत्राभिःअग्निरेइश्चदेवतागायत्रीहंदाः। अत्राप्यहोमेविनियोगः। अत्रद्यायेअ  
 ग्निमिधतेसुरांबिवाहृवापुषक्रुयिषामिद्रोणं। सुवांसस्त्रामिद्रोणुधुनामरवाश्रुज्योतिरिसस्ययजुयोमि  
 काउेविश्वंकांडेवसमाप्रात्रंअग्निविश्वदेवाकभयःमरुतोदेवताइतितत्रापिअथवालिं। गोक्रुदिवतायजु  
 श्वान्नहंदे। नियमतिलहोमेविनियोगः। सुकज्यातिश्चवित्रज्योतिश्चभित्तिपोतिश्चोतिष्माश्चसमश्चरं। पा  
 स्वखाहा। इध्माश्राश्रुवष्पतशीअह। इतिविशेषोपादाश्रुनाइहोमसमिद्धःपलाशस्योत्तवातोतदत्तावे  
 प्राज्ञियकाष्टेइध्मात्तवति। होमसंख्याजनिर्दिष्टत्वात्प्रत्येकमष्टोत्तरशतमरीकृत्वाचैवंप्रणीतंतवती। कं  
 र्मसंकल्पानंतंरंस्वष्टोक्रुतिविनाशितिश्राप्यापाचबाहना। नत्रप्रणीतापात्रस्थापनापर्यंतं। कृत्वा चै  
 वंप्रणीता। तंततोहस्यजेनतवेत्। इहोक्रुधंभयराशि। स्थितंहस्तिर्नणोउशोपचारैः। प्रजयेदियथे। इस्त्रीश्च  
 नसुप्रतीकादिमाजःदानमंत्रसुसुप्रतीकरादप्रवणाश्रीस्वाहा। तंकर्मकथेतिस्रद्वेक्रियकारणकरिये।

तथिवास्वाहोतंकर्मसमिदादिशोमकर्मनिर्व्वैयैः पश्यास्त्रणीतामोद्दलांश्वेस्पापितं प्रणीतापात्रविमर्गं न स्वय  
 होक्ता विभनेन कुर्यादियर्थोपवंचर्वाक्ककर्मणां तरं किं कुर्यादिस्यत आह ॥ तत्र क्लोचं धरः सुक्तमात्पा  
 सुनेपना तस्मै ज्ञतवते देयात्करणं तु सदक्षिणां मंत्रेणानेन विधिवत्प्रायश्चित्तशेषता सुयतीकगने  
 इत्वंसरस्वातिविचनम्राइइस्पवाहनेसत्वंसर्वदेवे श्रयजितम्रावनेतानिनदत्तेनसुखरोमिनाशयात्र  
 श्रीहोणोसोऽयदेवेततोडंजलिवंधुतिः ॥ इति मखरो गह्वरगजदातम ॥ अथ जिह्वारोगह्रम ॥ आतातप  
 योक्तो ॥ पक्वान्हरणचेवजिह्वारोगप्रजायते ॥ गायत्र्यास्तु जपेन छंदशांशुजुड्यात्रिलोः जपकरणाश्रुक्ते  
 गायत्र्यास्तु तजपस्येककृत्तुप्रयात्रायत्वात्रक्षत्रपस्थानेदशकृत्तुप्रकृत्वागायत्र्याणि द्वादशदसजुड्याश्र  
 कृत्तुस्वरूपकृत्तुप्रकारणदृष्टम ॥ इति जिह्वारोगह्रम ॥ अथ प्रकारांतरेण जिह्वारोगह्रम ॥ कर्म  
 विपाकसमुच्चय ॥ परेमांडुःखकरणात्सर्वदादृत्तजापणो जिह्वारोहितथाश्रुणोपक्षपाताच्च संसदि जि  
 ह्वारोगीतवेदास्पेवणविवातिजायते पराकांक्षितयैवेवहोमः कृष्णोडसंज्ञकः कायेन श्वित्रसकृत्स्यजप

२१२

हेमंश्चथेवचात्रीहानां चतथादानमौषधस्यचसंस्मृतमसर्वदेतिोपलक्षपदेकाकाक्षवडतयवसंवध्यते  
 असकृदर्थोडाहुतकरणात्सकृदद्यतलापणाच्चैसर्थोपक्षपातोपवहारिणः पूरकलक्षणं कृष्णोडहो  
 मश्रुपरिनापायुसुदीरिताः कथानश्चित्रासुवक्षितिसकृत्तमपस्माररोगह्रप्रकरणेप्रदक्षितम्राग्नेनसकृत्त  
 जपहोमोश्चकर्मम्राजपहोमयोः संख्याव्याधिशक्त्वाद्यनुसारेणश्रौतशतादिकाकल्पासकृत्सकलविरो  
 षस्यसुद्विभानावदक्षितः वरुणदेवस्येविसुपलक्षणे ॥ अतः स्वशाखासमाश्रातेर्घासुणेशचार्यस्त्वाविषके  
 कृत्वाततः स्मात्रैरलिषेककर्ममस्मात्तत्रमंत्राः नवप्रदस्यजाप्रकरणेदक्षितः ॥ इति प्रकारांतरेण जिह्वार  
 ोगह्रम ॥ इति श्यावदेतत्त्वह्रम ॥ अथ निशुरताजिवादिह्रमशातातपयोक्ते ॥ परेमांडुःखकरणात्स  
 अशक्तिप्रजायते स्वरोक्तिहास्यकरणादद्यामोक्तिककावनेस्वरोक्तिनिरसाक्तिनिरसाक्तिघोर्दसस्व  
 नवतांश्चाहास्यकरणाश्रुणोपक्षपाताच्च संसदि जिह्वारोगीतवेदास्पेवणविवातिजायते पराकांक्षितयैवेवहोमः कृष्णोडसंज्ञकः कायेन श्वित्रसकृत्स्यजप  
 शुरताजिवादिह्रम ॥ अथ मूकत्वह्रम ॥ शातातपयोक्ते ॥ मूकोच्चाश्रवणश्रवणस्येवंनिःकृतिः स्थित

म ३

तेनाकार्यविशुद्धार्थयतिचांद्रायणत्रयं ज्ञतातेषु स्वकंदद्या रसौ वर्णपलसंयुतां इमं मंत्रसमुच्चयार्थं वा  
 ब्राह्मणतं विमर्शयेत् यतिचांद्रायणलक्षणं कुरुप्रकरणो निरूपितो तथापलक्षणपरिमाणप्रकर  
 णे इमं मंत्रसमुच्चयं सुस्वकंदद्यादिसत्रयात् तमेवदानमंत्रमाह ॥ सरस्वतिजगन्नातः शब्दब्रह्माधिदे  
 वता ॥ दुष्कर्मकारिणं पापं रक्षामो परमेश्वरि ॥ इति मूकबद्धरम ॥ अथ मूकबद्धरतिलपददानं ॥  
 वायुपुराणे ॥ स्वरुपघातव्रवीवाचं दत्तामूकः प्रशस्यतो वदुपामितस्वतीकारयेन संपद्यते सुखां वा  
 वादत्तायुर्वह्नुनामं तरेणेव धयहो उस्वकदुत्रावाः कुर्यात्स्वर्षमयं पक्षपलाहेन तदद्वैतः ॥ यथा बितवत  
 सम्पन्नित्वाथं नकारयेत् तदद्वैतः पलाहेने पर्थः ॥ पलस्वरूपं वदुपामाणा ढकचरूपं परिमाणप्रकर  
 णे इदमथारक्तवखणसेवेष्टतां प्रपात्रोपरि न्यसेत्तां प्रपात्रं परीमाणं पलामष्टकं विडः पीतवृत्रणसेवेष्ट  
 पात्रं तं छविनिक्षिपेत् अडकद्वितयोन्मानतिलराशौ प्रयत्नतः उपचारेः प्रोउतिः राचार्यः सर्वशास्त्रविद् ॥  
 रक्तचंदनमुष्याद्यैर्मंत्रेणानेन प्रयत्नेन ॥ पद्मजामंत्रमाह ॥ ब्रह्मणश्च नमस्तुभ्यं विष्णो रमितनात्तिष्ठ

२१३

अतिधीतिकरं ताणोस्वयारु इच्छते वद्विघ्नं मम हृणत्वं सर्वज्ञेशविनाशकमारक्तचंदनमुष्याद्यैस्त  
 जानंतरकत्रैयमाह ॥ अग्नेयं दिशिवै होमः कर्त्तव्यो ह्यर्धमंत्रकः समिदा उपतिले श्वेवसवित्रा ष्टाहरेण तु  
 समिधो मंत्रकुर्वीत सर्वरोधं प्रशांतयो अग्नेहो मन्त्रधर्त्तव्यः श्विन्मिदमप्याज्ज्वात्तिलानां यत्र इदं  
 तिव्याहतीति स्थापित्वा अग्नेयं सत्ररदिशा गोकलशस्यापनेलवैशं सन्नैकतविधनेन चाप्रतिषेकादिक  
 रयेत् अणीतामोक्षपर्यंतं कर्म कृत्वा विधानतः ॥ तस्मै ह्यतव ते पदं दद्यात्सृक्च वृषे रवात्र वेदनामपि  
 सर्वेषां यतस्वर्षी कारणं विज्ञोषश्च ततो ब्रह्मा सरस्वसाहरे रपि यस्याया चानिरोधेन वै रूप्यमम देहं  
 स्वरुपघातं जनीत्रो मुखरोगाकारं तथा ॥ त्वेतेर्बनाय यवद्यत्रसाविका शिवायतः ॥ त्रिदशादप्ययो देवाद्  
 विष्णवे च यावु विष्वेदवा तु तस्य माचार्याया तिस्रितीर्षु तस्वमत्र प्रजत्वस्वसे दाहिमुच्यते एवं  
 पद्मोद्भवं प्राहनारदाय महात्मनो अग्नेयां दिशि वै होमश्चादिपद्मस्थापनाप्रदेशादग्नेयां समिधो  
 मिसावित्रा ष्टाहरो मंत्राः सवपरिखायां रोगप्रतिमादानविधमसिहितः ॥ समियज्ञियाः आसहो



नवित्रं देवानामिति मंत्रः अस्य कृत्स्नमिति सूर्यो देवता विष्णु प्रच्छंदाः ॥ आद्यहेमिविनियोगः ॥ ॥ विक्रये  
 तानां मुदगां दनं कंचरुमिं त्रस्यवरुषस्याग्रीं प्राया बाट्टयि वीं त्रिं तरिं दोसूर्योत्ता जगतसूर्यो वषा तिल  
 होमोयतद्रेयनया ग्राहति सिद्धां वेशयत इंद्रेत्तस्यासर्गमिति इंद्रे देवता हृती छंदः ॥ तिलहोमविनि  
 योगः ॥ यत इंद्रेय विमहेतनो अतय कृत्रि मध्ये दश कृदिः भवत न उत यो विद्वेषो विमृष्टो जहत्वा हृती  
 नामप्यादिनवयदयज्ञे देवता वास्तुन प्रसाविने स पितृणां होमसंख्या च यमक मष्टेत्तरशतं स दसैवा प्रवेति  
 न विधानेति अतिषेक प्रकरणे कौत्सेन विधनेनास्य चामादिने वयदशांति प्रकरणे दाश्रीं प्रणता मोक्षप  
 र्थं तमिति प्रणीता पात्रस्थो दक वि संज्ञे न पर्यंतं कर्म खवा खो क विधिना कृत्वेत्थः ॥ देवानामपि सहेषामि  
 त्सारस्या हविष्मत्तस्य था तु वीं यज्ञप सदान मंत्रः ॥ इति षक खदर तिन पद्ये नमः ॥ अथ स्वल ह्कृत्  
 हरः ॥ कर्म विपाक संग्रहः ॥ विदेवा धर्म शाखं वा विक्रणी या द्वि ज्ञान रं अ धी तना शमाया ति जिज्ञाया स  
 लनं लवेश ॥ अ परि सु ट व को वा जिज्ञायां प्रणवान पि कृष्ण अति कृष्णो कृष्णी त वां डायण मथा पि वा। सूक्तं ता

२१४

०

संस्कृत

मने कृती रात्रि रोचु तस्वर भेद जन क दू रित निवृ त्ति पूर्व क स्व र भेद रोग वि तशा द्वा रा श्री पर मे स्वर प्री र्थी ता व दे र स द्वा क स्या स चः  
 तान विवर्ण नि वि प्र स व स कृत्स्न प्रा णे क र अ यु ने त्र यं ज र्ण क र्थी ॥

मन्निवर्णाखं जंपं वै वायु तत्र यां दद्यादिरुपं विनेस्यो लो ज नं च स्व वा क्रि ता वि दे वा ध र्म शा खं वा विक्रणी  
 यादि ति च त्र का ध म प क इ थ र्थः ॥ कृष्णः अति कृष्ण लक्षणा नि कृष्ण प्रकरणे दाश्रीं ता नि एता नि व्या धि य रु ल  
 द्युना वेन समस्या नि यस्या नि वा यो ज्या नि ता मन्निवर्ण मिति सूक्तं ॥ स्त्री स्तन स्फोट हरे ति हित मः ॥ इति सू  
 ल ह्कृत् खदर मः ॥ अथ गङ्गा दहर सर स्व ती दान मः ॥ लज्ज वा यु पु रा णे ॥ वाग्नि रो धं युरोः कृत्वा त वे द न वे  
 दे वां ज्ञा त स्य व क्षे त्री कारं दाने न स पि ता पि त सां प ले ह्ने न त द ह्ने न त द ह्ने न वा पु न ॥ सर स्व ती तु प्र ति मां क  
 यो हु ज व ल ष्ठ्या र्वा व र हं वा इ स क्त्वं च वि धृ ती द क्षि ण क रे सु स कं वा ॥ ल यं वा मे द ध्म नं दे स वा ह्नी अ ति शु वे  
 ण रो प्ये ण कृ ट स्व र्णे न वा स नो प्र कृ ष्ठी त तथा सो म्प सो व र्ण प र ॥ मु ध म म्प्रा कृ ट स्व र्णे न तां प्रा दि मि श्रि ते न रो  
 प्ये ण कृ ट स्व र्णे न वा स नो पी ठं वि ध्र या त स्यो परि सो व र्ण प नं न्य सो वि सु र्थो ॥ प र स्यो परि सं स्था ण दे वी व नो श्र  
 री प रो सु क्रा दा म स मा यु क्तो सु कृ व क्षे ण सं यु तां श वा पि श्र या दि मं त्रो कृ ष ज य सी तं तं दु नै श्रे त यु प्ये श्रे त  
 गंधैः स कृ स्य वि धि र्ब क म ॥ वा गी श्व र्या दि मं त्रे ति य द्वा ग्दं त य वि वे त ना नी ति क र्ण य वा गी श्व र मिं त्र ॥ ॥

कृत् २ः  
१५

प्रथमं रवा यत्र चमूखः पाव क्रेतुललेदो फासावागी श्रीरीपरा । ब्रह्म विष्णु शिवैश्चान्यैः पुत्रिता ॥७॥ अथ विरुत खर तह रीशतः ॥ ७ ॥ ॥ ॥  
 अथ विष्णु मय क्रेतुं स नरेः क्रूर प्रसा । उदधतुं रीशतः फासावागी श्रीरीपरा । ब्रह्म विष्णु शिवैश्चान्यैः पुत्रिता ॥७॥ अथ विरुत खर तह रीशतः ॥ ७ ॥ ॥  
 शर रोपचा ते वसु शुक्रि । शर रोपचा ते वसु शुक्रि ।

**वोम्नादवाखुदरदृष्टिता ॥** ब्राह्मणसर्वशास्त्रज्ञैस्तेन होमं समाचरत् ब्राह्मणपायसं दृड्यादृष्टया दत्तमासि  
**लैयंतथा ॥** उड्यासमिधश्चापितथा अंचलितानपि । कृताः श्रिवा सतीनामा व्र्यायनिवेद्योत्रं संख्य  
**ब्राह्मणं संप्रगृह्या ॥** संकार चरणैः । मंत्रैणाग्निविश्रवत् । सर्ववेदिताः । उद्यत् वरुत दानेन दत्तेन तेन वा  
**परमवाप्रिरोबंधुरोः ॥** क्वायने गङ्गापणम्यं तत्सर्वं द्वायत् । अथि ब्राह्मी त्वं लोकपावती । अत्र उड्याप  
**ब्राह्मणं सर्वं खयेवं जीतवं ॥** धृतिः प्रथममिति । अथाद्या प्रिकंशतः । कृताः श्रिवा सतीनामा व्र्यायनिवेद्योत्रं संख्य  
**रणं लस्यते ॥** अतः प्रवृत्तं । न वाधियास्यज्ञागरणं विषयाप्रातः । उड्यापिवा होमानुत्तरं ब्राह्मणाय निवेद  
**येव्यावक्रोमास्पलोकं पावनी ॥** यच्चो दानमश्न ॥ इति गङ्गादहरसरस्वती दानम् ॥ अथ्ये उड्यकत्वदर  
**म् ॥** शातातप प्रोक्तं ॥ विद्याप्रसूतिका वरी । उपविप्रचत दोषः प्रतिवदप्रतिद्विय तादृशवागि द्रियथे  
**म ॥** युर्वब्रह्म मत्रेण वेदाद्यद्योता विद्या वरी । उपविप्रचत दोषः प्रतिवदप्रतिद्विय तादृशवागि द्रियथे  
**डमूकः इतिहा सशतं महा सारतो प्रसदानं च सुशकत्वदरे प्रदर्शित ॥** इत्ये एमूकत्वदरम् ॥ अथ  
 पुत्रान्नां मेव च । विनाशयाकृत सर्वं जगन्नातः सरस्वति । इति दानं मे तः ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

रौतनमभिरासं चक्रुः । नगरस्वतीरे । नगरस्वतीरे । नगरस्वतीरे । नगरस्वतीरे । नगरस्वतीरे । नगरस्वतीरे ।

२१५  
 इतो मे चाक्रमिदं  
 स्वकृत्या अंगम्

... विरुत खर तह रीशतः ॥ ७ ॥ ॥

**स्वतद्वा क्तवदरम् ॥** शातातप प्रोक्तं ॥ एकसारिकयोर्दृशान्नरस्व लितवाप्यवेशं सद्वा सुप्रसूकं दद्या  
**त्सविप्रस्य सद्धिणम्यं प्रत्येकं शकसारिकाहननं निमिश्रे ॥** सद्वा स्यापि वेदार्हदा । निधुर्मंसात्वा हीनिश्च  
**पिउसूकतनेमूकत्वदरोक्तो मंत्रोयाद्या ॥** इतिस्वतद्वा क्तवदरम् ॥ अथ साधरणेन सुखरोग प्रतिमा  
**दानम् ॥** तत्सद्वा पंचां उक्रेशु वरोगे श्रियादिनाष्ट्ररोगहरप्रकरणे क्रमेवात्रापि विज्ञेयम् ॥ अथ विश्वने  
**दानं की देवता तत्रेयादिना परिचाषायं शो गप्रतिमा दानविश्वकर्म ॥** इति साधरणेन सुखरोग प्रतिमा  
**दानम् ॥** इति श्रियेदितदा मनसदृश्विश्चेश्वरविरचितो महाणी वाधिवक्षने निवेधे कर्म विपाकं परि  
**दिमुषरोगहरालि ॥** अथ नसिकारोगहरालि ॥ कर्म विपाकमेग्रहे ॥ तवणस्यापि हत्रीश्रिालि द्राण  
**द्रिपालिकाः ॥** अथ स्वस्वी श्रेवजायते तस्य निःकृतिः उद्यत् वरुत दानेन दत्तेन तेन वा  
**नविधे उद्यमम् ॥** होमोपनेने वद्वेन होमं शरया जपदशां ब्रातः । वरुणोऽथ क्रसाप्यं वा क्तवदरम् ॥  
**सीतिवद्वचना खिस्यो नमूना निदद्यात्कां प्रनं शक्वा चसारिणा ॥** द्वाशदेवद्विजगवो सजा देवस्पृश्यदि

सुवर्णतिलकादितिः प्रजा आदित्यस्य सदा प्रजां तिलकां स्वामिजस्यथा महागणपते श्रेयः कुर्यात् सिद्धिं  
 वायुयात्रा ॥ इति याज्ञवल्क्यस्मरणात् ॥ स्वामी स्कंदः ॥ द्विजप्रजा स्वर्कंदनवासः सुवर्णादितिः गोप्रजा  
 आहारदानादितिः ॥ इति नासिकारोगहरम् ॥ शातातपशोके ॥ कुक्कुटेनिते चैव वक्रनासः अजायते  
 तेन निष्कः प्रदातव्यो ब्राह्मणाय हिरण्यनिष्कस्वरूपं परिमाणप्रकरणे स्पृश्यात् ॥ इति वक्रनासहर  
 रम् ॥ अथ नासिकारोगप्रतिदानम् ॥ तल्लक्षणं चानुके सुतुरोगे क्षित्वा रस्युश्च लो रोगप्रकरणे क  
 मेवात्राप्यवगतं ॥ प्रजाविधमंत्वातं को देवता तत्रेयादिनादिपरिजाया रोगप्रतिमादानविश्र  
 सुदीरितां ॥ इति नासिकारोगहरप्रतिदानम् ॥ इति श्रीपेदित्वात्मजसदृशी विश्वेश्वरविरचिते म  
 हाष्वानिधने निवे श्रेयः कर्म विपाकपरिच्छेदे नासिकारोगहरणि ॥ अथ नेत्ररोगहरणि ॥ कर्मवि  
 पाकसमुच्चये ॥ परदृष्टि विद्यातेन लिखन्निष्पद्यते चरणचामात्यरस्त्रियं दृष्ट्वा नेत्ररोगी सवेत्तरः ॥  
 चांद्राय लंपराकं चपंचासद्विप्रलोजनघातु कुर्याद्विद्यमुवर्षानि वैरुणासर्पिष्यतया अष्टात्रसहस्रं तु

१८५३  
 २१६

५  
 ज्याद्वोगशतयोर्वर्षादा अलिमंत्रं तु जपेदाद्यं सकांचनां दद्याद्द्विप्राय विधिवन्नेत्ररोगः प्रशांभ्यति ॥  
 षष्ठ्या चरणं चांद्रायणदिलक्षणात्क्रुद्धप्रकरणे निरूपितानि विप्रलोजनमिति एतच्च लोजने  
 मुन्नप्रधमं मुन्नाज्ञे ब्राह्मणे दद्यान्नेत्ररोगा पनुत्रय इति ब्रह्मांडपुराणस्मरणात्कव्यः सुवर्णसुन  
 युज्वे विरुघ्नात्स्योद्ययक्रुद्ययक्रुग्नेत्ररसहस्रं तु ज्याशस्यं च प्राकृ नेत्रशूलप्रकरणे दर्शिता  
 च्छेदा असीति मंत्रोपि तत्रैकः जपसंख्या तु याध्यः सुसारेण सहसा ध्युतो ता कल्प्यात्कांचना ज्ये  
 स्वस्वरूपं समीक्ष्य पश्चात् ब्राह्मणाय दद्यात्तत्राप्येवैह्यपमंत्रकतिशूलहरं दर्शितम् ॥ इति नेत्ररोग  
 रम् ॥ अथ छयहरम् ॥ कर्मविपाकसंयत् ॥ देयती स्यात्प्रदृष्टं तु मेधुने यो निरीक्ष्ये शसने वृ  
 जयसुकृत्स्यादक्षिस्यामिति मंत्रः जपे दोमो चक्रुधी तशक्र्या ब्रह्मण लोजनम् ॥ सहस्रकलशस्मान  
 रवे कुर्वाद्दिजोन्नमः नेत्रप्रययुक्त इति साक्षात्पर्यं वा अतिप्रतु रतद्दृष्टिका वास्यमित्यसिधीयतां  
 अह्नीस्यामिति इत्यपरिजाया रोगप्रतिमादानविश्रौ प्रदर्शिताः जपहेमयोः संख्याप्याधियुक्तं तु

सवेनाः शोचयता घृणुतांताः कल्याजापहोमोचेति च शत्रुनेन सुनराग्निश्च दुरादिस्यस्य मंत्रस्य जपहोमोसमुच्च  
 यतो अयं मंत्रो जन्मश्रमन इति मन्त्रमंत्रा वेदमा उदे मेदवीता जपहोमयोः संख्या तु प्रब्रैके वसानं मा  
 दासौरेण कुर्वीत स्नानियस्यं च दुग्धाज्यमश्चिदुरं सपुण्यतीर्थदिकानियथाशक्त्वा पत्रानि ॥ इति नेत्र  
 द्ययद्वयम् ॥ अथ प्रकारं तरेण नेत्ररोगहरम् ॥ इति चौरस्युपसृष्टौ जायते नेत्ररोगवाञ्छुपोष्यसं दद्याद्दृष्ट  
 तधे उ विधानता ॥ इति प्रेनुविधिश्च द्ययं रोगहरणो द्रव्यम् ॥ इति प्रकारं तरेण नेत्ररोगहरम् ॥ अथ श्राव  
 द्यम् ॥ अथ त्वं नाम प्रतिक्रमदृष्टिर्ब्रह्मासृष्टितनेत्रत्वानकां भवेत्वा ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ पितृद्वयेतना  
 हीनो मातृसंध्रः प्रजायतोनस्कंते प्रकुर्वीत प्रायश्चित्तं यथा विधिः चेतना हीनो निश्चेष्टो निघृष्टिश्च अस्मा  
 पिवद्दमा ए प्रायश्चित्तमेव रोगनिश्चिदेतुः नरको ते अथः प्रजायत इत्यत्र्यः प्रायश्चित्तमात् ॥ याज्ञापय  
 निकुर्वीत त्रिंशच्छात्रविधानतः ॥ त्रातात्रेकारये स्नानं सुवर्षपलसंख्यया स्तोरौष्यमयं चैव तौषपात्रं च  
 प्रह्वैव प्रपलसंख्यापलेनेमर्थः ॥ स्तोत्रपलेनेव सर्ववदिति ॥ पलेश्च वृद्धिर्द्विस्यावातां षण्णत्रं वनेन वेति

नीलकण्ठः

॥ परितापार्थं प्रकरेणेत्यर्थः ॥ एतच्च पात्रं वक्ष्यमाणं वासुदेवमूर्तिस्थापनार्थं पलस्वरूपं परिमाणप्रकरणे निरूपि  
 तं शतधा च वक्ष्यमाणं निष्कस्वरूपमपि देमनिष्केण कर्त्तव्यं वा देवश्रीवत्सलां हनः ॥ पदकलेन संविष्टं अजयेन वि  
 धनतः नोर्द्धादि जायदातं व्यासर्षीपस्करं संयुताम् ॥ नोके सुपलज्ञां संतो विज्ञो प्रतिमा च हातव्यासो पस्करो  
 नोकादं उः सोपिसो वर्षणवा ॥ तं वासुदेवं विधानतः ॥ धृजये सुक्तां प्रजाविधानं तु परिनाषया प्रविधानं स्पु  
 रणस्य क्वविधमस्मात्सिद्धविति मां अत्रायं क्रमः ॥ तौषपात्रे वासुदेवमूर्तिं संस्थाप्य तस्याधरस्तात्रा वं संसं  
 चोपनिष्पवासुदेवं प्रब्रौक प्रकरणं समस्यर्त्तनोका विसदिता वासुदेवप्रतिमा ब्राह्मणाय दद्यादिति ॥ द्या  
 नमंत्रमात् ॥ यासुदेवं जगद्वाद्यं सर्वं ताशयस्त्रिताम्रा पापकर्मणि मंत्रं मोतारया श्रिततारका इत्युदी  
 ये प्रणम्याथ यत्रा लणं तं विसर्जयेत् ॥ सुदीर्यं मंत्रमुच्चारयेत् प्रतिमादिकं दद्यात् ॥ त्रणम्य विसर्जयेदित्यथा  
 अन्वेषोपियथाशक्तिं विधेस्योदक्षिणां दिशम् ॥ इत्यं धत्वहरं चेतना हीनं च हरम् ॥ अथ नीललोच  
 नं च हरम् ॥ अथ कपिलाक्षहरम् ॥ शातातपप्रोक्ते ॥ रीतिहकपिलाक्षस्याजपोष्यदिवस इत्यशरीरति



पलशतं दद्यादले कृत्य द्विजातयोः । रीतिर्मातां वप्रकृतिको धम उविशेषः पितृलिकामि सुच्यते । पलखरु  
 पं परिमाला प्रकरणे निरूपितम् ॥ इति कपिलाक्षत्रहरम् ॥ अथ मद्दृष्टिखरम् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ ॥  
 उच्छिष्टस्य आदित्यं पश्येयं स्मरन् वरेण मधुगतमथास्त्रं वक्ष्यात् ॥ उच्छिष्टेष्वसत्रानक्षत्राण्यथा वंदे स-  
 तवे मद्दृष्टि सुकृत् ॥ अत्र निरुक्तिः ॥ स्कंदपुराणे ॥ घृते न चरुणी मित्ररश्मिना च कुताशनैः कृज्या दयुतं सम्यग्नि  
 तिश्रास्त्रविनिश्रया । दद्यादन्नं च वैरकवासामिवाधिशान्तये । रोगाधिक्ये च रुष्टस्यो प्रत्येकमयुतं कृज्या च रोगा  
 न्यत्वे तद्दईकरुणा हृष्टे तेनेति मिलित्वा । युतसैव्या प्ररणीया होममंत्रस्तत्र ह्यग्निमद्दृष्टिः स्वः सच परिताषाभा  
 रोगघ्नति पादानविधौ प्रहृष्टिताः । अन्नदानं वा होष्यस्वशक्त्वा वा सासीति वदु वचना त्रिच्यो नन्दतानि ॥ इति मद्द  
 दृष्टि खरम् ॥ अथ त्रिमिरहरम् ॥ देवद्विजगृहीतार्थेषु षण्णस्थानेषु स्थिते प्रदीपं संजायिवा तु तिमिरव्याधिमावृत्तवे  
 वारूपप्रकाशने मंत्रैरनिमंश्च जलीततः । गात्राणि प्रोक्षयेत्स्मात्स्युकोत्सवति किञ्चिद्वा । स ह्येकलक्षणा नामीश्वर  
 स्याधिकारयेत् । देवद्विजगृहवृत्ति देवद्विजगृहेषु षण्णस्थानेषु राणाम्रघणादिस्थानेषु उपथा देवस्य प्रकार

या

२१७

३१ विदेवना

कैर्मंत्रैः शुणक्वनेन रूपार्थेनिरूपणवचनेन प्रकृष्टप्रकाशनादिव्योपलभ्यते । अतः सूर्ये प्रकाश  
 कैर्मंत्रैर्जलमनेमंत्रीगानिनेत्रध्यान्वाग्निनेत्रध्यान्वाग्निसुखाच्छित्तानियो ह्येया वरोमनिष्ठितः । एतद्  
 कंतवती । नौरमंत्रेष्वाप्रते मे नशालिनमद्योत्तरशताद्याष्टव्यात्रानिमंत्रिते ननेत्र प्रधानं सुखं प्रहालयो  
 दितीतत्रैको मंत्र उच्यते । मौरः परिनाषार्थो रोगघ्नति मादान विधौ प्रदर्शितः । अन्ये महासौरमंत्रो परि  
 ताषायामेव निरूपितं प्रातश्चानरश्मिश्च कुबदादिति कृष्णां उहो मे निदासं त्रयो दर्शितः । यो मे देहीति च  
 वयः सुवर्णोति च मंत्रो नयनशूलहरप्रदर्शितौ । एते च मंत्रविकल्पेन याद्याएकाकार्थोक्तविकल्पे शीतनि  
 न्यायात् ॥ इति त्रिमिरहरम् ॥ अथादिवेदनाहरगस्युगो । पश्युराणे ॥ परेषामक्षिरोध्वेन जायते ह  
 द्विदेना वक्ष्यामितत्प्रतिकारं ब्रह्मणसा प्रितं चरा । पलेन कारयेद्देवागरुडं क्लिषुवाहसम् । राजतौत्स्य  
 प्रापक्षैरन्नदो सुविशुतौ । कर्तव्यं साक्षिभुगलं । णिकार्या प्रकल्पितं । पादयोः चूर्णकटेरदास्यां पत्रिक  
 ल्यये शमौ किकं सुकी वैदूर्यं न्ययेः । वक्षेत्रीना विवैत्र्ये कर्मलं कृत्वा मुला कृतम् । स्यापयन्तुरतो विद्वेष्ये

त्वर्थपक्षिगाक्षियात्रवेदंवेदांगकुशलंवेदविद्याविशारदंगंधपुष्पाहृतैर्वैश्वर्णीतत्राहणोत्रमर्षप्रजये  
 तस्युचिर्वैश्वर्णीगंधपुष्पाहृतादिस्निग्धोमश्चत्रकतैद्योमंत्रैःसद्वाचकैःशुक्लैःयद्वणरुखायव्यासमिदंयति  
 लादिसिः।अथेप्रतिष्ठांक्रुयोत्रंअथद्योक्तविधानतः।विष्णुपुरुषश्रुतिविष्णुलयेविष्णोःप्ररतस्थापयि  
 वैतकर्मक्रुयोदित्यर्थः।अथवाशालयामधुप्रकृतःकार्यमंत्रैसाद्वाचकैर्गुरुप्रकाशकैःमंत्रैरितिउदवच  
 नंअथशारवागतमंत्रोपलक्षणाधीतत्रैकोमंत्रोमनोजवाप्रयमानइति।अथनमोभागवत्कण्डिमुपणीदि  
 वताअनुष्टुप्छंदःब्रह्मावागायत्रीछंदःगुरुदेवताविदितार्थेद्विनियोगः॥प्रतिराजायत्रयदेष्टव्यं  
 प्सायधीमहि।नत्रोगरुडश्चादयात्रसमदाख्यंतिनादिनिरिति।आदिदेनचलयवत्रीह्यागृधंते।दोम  
 संख्यात्रप्रतिद्वयंमष्टोत्रखातं।एवंसंप्रज्युदवाद्यादंडुयोदित्यत्राह।।पुण्याहवाचनंकरं।ब्राह्मणे  
 दपारगे।तस्मिंस्तवतेद्याहोरीधीत्यर्थमाहतं।सक्यसंप्रज्युद्विद्विद्वृत्तात्केप्रकादिसि।मंत्रेणानेन  
 विधिवप्राप्नुस्वाद्युदज्जुलोपतव्युण्याहवाचनंदानानंतरकार्यं।दानमंत्रमाह।देवदेवंश्रगान्नाथतन्ही

ms. 500471

ःसितेग ४८१५५५५ नं ५५५२ जे ५५५५५५५५

प्रियपरायणोवाहनस्यप्रदानेनहरकर्मविपाकजश्रुअक्षिरोगजगन्नाथनारायणजगन्मयः।पुण्यंवाप  
 टलंवापिकावरकमथापिवा।रक्तंवाप्यथरक्तारक्तंवाप्युदमथापिवा।ततोविष्णुज्यविष्टद्विष्टिष्टिष्टिष्टि  
 सिः।स्वात्राविद्यानृत्तोऽप्यिवाप्युवीतवतिमानवाः।दानानुत्तरैसाद्वाच्युण्याहवाचनंविधायज्यवेह्राणीकृवा  
 विप्रानृत्तोऽप्यिवाप्युवीतवतिमानवाः।दानानुत्तरैसाद्वाच्युण्याहवाचनंविधायज्यवेह्राणीकृवा  
 उषुगणेविहितमूत्राक्षिर्सेतवरोगानामार्ज्यकमलसंयुतमादद्वाहियायविधिवत्तदोगस्यमसुखयेति।आज्यवेद  
 णामंत्रसकटिष्ठूलदरेषदवितिः॥इत्युद्धिरोगहरगरुडदानमोअथनकांध्यायहरगोपालमूर्तिदानम्॥।।वा  
 ह्योनकांध्याज्येत्योगवानयनद्वये।करोतिष्ठूलप्रक्षेपेनस्यवह्नामिनिष्कृति।विष्णोऽर्णोपवेपथ्यस्यवह्नात्पा  
 सक्तिः।सुवर्णेनघनिकृतिवैपुवादननत्यरमावदीपीडकमीयुकांदिः।सुजासुवनोत्ररीमाकारविधासुताकारी  
 प्रदास्यसुचिवाणिगाम्वाणेवेष्यिवाचगंधमाल्येसमर्चयेत्।नैडलोपरिसंस्थाप्यदेवत्राक्तासुसारतः।आचर्य  
 सर्वशास्त्रोवेदवेदोगायत्राः।प्रजावपुलमीत्रेण।तुत्याद्वेवस्यतर्कितः।वाक्तासुसारतोर्गंधमाल्यैःसमर्चयेदित्य



वृक्षांश्च ज्ञानं च मंत्रं त्रेणेति। मूलमंत्रोद्धारश्चोक्तश्च मंत्रशास्त्रे। कृत्वा मध्यगताभ्यां गोप्याण्यल्लमध्यगाः। गोपी  
 जनवकरासुनीयश्चाहास्मरादिका। उद्धृतमंत्रं ॥ श्रीकृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्ललाय नमः ॥ अस्यान  
 रायणक्राष्टिः गायत्री त्रैलोक्योपीजनवल्ललादेवता। विदितार्थविनियोगमहोमं च तत्र कुर्वीत समिदाज्यतिलै  
 रापि। इदं विष्णुप्रतिद्विसुब्रिह्मोर्बुकमितिक्रमात् मंत्रोद्धारोक्तमार्गेण जामे संस्थायनंतवेत्तां कुरुयात् मूलम  
 त्रेण विधिसंपादितं च श्रीप्रणीतामोपयंतं कृत्वा देवंप्रपूजयेत्। देवस्य हृद्याने वेद्यं देविसर्वसंमतः। इदं  
 विष्वादेयो मंत्राः क्रमेण समिदादिहोमंत्रलावतीत्यर्थं। समिदोमानतरं ह्येकिसुलमंत्रेण विधिसंपादि  
 तं च यद्वा कप्रकारेण पक्वैरुद्धं वा। पश्चादाज्यादिहोमः कार्या। होमसंख्यापतिदृष्टमष्टोत्तरात् इदं विष्णु  
 रिह्यस्फोक्ता षड्दिनत्रयदयज्ञप्रकरणे दृष्टं च मा इदं विष्णुप्रतिद्विसुब्रिह्मोर्बुकमित्येतयोस्तदीर्घनामत्र  
 षिः षड्भिर्देवता त्रिसुब्रह्मं दं। क्रमेण ज्यतिलहोमयो द्विनियोगः ॥ धृतिद्विसुब्रह्मवते वीर्येण मृगो नलीम  
 कुवरो गरिष्ठोपस्योरुषत्रिभु विक्रमेष्टाधिद्विपति। उवनादि विष्वा विभोर्बुकवीर्यो गिषवो चंय पाथिवादि

विममरेजांसियां अक्षत्ताय डुतरं सधस्थदविवक्रमाण अधोरुगायः। एवं होमं विधाय सुगृह्योक्तमार्गेण प्रणीत

विममरेजांसियां अक्षत्ताय डुतरं सधस्थदविवक्रमाण अधोरुगायः। एवं होमं विधाय सुगृह्योक्तमार्गेण प्रणीत  
 मोक्षपर्यंतं कर्म कृत्वा पुनरपि देवं गोपीजनवल्लनं मूर्तिप्रपूजयेत्। अष्टांशुजायां होमार्थं संपादितं हविर्ब्र  
 वेद्यं अन्यत्र संपादितं सर्वमपि मन्नादिहविर्ब्रवेद्यं अन्यत्र संपादितं सर्वमपि मन्नादिहविर्ब्रवेद्यं अन्यत्र संपादितं  
 मंतो तो देवमनितपरितो दद्यात्। अणुसुवलिहरे देवार्थः। प्रथेकिकम्मानत्ररं कर्त्तव्यमाह ॥ ततः शुक्लावरधरः शु  
 क्तमाह्यानुलेपनी। आवडो गीसर्वमुखप्रतिमो तो दसदक्षिणामुसं त्रेणानेन विधिवन्नमस्कृत्याः श्रमकितः। दान  
 मंत्रमाहा ॥ गोविंदगोपीजनवल्लसेवाकंसासुरघ्रात्रिदशोद्धं वंशः। गोवर्दनादिप्रवरैकहस्तसंरक्षिताः शेष  
 गवासुनीकाः। गोचक्षुष्यानिनिरोधनेन जातिहोमार्थं ममनाश्यासु। वदीयदानं हि सुदृढमूर्धनं क्राधमेतद्  
 मपाकरोत्। एवं कृत्वा प्रतीकारं गोपतेषु सदा नतः। अविरो देवहि सुखी जायते नाश्रयं शयः ॥ इति नक्षत्रध  
 हरगोपालदानम् ॥ अथ कामलहरगसुदयानम् ॥ इदं वैद्ययनः। कामली चक्रचोरस्याः स्यावहामिनिः कृतिः। इ  
 यद्विपदिराजानं विलोषदिनमुत्तम। सुवर्णेन गृह्यारत्नपापहृत्तयो भौतिकदृश्यं। नाशिकायां तथा वदसुतर।

संवराजतम। एवं कृत्वा गरुतं तं घृतं द्रोणोपरि न्यसेत्। द्रोणलक्षणं परिमाणप्रकरणे दृश्यम्। अत्रैतद्वेषे संवेष्टस्ये  
 तमाल्यौ समर्चयेत्। सर्वशास्त्रार्थतत्रज्ञो वैश्वदेवधर्मपाठकः। ब्राह्मणस्वर्जितो लक्ष्याय जमाणेन शक्तिः। उपवा  
 रोषोऽशक्तिः द्विजमत्स्यश्चैत्रया। द्विजं पद्भिर्गुरुकर्ममिति यावत्। ततो ब्राह्मणश्चैतद्वखादिति द्विजमत्स्यश्चै  
 दित्यन्वयः। त्रयिण्यां दिशि होमश्च कर्तव्यं स्थं दिशेभ्युत्ते। समिदाज्यातिलैश्च त्रपालाशासमिधं स्मृतं। मंत्रो गरुड्याय त्री  
 समिदाज्यातिलैश्च त्रपालाशासमिधं स्मृतं। मंत्रो गरुड्याय त्रीसमिदाज्यातिलैश्च त्रपालाशासमिधं स्मृतं। स  
 खिष्टकृतं च यत्र। त्रयिण्यां दिशां व्यादि। गरुडपूजास्थानादाग्नेयां दिशि होमं तिलैश्च त्रपालाशासमिधं स्मृतं। स  
 वृषतिदृश्यमष्टोत्तरशतं। गरुड्याय त्रीशिशिरो गवेदनाहरा गरुड्यानेदं विता। सिष्टकृतं जपत्रिंशत्कृद्दोमः क  
 र्तव्यः। मंत्रः छट्छोक्तप्रकारेण तत्र कश्चन खिष्टकृद्दोमप्रकारेण दर्शितः। कथ्यापयेदवणं कुंलं सितवस्त्रेण वेष्ट  
 येत्। निक्षिपेत् च रत्नानि सुत्रिकाश्चापि रोचनी। अथ स्थानाद्दक्षीकात्संगमाद्दक्षमं पंचवक्त्रपत्तवानिः  
 स्रुत्सुर्ये त्रीर्थावर्णिना। स्थापयेदवणं कुंलमिति। त्रयपात्रक्रमेण विविक्षितः। अतो होमाद्यर्चं गरुडपूजास्य

इशान्यां दिक्किलवांस्थापयेत्। रोचनागोरोचनापंचवयः। आभ्राश्च अथ वटमहोदुं च राणां पत्न्याश्च पितृप्रासेवा  
 अस्मिन्कलरोचनदयदयत्रयप्रकरणे कैवरीरौमंत्रैः वरुणाय नमस्तिना। मंत्रं त्रेण वा वरुणामवाह्यसद्व्रजे त्री  
 वं गरुडपूजाकलशस्थापनहोमानत्रकर्तव्यमाह। तेना। अतिषेकं कुर्वीत। आपो हि दद्यादिति क्रमाद्दक्षिणपवा  
 णं त्रिनिचपवमानेन वैवर्हि। आपो हि दद्यामयमुवश्च त्रिवहिरण्यवर्णं त्रिपादयश्च मंत्रापरिज्ञायाय रोगप्रतिमादा  
 नविधौ निरूपिता। पवमानेन च्छादियेति सुक्तेनापवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाकेन वा तत्र च्छादियेत्येतत्सू  
 क्तं पंचुरोगहरदृष्टीदानेदं विता। पवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाकेन वा तत्र च्छादियेत्येतत्सूक्तं पांचुरोगहरदृष्टी  
 दानेदं विता। पवमानः सुवर्जनः इत्यनुवाकेन वा तत्र च्छादियेत्येतत्सूक्तं पांचुरोगहरदृष्टी  
 त्वत्तत्राहं ततः सावाशुचीरोगी विस्त्रोवादिनमुत्तमम्। सदक्षिणां मुखव्युक्तं वा सुखाय निवेदयेत्। मंत्रेणानेन  
 विधिं वृद्धाहाणाय सुदं सुखाश्रीरुम्परमानंदजगतः परिपालकाश्चर्वजन्मानियत्यापंतकचौर्यमया कृतम्।  
 अतथात्तत्र वैरूपं जन्मानं तं उस्सर्वाकामलोकिमिदं देवतयवाहनदानतः। विनाशाय सुवेरुसजगतोपा





णनिदधामि उदायमादित्यो विश्वेन सहसासदा द्विषन्मघर्षधयन्मोअदंक्षितेर्धं। अंशूर्यतर्प्यामिागर्वं  
 चेतुनरपिद्धि। अस्पसकलस्यापिप्रयोगतर्पणप्रयोगस्यव्याधाः सुसारेण। अष्टाविंशतिरष्टोत्तरशतमित्याद्या  
 वृत्तिः कल्पनीयाः। अतर्पणैरुक्ततारकयुष्माण्ड्याद्याणि। अर्च्यतर्पणप्रकारेणकेवलंनेत्ररोगहरणं। अथ  
 उद्धारदिहरोपि। ॥ इतिनेत्रादिरोगहरतर्पणं ॥ अथकामलरोगहरप्रतिमादानम् ॥ तिलकर्मवि  
 पाकसारे। पीतांगः कामलरोगः कपालशुशलाद्वितः। अजाद्विधानं वातंकोदेवतातत्रेत्यादिनापरिताषायं  
 रोगप्रतिमादानविधाधार्यातं ॥ इतिकामलरोगप्रतिमादानं। अथसाधारण्येननेत्ररोगप्रतिमादानम् ॥  
 तद्वन्नणं कर्मविपाकसारे। ॥ अक्षोक्षरोगसूत्रं। अथासुहृदास्तम्। अजादीनिकर्तव्यताकलापकपरिताषायं  
 गप्रतिमादानविधावातंकोदेवतातत्रेत्यादिनादक्षितः ॥ इतिसाधारण्येननेत्ररोगप्रतिमादानम् ॥ इति  
 श्रीवेदिनद्यात्मजसदृशीविश्वेश्वरविरचितमद्यार्णवानिधानेभिवंधेकर्मविपाकपरिच्छेदांनेत्ररोगहरणं।  
 अथकर्णरोगहरणं ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ मातृपितृयुग्मां चदेवब्राह्मणयोस्तथाशृणोतिनिर्दायुधायः २२३

र

कर्णान्यांतस्यशोणितप्रशयंप्रवसचेतस्यशांतिकुञ्जवृक्षयशोहिरण्यरक्तवस्त्राणांदानं ब्राह्मणोऽनुनशंजपाद्धे  
 अतयति सौरमंत्रेणशक्तिः। शक्तिरिति सत्रं संवध्यते। अतः कृच्छ्रेषुपिशकासुसारेणप्राजापत्यं परापरार्थे  
 चांद्रायणादीनिग्राह्याणि। एतन्नक्षत्राणानि वक्रवृत्तकरणेदक्षिणादिहिरण्यदिनादानाद्यपि कृच्छ्रासुसारेण  
 व्रीताजपदोमासुसौरमंत्रेण। अत्ररशतादिकाकार्ये। सौरमंत्राश्च। अत्रोक्तयज्ञतृचः। अष्टाचार्यो दिवातरो  
 हरतर्पणं ॥ इतिकर्णप्रयशोणितहरणम् ॥ अथकर्णमिरोगहरणम्। अथकर्णमिरोगहरणम्। कर्मविपाक  
 ससुत्रके ॥ सत्राचार्येदीनश्रयेतत्राहसनादनोः सारवेकमिकर्णकृत्यापस्यापनुच्छेदोदद्यान्नीलवृषां नील  
 यथोक्तविधिनाततः। नीलवृषलक्षणं गंदरहरोरिदितं विधानतः। वृषदानेननेत्ररोगहरणं। अथसाधारण्येननेत्र  
 रोगप्रतिमादानविधावातंकोदेवतातत्रेत्यादिनादक्षितः ॥ इतिकर्णमिरोगहरणम्। अथवाक्षिर्हरणम्।  
 तातपत्रोक्तं। अथघासीवचविरचनरकांते अजायते। तिनकार्यविशुद्धार्थं यतिचोद्रायणप्रयत्नाप्रतातेषु  
 कंदद्यासुवर्णपलसंयुतप्रजासणायवउर्ध्वदिविदेवधेणसंयुतप्रशमं त्रससत्रार्थब्राह्मणोतेविसज्ञेयैवा

क

मंत्रसमुच्चयब्राह्मणं तं विसर्जयेत् ॥ इमं मंत्रसमुच्चयं सुकंदद्यादित्युच्यते ॥ तमेवदानमंत्रमाह ॥ सरस्वती  
 जगन्मातः शतृब्रह्माधिदेवते दुःकर्मकारिणं पापं रत्नमायुरमेधुरी ॥ यतिवांश्रायणलक्षणं कृच्छ्रप्रकरणे च  
 ल्यध्यायि ॥ ॥ इति वाधिर्यहरम् ॥ अथ कर्णविज्ञाहरणमाकर्णहिनं त्रियेषु सांख्यिकर्णप्रजायते ॥ इत्याद्यात्सवि  
 त्वायसो यधानं मंत्रलिकां शय्यादानमंत्रकनवयह्यज्ञप्रकरणे दर्शितः ॥ ॥ इतिकर्णकुडुबहरम् ॥ अथ कर्ण  
 रोगप्रतिमादानम् ॥ ॥ तत्त्वज्ञानचकर्मविपाकसारो ॥ ॥ कर्णरोगाकाणाद्यंतःसकपालीजुयस्थितः प्रजाविधि  
 र्कपरिज्ञाष्यायं रोगप्रतिमादानविधायांतको देवता तत्रेत्यादिना स्थाताः ॥ ॥ इतिकर्णरोगप्रतिमादानम् ॥  
 ॥ ॥ इति श्रीनेदिनदाम्भजसदृशी विश्वेश्वरविरचिते महाणवविश्रानिनिबंधकर्मविपाकपरिच्छेदकेर्णरो  
 गहराणि ॥ ॥ अथ कंठरोगहराणि ॥ शानातपप्रको ॥ अथे विनिदते चैव ज्ञायते ॥ प्रजापत्यानि च वा  
 सिमन्धान्यानि चोत्सजेत् ॥ वातपलानि दद्याच्च चंदनं सद्दिजायते ॥ प्राजापत्यस्वरूपं कृच्छ्रप्रकरणे निरूपितम् ॥  
 समधान्यानि श्रीहितलयवगोध्मादीनियथावितवदद्यात् ॥ पललक्षणं परिमाणं प्रकरणे बोधयम् ॥ इति

२२४

कंठवदरम् ॥ अथ दीर्घगलवदरम् ॥ अथ कंठरोगहरम् ॥ त्रसां डडुराणो ॥ अत रुनक्ष दोषा तु कंठरोगः प्रजा  
 यते ॥ कृच्छ्रत्रयप्रद्वीतदद्याद्वैभुसदृक्षिणा ॥ दद्याद्वैकंठरोगाणां केवलं कमलोद्भवो कृच्छ्रलक्षणं कृच्छ्रप्रकरणे  
 वदर्शितं ॥ विषुदानमंत्रकनवयह्यज्ञप्रकरणे निहितः ॥ कंठलदानमंत्रम् ॥ ॥ कर्णोच्चादनलोकानां शीत  
 वाततया पहयुः सवर्द्धुः खहरंयस्मादत्सं ॥ तिष्ठं यच्छमे ॥ इतिकंठरोगहरम् ॥ अथ विकृतघ्नरहरम् ॥ प्राता  
 तप्योको ॥ उये विनिदते चैव ज्ञायते ॥ विकृतघ्नं वातप्यापविशुद्धार्थं कृच्छ्रमेकं चरन्नरः ॥ कर्पूरस्य पलंदद्या  
 द्वारदद्याणि शक्तिः ॥ कर्पूरस्य पलंदद्या द्वारदद्याणि शक्तिः ॥ कृच्छ्रपलयोः स्वरूपं परिज्ञाष्यां कृच्छ्रप्रकर  
 णे निहितम् ॥ कर्पूरदानमंत्रम् ॥ कर्पूरस्य महं विप्रश्याणो मं सुप्रजितं ॥ सुप्रगंधस्थिता सामकमलाप्र  
 यतामिति ॥ इति विकृतघ्नरहरम् ॥ अथ कंठरोगप्रतिमादानम् ॥ तत्त्वज्ञानचकर्मविपाकसारो ॥ ॥ कंठरोग  
 करालाद्योदिमुजः पाशकं नष्टकं कपालमालादुर्दृशसिमीषोहारस्वरुषणः ॥ प्रजादीनिकर्तव्यताकलापस्य  
 रिज्ञाष्यामांतको देयता तत्रेत्यादिना रोगप्रतिमादानविधौ निरूपितम् ॥ इतिकंठरोगप्रतिमादानम् ॥ इ

तिश्रीवेदित्वात्मजलदृष्टीविश्वेश्वरविरचितेमहार्णवाविधानेनिबंधेकर्मविपाकपरिच्छेदेकंठरोगहराणि  
 ॥ अथपाणि रोगहराणि ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ परावतेचनिहतेपीतपाणिप्रजा  
 यतोपारावतस्यैवगंधदद्यात्तन्मामात्रकी ॥ निष्कयंतात्परिमाणप्रकरणेसमुपवर्णिता ॥ इतिपीतपाणित्रह  
 रम् ॥ अथदृष्टपाणित्रहरम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ कंदमूलसुहृण्यकृष्णपाणिप्रजायतेदिवनायतनो कुर्याद  
 द्या नं तद्यथा तयो वांदायणं च कुर्वीत यत्सकृच्च विधानतः वांदायणं ब्रह्मकृच्चैर्लक्षणं कृष्णप्रकरणस्य  
 ध्यायि ॥ इति कृष्णपाणित्रहरम् ॥ अथस्त्रिपाणित्रशमनम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ शारहारी वयुरुषस्त्रिपाणि  
 प्रजायतेमदाघात्रैवविधायकाष्मीरंजपलत्रयम् ॥ काष्मीरं कुंकुमकेसरः ॥ तद्येनमंत्रस्त्विकृतघ्नसुख  
 हरोक्तः कर्पूरदानपत्वात्तत्रकर्पूरं रुचिरमित्यत्ररुचिकोष्मीरं रुचिरमित्यहः कार्येपलसुखं परिमाणप्र  
 करणेनिरूपितम् ॥ इतिस्त्रिपाणित्रहरम् ॥ अथपुत्रसंनशमनम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ अयोनी वैवर्गमना  
 कुजघ्नं न प्रजायते ॥ सहस्रकलशस्नानं वांतोः प्रजायथा विधिः ॥ वांदायणं चरणौ तत्र कृद्वात्र निरुति ॥

हा  
२२५

६९ प्रदेन

श्वरः सहस्रकलशस्नानप्रकारसृजाप्रकारश्चरुद्विधानेअतिषेकप्रकरणेनिरूपितः तत्रमानेचरुद्र  
 सुवाकमंत्राः ॥ वांदायणं तत्र कृद्वात्रैर्लक्षणं कृष्णप्रकरणेप्रदर्शितम् ॥ इतिपुत्रसंनशमनम् ॥ अथकुन  
 खिचहरम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ कुनखीनरकस्यांतेजायतेविप्रहेमहृवसमुपवर्णिलं दद्यात्तवा वांदायणत्र  
 यम् ॥ कुनखीजायतेश्च्यत्रयः ॥ इति वांदायणोपलवांदायणोर्लक्ष्योत्तत्रयकरणे सिद्धितम् ॥ इति कु  
 नखिचहरम् ॥ अथपाणिरोगप्रतिमादानम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ तत्र द्वाणं वां सुकेसुपुरेगोश्रित्यादिनाशूल  
 रोगप्रकरणेकमेवाऽत्राप्यनुसंधयेत्तद्विधानं उपरिनाश्रयामातंकोदेवतातत्रेत्यादिना रोगप्रति  
 मादानविधौनिरूपितम् ॥ इतिपाणिरोगप्रतिमादानम् ॥ इतिश्रीवेदित्वात्मजलदृष्टीविश्वेश्वरविरचि  
 तेमहार्णवाविधानेनिबंधेकर्मविपाकपरिच्छेदेपाणिरोगहराणि ॥ अथहृदयरोगहराणि ॥ शान्तातपप्रो  
 क्तो ॥ उदक्पावो हितं सुक्वाजायते किमिलोदरम् ॥ गोमूत्रयावकाहारः सहरात्रेण सुद्धात्रिगेमूत्रयावकृत  
 द्वाणं कृष्णप्रकरणे सिद्धितम् ॥ इति किमिलोदरहरम् ॥ अथहृदमिदरम् ॥ शान्तातपप्रोक्तो ॥ अतस्तन त्रणे च



वजायंते क्रिमयो हृदि यद्यताव द्विसुद्वयं सुपोष्यं लीषपंचकशा यथा वरा वृतांगं नूत ब्रह्मचर्यं दक्षिणादा  
नादिषु एषु कृमि तथैका क्विके मुक्ते कादद्या दीनिवालीषपंचकसि युच्यते ॥ इति हृदि मिह रसा अथ  
कृमिहरम् ॥ अथ क्रिमिकृद्दि बहरशा कर्म विपाकसु च्ये ॥ गजे विनिहते वाञ्छि क्रिमिकृद्दि प्रजायतो न  
था ॥ मृते तत्रै रियानारी नीलवस्त्रं ध्यायेत् ॥ सा मृतान रकं यतिकृमिकृद्दि स्रतः परशं नरकोप नो गानत्र  
रं मातुषारी रमा सा होत्यर्थः ॥ नीलवृषला लक्षणं तग प्रणहरो तिहितं मृषतदानं मंत्रकनक्यद्वयं  
प्रकरणे तिहितः चंद्रायस्वरूपं उरुद्रप्रकरणे सुधयि जप्रधं क्रिमिकृद्दि हरवे न वैद्यशास्त्रोक्तं ॥ इति क  
मिकृद्दि वहरम् ॥ अथ कृशोदर वहरम् ॥ शानात प्रोक्तो ॥ कुकावास्थ्य संसृष्ट्य जायते उरुशोदरम् ॥ वा ना  
त प्रोक्तो ॥ पुन्नावास्थ्य संसृष्ट्य जायते उरुशोदरम् ॥ त्रिरात्रं वैभवं कुर्यात्वा तका द्वैत्य सुच्यते ॥ वैभवं विस्म  
दोशनिक क्रियमा षं प्रतसु पवासात्मकं कुर्यादित्यर्थः ॥ इति कृशोदर वहरम् ॥ अथोदरगुल्म वहरम् ॥ शान  
त प्रोक्तो ॥ इहोर्विकार हारी स्थान वेदुदरगुल्मवात्र ॥ यु उधेनुः प्रदा तवातेन त होषशांतयो गुदधेनु विप्रिस्क

दय रोग प्रकरणे काश्चित् ॥ इत्युदरगुल्म वहरम् ॥ अथ वातगुल्म वहरम् ॥ कर्म विपाक संयदे ॥ एषुः प्रत्ययिते धी  
तो गुल्मवात्र जायते नरः ॥ गुल्मवात्र वातगुल्मवा निवर्धः ॥ स्राजरे तत्रिद्वयं मासमेकं पयोत्रतसं मुंचामि वेति  
सकस्य प्रतंचरुसर्पिषा ॥ जड्या दयुतं सस्य वा तत्रा वा उ लेषजम् ॥ एतन्मूक्तं जपे दद्यादन्नदानं च शक्ति  
पयो प्रतघ्नरूपं कृद्दि प्रकरणे स्मृ पवर्णितम् ॥ मुंचामि वेति दशार्द्धं प्रजापत्यो यदमनाशने ॥ ऋषिः पद्मद्वीदि  
वतघ्नप्रहं दः ॥ अस्यां तु पुष्टो मधि नियोगः ॥ ॥ मुंचामि द्वाह विषा जीवना क्ये मजा तय ह्मा दुतरायस  
ज्ञया दिर्यग्राहयदिवी तदे नंतद्या इंद्रा प्रसु मुक्ते मे नं ॥ रयदिह्नु नायुर्यदिवा परे ते यदिमृत्यो रंति कं नीत  
यवातमादरा मिनिर्कृते रुस्था दस्मा क्रय मे नं शतशो रदायः ॥ २ स ह्मा द्ने ए श तसा रदे न संता सुषा हा  
अषमे नं वा तं यथे मं शर दो नयं नीद्रो विस्त्रस्य डरि तस्य पारम् ॥ शशं ती जी वशर दो वर्द्धमानः वा तं हो मं ता रुशत  
मुपशं ता रुशत मिंद्रा प्री सा वि ता र हस्यः वा ता युषा हा विषे मं पु नर्द्ध ॥ ५ ॥ आ हा कषं द्वा वि दं द्वा पु न रा गा पु न र्वा  
सर्वा गस हं ते च लु स र्ज मा युश्च ते विदम् ॥ ५ मुंचामि वे ति मूक्तं च स्मर्षिषे नि चराणा अयु तं स र्पिषा ना यु तं वा



तत्रावाउनेषजंमितिहचसुक्तश्वातायनउयत्राभिःवायुर्द्वतागायत्रीहंदःजयेविनियोगः। जयसंख्य  
 चायुतमेवात्रावाउनेषजे। शंनुमयोलुदोहदेषणआश्रुभिताशिवउतवातपितानसिततत्रानिव्रतस  
 स्वांसनोडीवातरेश्वरिश्चदोवातदेहयदेहसुतस्यनिधिर्दंतः। ततोनाप्रेदिजीवसे॥३॥ ॥वातआवातद्वितिस  
 क्रय॥ वाहनिवातयुल्यदरम्॥ ॥त्रहाउराणे॥ ॥युल्मीद्यादंयजागमः॥ ॥अश्रुंतिप्रकारमाहात्रोधायनः॥  
 सौवर्णराजतंतंमंकारयेवांचनंपिवा। प्रह्लाकंमूलकाष्टिनविश्वेशंशक्तिनोनरः। सुश्रंरंकल्पयेद्देमसोवर्ण  
 लोचनद्वयम्। सुश्रंरंकल्पयेद्देमसित्यादिराजतप्रतिमांमृदुष्टयम्। अश्रुंचकल्पयेत्तस्ययथादिहोविनि  
 म्बितिः। यथानसुवर्णो। दिनादेवोगणेशोनिर्मितः। सैनैवाशुमपिकल्पयेदित्यर्थे। नागयज्ञोपवीतनकल्प  
 येत्तस्ययुल्यवाचा। चंदनायुरुवखाद्यैप्रजितंतेविनायकींसाहिरण्यद्रासणायश्चक्राप्रजितायचक्रत  
 होमायशः। नायमर्चशास्त्रार्थवेदिने। मंत्रेणानेनविधिवदक्षिणासिमुखानिवादेहा। दिनशेखः। विनायक  
 वक्ष्यमाणैर्मंत्रैःपूजयित्वातेरेवहोममयाजिनाश्रेतरवातादिसहजांतंवाध्युसारेणविधुश्याततसंवि

13-अश्रुंतिप्रकारमाहात्रोधायनः

नायकंशक्तांनुसारेणसहिरण्यद्रासणायश्चक्रादित्यर्थे॥ ॥दानमंत्रमाहा॥ विनायकगणाध्यक्ष  
 सच्चैदेवनमस्कृतमंपावर्त्तती नंदनममयुल्यमाश्रुभिताशयः। कृतेनानेनदानेननीरोगो। जयतेनरः। किना  
 यकपूजायां होममंत्राः। तत्रगायत्रीविनायकप्रकाशकौमंत्रो नवयहशोतो निरूपिताः। तथा अन्येपि विनाय  
 कप्रकाशकाः। अश्रुंतिप्रकारमाहात्रोधायनः॥ इति युल्यदरविनायकदानम्॥ ॥अथश्रीहजलीदरदानमाह  
 तपयोक्तो गार्तपातनयारोगायकृत्लीहजलोदरमातेषाप्रशमनार्थायवायश्चित्तमिदंस्मृतमाकृतेषुदद्या  
 द्विवायुजलधेनुविधानतः। सुवर्णरौप्यताम्राणंपलत्रयसमवित्ताशं। प्रायश्चित्तमिदंस्मृतमिति॥ इदं कर्म  
 विपाकेसामान्यप्राप्तमिदं। विक्रमित्यर्थः। एतच्चमिदं। विक्रमंशशी। निशतकृद्दृश्यनेनपरिच्छायादीदशि  
 तयप्रायश्चित्तोपक्रमकारंरूपपरिच्छायायामेवजले धेनुविधानंतुप्रद्वयसंगेहरेहृतधेनुविधानप्रसंगे  
 नदशिनं। पलत्रयसमवित्तामिति सुवर्णस्यपलंरजतस्यत्रैकंतथातांम्रस्थापीतिपलत्रयंतेनयुक्तंपलत्रय  
 तेनयुक्तंपललक्षणपरिमाणप्रकरणोदृष्टयम्॥ ॥इति युल्यदरविनायकदानम्॥ ॥अथश्रीहोदरहरम्॥

कर्मविपाकसंग्रहे ॥ चतुर्थाध्यायकोयस्ककन्याहृष्यांतव्यराः। नीहवांसनवेद्विजपेव्रीमृक्तमंत्र हीअ  
 युतत्रसंयंस्वार्कंहीहोदरविमुक्तये। प्रत्यचंचजयेहीमश्रुणासर्पिष्यापृथक्काश्रीमृक्तस्थाभीदिनासि  
 काप्रणहरेस्वधाशि। होमस्तवाधिरात्वाद्यनुसारोपु। युतत्रयमर्हदशस्रोवातवति ॥ इतिनीहोदर  
 हरस ॥ अथोदरव्याधिरस ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ योवहोविस्फुरदाणांतेदुश्चमसावतः। सातवे  
 उदरव्याधियुक्तोतवतिमानवमनुयाइच्छु। तिरुद्धंचरुदायणमथापरमू। सहस्रकलशस्नानंमीश्वर  
 श्रुक्कारे। जयेदयुतसंख्याकमुद्यच्छुचंतथा। अतोपिपरतःमृक्ताद्यनेनचरुणापृथक्। अथोद  
 रसहस्रं। हिज्जुयाच्चतःपरममधुनाज्येदसंयुक्तं। हिरण्यशक्ति। हिरण्यं। प्राजापत्यरुद्धादिनदाणा  
 निकृष्टप्रकरणेदृष्टद्यानि। सदस्रकलशस्नानंशतरुद्रेण। अथवाषोडशविधानोक्तसाधसर्वरोग  
 हरेस्वधाशि। मधुनाज्येदसंयुक्तं। हिरण्यमिति। त्रीण्यपिपृथक्पृथक्दद्यात्। अथा। हिरण्यं। प्रधानं। मधु  
 सर्पिषीत्रंगं। यदापृथक्पृथदीयंतेतदा। दानमंत्राअपिपृथगेवातदाज्यदानमंत्रो। हिरण्यदानमंत्र

अपिपृथगेवातदाज्यदानमंत्रो। हिरण्यदानमंत्रयोत्रार्यमध्वाज्यायेतं। हिरण्यत्स्यमहंसंप्रददेथायश्चि  
 त्तोपक्रमपद्दतौदरिति। मधुदानमंत्रस्ककफश्चासहरे। यदातुहिरण्यधाम्येनमधुसर्पिषीदियुततदा  
 केवलं। हिरण्यत्स्यमहंसंप्रददेतिप्रयोगःकार्य ॥ इत्युदरव्याधिरस ॥ अथजलोदरहरस ॥ कर्मविपा  
 कसंग्रहे ॥ राजावातत्रियुक्तोतनियुक्तोधर्मनिश्चये। पुरोदितः। प्राड्विपाकसंविधादाः। न्यथा। उरैत्रज  
 लोदरस्कप्राप्तोतितश्चवहामिनिःकृतिम् ॥ पयसा। प्रत्येतेनासत्तयंत्रतमुतमया। सहस्रकलशस्ना  
 नंमहादेवस्यचैवहि। तोजयेत्तुशतं। त्रिषामुच्यते। किंविधाततः। पयोप्रतलदाणं। रुद्धप्रकरणेदृष्टद्यम् ॥  
 सहस्रकलशानंशतरुद्रेण। अथवाषोडशविधाने। विधिश्चरुद्विधाने। प्रददति ॥ इतिजलोदरहरस  
 अथजलोदरहरमकरदानम् ॥ तत्रनिदानंप्रथुराणो। व्रतउदरव्याधियुक्तकलेवदुर्ध्वगानागमे। उदर  
 व्याधियुक्तोदरव्याधिरित्यर्थः ॥ अत्रनिष्कृतिमाहवैधायनम् ॥ कुर्यात्तुमकरसम्यक्करजातंतां। यमेवजाप  
 लत्रयेणहात्यां। वापहैकेनशुलाकृति। पुच्छिरत्रानिदेया। निकटिरूपेणकारयेत्। त्रिचरणमयेकायेजिह्व

रिवाप्रकल्पयेत्पादयोश्चिपेवत्रघृतपात्रेऽथारद्वये। यदातांशेणनिर्मितोमकरःसूदाऽयंविशेषः। क  
 टिल्लिपाकारयेदितिचिष्टापत्तयोऽसमानातीतिःपित्तलिकाख्यापादयोःप्रहिपेदितिअतिमपादद्वय  
 यत्रतीघृतपात्रद्वयंवाह्येदित्यर्थः। कल्पवस्त्रेणसंवेष्ट्यद्वयंरुचिर्चितम्। तांशेऽनुज्ञनपात्रे तंस्था  
 पयेन्मकरं सुसमाब्राह्मणं वृत्तसंपन्नं वृत्तमन्तानुपीवस्त्रैः कटककेचुरैः पूजयेत्सुलीयकैः। होमो वर  
 णदैवत्यैः मंत्रैः कायेयथाविधिः। वरुणदेवत्ये रितिवक्त्रं वनं प्रशाखीकवरुणमंत्रप्राप्त्यर्थम् ॥ तत्र वरु  
 णप्रकाशकामंत्राश्चायामिष्यादयो मंत्रानवयद्यज्ञप्रकरणे अष्टलोकाऽवाहृतप्रसूविविकल्पतः कल  
 वाऽवाहनप्रसूविकतथादर्शितः होमसंख्याऽश्रेत्रं रचा तोद्वयमाज्यं होमश्च वरुणपूजांश्च विधाय  
 यथोक्तविधिनाऽग्निप्रतिष्ठाप्यकार्यैः तत्राहुतं दृश्यतेत्याद ॥ ततस्तौदरिको विप्रो मकरं तं निवेद्ये  
 वा विप्राय दद्यादित्यर्थः ॥ दानं मंत्रमाहाऽशतिजलो दूरदूरमकरदानं त्रिष्यं लम्प्रतिमादानम् ॥ त  
 क्लृप्तं कर्म विपाकसा रे ॥ अन्तःकुचितस्त्रांगोदंधारी सयंकरः। दधाना किं किनीमालो वक्त्रेशो द्विने

२२९

पनः पूजादीनिकर्तव्यतावपरिशाखायां रोगप्रतिमादानविश्रवातंको देवता तत्रेत्यादिना निरूपिता  
 इति युग्मप्रतिमादानम् ॥ अथ यकृत्सी ह्यप्रतिमादानम् ॥ तं नक्षत्राणामपिकर्म विपाकसा रेः प्रीहाय कहु  
 दुरुजौ वरदाऽनवधारिणो कर्वागैः पाशकृष्णौ खड्गं डसयं करौ ॥ सुदयुः कृत्तदजो रोगः अत्र शिषणो  
 सुर्निगाद्यत्यायुः स्यादसा पूजा विधानं परिसाऽयं रोगप्रतिमादानमविधावातंको देवता तत्रे त्यादिना प्र  
 पंचितं ॥ इति यकृत्सी ह्यप्रतिमादानम् ॥ मंदोदर प्रतिमादानं ॥ तल्लक्षणमपिकर्म विपाकसा रे ॥ म  
 दोदरामयः स्थूलः क्रूरो महिषपृष्णः। कुरः मधुरः कांतिस्तथापीतां वरा वृत्तः पूजादीनिकर्तव्यता कला  
 पकपरिशाखायां रोगप्रतिमादानविधिवतंको देवता तत्रेत्यादिनोपवर्णितः ॥ इति मंदोदर प्रतिमादानम् ॥  
 ॥ इति त्रिपिष्टिसद्यत्तजवदश्रीविश्वेश्वरविरचिते मन्त्रार्वा विधाने निर्वंशकर्म विपाकपरिष्ठेदेहदंडु  
 दरोगहराणि ॥ अथ मंदाग्निहरम् ॥ आशाता तपत्रोक्ते ॥ मंदोदराग्निर्वतिमातिद्व्येन वैयजेत् सा त्रिद्वे  
 तिसुदन्नदशत्यपि पाठः प्राजापत्यत्रयं क्वा लो जयेत्स तं तं द्विज्ञानवैयजेदिति नित्यने मित्रिकामि सायां

तर्होमवैश्वदेवधायश्चिनहोमादीनिअनापदिद्योनकुयात्रदिवाधर्मप्राजापत्यलक्षणंरुद्रप्रकरणेव्यधायि  
 शनिमंदाग्निहरम् ॥ अथप्रकारं तरेणमंदाग्निहरम् ॥ वृद्धपरशरः ॥ गोर्मासखाटकोमंदाग्निहरम् ॥ अग्निर्वेत्तरः  
 प्राजापत्यं चरेरुद्रप्रकरणे निरूपितम् ॥ अग्निर्वशीतिअग्निमंत्रोवातरोगहरधायश्चिन्नेदरितिः श्रीसूक्तस्या  
 दिनासिकात्रणदरेसिहितंअनयोश्चजपोयावदोग्रांतितावत्यतिदिनमष्टाविंशत्याटिकोत्तवेत् ॥ इति  
 प्रकारं तरेणमंदाग्निहरम् ॥ अथकर्मविपाकसंयहोक्तमंदाग्निहरम् ॥ ॥ शातातपत्रोक्तो प्रकारं गंरुद्र  
 वाप्रमापयतियः पुनःसमंदाग्निर्वेदेदमृतकल्पश्चाजयतोअतेरेद्रेणसूक्तेनचर्वचड्डुडुयाघृतम् ॥ अथो  
 त्रराश्रुतंसम्यक्कृतव्यापस्यापुत्रयेतामग्निवर्णाग्निमितिचजयेत्सूक्तसहस्रकर्मनोजयेद्वाहणात्रसम्यक्  
 चवाशिसुखीत्तवेत् ॥ अतेरौद्रेणयादिअतिप्रितमरितामित्येतत्सूक्तमग्निप्रानोक्तस्यधुसर्वेगोहर  
 प्रदक्षितम् ॥ तामग्निवर्णाग्निमिति सूक्तं च ॥ सनस्कोटदरेव्यधायि ॥ ॥ इतिकर्मविपाकसंयहोक्तमंदाग्निहर  
 म् ॥ अथवैधायनप्रोक्तमंदाग्निहरमंदाग्निहरम् ॥ वैधायनः ॥ आग्नेमंदाग्निं तवेत्स्यस्येताग्निविनाशकं व

अथ

व्यामित्यतीकारंयथोक्तं ब्रह्मणापुराणलाङ्घनं तद्वेनाथवापुनर्नरजितंकारयेत्सोपममेधादि  
 नमुत्रमम् ॥ अग्निवाहनंमेधः ॥ ॥ सोवर्णाश्वराः कार्याश्चेतवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥ अत्रेतामल्लैश्चतंगं धैर्भूषं दद्या  
 न्मधुकांतांतंरुलोपरिस्थाप्यवाहनं पूजयेत्सुधी ॥ तंङ्गनाणां पुरीमाणां द्रोणद्वयमुदाहृतं ॥ द्रोणचरुर्गुणपरि  
 माणप्रकरणेवगंतमम् ॥ एवं पूजयेत् ॥ अग्नेयांदिशिहोमकार्यं इत्याहा ॥ अग्नेयांदिशिहोमश्च  
 मिदज्जातिलैरपि ॥ आचार्येणविनीतेनसर्वशास्त्रार्थवेदिना ॥ वृद्धयेनउक्तं सर्वप्रमंत्रानिमंश्रुणां अग्नि  
 र्देतिमंत्रेणसमिद्धोमःशस्त्रं ॥ अग्नेनयेत्याज्यहोमोयाग्निनाग्निमिलैश्चथा ॥ मंत्राध्यायोक्तमग्निगात्रेः संस्था  
 पनंस्थापनं सवेत् ॥ प्रणीतामोहपयंतेसुतेसान्विधीयते ॥ आपोद्विष्टेत्यपिदृष्टणाद्विश्येतिदृष्टेनचापवमा  
 नाभुवाकेनमार्क्येदो गिणंतनः ॥ शनीवाकाभुवाकेनशांतिंवापिप्रकल्पयेत् ॥ तस्मैङ्गतवनेरोगी प्राप्सुषी  
 सद्विज्ञानं जितायदद्याद्वाहनमुत्रमग्निदेवानां योसुखं हव्यवाहनं सर्ववृतात् ॥ तस्य च वाहनं पूजयेत् ॥ वैश्वे  
 र्महर्षिः ॥ अग्निमंदाग्निं सर्वकर्मविपाकं यं तु यन्मम ॥ तत्सर्वं नाशयिष्ये ॥ नराग्निं वद्विष्ये ॥ एवं विधायये



दद्यादग्नेदिनसुत्रमम्र। वलवान्निमान्मव्यजीविद्व्येशतं प्रनः। ततः सुवंधुनि विप्रैः आवाहुं जीतमानवः  
 । अग्निमूर्द्धत्यादि। अग्निमूर्द्धत्यायं मंत्रो नवग्रहसंज्ञे मंगलपूजाद्यं गविनघदाज्ञितिः अग्निनाग्निभित्पयैव सुख  
 रोगहरगजदाने ॥ अग्ने नयेतथा प्राप्तिनापि अग्निर्देवता त्रिष्टुष्टं हः ॥ आजपदोमे विनियोगेः अग्नेयं नय सुपथार  
 ये अस्माच्चिन्वा निदेववयुना नि विद्वान्मयुने ध्या अस्मज्जडराणमिने नृयिष्टं तेन मज्जीविष्यमासं त्राध्यायात्कमार्य  
 णेति मंत्राध्यायो गृह्यते प्रणीतमिहाः प्रणीता पात्रस्थोदकमिसर्जनोपतदने होमकर्मणो कृते सति स्नानं विधी  
 यते। यज्ञमंत्रैरतिषेकः कार्य इत्यर्थः। अत्राः तिषेकविधानादेवावाहनपूजाप्रदद्यादीशानादियागिकलयास्थाप  
 तत्रचरुणा। नवग्रहयज्ञप्रकरणे कैवली मंत्रे स्नानमंवेणवावाधरजयिवाततः इक्षीत्प्रकारेण इत्यातरो नि  
 गां वारुणं कलशस्थोदकेनातिषेवेत् ॥ अतिषेके मंत्रमाह ॥ आपो हि स्थेव्यादिनापवमस्तु वाकेनेतेना तत्र आपो  
 हि स्थामयो पुवेति सुवस्मरिना प्रायं रोगघतिमादान विधौ निरूपिता ॥ इत्यग्निमा  
 प्रकरणे दर्शितः। शनो वाताः सुवाकेनेति अनेन च शार्वकाणां निरुपलक्षतो तत्र शनो वात इत्यादि तैत्तिरीया

अग्निमूर्द्धत्या

अग्निमूर्द्धत्या

घोषशांतिस्तथा अलाय नद्यो मंत्रांतिरपि परिना प्रायां मेव रोगघतिमादान विधौ निरूपिता ॥ इत्यग्निमा  
 व्यदरवौ धाय न प्रोक्ता मेव हानं ॥ अथाजीर्णहरम् ॥ कर्मविपाकसंयत् ॥ अन्नहर्तृत्वजीर्णो नो तवेव सुखे  
 नृष्टतिः। उपवासत्रयः। कुयोत्पजापत्यमथापिवा। कडुयात्रुस्यपि व्यामग्नि रस्मिस्तृजानया। अथोत्तरसहस्र  
 हिज्जयात्रुजपे तथा। उपवासत्रये प्रजापत्येशरीरव्याध्यासुसारेण विवास्थापि विज्ञेया। चरुणासापिसहस्र  
 जडुयात्रु अयंचलो मोक्षपान नरंजपोपिसहस्रदयं अग्नि रस्मीत्यस्यात्राध्यादिना वातरो गहरघायश्चिने  
 प्रदक्षितेनाग्निधाने तद्युक्ता तज्ज्ञेणं न नतिष्टेद्राकथं चनो ध्यावात्रात्तरमन्यस्यस्य मग्नीत्पुंचं जपेनां  
 वात्रात्तरमन्यस्या अन्नस्य स्मर आत्तरं जल्प्यादित्यर्थः ॥ इत्याजीर्णहरम् ॥ अथ प्रकारेणः। जीर्णहरम् ॥ शान्ता  
 तपप्रोक्ते परान्नविघ्नकरणादजीर्णमपि जायते। नक्षहोमप्रकुर्वीत प्रायाश्चिन्नेया विप्रः। लक्षहोमगव  
 प्रायश्चित्तम्। यद्वासमथमथैव लक्षहोममपि कृत्वा यथा विधि। प्रायश्चित्तं कडु। पतिकुर्वंदायणादीनिवा  
 ध्यत्तुयारेण्यस्यानिसमस्तानि वा कुर्वीतानतो लक्षहोमप्रकारश्चानवयस्य शोक्तप्रकारेण्यहर्जडा

इमं उपादिकं विधाय याहनि सिद्धिं देयं चानि लब्धी ह्यवैर्लक्ष संख्यादो म कुर्वीता नतो वसुंधरा निवर्तये  
 रोपतस्रसर्वपरिनाषामस्मात्सिरादिदिनानि कृत्वा दिनकालान्यपि तत्रैव द्रष्टव्यानि ॥ इति प्रकारादरेण  
 जीर्णहरम् ॥ अथ मन्दाग्निप्रतिष्ठादानम् ॥ एतच्छ्रावणव्रतुके च उरोगे द्वित्यादिनाश्रुलङ्घनरोगप्रकरणोक्त  
 मन्त्राण्यनुसंधेयां घनादिविधानं चान्तको देवनातत्रेव्यासपरिनाषायारोगप्रतिमदानविधाबुदी रितम् ॥  
 इति मन्दाग्निप्रतिष्ठादानम् ॥ इति श्रीपेद्दिनहामजतदृष्टी विश्वेश्वरविरचिते महाएवंवसिष्ठानि निवृत्तेकर्म  
 विपाकपिरिहृष्टे अग्निमंदाहराणि ॥ अथ प्रज्ञाहीनवदराणि ॥ अग्निमंदाद्यस्तः शरीरगतत्वेन तत्त्वतीका  
 र्कमूर्त्तान्तरमेव बुद्धिस्थवादस्य प्रकरणसंगानि ॥ पराशरः ॥ परापालाया मूर्त्तकर्मतिहीनोत्तवेदसौ ॥  
 अतिरुद्धे तदा कुर्याच्चंद्रायणसमवृत्तम् ॥ अतिरुद्धादिस्वरूपं ह्यस्य प्रकरणो द्रष्टव्यम् ॥ इति प्रज्ञाहीनवदर  
 म् ॥ अथ अथजा ज्ञानवदरघण्यादानम् ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ गुरुण घननुज्ञातो यो वेदाध्ययनं चरेत् ॥ चरेत्कुर्यादि  
 व्यर्थं ॥ धातूनामनेकार्थवाची सज्जः प्रज्ञया हीनः संसारे जायते नरः क्वद्यामित्यतीकारे मुहकोऽथ मय

२३२

द्वंशो ननंकारयेत्ते द्वांशुसरिखा विदूषिताम् ॥ पलैस्स कुर्याद्विश्वयान्तदहर्नः ॥ सुखरांतामतिश्लक्ष्णांपं च गद्ये  
 नधावयेत् ॥ पलस्वरूपं च यमा एद्रोणस्वरूपं च परिमाणप्रकरणो द्रष्टव्यम् ॥ भावयेत् ॥ शोषयेत् ॥ अतिवक्षेण  
 संवीतं तं डूलीपरिविन्ध्यसे तं डूलाणां परीमाणं द्रोणत्रितयमिष्यते ॥ तदहर्नमथ वा आद्योपरिमाणं च शक्ति  
 तां आचार्यः सर्षशास्त्रज्ञो वेदवेदांगारगणधर्मशास्त्रे कुशलस्य चारः संयितं द्वियं ॥ आह्वयपरयात्तत्त्वा ॥  
 प्रज्ञयेत् ॥ तं विधानतः ॥ आचार्यप्रज्ञानं नामांशमहालयदिवस्वा ॥ इति घंटायां ॥ हृतेनाचार्येण घंटादिपूजाकर्तव्येया  
 इति नैवकारयेत्सूजां विधितः शास्त्रबोदिते ॥ उपचारैः षोडशैः संज्ञेणानेन शक्तिः ॥ आवाद्येत्तु वागीशं घं  
 टायाम् ॥ ब्राह्मणं चापि प्रजुजेत् ॥ ॥ घंटामिति ॥ अत्र घंटाशक्तेन घंटायां प्राधाहितामरस्य तीलहृते ॥ अस्यास्य प्रज्ञा  
 यद्वागिति स्थितेन ॥ अथ च वदुःसमादवसुहरे प्रदर्शितम् ॥ ॥ ब्रह्मप्रकारका मंत्रकब्रह्मज्ञानमिति नव  
 ग्रहयज्ञप्रकरणे सिद्धिः ॥ पूजानवरं कर्तव्यमाह ॥ अथ लोकप्रकारेण प्रतिष्ठाप्य कृताशनं ॥ होमं कुर्यात्प्र  
 यत्ने नुममिदा ज्यतिलैरपि ॥ नैवेद्यां पायसं दद्यात्तथैव ब्रह्मणेतथा ॥ सस्त्रतिथे दमिति मंत्रो वात्रनुसंमत्तं

२३३



अत्र प्रजायां होमकर्मणि च। अयं धामंत्रो यद्वा गिति द्वे चो वा विकल्पेन यस्याः। सरस्वति प्रेदमवेति मंत्रप्रश्न स  
 मन्नाताया अथानिमाभिः सरस्वती देवता अनुष्ठु वृद्धीं दः प्रजा विश्विनियोगः। सरस्वति प्रेदमवमुत्तरो  
 वाजिनी वृत्तितां वा विश्वस्य सतस्य प्राणायामस्य मयत्। तस्मै हुतव ते दद्यातां घटं प्रजिता एषां मंत्रेणानि  
 नविश्वत्रो गीं पूर्वमुखः क्रान्तिं उद्वसुवोपविश्यायस्मृवावागेश्वरी पराश्रुं ह्वानमंत्रमाहा। एतोरवत्तया य  
 ब्रह्माध्यायुष्यने कृतं तस्यां सरस्वति जगन्मातर्गुणा ज्ञायापहारिणी। साहा ह्युक्लव विष्णुद्राहिति क्रान्ति  
 तन्ममाध्ययने ली च जायं हरवरानने। घंटादाने नुष्टा वं ब्रह्मणा निम्मिते पुराण वं दानं तु दवाथ तमावा  
 र्यं देमाप्यत्रा अनेत्यः अक्रितो दद्याद्वा ह्ये ल्यस्य नो जयं नस्य तितस्त्रवं धुक्तिः साहं स्वावा तुं जी तमानवा  
 पय्यं कुरुते दानं प्रजादीनां जडोपि वा प्रजावानजडो उन्नयते वा क्यतिर्यथा। इति प्रजाजाय हर्यटाद  
 दानम्। अथ वेतनाहीन ब्रह्मरस्य। द्या तातपद्योक्तो। पितृदाचेतनाहीनो मातृदांश्च प्रजायते। नरकांतेषु  
 कुर्वीत प्रायश्चित्तै र्यथा विधिः। नरकांते मानुषशरीरमासाद्य न त्रचेताहीनो जायत इत्यर्थः। प्रायश्चित्त

२२३

पञ्चमोऽध्यायः

खरूपं सविशेषेण नेत्ररोगप्रकरणे ध्रुवदरेषु पंचितम्। इति वेतनाहीन ब्रह्मरस्य। अथ प्रजाहीन ब्रह्मरोग  
 प्रतिमादानं। एतद्ब्रह्मणं वाः सुकेषु तुरोगे ष्टिद्यादिनाश्रुल्लेगे हर्यप्रकरणे कमेवाः प्रापि विज्ञेयं प्रजादी  
 निकर्तय तत्कला एष्यपरिचाषाया मातं कौ देवता तत्रेयादिना रोगप्रतिमादान विधायुक्तं। इति प्रजा  
 रोगहीन प्रतिमादानम्। इति पेटितसदात्म जलदश्रीं विश्वेश्वर विरचिते महा एवातिधाने निबंधे कर्म  
 विधाकपरिच्छेदप्रजाहीन ब्रह्मरस्य। अथ प्रवृत्तु ह्यणाम्। श्याता तपद्योक्तो। गुरुजाया जगन्मातृवर्द्ध  
 प्रजायते तिनापि निष्कृतिः कायशिरास्त्रयुग्मेन वर्त्मना वा स्वदृष्टे न वर्त्मने न विद्वानिष्कृतिरुच्यते तत्रैकाप  
 जापत्यादि कृत्स्नरूपा सा च नरकाद्युपलोगे न कर्मणः हीणवाहुं रुरुत्प्रायाश्च त्रुष्टादंते ददं वाशक्त्या  
 नुसारेण कल्प्याः। अपरा निष्कृतिमादा। स्यापयेत्कृतमेकं उपश्चिमायां सुलो दिष्टिनीलवस्त्रमहा ह्रं नील  
 माल्या विभूषितं तद्योप विन्यसेद्व्यं लोहपात्रे प्रचेतमां सुवर्णनिष्कृष्य न निम्मितं पयसं पतिं। एतेषु कृष  
 ष्टकेन वरुणं विश्वरूपिणम् वरुणं सूत्रिकपाशवरुदकारमकरवाहनां वानि। साम विहासा एष नसा

२२४



गणेशाय नमः

प्रतिमीनिपायतपाविशतिनिष्कृतिमिति सो दणं सूत्र संख्युपनिषत्प्रतिनिक्षेपततोवत एषु रूपरुकेन जेष्ठो  
पचाटेः पूत्येव  
३५

मवेदंसमाप्येवमुवर्णनिक्रीकृत्रानिष्कृतिनिर्णययादद्याद्विषयसंप्रदानिपापछामितिबुव्या  
यायसामाधिपोदेवोविशेषमप्रियावनःसंसारहेकर्मधरोवरुणपावनोसुमेधर्ममंत्रसुत्रायत्रा  
य्यथयाविधिःदद्यादेवमलेकृत्यमृत्रकृत्रयांतये॥त्रायंप्रयोगः॥स्रात्रुकुलेभुतेदिनेस्यडिलमुप  
लिप्यालंकृत्यतत्रपश्चिमदिशागेकलरांसंस्थाप्यतदुपर्यसंप्राप्तनिष्पत्तौसकवरुणप्रतिमांउसूत्र  
कृत्राधिदेवतयिनमइतिनाममंत्रेणार्चयेत्त्रायसामवेदंविदाब्राह्मणेनप्रजितप्रतिमासन्निवावेवेद  
पारायणंकारयेत्तदं ॥ बद्धवेनवायथासंस्तवशाखाध्यायिनावावेदपारायणंनिष्वादेवगिगानिह  
त्रिरूपदृष्टप्रयोजनस्येवमपिनिष्पत्तेवेदपारायणविधिपरिनाषायामन्निहितः।याद्ययायसमाधि  
संप्रतिदिनंप्रवेक्तिरीत्याद्यर्गारोगप्रतिमांउसूत्रजयेत्समासेवपारायणेतारोगप्रतिमां ब्राह्मणागदद्या  
त् ॥ तत्राश्वप्रयोगः ॥ असुकनोत्रायासुकसर्मणसुकनोत्रायासुकसर्मणसुकनोत्रायासुकसर्मणसुकनोत्रायासुकसर्मण  
दैनममद्युत्रायहानिष्वापस्यामितिवुवत्रप्रतिगृहीत्रेणप्रतिमांदद्यादिति।निष्कृत्ररूपपरिमाणप्रक

भावे

३५

रणेवधाशिं जेत्युरुषः ॥ सूक्तेनेतिखरुषसूक्तेनप्रजाधकारपरिशाषायंयुरुषसूक्तविधानेनिरु  
पितानिवेदपारायणविधिरपिपरिशाषायामेवपारायणत्रिकोमृत्रकृत्र प्रतिमालक्षणंउंतसुक  
णैवसिधायते ॥ इतिमृत्रकृत्रहरमांअथप्रकारंतरणमृत्रकृत्रहरमां ॥ शान्तातपत्रोकोमृत्रुयो  
नोचगमनामृत्रकृत्रपुजायतोतिलपात्रयंचैवसदद्यादात्मसुद्वये ॥ तत्रैकीतिलपात्रदानंमाहा  
विष्णुः।तामपत्रेतिनाकृत्रापलषोडशकल्पितेसहिरण्यान्मृत्रकृत्रावाविषयप्रतिपादयेत्तानाशा  
यातद्वत्वावुविधिवत्सुत्रप्रतिदितिः।तिलपात्रेतित्रिधात्रोक्तं कनिष्ठोवममध्यमोतांमयात्रंदशप  
लंजघन्यपरिकीर्तितयाद्विगुणेमध्यमत्रोक्तं त्रिगुणं जोत्रमंमृतमस्त्राणमेकींजघन्येवुद्विगुणमध्यमदि  
पेदत्रिगुणं जोत्रमेतद्वत्सुवर्णंपरिकीर्तितमसुवर्णद्विगुणादद्यात्सर्वपापहयोसवेत्तपलघापर्यो  
द्वरूपपरिमाणप्रकरणेनिरूपितम् ॥ इतिप्रकारंतरणमृत्रकृत्रहरमांअथमृत्रकृत्रहरमां ॥ कर्मि  
३५

प्रकर

२३५

अथ  
सादि

पाकप्रयुक्तो ॥ मत्सरीयुगायश्चविधवामनिगडिति। सत्वेन्युवृद्धी। उयुस्तत्यादिमाचरेत्। युरुत  
 व्याहृततल्यप्रायश्चित्तस्यार्द्धषड्वाषिकप्रायश्चित्तमाचरेत्पर्यः ॥ इति प्रवृद्धद्वय्या इति प्रवृद्धद्व  
 रनिलपद्मदानम् ॥ तत्रनिदानं वा युज्यते ॥ सुगयो प्रवृद्धी। ति। अत्र निरुतिमाह वैधस्यन् ॥ सौवर्ण  
 कारयेत्यर्धपलेनार्द्धपलेन वा। यथात्वे शक्तिधनिमाह ६ मष्टदलं शुक्लं विनशा र्धनकुर्वी। तसवे निष्क  
 लमन्यथा। तिलद्रोणार्द्धकेवापिनाम्रपात्रं जलाश्रितमा निदधी। नेत्यर्धं पलदोणयोर्ध्वं पणपरिमाण  
 प्रकारेण इष्टयथापात्रमध्ये उतत्यग्नीनिदध्याहुं। कुमाश्रितमूत्राहणं प्रतसंपन्नं दरिद्रं वाग्निहोत्रि  
 णमाश्राय्य गंधमाल्याद्यैर्द्विधनावापितकितनत्रचयेदिनिशेषाण्यत्राहणं समस्यञ्चोत्तेजना  
 करिपद्ममध्ये प्रजयिवाग्नेः इवाच तस्य संवाहणा यवपमाणं प्रकारेण दद्यात्। तथा च वैश्वानरा  
 प्रोक्तवतिलपद्मदानं तरे ॥ अग्निं वतिलेर्दोमकार्यथाशुभं तरेनात्मीपद्मे वा वाहयेदेवनाकरे  
 यहनायकांष्टोहिसगवन् देवपद्मे स्मिन्नसेनिर्धुक्सात्रयितनोद्वादशात्म सहस्रेर्दिति सिद्धं ॥ भावा

रश्च

हनमंत्रां आवाहयतस्मिदेवेवी प्रजयेत्प्रकचंदनैः। उपैश्चरकैरपरैः कुमायुरुचंदनैः। निवेद्यं पात्रं सं  
 दद्यात्काले हीमिवचेति। अज्यदोमशिलदोमथद्याहृतिं कार्यः। एवं संप्रत्येकिकुर्यादिव्यत आहृतः स  
 ण्मुं यं पद्मे दद्यान्मंत्रेण संयुतम् ॥ दानमंत्रमाह ॥ रसाः प्रोक्षापतंगोसौदादशात्मावयति। त्तुः। पद्मेनानेन  
 त्रेषीतीतस्तरणिरस्मि। इतिनानेनमुजोमृत्रकृष्णात्प्रमुचते। मृत्रकृष्णात्वरसस्मादेतत्कुयोत्ययत्रताप  
 तवपद्मदानमादिहस्यसरेकांसीपद्मदानप्रयोगज्ञादियेहनिकारयेति। औधायणस्माराणात् ॥ इति प्रव  
 र्द्धहरतिलपद्मदानम् ॥ अथास्मरीहरम् ॥ सातातपःशुक्तेमात्रसमनीगमनेजायते चास्मरं गदः। स उ  
 पापविशुद्धार्थं प्रायश्चित्तसमाचरेत् प्रायश्चित्तमत्र त्रेमासिकं दद्याद्विप्रायाविदुषे मधुधेनुं यथादितम् ॥ ति  
 लद्रोणशतं चैव हिण्येन समश्चितः। मधुधेनुविधानं हरणेण हरे प्रदक्षितं मृद्विणस्वरूपं तु परिमाणं प्रक  
 रणे ॥ इहास्मरीहरमाश्रयवृद्धमृत्रहरमाशातातपप्रोक्तो। दुग्धवोरसप्रसुषो जायते वृद्धमृत्रवार्शिस  
 दद्याद्दुग्धधेनुं च ब्राह्मणाय यथाविधि। दुग्धधेनुविधिरपि हरणहरेयुडधेनुप्रसावेदक्षितः ॥ इति वृद्ध

मूत्रवदरम ॥ अथप्रकारेण वज्रमूत्रवदरम ॥ कर्मविपाकसमुच्चये सौन्दर्यगामिणो रोगो जायते वज्र  
मूत्रतापराकृष्टितयं कृत्वा त्रिंशद्वा चणो जन्म ॥ अतिमूत्रेन तु क्रुयादष्टोत्तरसहस्रकौमुद्यापि प्राव  
रुणातेन जपसावक्रिते मनुसद्वनान्नां मूत्रकृष्टयोरुपमूत्रशक्तिः गायत्र्याश्चाङ्गप्रकार्यं प्रत्यापस्याप  
नूनयो पराकलदाणं कृष्णकरेण द्रष्टव्यम् ॥ अनेपितमेरुतामिनेतस्युक्तैमानेसूक्तैणतद्याथादिमहि  
धनोक्ताः साध्यसर्वरोगहरैरनिरूपितमुरिगाद्याः सत्येव प्रत्यर्च्ये होमः अधिकैरुसकलमूत्राकृत्या होमः  
पद्मद्वयेपि वरुणाद्यथकृत्वाप्यथ कृत्वा वा निति ॥ अष्टोत्तरसहस्रमेवातेनाश्रुतेपितरित्यने  
नमूत्रेन सहस्रान्मूत्रकृष्णस्य गायत्र्याश्चाङ्गप्रशक्तिनोत्तवति ॥ अष्टोत्तरसहस्रादधिकं मूत्रं वेत्य  
थोपनेषा मूत्रादिपरिसाध्यमदीरितं ॥ इति प्रकारेण वज्रमूत्रवदरम ॥ अथमूत्रकृष्णप्रतिमा  
दानम् ॥ तल्लक्षणं कर्मविपाकसरे ॥ मूत्रकृष्णमयस्वेकं कर्त्तरी वज्रमूत्रकृष्णकर्त्तराणं कर्त्तरः द्वे द  
नं खंडाकं कर्त्तरं ॥ अनेन द्वेदनसाधनविशेषोपलक्ष्यते ॥ तदद्यात्कीर्त्तव्यं ॥ खरइति कूर

हि

रस्व

पृ. १०६

र्थः ॥ प्रजादीनिकं त्वया विशेषतः परिनाश्रयां रोगप्रतिमादानविधावात्तं को देवता तत्रेत्यादिना निरूपि  
तः ॥ इति मूत्रकृष्णप्रतिमादानम् ॥ शनिशुक्रदिह द्वात्मजसद्वृत्रि विष्वे श्रविविग्विते महार्णवा तिधाने निव  
धे कर्मविपाकपरिभेदे प्रवृत्तहराणि ॥ अथ प्रमेहहराणि ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ चांडाली गमनात्सर्व  
प्रमेहयाधिमात्रलेत्रं द्वाविषामाः सुरश्वेतजायते तस्य निःकृतिः चांडायणत्रयं कुर्याद्यवमर्थतथा पय  
पिपीलिका मध्यचांडायणत्रयं चरेत्यर्थः ॥ इदमापश्चिद्वाचाः पुत्रममथेकया ॥ उज्जयात्सापिवाचेना  
उपेनां त्रांसमाहितः इदमापः प्रवृत्तः तद्विद्ये र्मेधा तिथिनादिः ॥ अपो देवता अने द्वे त्रिदेवता अनुष्टु  
पद्वदः विहितार्थे विनियोगः ॥ इदमापः प्रवृत्तः याक्चं उरितं मथियद्वा मतिशो ह्यद्विशिष्यत नानृतम्  
॥ अपो अद्यात्वा शिषरसो न समं मृत्साहापयश्चानयश्चागमत्तं मासे नु मूत्रवर्षसा ॥ १॥ सा इय  
मापिक्रयो मिलितैको मंत्रः ॥ उज्जममित्यस्याः पुनः सेपत्राधिः ॥ अत्र विषदेवता इत्यप्यभिधीयते ॥ वरुणो  
देवता द्विसुष्टदः ॥ विहितार्थे विनियोगः ॥ ॥ उज्जमं वरुणापाशमस्मदं वाधमं विमथं ॥ अथनयामादि  
पश्येत वनागसौ अतितये स्थान ॥ ॥ राजप्रहो मयो संख्यायाः स्युसारेण ॥ अष्टोत्तरसहस्रअनुत्ताः क

ष्याः ॥ इति सर्वप्रमेहहरणप्रथमसंस्कृतप्रमेहहरणम् ॥ कर्मविपाकसंश्लेषः ॥ तिर्यगामीसंश्लेषेन प्रमेहेन यु-  
 तोत्तवेत्ताः क्रियात्मानपनादीनि प्रायश्चित्तं यथाविधि। सांतयनाय तिसांतयन्यति महासांतयनात्यर्थः ॥ एवं  
 लक्षणा निवृत्त्यप्रकरणे दर्शितानि ॥ इति संश्लेषप्रमेहहरणप्रथमसंस्कृतप्रमेहहरणम् ॥ कर्मविपाकसंश्लेष-  
 हे ॥ एवं व्यवायि मञ्जुकम्पागामीतथैव व्रीवान्व्रमेहसंश्लेषप्रमेहहरणप्रथमसंस्कृतप्रमेहहरणम् ॥ चांदायण-  
 रूपकप्रकरणे इत्यव्याप्त्या इति वानप्रमेहहरणम् ॥ अथ मधुमेहहरणम् ॥ कर्मविपाकसंश्लेषे ॥ स-  
 धुमेहीमात्रगामी सतंतजा यतेनरः। पिच्छताया निगामी वज्रलमेहीनराधमः। योगवैकृपानो नित्यमिह-  
 मेहीति निश्चयः। पिच्छताया सापन्नजननी सतंतमधुमेही नित्यमिहमेहीत्वत्रयः। एतेन रोगाधिकं सुप्तो-  
 प्रायाश्चित्तक्रमादन्तर्द्वेषा एषथपंचचा अदमित्यद्वारेत्सम्पूततोरोगा द्विसुप्तो घट्टं अद्यं च क-  
 माप्रायश्चित्तं सवतीत्यर्थः। सर्वत्रसौरमंत्रेण जपहोमोक्त्वा रघोसंख्याज्ञायेत् रसस्त्वमसौरमंत्राश्व-  
 ह्वं वधत्रयेत्यादयः परिनाशायांतत्रतावद्वर्तिना ॥ इति मध्यादिप्रमेहहरणम् ॥ अथ प्रमेहसंश्लेषव-  
 णश्चित्तदान्या ॥ वायुपुराणम् ॥ ब्राह्मणः क्षणहारी वज्रप्रमेही जायते नरः ॥ दृष्ट्वैतमत्र ॥ धेनुध्वर्णमयैक-

२३७

याश्चैव विधिना जतः। प्रवेणविधिना पलेन घातद्वेन तद्वेद्विनवा पुनेति त्वनेन विधिना धेनुं क्रिया-  
 दित्यर्थः ॥ घृतास्पत्वादीनि कर्तव्यता कलापुत्रुक्षय रोगहरणप्रकरणे युद्धुदानप्रसंगे न दर्शितं।  
 चर्माश्याचस्त्राद्यंतथारूपपुरामपितथात्रवर्णकंकयौ दष्टतागेन सर्ववत्रब्राह्मणं श्रुतसं-  
 न्नैस्त्वैश्वर्यं नमः आचारवंते धर्मिणो द्विजसुश्रुषणेद्यतम् ॥ गृहमाह्वयविधिं च श्रजयेत्  
 घृणादिति मया वितवतोत्तमः। होमसर्ववदेव हि। सर्वत्राद्युक्तो कृषिधिना मिस्थापनादि-  
 कत्रेत्यर्थः। मैत्रैश्चैस्त्वैः सम्यक्पलाशसमिधैः स्मृताः। होमसंख्या च क्षोत्रशतशं चैस्त्वाद्यामं-  
 त्राश्च द्विष्टोरित्युक्तः। तत्र तद्विष्टोरितिक्रियां उहोमप्रकरणे दर्शितः। होमोत्ते किं क्रियादित्यत आ-  
 होमांतेतां प्रवद्याह्वमंत्रेणानेन मेहवाशाः। अन्नेपयन्नेः शंखचक्रगदापद्मधारी नमः। दानप्रमे-  
 हरोगप्रमेतकार्यमुनीभिः। कृतेनानेन शांतिप्रमेहदाकाणा अपि ॥ इति प्रमेहसंश्लेषवर्णश्चित्तदान-  
 ष्याः ॥ अथ प्रकारोत्तरेण प्रमेहहरणम् ॥ थातातपत्रोक्तेन पश्चिनी सगेन प्रमेहो जायते गदः। मासं

रुद्रजपः कार्योदद्यात्तत्राव च वनं धानपाधिनी प्रसंगे विषमंगे न प्रमेहे जा अतेगदः। मासं रुद्रजपः का  
 र्योदद्यात्तत्राव च वनं धानपाधिनी गमनारुद्र लक्षणं परिता धार्यं रुद्रविधाने प्रदर्शितं कां वनं सु  
 वागं यथाशक्ति दद्यात्। इति प्रकारं तरेण प्रमेह हरणं अथ प्रमेह प्रतिरूपके दानं मन्त्रेण तिल दाने  
 कर्मा विपाकसा प्रमेह पाणि सुद्युम्प प्रदक्षिण पाणिनी घणः। वाम पाश्चिं कृत्वा कुर्वन्पादाद्या त्रं व कर्  
 तिष्ठतादी निकर्षे धाता कलपकृपा रिता धार्यं रोग प्रतिमादान विधा वान्तकी देवता तत्रेत्पा दिना निरूपित  
 मन्त्रेण प्रमेह प्रतिरूपका दानं मन्त्रेण इति श्री पितृ दान मन्त्रेण इति श्री अथ श्रुति रचिते चार्ण वानि  
 ने निर्वे कर्मा विपाकसा प्रमेह हरणं। अथ तिगहराणि वृषणद्या धिहराणि। अत्रादौ  
 लिङ्गहराणि। अथातात पशुं मातृगामी त्वेद्य सुतस्य लिङ्गं विनस्यति। जांडली गमना चैव की च ऊ  
 च अजायतो तस्य प्रतिक्रियां कुर्यात्कतसुत्ररतो न्यसे राज्ञः तः शुद्धस्य तिष्ठतश्च देशस्योत्तरदिशा गे उद  
 का प्रिष्ठस्तिष्कलशं संस्थापयेदित्यर्थः अत्र वृष्टिका पत्रवादी तिनं वयस्य प्रकरणे कनशया

पना प्रशावेकानि स्थापयेत्। रुद्रवस्त्रसमाहं त्रं कृत्वा मन्त्रेण विरचयति तथो परिचये कां स्पेत्पा त्रे देवं ये  
 श्वरं मासुवर्णं निष्ककं केण निर्मितं न रवाहनं राजय सुकम प्रभुके न धनं देविश्रुत्प्रिणं। निष्कस्वरूपं परिभा  
 णप्रकरणे वोधद्यु मधनं दे न रवाहनं वरदानय करं वायजे वध्रजये राक्षस प्रकाश्च परिचा धार्यो कुन  
 धं परिमाण प्रकरणे वोधद्यु मधनं दे न रवाहनं वरदानय करं वायजे वध्रजया प्रकारश्च परिचा धार्यो ध  
 रुक् प्रक विधाने निरूपितः। अथर्व वेद विद्या नर्थकं करणं समापयेत्। अथर्व वेद पारायणं ऊपीदित्य  
 र्थः। अतस्त्रया यावद्दिने वैदपारायण समाप्तिं न वान्ता तावत्सु दिनेषु ऊवे रध्रजा वद्यमाण प्रतिमा  
 त्रजा च कार्यो पारायण विधि सु परिता धार्यो निरूपितः। अथर्व वेद विदोश्चावेव ह्येन वयथा लानो  
 पपत्रथा खाध्यायिना वा वेदपारायणं कारयेत्। अथ कर्मणो रोगानि वृत्तिरूप दिष्टार्थो पयोगात्। वेदा  
 तरपारायणे नापि दृष्टार्थो सिद्धये अथर्व वेद पारायण कथनं वायच्चारं पिशावादीनां तद्दे दक्षि प्रा  
 यचात्रा धनं दस्ययदा नरा र्क्षपति सिद्धमेवा ऊवे रप्रतिदिनमा चर्य वेदपारायणं समाप्ति प्रजयेदित्य



संखराब्धनेनैव गोदानदितयेनवा। प्राजापत्येनचैकेनशाम्यंतिप्रद्वजाः। यथापिप्रगर्भनमिति समान्येना  
 सिहितं तथापि धर्म्याधान्येन प्रविक्षुर्द्वजो। आरोग्यैताकराश्चिद्वेदित्स्मृतेप्रजावचशक्ताउसारेणगंधप्रघाव  
 स्वातंकारादितिः। पुरावर्तनोगोदानप्राजापत्यवरणेप्रक्रमोपिक्रमपाठ्यद्वतो। ॥ इति प्रद्वजोहस्त्या। अथप्र  
 बहुद्वजोहस्त्याकर्मविपाकसंयत्ते। विप्रुत्रोत्सर्जनकवा। हस्त्याशोत्कर्मसाधुक्तात्मानंसेमत्र्यमितिप्र  
 सवहुद्वजोहस्त्यादाणापायडातप्रकृष्टितिकृत्वा। चांद्रायणं चकर्वयं तथात्वीरं च सपिषा। अत्रित्यामिति  
 प्रकृतेनसहसंमुद्रया। अथत्रयद्वं चैवजपयासर्वसंख्या। कृष्टदिलक्षणानिकृष्टप्रकरणेनित्पि  
 तानि। सपिषासहितं चैव। अथपिमिश्रितं दुर्धुद्रयादित्यर्थः। अत्रित्यामिति प्रकृतेपरिष्ठाषायंगेगप्र  
 तिमादानविधादुदीरितं तथा। अथद्वयद्वयोपिहोमसुप्रसूत्रो। ॥ इति प्रसवहुद्वजोहस्त्या। अथाशोरोगह  
 र्म्या। ॥ कर्मविपाकसंयत्ते। इवाथवेतनयोर्ज्ञानादियापि वेतनं। अप्राप्येवमुद्रयाजपेष्टे। इतोवमे  
 त्तानिद्विते। अथैतत्कृत्वा। चांद्रायणं तथा। अथजपेकृतं च पोरुषो। उद्यन्नद्यत्तं विद्वद

ये

यवजपेत्प्रथातामग्निवर्णोमितिजपेत्सकंसमाहितः। हिरण्यंमघ्नंदद्याद्धोत्रियायउद्विनोदत्राथवेतन  
 मिव्यादि। अतत्काध्याप्योत्तकाथे। अथैतत्प्रकृष्टादिधुर्याणिकृष्टप्रकरणेपरिताषायां चोद्यत्तानिपो  
 यं प्रकृष्टां अथवाप्री। दिपरिताषायां प्रकृष्टप्रकृष्टविधानेणहोमप्रकरणेचदीशंतमोद्यन्नद्यत्तस्य  
 उतत्रैवरोगप्रतिमादानविधौविद्वदद्वयस्रोत्रमपिपरिताषायांमेवातामग्निवर्णोमित्यस्यवाप्रीद्वि  
 अन्नस्योद्वेरेनित्पितसाधुप्रसूक्तादीनां सर्वेषां जपसंख्याद्याधितरतमत्तवेन। अष्टोत्तरसहस्राद्य  
 प्रेनायाशलादिकापिवाक्यनीया। माहिरण्यंघ्नंदद्यादिति। अथोहिरण्येनित्पियास्येवद्वानकृष्ट  
 दद्यादित्यर्थः। अथोवेक्षणंमंत्रककटिश्रजहरेदीशंतमोद्यन्नद्यत्तस्योद्विनोद्विप्रकवर्षपर्यानां च  
 दद्यात्तत्रनेनैवातिप्रायेणब्रह्मगीतासुवचनं समाप्तं। अत्रियायद्यश्चिनेवविशेषः। असमाह्वयाधि  
 नाश्रयोधेवंदद्याद्विषात्रयेति। कृष्णादीरत्रेताज्यामिश्रिताभ्युमायेपयमोनिम्ममथान्विषोक्त  
 ना। ॥ इत्यशोरोगहर्मा। अथाशोरोगप्रसवणधिवदानम्। ॥ तत्रनिदानं यत्तथाशोबिन्नोवधानम्

निवृत्तप्रतिक्रिया माहावौधायनः।। सोवर्णौगां प्रकृवीतपलादिकेन वा पुनः विवशाथं न कृवीत्स्व  
 उर्थेन वत्सकापलननणपरिमाणप्रकरणे निरूपितम्।। सातर्णको वत्सः।। त्रशृंगारो प्यसुरो ना नाव  
 चैरुलकता।। यहा णासुपरिस्थायनवधान्यानिमात्रेणोत्राहोमश्च सर्ववकार्यो गोविंदप्रीतये तथा।। प्रहा  
 णा।। सुपरीतिनव्यदस्थापना प्रदशादुपरीत्यर्थः।। एतेन न वमदयज्ञो पिकर्तव्यस्य कृतवति।। सत्रपरिना  
 षाया विशेष्टतो निरूपितः।। सुवर्णधेनुपुरतो न वधान्यानि न वयस्या कतिचिद्व्यवादीनि मत्संत वेदना  
 नान्येव विवशमेत्राहोमसु सर्वदिति।। प्रदयज्ञो कप्रकरणे ग्रहहोमकार्यस्यर्थः।। गोविंदप्रीत्यर्थो गोविंद  
 प्रीयतामिति सुवर्णगां दानस्य गोविंदप्रीत्यर्थे स तदुद्देशेना पिकर्तव्यहोमस्य कर्तव्यतां दर्शयति।। अ  
 स्मिन् होमे मंत्रादद्याणि च दर्शयति।। इदं विश्वप्रतिद्विस्रप्रतिद्विस्रविश्वोर्द्धका म्बिनयोश्च नकांभ्यह  
 रणोपालदानघा इदं विश्वरित्यास्यो मंत्रासमिदादिहोमे अक्रमेण जवंति होमेत्यन्य एव क्रमाः।। समि  
 द्दोमानंतस्वकहोमसेवाद्वाधितरतम्येनाऽद्योत्रशतदिकाः कल्पा।। नृणद्विपंत इति इति।। द्रुणद्वियां

३२०६६० ३०६१

३३०६६० ३०६१

त्तहोमकर्माणि निवृत्त्यस्यर्थे।। ततः किंकुयादिपतत्राहात्रयात्सु ततो रोगी ब्राह्मणं वेदपारग  
 म्।। कृतवत्सु संपन्नं कुलीने वमत्वादिना दृष्टं ज्ञानो।। प्रसपत्रम उद्दे।। अकं नृणां घातत्वाः।। अथ ममा  
 नीयस्रजयेत्।। तिस्रर्वकं अउलीयक वासाद्ये उपान च वके रथी।। मंत्रेणाते।। तस्मेतां दद्याद्गो  
 यताम् वा।। त्रोगो विदमनुसाध्याय त्रगवामध्ये स्थितं सुतम्।। मंत्रेणानेन गोविंदगोपी नृब्रह्मज्ञेन  
 कया सुस्रजं त्रिदशद्वंद्वगोदानं त्रैवः कुरुते दयाल्ये अथो विनाशं स्यापिता।। शिवर्गः।। दानेनानेनानि  
 यतमशो जायते च।। तस्मात्कुर्यात्त्रयत्रे नृक्षयाथो देतदशशः।। अथ शेरिगघ्नसुवर्णवि  
 दानया।। अथ उदरोगप्रतिमादानं मशरोगप्रतिमादानं मशरु रोगप्रतिमादानं कल्पे।। उक्ते  
 सुवर्णे सुवर्णपुष्पकम्पुष्पलरोगप्रकृशां कृत्विजेयं।। अथाशेरिगप्रतिमादानं कर्मावि  
 पाकसारं।। अथ शेरिगः।। शो विक्त्वात्तु च मन्त्रेण उभयत्र ज्ञानदीनि।। विनाशशोषक  
 परिनाषायामातको देवत।। त्रैव्यादिना रोगप्रतिमादानं विष्णु उरीरितम्।। अथ उदरोगप्रतिमा



नमशोरिगप्रतिमादानं च ॥ अतिश्रीवेदित्तद्याजजदश्रीविश्वेश्वरगणेश्वरितेहाणवाति ॥  
 निवंधेकस्यविपाकपरिरे ॥ सुदरे ॥ हराणि ॥ अथाऽतिमारो ॥ हरणि ॥ कर्मविपाकस  
 मुखये ॥ अस्मात्प्रिममयेदससो ॥ तिसारुनोनेवाअशिरस्मीष्टचंज्वादशां ॥ अत्रुयात्रिला  
 सार्पिषवा ॥ नोदद्याद्विरणप्रासाणायवो ॥ अस्मात्प्रिरोपसन्नु ॥ अत्रतएवाशुप्रादप्राय ॥ तत्रे  
 मासिकमणिकर्तव्या ॥ अशिरस्मीनिय ॥ अत्रुयातरोगहरेप्रदर्शिता ॥ अथततमतावेनप्रति  
 दिनप्रागशा ॥ अशोत्ररी ॥ तैलसंवाकार्यः ॥ अथवायुतदशादिकंवासंकरुपरिद्विवाद्योश  
 माप्येवमेवायहापिप्रायश्चित्तहोमेनपत्रव्याहृतयोमंत्रादद्यात्तथाप्युष्ठितमंत्रेणैवहोम  
 स्पत्यासत्रादशिरस्मीत्येवहोमेत्रमंत्रः ॥ हिरण्यवशक्ताउसारेणदद्याच्च ॥ अतिमारोगहरे  
 म ॥ अत्रिनेदानंप ॥ अनीसारीसतवतियस्त्रेतामिविनाशका ॥ अत्रप्रतिकरसेवौषधनीये ॥ सवा  
 नाथतात्रेणकुर्यात्प्रतिकृतिपुत्रकृशक्ताउसारेणपलेनार्देनवाउनः ॥ अत्रिनेदानंउचितम् ॥

3

एषादिषुदर्शितयातयाहालाकृत्तरकचंदनेनविलेपितशरकवस्त्रेणसंवीतमेघस्योपरिसंस्थ  
 नाशपत्रमात्रेखसंज्ञादानपरिसंस्कृताकेनकांचनवर्णनिहाद ॥ अर्चन्याशुनामाशुचक्योक्तिविश्वे  
 कनिष्ठेचाग्निहोत्रिणि ॥ अंशुनीयकवस्त्रेण ॥ अतोहानिवेदयेव ॥ अथानेनविधिवुदमिध्रिपथं ॥ अदत्तः  
 विश्वकनिष्ठेचाग्निहोत्रिणि ॥ अकनिष्ठेइतिपदविसागः ॥ अकनिष्ठेस्येष्टस्वाचारोएतेनत्रमेतियावत्क  
 निष्ठइतिपादविसागेकनिष्ठेअवद्वैतरुणइतियावत्पवंविधोवैतोप्रतिमानिवेदयेवविशिष्टा  
 यविश्रायदद्यादित्यथ ॥ अतमंत्रमाद्य ॥ त्रेनापीयस्वमंतश्चमंतश्चरमिधेचृणात्ववेत्यप्राकन  
 पापमतीसारंविनाशयशाएवेकृत्वानरः ॥ सुस्यगातिसारंअपोहति ॥ निकुंजः ॥ सुसुरवीनित्यंदीर्घमा  
 युश्चविंति ॥ इत्यतिसारहरवन्निश्चिदानम ॥ अथशतातपश्रोक्ताऽतीसारहरम् ॥ अथदि  
 ताचाऽतिसारीस्पाहश्चत्वात्रोपयेदशादद्याच्चशर्कराश्रेतेनोजयेच्चशतंदि ॥ अथशर्कराश्रेतेन  
 विश्वराजयद्म ॥ अतिशान्तातपश्रोक्ताऽतीसारहरम् ॥ अथरक्तऽतीसारहरम् ॥

शातपत्रोक्ते द्वाभ्यां शक्यैव कांती सारवान् वेदातेनो नानं कर्तव्योपनीयास्तथा  
 टा उदपानमिति उदकं पीयंते तस्मिन्नि उदपानं कूपो वा निपान वा प्रपावा इति रक्षाऽतीसा  
 रहरम अथ यदणी हरम कर्म विपाक संयदे अनन्य गतिको नार्यम दुष्टां कीर लं विना परि  
 त्यजतिय सोथय हणी रोग वात्रा शिव संकल्प सक्त स्पजपः स्यात्त्र शीतयो अष्टौ त्र रस ह र्द हिर  
 एं च तथा मधु दद्याद्दि स्रु सारेण सौ चं जपेत्थ शिव विगुणादिकं कल्प्या सो र्मं च उद यत्र द्य  
 हत्रां अस्पृष्या षादि परिचाणयां रोग प्रतिमादान विधातु दी रित म अत्रा पिल प संस्या प्र र्व वदेवं न  
 केवलं शिव संकल्पादि जप एव अपि तु धेनु मपि दद्यादित्यादे चं मल द्वाणं दद्यात्सा सरण संख  
 ताशा द्वे त्सेनां स्तरणे न संखता म इति यदणी रोग हर म अथ यदणी द्वा र्धेनु दान म तत्र प  
 यत्र राणे अथ यदणी दान संपद्य दे ति निदान म सिद्धि त म अत्र गौतमो निष्कृति मां द्वा र्धेनु प  
 यस्त्रि न दद्याद्द्वे त्तरण ल्पित प्रा हे म शृंगी रो पा सु रो वा सी लि द्वी छि तां न रान व धन्योः समा युक्ता

मैकं कंदोण पंचको नवधा न्यानि त्री ह्यिवादी द्वा कालो चिंता निधान्य परिमाणं दशिन मे कै क मियादि  
 ना सहिरण्यं तु तां दद्यात्प्रा लणाय कुदं विने अलो लु पाय शी ता य धे र्मं ज्ञा या विशेषतः दो मं च धे र्वं व ल  
 अस्मि म्दया प्य वरु क टो सहिर र्थी मिति क्रिया विशेषणो दक्षिणार्थं यथा वा कि सु व र्णं दद्यादित्यर्थः प्र र्व  
 वदिति रूप्य ह्य वदान वदित्युक्ते दे माद्रौ अत्र म ति प्रायः तत्र यथा स्व र्धो क वि धिना शिं स्या पनं  
 समिद्धो मान्त्रं रं वरु ही म एव म त्रा पिस द्वा कार्या लिति यद्यपि तत्र ही म मंत्रा रौ द्रा स्यथा प्य वा वै म  
 वाः खशा खो क्ता दृष्ट्या तत्रे दं विष्करि ति मंत्रः कृष्णो ड ही म एव म त्रा पिस द्वा कार्या लिति यद्य  
 पितत्र ही म मंत्रा दौ द्रा स्यथा प्य वा वै म वा स्व स्व रा प्रो क्ता दृष्ट्या तत्रे दं विष्करि ति मंत्रः कृष्णो ड ही  
 म प्रकरणे द्दिति त त द्वि श्लो र्थे क मिति द्वी मंत्रो न क्पो ध्य हर मो पाल दाने द र्शितो पितत्र यो मंत्रां सामि  
 ह व व ज्प ही म प्रकरणे द्दिति त त द्वि श्लो र्थे क मिति द्वी मंत्रो न क्पो ध्य हर गो पाल दाने द र्शितो  
 एते त्रयो मंत्राः समिद्धो ज्प ही मै छ क्र मेण या साः अत्र वै मंत्र मंत्र यदणे अयं तुः देवकी सु त्रि स्यादि न

दानं त्रिणविंशो देवता त्वप्रतीतिस्तथा धार्यैर्मंत्रवर्णिकदेवतासु वनीसु कृतद्विनेन चतुर्थ्यां वामेन  
 लिनवद्विने देवतासो गतिश्च उद्धेतुं परंपरतिदोमसेव्या उत्रयेक मष्टोत्रशतादिका शक्त्या यत्सा  
 रणकस्या तस्मै इतवते दद्यात् जितायां सुलीपकेः गौः कृष्णा विष्णु रूपाय रूपाय मंत्रेणाने नरोगवात्र  
 मंत्रमादा देवकी ध्रुववापरकं सारिष्ठविनाशनं नानाशयग्रहणीकृष्णगोपीजनमष्टौ सदा कृते गाने  
 दानेन प्रदणीशांतिमिच्छति तस्या देतुं कर्तव्यं ग्रहणीरोगिणसदा इति यत्तु हरीरुद्धे उदानम  
 ध्यातिसारो गप्रतिमादानं ग्रहणीरोगप्रतिमादानं च तत्रातिसारो गप्रतिमालक्षणं चालुक्यैः सुकुर  
 गोष्पि सुप्रक्रम्य शूलरोगदर्यकरणं कृत्विज्ञेयं कर्मविपाकसा री अतीसारी सिफलकी किंकिणी  
 मूर्धुरी हृष्टशाः ग्रहणीरोगप्रतिमालक्षणं चालुक्यैः सुकुरो गप्रतिमालक्षणं चालुक्यैः सुकुरो गप्रतिमालक्षणं चालुक्यैः सुकुरो  
 यत्रैतिकर्तव्यं ताकलापसुपरिघाषायां रोगप्रतिमादानविषमं वातं को देवता तत्रैत्यादिना निरूपितं  
 इत्यतिसारो गप्रतिमादानं ग्रहणीरोगप्रतिमादानं च अथ प्रादरो नहराणि तत्र खंडवह र

५६

५६

ना ४

मन्त्रवपादवरखं च शातासपयोकां हरिणे निदते खंडशुगले पादकां अथ अक्षेन शातयो सोवलेनि  
 क्रसंमितः निष्कलक्षणं परिमाणप्रकारेण दृष्टव्यं निष्कपरिमितं सुवर्णनाश्रकारेण त्वाश्रिणमंत्रेण  
 अथ जयित्वा शोचि यत्राहाणयं दद्यात् अथ अश्विनो अथ देवतादाश्विनापतिमंत्रेण अथ जयित्वा  
 शोचि यत्राहाणयं दद्यात् अथ अश्विनो अथ देवतादाश्विनापतिमंत्रेण अथ जयित्वा शोचि यत्राहाणयं दद्यात्  
 शवीरयाधियाधिरूपघनेते गिरः आयुवाकं वः सुदानाय साष्टकं नदिष आयते रुद्रवार्तिना  
 उपनक्षणे मेतदा अथ अश्विनी प्रकाशकाश्रयशाखो कामंत्रायाह अथ दानमंत्रसुनवयदयज्ञप्र  
 करणद्वितीः इति नखहर मंत्रपादवखं च अथ वक्रपादवह र नायते वक्रपादसु  
 निदते सुनिमानवः निष्कत्रयमिदं दद्यात्सोवर्णं विमुदये वास सुवर्णं विमुदये दद्यात्पिपाकं अथि  
 पक्षेपे सुवर्णं निष्कत्रयमिदं दद्यात्सोवर्णं विमुदये वास सुवर्णं विमुदये दद्यात्पिपाकं अथि  
 द्वितप्रवणानिष्कत्रयपरिमितं सुवर्णं निमित्तं चानंदेवसुन्याः सरमोया प्रकाशकैर्मंत्रे संघट्टप्राहाण

यदद्यात् इन्द्रस्य हृतीरि ति शरमा प्रकाशक मंत्रस्य कास्यवयो च ते सि प्राणिः सरमा देवता विष्णु प्रहंदाः सर  
 मा प्रजायां विनियोगः इन्द्रस्य हृतीरि प्रजा चरमि सह हृदंती पणयो निधीत्वा अति हंती यसात्  
 न आवेक्ये थार साया अंतरं पर्यासि अन्यो पितृ स्वशाखोक्तः सरमा दिदेवंता अथ प्रकाशका याद्याः  
 इति वक्र पाद रहरम अथाऽधिको गहरम शातत पत्रोक्ते अजा सिधु सने वेव अधिको ग  
 जायती अजातेन प्रदातया चित्रे वव सम चिता अजाया प्रजापत्या अजापतेन त्वादि स्य  
 सं प्रजापते रुद्रे शेतो मजी यथा शक्त दक्षिणा धितो अजापत्या अजापतेन त्वादि स्य  
 अजापति प्रकाशक मंत्राः न वयं हय प्रकरणे दिशु प्रदक्षिणा अजादान मंत्रे पितृ वेव दक्षिणः  
 यधिको गहरम अथ पाद रोग हरम शातत पत्रोक्ते मार्गदा पाद रोगी स्याद अजादानं समाचरे  
 त्वा अजापि रवे उच्च हरी क प्रकरणे ऽग्नि प्रजां कृत्वा त्राहणा यदद्यात् अथ त्रिविधोः तत्र सो वर्षा  
 ष्वाग्नि प्रजा अत्र त्रैलोक्ये ज्ञा विव शिवा वा द ह जये दिति इति पाद रोग हरम अथ वल्मीका

१०० श्री १०० १०० १००

रोग हरम अथ लगीता पतितेन तु सं पक्र कृमी कय प्रमा ह्ये श गो मूत्र का वका हरो मासा ई न वि  
 द्याति सा हिरण्यं घृतं दद्यात्पातक म्पविशुद्धये त्राया वकत्र तस्वरूपं कृ प्रकरणे निरूपित प्रा  
 दान मंत्र सुभाय अतो पक्रम पदतो दक्षिणः विशेषा त्रमा जायते यदित त्रापि वि निर्वह वि  
 दां वरः अति रूपं प्रदद्याद्दे रोग शो अर्थ मात्मनः आत्मनो रोग शो अर्थे व्याधि प्रति रूपं प्रति मां दद्यात्  
 अर्थः प्रति मा लक्षणं तु व्याधितर तम सं वै प्रकरणे ते लि क्ष स्युः इति वल्मीक रोग हरम अ  
 थ प्रकारं तेरः ली पद रोग हरम कर्म विपाक सं सं यद्दे स्व गो त्र स्या पि ग मना श्ची पदी जायते  
 नरां यो न्या म सं कृ प्रजा त्रय चंद्रायणं च रे वामा सं पयो अत म् वै वत स्मा द्रोगा दि सु स्यती स्व गो  
 त्र स्वो अत्र लिंग म विव क्षि नो यो निश दे न च मैथु म सा धन मि दि म ल स्यती अत्र च उंसयोः रुतयो  
 पि रोगी लो रेत कर्म रोग हरं त व ति वां द्रा प्यणं पयो व्रतयो र्ज्ञाणं क प्रकरणे अथा इति श्वा  
 पं दरो ग हरम अथ श्ची पद रोग प्रति मा दानं अथ पाद रोग प्रति मा दानं पत लक्षणं वक्रुके सु उ

रोगेष्विदिनाश्रुत्तरीगदर्यकरणोक्तमेवात्रापि... प्रजादीनिकर्तृव्यता... रितानायांरोगाप्रतिमादन  
विधायतंकोदेवतातत्रेयादिनानिरूपिता... इतिपादरोगप्रतिमादन... इतिप्रो... इति...  
विश्वेश्वरविरचिते... एतन्निवृत्तकर्मविपाकपरिच्छेदपादरोगादराणि... अथत्वगुणद्वाराणि  
कर्मविपाकसमुच्चये... पुरुषंताषयेत्यर्थः सत्त्वदीपयुतोसवेत्वांदायपत्रयं कुर्यात्प्रदद्याद्दोषधा  
निचांवेद्यकोक्रानिविद्यायशक्त्यन्नाहणतोजनमृद्वेशाखेपधमिचक्रमर्ददीनिचांदायणखरूपं  
प्रकरणेनिरूपितम्... इतित्वगुणद्वारा... अथद्विधर्मत्वदरम... कर्मविपाकसंग्रहः... पुरुषतमग  
दोषाच्चगविमेषुनदीषः... इतिद्विधर्मोपादसौ... कुर्यात्कुरुतस्यादिदेशतः... प्रायश्चित्तंयथाप्राप्तंतीदोष  
त्यमुच्यतेपुरुषतस्यादिदेशतः... प्रायश्चित्तं कुर्यात्दिसत्रय... प्रदुर्भिकं कुर्यादिसत्रय... प्रायश्चित्तं  
संज्ञादेशतः... कर्तव्यशकारस्यप्रायश्चित्तं कुर्यात्कारणस्यापिपापस्यासादनायसुखस्रगवेत्त... प्रा  
यश्चित्तोपकारस्यप्रायश्चित्तोपक्रमपद्धतौनिरूपितः... इतिद्विधर्मत्वदरम... अथपादमाहरम... ॥

७  
२६५

पुष्प

मविपाकसंग्रहः... अत्रलेपंतियोत्रेषांविषया... अर्धजन्मनि सोऽर्धजन्मनिपानावात्मनवेत्तविशोषितय  
सप्रयंतनिवृत्त्यर्थमुपधासत्रयंतवत्त्वांजीजयेत्सद्विजासद्व्यात्यंवासत्संख्ययाविता... अत्रापिप्रायश्  
चिदुक्तं... अत्रलेपनविनाशनमपहारीवाविषयाः... अर्धजन्मलेपनाद  
यः... इतिपादाहरम... अथद्विधर्मोपादसौ... वेधयन्... ब्राह्मणान्धयोदिस्याद्दुरो  
गानवेत्तः... तस्योपसेमनंवेद्ये... अर्धजन्मलेपनकारयेत्... इत्यासीत्ये... अर्धजन्मलेपनविनाशनमपहारी  
माणात्मकः... माणः... अर्धजन्मलेपनपरिमाणप्रकरणस्यध्यातिसुवर्षादनयाः... कुर्यात्पदिनाप्यथवापुनः... उमामदि  
श्वरंरूपंघषना... अर्धजन्मलेपनपरम... अर्धजन्मलेपनद्विजासमाकुर्याद्विचक्षणः... एकवक्त्रोसवेत्तत्रिनेवश्मदाह  
जः... अर्धजन्मलेपनद्विजासमाकुर्याद्विचक्षणः... एकवक्त्रोसवेत्तत्रिनेवश्मदाह  
वीशिवृष्ट्यैकपाणिना... अर्धजन्मलेपनपरम... अर्धजन्मलेपनद्विजासमाकुर्याद्विचक्षणः... एकवक्त्रोसवेत्तत्रिनेवश्मदाह  
वृद्धतो... निष्फलेसवेत्त... तस्मिन्नारोग्यदेवेशशुभयासदितंघुं... अर्धजन्मलेपनपरम... अर्धजन्मलेपनद्विजासमाकुर्याद्विचक्षणः... एकवक्त्रोसवेत्तत्रिनेवश्मदाह

१५००००

सृजयेत् ॥ मूलमंत्रश्रीवपंचाक्षरं ॥ सचश्रुलरोगहरविश्रुलदानिदरितः ॥ होमेरुद्रगायत्रीमंत्रश्रुद्रगा  
यत्रीसर्वत्रेतिविनिश्चितस्ययेत्समाणतवासासर्वत्रेति सर्वशहस्पद्रज्ञाव्यतिरिक्तो विषयश्चयवा  
त्ममंधोरुद्रगायत्री ॥ अत्र सर्वप्रज्ञादिति विकल्पनां गना वैजयंतो यतो होमे विकल्पन मंत्रा विभ्रस्प  
तो ॥ प्रज्ञानत्रं रं कर्तव्यमादा ॥ ततो ब्राह्मणाम्द्वयद्विंशति को विदो अत्र तत्रोपसंपत्तेश्चैवात्मने  
दिनश्रुतशां यु लीय के स्य प्रज्ञा तत्वा प्रकल्पयेत् ॥ होमं च कारयेत् न समिदा ॥ उपतिलैरपि मंत्रश्रु  
द्रगायत्री सर्वत्रेति विनिश्चया ॥ रुद्रगायत्री लिंगपुराणे लिखितं सर्वश्रय विप्रदेशे श्लोदसाय श्री  
महितश्री रुद्रप्रवोद ॥ अत्र सर्वश्रीवेदया सकृपिः श्री इंद्रो देवता गायत्री छंदः विदितार्थेति निय  
गः ॥ एवं रुद्रगायत्री प्रज्ञाय होमे च सर्वत्रेति निश्चय म विदाद्यतिलहोमे प्रक्रमेण मंत्रा त्तराण्यपि  
विकल्पेन विनियुक्ते ॥ यद्वा प्रवक्तव्यं स मिदो ब्रह्मया सुधी बुद्धयेति मंत्रेण ब्रह्मया दा ज्यमावता ॥  
तिलोश्च मूल मंत्रेण स्येवं मंत्र क्रमो तवैवा होम संख्या प्रत्येक मष्टोत्तरशतां व्येक मंत्रस्यार्णो द्वा चक्र

६३० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६० ११६०

रहरदशितशकडुद्रयेत्स्याः कापिब्रह्मपि रुद्रदेवता गायत्री छंदः ॥ आयुष्वेमेर्विनियोगा ॥ कडुद्राय चेत  
समी लुभमा म्रतव्यसे चोत्तमशान्महदो मूलमंत्रः पंचाक्षरी वा रुद्रगायत्री ॥ होमानंतरकर्तव्यमाहात्म्य  
ब्रह्मोद्वासना त्रैमिद्युने ब्राह्मणयत्ने ॥ दृष्टनापरविष्यस्य संतस्य पुनि वेदयेत्वा मंत्रेणानेन विधिवद्दुरो  
जितात्मवाच ब्रह्मोद्वासनेन सच्य एधो क्रमकारेण प्रज्ञाणेना विनी विसर्जने ॥ मिथुनसुमामा देश्वरात्म  
दानमंत्रमा ॥ कौलाशवासीनावा उमया सहितः परः विनेत्रश्रुद्रोदुद्रोगमाश्रयपीहना तत्र  
ब्राह्मणान् संसम्प्रु प्राणिपत्यज्ञमापेत्ब्राह्मणस्तोजयेच्चापि स्वयं बुंजीतवाज्ञताः एवं द्वा मस्तुदाने हुरु  
गायत्र्यस्यते ॥ इति दुद्रोगहरोमामादेश्वरदाना ॥ अथलृत्तिकत्वदरस्य ॥ शातातपशो क्त ॥ गोब्रह्म  
निकीचे वप्राजापत्यशतचरेत् ॥ त्रतांते मेदिनीदद्यात् ॥ अथैव तारतौ ॥ न मे र्नावेमेदिनी प्रतिनिधितेन  
गांपयस्विन ॥ मलं कृत्वा दद्यात् ॥ गोदानमंत्र सुनवयह्यज्ञप्रकरणे प्रदशितं ॥ प्राजाप्यलक्षणे कुरु प्र  
रणे लिखितं तारतप्रवण विधिस्तु तारत एव दशिव ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामियानि देयानि तारतो वाच्यमाने

त्रिप्रेस्यो राजस्यर्षिपर्वणिपर्वणिस्त्रिवाचं विधेरादौ तत्कार्यप्रवर्तता समाप्ते पर्वणिततः स्वशक्त्या प्रत्येदि  
 जाश्रादौ तु वाचकं घृण्यवसंगंधसमचित्तमा विधिवन्नो जयेद्राजन्मधुपायसमुत्तमसतो मूलफलप्र  
 यंपायसंमधुसर्पिष्ठा अस्तिकेतो जयेत्याज्ञो दद्याच्चैव युद्धोदयश्रास्त्रवाच्येयादिविधिध्वानं पुरा  
 णपाठः तस्याहोस्त्रिवाचं स्वागृह्योक्तप्रकारेण स्विवाचनं विधाय ततः कार्यप्रवर्तता उक्तकर्म  
 नंतरं तारतपाठरूपकार्यप्रवर्तता यथर्थो सयः खंडो वा श्रीतुमिच्छया वयेदित्यर्थः ततः कार्यप्रवर्त  
 तस्यनेनैवाथर्ष्यांतरमपि मुच्यते स्वस्त्रिवाचनं विधाय सदनं तत्र कार्यप्रवर्तता ततः सुराणपाठ इति पाठत्र  
 त्रं कार्यप्रवर्तता दनं कर्त्तव्यं घृणालंकारादि विवरणरूपं कार्यप्रवर्तता ततः सुराणपाठ इति पाठत्र  
 सर्वसुराणसाधारणं तथा समाप्तौ ब्राह्मणो जने स्वशक्त्या उरणपाठकं दजावसर्वपुराणसाधारणं  
 आदौ ववाचकं घृण्येति समाप्तनंतरं मादौ प्रथमतो वाचकं पाठमात्रप्रकारेण घृण्यपत्रात्रदर्थ्या  
 र्व्यातारं दजायिष्यां तत इतरा द्विजान् प्रयेत्वा दुक्तप्रकारेण घृण्येदित्यर्थः आसी कइति घृण्योक्तमधु

पायसादासीके दद्यादित्यर्थः आसी कइत्यत्रैकवचनमं विधिध्वानं प्राज्ञं विद्वांसं आचाप्येकत्ववित  
 त्तमस्य एवमादिपद्योपनिशयसत्तापद्यादि उक्रमेणाह अथ घृण्ये अमुषे अमादके असमचित्तसं  
 नापद्योपि वासां सिद्धं संकलान्प्रदापयेत् तर्पणानि च सुखानि भन्य मूलफलानि चातर्पणानि स  
 र्कंदनद्राहारवर्चराहानि सर्वकामयुगोपेतं विधेस्यो नंतरं प्रदापयेत् विराहपर्वणितथा वा सोस्त्रि वि  
 धानि चातर्प्ये सनेन ब्राह्मणमवृण्यते उद्योगेतरतश्च सर्वकामसमचित्तस्यो जने जयेद्विप्रा  
 धमाल्ये रत्नं कताम्रं तपोमपर्वणि राजेंद्रदत्त्वादानमनुत्तममा अमुत्तमं गोदाना विवृतः सर्वयुगोपे  
 तां मन्त्रे दद्याद्युसंस्कृतस्योणपर्वणि विप्रेस्यो लो जने परमर्चित्तस्यो गावश्च दियारजेंद्रवाप्याप्यशिव  
 रास्यथा कर्षपर्वण्यपि तथा लो जने सर्वकामिकं विप्रेस्यः संस्कृते सम्पन्नं षण्दासं यतामानस्य स्यस्य  
 र्वणि राजेंद्रमोदकेः सयुद्धोदनेः प्रपै अतर्पणे श्वेव सर्वमन्त्रं प्रदापयेत् तदा पर्वण्यपि तथा मुद्गमिथं  
 यदापयेत्स्त्रीपर्वणितथा जेतर्पयेत् द्विविधं द्विजात्रासतः सर्वयुगोपेतां मन्त्रं दद्याद्युसंस्कृतस्यो

तिपत्रेणपितयासोजनं सर्वकामिकं सखाय्यमणिवासांसिहविषासोजयेद्विजाशत्रय्यमणिवासां  
 सिद्धादियर्थमौसलेसार्धयुणिकंगं धमल्याबलेपनमरुद्विंशतीतथापार्थपायसंचरुसोजनमपार  
 लेपारणराजयथाचतरतर्षनापाणेपारणइतिइतरपर्वपारायणेपारायणेपारायणेपाठेअथा  
 वरप्रद्वेकप्रकारेणवस्त्रलंकारसोजनादितिःयथाशक्राएजयेदियर्थसमाप्पसर्वाप्रयतःसंदि  
 ताशास्त्रकोविदःसुतेदिनेनिवेश्याथसौम्यस्वाधिसंघतमामुक्तावरधस्तत्रछविरेखास्त्रलंकृत  
 अर्चयंभयथाभयगोधमाल्यैःपृथक्पृथक्सेहितासुसुकंतत्रप्रयतःसुसमाहितमक्षेत्रेनैवैष्येयैकैल  
 केर्विचित्रैःश्लोः।दिरण्यंस्वसुवर्षं वदहिणोतत्रदापयेत्वांपरेष्वेकोत्तकैगीतत्रयादिसिध्यासुव  
 र्णोडशमाणात्मकेपुनःउराणश्रावयितुंहीहिणातथाशक्रसुत्सरिणदिरण्यंत्स्मायतेत्यश्रुदहि  
 णंदश्रुददेवताकीर्त्तयेत्सर्वांनरनारायणोत्तथा।ततो गंधैश्चमाल्यैश्चस्त्रलंकृत्यद्विजोत्तमात्रात्पर्यये  
 द्विविधैःकामैःधन्यैरजादिकैस्तथा।उक्तवसुचविषेण्यथावत्संप्रदापयेत्वाचकंतरतश्रेष्ठसौ

जयिन्नास्त्रलंकृतमत्रालेणप्रसन्नेषुअसन्नास्त्रदेवतावाचकेपरिवृष्टेषुनाश्रीतिरुत्तमस्ततोबि  
 रणंकार्यंसंदितांनरतर्षनाचुकवसुचविषेश्चिमारस्यततोविवरणंकार्यंसांसिहसंदितांनरतर्ष  
 येतेषुसुराणोपक्रमप्रकारो लिहितःइतरसुसुकरजायपक्रमोपहारयोर्थयोचितयोऽप्योश्रुति  
 दससमंश्रुत्वायथोचितयोऽप्यइतिहाससमंश्रुत्वायथावदुत्तरशास्यतात्माश्चिह्नंत्वात्तनार  
 तमश्रुदयादीयतइतिश्राहानितानिचतत्रस्यर्त्वापक्रममेसमधौवद्वंयदविति।त्रालेणेत्यायथा  
 शक्तिरुच्योचतरतर्षनामहादानानिदेयानिरुक्तानिविधानिवागावःकोपदेहानिघंटानिमुमना  
 रासर्वकामयुणोपितायत्रानिविधानिवासरणानिविवाणिकमिध्वरिसंनिकोचमोवाहनानिचं  
 यानिहयामत्राश्रवारणात्राशयनेषाविकाश्रैवसंप्रदनाश्चस्त्रलंकृत्यायद्युद्धेवरकिंचित्दृष्टमि  
 द्दसुत्तत्रद्वैद्विजातिस्यआत्मादासाश्चस्त्रनवांश्रुदयापरयादद्यात्कमशःपातपारगःआत्मादा  
 साश्चस्त्रवदति।एतच्चकेसुतिकन्यायेनेतरवस्त्रनो कुट्टेवाविरोधेनदेयस्यतिपादनार्थंनत्वात्मा

नाह्येयत्वप्रतिपादनाया अथवात्मानः करणं चित्रस्पदानांतत्रत्वांदासाश्चस्ववः शुभ्रसमादासा  
इत्यर्थे शक्तिस्तूनमात्स्वत्वात् अतश्च विमात्सरा एव करोति वा विद्यादानं पद्मं अतिश्रितस्य सर्वं  
यज्ञफलं प्राप्य स देवैः सह मोदते यश्चास्विकारोत्तरं तं प्राक्चैत्रं न तथा ध्यान महाया लोकोका  
बुद्धरतिद्यसौ ॥ लोकास्वर्गदिलोकाश्च उद्धरति आत्मसात्करोतीत्यर्थः ॥ इति तारतदरिवंशे ॥ २४५ ॥  
राणां च प्रवर्णविधिः ॥ इति तत्र किं त्वहरम ॥ अथ वर्धरांगत्वहरम ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ लोह  
हारी च उरुषो न वेद्देवर्धरांगका ॥ लोहपलशतं दद्यात्तुपोष्य स तु वासरमां पत्रस्वरूपं परिमाणप्रक  
रणं त्रिरूपितस्यै स्पष्टं धिलोहदानं त्रं सुनवप्रदयज्ञप्रकरणं ॥ इति वर्धरांगत्वहरम ॥ अथ  
कुक्षारुहं ॥ त्वहरम ॥ अथ कंडूशिरो गहरम ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ तैलवोर्येण सवति नरकं दूय  
ते सदा ॥ उपोष्य सोपि विप्राय दद्यात्त्रैलं घटद्वयम् ॥ इति कंडूतिहरम ॥ अथ शालींगत्वहरम  
शातातपत्रोक्ते ॥ ॥ वस्त्रदारी च शालींगसप्रदद्यात्तु शालीनः ॥ देमनिष्कत्रयं वस्त्रं दुग्मं च दद्यादित्यर्थे ॥

अथ स्वरूपं परिमाणप्रकरणे ॥ इति मंत्रवस्त्रयुग्मं पीतवर्षं ध्यानमंत्रतादृशां लिंगदरे दर्शनात् ॥ दिरूपद्वय  
मंत्रो नवप्रदयज्ञप्रकरणे वर्णितः ॥ ॥ वस्त्रदानं मंत्रमाह ॥ पीतवस्त्रं युग्मं यस्माद्दत्तुं देवप्रीत्यर्थं मि  
वदद्यात् ॥ इति शालींगत्वहरम ॥ अथ कंडू मंडलहरम ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ स्वाम्यांगनालिगमं  
नायते दद्रुमंडलम् ॥ कुत्वा लोहमयी धेनुं ॥ लणत्रिप्रमाणं ॥ कार्पासतारं संयुक्तो सप्तशतसंख्य  
ताशं दद्याद्द्विप्राय विदुषे बापं मेघीयतामिति ॥ पलस्वरूपं चारस्वरूपं च परिमाणप्रकरणे निरूपितम् ॥  
अथ यद्यपि सामान्यतः आपं मेघीयतामिसुक्तम् ॥ तथापि दद्रुमंडलनिदानस्यै पापं तत्पापकार्यं च तो  
रोगवाहीयतामिसुद्धार्यकार्यं सादिसमाहितम् ॥ लोहमयी धेनुं दद्यात् ॥ इति दद्रुमंडलहरम ॥  
अथ गजवर्मत्वहरम ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ विश्वस्त्रचार्यागमने गजवर्मप्रजायेतपस्य क्लिष्टार्थं य  
यश्चिन्नं विधीयते ॥ विश्वस्त्रचार्यागमने गुरुतल्पप्रायश्चित्नातिदेशात् ॥ षण्णिकं प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यं प्राय  
श्चित्तं नश्चेन्न निष्कृतिरतिधीयते ॥ सावकृद्गदिरूपाश्चातदुनयमपि प्रायश्चित्तं नश्चेन्नोपाहोतत्रव्याधि

यस्य लघुसावेन द्वयो विकल्पश्चावगंतव्यः प्राजापत्यादि स्वरूपं कृत्वा प्रकरणे निरूपितं प्रायश्चित्तोपक्रमकारं सुप्रायश्चित्तोपक्रमपद्धतौ दर्शितं। एवं प्राजापत्यादिरूपं निष्कृतिं नास्यतीति धीयते राविक्रम्य दर्शयति। कृत्वा रूपं मयं चें निष्कृतिं शतिसंख्यायां सर्वोपस्कर संयुतां ह्यत्रोपानह संयुतां मद्दद्याद्विषयविधिवदि मं मं सुदीरयेत् सर्वोपस्कर संयुता मिति सुवर्षं शृगादयं पस्कराते वै प्रहणादयं सुवर्षं दर्शितां तथा भ्येवोपस्करात्तय रोगहर प्रकरणे सुवर्षं वा द्वियं विधिसुदर्शितां यद्यसुपस्करे सुवर्षं राणमपि परिगणनीं तथा विधे नो रजतमयी कृत्वा तद्व्यवधानोपुराणमपि रजतमयत्वसिद्धौ नम्यं सुवर्षं रजुरापेक्षेति पंत पस्कररूपसुराणी लोपः। इत्युक्तं मंत्रमाह। सुरती वैशवी मया नि सं विष्णुपदे स्ति तां गोदानं मया दत्तं मम पापं व्यज्जहत्। इति मंत्रमंत्रमाह। अथ वसुमंडल त्वहर मराता तपत्रोक्ते। न कुलस्यापि हनने ज्ञाप्यते वसुमंडल म॥ निष्कृत्वा मितं दद्यात् न कुलं स विष्णु इति निष्कृत्वा तं परिमाणप्रकरणे वैश्वानरो राजतौ वानिष्कौ भवतः। विशेषां सुपा-

कृत्वा मंडल १६८ अंतमंडल १६८ निष्कर्ष १०००

दानम। अथ वसुमंडल म॥ अथ कृत्वा मंडल त्वहर म॥ अथ श्वेतमंडल त्वहर म॥ ताता तपत्रोक्ते। मयूर द्यातने वैश्वानरो यते कृत्वा मंडलं निष्कृत्वा मिति तं नवर्षं मयूर शिखी। निष्कृत्वा रूपं परिमाणप्रकरणे दृ श्रितं म॥ इति कृत्वा मंडल त्वहर म॥ अथ श्वेतमंडल त्वहर म॥ इति श्वेतमंडल त्वहर म॥ इति श्वेतमंडल त्वहर रोपं पलत्रयमिदं दं दद्यात्। इति पलत्रय परिमाणप्रकरणे वर्षितं म॥ इति श्वेतमंडल त्वहर म॥ अथ विसर्पहर म॥ कर्म विपाक संसृज्यं मध्य स्पृशदा तातु विसर्पव्याघ्रिमाचनत्वे वा मा संपयोत्रतं कुर्यादद्यादंते पयस्विनी। गोदानं त्रीनव्यदयज्ञप्रकरणे दर्शितं। पयोत्रतस्वरूपं कृत्वा करणे दर्शितं म॥ इति विसर्पहर म॥ अथ विसर्पहर नागदान म॥ वैश्वानरो म॥ सप्यां सुयः स्वाद यतिस विसर्पं तैवे शदाने नोपशामः कार्यो होमेन च विशेषतां वक्ष्यमानं। न होमेन चैव सर्थः पले नवात दहेन तैवे शदाने वा सुनाः। कुर्यान्नागं सुवर्षे न फलपंचक संयुत म॥ माणिक्या निच देया निचये कं फलपंचकै रले पुष्टे तथा दिव्य वज्रं लोचनयोस्तथा। एवं कृत्वा सुतेनागं कुं कृत्वा मेनां सुते पयत्वर

क्रवक्षेण संवेद्यतां प्रपात्रे परिचये सेत्रा पात्रस्य च परीमाणं पलानामष्टकं विदुः। उपचारैः षोडशानि रश्मि  
 नागस्य मश पललक्षणं परिमाणं प्रकरणे निरूपितं। अर्द्धये वक्ष्यमाणं होमं त्रैलोक्यं। अत्रान्तमोथाहा  
 आचार्यः सर्वशास्त्रज्ञो धर्मशास्त्रविचारदः। होमं वापि प्रकृष्टं तस्मिन् दास्यति तैः श्रुतैः। नमो सुसर्पस्य  
 इति त्रिसंज्ञैः। क्रमस्य अष्टोत्तरसंख्यादि तवेदिस्यर्थः। नमो सुसर्पस्य इत्यस्य तिस्रणाम्नित्राणि  
 सप्येदिवता अत्रुष्टुष्टं दः। क्रमेण समिदा ज्यतिलहोम विनियोगः। नमो सुसर्पस्यो ये केव घृथिव  
 मत्रये अत्र रक्षियेदिविद्वेषः सप्येनमः। यदेवारी चनेदियाये वास्ये स्परश्मिष्टायेणाम सुस  
 दः कृतं तेषः सप्येनमः। यदेवारी चनेदियाये वास्ये स्परश्मिष्टायेणाम सुस  
 प्येनमः। एतिसंज्ञैः हविहोमं धृति तत्रा ज्यहोमः अत्र परोविशेषं ज्ज्वा ज्ज्वा सुव्यवशि  
 ष्ठाना ज्यविष्टपाशां तरेखापयेत्वा तै च विदवः सपाताडुस्यते तिन च संपाता ज्येना चार्यै री गिणो गा  
 न्याति निध्यादि तित्तदेतदेहाह। उक्त्वाऽऽनिसंज्ञतेऽपात्रे वैकीकृतं स्वयंशा आचार्यं गानिचास्य

ज्यरोगिणं तु विसर्पिणं अत्रुष्टुशादितिः क्रमांशस्य स्योस्यै सवतिगात्राप्यपपरोगताः। च्छमि  
 मादितिः क्रमादिति। च्छमि च्छेती तिससृचमारस्य क्रमातिष्ठतिः। अत्रिरिस्यर्थः। यथासो रोगास्थ्याप  
 नेमारी गोलं वती। तिसंज्ञेयेन कथनं। तदेवे विविच्य कथयतां गात्राप्यपपरोगतसंज्ञातिगात्राप्य  
 प्येगानियथारोगतः रोगादस्य गतानि सवती। तथासंज्ञेयेदिस्यर्थः। सर्ववियं वनपियथायोग  
 संमाज्ञेयेदित्यर्थः। च्छमि च्छेयासीति संज्ञेये सप्येराजात्राणि अग्निदेवता द्वितीययोरामास्ये वा  
 मिष्टेवता सर्वत्रलिंगो क्रदेवता। आद्यानुसुवित्प्रगाथस्यो संमाज्ञेये विनियोगः। च्छमि च्छेयाद्यो  
 रिण्यांतरं सुप्रयसुवा। त्रिंशद्दमविराजति वा क्रपतंगायशिष्रियां प्रत्यस्यवहृत्तुलि। संमाज्ञे  
 नानंतरवत्तयमादं प्रयलेचमुगंधिं च प्रतिदारुवनिक्षिपेत्प्रकल्प्या कलसंक्रया इति षे क्रं  
 लैः श्रुतैः नमो सुसर्पस्य इति सांज्ञेयलिंगके रपादिरप्यवसां चिचये पवमानाः सुवाकताः। आपो हि  
 षामय इति शत्रोवातमुदीस्ये त्राग्गुलुवेत्यादिग्गुलुः प्रसिद्धे मुगंधिकपूरुवादिप्रतिहारुदेव

कसर्करसवृद्धौ। अतस्त्रस्रवनायत्रश्रुततोएतात्प्रतिषेककलहोनिश्चिपेत्प्रकल्पानिश्चिपवतं  
 चकलशमनिषेकोपयुक्तैस्त्रीर्थादिजलेःपरिघर्षेकुर्यात्नागधजासदेशात्प्रश्चिमुवागेकल  
 शंस्थाप्यातीर्थोदकैर्नघरथित्वा। गुगुल्वादीन्स्रत्रनिश्चिपेत्। नागंश्चप्रतिमायांश्चजयित्वा। प्रश्च  
 स्थापितोदककलशेनवयहयज्ञोक्तप्रकारेणवरुणमावाससंप्रदपनमोअसुसर्पस्यइत्यादितिमं  
 त्रेतदुक्तमष्टाविंशत्याध्याय्याऽनिषेकमंत्रमाह। नमोसर्पस्यः इत्यादिनाश्रापोद्विष्टामयइत्येतेन  
 अत्रानिषिचेदित्यांद्वाहारांतस्त्रिगौरनिषेकप्रकाशकेर्दिरण्यवर्णाइत्यादितिःसाहिनमोसुस  
 र्पस्यः इतिवृत्तेनाऽनिषिचेदित्यर्थः। अयंचरुसोअतमेवप्रदर्शितः। शन्नोवात्सुदीरयेदितिप  
 तेनचस्वसाखेकशोतिपाठउपलक्ष्यते। शन्नोघातःपवमानमित्यादितिस्त्रिरीयशोतिश्रप  
 रिताप्रायांश्चर्षिताऽयंचशातिपाठअनिषेकानघरंकार्येऽततःकिंकुर्यादित्यत्राह। अत्सादित्य  
 गरुचिरलिपेदगरुचंदनेऽततःसुक्तावरधरःसुक्तामात्पाःसुलेपनः। स्वयंसमर्चयेन्नागंश्चयुष्य।

५५५  
 ५५५

क्षताहिसिंसर्पदेव्यसंज्ञेणआचार्योपिसमर्चयेत्। अनंतरंसर्पराजमाचार्यायदिवेदयेत्।  
 त्सादितं। इत्यादि। त्सादितंगः। शोचितां। वधेनापाकृतशरीरं। लिलइत्यर्थमसुसि। यथात  
 वतितथाअगरुणाश्रीवत्सादितिअन्विषेत्। स्वयमितिश्रीगोएतत्समर्चने। शानकाले। रवंकृत  
 जातोयवेदासर्पदेवयोमंत्रोत्रैवहोमोग्धेनदर्शितः। अथनानागदानमंत्रमाह। योधत्तेष्टयि  
 क्तत्सांशिलवनकान्। राराश्रीयस्यशय्याचपावा। देवस्यशाङ्गिणः। स्वीयदानेननगोसोत्तु  
 व्याधिमपोहत्। त्रैसर्पिकविकारं। क्वदोभाजितंतथारक्तदोषोद्धवंवापिमहत्तः। पिष्टतौपि  
 अंगप्रत्यरगसंभूतविकारं। मेयपोहति। एवंदत्वात्तं। नागमाचार्यायसदाह्निपांत्समोप्रणम्यशिरसा  
 शनैः। अतपदेवजेत्वा। आचार्यं। सुपलक्षणां। रमुप्रजनें। कुर्यादिति। यावत्तत्र  
 चार्यस्यसुज्ञातत्वरुहंप्रविशेत्सुधी। ब्राह्मणान्नलोजयित्वा। त्वस्वयंजुजीतवंधुभिः। इतिविस  
 र्पहरनागदानं। अथद्विगंधं। गत्वहरमांशतातपत्रोक्ते। सोमं। धिकस्पदरणाद्वगंधं। अंगप्रज

यतो नक्षत्रमेकं तु पश्यानां बुद्ध्या ज्ञातवेदसे क्षीणं धिकुत्कारं सुगंधिकं च तातवेदस इत्यनेन ज्ञातवेदसे सु  
नवा मसो ममिच्छत् पादानौ प्रतो हो मे मंत्र इष मवकी प्रस्यो प्रस्यो द्वित्री तद्दरु ररु उक्ते... दुर्गो धंगव  
दरु... अथ वस्वंगं अथ दरु... याता तप प्रोक्ते... मभु चैरो सु सु रुषा जायते वत्स गंधवा चासदद्यान्मभु  
धे सं व्रत पोष्याय द्विजो व्रमे मभु धे उ वि धनं तु द्यय रोग हर प्र कार ए सु उ धे उ वि धनं द शित म... श द्वा प्राय  
श्रिं सं स सु च्छी य तो त द्वा ध्या उ सा रे ए चो ब्रा यण दिक ल्प्या चो द्रा यण दि स्व रू पं च क्क प्र क रणे ति दित म  
इति व स गं धं स व द र स... अथ व यो रोग प्रति मा दान म... त स्र ह णं चानु क्तो सु रोग छि त्या दि ना म्बु ल  
रोग प्र क रणे ति दि त म... श्रा पि वि द्वे यं इ ति क रं व्य ता क ल... सु रि सा भा यो रोग प्रति मा दान वि धा वा तं का  
देव ता त त्रे त्या दि ना ति रू पित... इ ति व यो रोग प्रति मा दान... इ ति य... इ ति द्वा... अ थि... वि... र वि र  
ते म ह्य... ति धा ने नि वं धे... र्म वि... क परि... इ ति... रोग ह र णि... अ थि... इ ति... या ता त प  
प्रोक्ते... ब्र ह्म दान र क स्या तो धं दु कु र्णी ज्ञा य तो प्रा य श्रि तं प्र क र्णी त त्पा त क वि शु द्ध तै या... प्रा य श्रि तं

षड्वर्षिकं कुर्वीत पापस्योपलेगिनहीणत्वात् प्रायश्चित्तोपक्रमप्रवृत्तौ पक्रमप्रवृत्तौ बुद्धि  
तनं पवं क म प्रायश्चित्तस्य तदनेन तर क र्त्तव्यता म ह... ब्वारः कलशाक्त्या पंचपल्लवसंयुता पंच...  
काः सितवस्त्रेण वेष्टयेत् अथ यानादि मृत्का स्रीयोदकसुररिता क मये पंचकोषोतानाना विप्रफलादि  
ता। सवोषधि समासुक्तास्थाप्या प्रति दि शंत ता पंच पल्लवः आयाः श्व स्य वट ह न्नी डं व र णां मृ द श्व र ष्या वा  
स्मीक नदी संगमद्गो कुले स्या याद्याः। क पाय अथ प्राः श्व था दी नां त चा प्र षे ति दि शो ष्ठ द्वा दि दि द्वा। एवं  
चतुरः कलशा वस्थापयित्वा तन्मध्ये परं क रं स्थाप्य तस्योपर्य ष्ठ दं लं रो प्यं पत्र नि धय त व वा सु दे वं वा  
पये द्या द्य रौ प्य म ष्ठ दं लं पत्रं मध्ये कुं सं परि न्य से द्वा तस्यो परि न्य से दे वं उं ड री कं च त्रुं ज्ञो प ला ह्नी इ यं  
माणे न सु व र्ण नि वि धि निर् मितं य जे सु क ण सृ क्ते न त्रि काले प्रति वा स र श्च य ज मानः सु ले गं त्रेः पु ष्प ध्रु पे  
यथा वि धि इ ष्ठा दि कुं ले सु त तो ब्रा ह्म णा व ह्न वा रि णाः पा र ये यः स्व का र वे दा च अ षे द ष्च न्त ती र श नी द शी  
शे न त तो हो मो य ह शो ति ष र स र श्च त व कं डे वि धा त यो घृ ता कै सु ति ले य नै... द्वा द श्वा ह मि दं क र्म समाप्य

द्विजखं गवः सदा सनेयजमानस्याऽतिषेकं समाचरन्नापलाहार्हप्रमानेनेति। पलनक्षत्रं परिमाणप्रकर  
 णेनिरूपितमापलेनपलाहर्हनेवापलचतुर्थीशेनवेसर्थायजेत्पुरुषसूक्तेनेति। यजेत्तुष्टयैवाहजाप  
 कारश्चपरिताप्यायां चरुषसूक्तविधानेदर्शिताऽद्वादशदिनसाध्यमेतत्कर्मैतन्नप्रतिदिनंप्रातर्मध्य  
 दिनंसायंकालेष्वाचार्येनप्रजितंदेवंयजमानोपिगंधधुष्यादितिः। प्रजयेत्वातघ्राष्ट्रंस्थापितेषुचतु  
 र्षष्ट्रंवाहिकुंसेषुप्रवेदादीन्यायेयुः। प्रवेदादिवेदचतुष्टयपारायणंकारयेदित्यर्थः। प्रवेदंतेज  
 येदंदक्षिणकुंसेयचतुर्दशमकुंसेअथवागिरसेसुत्रसकुंसेसामवेदं चप्राययेत्वावेदचतुष्टयवि  
 दामनावेयथासंतवशाभ्याध्यायिसिद्धत्वंनिर्वाहणैश्चत्वारिवेदपारायणानिकारयेत्वाहस्वार्थत्वात्स  
 कर्मणोरोगानिहृत्तिश्चदृष्टप्रधानप्रयोजनैः। आवांतरप्रयोजनं तुद्वरितात्प्रवेदितिः। साचवेदपारायण  
 चतुष्टयसाध्यावेदानामपिचातुर्विध्यतः सिद्धेप्रवेदादिपारायणकथने। पारायणविधिसुपरि  
 ष्यायांनिरूपितः। यद्यपिस्मृत्युपघमानेषुवेदांगीतराणांमनध्यायावेदांतरेषुपयमानेषुसाक्षा

२५५

तथापि वेदचतुष्टयपारायणविधिबलादेकत्रयं तस्यापनाविधानाच्चयात्रापरस्परसंचारोधिकर्षादिति  
 श्रुत्वावेतावन्ति। त्वमार्गेकलशचतुष्टयंस्थापयित्वा मध्येवासुदेवाः। धिष्ठानकलशंस्थापयेत्। तदंशेन  
 होमश्चित्यस्मिन्नदिवसेयावाचेदपारायणंजायते। तावत्तं ग्रंथसंस्मरणानीयात्। तदंशेन शदीमोया  
 हतिः। कार्यः। अत्रायंपरिणानादिप्रकारांमंत्राभूषणमिलित्वायस्मिन्नेदेयाक्यंयथावत्तंद्वादशधा  
 वित्तुप्रतिदिनमेकं संस्ययायाहतिहोमः। कार्यः। होमद्वयं चतुर्ताम्राधिलायवत्। एकमदि  
 नेषुप्रथमदिनपत्रयहयज्ञोक्तप्रकारेणादिसादियहाप्रस्थापयित्वाग्रहणोतिहोमं तंनिर्वर्त्ययावत्क  
 र्मसमाप्तिश्चवदस्थापिताग्रहात्प्रतिदिनं गंधधुष्यादितिः। समञ्जयेत्कर्मोत्तेदक्षिणादीश्चदद्या  
 त्। यद्दृजाप्रकारश्चपरिताप्यायां दर्शिताः। द्विजखं गवः समीतिः। द्विजखं गवः। आचार्यः। सदा स  
 नस्वरूपेविनायकशोतोदर्शिताः। अतिषेकं समाचरेदितिः। एवंविधसदासनोपविष्टस्यो गिणः। अतिषे  
 कमाचार्यः। तत्राहणमदितो वेदिकेः स्मार्त्तं चमंत्रैः कुर्यात्। अतिषेकसंमये चवासुदेवाधिष्ठानकल



श्रीदकंनक्षत्रकलशोदकवेदपारायणोदकं वैकस्मिन्त्यात्रेनिधाय विनायकश्रीतौनवग्रहयज्ञोक्त  
 कारेणयजमानमतिनिवेद्युक्तः किं कुर्यादित्यत आह ॥ ततोदद्याद्यशक्त्यागोचरे मतिनादिकं  
 ब्राह्मणेभ्यश्च यावेदमाचार्यानिवेदयेत् ॥ दिवं प्रवेत्ति चतुर्जवासुदेवस्प्रतिमां ॥ तस्य प्रतिमां  
 नमंत्रमाह ॥ आदित्यावसवोरुद्रा विश्वेदेवामरुद्रा प्राताः सर्वेषां हंतुमपापं सुदारुणां सुद  
 र्भुतां च त्वात्माचार्यं ह्यमापयेत् ॥ एवं विधाने द्विदितैः श्वेतकृष्णविभुद्यतिः ॥ इति शांतातपश्री  
 कर्पाडुकुष्ठहरम् ॥ अथ प्रकारं तरेण कुष्ठहरम् ॥ शांतातपश्रीको ॥ कुष्ठीगोबधकारीस्यात्  
 रकात्स्य निष्कृतिः ॥ स्यापयेद्दुर्मेकं कुष्ठं कद्रवसंयुताम् ॥ समन्ततः प्रोक्तर्पाडुकुष्ठहरं यानिपे  
 पन्नवाही निद्र्याण्णलिहितानितैर्युक्तमेकं कलशं स्यापयेदित्यर्थः ॥ अत्र कलशात्कारादौ विशेषमा  
 ह्ना ॥ अत्र कवेदनलिप्रांगरकसूचवराहतां रत्नगर्भं कृत्वा स्यापयेद्दक्षिणादिशि तं कलशोदक्षिणादि  
 शि कुंडस्य दक्षिणदिशा गच्छत्यर्थः ॥ तामपात्रं न्यसेत् तत्र तिलस्य सुप्रजितं तत्रैतिकलशोतस्योपरि

न्यसेद्देवेमनिष्कमितं यमं यजेत्पुरुषसक्तेन पापं मेशाम्पतामिति ॥ निष्कस्वरूपं परिमाणप्रकरणेयगादि  
 यमं शक्तिं सुदक्षिणहस्तेन दंडधारिणीवामहस्तेनाऽक्षयदा ॥ महिषारूढाचरवति सुवस्तेन यजेत् ॥ अत्र  
 येत् ॥ अत्र प्रकारं सुपरिमाणाय ॥ अस्वरूपं सुकृष्णने निरूपितः ॥ पापं मेदस्य तांमिति पापं शरीरव्रतमाने  
 गरूपं तन्निदानं हतं हरितं वशांमपतामिति संकल्पयेत्यर्थः ॥ सामवेदपारायणं कुर्यात् ॥ कलशं तत्र का  
 मतः ॥ देशं सं ॥ र्पणं ॥ त्वापात्रमाभ्याऽक्षिपे च नै ॥ विहितेषु मंत्रैः ॥ तमाचार्यानिवेदयेत् ॥ सामवेदवि  
 दौ तावेव ह्युच्यते वायथालातोपयन्नशाखाभ्यां नवावेदपारायणं कृणीत ॥ वेदपारायणविधिपरि  
 षायं दक्षिणः ॥ यावत्पारायणपरिसमाप्तिरिति दिनं यमं प्रवेत्ति ॥ अत्र प्रकारं ॥ ह्यमंत्रमाहृतयः ॥ दश  
 वाहो मंत्रकारश्चर्पाडुकुष्ठहरो करीत्या विज्ञेया ॥ पापं मन्त्रेति प्रवमानः सुवर्जनः स्वादिष्टयत्याद्याः स्व  
 स्वशास्त्रोक्ताः पावमान्याद्याः ॥ पावमानः सुवर्जनः ॥ इत्यनुवाको गणहो मंत्रकरः ॥ दक्षिणः ॥ स्वादिष्टयति  
 सूक्तर्पाडुशो गहरश्चीदानेदविति ॥ अत्र मंत्रमाह ॥ यमो महिषमारूढो देवपाणिर्नयावहावति

एसापत्तित्तममपापंयपोहृत्तुभ्युत्तर्यविसृज्येनमासंगोसक्तिमाचरेत्त्रहृत्तुगोभ्योरेषास्यद्वय  
 नास्तिनिष्कृतिःत्रलवधस्यसमनंतरप्रवृत्तिकर्मगोवधस्येतितदितिसागःइतिप्रकारोतरेणकु  
 छदरमःअथाऽपरकुछदरमः॥त्रिवर्गीतायां॥योनरोहन्निवेजंतुकुछरीगीत्तवेतुसांसीतप  
 नंयुक्तुधीततगवांनहसंकरांसांतपनंयतिसांतपनांएतत्तद्वेणचक्रप्रकरणेस्यध्यायिद्वदंतुद  
 ननंइदंआयश्चिंतंतत्रापिवाधेरल्पत्वपनसितद्युनिधुनियुक्तुणिरुणितगीतमवचनात्॥इत्यं  
 कुछदरमः॥अथकुछरीगरदरदृषत्तदन॥वायुपुराणेकुछरीज्ञानरोत्तवेत्स्युपक्रमानिदि  
 तमांअथकुछदरंवेदेषुपत्तेदानसुवमस्यत्यक्तुयांकुछरीगानेशरीरसुखकारकशापत्तेद्विसुखे  
 वीतद्वास्यांमेकेनवाउनांराजतंष्टुपतंष्टुदेमष्टंगंखुरंतयांमदेश्वरेणामयाचक्रुधीतमध्वित्तित्तं  
 पल्लवदणंपरिमाणप्रकरणेस्यध्यायिंमदेश्वरस्योमयाश्रप्रतिमेद्वेसुवर्षस्यपत्तेद्विसिद्धोद्वास्यां  
 मेकेनवाकार्यदियाहासौवर्षप्रतिमेद्वेसुवर्षेत्किंनक्रमेणत्वायथावित्तवमानेनविचशाक

नकारयेत्तत्रदृषदानस्यप्रायादुमामादेश्वरप्रतिमेविहितपल्लवितयादिपरिमाणदपिदृष्टनपरिमा  
 णेनसुवर्षेनकृतैत्रपिदोषप्रनेपनेत्येतत्सुवयतिविचशाकामित्येनेनदृषत्प्रतिमाकुचकपरि  
 माणेनेयकायाप्रध्वत्वात्पलाष्टकेकोऽपात्रैस्थापयेत्तत्रवद्वेणवित्तसुवर्षकताद्येत्वेतवत्रै  
 रलंक्तुतमांखंविधंतंष्टुपत्तेकांशपात्रेनिक्षिपोदिस्यर्थांत्राहणंविद्ययायुक्तंखावांरमजितेदियां  
 शास्त्रमवकारंप्रतिप्रपरासुर्वोदांतकुलीमैधर्मज्ञमठद्वैगकरंरुणाशंक्रोधलोत्तविदंनंयसर्वशा  
 खर्थकोविदंष्टुमाहृत्यसक्यांतयथाविधिसमंत्रयेत्तकैयर्कटकेषुमांत्पेष्टेवांयनीयकैः  
 द्रव्यकुयान्मंत्रैर्मादेश्वरेस्तथाऽष्टवदित्स्वष्टोकांमंत्राकरुद्रप्रकाशकतेस्वशास्त्रोकायासांत्त  
 यंवकमितिमंत्रोदशितः॥तत्राहृरहरकदुद्रायेतिदुद्रोपाहरोमामादेश्वरदानेऽत्ररुद्रगायत्रापि  
 शूलरोगदरत्रिशूलदानेशैवंपंचाक्षरोदर्शितांघृत्तुक्रियुणवशिष्टेनत्राहणंतंष्टुपत्तवद्वयमादानमंत्र  
 ताष्टुष्टैरविष्टानमित्येनेमहोकेनघृत्तुत्वात्तथातत्रचित्तैर्नैयसर्वकर्मविपाकोत्तयनेनश्लोके

नोमामादेश्वरमूर्त्ती ॥ कारयित्वा ततो होमं निर्वह्य स्वयं विशिष्टं वृष्यं तं ब्राह्मणाय वक्ष्यात् ॥ दानप्रकार  
 माह ॥ उदङ्मुखोपविष्टाय महोदिकस्य सन्निधौ प्राङ्मुखो व्याधितो दद्यान्मन्त्रेणानेन धर्मतः ॥ धनमंत्रग  
 ष्ठा ॥ अष्टमूर्त्तौ विष्टाने रूपया वृष्यं स मूर्त्तौ श्रेयसोऽनुवरं सद्यै मथवा शिष्टमेव चात्त्वेषु जनि तं यत्र मं  
 डलाद्यथवा हराः सङ्केतमविपाकोत्थं पाद्यं तीनाथसद्यै दा ॥ कुष्ठसवनसद्यै शरदामं पाद्यं तीपती  
 वृष्यं स मूर्त्तौ जतिवृष्ट्या तीक्ष्णपदां ॥ अष्टमूर्त्तौ ध्वजेति वृष्यं तद्विरेष्यं ॥ शतिकाष्टदरवृष्यं तस्य नं ॥  
 अथ हीनकुष्ठदरम ॥ शतातपप्रोक्ते ॥ माह गाम्भीर्ये दद्यात्सुतस्य लिंगं विनश्यति चांडाली ग  
 ने चैव हीनकुष्ठं प्रजायते अत्र च प्रक्या लिंगं हनिद्रे प्रसंगात्पूर्वमेव दर्शितेति नाऽलिखिता ॥  
 इति हीनकुष्ठदरम ॥ अथ रक्तकुष्ठदरम ॥ शतातपप्रोक्ते ॥ शिद्धितस्य प्रयोगे न जायते रक्तकुष्ठ  
 वाशां तया त कविद्युत्थं प्राजापस विवृष्टयम् ॥ कर्षीतेति शेषम् ॥ एतच्च प्रायश्चित्तं रोमास्याः स्यत्वेन  
 दुःप्रायश्चित्तत्वात् ॥ त्रैमासिके ष्यपातकस्य श्रद्धेऽप्युत्पन्नकार्यो प्राप्युत्पन्नदण्डं ॥

८५७८८ ८५७८८ ५११५७

इप्रकरणे निरूपितम् ॥ इति रक्तकुष्ठदरम ॥ अथ रक्तकुष्ठदरम ॥ शतातपप्रो  
 क्ते ॥ स्वसुतागमने चैव रक्तकुष्ठप्रजायते त गिनीगमने चैव पीतकुष्ठप्रजायते ॥ तस्य प्रतिजिज्ञा  
 कर्षुर्द्वेषः कलशं च सेवां प्रर्ष्वदियागो होमश्चानापेक्षयेत् ॥ कलशे च पांडुरोगदहरो कानिपंचप  
 ल्पवादीनि स्थापयेत् ॥ यस्मिंश्च दिने यावद्दशमाणवेदपारायणं जायते तदशांशहोमो व्याहृति  
 सिः कार्यः ॥ होमद्वयं च क्वाकसिलायवाहृतमयम् ॥ अग्निस्थापनं च स्वर्ग्यो क्रमार्गोणादशांशहोमे  
 दशमाशपरिकल्पनाप्रकारस्तु पांडुरोगदहरेति हतम् ॥ दर्वतः कलशं च सेवेदि सुक्तं ॥ अथनातकल  
 शालं कर्तव्यं करणप्रकारमाह ॥ पीतवस्त्रसमाह्वनं पीतमाल्यावित्प्रभितम् ॥ रक्तकुष्ठे तु रक्तवसादिवृष्यं  
 तं कलशं स्थापयेत् ॥ पीतकुष्ठे तु पीतवसादिवृष्यं तमिति चेदः ॥ तस्मिं काले च वस्त्रमाणश्लोपे तमि  
 दं स्थापयेदिमादां तस्योपरि न्यसेद्देवं देमपात्रे सुरेश्वरम् ॥ सुवर्णनिष्कषट्केणानिमित्तं वंङ्कारिण  
 जपेत्सुरणं च केन वा सर्वं विश्वरूपिणमासद्यै विष्टते कं ॥ ने कर्षुदेतु समापयेत् ॥ इति प्रकरणे

यादिइंद्रसुखि सुवज्ञाः सयंकरा ब्रह्म धृजोपेता एरावणे समारूढा च सवेद्ययजेयुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः  
 स्वयजेति स्रष्टुः  
 दिनाः स्रष्टुः  
 एंकारयेत्वा यावद्देहमाप्तिश्च प्रतिदिनमिंद्रप्रकाशके चोदिकेः स्ववशास्वाक्तेः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः  
 शकर्म मंत्रसु नवग्रहयज्ञप्रकरणे दर्शितं तथा वृद्धमाणरोगप्रतिमापि प्रतिदिने स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः स्रष्टुः  
 गप्रतिमालक्षणं चात्रैव प्रकरणे कसादयिष्यते अथ प्रयोगक्रमश्च कुरुक्षेत्रवसुण्मूर्ति  
 दानोक्तो विज्ञेयः कलसंस्थापनादि विशेषो न वैवदर्शितः रक्तकृष्णधिवेद्यतयेन मा इतिरो  
 गप्रतिमा स्रष्टुः  
 एं सथा च प्रह्वीकानिकलक्षणं च परिमाणप्रकरणे वर्णिता निष्पापस्यामिन्द्रिबुवत्ररोग  
 तिमाद्यादिमर्थः साप्रतमिंद्रप्रतिमादानमंत्रमाह देवानामधिपो देवो ब्रह्मवचनिके

३-म ५४. ४८१ ५४.

तेनाशतयज्ञसहस्राक्षो मम पापं व्यपोहता इमं मंत्रसमुच्चयं चार्याय यथाविधिः दद्यादेवं सदखाहा  
 जापहो पशतिये इति रक्तकुष्ठहरमः पीतकुष्ठहरमः अथ युक्तकुष्ठहरमः कसकुष्ठहरमः  
 शातातपत्रोक्तं स्रष्टुः  
 युत्रनायाः तेन कार्यं विषुद्धं स्रष्टुः  
 स्याद्देमिति प्राकृतं दार्भिकं प्रसूतं तदं वैमासिकं प्रायश्चित्तोपक्रमप्रकारस्तु प्रायश्चित्तोपक्रमपद्धतो  
 परिभाषायां निरूपितः प्रसूतं स्याद्देमित्यस्या व्याख्या शमनं रक्तकुष्ठहरोक्तं स्याद्देमित्यथा कलशस्था  
 पनाप्रकारः स्रष्टुः  
 दांतरेवा संहिता मात्रस्यैव पारायणमिति स्रष्टुः  
 रोगप्रतिमाः स्रष्टुः  
 रसुत इदेव इति युक्तकुष्ठहरमः कसकुष्ठहरमः अथ कटिकुष्ठहरमः पिशुप्रमनी सुस्रष्टुः

पितृपत्नी कृता कटि कुष्ठः प्रजायते निष्कृष्टिनि कर्त्रे व्याकथादानेन यत्नतः क्रुरोगाः सुसारेण वि  
 गदिसमाचरे कन्यादानाः संतवे अर्थे प्रनादिना प्रलीप्य तस्मात्कथ्यदान फलं यावा कन्यादान जनित सु  
 कृताप नोद्यत्वा दस्य दुष्कर्मणाः उक्तेति पद्मांतरी तत्रैवा षिकादि प्रायश्चित्ताः चरणा प्रायश्चित्तोपक्रम  
 प्रकारं सुपरिभाषायां प्रायश्चित्तोपक्रम यद्दत्तौ दर्शितः इति कटि कुष्ठ हर म् अयनेत्र कुष्ठ हर  
 शातातपत्रे क्रे । मातृवासा सुगमना दृष्टि कुष्ठं प्रजायते कृष्णाऽजिन प्रदानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत्  
 यदगम्या सुसंस्कृतं प्रायश्चित्तमुदीरितं तदेव मुनिभिः प्रकृतं नियतं तस्य ता स्वपि सत्त्वैकत्रैवा षिकं  
 प्रायश्चित्त समाचरेदित्यर्थः कृष्णाऽजिनदानेन च विक्रमस्मृतं अथ वे शाखा पोषमास्यो कृष्णाऽजिन संस्रु  
 रं मश्रुं गोसुवर्षं शं गौ ष्य सु रं सु कालं मूलं च धितम् कृत्वा विवेकं च प्रसारिते प्रसारिते प्रसारयेत्  
 ततस्त्रिले प्रब्राह्मणं सुवर्षनाते च कुर्यात् अदत्तेन वा सोऽग्रो न प्रब्राह्मणं दयेत् षड्वर्षं त गौ षे स्वात्तं उ  
 वा दि कु च वारितै जसा नि पात्रं ह्यी र व प्रि म सु स र्पिः पूर्णा नि द्या व आदि ता प्रये त्रा ह्यणा याः संकृता

यवा सोऽग्रो न प्रब्राह्मणं दयेदिति अस्यार्थः त्रैसाख्यं षड्वर्षं मास्यमित्या एतत्प्रकारांतराणां मनुष्यपत्न्या  
 र्थं ते च कासाख्ये प्रदर्शिताः त्रैशाखी पोषमासी च षड्वर्षं सिद्धयेत् पोषमासी तथा माघी आषाढी कर्त्त  
 की तथा उत्तरायणे द्वादशो एतद्द्वंद्वं मदा फलेति ध्यात्रि निमित्तकालः शातातपत्रे च तैना प्राप्तिता कृष्ण  
 मृगाऽजिनं सुवरं सुश्रुं गोसुवर्षं शं गौ ष्य सु रं सु कालं मूलं च धितम् कृत्वा विवेकं च प्रसारिते  
 प्रसारयेदिति गोमय लिने शुद्धे दशांशं विकं च कं वलमासी र्थं तत्र स्वभाव मिद्ध रं सुश्रुं गसादितं पुनश्च  
 रोष्य सु रं दे मश्रुं ग र्थं तं ताः संकृतं मौक्तिकं बटि स उं कु सु तं वि दु माः संकृतं तपुष्पे पतं वाने यो म्मो क्तिक शो  
 तं कृष्ण मृगा चर्म प्रसारयेत् कं वले कृष्णाऽजिन मासी र्थं तस्परपुरादि रोष्य सु रादी सु पापयेदित्यर्थः तथ  
 च मत्स्यपुराणे गोमयो नो लिने तु शुद्धो देवो नराधिपः आदावेव समर्चा र्थं शोचन वस्त्रा धिकं ततः मश्रुं  
 गं सरु रं मासु रं कृष्ण माजिनां कृष्ण मृ चर्म सं वा वि पर्याः कर्त्तव्यं रुक मश्रुं गं च दु पदं तं तथै च्चालां गले वि  
 मं वै वनेत्रयो म्मो क्तिकं तथै ता ततस्त्रिले प्रब्राह्मणं सुवर्षनाते च कुर्यात् अदत्तेन वा सोऽग्रो न प्रब्राह्मणं दयेत्

सर्वगंधैरत्नगंधैश्चातं कुर्याच्चतसृषुचदिहुचत्वारितैजसानिपात्राणिद्वीरदधिमधुसर्पिःशर्षानिदद्यादि  
ति। तिलैः प्रश्नादये जंभुदजिनीतिलैरात्मशमंराशिमजिनेदद्यादिमथं तत्रासौ सुवर्षो उवाभावा  
त्मकं वा सुवर्षंश्चैव वा सत्प्राः सुसारेण निस्त्राने मध्ये निक्षिपेत्। एतदेव सुवर्षनात्वं। अदत्त्वा सो  
दत्तनां अत्रवस्यमुपाप्तमद्यैकमेव निहितं अतोवस्य विषये विकल्पा कृष्णाजिनस्य च तस्य दिहु  
द्वीरादिद्वरितानितैजसानिपात्राणि सौवर्षरनात्तादीनिपात्राणि शक्यं सुसारेण विदधीता तैजसापा  
त्रेषु सर्वथा अशक्तिश्चेत्पुण्यानिवाहीरादिपरिद्वरितानिसुः सति सत्तवे तितैजसानां पुण्यां वसुधै  
यः अथ यथाशक्तिपुण्यां विकल्पानपलदक्षित्वायेवमात्म्ये तिलैरात्मशमं कृत्वा समाह्वये हुवा  
सुवर्षनात्तं तं कुर्वेदं कुर्याद्विशेषतः रत्नैर्गंधैश्चाशक्त्या तस्य दिहुचविशसेत्। अत्रुपज्ञा विचत्वारि  
दिहुदायथाक्रममापुण्यां च पात्रेषु अत्रादिप्रक्रमेण हुत्वा रं दधि सौद्रमेवं कुर्याद्विद्वत्तणे तिवि  
वचनादिश्चादिनामये कृष्णाजिनं दद्यादिपश्चात् अत्रादिमात्रिभ्यो संप्रदानं तदसावेत्यप्युच्यते।

अथ धेनुकुंडलं चिंतुकुंडलं उडुवकुंडलं अथ रत्नपत्रोत्पत्तयः

याद्यानं अत्रदाने फलश्रुतिर्विक्रमस्तथावाचो क्रमात् अत्रगाथात्तवतियसु कृष्णाजिनं दद्यात्सुवराश्रंगसंयुतम्  
। तिलैः प्रश्नादयवासो तिसर्धं रत्नैरं कृतम् ॥ इति कृष्णाजिनदानविधिः ॥ इति त्रिकुण्डलहरम् ॥ अथ खेतो  
त्वहरम् ॥ शशातातपत्रोक्ते ॥ तां हलदरेणैव च खेतोषः सप्रजायतो दक्षिणां सहितं दद्यात्सर्वे इयं मणिद्वयम्  
॥ इति खेतोषहरम् ॥ अथ विचकुण्डलहरम् ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ रूपादानं कस्यां चैजायते चित्रकुण्डलं वा शंभो  
पसवयं कुर्याद्वैरो यंपलत्रयं प्राजापत्यस्वरूपं कुरु प्रकारेण त्वं भयिपलनक्षणे तु परिमाणप्रकरणे ॥  
इति चित्रकुण्डलहरम् ॥ अथोडुवरकुण्डलहरम् ॥ शातातपत्रोक्ते ॥ अडुवरीतां मचौरीनरकंते प्रजायतो प्रा  
जापत्यशतं कृत्वा तां मपलशतं दिशो प्राजापत्यस्य लक्षणं कुरु प्रकारेण निरूपितम् ॥ इत्योडुवरकुण्ड  
लहरम् ॥ अथ कुण्डलरोगप्रतिमादानम् ॥ तत्र लक्षणं च कर्मविपाकसारे ॥ कुण्डलः कंचितसर्वांगः शूलयज्ञोप  
वीतं च कृष्णवप्राणहरः कृष्णः त्रिनेत्रः किंकिणीयुतः प्रजाविमानं त्वातं को देवता तत्रैत्यादि परिताप्यायं  
रोगप्रतिमादानविधौ कर्तव्यं ॥ इति कुण्डलरोगप्रतिमादानम् ॥ इति पिहितद्वामजसदश्रीविश्वेश्वरविरचिते

महास्यवाः सिधने निबंधकर्म विपाक परिच्छेदे कुशरो हराणि अथ विधवा त्वह रत्न स्त्री नारायणदा नं शिव  
 पुराणे कर्मणा केन वैश्वं प्राप्नुवंति तवे चिय यथान स्पति तत्कर्म तच्छंती कूपया बहा अथ उवाच  
 सुष्ठु श्रेका प्रमन साधदा मित्रा तये तद्वा कर्मणा ये तनायंते से सारो विधावाः श्रियाः साध्वी नारीः समाह्वय  
 पापवाक्यैः प्रत्यो स्पृचनं मलोत्कथा के लिप्रत्ययो त्य त्रिदेवुतिः मनां सिपा पाश्चात्सु सुखाणां च यो लि  
 तां साध्वं गं च खियो न्याय छे स च्ये स्यावयाः पापकर्म प्रसावेन गृह चंगा च पावति तु जैते विधवा त्वं ताः  
 दुःस्वशा कप्रपीडिताः लिखित्वा कां चने पत्रे लक्ष्मी नारायणं श्रियाः दधुर्या विडुषे तासु विधवानां यजन  
 निप्रद्ये वस शतं दुःखातिनां मधु सिद्धि र्दिध्यात्वा न त्वादिनां प्रयत्नः शुचमवाप्नुयात् ॥ अथाऽभुष्यती  
 तादि हराणि ॥ तत्रोपिता मसा ॥ ह्युषिणा साऽनुसारी च वीर रत्न मस्या ॥ मिथाने स्वयं मश्राति न सा उष्यव  
 ती स वेत् ॥ मिथुना निचपं चा शत सी ज के न ने दृ तयो दद्यात्तो सा गपु वसू नि ते स्यः शक्त्याऽनुसारताः इ न्न  
 स्यरा जं च हरि द्वा वे वधान्य कं विकार व द्वा गो ह्री रं मिता ह्री रं मिता नि इं द्या द्यो विकाराः दध्यादीनि

२६२

० अ३५४ ति २६६८

३५

वाः त उक्तमित्यर्थः इह वत्स वराज अनिष्पावा श्वैव धर्मयक मिह्यपि पातमनिष्पावा भयति शोभा इव च  
 वराज श्रुतीरं के वैव धर्मयक मिसापि पथतो अत्र अति वैधा धि के रत्न सुसारेणो क कर्मण आह लि द्रं श्रया  
 ॥ इति उष्यती च हरया ॥ अथ वैधवा त्वह र सुवर्षा धेनु दान ॥ ॥ वा सुपुराणे ॥ वतु विवा चया वं ध्यात वे द  
 त्यवियोजना वदो न स्याः प्रतीकारं तत्कुरूपे निवोधेना शिष्ये न यथा शक्त्या सवती कारये दृ टा श्रि  
 उं पलेन वत्सं च पादे मयु रत्न वी शि रण्ये न यथा शक्त्ये ति पलेन वा तदहं न तदं दं इति न वा पुनः इति परि  
 ता शो क प्र कारे सुशक्ता सुसारेण कुयो दिसर्थः ॥ पल रत्न रूपं परिमाण प्रकरणे निरूपितं प्राध्वे रं सुष्यं सुगं  
 रत्ने तस्याः सुष्ठे निवेदयेत् ॥ इदं गले च व न्नीयात् ॥ वत्सां प्राप्नुवः अविः श्वे दना अरु कं धूरं गंध माल्यैः सु  
 शोतनेः उपचारेः षोडश क्षि नै वैद्यं पाय संत वेत् ॥ मोदकं च तथा प्रपुडो ल वण मे व च ॥ जीरकं च सुवि  
 स्त्री र्भ्रूपं विष्णु मये ददे ॥ धेनो रं कं प्रदातये ॥ ब्राह्मण स्त्री पुष्ये मणि ण उष्टौ दश वा दद्यात्तदनंतरं मेव वा जय  
 चारे षोडश क्षि र्सादि प्रकृत्ये दि त्रि शोभा मोदकादि निःपरि श्रित मं कं स्रुष्ये नोः प्रस्था स्यात्पुष्पक इत्य

परिहरितान्येकप्रणयिष्येष्टोदशावासलर्वाक्योब्राह्मणोत्योदद्यादित्यर्थः। ब्राह्मणसर्वशास्त्रार्थकुशलं  
वेदिनश्चाविद्याविनयसंप्रदायां तत्रैव जितेन्द्रियात्र लोभसर्वजनप्रियं कल्पमाषवर्जितया ब्राह्मण्यतनासं  
दृश्यन्त्राद्यैर्गंधपुष्पकैः। तेनैव कारयेत्स्नामदूतोभेत्तुवत्ययोः। होमं च कारयेत्तत्र समिदाज्जपरुक्  
त्वा॥ अज्ञानो भेदमत्रमाह॥ सोमेधेनुमिति मंत्रं सप्रचर्यततः। अस्मि गोतमत्राधिः धेनुर्देवता त्रिष्टु  
च्छंदः विहितार्थे विनियोगश्चो मेषो सोमो अर्घ्वन्नमायुषो मोवी रंकर्मोप्यददाति सा दूतं पितृभ्यस्तेषु  
पितृभ्योऽप्यो ददाशदमो सोमे विसुकाया अणास्याः संयोगे च यत्र न्यायेनात्र धेनुं रवे वदेव न हि मंत्र  
वत्तु कर्त्तव्यं कारयेत्स्वित्वा नात्समिदादितिः प्रत्येकमष्टमसहस्रं कुर्यात्। धेनुदानप्रकारमाह॥  
प्रासुखायोपविष्टस्य प्रदद्यात्सुदुःखः। मंत्रेणानेन विधुं सुदुःखं हन्नेति धायव॥ । दानमंत्रमाह। सा  
देवो कश्चिदेनेधेनुयांगिरयो मंत्रे प्रविष्टसु स्त्रीभ्याः। इति या तथातानो मन्त्रेष्वरुणास्पृश्याश्च गावः प्र  
वर्तन्ते वनस्य पवनेषु चां त्रीणां वनाममसदुत्तयो वप्रदासु प्रयच्छन्तु दिवा रात्रमविच्छेदं च संततैः।

२६३

॥ ११ ॥ इति वंशवृक्षहंरयुवाधेनुदानमा

वंदवातु तं श्वे प्रणयिष्येष्टोदशावासलर्वाक्यो ब्राह्मणो त्योदद्यादित्यर्थः॥ इति वंशवृक्षहंरयुवाधेनुदानमा  
लिनयोः प्रत्येकं वायथा न मित्रमधिमाकरः॥ ॥ अथ गर्त्तं श्वहंरयुजोपनी तदानमात्तत्र निदानं स  
गौतमत्राह। श्वकृत्तं त्वेसा उच्चलि कहे जिया विधेः।। वासुपुराणे॥ यजोपवीतं क्वचोतकां च न  
चक्षुरा क्तिनः। अयं तवर्णसुके न राजतं चोत्तरीयको अत्यंतवर्णसुकावदित्यत्र्या उक्तमव्यर्थः। तिनं  
वने न्वक्षमाणपला हिमि तेन क्षशक्तो यजोपवीतं क्वचोतकारयेदित्यर्थः। तथासंनिघ्नो राजतं चोत्त  
रीयं च उत यत्र दृश्यमाणमाह॥ पलादि नत दद्धे नत दद्धे दिन वषट्काः प्रथि प्रदेशे देयुत्तमो क्तिकं वृत्त  
वच। पल लक्षणं वक्षमाणं डोणलक्षणं च परिमाणं प्रकरणे च धात्रिया यजोपवीतं यथै स्थाने मोक्ति  
कं उत्तरीयं स्फुटं क्तमितिविवेकः। प्रहृल्यपंचगव्येन गायत्र्या ताभ्रतान्ने इणेन प्रमाणात् तस्मिन्नि विनि  
प्ये दधि मक्षतः। आज्यस्यो परि संस्थाप्य सुपवीतं सुप्रति म्नां घृषुष्ठा ज्ञेयै नैवेद्यै रत्तित क्तिका। पंच  
गद्यं नाने गायत्र्या मंत्रत्वेनोपादानीं द्वशिष्टतया मामिसेवमंत्रैः। एवं प्रहृल्यनिघ्नपवीतोत्तरीयं च तं प्रन

जनेमध्यतपयेनिक्षिपेत्वा दक्ष उपरि आर्जुपंतस्यमाणं यथा लोपपन्नप्रमाणं वास्थापयेत् ॥ अतश्चोप  
 प्रमाणपरित्यागोकारणात्तावात्त्वमाणस्वनाज्यस्यो आर्जुस्योपरिसंस्थाप्यमुपवीतमित्यत्र वाज्यसंवे  
 धिनपरिमाणश्रवणद्वीणपरिमिताज्यासंवेद्यथा लोपपन्नप्रमाणमाज्यमितिव्यक्तं तत्र वाज्ये  
 उपवीतमुत्तरीयं च निक्षिपेत् तदुपवीतं मुष्टजितं कुयोत् ॥ युक्तं वेत् ॥ उपवीतस्य संस्थानीयत्वं  
 क्त्वादिश्रुत्वा राद्यदिस्थानत्वाच्च उपवीतं मुष्टजितं मुष्टजितं राहः सह उरितमुत्तरीयमुपपन्नयतितत्स  
 रितमेवोत्तरीयसहितं मुष्टं उपवीते निक्षिप्य प्रजयेदिति राजानन्नरं कथमाह ॥ ततो ब्राह्मणमाह  
 यज्ञो मंतवकारयेत् ॥ तिलैराज्येन मधुना अष्टोत्तरसंतं होममंत्राया हतया गायत्री वा व्याहृतीनामृष्यादि  
 नवग्रहयज्ञप्रकरणे यद्वा ह्यनप्रसावेदश्रितशा गायत्र्या सुक्त्वात् ॥ इहोमप्रकरणे तस्मिन्नुत्तरे देयं क्व  
 ये प्रजितायुत्तामंत्रेणानेन विधिवत्प्रादुस्वायोपवीतकां ॥ मंत्रमाह ॥ उपवीतं परस्मिन् ब्रह्मण विष्टं  
 सुरासवनोकास्पदानेन गर्तसंधारयेद्यहमा अत्र द्वितियाहिस्यायमर्थेनात्वनोका ॥ संसारे द्वितमर्निषा

हव

२६४

६९ सनके ५६ स्त्री सप्तमस्त ६

दकं वेनयत्स्वारयत्तुपवीतं अतो नैरिवनोका शिष्टं स्पष्टं धनाद्यपि प्राणेषु स्वस्मिन्काले प्रदापयेत् ॥ अ  
 तश्चात्थाचार्येणोपसन्नमापयेत् ॥ गर्तसंधारणे द्वीपादे वै कृत्वा विमुच्यते अस्मिन्कर्मणि ॥ अत्रिय  
 धिकारः ॥ इति गर्तसंधारणोपवीतदानम् ॥ अथ प्रसव्यो निवृत्तः ॥ तत्र कर्मविपाकसंय  
 द्वा ॥ मासोपवासिनो नारी रितः प्रसव्येद्यादियो निसंपर्कदोषेण जायते सा च तन्मनिसवदक्रास  
 दायो गौतमिष्कतिरिहोच्यते ॥ मासोपवासं कुर्वीत तथा मासं पयो अतं मासोपवासविश्रानं पयो  
 तस्वरूपं च कृत्वा प्रकरणे निरूपितम् ॥ इति प्रसव्यो निशोणितहरम् ॥ अथ स्त्रीसन्नाहारहरम्  
 कर्मविपाकसमुच्चये ॥ श्रीरमुष्मातियानारी प्रसूतमनिमुत्रता ॥ तन्मातरे तु तस्य वैश्वी रंतमनत  
 ह्ये ॥ श्रीरान्तो ॥ इति ज्ञानाज्यसमभुमंडकां श्रीरान्तं मन्त्राज्यसदितान्मंडकां विप्रस्यो दद्यात् ॥ वि  
 प्राणितिवृत्तवचनाद्यप्रवश्यं सो जनीयात् तदुपरिश्रयावसारेण अनुलिपे च मेते वै नृद्विषानेन रति  
 ता ॥ विप्रपादोदके श्रापिहालयकुचमंडलम् ॥ सुरासंशोदृष्टता प्रपाने रण्युष्यके ॥ इति सप्रवृत्ति

द्यात्रस्तताम्यत्रवसंश्रुणुमधुश्चनवनीतश्चपिउमालीअस्त्रिकःस्तसव्यस्वशक्तिश्चस्तानांपंचकंविदम  
 शक्तिरिति मद्यादीनांपंचानां विशेषणम् अत्रसुरादीनि वलिद्रव्याण्यपि हितानि ते सुब्राह्मणादिसिनि  
 षिद्वायेययासि ॥ इति श्रीश्वन्याहारहरणम् ॥ इति श्रीपिहिसदाजुतदृश्रीविश्वेश्वरविरचिते महाण  
 वासिधने निबंधकर्मविपाकपरिच्छेदे अउष्णवती इत्यादिहरणम् ॥ अथ प्रकीर्णकप्रकरणमारभ्य  
 ते ॥ अत्रक्रावुदहरम् ॥ उमामाहेश्वरसंवादा ॥ विधवागमनेन पितृस्येनारुद्वेयतिरंक्रावुद  
 सवेकुर्मात्रायश्चित्रं प्रशात्रयो कृत्वा प्रतिकर्तुं कर्तव्यं तत्राद्यणमथापि वा एवमेवाऽपि वा एवमेवा  
 विधवाप्रकृत्या शोभात्रयै कृत्वा दीनिवा विरुल्लघुवावेन संमन्त्रानिवा द्वियुगानिवा यो ज्यानि  
 एतत्संज्ञानि च कृत्वा प्रकरणे दर्शितानि ॥ इति क्रोऽर्चुदहरम् ॥ अथ प्रकारात्ररेणरक्रावुदहर  
 म् ॥ शातातपप्रोक्तेरक्रावुदो वैश्वदेता जायते धर्ममाचरेत् ॥ प्राजापत्यानि चत्वारि सप्तधन्य  
 निचोत्सृजेत् ब्राह्मणे सप्तविंशतिः सप्तधन्यानि यवत्री ह्येवादीनियथा लोपोपपन्नानि प्राजप

२६५

१५२

अथ क्रोऽर्चुदहरम्

त्यस्वरूपं कृत्वा प्रकरणे लोपयति ॥ इति प्रकारांतरेणरक्रावुदहरम् अथ प्रदरोगहरम् ॥ कर्मवि  
 पाकसंयत् ॥ मात्रावायुरुणावापियो नरः साधुनिर्लस्यो स्पृहते सौ प्रजायेत प्रदरव्याधिमात्रसवेत्वात्  
 द्रायणं प्रकृती तद्वैवाऽति कृत्वा तद्विहोरिति च जपेदुत्तमप्रयत्नस्ययाऽसर्पिर्मधुसमायुक्तं  
 मत्क्रीतेन लो जयेत् वा विप्रं तैत्वादमलिना प्रो जयेत् प्रदरं तथा मात्रारुणापित्रा तथा वायादिति  
 श्रयो नरः शास्त्रनिर्लस्यो शार्थविवारविदुष्ये स्पृहते तद्वैवाऽति कृत्वा तद्विहोरिति च जपेदुत्तमप्रयत्नस्ययाऽसर्पिर्मधुसमायुक्तं  
 धसवेदित्यर्थः ॥ त्राद्यणदिस्वरूपाणि कृत्वा प्रकरणे निरूपितानि तद्विहोरिति च जपेदुत्तमप्रयत्नस्ययाऽसर्पिर्मधुसमायुक्तं  
 च दृक् कर्षणलहरे प्रदर्शितः विप्रत्रिविचुरादीं शक्याऽसुसारेण लो जयेदित्यर्थः ॥ इति प्रद  
 ररोगहरम् ॥ अथासुदरदरधेनुदानम् ॥ एतन्नदानं पद्मपुराणे ॥ असुदरी सत्त्वतियसुहि  
 स्याद्दृथापशुत्वात् ॥ इद्वैधयनसु ॥ असुदरी नाशयति यो हृथानति विस्वतरी अत्र निष्कतिमा  
 ह गौतमः ॥ धेनुपयध्विनी दद्यात्ता हितो हेमशृंगिकाया तथा रूप्यचुरं रक्रवस्त्रेण समले कृतम्

ब्राह्मणायाः शिव्या यदद्याच्चोदितो हेमश्चिकाशं तथा ह्युत्सह्यमानवः अशिवर्णाय कपिलवर्णाय तददा  
 वत्रारकायापलेन वा तददेन तदददेन वा युनः सुवर्णनिष्ठतां सुचां यथाश्रवितवेन त्वादिज्ञोतमायश्रया  
 यसर्वशास्त्राशुवेदिनीं श्रुत्वा मति संदृष्टीं मंत्रेणानेन सक्रितोः देवानां ब्रह्मिभिरसुरसिः जपवाच्युत्समावि  
 नाशयति गोदानं यतो दीर्घमस्युरमतेन नवरतः कुर्यादस्युरगदादिताः ॥ इत्यस्युरहरहरे तु दानम् ॥  
 अथाश्वत्थमावकास्ये हस्वद्वयत्रिदानम् ॥ वासुपुराणे ॥ अनेवैरोत्तवेद्यसुसौः श्वत्थमाज्ञायते कृशम् ॥  
 वक्षोवस्पयतीकारं दानहोमाः शिवे च नैः पलेन वा तददेन तदददेन वा युनः सुवर्णनिष्ठतां सुचां यथाश्रवितवेन त्वादिज्ञोतमायश्रया  
 इत्यस्यनक्रिताः पलस्वरूपं परिमाणप्रकरणे निरूपितम् ॥ यथाश्रवितवसारेण श्रिवे च तु राः नने च तु  
 ब्राह्मणां परसुपविष्टं सुखासनमाग्राध्वमपरीधनं नागयज्ञोपवीतिनां सोवर्षे न राजतेनवाना  
 गेन यज्ञोपवीतं कुर्यादित्यर्थः श्वेतवस्त्रेण संवेश्य पतंडुलोपरि विन्यसेत् तंडुलानोपरिमाणं द्वीणानीत  
 चतुष्टयशय्यास्त्रवितवैवैव ॥ अर्जुनप्रकल्पयेत्तं गंधमास्ये अश्वत्थेना विधेश्च उपचारैः

२६६

षोडशतिः रात्रयः सर्वशास्त्रविश्वमंत्रेण सर्वेण कार्यं रुद्रस्य वाईनः ॥ मंत्रमंत्रौ वपंचाज्ञो रुद्रगाय  
 त्रीवाद्यश्च लोरो गदुरः त्रिभूलदाने दत्तः ॥ द्वितीयसुदुहरो मामादिश्वरदने होमश्च तत्र कर्तव्यं  
 द्विने सुपरिष्कृतेश्वद्यो कविर्धनं चान्नेः संस्थापनं तदेवांसमिदा उपतिले मंत्रनिर्मां च त्रनिशाम्यरुप  
 वकं कदुद्रयेति वाते पितरति क्रमात्संस्थात्वद्योत्रराते प्रत्येकमिह प्रष्टुं इत्वा इत्वा च संपाता  
 यात्रे कुर्याद्विध्वितं ॥ अं वकं यजाम हस्वस्य अथासुषुहरे हरे त्रिदितशकं दुद्रये स्नेस्य सुदुहरो मा  
 मादिश्वरदने अतिपितरुतामिद्युसात्राग्निधनो काः साध्यसर्वे गदुरे संपातानिति आ उपहो मंत्रत्वा प्र  
 साङ्गति संपाताश्चुवादिस्त्रिनां उपविष्टं हृत्प्रथमपात्रे कुर्यात्त्रापतिः संपाते रा उपविंडं तिरोगिणः ॥  
 शरीरं वक्ष्यमाणं सयेत्येजी ॥ अग्निः पूर्वे त्ररे दशे स्थापयेत्कलत्रं दृढो वा ससावेष्टयिष्याधपंचपल्लवसं  
 युताश्च पल्लवानि च श्वस्य वृषसज्ञो दुं वराणां ॥ अश्वत्याना इत्मी कात्संगमाज्ञदात्रां प्रक्षिप्तव्या मृत्तिका च  
 रोचनयुग्मुसुथातेना निषेकं ऊर्ध्वीतहोमांतेत्यपतं यसा आपो हि श्रादि सि सद्दिरण्यादिति रेव

पवमानाद्युवाकेनशनीवाकिनचैवहितेनकलशस्थोदकेनासुसखेकैःसंपातवाचैःराज्य  
 विंडुनिशंरोगिण्युगुचायैःआपोद्विश्रैतिचक्रचोदिरण्यवर्णाइतिहवश्रापरिताषापरोगव  
 तिमादानविधौप्रदशितं।पवमानाद्युवाकेनाणदोमप्रकरणेनोवाकेनेतिअनेनवस्वशशाषी  
 काशीतिरुपनक्षितो।तत्रशशनीप्रातापवतामितितेत्तिरीयशांतिस्त्रथानोतइकनवइतिचाश्रवा  
 यनशांतिश्रपरिताषायांइति।अलिजकानंतरंकरंयमाह।ततःशुक्लोवरधरःशुक्लमात्या  
 मुलेपनः।मूलमंत्रेण३७७नःसस्मैकृतवतेयिनोदद्यात्रादेवदेवप्रप्रतिमाशंकरस्यमंत्रेणानेन  
 विधिवन्मामुखायाद्युदयुखः।सर्वमंत्रेणतिहवैकिनपंचाक्षरैरुदगायमावाहर्वमाचार्येणपो  
 उशोपचारैःइजिताकृदपद्धतिःसुद्वयजमानःसंतुज्पद्धतवतेनस्मैआचार्यायार्थिनोदद्यात्।अथि  
 नइतिविशेषणसामर्थ्याद्युवाचार्येनप्रतिशक्तीयात्।तन्नतस्मैआत्रियायकुडुविनेदद्यादिति।म्य  
 तोशोकइयेनदानमंत्रमाह।देवदेवमदेशानवृषसध्वजशंकरः।नचैर्येणयत्पापंकृतंजनात

२६७

आख्ये २६६

मेनेद्विहृद १५५७७५५५

२६७

रमयातेनयज्जनिर्तंकार्यमसहंममदेहं।तुवदानेनदत्तेनश्रीतस्वरहापापिनापवंयोविधितानेन  
 शंकरप्रतिमान्नरः।दद्यादिविषयत्रयायसर्वेकार्याद्विमुच्यते।उष्णाहवाचनंकृत्वाब्राह्मणानपि  
 लोजयेत्।इतिहशवहरुद्रमूर्तिदानंअथास्थिरोगहरं।कर्मविपाकसंबन्धो नकरोतिमहा  
 यज्ञानस्थिरोगीसजायते।कृच्छ्रं चोद्वायस्य कुर्यात्कृत्वाविश्रांश्च लोजयेत्।इतिश्रितानेनदद्याच्चिर  
 ण्यवशक्तिः।वातआवाश्रितमंत्रादिजपेद्भोगाद्विमुच्यते।मदायज्ञात्वापंचमहायज्ञात्करु चोद्वायणयो  
 र्द्वैतं कृच्छ्रं कर्णे वार्णिते अवरत्रिणा नंतरं विप्रास्वराक्षत्रात्पूर्वोसारेणसंजयेत्येत्योनिमंत्रितेस्यविप्रस्यय  
 दन्तरोचतेनेतेस्यश्चदिरण्यदक्षिणादद्यात्वावातआवात्तुलेभजेमिसहंमंत्रेकृच्छ्रावरणदिनेसुप्रतिदिने  
 मष्टोत्तरसहस्रंजपेत्वाऽसस्थिरोगहरं।अथमदोहद्विहरं।शातातपोक्ते॥दधिवारसुषुषणोयुक्तीसवतिमे  
 दशा।दधिवेषुप्रदातव्यातेनविप्रायश्चदयेदधिभूतविधानं।उशातातपोक्तराज्यमाहरेस्यधाया।इतिमे  
 दोहद्विहरं।अथमृतसार्यत्तुडुधमहं।मकर्मविपाकसंयदाज्यश्चातयेत्तुडुयोत्तुडुइतिखयांसतवेत्

तपस्त्रीको दुष्टरुद्रसमश्चितः प्राजापत्यत्रयं कुर्यादेवं दयत्रयमेव वा प्राप्तिमिति वा जपेन च उणाद्योत्ररासुतां प्र  
 क्तया च तोजयदिया चोवेपापात्समुद्यतो प्राजापत्यत्रयनिर्देत्यादि सङ्गमृततायं चैव प्राजापत्यत्रयं द्विष्टे द्वात्रय  
 एत्रयं न च नश्चेत्याजापत्यत्रयं द्वात्रयत्रयं अत्र एवं वा शब्दोपस्थितविकल्पार्थतामनिवर्णामित्यस्य  
 कस्यकपि देवतादिस्री सनस्फाहरैरिति तैत्तिरीयैश्च उणादिसमाजनेन प्रथमं चरोः पश्चादाज्यस्यो अतः पाठक्रमो  
 त्रविं वक्षितः प्रत्यचं होमः अग्निस्थापने च सद्वा क्रमणिलास्ति मृततायं त्वदुष्कर्महरं अथ प्रकारो तरेण मृततायं  
 विरं तरेण मृततायं विदुश्चिह्नं हरं मृततायोतिगामी च मृततायः प्रजायते तस्य पापस्य सुद्वयं द्विजमेकं विवाह  
 ये वा अथ स्त्रीविरक्तिहरं कर्मविपाकसमुच्चयधर्मपत्न्योमुत्रतायां सुवेमेशु न कारिणः पत्न्या विरक्तिनेवति  
 सुवर्षकलसः उमा मादेश्वरं देवं रुद्रैकादशिनीं जपेत्वाच्चापयेत् इत्याद्युक्तो ह्यविद्विन्नो बुधारया च्यवे  
 ननु मंत्रेण सुदुज्या बु जपेदपि उमा मादेश्वरमित्यादियदि क्वचन देवता यत न उमा मादेश्वरप्रतिमोत्पत्तेः त  
 र्हितत्रैवातिषेकः अथ कथमपि न लप्यते दद्यात्सुवर्षे नो मा मादेश्वरप्रतिमो राजत इत्यकार्यत्वा

२६७

२०३१८६६ • निवेदनः १५२६ काव्यवर्णः १०८० • २०१५

तत्रोमा मादेश्वरमावाह्यातिषेकं कुर्यात्सुद्वैकादशिनीं लक्षणं परिधायां रुद्रविधाने निरूपितां तथा तिषेकप्रकारोपि  
 अविद्विन्नो बुधास्येति अं कुर्यहं दर्शनाथो रुद्रविधानातिषेकविधौ श्रीरुद्रसादीनां प्रदर्शितत्वात्वाहोमं च कर्म  
 त्रसुवो अरुद्रहरं प्रदर्शितं अनेनेव जपः जपहोमयोश्च संख्या अत्र त्वात्वाद्दष्टोत्ररासुतमष्टोत्रसद्वैवा एव मन्त्रि  
 कानंतरं तां सुवर्षे प्रतिमां च कर्त्तव्यं ब्राह्मणाय दद्यात्वात् तिस्रीं विरक्तिहरं अथ मृतसुवर्षहरं शशातात् प्रोक्तो  
 वालघांती च सुवर्षे मृतवत्सः प्रजायते ब्राह्मणो ह्येदं नैव कर्त्तव्यं तेन शुभ्यति अत्र वणं हरिवंशस्य कर्त्तव्यं स्वय  
 याविधिमहासुद्रजपं चैव कारयेत् अथ याविधिं सुदुज्या अतश्चांशे न हवामि जपपरिसुतां एकादशस्वर्षनिःका  
 दातव्याश्च दक्षिणा एकादशपञ्चदश्याद्विंशत्युसारतः अन्ये स्योपियथा सत्त्वा द्विने स्यादक्षिणां दिशो त्वजाप  
 अदं पतीः पश्चान्मेनेव सुवर्षे देवतेः आचार्यो य प्रदेयानि वस्त्रं लंकाराणि च ब्राह्मणो ह्यहं नैवो स्यादिमाह  
 णो ह्यहं नैव कर्त्तव्यं तेन शुभ्यति ब्राह्मणो ह्यहं स्येव पापविशुद्धिं देयत्वातिधाना देवतास्वतंत्रयानि शुभतिभे  
 सुद्वतीषेकं कर्त्तव्यं तस्य त्रंशं वक्ष्यते अतः श्रवणं हरिवंशस्य सुत्ररासुतस्योत्पत्तेः न शुभ्यतीत्यर्थं विशेषत

ध्यापिहरिवंशप्रवणं द्वितीयनिःकृतिः हरिवंशे प्रवणविधिस्तु त्वदोखहरप्रकरणे तत्र किंचिद्द्वरे निरूपितम् ॥  
 विशेषप्रयोगक्रमस्वत्रनिरूप्यते तद्यथा ॥ १ ॥ द्वं पयोरसु कृते सुते विने स्वस्ति वाचनं कृत्वा स्वशक्त्युत्तारेण वि  
 नायकशांतिघृतायां विसवावुसारेण विभ्रयसुत्रकामनया हरिवंशप्रवणं करिष्यावः ॥ अहं करिष्यामीति व  
 संकल्पयेत्तदपलाः प्रवणकर्मैकै करिष्याव इति प्रयोगः ॥ अन्यतरकर्मैकै करिष्यामीति ॥ एवं संकल्प्युता ध्यय  
 न संपन्ने ब्राह्मणं विसवावुसारेण वस्त्रसूत्रिकां कुंडलनी मूलादिभिः संस्पर्शप्रवणाय कर्णीता एतिस्येदं तं हला  
 दिभिः हरिवंशप्रवणे त्वामहं हणंति प्रयोगः ॥ ततश्च प्रतिदिनमुल्लसपीतिकौप्रतिबंधना तावत्कृतो  
 द्वंपती तदेकस्त्रितया सुप्रयाता प्रतिदिनमाचार्येण च तद्यौ प्रकृतये च अत्रैव स्वलंकृता गापयस्वि  
 नीसवत्रां स्वर्णशृंगी रूप्यसुरी तासुष्ट्री कां स्पष्टे हनां ॥ अस्त्री सदक्षिणां वदयातां गोदानं च ॥ अष्टाष्टा  
 ने धेनुदाने ददिति ॥ विनायकशांतिश्च परितामया प्रदर्शिता ॥ प्रकृतममुसरामः ॥ एतएव वचनस्थिताः ॥  
 शशावाशद्यथाः ॥ एतान्यापि त्रीण्यपि शक्त्याद्ये दद्याव्यस्ता नि समस्ता नि वायो ज्ञानि म हा रुद्र ल हं णं

२३  
२६९

रिमाणप्रकरणे स्यात् ॥ एकादशपञ्चेति पञ्चवर्गोः रुद्रागामिति श्रुतेः ॥ अरुद्रं देवतामंत्रः कस्य च न कत  
 म स्याद्यताना मिव स्य पुं वदश ॥ १ ॥ स्य च क स्य जगती क्षन शोपकभिः ॥ अस्प वै विश्वामित्रो देवता इति वा यतो व  
 रुणे देवता आद्या कार्या वहि तीया म्रिय चरतीया यास्त्रिसा सावित्राश्च पंचमी सगदैवसा वा ॥ त्रि सुष्टं दश  
 तीयाद्यास्त्रिंशो गयत्रः विहितार्थे विनियोगः ॥ कस्य च न कत म स्यात् ॥ तानं मनमहे वा रुदे व स्य नामको नो म ह  
 अदितये तु न द्वां सितरं वदशो यं मातरं वा ॥ २ ॥ अत्रैर्द्वयं विषं मंत्रय म त स्याद्यतानां मनमहे वा रुदे व स्य नामा स  
 नो म ह ॥ अदितये तु न द्वां सितरं वदशो यं मातरं वा ॥ ३ ॥ अति त्वदिव स वितरी शानां चार्यमाणं सहा दं सागमी म्  
 यश्चि द्वि त इत्या स गः शशमानः पुराणि दः अश्वा ह स्तयोर्द्वौ ॥ ४ ॥ स गत क्रस्य मे वयं सुदशो म त वा व सा ॥  
 सूहृन्नि राय आरते ॥ ५ ॥ इति तत्रं न स हो न म न्ये च यश्च ना मी पत्रयत्र आयुः न मा अपो अनिमि वं चरन्ती  
 न्ये या त स्य प्रमि नं स त्वा ॥ ६ ॥ अत्रु क्षेरा जा वरुणो व न स्यो र्यं च्छु पं द व ध से द ल द द्वां नी वी ता स्यु रु परि हु न्ने  
 एषामस्मै अंतर्निहिताः केतवः स्या ॥ ७ ॥ अत्रु क्षेरा जा वरुणको र्स्वर्या य पंथा म च्चे त वा लु प दे श द्या अति वा त



वेकुरुताएवक्लाहृदयाविश्वित्ता। गणिततेराजन्निपजः सहस्रयत्रीगवीरासुमतिषेअस्त्रुवाधस्वदरेनिर्देतिपरा  
 वेकृतचिदेनः प्रभुतुभ्यस्मव। अथमप्यस्यनिदितासउज्जानकंददशेकुदविद्वेषः अद्वानिकरुणस्य  
 अतानि विवाकशब्दमानकमेति। तत्वायामित्रलणेवंदमानसदाशास्त्रियजमानाहृविर्षिः अद्वेउमानोव  
 रुणहृयोसुसशसमानआयुः प्रमोष। एतदिनकंशंदिवा मद्यमाकुसुदयंकेतोहृदआविचछी। सुनरो  
 पोयमहृदृवीतः सोअस्मान्नाजावउणेसुमेकु। सुनः शोपो ह्यहृय नीतत्रिष्टादिस्येदुपदेधुवहः अवे  
 नराजावरुणः सुभृत्पाद्विद्वं अद्वेविमुमोक्षुपाशीना। अवतेहृलोवरुणमोनिखयद्वेरीमहृद्विर्षिः ह्ययवमं  
 मस्यमखरचेताराजनेतासिह्यअथकृतानि। इदुदुमंवरुणपाशमस्यववाधमंविमभ्रमंअथापाअथावृष्टमादि  
 यत्रतेतवानगतीअद्विद्येस्यमा। इतिकस्पृष्टनमितिस्त्रुं॥ इतिष्टतत्रत्वहरो। अथानपयत्वहरो। शाता  
 यत्रोक्तो। विप्रपत्न्यपहारीयः सोनपयः प्रजयतोतेनकार्यंविशुद्धार्थंमहृरुद्रजपादिकं। आदिशद्वृषतिलोमात्प्रिये  
 एहरिवंशप्रवणव्राह्मणेद्वाहनेनद्वयति। तेचप्रागेवष्टतत्रत्वहरेद्वीता। असुमेवास्तिप्रथमाविः करोति। अतव

४ मोहितः सर्वोधिधिरत्रविधीयतेदशोमः कर्त्तव्यः पालाशोनय॥

२५

थाविधिदशांशहोमहासुदजपो। महासुदलक्षणं दशांशहोमसत्रमंत्रविलागप्रकारश्चेत्येतत्सर्वपरिहा  
 षायामुद्रविधाने निम्नप्रती। दशांशहोमेद्रयमाद। पालाशेनेतिपलाशकुसुमेनेत्यर्थः। एकवचनंअथ  
 स्त्रियायेण। इत्यनपयत्वहरो। अथेष्टतत्रत्वविशिष्टचर्मकीलत्वहरोकर्मविपाकसंप्रदे। अष्कादिपि  
 ट्आहृहीनोनिःशंकघातकः। प्राणीनांधमनदेवी। उरुद्वेषीतथापरः। सन्नकोमृगशावस्यनरकांते  
 न्पजमनि। मृतपुत्रश्चर्मकीलयाधिसुकोतवेवसः। उर्मनाश्चेवजायेततस्पयनिःकृतिः परा। हृद्वृ  
 चांद्रायणंजयद्विमहृष्माउसंशकागणहोमेषर्पादानंत्रमिदानंतथापरोकथादानंचपयंम्यंश्र  
 ङ्कवै। तयनतः। सहसहस्रनामजापीचसवेदेवविमुच्यते। अष्टकादिप्राधिकारेसत्यष्टकादिपिउत्र  
 चरहितः प्राणिनानिःशंकघातकइत्यत्रयः। एतान्यष्टकादिप्राहृरहितादीनिपंचापिष्टाद्भि  
 त्रानि। कृद्वृचांद्रायणयोर्लक्षणं कृद्वृप्रकरणेनिरूपितं कृष्णोहोमोणहोमश्चपरिहाषायोदशिता  
 पंचपंचमोश्चाहमित्यत्रयः। सहस्रनामजापीतिताह्येनिनिः। अतोयावद्वाधि विमोचकत्वावसह

सनामधोत्रंजपेशत्रस्पवाधादिपरिनाथयामेवात्पधायिकृद्वादीनेतानिवाधियुक्तलुच्चापेहायश्च  
द्यपेन्याद्यन्तवरीन्पानि इति यत्तत्र त्रविशिश्रुत्सर्मकीलकल्पहरषा अथ दंत पातनकवहरं शाता  
तपत्रोके ॥ दंतपातनकसूक्तः श्रद्धंतालेत्रशदेतापातनकएवदंतापातनकेनेनयुक्तः अथवादंता  
पातनकनितिरोगांतरं देहापातनकमित्यापि पातनः अत्रनिःकृतिमाह ॥ प्राजापत्यं च वेदेकादद्याद्धे  
सदान्निष्ठाप्राजापत्यधरूपं कृद्वादी प्रकरणं विहितं धेनुदानमंत्रसुनवयहयत्प्रकरणे ॥ दक्षिण  
नप्रश्नावेतिहितः ॥ इति दंतपातनकवहरं अथसर्वांगवेदनाहरं कर्मविपाकसुखत्रेशुभ्रुत्सुति  
विद्वाणियानिदानानिसंतिवै अजाश्चमहिषीदानंतप्रतियस्कारणाचनिषिद्धयो विद्रुमनादिस्य  
अस्पवधादपि वेदस्पवपरिहायोदस्पव्या द्रासिनिष्ठतो विषोद्धनश्चादिमरणाडुकाधिः कृतो  
दडादेश्चतेगावतां सशास्त्रीपजीवनात्रासुणस्वापहरणात्सर्वांगेष्टक्यतेवेदनादारुणात्तद्  
दारुण्डपशांतये ॥ कृद्वातिकृद्वादी तवांप्रायणमथापरं गोत्रहरणपवासो सिद्ध्या कृत्यजिपंतये

विष्णु

इति मोहनकल्परं सर्गनिवेदनम्

अथविष्णुसंहरं

अथशातेपशसेनते

तद्विष्णोरिति मंत्रस्पदवस्या अयुतत्रयं कृत्तिकृद्वादीन्यस्यैरूपं कृद्वादी प्रकरणे निरूपितं गवादिदान  
मंत्राः ॥ प्रायश्चित्तोपक्रमप्रद्वौ निरूपितः ॥ तद्विष्णोतिवह्वः कर्णश्चलहरं ॥ ब्रह्मपुराणे ॥ पानथं पश्य  
संसृजः ॥ यत्कराद्युत्संयुता ॥ इदमावश्यकदे यमर्चरो गोपशांतये ॥ इति सर्वांगवेदनाहरं ॥ अथाप्रति  
ष्टुत्रहरं ॥ शातातपत्रोके ॥ प्रतिमायात्तं गकारीत्वप्रतिष्ठः प्रजयतो संवत्सरत्रयं सिद्धेदश्चैषमं विवा  
सरोत्तद्वाहयेतमश्चयं राममस्याविधानतः ॥ अश्चत्यश्चात्रमेविकरो पितृपुत्र्याद्यया समी श्रुतः ॥  
समी वेष्टिता नर्हितया मह ॥ अथ ननत्यनेष्टोत्सये ॥ सर्वात्सांसमीशास्त्रीतृनावेकशस्रं वं वाश  
मानीयविधानो विवाहाकार्यं ॥ शिष्टाचारप्राज्ञेविधानं त्रेतवाद्युत्तरेनेष्टाद्युत्कले अश्चत्य  
शमीवावस्त्रादिचिरं कृत्यस्युद्योक्तप्रतिष्ठाप्यवा इति निश्चिदानां प्रसृष्टथगद्योत्ररशतंसहस्र  
वाकवात्रासुणान्जोत्रयित्रायथाशक्तिदक्षिणादद्यादिति ॥ एवमश्चत्योद्वाहनं विधायतत्रविनाय  
कमश्चत्यश्रुले संस्थाप्येपाह ॥ तत्रस्यापये देवविष्णुपुत्रसृष्टितीं तत्राश्चत्यश्रुले समीपेवाविना

२२



दामि

यकमूर्तिदीर्घादितिर्नियमितस्यजयथाविभवमालयंविधायनत्रविनायकंवाहतिनिःसंस्थापरैः।  
 तत्रायप्रयोगः। अत्रुर्वस्वःविनायकइहागच्छइहतिष्ठेतिगंधुष्पाक्षतैःप्रतिमायामाह्येदिति।  
 तश्चमोक्षोपचरैःसजांकर्याश्चत्रचविनायकप्रकारोमंत्रोयश्चःत्रिवमंत्रानवग्रहयज्ञप्रकरणेवि  
 नायकशांतौप्रदर्शिताः। अत्रापिनिकोतानाजंजुद्धयाह्निहितिः। अथथसमीवाद्यणाउपवेशश्च  
 यद्वोक्तप्रकरणेष्वस्त्रिवाचनंविधाय। प्रतिष्ठाप्याश्चथसमीक्षप्रतिष्ठाप्यप्रवृत्तप्रकरणेष्वलंकृत्य  
 विनायकंपंचाष्टैःस्वापयिवातस्पालयेसंस्थाप्यपूर्वोक्तिरीत्यावाद्यप्रतिष्ठाप्यसज्जिवात्राउणा  
 उभोजयिवादिदक्षिणादद्यादिति। इत्यप्रतिष्ठवहरं। अथकुजबहुरंथातातपत्रोक्ते। कुलोषकाद्य  
 श्वसन्नधान्यसकाखनं। अत्रपरिमाणविशेषानजिधानात्स्वपरिमाणराशीकृतंयाद्यंतत्रत्रीह्यादि  
 कंयज्ञियंनप्रधान्यमित्येकज्ञावासमुच्यते। अथवाकाचनंचयत्काउसारेण। धान्यरायोस्थापनार्थं।  
 सकाचनमित्युक्तंवादिदक्षिणाउपवेशदातव्यानांगवात्तस्याः। इति कुजबहुरंअथनिकृष्टबहुरंशा।

दामि कुशलकर

सर्वदा कुशलकर कोटनपः

सर्वदा कुशलकर

तानपत्रोक्तींअनिवेद्यसुरादिभ्योऽनुजानोजायनेनराःसत्तोजयेत्सहस्रंउथतंवातद्विजोत्रमात्र। उरा  
 द्वित्योहरिहरादित्यः। विश्वकर्मदिवतात्पश्चात्त्रादिशब्दादतिथिपुरादित्यश्चअधरःनिकृष्टोदरिइति  
 यावत्। सतसहस्रसंख्याविकल्पः। यत्पाद्यउसारेण। इतिनिकृष्टबहुरं। अथमदङ्गःखहरेकर्म  
 विपाकसंयद्देसर्वदाङ्गखचित्रस्यात्परचित्नातिनाशकाः। वाद्रायणद्वयंकर्याड्डत्वंजातवेदसो। एतस्य  
 कृजपत्रामत्रितयंवविद्यते। वाद्रायणस्वरूपंकृष्टप्रकरणेनिरूपितं। उक्त्यंजातवेदसमित्यस्यत्र  
 योदशवस्वसूक्तस्यप्रकल्पः। अथैदिवता। अद्यांगवगायत्र्यः। अत्राश्वत्सोऽनुष्ठुतः। जपेविनि  
 योगः। एतस्यकंपावतःपरिताध्यायांमदसौस्वर्गोऽनुप्रदर्शितं। नामत्रयस्यापिवातरोगहरेइष्टव्यश्च  
 अनयोश्चजपः। वाद्रायणानुरणादिनेषुदिवाकर्म्मविरोधिनोकालेकर्म्मव्यः। प्रत्याघ्रायद्वारावाद्राय  
 णकरणेप्रत्येकमद्यजपेत्। इतिमदङ्गःखहरे। अथसर्वकार्योसिद्धिहरे। शानातपत्रोक्ते। सचकार्य  
 येषुमित्यर्थे। गजघातीतवेनरः। प्राप्तादंकारयेत्तत्रगणनाथस्यतन्त्रितः। अथवागणनाथस्यमंत्रलक्षेण

जेष्ठः। देशं शोभो म उष्ये श्रगणशान्ति उरः शरं प्रशा दो देवालयः गणनाथस्य मंत्रो गणानात्वेत्यादिभ्र  
 स्पष्टममच्छाभिः। गणपतिर्देवताजगती च देजये विनियोगः। गणानां वा गणयति ५ ह्वामहे। कवी नो  
 वा इषुस्रमं ज्येष्ठराजं ब्राह्मणं ब्रह्मणस्पतः। अनश्रुष्य च तितिंसीदसादनं अत्र न इद्रेति उनवय हय न प्र  
 करणे दर्शितः। गणपतिगायत्री जपे रा इयं व विनायक शान्ति दर्शिता। अथ वा घृष्टशाघासमाघाता विनाय  
 कप्रकाशकधाकोपदेशा उरयं रिणव क्रुडगणपति मंत्रा दयोथाः। उष्याणिकर वीरादीनि श्रानि रत्नानि वा  
 गणार्थं ति विनायक शान्तिः। इयं उपरिता प्राया पुदी रिता गण शान्ति घोष शान्तिः। गणाः शं धः शान्ति प्रतिय  
 त्रिपादक मंत्र ससुदा य इति या व रा अनेन जघथा खो का प्रो ति उ पल द्यता त त्रानो त डा क इत्याश्रलाय  
 न शान्तिः। शत्रो वा त इति जै त्रिरीय शो तिरु पल द्यते। तत्रानो न डा इत्याश्रलायन शान्तिः शत्रो वा न इति जै  
 त्रिरीय शान्तिरि पि रिता घा पं ष्ट व्यश्र॥ इति सर्वकार्यं सिद्धि हरये। अथ देशान्तरात् स्याति केशहरा कर्मा वि  
 पक्ष ससुद्ये। तय ती त म र श्चेद्यः दुग्धि प्रा सा उ रं च य शक्र स न् सर्व दानं उ र्क पनो व ध ह ति श्रानि षि द्ध य कि  
 दी च जा तो पि श्री म तं कु लो देशा देशान्तरं या ति केश उ र्को न व स दा। वा द्य य णं उ च्ये त तथा कृ ष्ण ति कृ ष्ण  
 उ र्क व र सः स प र्त्त्यां श्री उ र्क प्र च त था। हो म प्रो को व्या ह ति ति ज पे सू क र वी रु णां द द्या ख द द्धि णा च्ये ण ति २७३

दीयति निर्दिशे वा। स्वयं सं न र के दि त्प त्र यः। वा द्या य णं कृ ष्ण ति कृ ष्ण थ च ल द्वा णं क र्ते च्छ प्र क  
 रणे स्प धा यि व रु णां च स प षि घा च प्र त्ये क म छो त्र र श त स ह स्रं वा श्री मू क्तां त र्गा तानि त्रा निः प्र त्प  
 वं डु द्वा य रा त था द्या ह ति ति र पि र्त्त र्वा क्सां खं य त्तु द्वा य रा श्री मू क्तां स्या र्धा दि ना मि का द्वा णा ह र  
 नि दिन रा वा ह्नी तां उ र्क ष्रा ड हो मे न य य र ह्य जे व दर्शितं ज पे सू क र व र ण मि ति। व रु णं दे व त  
 वारु णो त च्छ स्व र्ग रा खा घ सा ध्वा नो ध्न य त मं थ्रां धां त व क स्य र्क न क त म स्या च्छ ता ना मि ति सू क रं। मृ  
 त पु त्र व ह रे प्रा द र्शि ता त्रि ला दी ना पि निर्दि शे रा द द्या रा आ दि श च्छे न य जो क्ता। वी द्या द यो र्थं  
 तो ती ला दी ना पि य था श क्रि द द्या रा इ ति देशां त र म त स्या ति केश ह र। अ थ द रि द्र ह र घ न द म्  
 त्रि दाने। वा सु उ रा णे॥। द रि द्रो जा य ते म र्त्रो दान वि द्धी क रो ति यः। अथ यं जा य ते जे न क र्म



पावश्रुएधमे।पलादेननददेनवतुर्थशिनवाधुनः।धनदध्यप्रति कृतिंकुर्याच्चर्णमयोःश्रुतो  
 द्विजुजांवाहनोपेतानयनानंदकारिणी।शंखपद्मनिधिस्यात्तद्युक्तांतांपाश्र्वयोर्द्वयोः।श्वेतवस्त्रे  
 पासंवेक्षतेडुजोपरिविष्यसेत्रातडुलानांपरीमाणंजवेद्रोणवतुष्टयांतदद्वंवातदद्वंवातद  
 दंवाविशशाठुनकारयेत्रश्वेतमाल्येस्रथागंवेखलिप्यतूनेत्र।आग्नेयोदिशिसे मंचसमिध  
 ऽपतिलैरपि।।श्रेराजाधिराजायेत्येषयोऽस्वलिङ्गके।तिलहोमोष्याद्वृत्तिलिःपलादेनित्या  
 दिपलद्रीणयोःस्वरूपंपरिमाणप्रकरणेनिरूपितं।द्विजुजांवरदातयकरी।वाहनोपेता  
 कुवेःस्यवाहनमउष्मन्नरवास्त्रेति प्रसिद्धेः॥द्वयोःपाश्र्वयोःशंखपद्मनिधिस्यात्तद्युक्तेत्यत्रः  
 शंखेनकमलेनबोज्ञासितोत्तमांगैः।शंखपद्मनिधीतवतः।शंखनिधिमूर्तेर्द्वैनिशंखविक्रं।पयसि २७४

शंखे

निधिमूर्तेर्द्वैनिपद्मविक्रमित्यर्थः।आग्नेयादिशीनिधनदप्रतिमाध्वजास्थापनाआग्नेयदिशागोश्र  
 उक्तसंख्याकचाप्रत्येकंस्वामिदाज्यतिलानद्योत्रशतंसहस्रंवाङ्कुर्यात्॥।ध्वजायांहोमेवमंत्र  
 माहाभिंत्रोराजाधिराजायेतिध्वलिङ्गकेः।कुवेरनामवासकैःपदेर्भक्त्यर्थः।मंत्रस्वार्थंषडव  
 सानःअस्यावफुणःत्राषयः।विश्वेदेवावाअध्वयः।कुवेरोदेवता।अतिशक्तरिग्रहिताद्वंदःरा  
 जाधिराजायप्रसहसाहितेनमीवयंवेश्रवणायकर्मदे।समेकामाकामाकामांप्रद्योकांमेश्र  
 रोवेश्रवणोददात्तु।कुवेरायवैश्रवणायमहाराजायनमः।एवंध्वजादेर्मंत्रमालिधायतिलहोमे  
 विशेषमाहातिलहोमेद्याद्वृत्तिलिः।आह्वतीनासृष्ट्यादिनावप्रहयज्ञप्रकरणेदेवतावाहन  
 प्रसावेदशितंश्रवोक्रंकर्मकारयेनदित्या।आह्राचार्यःसर्वशास्त्रज्ञोऽभिनीतसजितंश्रियः।कुवे



तेनमंत्रेण सर्वकामीश्वरोसवेराश्रमिद्धनेरुतेसतिमपन्नोतवेत्रातस्मैहोमंरुतवतेखदद्वीत्यति  
 मांडुतामंत्रेणानेनविधिवत्प्राचुरायाद्युदयुखः॥॥दानमंत्रमाह॥उत्रराशाप्रतेदेवकवेरनरवाह  
 नपयशंस्वनिधीनांरूपतिश्रीकंठवत्तत्रदानेनयथाप्राप्तंदादिद्र्यममडुःखदांतसर्वंतवदाने  
 नपापमाशुविनाशयाएवंकवेरदानंयःकरोतिविधिपूर्वकांधनदेनसमोमर्त्यसद्गुणादेक्याय  
 तेतद्गुणादेवेत्यर्थंवादोवायुर्वैदोपिष्ठादेवतेतिवत्राश्रियफलदाकंकर्मेत्यर्थः॥इतिदरिद्रह  
 रघनकर्मविदानं॥अथप्रकारं तरेणाधनिवादिहरा॥कर्मविपाकसुश्रयोःप्राणंदवाधिकं  
 द्विष्टक्रीयाद्यश्चयोत्तर्याउत्पादयतिवात्येषांपाषाणेनप्रहारदालप्रहारदवैवजातोपिघनि  
 क्लोषनेनरहितःघायोदेशानरगतोसवेरामहाकेशीवद्रोगीघदावर्तीतवेत्ररः॥प्रक्षिक्तः॥ २१५

द्विष्टहणानामशास्त्रनिषिद्धद्विष्टहणंसयसुव्यादयतीतिनिमित्तमन्त्रेणलपोत्यादित्तप्राषणा  
 द्विष्टहारादितदप्रहारोसृष्टिप्रहारश्चपेटादानंकाग्दावर्तीति॥इमावर्तंतस्युदावर्तीवमन्त्रानि  
 त्यर्थः॥अत्रप्रायश्चित्तमाह॥कुरु कुरुनिकुरु कुरुश्चांद्रायणमथापरेक्यर्थाद्विष्टहणं चहोमोवाह  
 तिनिस्रयायाक्वेदमिष्टकर्मयुतं वरुणं जयेत्प्राज्ञाप्रत्येकं कुरु स्वचांद्रायणमथलक्षणांनिकुरु  
 णो निष्पिता नितिनिमित्ततास्तस्यातेमित्तिकाजिकुशुदीनियुष्मानिसमन्त्रानिवायेत्प्राज्ञांआज्यचरु  
 न्यांप्रत्येकमष्टोत्तरशतंदोमं॥वाहृतीनामृष्पादिनवयहयज्ञप्रकरणेदेवतावाहनप्रधावेत्तिह्ति  
 याक्वेदमित्यनेनमोक्षवरुणामृष्पमित्येतसूक्लक्ष्णतास्मात्सवपत्सूक्तानःपातिवात्रास्य  
 सूक्तस्यवशिष्टंसाधिःवरुणोदेवतागायत्रीहोदःअस्याज्ञगतीजपेविनियोगः॥शुवरुणामृष्पमयं  
 हंराजत्रहामोष्ट्यासुक्षत्रमलयायदेमिष्टकर्मरत्रिवदतिनेभातोअद्वयं॥सूत्रत्रमृत्या  
 क्वःसमदीनताप्रतीपजगमासुचोमृनासुत्रमयं॥अपीमध्येताप्येवासंष्ट्याविदजरितोवमन्त्र

प्रथमयः यत्किंचेदं वरुणादेः अनेन्द्रोऽहेम उरुष्यश्च मसि अत्रित्रीय न वधर्मो मयोपिमः ~~तस्वस्य~~  
देवस्यो देवरी रिषः ॥ २ ॥ तिमोऽसुराणो तिस्रकोऽस्ति प्रकारो तरेणा धनित्रादिह संश्रय वरा रात्रस्य  
पिशाचवाहरे कर्मविपाकसंयदे अथास्यवर्तित्वपतिसेवनाद्विषदिसनात्राद्दानसमादानदुःखा  
र्याविमर्दानादंष्ट्रित्तिश्चेत्परणादुक्तलगात्तयापरादिवेदाद्यस्यशास्त्रस्यापठना कर्मसेवनाशा अवे  
दिकशास्त्रपाठादेदैदिकर्मकारणावित्यर्थः ॥ विषद्विधनशास्त्राद्योर्मणादपिशोनकलननीमैद्युनावे  
वपरस्त्रीगमनात्थाश्रवाध्ययनसंपन्नैरुत्तफलदानाद्विज्ञेयताऽरुताध्ययनवृत्ताध्ययनादिप्रथ  
देवब्राह्मणरक्षाउत्तुफलदानद्विशेषत्वाणापहरणात्प्रवृत्ताः अरण्ये निर्जले देशे जायते बलरात्रसं  
हराद्ब्रह्म पिशाचवासुपवृत्तं श्रुताध्ययनसंपन्नकनिमित्तेष्वन्यतपरनिमित्तकश्चेत्यतः स्रस्त  
राद्भसोपवति श्रवाध्ययनादिरहितउन्ननिमित्तेथान्यतर्गनमित्वा चष्टतः सः पिशाचजायत इति  
चेदः अत्र निष्कृतिवृत्तमवनोकात्प्रोत्तुत्रादिचित्कार्यो ग्याश्राद्धै उक्त्वा पिशाचो मादिति प्रथमं ब्रह्मणा २५

स्वार्पणं स्रष्टुं शोऽपनादेवनयतः देवतातीर्थसेवानिः कथादानेन चैव हि ~~स्र~~ वरुणसंपेषा ~~स्र~~ स्रवते  
मनुश्च वीशजपहोमादस्तिरिति जपो देवपारायणपठनवादिभूक्तजपश्चात्तथासहस्रनामादिभूक्त  
जपश्चादोमोयुतहोमादि सवनव्यहयज्ञैकप्रकरणे तद्वृत्तिलत्रीदिव्यादेय ~~स्र~~ स्रोवाहृतयो  
गायत्रीवा आदिशब्देन दानमनिधीयते तत्र गौरुतिलदिरापानीपरिमाणे च शक्तनुसारणकल्प  
नीयं पावादिदानमेव च प्रायश्चित्तोपक्रमपद्धतौ दर्शयते ~~स्र~~ स्रवृत्तार्पणत इति उपलक्षणैतत्तस्य  
ब्राह्मणस्य वाराज्ञा वा इदमपहृतं तस्मै यथायोगे तस्य त्रादेवदित्यर्थः जपनादेवदित्यर्थः ॥ षण्मासव  
संवत्सराब्धवीरुत्पत्तिसंश्रूक्तस्य शशरवासमाश्रातानां शाखांतरपरिपावितोशतरुद्रीयादीनां वि  
न्यतमप्रतिद्विगन्तयोऽसंशरणप्रपेदित्याव ~~स्र~~ स्रवृत्तानि निमित्तकानियावृत्तकामपेक्षया  
युं सानिसमस्रा विवायोऽपानीवेदपाशयणविधि ~~स्र~~ स्रसहस्रनामानि ननु प्रहय्येप्रायश्चित्तोपक्रम  
पकांश्याकामिदिविधिपरिसंभार्योतवद्वर्थात् ~~स्र~~ स्रवृत्तबलसंज्ञसर्वरूपपिशाचहस्ये इति

१५ मज

१६६६६६

इति तद्वदन्तस्त्वद्विष्ट्वेति मन्त्राणां विधाने निर्वृत्तं कर्म विष्णु कपस्त्रिंशत्कीर्णं करणं  
 अथ यद् प्रकरणमारभ्यते तत्रादौ प्रजायद्दहरं कर्म विष्णु कपस्य च जघनागामिनं वा द्वादि  
 स्स्य तो जनी प्रजायद्दस्य कृति ततश्च तद्वा तवे अतीसारी वक्रघी चगात्रे सर्वत्र वात वा अत्रि चिद्  
 र्तस्य नाशस्यादत्रेयनिष्कृतिपशा क्व्वां द्रायणे वैवर्क्यां दानपत्रयं त्रद्योत्तरमद्वत्तं उमर्पिणां  
 ज्यात्रया पुनर्मा मेधुमंत्रेण जपेत्पुस्तकं कर्मा प्राजापत्यं क्वादीनि नक्षत्राणि क्वादीनि करणं निष्पि  
 तानि पुनर्मा मेधुमंत्रेण जुष्टया दिव्यं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्विद्वयमिति द्वा दशावाक्सा पुनर्मा मेधुमंत्रेण  
 देवतयं पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः पुनर्मा मेधु  
 द्वियं पुनराया पुनर्मा पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः  
 सरद्यवापः इदं पुनरद्वदशे दीद्योयवायवर्कसा अथ मेरेत् प्रसिच्यते यन्मन्त्राणां यते पुनर्मा मेधु  
 तं कुरुते न पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः पुनर्मा मेधु

२१

मन्तरं वलिदानप्रकारमाकांक्षया त्रे नवेत्री हितं तु लानाडको मितारनिक्षिप्य जलकृतेन ग्राह्णे नीव  
 चतुर्षु पथां गंधपुत्रादि सप्तत्रसमन्वये वलिनिषेध आडकस्वरूपं परिमाणं प्रकरणे निरूपितं वलिदानं  
 मंत्रमाह अथ वलिनिषेधप्रजायद्दहरं मदावला त्रापुररश्मि चरुं सिद्धिप्रयत्नं महायदं अतिप्रजायद्द  
 हं अथवायं च कर्मविष्णु कपस्य च जघनावाचां डालीयोगश्चैव क्वादीनि क्वादीनि करणं निष्पि  
 तानि पुनर्मा मेधुमंत्रेण जुष्टया दिव्यं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्विद्वयमिति द्वा दशावाक्सा पुनर्मा मेधुमंत्रेण  
 देवतयं पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः पुनर्मा मेधु  
 द्वियं पुनराया पुनर्मा पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः  
 सरद्यवापः इदं पुनरद्वदशे दीद्योयवायवर्कसा अथ मेरेत् प्रसिच्यते यन्मन्त्राणां यते पुनर्मा मेधु  
 तं कुरुते न पुनर्मा मेधुमंत्रेण अथवायं च पुनर्मा मेधुमंत्रेण द्वितीया चरा उष्टु प्रदेमे विनियोगः पुनर्मा मेधु

लोजपः नंतसुखोकोहोमः कार्य एवंहोमानंतरं वलिदानप्रकारमाहापायसंकोष्यपत्रेषुधजेः श्रुतेः प  
रिष्कृतानि निष्पद्यं घृष्टघ्नाद्यैर्यहस्रजां विधाय चादेवालये न्निषेधादानि क्षिपेव प्रवृत्तये अत्र मंत्रमा  
हः ॥ प्रयत्नीकवर्तित्वे मंदाहवमपहावागः आनुस्सुखं सिद्धिप्रयत्नं च मदायहः ॥ इति त्वरग्रहह  
अथेकाहिकद्वारग्रहहाराणि कर्मविपाकसंयते तस्करो यावथा प्राणि हिंसको निर्दयश्चयः आचार  
रहितो यश्चापरवमस्य निष्कः अथ मं निजोयश्च तानेता वद्वारसंस्तकाः प्रयत्नाति ततन्मात्रेकरा त्रिद्वारी तवे  
त्राहिरात्रेण त्रिरात्रे वाचतुरात्रद्वारेण चाशीतद्वारेण सततं द्वारेणो द्वारं ग्राचायु तो सवतितस्ये ये निःकृतिः  
शास्त्रे वा दितः ॥ वां प्रयणैः प्रकृते त कयत्किञ्चित्कृत्वा आच्यहेमे वाहति निःस्त्रोत्सस्यत्र कांसहकार  
प्रवालैश्च मध्याक्ते बुद्धिया तथा जातवेदस मंत्रेण दद्याद्दिमजशक्तिः स हसकलसखानमीश्चरस्य उकार्ये  
रावां प्रायण कृद्वाति कृद्योर्ल द्वाणकं प्रकरणे निरूपितं बाहतीनाश्रया दिनवप्रहयज्ञप्रकरणे दे  
वतावाहनप्रसवेदशितं जातवेदस मंत्रेण बुद्ध्या दिपर्थे अस्स्य चार्थाक्षीतद्वारहरणे निरूपितमानवे

वलिप्र

५

२७

त्यने नष्टर्वेका अघोत्रसहस्र उरुघातो ससकलशानिवेकं रुद्रानुवाके रुद्रस्य क्रियां रुद्रानुवाकानामाघी  
दितशानिवेकप्रकाराश्च परिताषाया रुद्रतिथाने स्पधाया वलिदानप्रकारमाहापायसंकोष्यपत्रेषुधजेः श्रुतेः प  
यसां कसुशर्करां निष्पद्यं घृष्टघ्नाद्यैर्यहस्रजां विधाय चादेवालये न्निषेधादानि क्षिपेव प्रवृत्तये अत्र मंत्रमा  
वासहेमनजलकं चेतनसंयुतं मघादिकं वलिदद्यान्मंत्रेणानेन संयतः ॥ अथ ध्वजेः सुत्रध्वजेः साहवयं जिज्ञाती  
कुसुमानपिशितान्येकं वलिदानं त्रमाहा प्रयत्नीकवर्तित्वे ममेकाहिकमहाद्वारं आचरय्य सुखं नि  
द्विप्रयत्नं वमहायहः ॥ द्विरात्रद्वारवलिदानं विशेषमाहाद्याहिकारं च त्वरेमास्थाने च देवलिक्षिपे  
याहिके नदिकेयस्य समीपे हस्रसुध्वा ॥ विशेषं तने दद्यात्तत्रार्थिकमहोत्सवलिदानं मंत्रेण द्याहिकस्य  
महाद्वारे स्रहः कार्यः ॥ एतयाहिकार्ये त्रिरात्रद्वारे तथा वं त्र्येकद्वारे स्रहः ॥ द्याहिकार्ये द्याहिकयोः द्वारयो  
त्तर्वाक्रियवलिना सत्रार्थिकद्वारवलि विशेषमाहाद्वारो रायतने कार्यं मंडलं तत्रपीठकं तत्र पथस्था  
पाथे त्रयहसं स्रहपयत्रतः ॥ कृतसंस्थापयत्तत्रपीठस्थापरिसंयुता तस्मिन्पीठे वलिदद्यात्तद्वारं स्रहपया

वलि

यसंज्ञात्रामुसुरां चैवसापिपिपाकमेवचारकवसोरकसुघंष्टकीयाद्वनेविवोगंधघ्रादिकंरक्तंदद्या  
 द्रोगस्यशान्तये। यजातीयानंसुरानिषिद्धातजातीयैःसवलिन्याद्यः। शीतहरेषुविशेषः। विद्वोरायतने  
 यद्वाश्रुलेष्यदुमस्यवाशीतद्वरेविधानेनसंयतश्चवरेद्विवावलिहृत्किञ्चनसुः। हस्तवस्त्रोत्तरीयकः।  
 शर्करांपायसंचैवक्लिष्टैवत्रतंडलाकांस्यपात्रेविनिक्षिप्यस्वर्णतडुपरिन्सेत्रादृणंकिंनेनसहितं  
 वलितत्रविनिक्षिपेव। घृजयिवाविधानेनैग्रहंघृपदीपादिसिरतद्वितः। वलियानमंत्रमाहप्रष्टकी  
 श्रवलिचेमंडारीतस्यद्वारापहोपद्विवाहनगोविंदवरहृद्वदनप्रतोअसुरअसुरश्रेष्ठनारसिंहमदावय  
 नक्षहारेतिविशेषमतिदधाति। उल्लहारेमहेशानसमीपेवलिमाहरेत्तारा। इतद्वस्यस्वनेवावलिक्षर्वाक  
 एवहिप्रवोक्तथीतद्वरहरोक्तः। अत्रमंत्रागोक्षीश्रवणाकारत्रिशूलधरागोपतोत्तस्मद्भूलितदेव्यात्रने  
 त्रशिवशंकराप्रष्टकीधवालेचेमंडारितस्यद्वारापहोपद्विवाहरेत्तारा। इतद्वस्यस्वनेवावलिक्षर्वाक  
 द्वारेविशेषमलिधीयतोसंततद्वरेस्थानस्यालयेवलिमाहरेत्तारा। इतद्वस्यस्वनेवावलिक्षर्वाक

अस्मिन्नेवैकाहिकादिद्वारहस्थानानिषुर्वकथितानिषुवलियानमंत्रमाहप्रष्टकीश्रवलिचेमं  
 हरवसंततद्वरेअत्ररसुसुखेसिद्धिप्रयत्नवमहावलेति। स्वैकाहिकादिद्वारयहहराणि। अथप्रउंउ  
 ग्रहं कर्मविपाकसंयत्ते। असुचिर्यसुशेदेवब्राह्मणंउद्विषुर्वकांतंष्टकातिप्रउंउस्योयहस्रहणा  
 तंतः। द्वारस्यर्थात्रमीपक्षधातीचेवप्रतायतो। कृच्छ्राद्यनेऊर्यातदोगस्याप्रउंतयोवातत्रावात्स  
 कंचजपेदसुतसंख्यासाश्वशक्नाहेमदानं चक्रयादेवंप्रसुयतो। कृच्छ्रांवाद्यपण्योः। धरुपंष्टकप्रक  
 राणोस्वधाध्यावानत्रावातनेषजमित्यस्थाषादिवातयुत्महरेत्प्रधावि। वलियानप्रकारमाह। तिल  
 पिष्टेनसहितमंत्रंलजाश्लोजनैकमिंश्रिस्थापयिवात्रगंधसुध्यादित्तिप्रहवतः। पथेघृजयिवा  
 मंत्रेणानेननिक्षिपेत्प्रष्टकीश्रवलिचेमंत्रंउंउस्यमहायहा। प्रात्ररसुसुखेसिद्धिप्रयत्नवमहाव  
 ल। इतिप्रउंउग्रहहरो। अथकामिलग्रहह। कर्मविपाकसंयत्ते। अथकामिलपात्रेयत्रप्रदानि  
 तपदुगाः। उक्तेपराङ्केतकालग्रहोष्टकातिमानवा। अंतैर्महीपीतनेत्रःपीतवपुत्रकोलवे। सक्रयांड

विक्र

पवारं च प्राजापत्यमथापरं वलिश्च प्रायसाधपनाजिसंघस्य प्रहः देवेजलस्येत्यमित्रेणानेन स  
 यतः प्रहः शिवलिवेमेकामिलाराममहावलत्राउस्थसुखंसिद्धिं प्रयत्नं महावल लोकनायकप्रहः कालनाय  
 रूपं परिखाषार्याहृष्टप्रकरणे इत्युवाच इति कालनायकप्रहः कालनाय  
 को लोकनायकश्चेति न शिवकल्पेन उक्तमिति कर्मविकसमुच्चये आदिस्यादित्येधमादिस्या  
 नस्थितेऽप्यनऊर्याद्विहयज्ञंतकालनायकसंज्ञकः प्रहोऽप्युक्तातिवेदिकं तत्रेमानिलवांति द्विष्ट  
 इत्तु इत्तु शेषोद्धारो लवतिदाकणाः त्रिमधुक्तेरसालस्यपलवेत्तात्वेदस्याः अद्योतस्यदस्यं हिदुड्या  
 व्रतथाधुनाः प्राजापत्यं प्रकथीतव्यमद्वानचय क्तितः त्रिमधुक्तेरिति त्रिमधुनिशर्कसज्यमधुना  
 त्रिमधुक्तेः क्षत्रतरोः क्षत्रैर्षातवेदसीत्यपि पाठः अतश्च ज्ञाप्य पक्षवाविकल्पेन होमद्वयाज्ञातवे  
 दसाज्ञातवेदसेधुनवामसोममिति मेत्रेणातिप्रिय अस्वपाषाणो दिशीतद्धारदरे इत्युवाच प्राजापत्य  
 स्वर्णं कुरुप्रकरणेऽपि विद्वानप्रकारमाह वउष्यथेः र्काः प्रहोऽप्युवाच प्रहोऽप्युवाच २६०

पितृ प्रह

विक्र

श्वपिणाकंचतिलास्रथाहिरण्येयथाशक्तिपात्रेकाश्रमयेनवाहद्यादिदिशेषः अत्रमंत्रमहाप्रहः शिव  
 वलिचेमलोकनाथमहायदः प्राउस्थसुखंसिद्धिं प्रयत्नं महावल लोकनायकप्रहः कालनाय  
 लोकनायकप्रहः कालनायक इति प्रहणमधेयवेकालनाथमहायदेस्वरुक्त्तयः शक्तिका  
 नायकप्रहः अथापि त्रयदहः कर्मविपाकसंयवेः प्रस्यं प्रमनसा प्रऊर्याद्यनहरं नृणापी  
 न्यदृष्टीतस्यात्र त्रिविक्रान्तिवेहिव्याधिनाद्वद्वत्सपात्राण संदेहकारिणाहरेद्वृत्तवेकार्यवांदा  
 यणामहोच्यते श्रीभूक्तेन वराहोम अद्योत रशतं सवेरा नक्षिंत्तर्वेकिरीपैवरात्रौ दद्याचतः षष्टौ वा  
 द्रायणलक्षणं कुरुप्रकरणेऽपि विद्वानप्रकारमाह वउष्यथेः र्काः प्रहोऽप्युवाच प्रहोऽप्युवाच  
 कस्यमधुवारावृत्त्यापंचोत्ररशतं सवति ततः पंचासिपंचनिःअजिरेकेकाडतिरिति तिस्रः साः पव  
 मिलिवाद्योत्ररशतं सवती करीत्येति कालनायकप्रहः कालनायकप्रहः कालनायकप्रहः कालनायकप्रहः  
 तिपितृप्रहः अथलोपितप्रहः सैकर्मविपाकसंयवेः प्राणांशिलांतुं देवालयोद्धारुस्युवति  
 मूत्रपुरीषमपि वातं उक्तातिप्रहानरं लोकानिधाय तश्च त्रिविक्रानिधरं नृणां प्रतिश्रुत्तुरीषस्या

विक्र

५.५

इकनेत्रसथाधुनः पित्रोद्रोकीचवदनेदेहेत्रैववणीत्वेराठपवाप्तत्रयंक्रियाप्राज्ञापत्यमथापिना  
 धिअरुलधुतावेनिमित्तवशात्रेमितिकयोराधिअरुलधुप्रायश्चित्तियाव्यवस्थाविधेया। तिलहोमोवा  
 दतिकिरुधनधुतपधथाशीतलंशकिलहोमदद्याद्विवात्रसारतः होमसंयंत्र्यासहस्रंउजपत्यस्य  
 तंधुनायाहतीनाद्यथादिनवग्रहयज्ञप्रकरणेदेवतावाहनप्रश्नवेत्तथाचिउधनद्यमित्तमहस्यस्य  
 उपरिताघायांरोगप्रतिमादानविश्राद्धदीरितभ्रतिप्रकारमाहपायस्यउडलाजात्रेपिपाकेश्वरै  
 क्षिपेवाचठः पथेसमस्यवर्कस्राद्यैग्रहसादरावत्रवलिदानपात्रस्यानलिहितवाद्यथासुतवंपात्रं  
 प्राद्योतथाकालअवलिदानमंत्रमाहअष्टक्रीष्ववलिवेमनोकायतमहाग्रहात्रुस्पर्शुवसिद्धि  
 अत्रमहावल्हिनोकायतग्रहहोत्रथापसंवग्रहहोत्रकर्मविपाकसंग्रहहोत्रमहःसंख्यंगवदि  
 दायोत्रमनाजनेपेकोविशेषजोनीयसमापसंवसंज्ञकायहोडकातितन्मानुहदयोदशोषववाशजायने  
 तन्निदत्यर्थक्रियांचंद्रायणंनराप्रववदनिदानचमसेरोगाद्विमुचतेवांद्रायणंरूपंरुद्रप्रकरणेनि  
 पितांश्वर्वदितिका मिलारव्यग्रहहोत्रप्रकरणेवर्कवनिदानमंत्रेआपसंवमहाग्रहहोत्रकार्यं

५.६

पसंवग्रहहोत्रमहाग्रहहोत्रप्रदहोत्रकर्मविपाकसंग्रहहोत्रप्रदः प्रष्टकातिपरदारानिर्मयनोकाविप्रु  
 धेचनराप्राज्ञापत्यसमाचरेशागायत्रात्तिलात्रुद्रागायत्रीमधुतजपेशदद्याद्विमन्त्रशक्याच  
 वलिपूर्वोक्तवद्रवेत्राज्ञापत्यलक्षणंरुद्रप्रकरणेत्यथाथिहोमसंख्यासहस्राजपानंतरं होमः  
 पूर्वोक्तवदितिआपसंवग्रहहोत्रकरीत्यावलिदानमंत्रग्रहावलेसूत्रादितिक्रमग्रहहोत्रमहाग्रह  
 होत्रकर्मविपाकसंग्रहमहाग्रहहोत्रसंवेदक्रीयाद्योत्रजेस्त्रियंरजकादिस्ततः पादतनदाहीतवेत्ररात्रो  
 द्रायणंसांतपनंक्र्यांतद्रोगशांतयोयावेदसमंत्रेणमध्यास्तोत्रपन्नवोत्रअधोत्रसहस्रंउजुद्रया  
 ज्ञातवेदसंजपःसहस्रनाश्रुद्ध्यादिमंशक्तिः रजकादेरित्यादिरजकश्चर्मकारश्चनयोवरुडप  
 वचक्रैवर्वमेदजित्वाश्रसद्यैतेअंनुमायिनश्रुत्तिसृत्पंतरोकाचर्मकारादयो रजकादेरित्यादिशदे  
 र्दृष्टंतेजातवेदसमंवेष्पाषादिशीतज्ञरहरेद्रष्टव्याविच्छसहस्रनामानिपरिणाषायादर्शितानिज  
 पसंख्याव्याधिअरुलधुतावेनाद्योत्ररशतमित्यादिक्रमणकल्पवलिदानप्रकारमाहउपात्रेपि

पिण्णकलाजाकाचातिलांशया। प्रजयिवाप्रहरकांधाद्यैश्चउपथे निक्षिपेतवलिंविदाप्रमंत्रेणानि  
 नसंयुतः प्रष्टकीध्रवलिवेमहाह्वारमहाप्रहाकुंभकाराख्यष्टक्रानिततत्कृत्वावजवेवाअसंबद्ध  
 लापीचश्चासकाशीचजायतेअत्रवादायणंजयद्रुजयाचुवस्तुर्षिपी। मंत्रावाहयः प्रोक्रानपेक्षकं  
 चपौरुषोर्षादिपीतिवस्तुसुद्धयाशमर्षिश्चष्टयकसंब्यात्रशोत्रसहस्रंद्याहतीनामृष्यादिनवय  
 स्यत्रप्रकरणेदेवतावाहनप्रसावेनिहित। पौरुषंश्रुतंअस्यत्रार्षादिपारस्ताषायांदिशित। सावित्रीमा  
 यत्रीअस्यानामृष्यादिश्रुत्वाउहोमेजपसंख्यावष्टोत्रसहस्रमसुतंवावाधिप्रुलघुनावेनुकल्याव  
 लिसनप्रकारमाहा। अत्रतिलंअपिचपिण्णकंपायस्मृत्वातेलंचष्टममेयात्रेकवागंयदितिअह  
 रजयिवाहणंनवसहस्रमसमयुतोवलंचउपथेरात्रेमंत्रेणानेननिक्षिपेत्प्रष्टकीध्रवलिवेमंत्र  
 काराख्यमहाप्रहात्रात्रस्फुसुखासिद्धिप्रयच्छ्वमहावला। इतिकंनकयहहरे। अथकपिलयहहरे। कर्मवि  
 पाकसमुच्चयो। विवेद्योद्धृष्टविप्रसवेवायतंअहं। कपिलाख्यः अष्टक्रानिततत्कृत्वाश्रुत्वाश्रुत्वादीगदह

वांचैवचवेपीतविलोचनः। त्रिगत्रमुपवासस्थात्रदोगस्यापुत्रयोसोमारुद्रेतिवजपेक्षकंउत्तमंभ्य  
 हिरण्यचरुयाशकिदद्याद्यवलिक्षिपेत्सोमारुद्रेतिश्रुत्वाप्रप्रदस्यते। वलिदानप्रकारमाहलजांति  
 लाश्रपिण्णकपिष्टरुधिरमेववा। मांसवतेलपक्रिचरवाष्टमयः। नारात्रोवःपथेक्यववाहृत  
 ना। हिरण्यसहितेनाथशण्कतेनसंयुतो। वलितत्रक्षिपेत्प्रष्टकीध्रमंत्रेणाणेनसंयुतः। प्रष्टकीध्रवलिवे  
 मंकापिलख्यमहाप्रहात्रात्रस्फुसुखासिद्धिप्रयच्छ्वमहावला। सोमारुद्रेतिश्रुत्वाप्रप्रदस्यते। वलिदानप्रकारमाहलजांति  
 धिः। सोमारुद्रोदेवतात्रष्टश्रद्धेः। जपेविनियोगः। सोमारुद्राधारयेथासूर्यप्रवाग्निषयोरमुष्मति।  
 मेदमेसधरत्रादधानार्थेनोत्तरेद्विपदेशंचउः। पदे। सोमारुद्राविहताविष्टचीमस्त्रिवायासेनोगम  
 याविवेश। अरिवाधेयानिर्मानिपरावैरसोश्रवसंनितिसें। सोमारुद्रासुवमेतान्यस्मेविधानत्रु  
 लेषजानिष्टन्अवस्पत्सुवतेयत्रोअस्मिन्नष्टवर्द्धकतमेनोअस्मत्। इतिगामुधौतिगमहेतीसुशेवो  
 सोमारुद्राविहृतः। प्रणवतोषरुणस्यशाशंगोपयतः। वसुमस्यमान। इति सोमारुद्रेति

सूक्तानि शनिकपिलयहहं संप्रथम शिवपादयहहं कर्मविपाकसुखेमात्रपिउर्वितायासुवदिय  
 छगर्वतः प्रवसं क्रमतेतं शिवपादानिधियहः एकान्तिनक्षणान्मूर्तिजन्मरेणवाचवेअपाददाहीद्वीचि  
 वजायतेतत्रानिष्टानिःखांद्रायणलवेदांतेसूक्तेननुज्ञयाक्कांभतंचाष्टाशिक्षतवनिदियायथाविधिः  
 द्रायणसुखं कुरुकरणातिरूपि तेअतिपिउर्भूनामिति सूक्तमृधिवानोकाः प्राध्वसर्वेगहरेस्यधा  
 शिचयेरपिपद्यघोमस्ययाद्यतस्यापिसमप्रसूताष्टयाहोमोन्मसुर्ववलिदानप्रकारमाहः पथ्यति  
 लोश्वापिण्णकंलानाहवाथमृणयोमार्गद्वयसमायागेवखाद्येः सहमर्वयेवाततोवलिद्विपोद्विद्वान्म  
 वेणानेनसंभक्ताः प्रष्टकीधवलिजेमेशवपादयहहः आत्रस्यसुखेसहप्रयत्नमहाक्लावलि  
 दानेभस्यादिकार्यविशेषः स्यान्नविहितवैयोजिकाः कालोप्राधः अतिशिवपादयहहः अथोद्वेकेशि  
 यहहः कर्मविपाकसुखेनिधराणंपरद्वहृरिण्डः एकान्तिनाकोजिपेवार्दकेशिवहोद्वि  
 तिमानवस्फोटसत्रजायनेतस्यागेष्वखिलेधियावांद्रायणंप्रकृषीतकृष्टवारोगस्यांतये अतिसूक्तेन

२५३

सुदुर्घममङ्गपथकथयकाहोमोद्याहतिस्त्रैवदद्यात्क्षणविशक्तिनाचांद्रायणंप्रकृषीतेपाविले  
 मस्याः शिकुवांद्रायणां अल्पवेप्राजाप्रत्यहृः अनयोश्चलनणहृष्टकरणस्यचायिआतेसूक्तेन  
 निश्चानिपिउर्भूनामित्येतसूक्तप्रतीकेनातेसूक्तमित्युक्ताअथचाष्टादित्राविधानोकाः प्राध्वसर्व  
 रेगहरेप्रदर्शितघाहोमसंख्यास्यद्योत्तरसहस्रांअत्रप्रष्टवहोमेनसूक्तेनव्याहतिहोमपिमेवसंख्या  
 व्याहतीहोमेद्व्यांतिलद्याहतीनपृष्ठादिक्रुमांडहोमेदर्शितस्यवलिदानप्रकारमाहः पायसं  
 फलकंदलाजाश्वाद्यपकादधिताप्रपात्रेविनिश्चिप्यमोदकंऊतमेववावताः पथ्यतिपेद्वस्त्रा  
 धाद्यैयहमर्चवमवलिदानमंत्रमाहः प्रष्टकीधवाल्चेमंत्रद्वैकेशिमहाप्रहः आत्रस्यसुखे  
 सिद्धिप्रयत्नमहावलः अतिद्वैकेशिप्रहहः अथविष्टतप्रहहः अथविविधतात्रि  
 तिवसेनांतरः कात्यायनः सुकीयाचरगवत्रघात्रास्यपप्रचतीरुनरांविष्टतामाष्टक्रान्तिप्र  
 शास्त्ररीत्रनाहृष्टपादतलेदाहोवाद्यैकीचितपाद्यवाः अफाट्युक्रुञ्जायतेद्वययोः पादयोः स्य  
 विष्टवीवाध्रश्चेवनास्यतेतस्यानिःकृतिचांद्रायणंप्रकृषीतधवाकेसाप्रफक्रोअथोत्तरसहस्राणि

मस्याज्ञातवेदसासदस्यशीर्षाभ्रक्तवज्रपेय्युत्तमं स्वयं ॥ विद्वोत्रिमसद्वृत्तं वमसुवाधैतपेत्रमदसकल  
 सवानवधुदेकस्फकारयेत्रदद्याद्विरापदानेनवलिदेययथाविधिः वांद्राणस्त्रेभ्यश्चकुरोपकरणेनवायिडा  
 तंवेदसमंत्रमप्याद्विद्यीनक्षरहरेनिहितमसदस्यशीर्षाभ्रक्तवज्रपेय्युत्तमं स्वयं ॥ विद्वोत्रिमसद्वृत्तं वमसुवाधैतपेत्रमदसकल  
 धायिविष्णुमदस्यनामानिपरिभ्रम्यार्थप्रदर्शितानि। वसुदेवसदस्यलक्षणानं उरुधस्युत्तमं स्वयं ॥ विद्वोत्रिमसद्वृत्तं वमसुवाधैतपेत्रमदसकल  
 ध्रुवप्रलितुरमोउभेतिशक्तपेक्षयावेकल्पिकोद्विरापदानवशत्रात्सारे। वलिदानप्रकासादपयसोपे  
 उलिकाभयाद्विप्रहमयं। विद्वाननेनमंत्रेणसंयतोनिश्चिपेदलिं प्रक्रीधवलिवेमंविषंतास्यमहप्रहः। आ  
 उरस्युख्योसिद्धिप्रयच्छत्रमहावलः ॥ इतिविष्णवेयहहरः ॥ एतदेवविद्वत्तत्त्वमहहरमपि ॥ अथमहाजि  
 ह्वायहहरः ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ सुसलोत्सवलदीनियायहसुद्धाणैवापि। आशुधानामातदास  
 तंधपोनोरक्तकालकमात्प्रक्रीधतिमहाजिह्वातिशयं। नतोमरुदवागम्याशाषीजिह्वात्रणीत्वेय  
 कंपुत्रः प्रजयतत्रैत्रयत्रतमत्वरं। आसुप्रहोमिवादाति। लिखनं धैतवज्रपेया। गायत्री चतदानं च दध्यच्छत्र  
 उसारतः। व्रतमपवाशः। होमसंख्यात्कृष्टोत्रसहस्रव्याहृतीनागृह्यादिनवग्रहयज्ञप्रकरणोदेयतावाहनप्र  
 सावेदर्शिता। अथयत्रयन्त्रव्यस्यवाषांदिपरिस्ताप्रायरंगप्रतिमादानविधिगायत्र्यास्तुक्तं। इहोम प्रकरणेनिस २५

५२

२५

पितृश्राद्धेकमनयोर्जपप्रयुक्त्वं प्रकारमाहापक्वान्तस्यास्तथापक्वातिलपिष्टं सुराद्विधिरुधिरेश्वरपशाकान्  
 शूर्येकृत्वाचतुष्पथोवखाद्यैर्यदमस्यर्षवलिनंदद्याद्विचक्षणः। सुरादीन्युकारिण्यादयानि। वलिदानमं  
 त्रमाह ॥ प्रक्रीधवलिवेमं महाजिह्वामहावलः। आउरस्यसुषं सिद्धिप्रयच्छत्रमहायद ॥ इतिमहाजि  
 ह्वायहहरः ॥ अथनवग्रहहरः ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ सस्युसुपाखिनोवापियुरोर्वास्वामिनोया  
 थ्याया। श्रीगामिनंसकृमतेयदः। कामंनवग्रहः। कामंनवग्रहः। ततःस्फोटयेदुदाहीजानितेनेत्ररोगवात्र  
 जायतेनिष्कृतिस्वत्रतघकृद्वयंनवेत्तंअतिरुद्धुश्चक्रुवैवांद्रायणमथापिवा। कृष्णोदेउड्यात्सापि  
 ईदुंदद्याद्विजातयोपोरुषं वज्रपेय्युत्तमं स्वयं ॥ विद्वोत्रिमसद्वृत्तं वमसुवाधैतपेत्रमदसकल  
 ध्रुवप्रलितुरमोउभेतिशक्तपेक्षयावेकल्पिकोद्विरापदानवशत्रात्सारे। वलिदानप्रकासादपयसोपे  
 उलिकाभयाद्विप्रहमयं। विद्वाननेनमंत्रेणसंयतोनिश्चिपेदलिं प्रक्रीधवलिवेमंविषंतास्यमहप्रहः। आ  
 उरस्युख्योसिद्धिप्रयच्छत्रमहावलः ॥ इतिविष्णवेयहहरः ॥ एतदेवविद्वत्तत्त्वमहहरमपि ॥ अथमहाजि  
 ह्वायहहरः ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ सुसलोत्सवलदीनियायहसुद्धाणैवापि। आशुधानामातदास  
 तंधपोनोरक्तकालकमात्प्रक्रीधतिमहाजिह्वातिशयं। नतोमरुदवागम्याशाषीजिह्वात्रणीत्वेय  
 कंपुत्रः प्रजयतत्रैत्रयत्रतमत्वरं। आसुप्रहोमिवादाति। लिखनं धैतवज्रपेया। गायत्री चतदानं च दध्यच्छत्र  
 उसारतः। व्रतमपवाशः। होमसंख्यात्कृष्टोत्रसहस्रव्याहृतीनागृह्यादिनवग्रहयज्ञप्रकरणोदेयतावाहनप्र  
 सावेदर्शिता। अथयत्रयन्त्रव्यस्यवाषांदिपरिस्ताप्रायरंगप्रतिमादानविधिगायत्र्यास्तुक्तं। इहोम प्रकरणेनिस २५

वलि

वलि



कलि

यथासक्यदहरशा ॥ कर्मविपाकसंज्ञये ॥ वल्मीकवमनघेनसर्प्यवाशंकरोतियाः सर्प्याणां हननं क  
त्वातेषां क्लेशं करोतियाः सवासवोय होनामयुक्तीयातेनमङ्गरी ॥ आध्यानीचविसर्प्यचजायतेतस्पनि  
कृतिः ॥ प्राजापत्यं तवेदास्यं होमो व्याहृतिनिश्चया ॥ अग्निश्मीत्यवेजस्वाय किंचेदं जपेदवमं दद्यात्तु क  
यथाशक्तिवलिर्दशो विवक्षणेः ॥ अत्रैवङ्कविधं कृत्वासमादायचतुष्पथानिद्विपेद्विधैः ॥ उष्येतीना  
विधैश्चक्रैः ॥ यद्धमस्यर्थाविधिनामंत्रेणानेनसेयुताः ॥ अयं क्लीष्टवर्तिचेमंतासवाप्यमहयहः ॥ आतुरस्यसु  
खं सिद्धिं यच्छंत्वेमहावलाः ॥ प्राजापत्यस्वरूपं कृद्भुक्करणेस्वभयिा व्याहृतीनामृष्यादिनवग्रहय  
ज्ञप्रकरणेदेवताः ॥ वाहनप्रश्नावेनिरूपितं होमसंख्यात्वष्टोत्रसहस्रं ॥ अग्निश्मीत्यस्याष्टादिवसवो  
यदहरदृष्टमश्रायुक्तिं सिद्धं वरुणेव्यस्यावसिष्टः कृषिः वरुणादेवताजगती ॥ दंजपेविनियोगः ॥ यत्किं  
चेवरुणदेवैर्जनेमिदं दंमनुष्याप्ररामसि ॥ अचिन्तयत्रवधम्मायुजापिममज्ञस्यमादेनसो देवर  
रिषः ॥ जपसंख्याप्रत्यकमश्रुतां रुकां हिरण्यथा ॥ इति उद्यादियचयः ॥ अत्रैवङ्कविधामिति वङ्कप्रका

२५

श्री

रंजाकर्षेचपलांशुधीन्यपिनानावर्षानियाद्याणि ॥ इतिवासक्यदहरशा ॥ अथवायसयदहरशा ॥  
कर्मविपाकसंज्ञये ॥ देवद्विजयदाः रामतडागादिभुमीशुनेशा ॥ विष्णोयां कुरुतेयसंयहोयज्ञातिवा  
सवाः ॥ आध्यानीवाप्यरुचिमान्यादवाहीचजायते ॥ कृद्धं मेकं चरेदास्यं होमो व्याहृतिनिश्चया ॥ अष्टाः ॥ अ  
कसहस्रं चकार्येदद्याच्चकोचनमं कृद्वाप्राजापत्यः ॥ तत्स्वरूपं च कृद्भुक्करणेनिरूपितं व्याहृतीनामृ  
ष्यादिनवग्रहयज्ञप्रकरणेदेवताः ॥ वाहनप्रश्नावेकथितं वलिभुवासक्यदहरोक्कएवः ॥ अपि वलिदा  
नमंत्रेवायसारख्यदहृदहृतिविशेषः ॥ इतिवायसयदहरशा ॥ अथशैवपालयदहरशा ॥ कर्म  
विपाकसंज्ञये ॥ देवतानिदिताश्चेत्रपानसंक्रमतेयहः ॥ ततोचवेनुखेशोषो जिज्ञायांचनवेद्वेण ॥  
प्राजापत्यं प्रकृवीतक्षेत्रपानाः ॥ सिधेचनघाशतरुद्रेन कुर्याच्चमहाजिज्ञाय होदितः ॥ वलिर्द्वैयसुवि  
धिनामंत्रद्वैसमाहृताः ॥ प्राजापत्यस्वरूपं कृद्भुक्करणेदर्वितशततरुद्रेनामरुद्रात्वाकः ॥ तेषामाष  
दितथातिनेकप्रकारश्चापरिनाशायोरुद्रविधनेसमुपवर्षितमेवमहोजिज्ञायदहरकर्मप्रायवि

वाले

तत्र वलिदाने ज्ञेयपालमुदायहेतुः कार्यः ॥ इति ज्ञेयपालयद्दहरम् ॥ अथ वलयदहरम् ॥ कर्म  
 विपाकसंयदे ॥ उपकर्त्रे विवेकं वैशेष्यकार्यपवादकैः ॥ तस्करैर्धासस्वकारितं च न्यायचलयद्दहरम् ॥  
 उपकर्त्रे विवेकं वैशेष्यकार्यपवादकैः ॥ उपवादकैश्च स्वरैर्धासस्वकारीत्यपरां अनयोरपि यत्केवाशब्दश्च  
 चण्डुपकर्त्रे रिवाचं धैवारुपकारीत्याहत्वावांतस्वाक्यद्वयं एवं द्वितीयवाक्ये पि अथ वलयदह संसृष्टौ  
 द्वौ श्चासीचकासवाद्यसर्वांगरोगाग्नदोषी मंदोन्निश्चयज्ञायते कुरुं चोदयते वापि कुर्यात्क  
 ष्मांडहोमकांकयानश्चित्रइत्येतदष्टोत्तरशतं जपेत् अग्निस्मीत्येवापिसहस्रं चाष्टके जपेत् प्राज  
 पत्यकुरुं चोदयणयोस्वरूपकुरुं चकरणे वर्जितम् अनयोश्चरोगाल्पत्वमहत्वमहत्वापेक्षयाशक्तौ  
 यपेक्षयावापिकल्पः कुरुं चोदहोमप्रकारपरिचाषयां निरूपितम् कयानश्चित्रइत्येतदिति ननु  
 सकलिंगनिर्देशात्सुकुं चोदयतो अस्पृशकस्यार्षाद्यस्मारो गहरे कथिताम् अग्निस्मीत्यस्वाशु  
 धातरोगहरो वलिदाने प्रकारमाह ॥ तिलत्रणं सुतं चात्रं दृष्टिद्वारं सशर्करम् ॥ अथ पास विरं वै

२६

वाले

सुरयात्येवैकलिचखाद्येयदमस्यर्षासं कुं संयुतं वालिचतुष्पथे निक्षिपे सुमंत्रेणानिसंयतां अरुं  
 श्वलिं वैममचुलाख्यमहायद्दहरम् ॥ आतुरस्य सुखं सिद्धिप्रयत्नं त्वं महाचलाः अथ वलिदानप्रकारश्चानाद  
 वदित्वात्कम्पोपत्कालः तत्रापि होमकर्माणिसमाप्नोसुराविन्यधिकारिणो देयानि ॥ इत्यथ वलयदहरम्  
 अथ हस्तपाद्दहरम् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ देवद्वयं तु यो सुक्रे गामभिर्ब्राह्मणतथा पात्रश्चानुचि  
 म्भोत्यं लंघयेद्य सुतत्रमं चक्रातिहस्तपादाख्यश्चक्रान्पन्ननिवोधतावन्ती कव्याधिमांसादपीतव  
 विविशोचनः प्राजापत्यं कुरुं चोदहोमो व्याहृतिसिर्तवेश्वाहिरण्यं च यथाशक्ति दद्याद्ब्राह्मणतो जनम  
 जापत्यलक्षणं कुरुं चकरणे स्पृश्यात्वाहतीनामृष्यादिनवग्रहयज्ञप्रकरणे देवतावाहनप्रसा  
 वेदार्थितम् होमद्वयं रथोत्तरेषु तथा दर्शनार्थं संख्यात्वष्टोत्तरसहस्रं वलिस्वसुप्रचलयद्दहरो क  
 प्रकरणे देयः वलिदानमंत्रे हस्त्रिपादमहायद्दहस्यवीताचानेव विधिः ॥ इति हस्त्रिपादयद्दहरम् ॥ अ  
 थ कर्ष्यदहरम् ॥ काव्यायनः ॥ देवस्वमपि सुक्रे यो गृहसं कर्षं संज्ञकः चक्राति तिनजिज्ञातु नचलस्य

बलि

कर्मयोःवाधिर्योजयतेयोगं कं इति म हती च वे श अत्र वा द्रयणं कुर्याद्दोष्याद्दति स्रथा दृषामदेति  
स्रथा दृषामदेति स्रं च सह सं चाप्ये जपे वा चो द्रायण स्वरूपे क इ प्रकरणे निरूपित म्वा हतीना म्  
स्यादिन वयस्य इ प्रकरणे देवता धान प्रसूति वैदर्शिता म्वा द्रयमा उपतिलं संख्या चोत्तर सह सं दृष  
मदेति स्रं मये निरूप्यते। ध्रजे गंधादि सिद्धे प्रह मस्य इयं नतः। चतुष्पथे निक्षिपे ह वलिं मंत्रेण मंत्र क्रि  
मंत्रमाह ॥ अथ क्लीष वलिं च मं कर्षा ब्यत्वं महायद्ः। आउरस्य सुखे सिद्धि प्रयत्नं म हा क्लिष्या म्दे  
ति द वा र्जं स्य स्रं स्य वा र्हं स्यो न र द्रा ज म्वा पिः इ दो दे व ता उ द्दु र्दं दः जपे विनियोगा म्वा द्रय म्वा  
क उ क्ता स वा सो मे शु सु त पा व म्वा पि नो। अ उ म्वा म्वा वा द स्य उ च्छे द्वा र ज गिरा म्वा तौ ति। पा त रु र्वी।  
रो न यो वि वे ताः श्रो ता ह्यं शण त उ र्दं ता व सुः शं सो म रां क र उ ध्या या वा जी सु तो वि दि ये द द्वा ति वा जा ॥ १ ॥ अ  
ह्यो न च क्पो श्ररः वृ द्धे ते म क्ता ति रि ति चो र ह स्योः दृ ष्य स्य रु ते यु रु षं कृ त क्वा ज न यो रु रु ड र्द र्द र व्ही ॥ ३ ॥  
श ची य श्चे यु रु शा क शा का वा मि व स्र त यः स व र णी व त्सा नो त तं य इ द द्वा म च्चे तो अ द्वा मान सु दाम शा ॥

२७

धनप्रद

अथ दान्य कर्षे र म न्य डुर वो स व स मु डुरा च कु र्दि ग मि त्रे नो अ व रु ण श्र व षा र्ये ना स्त्रि ॥ रा वि त्प दी पो न प र्च त  
स्य प्र षा डु च्छे पि रि डान व त्र य द्वाः तं त्वा चिः सु सु नि सि द्वां ज य त्र आ जि त्र ज मु र्दि वि अ ष्वा ॥ धान य डुर ति श र व  
न मा सा न द्वा व र्दं म व क र्श य सि ह द स्य नि र्द द्ता म स्य त स्रो मे चि स थो श्र श स्य मा ना ॥ १ ॥ न वी ल ये न म  
तो त स्थि रा य न श र्द त द स्य उ ता य स वा त्र अ ज्ञा इ द स्य गिर य श्रि द श्रा गं सी रे च इ व ति गाम सै गं ती रि ण  
उ रु णा म त्रि त्रे वो यं धि सु त पा व वा जा त्र म्वा ज उ रु क र्दं ज त अ रि षा ण्य व को क्क षो त्या र्य ॥ २ ॥ स व र्ख ना य  
व से अ नी क इ तो वा त इ द पा हि रि षि अ मा वै त म र ण्ये पा हि र्ण म दे म श त दि माः सु वी राः ॥ ३ ॥ इ ति व षा म दे  
ति स्र क्मा इ ति क र्षे य ह द र म्वा अ थ ध न य द ह रं का सा य न ॥ ४ ॥ त प चि नी स र वी स्वामी स्वी गाम र्गु र्दि ण  
ग मः अ थ ध न द द्वा शि प्रं क्ली या त व ल द्वा ण आ स्य सं दे प्र व क्क म र व क्क म ध्मान मु प जि क्कि का जा य ते त नि  
दृ ष्य र्थं त द्वा क इ यं च रे श धे उं द द्वा द यो हो मं कृ ण्मा डा ख्यं स मा च रे श ज पे इ पो रु णं स्र कं स द द्वा श्यु त सं  
स्व या इ द मा पः अ व ह ता य किं चे द स्र तं त था ज ले स्थि वा ज पे द्वा म द द्वा इ क्वा शु सार तः त द्वा क इ ख

स्पर्शकृत्प्रकरणेपंचितशः श्रेष्ठदानमंत्रमुनव्यहयज्ञप्रकरणे दक्षिणादानप्रस्तावेदर्शितः कृष्णोऽहोम  
 प्रकारः परिभाषायां निरूपितः। सुरुषस्य कृत्स्नार्थादिगणहेमे पुरुषस्य कृत्स्नविधाने वासिहितया सद्वाऽयु  
 तसंख्येति सद्संख्याजपो च वतिविकल्प्या व्याधियुरुलघुता वापि ज्ञया जपेयुरुलघुता वपे ज्ञया  
 अथवाऽइदमाप्यवहती तस्या का एवो मे भ्रतिष्ठिरिभिः आपो देवता होमे विनियोगः। इदमापः प्रवहता  
 प्ययेकथितं ॥ इति धनग्रहहरम् ॥ अथ कर्मग्रहहरम् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ सूर्यचंद्रोपरागे  
 लुयो लुकेतं कुर्यादः। अष्टज्ञातिवतः कपी कशो द्भेदकं वकः। श्वासी श्ली विवर्ष्यपीतने त्री तवेत्त  
 रः। पिपीलिकामध्यजवं कुर्यात्। द्रायणत्रतम अष्टोत्तरसदसं नूनपेत्स कंचौरुषं। अष्टोत्तरसतं वाशा  
 याते स क्रंतं तथैव च। अग्निश्मीत्येवापि जपेत्स कंचौरुषं। पिपीलिकामध्यजं द्रायणलक्षणं कुरु  
 करणेष्वध्यास्य सुरुषस्य कृत्स्नार्थादिगणहेमे पुरुषस्य कृत्स्नविधाने दर्शितम्। अतोऽपि तन्मैरुतो मित्यस्य  
 कृत्स्नविधिश्चिध्नो क्राः साध्यसर्वरोगहरवर्षितम्। वलिदानप्रकारमाह ॥ गाण्डवत्रिलोकवस्त्रगंधै रण

वलि

रपिष्टज्ज्वादवानैवेद्यमथतं दुपर्यारोप्य कांचनशुचुष्ये ह्यिपेदेतां मंत्रेणानेन संयता। अष्टज्ञीषवा  
 लिं चैव कशानामाहयदा। आतुरस्य सुखं सिद्धिं प्रयच्छवं महावलः ॥ इति कशग्रहहरम् ॥ अथ स्कंद  
 ग्रहहरम् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ वालयदसुतं वालमाहायो द्विष्टलुरुष्यै। अग्निं सुशोतं स्कंदारु  
 ग्रहः संक्रमते ततः। पादयोर्हस्तयोश्चैव विकारो वायुतो सवेत् ॥ वलिदानप्रकारमाह ॥ तिलापिष्ट  
 दधिहीरवाक्कुर्यात्पशुक्वाराजमाषश्च द्वाअनिष्पवाः कंठमूलकां पक्षिमांसं सुरावेति स्रष्टुं संयु  
 तो वलिातिनपिष्टादिकं कास्यपात्रे कृत्वा यवेष्टयेत्। तत्र दद्याद्दलिं मध्ये गात्रेर्मंत्रेण संयुतां रक्तमाल्या  
 वरस्कंदग्रहमल्पं यत्नतः ॥ वलिदानमंत्रमाह ॥ वलिधीरां स्कंदमहाहरकमाल्या वरप्रियः। अष्टज्ञी  
 श्ववलिचेमंष्टुपसि सद उष्टिमाश्रु वलिमेवै विधानेन दत्त्वा वाऽगत्यमं दिरशं अग्निप्रतिष्ठाप्य ततः।  
 स्वाहा कृत्यास्पदेवता। एथिव्याः स्त्रीयमावाल्यां हविर्हीराज्यसंयुक्तां सर्षपाऽष्टोत्तरशतं सद्संजुज्या  
 दिव्यैः। अस्त्रीयमंत्रायां मित्यनेनोपलक्षितौ मंत्रौ स्वाहा देवेभ्य इत्येकः। देवात्यस्वहित्यपरापतयोर्वि

वलि

देवानामयः। स्वादाकृतयो देवता। यस्तु शान्तश्चो विनियोगः। एवं चालयद्दयहृद्दीतं चालमाद्यो द्विष्टं  
 सन्नर्तियः स्पृशेत्स्य रोगशोभ्यर्थं यत्रोक्तं कर्म कृत्वा पश्चाद्वालकस्यापि रक्षार्थं वक्ष्यमाणं वलिं दद्यात्  
 शोणमासं त्रैलोक्यान् पक्वानामं स्यथा च वः। पक्वमांसं दधितया तिलपिष्टं च शोणितमाहिरण्यं च व  
 लिं दद्यात्स दोषे वृद्धमूलकः। रक्तचंदन रक्तस्य रक्षा चैधरिद्यजितम्। अत्र मंत्राणामिधनात्तस्मिन्नेव  
 वलिदानं ॥ इति स्कंद पुराणम् ॥ अथ स्कंदोपस्मारयद्दहरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ ३३३ ॥ तस्मिन्कु  
 रुतेयस्सुवर्णे मूर्त्तवपुरीषयोः। यद्दसंक्रमते चैव स्कंदोपस्मारयद्दहरम् ॥ ततो देवोऽस्वजिह्वा उफेणिलस्या  
 पिजायतोऽपस्मारी च वेत्रप्रब्रवद्दलिमाहरेत्प्रब्रवदिति। समानं तरोक्तं दयहृद्दहरविधनेन  
 वालकरह्यार्थं मुक्तावलिष्यति रोकणान्यसर्वकर्मकुर्यादित्यर्थः ॥ इति स्कंदोपस्मारयद्दहरम् ॥  
 अथ प्रकारोत्तरेण स्कंदयद्दहरम् ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ अनेऽपरिशरसेतेयोऽशुचिर्वातकैः सदा स्कंद  
 यद्दधुक्त्वात्तितततः पाणिपादयोः। आस्ये च वातको देषः प्रजायेताऽतिदारुणः। वातके रियत्र वद्धत

२८२

चनमविविक्षितमत्रमित्यत्राप्येकवचनमविविक्षितम् अत्रवतमित्यनेनयश्चोतेयश्चवालकश्चयोरर्षिपिपरा  
 मर्शः। अतएव वलिदानमंत्रेषु शिशुं विकारान्मुञ्चेत्यादीनि लिङ्गानि दृश्यन्ते। यत्र ह्युच्यते। नैम्यसंबंध उच्यते।  
 तेसोपिलन्यते ॥ वलिदानप्रकारमाहा ॥ नवदशमितीकृत्वा स्थंडिलं चतुरस्रकां उपलिप्य श्वेतवर्णैः स्वदि  
 कादीनि विद्यसे श शाराणि तव चत्वारि चतुर्द्विद्वा प्रकल्पयेत्। तेषु शक्तिवपाशं च सुशालं तोमरं लिखेत्। मध्ये म  
 ष्टदले पद्मं लिखित्वा तदनंतरम्। चतुःकोणेषु विन्यस्य प्रर्षेत्कुंसात्समाहितः। मध्ये तव वलिं दद्यात्स दयहृदि  
 मुक्तये। वलिस्वरूपादि वशीयति ॥ कश्चारात्ने च पिष्टं च शीरं दधिघृतं मुष्ट्या अष्टपंसकयो मुष्ट्या मिथ्या वारा  
 जमाषका। चणकाश्च मसुराश्च सुरामांसं तथैव चारथकुक्कुटसंयुक्तं शुभ्रं मेघण्विक्रितं। रक्तवस्त्रं रक्तानं  
 रक्तचंदनमेव च। रक्तमुष्पाणि धूपान्श्च प्रर्षेत्कुंसे सकांचनो। अग्न्याग्नियानिवसूनि शिशुकीट एण हेतवः। पतस  
 र्धं कदेव स्पृशेत्। वाह्यमूलकोऽस्के दस्य न वने वापि मंत्रेणानेन निक्षिपेत्। अत्र कदेव मलादिषु वलिदानवि  
 धनानां तत्रैव प्रर्षेत्। स्थंडिले कल्पयेत्। स्कंदतवनं स्कंददेवालयं ॥ वलिदाने श्लोकमाहा ॥ वाललाज्ज

वलि



यतोदिभ्य उमांगगाधरप्रियाः सरसेनापते स्कंदे षण्णखक्रौंचसूदनः रोहितां च महा नागाकातलुव्यगणे  
 राहादशाज्ञमहावीर्यो द्विषड्भुजमहावनाः कृत्तिकानोमुत ज्येष्ठशक्राः शुभ्रशिखिध्वजः । वानसास्करसेका  
 वारकमाल्यावरप्रियाः षण्णक्रीडवलिचेमंघजायैः सह बुद्धिमात्रशिंशुविकारासुवाचशिखरुत्रशिखं  
 करः गत्वा चिवंगवेरहसगवत्स्वसुंनरशदत्त्वावलमसुंवा लमायुषाचाः सिवद्वयशंभुलक्ष्मीनाशया  
 त्वंयहविनाशनमपालयत्वं वर्षशतं वलिमादाय बालकम् ॥ अथ वलि प्रतिष्ठाप्य तत्र शीरंतथादधि  
 वषदापंचकुडुयात्र नमंत्रास्यामाङ्गतिद्वयोमेत्रास्यो वक्ष्यमाणोऽप्यतिद्वयोः षषदापंचना  
 मदधिसुकमार्जप्रमुच्यते ॥ अथ मंत्रे ॥ अस्यैस्वाहासेकोमंत्रः ॥ कृत्तिकायः स्वाहासे पराः अनयो  
 र्मेत्रयोरभिजापिः अभिकृत्तिकाश्चैतिक्रमेण देवतोयजुषान्न बंदो नियमः अथ प्रार्थना मंत्रः ॥ वय्य  
 तो धिस्कंद वलिस्त्वय कर्तृभिः । तेन माहेश्वरसुखस्वगंध्या सततं शिंशुं । त्वमथी सततं नरमित्यपि पा  
 ० ॥ इति प्रकारं तरेण स्कंदयह हरम् ॥ अथ स्मृतं तरेण स्कंदयह हरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ २७०

शिशुयह

उच्छिंशुवालमादाय शयानं प्रतने गिनः ॥ षण्णकृतिप्रदः स्कंदः आध्यानी इवान्नलवेशस्वासवारकनयनो  
 वङ्गमंत्रशरीषवन्नापासर्वद्वयोपरीतापक्षत्रैवं वलिमाहरे श उच्छिंशुवालमादायेति उच्छिंशुमित्येतत्र बाल  
 मित्यस्य विशेषणं तथा बालमादाय शयानमिति । विशिष्टवाक्यस्यापि वलिमाहरेदिसुक्रांतत्रमितिक  
 थिमित्याकोऽज्ञयामाह ॥ मे षड्कुटुमांसा निपाय संसक वसुधा । रुधिरं वहिरण्यं चैते तन्मूले वटस्य  
 द्वि । विनिक्षिपेदहं रात्रे रक्तवद्वादिर्युद्धमं । अस्यैव वक्ष्यमाणे नमंत्रेणानेन संयतः । वलाधीश स्कंदमहा  
 ररकमाल्यावरप्रियाः षण्णक्रीडवलिचेमंघजायैः सह बुद्धिमात्राः ॥ इति स्मृतं तरेण स्कंदयह हरम् ॥  
 ० अथ शिशुयह हरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ देवत्राहाण्युरोऽचार्यागोतीर्थी अचमानिनी शिशुय  
 हः संक्रमते ततो इरसुतो सवेश । अतीसारी चास्य शोषीपानिपह प्रकंपवाशं तत्र लाजाः पायसं च मं  
 संकुटुलेषज्ञो सदिरण्यः घृष्णं कुरो वलिर्न वलिसंतिदः । रक्तवखादिसिः सम्यक्प्रहमस्य अयन्नत  
 वटमूले वलिर्द्वयोमंत्रेणानेन मंत्रविशः षण्णक्रीडवलिचेमं शिशुयहमहायह । आठ रस्यसुषं सिद्धि

३३

यद्ध्वंमहावलः ॥ इतिशिशुपायदहरः ॥ अथमेष्यदहरः ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ वालग्रहसमायु  
 कंवालमादाययः पुनाः नस्मनात्राउनेकुर्वन्तनिद्रतितनराः मेष्यदः संक्रमतेततः सन्नरवात्सवेर  
 वायुः प्रकोपसर्वांगिनत्रचोनीलतेसद्यफेनिलास्योनचोदृष्टिरकखलंगवेष्टितापाणिपादप्रकंपीच  
 जप्यतेतश्चांतये। दिरण्यश्वेतवस्त्रवपायसंसक्तवसथा। लाजाश्रापमिस्येतेद्वलिः घृषघटीपिवा  
 गंधार्येयदमस्यर्षाश्रापाणिनिश्रायकोमंत्रेणवक्षामणनरवृत्तेनवलिदरेशः घृषीकंवेसनेनस्कंदय  
 दहरेवालरक्षार्थसंक्रोदोणमात्रेणपक्वानमिस्यादिवलिरपिसुद्वीयतोप्रतोमेष्यदहृहीतस्यतद्वा  
 प्रशांतयेदिरण्यश्वेतवस्त्रेयादिनातत्रोक्तोवलिदेयः वालरक्षार्थेणुदोणमात्रेणपक्वानमिस्यादिना  
 स्कंदयदहरोक्तोवलिपिदेयः। मेष्यदोदशेनवलिदानेनमंत्रमाह ॥ १११ ॥ षवलिंवेमेष्यदहम  
 हाग्रहः। आत्रुरस्पसुखसिद्धिप्रयच्छ्वंमहावलः। इतिमेष्यदहरः ॥ इतिश्रीपद्मिदहात्मज्ञतद्व्य  
 विश्वेश्वरविरचितेमहालक्ष्मणनिबंधेकर्मविपाकपरिच्छेदेवालकावालकसाधारणनियह

२९२

संगर्भानिजीरक्षणं प्रथमकासपदितः द्वितीये

रकर्मणि ॥ अहप्रकरणेप्रजाप्यदहरसकर्मस्यमेष्यदहरकर्मणिवालकावालकसाधारणनिना  
 सिद्धितानिअधुनावालकासाधारण्येवकथ्यतेतत्रापिसंगाज्ञर्षिताः ५पत्परक्षार्थः यलिधीयत्रो ॥ क  
 र्मविपाकसंयदेगर्लिणीगर्तरक्षार्थमासेतुप्रथमेवलिः। प्राजापत्यसमुद्दिश्यदेयोमंत्रेणमंत्रिणाश्वेत  
 वस्त्रेपायसंवगव्यंज्ञारितथाद्युत्तमश्वेतवस्त्रेवैदंनवसरकंवांयुलीयकोसर्षकुतोदेप्रयुक्तधृपदीपाव  
 यंवलिः ॥ इतिप्रथमेमासिगर्लिणीगर्तरक्षार्थेदेयोवलिः ॥ अथप्रथमेमासिगर्लिणीगर्तवेदनाहरमेष  
 थमा। तत्रनारायणीयटीकायामपेक्षार्थद्योतिनाप्रथमेमासिगर्तवेदनायदिस्पाशतदाप्यकोशीर  
 तगरंसमनागंत्तकारयेत्शश्रुगवेरंसमुदकंपिष्वाक्षरिणपाययेत् ॥ इतिप्रथमेमासिगर्तवेदनाहरमे  
 षथमा ॥ अथगर्लिणीगर्तरक्षार्थद्वितीयेमासिदेयोवलिः ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ गर्लिणीगर्तर  
 क्षार्थद्वितीयेमासिदेवलिः। समुद्दिश्य। श्वनोदेवोदेयोमंत्रेणमंत्रिणाः ६ध्यान्नंपायसंलाजापिण्या  
 कंकुसुमानिचांगधश्चपदीपोचवस्त्रसंघटसथा। हेमायुतोः श्वसालायाः समीपेनिक्षेपद्वलिः

॥अत्रमंत्रः॥नगवधौप्रसावत्रौनाववत्रौप्रसावतः॥अष्टज्ञीवलिंत्विमंशुष्मरूपेदेवनेषजौ॥युवारक्षुगार्सिण्यं  
 मासेतुद्वितयेवलिः॥॥इतिद्वितीयमासिगर्सीगर्सेरज्ञार्थेदेववलिः॥॥अथद्वितीयमासिगर्सेवेदनादृ  
 रमौषधम्॥॥नारायणीयटीकायामपेक्षार्थघोतिश्या॥द्वितीयवेतुशाल्वकनीलोत्पलकसेरुकांशुंगवे  
 रंसमुद्धकंपिष्ठाक्षरिलपाययेत्॥॥इतिद्वितीयमासिगर्सेवेदनादृरमौषधम्॥॥अथगर्सीगीगर्सेरज्ञार्थे  
 तृतीयमासिदेवलिः॥॥इतिद्वितीयमासिगर्सेवेदनादृरमौषधम्॥॥अथगर्सीगीगर्सेरज्ञार्थेतृतीय  
 मासिदेवलिः॥कर्मविपाकसञ्चये॥॥गर्सीगीगर्सेरज्ञार्थेवलिर्मासेतृतीयकांरुद्रानेकादत्रोदेयोमंत्रे  
 णानेनमंत्रिणः॥वृत्तमंत्रं चलाज्ञाश्च वृत्तं स्वैतोक्तं देवनाम्॥॥स्वेतपुष्पाणिकुसुमं च स्वेतधूपप्रदीपकौ॥स्वे  
 तपंकजयुक्तश्चर्षणकुंवेसकांवनं॥॥इत्येतन्नथमस्त्रानर्शान्यादिशिशिपेत्प्रथमस्त्रानेप्रथममा  
 सादेयवलिस्त्रानेगोदोहनस्थानइत्यर्थः॥अत्रमंत्रमाश्यामदादेवशिवोरुद्रः॥शंकरोनीललोहितः॥शानो  
 विज्ञयोनीमोदेवदेवोसवाज्ञवः॥कपालीत्राश्चकथंतेतथैकादशामूर्त्तयः॥रुद्राएकादशाः॥त्रोक्ताप्र

२२

५३५

५३५

ज्ञीतवलिंत्विमंशुष्मकंतेजसादृद्यानिद्वंपरश्चातुगर्सीणी॥प्रलिमं चैकवुध्यादिनिद्वंपरश्चातुगर्सीणीति  
 वाद्वितीयाः॥इत्युपावः॥॥इतिद्वितीयमासिगर्सेवेदनादृरमौषधं॥अथचतुर्थमासिगर्सीगीगर्सेरज्ञार्  
 थेदेववलिः॥कर्मविपाकसंयदे॥गर्सीगीगर्सेरज्ञार्थेवलिर्मासेचतुर्थके॥उद्विरपद्दशादियाः॥देयो  
 मंत्रेणयत्नतः॥आरकांशुंयडान्नेवरक्तगंधाश्चैस्वथारक्तपुष्पं धूपदीपौरक्तवस्त्रं सकांवनः॥कलश  
 :सलिलाः॥शर्षः॥क्षिपेत्तज्जलाशये॥॥अत्रमंत्रः॥यमो वै स्वतस्वष्टावस्त्रं सविताः॥विष्णुश्च  
 मधुमित्रवगः॥सूर्येयितापनः॥आदित्याद्वादशाः॥त्रोक्ताः॥अष्टज्ञीवलिंत्विमंशुष्मकंतेजसादृद्यानि  
 द्वंपरश्चातुगर्सीणीम्॥॥इतिचतुर्थमासेगर्सीणीगर्सेरज्ञार्थेदेयोवलिः॥अथचतुर्थमासिगर्सेवेदना  
 दृरमौषधम्॥॥नारायणीयटीकायामपेक्षार्थघोतिश्या॥चतुर्थयोगेश्वरीकदलीनीलोत्पलबालकं  
 पिवेत्॥॥इतिचतुर्थमासिगर्सेवेदनादृरमौषधं॥॥अथपंचमेमासिगर्सीगीगर्सेरज्ञार्थेदेयोवलि  
 ॥कर्मविपाकसमुच्चये॥॥गर्सीगीगर्सेरज्ञार्थेपंचमेमासिवैवलिः॥विनायकंसमुद्दिश्य देयः संय



तवेतसा विनायकंगो मयं चक्रुर्वात्पिष्टेन वाधुना । चतुरश्वेषु ते लिङ्गे स्थापयेत्तं गणाधिपं ॥ अथ च त्रिंश  
 युष्याद्यैर्वैलितसु रुतः क्षिपेत्त्रां चक्रपकं तथा पकं मांसं पकपक्कम् ॥ पायसं मधु चंद्राक्षुग्दहीरपलानि  
 चाकदलीफलपिंडालमधुकानि च मूलकघानु दुकंनारिकेलं च कंदमूलानि सर्षपा । संत्र्यं क्षत्र्यानि ला  
 ज्याश्च सूष्योत्थितलपिष्टकृशद्वक्त्रवस्त्रसंश्रितमन्त्रापेक्षीयुडोः क्षत्रवा एव सुराविः प्रकाराश्चाज्ये  
 वैवेवलिः सुरादीनियद्दणस्पयानि निखिद्धानितानि पश्यात्पानि ॥ वलिदानमंत्रमोह ॥ एकदशः प  
 काश्च त्रिनेत्रगणनायकः । रक्तो वरधरः श्रीमान् रक्तमात्पाः उलेपनः विनायकगणाध्यक्षश्चिक्त्रम  
 हावलः ॥ सर्वविघ्नो श्वराः प्रेशः गजवक्रमक्षेखरं वक्रतुंडमहावीर्यमहाज्ञागमहावलः । अष्टद्वीप  
 लिचेमोसपत्न्यारक्षगर्लिणीम् ॥ वलिप्रदः । यकं मर्त्यमासुषाचाः । तिवद्धया । अलक्ष्मीमामप्येपापं य  
 द्विघ्नं विनाशयः । वक्रतुंडमहावीर्यमहाज्ञागमहावलः । शिरसात्वाः । तिवद्धे । तिवद्धे । देसापत्नी  
 रक्षगर्लिणीम् ॥ ॥ इति वलिदत्त्वाख्यास्यैतथा मिति ॥ ॥ इति यं च ममासिगर्लिणीगर्त्तरक्षार्थं देयवलिः २९३

पष्ठे - दत्तने .

० ॥ अथ पंचममासिगर्त्तवेदनाहरमौषधम् ॥ नारायणीयटीकायामपेक्षितार्थद्वौ तिन्यां । नीलोत्पलं स  
 नालं सनालं च कर्कूलं च समंततः । शीततोयेन पिष्ट्वा लवणलोयपाययेत् । एवं नपते गर्त्तसंश्रुतं  
 प्रशाम्यति ॥ ॥ अथ षष्ठेमासितथावलिः । वसुनष्टसमुद्धिप्रदेयो मंत्रेण मंत्रिणा ॥ ॥ वलिदानप्रकारमा  
 हा ॥ ॥ घृताक्षं वदरिद्राक्षं बंडोलाजाश्च पायसो पीतवस्त्रसूतानि तथा नीलोत्पलानि चाकाचं नर्षणं कुं  
 सेति वलिं नद्यात्तद्विपेत् ॥ ॥ अत्र मंत्रः ॥ प्रसासां पावकः सोमः प्रसृजो मरुतोऽनलः । धरो घृत्सु इति हेत  
 वसवोऽष्टोः प्रकीर्त्तिताः । अष्टके उ विलिचेमो निरं रक्षतु गर्लिणीम् ॥ ॥ इति षष्ठेमासिगर्त्तणीगर्त्तरक्षार्थं  
 देयवलिः ॥ ॥ अथ षष्ठेमासिगर्त्तवेदनाहरमौषधम् ॥ नारायणीयटीकायामपेक्षितार्थद्वौ तिन्यां । षष्ठे वचै  
 लाष्टद्वीकोत्पलकेसरजं पिबेत् ॥ ॥ इति षष्ठेमासिगर्त्तवेदनाहरमौषधम् ॥ अथ सप्तमेमासिगर्त्तरे  
 र्थं देयो वलिः । कर्मविपाकसंयह ॥ ॥ गर्लिणीगर्त्तरक्षार्थमास्पृशो सप्तमे वलिः । रक्तं देदो देवो न दातव्याः ।  
 सत्वे किं विधिरेव हि ॥ ॥ इति षष्ठेमासिदेयवलिर्वह ॥ ॥ अयं उ विवेशो भूतत्रवसवो देवता

अथ च्छं देति अत एव वलिदाने सिद्धं मंत्रमाह ॥ च्छं देत्युपदेवेन शिष्यातिविवर्द्धनं प्रयत्नीश्वरलिविमंसापव्यं  
 गर्तश्चिणीम् ॥ इति सप्तमे मासि गर्तश्चार्थं देयवलिः ॥ अथ सप्तमे मासि गर्तवेदना हरमौषधम् ॥ नारायणी  
 यटी कायामर्षे पौष्टितर्थाद्योतिभ्यां ॥ सप्तमे मासि गर्तवेकपि अस्त्ररूपफलमूललाजाशर्करा समभित्तुष्टकेरनिश्चि  
 प्यदातव्यम् ॥ इति सप्तमे मासि गर्तवेदना हरमौषधम् ॥ अथाष्टमे मासि गर्तलिंगे गर्तश्चार्थं देयो वलिः कर्मवि  
 पाकसम्पन्नये ॥ गर्तलिंगे चार्थवलिर्मासि पिचाष्टमो दुग्धमुद्दिश्यदातव्यं पौष्टीनसीदति ॥ वलिदानप्रका  
 रमाह ॥ पाथसंशर्करा लाजास्त्रणध्वज्यंतदो घृतघ्रा अष्टपं कृशरावेव मोदकं दधिभलकघां मायानिष्पावका  
 कंदः श्यामानि कुसुमानि चानि लोत्पलानि तथा घृणो कंसः सकांचनः ॥ एताद्विपे नदी तरे मंत्रेणानेन संप्रतर्का  
 त्याय एमहादेवि ज्येष्ठे निद्ये निशप्रिया दुर्गा देवी महाकाली सिंह शाई लवा दनि ध्वजः षडधरे देवि षडदेव्य  
 विनाशिनी नदी शोला प्रिये देवि कुमारी सुनगेशि वो अष्टदक्षसेव उर्वके पि गलेष्टकनासिको प्रयत्नीश्वर  
 लिविमंसापव्यं रक्षा गर्तलिंगम् ॥ इति अष्टमे मासि गर्तलिंगे गर्तश्चार्थं देयो वलिः ॥ अथाष्टमे मासि गर्त

२९४

दशमेऽध्यायः

वेदना हरमौषधम् ॥ नारायणी यटी कायामर्षे पौष्टितर्थाद्योतिभ्यां अष्टमे भक्ष्यकोशीरुत्पलंचसकेसरां कंठकारि  
 पिप्लिंधनि काथ्यः सशितं पिवेश ॥ इति अष्टमे मासि गर्तवेदना हरमौषधम् ॥ अथ नवमे मासि गर्तलिंगे  
 गर्तश्चार्थं देयो वलिः ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ गर्तलिंगे गर्तश्चार्थं मासेथनवमे वलिः ॥ देयस्याद्वि विध्नना  
 मारुद्दिशे वसुखी नवेत् ॥ वलिस्वरूपमाह ॥ दद्यात्कंदधिसन्नानं लाजाश्रुशरारसथा ॥ श्वेतपंकजगंधे  
 च श्वेतानि कुसुमानि चानि चूपो वस्त्रं शिरष्ये नयुतः रत्नैश्च रस्यथा ॥ वलिदानमंत्रमाह ॥ प्रयत्नीश्वरसिं  
 मे सयं देयाश्च मातरः प्रत्यं ह्युसंछुष्टा सापत्या लिंगीमिमां ॥ इति नवमे मासि गर्तलिंगे गर्तश्चार्थं देयो व  
 लिः ॥ अथ नवमे मासि गर्तवेदना हरमौषधम् ॥ नारायणी यटी कायामर्षे पौष्टितर्थाद्योतिभ्यां नवमे मा  
 कोलीपलासवीजं वैरं उष्टलसुकं पिष्ट्वा जलेन मोदकं कृत्वा जीर्णमे सन्नयेत् ॥ इति नवमे मासि गर्त  
 वेदना हरमौषधम् ॥ अथ दशमे मासि गर्तलिंगे गर्तश्चार्थं देयो वलिः ॥ कर्मविपाकसंयत्ने ॥ गर्तलि  
 ङे गर्तश्चार्थं मासेथ दशमे वलि उद्दिश्य नैऋते देवी त्रयोमंत्रेण मंत्रिणा ॥ वलिदानप्रकारमाह ॥

पद्मानं रुशरा ताजाः पक्का पक्का मत्पकाः पक्का पक्का चपन लं सुरा श्रेष्ठर सप्तथाः कल वसं कृष्णं  
कृष्णानि सुमना निचाः हृपा दीपो हिरण्ये न युक्तः रत्नघटस्थथाः नीलोत्पलेनापि हितः इत्यमुनि लिखं वलिनि  
ह्निपेह शिनीचायं मंत्रेण जिन संयतः पितृदेवपितृभ्येष्टे महादेवी महावले प्रेतासने दिशावासि निर्मते  
शोणितप्रियो अथ क्लीषवस्त्रिंसेसापत्प्या रत्नगर्तिणीया अत्र सुरात्राहणा विवृणी ॥ इति दशमे मासि  
गर्तिणी गत्तरद्वाथे देय वलिः कर्मविपाक मंथदे ॥ गर्तिणी गत्तरद्वाथे मासे वैकादशे वलिः वासुदे  
वं मसुद्धि शपदेय श्रायं त्रिभिस्मताः पायसाष्टप पिष्टं च यु डी लाजाश्च सकवः श्यामा ध्रजः श्यामगं ध्रुश्या  
मानिसुमनास्पतिः श्रुपी दीपो हृषं कंचासनी लोत्पले को वनः एतश्च त्वस्पमले वा वासुदेवा इत्योपि  
वा निक्षिपे त्वयतो रत्नवातत्राः मंत्रसुत्रे रत्नपां च जग्य प्रसाप्य कौसुतो श्रोतत्सकरः अथ क्लीषव  
लिंवे मंसापत्प्या रत्नगर्तिणीया ॥ इति एकादशे मासि गर्तिणी गत्तरद्वाथे देय वलिः दशमे मासि युक्ते ग  
त्तवेदनाहरमौषधम् ॥ तदेवैकादशे मासि देयं ॥ इति एकादशे मासि गत्तवेदनाहरमौषधम् ॥ २५

सुख प्रसव ३५५ पक्ष

अथ सुखप्रसवोपायः ॥ नारायणवलिटी कायामपेक्षितार्थघोक्तियाः करं कीरतगोमूर्द्धासूतिकास  
नोपशितकाले निहितो नार्याः सुखप्रसवकारकाः करं क रते गोमूर्द्धे ति श्रुति मात्रावशिष्टं गोमूर्द्धं  
मित्यर्थः ॥ उपोदक्या सुमलानि तैल युक्तानि कारये श्यो निप्रलेपो दातव्यो सुखेनारी प्रसूयते वंश  
निवये अकृत्तलशी मूलकपिस्थपत्रकरं ज नित्ये तत्समतो लितं कल्क मजा द्विरण सत्तं कृत्वा तैलेन  
संयोज्यो निलिपे श एतदत्र मपि र्त्वेन पातयेति किं नः सुखप्रसवकारीति ॥ लेपनमंत्रः ॥ हिंमंत  
उत्तरपार्ष्वे सवीरी नाथपक्षिणी ॥ तस्याः च खरशहेन विशल्यात्तव तु गर्तिणी स्वाहेति ॥ इति सुखप्रसवो  
पायः ॥ इति श्री मेदिनि हात्मज लक्ष्मी विप्रेश्वर विरचिते मद्रासवा सिध्दं निवे धे कर्मविपाकप  
हे दे गतिणी गत्तरद्वाथे मंत्रमसा वि सुवयोगत्तवेदनाहरौ षड्भानि सुखप्रसवोपायश्च ॥ अथ वा  
लकरद्वाकराणि ॥ तत्र प्रयोगसारे ॥ नारायणीये च क्रियाकालयोगोत्तराः सुसारेणापि हितान्यत्रा सि  
धीयंते ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि वालरद्वायथा क्रमशः प्रथमे दिन्युक्तातिवालकं वामनाय ही पापिनी

पं. १

अर्द्धीनारायणीयोगधनीतिक्रियाकालयुगोत्तरेयहीनामधेयं तथा शहीतमात्रस्यत्रोष्ठितान्फलनक  
 येत्रगात्रोद्देशो निराहः शीलान्नाश्रीववर्तनमूलपेत्रभूतकीलोध्रमं जिष्टान्नसर्वं नैः प्रप्ये नमस्त्रि  
 क्षेणततोऽं चं तिसा यही ॥ अत्रमंत्रः ॥ प्रयोगसारे ॥ ॐ नमः श्रांभुं देवगविति विष्णुजिह्वे ह्यर्द्धीश्व  
 पसुरं तु दुष्टप्रहाः ह्यंते यतागच्छं स्यायथायथा स्यात्सिद्धो जाप्यतिष्ठति जिह्वे ह्यर्द्धीश्व  
 तुलेपने धूपेन धूपानिष्ठु विहिता विधेयमस्मृजितानारायणीये वलिंदरे दिव्यनुष्ठानमल्पम  
 समुदात्तसंगं धूम्रं धूपं दीपकैः वलिंदरे दिव्यं यः ॥ अत्रमंत्रः प्रयोगसारे ॥ नमः श्रांभुं देवगविति  
 विष्णुजिह्वे हीर्द्धीं ह्यंभुं प्रश्नं कुरु स्वस्ति यद्गुणैः स्वादेति वाल्म्यहाणा विद्वेषं सवं वलिनि वेदनेना  
 रायणीये तु वलिदानमंत्रां चांभुं देवगविति विष्णुजिह्वे हीर्द्धीं ह्यंभुं प्रश्नं कुरु स्वस्ति यद्गुणैः स्वादेति व  
 डिको गवेति स्वाहा ॥ अन्यन्मूलयस्पर्शं अयं वालयदेखसर्वं वलिदानमंत्रां अत्र वलिदाने का  
 लविशेषस्य दिशि विशेषस्य वृद्धादि विशेषस्यानसिद्धित्वात् निमित्तान्यतरकालगततत्रापि संधात्रयम

२२६

पं. २

धेन्यतमः कालः प्रह्लादिदिङ्गुपादिः कुरुवक्षमाणवृक्षाणामन्यतमसमीपया घृणवमच्यत्रापि देशकाल  
 यत्र कौविज्ञेयः ॥ प्रयोगसारे ॥ कदंबवृक्षकरं जश्विलीतो निवपव ॥ श्वेत्योऽं वरश्चैव कृष्णो त कवटे  
 स्वथामाह देव क्रमेणोक्ताः शर्वादीणां तदिगाताः तिष्ठामेकं समाश्रित्य वलिंदद्याद्यथोदितमत्र तिष्ठ  
 संप्रसुदकं त्रिदिवमथापि वाप्रतिष्ठलमतिष्ठलं स्पृशेत्तत्र देवाः शय्यं प्रोक्ता शायामवक्रायं  
 प्राकृशोक्तासाः सुसारतः यत्र वारोचते तत्रमाहृणं वलिमा देरं कृत्वानीराहं न वलिमिति विधि  
 वृद्धलिमाह्वयस्य संस्पृशाद्भिः समंत्रं चिरसि स कुरु मे रक्षते लोपयिवाह्नित्रोये देव्या विधिवत्  
 पदितैस्त्रगतिस्त्रुमंत्रैः कुर्याद्दक्षांसमिद्वेक्षणमिव विलयं याति दुष्टग्रहाः त्रिः नरानाराजनमंत्रां हारो न  
 रायणीये ॥ त्रहा विष्णुश्च रुद्रश्च कौदो देहिः श्रवणश्च यारं ह्यं तु वरिं ॥ लेभुं च सुं वृ ॥ अरकां ववेति अ  
 स्प्यास्यानं लघुटीकायां विष्णुश्च रुद्रश्चोति विष्णुश्च रुद्रश्चोति अहमेति श्रवणः वैश्रवणः गवेति स्वाहा  
 रहा विधने ध्यं मे वमंत्रं ॥ अत्र प्रकारः प्रयोगसारे ॥ त्रहा विष्णुश्च रुद्रश्चोति विष्णुश्च रुद्रश्चोति अहमेति श्रवणः वैश्रवणः रक्षेत्

रितंवालंमुंचमुंचक्रमांतीवगविद्यावहृत्पर्ययात्रापितेणारद्रसंवावालमारव्याविदसीतज्ञ  
 मासिःकल्पितेआंजिकालिधृत्पलेपोसर्वकालयज्ञोऽनारायणायैलघुटीकायामस्पव्याख्यानंपह  
 पक्षमवादेदणीस्यवितेस्तरक्षमहादेविनीलयत्रीवठेतिस्वाहा॥प्रयोगसारे॥रक्षरक्षमहादे  
 वनीलयत्रीवजटाधराग्रदेसुसहितोरक्षमुंचमुंचक्रमांतीवगविद्यावहृत्पर्ययात्रापितेणारद्रसंवावालमारव्याविदसीतज्ञ  
 जेवंधयेदितिवालस्यहृत्दीतस्यवालस्याऽतिषेकोपिकार्य॥तथाचनारायणीयो॥पंचदलेस्त्राप्ये  
 येदिति॥स्त्राप्यहृत्दीतस्यवालस्याऽतिषेकोपिकार्य॥तथाचनारायणीयो॥पंचदलेस्त्राप्ये  
 प्रयोगसारे॥पलाशांडेवृश्चयवित्स्वययोधपल्लवैः॥कल्पितेनकपायेणपरिषिचेत्प्रशोतयो  
 परिषेचनमलिषेकः॥स्नानेत्पर्यणमित्यनयंत्रिं॥अत्रमंत्रोऽनमश्चासुंउदेतगवतिविद्युजिह्वेदोऽंशोश्च  
 पसरंश्रियादिभस्त्रुलेपनप्रश्नदेवितिः॥मंत्रांतरस्याहारेनारायणीयेवासुंउदेनमोदियैःकुंजीदुष  
 यहाङ्गेतत्रगहंउत्पद्यगायत्रसुस्थानंरुद्रोहापयतिवगस्यासर्वकर्महृदयंवरः॥लिषेकइति॥ २७

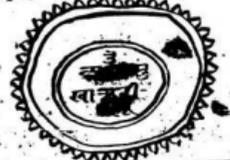
लघुटीकायामेतद्व्याख्यानंमुंडेतिवासुंउदेति॥द्विद्वेतिविद्योः॥वेतिस्वाहा॥अयंमंत्रश्चलिषेकवलिदाना  
 दिसर्वकर्मसाधनांवालकस्पशिखांस्थधारहार्यंनपोपिकार्यः॥तथाचप्रयोगसारे॥ॐसर्वम  
 तरक्षमंत्रदेसंदरंउत्तरोदयस्फोटयशर्जशरशृङ्गश्रामर्दयशसिद्धंहनशपेसिद्धंहनशसिद्धंहन  
 एवंसिद्धंरुद्रोद्वापयतिस्वाहा॥असुरोवशिखांदनेअसुरात्तरयातंविद्यामथेमोऽनपेदितिवालस्यहृत्शोत  
 होमोपितिलैराज्येनवाकाय॥अमंत्रोद्वारानारायणीयो॥रूपमोदवापिनिपक्षस्तगवतिवासुंउदेवृश्चदह  
 सरश्वलान्नक्षश्ववहोमंतिलादितिरनेनकरोऽमंत्रीति॥अस्पव्याख्यामेलघुटीकायाहृत्प्राणिती  
 रूपमोडिरागिणिवेतिस्वाहा॥अस्येथेनेनपंचादेऽनुज्ञयादिति॥परामंत्रं॥ॐमुंकाःशकः॥नवशजयश्च  
 गह्ववालिकेठंवेति॥अस्पव्याख्यामेलघुटीकायांमुंकाःशकः॥पउवृडवैति॥मुंचमुंचपचपधृदाहदहावठे  
 तिस्वाहा॥पतङ्गपतर्पणहोमादिनासर्वयष्टसर्वयष्टसमइति॥पर्यणमलिषेकोऽप्रसिद्धः॥तप्येणवा॥आदिश  
 हेनवलिः॥प्रयोगसारे॥ॐहृत्प्राणिसगवतिमुंकाःशकः॥मुंकाःशकः॥मुंकाःशकः॥मुंकाःशकः॥मुंकाःशकः॥



व्यावृत्तप्येकं उभयत्रे निमित्तं प्रविशति रात्रं पंचरात्रं आस हस्त्रं सुजया त्रिलोः। योति दुष्टग्रहोशां प्रलि  
 दामाः सुनेयनादिसर्षकर्म स्वप्यन्यो मंत्रो नारायणीये दर्शिताः। तद्यथा चंडौ सकर्षं वनलो विनायं  
 ङांतं वनासाः इशापीव वेदाः इफ इशिरोत्रो मवरं धद न्या द्वाल यं ङं क प्रजयादिक मी ध्रस्पवाच्यान  
 नारायणीयटीकाया मपेक्षितव्योतिः चंडौ का द्वितीयो पंचरात्रं संयुक्तो क्रमेणो ह्यत्र विदकाराः त  
 दुपरिरेफ संयुक्तं त्रिसद्वहोतं चो ह्यपुनरपिक द्वितीयं सप्तमस्वरस्युक्तं मई उयुक्तं मुष्टयुक्तं इशादा  
 हरेशाः अथमपि वालयश्च सर्वकर्म सुप्रयत्ने विना नारायणीयतघुटीकायां उच्यते इत्यादि चंडः ख  
 कर्षणं चंडो द्वौ कर्षयुक्तौ स्वाः सु अनलो विनेथेति अनलः अत्रिः दकार निष्ठो रेफः ङां तां ण ना साः आः अ  
 शशी अत्रस्वरभ आस्यां युक्तः स्वकासां खं इति ङेफ इशिरोत्रः स्वा दानः एषं सु सुदेणं ङेफ इशादा  
 त्रौ लवृत्तं मंत्रो ह्यारश्चो को नारायणीये तार सुयुग्ममुदकं शिर ए सिरं ए क्ति र्दं ता च शिशुनामं शी शशी का  
 इत्युक्तेः इहरभो वदनैः विपरीतं मंत्रं तदा विष्टरो दनमुद्धिषोति अस्पवास्यान नारायणीयटीकाया मपेक्षि

२२८

तार्थोतिन्या देवी लिखिता तन्मध्ये शिशुनाम लिखितं उच्यते इति मंत्रेण देवीमाले ववेष्यत्वात् इति इ  
 इ मंडल इयं विलिख्ये कै कम भोधनाः इति संवत्सप्यवनीया हिष्ठरोदं निराकरोती तिलघुटीकायां उचार  
 मित्यादितोत्रं णवः लुयुग्मं लु इति ङं कां वः विरः स्वाहा इ उच्यते स्वादाः शमंत्रो तवति शक्तिः श्री का  
 गः एवंपयोगां श्रीकार मध्ये शिशुनाम लिख्यते उच्यते मंत्रो हरेर्धेयैरां तददि ह्वन्न इयं विलिखात्त ह हिरधो व  
 दनैरशमी चंडकलाकारैर इति चेत्तुके इत्येव यो गां त सं म डरं चक्रं विलिख्ये तस्य नायां ह्येवां विलि  
 ख्यत्तस्त्वामध्ये शिशुनाम लिख्यते पदरेषु प्रणवादी निखड ह  
 राणि लिखित्वात् तददि ह्वन्न इयं ने मिरूपेण लिखित्वात् तददि  
 श्रुक्तं प्रति मई दुनिर्घष्येति अथयंत्रो द्या अथयंत्र  
 त्रो ह्यार अथे वृद्धं कारायः लघुटीकाः लिषायः अथवा  
 लय हस्तवः प्रयोगासा रे प्रणम्य शिर सां शी तंगे लेशा  
 नां मं देश्वरमां चालय हस्तवं वक्ष्ये समसाः सुदयं पदशः



प्रसायवसादीयात्रउपाविक्रमेणचवसिष्ठोयमहास्कंदःमनोदेवप्रसीदतुमरकमालंपावरधरोरकमाल्याड  
 लेपनप्रकादित्वाहलशोतःसगेदेवप्रसीदतुमरकमालंपावरधरोरकमाल्याड  
 नोदेवःप्रसीदतुमरकमालंपावरधरोरकमाल्याड  
 शुक्रिःशक्तिधरःशूरःकुमारःशिवदेवताःसुखसिद्धमहासेनासोदेवःप्रसीदतुमरकमाल्याड  
 बुधसुप्रबुद्धाचप्रमनाशमनेतिश्रीमनोमनीनिधिख्यातायोगिन्याःसुवालकांजातरूपिण्युक्ता  
 महोदया॥मनोहवाजवाजप्रखोशाप्रतामदनेतिवचतानांमत्रसंस्ततायोगिन्याःपांडवालकम  
 रुक्मिणीचेडधउवेगाविनीषणाविद्यजिज्ञामदानमशतानंददातथाप्रा॥वालाप्रथमनाचेतियोगि  
 यस्यांनुवालेकाहरिणीचायकाहीचानकोशुकीतया॥शुकीकोटराहीचंड  
 सकषीचवडिकोवालदिकारिणचित्तियोगिन्याःपांडवालकम  
 सिद्धापियंवदासुनद्रासुप्रतागोरीवलादिकरिणीचानानाविज्ञविष्वाताय  
 गिन्याःपांडवालकांहालाकरालाकालिदेकाजीवितियथोदिताखंडदावारसंपन्न  
 योगिन्याःपांडवालकांश्रीतासुप्रणीताचमालिनीविष्मालिनीविमलाकमलामाल



लोलीरोहीचक्रिता॥विहंस्योयथाकर्मयोगिन्याःपांडवालकमवाचुवेगामहावेगासुवेगावेगादिनी  
 पाशिनीहंसिनीहृष्टिचुष्टिष्येष्टीतिसिद्धिदक्षिमात्रावाहिन्योगिन्याःपांडवालकम  
 निकिन्नासंगगुह्याकेदिनीद्राविणीकामायोगिन्याःपांडुसवेदाशुक्नीरेवतेशिवाचसुसंडिता  
 वलवाचप्रतनाख्याचक्रटप्रतनिकाउनविडालागोशुर्वीहृत्राकुंडमलातथाप्रा॥शुलेवाचपद्याच  
 कुमुदाप्यथवाविकातापिनीचेवकालीचदेवेतसुखीघृष्टाकुंडमलातथापप्रा॥दीमाईरिकालदे  
 यक्रुंगीचसुसाकृष्णकाशरात्रिष्ममायाचलोहितापिलिपिहिकानीतारणचक्रयादुनीषणाडुर्गमाप्रा॥  
 तापिनीकटकोलीचसुक्वेणमहावलाअदेकारीजयातहनादमेणाविडेउश्रीरोदनीसुकुटासिद्धालतापिगल  
 तथ्यासीतलावालिनीचैत्रतापसीचाथराज्ञसीध्यानसीधनहादेवीवलनवर्तिनीतथ्यसुनाजातवेदाचनलि  
 कलहंसिनीलिकादेवाहलीचवायवीदक्षिणातथाखंडदापाणिक्वैवामनीचोपिकेतिचपतासुत्र  
 कुलोत्पन्नावसुःमहिःसमरितायोगिन्याःनित्यसंतुष्टाःस्कंदापस्मारदेयतापानानारहाधिकारस्थावालकप  
 सुसर्वादामहालक्ष्मीमहानंदमहासेनामहावलामहाकपमहासीमामहावेजामहोत्सवामहामनमसु

संडोमोदिनीधीरनाथिमोएकाधीराविशालाहासुकेशीचखुखासुया॥सुकेशिनीवसंतुष्टादंडिनीचविलेविनीमा  
 ननीचाथसोवर्णासिंहवक्राकरंकिनी॥॥अमराचंवलपंवावेडनीसिद्धिदाराशाकोदरीधृतिःखादाखध  
 र्खवसानतनी॥॥संवाधसंवरादेवीनीलप्रीवातथायिकाविमजायथिनीवामाक्रुडेतीवेगवदिनी॥॥  
 षिणीमालिनीकुल्लाकालवणीचंद्रिकाविवाननासुहाचेतिपाईतीसर्गनिर्गता॥॥पंचाशद्वलसंपन्नशुभ  
 प्रीदेवताप्रियायोगिन्याःकामरूपिण्योवालकंपातुसर्वदा॥॥विश्ववेतीप्रताप्रज्ञासर्वज्ञासर्वगायुहाडुगंसर  
 स्वतीश्रेष्ठापद्यापदपरा॥॥अमदाराहिणीवाताप्रज्ञाप्रज्ञादिनीविनाविचरतिर्विततिःप्रोतिःअमतिर्विद्वति  
 र्ज्ञेय्या॥॥जगदाणायकुरीवालकंपातुसर्वदा॥॥नंदाश्वेवोपनंदाश्रगोमतीसुमतीसुयाविद्वलिज्ञोम  
 हाकालःकरकस्त्रिगलीचनतेजश्रंउवि॥॥शाहोगोमुखवधुवदुवासुखःकालानलकालेशशुककलाति  
 ताषणः॥॥एतिसंक्रंदनीसुन्नावीराःप्रोडशराहसामप्रतना॥॥प्रतासुध्यावालकंपातुसर्वदा॥॥चंद्रेश  
 रोवृहद्वासुध्वेमिशेषशेषरोःकेतुमामोहिरणाज्ञोविद्वत्केशःशशिप्रसः॥॥पंचगोहलनोनीमसंव  
 र्कशतीरिताःद्वालचक्रस्त्रिताहेतस्त्रष्टाश्रमलयोनिनावीराह्यदशविष्यातादेवतावाधिसतनरा

प्राप्रसन्नास्तत्तत्तेवालकंपातुसर्वदा॥॥वज्रिणीशक्तिणीवातदंडिनीखड्गिनीतथापासिनीध्वजिनीदि  
 वागदिनीशुलिनीपरा॥॥पद्मिणीवक्रिणीचेतिसर्वाकारासयप्रदाःपलादिनिर्मितादेवोयोगिन्योद  
 र्शिकीर्तिताः॥॥अविद्वत्प्रधानायासायासाससिधतनाप्रशान्नामातरःशातावालकंपातुसर्वदा॥॥अ  
 ह्मजीवकीजीवोज्ञासुतश्चत्रलादकःमादंगोविमलोश्चिद्विरिशानीगनिर्मिताः॥॥सद्येयंमहादे  
 वीदेवतासुखमंडिताप्रसन्नमनसःसर्ववालकंपातुसर्वदा॥॥अर्थकोजंनकोनीमस्यःकंदशुकी  
 त्रिनावरिशावीरदुष्टानेनिजमिषाःप्रिदेवतापंचशक्तिप्रधानास्त्रवालकंपातुसर्वदा॥॥तौरयोत्तरवा  
 वीराःक्षेत्रबालाविनायकाडाविन्योयत्तरशोसिशाकिन्नास्तपन्नगाःस्वगाश्रयतरास्तमनुष्यापश  
 वोमृगाःसरीसृपाश्रसंतुष्टवालकंपातुसर्वदा॥॥आदिस्यावसवोसुद्राःपितरोर्मैरुतसुथासुनयोमान  
 वाःकालायहायोगाःसनातनःसिद्धासाध्याश्रंघर्षाःदेसाश्राश्रसोवलाविद्याधरमहादेसावालकंप  
 तुसर्वदासहजावीरजाश्रेष्ठागजामंत्रजासुथायोगिन्योयोगसाविन्योनानाविसवगोचराःताना

मानसं वृद्धावा लक्ष्मं पात्रसर्वदा ॥ ब्रह्मोके स्वर्गलोकिया स्थिर्ये लोके शुभमातरः अधश्चो द्वैव तिर्यक् क्रीडंते  
 ५ नंतमृतेयः असनायोगसंपन्नो दिव्यैश्वर्यमममिता ॥ ब्रह्मंदापदसंज्ञते तैरवेः परिवेष्टितः रश्मिबाल  
 कंश्रीताः शोभाः शोतेन चेतसा दिव्यं शोत्रमिदं युष्मं वानरहा ॥ धिकारकं जपेत्येतान् स्मार्थं बालद्वो हो  
 पशोतिदं ॥ इति बालयदहस्य ॥ अथ बालयदहस्य ॥ इति बालयदहस्य ॥ इति बालयदहस्य ॥ इति बालयदहस्य ॥  
 गृहीतवलिदानादिहनात्रकामेभ्यमंत्राः प्रदक्षिताः ॥ यानि वयं वाणिज्यमथ दद्यात् ॥ इति बालयदहस्य ॥  
 बालयदहस्य साधु रणं ॥ अतः सर्वार्थप्रथमत एवोपवर्षितम् ॥ इति प्रथमदिवसगृहीतबालयदहस्य  
 म ॥ अथ प्रथमे मासि गृहीतबालयदहस्य ॥ अथ प्रथमे मासि गृहीतबालयदहस्य ॥ अथ प्रथमे मासि गृहीतबालयदहस्य ॥  
 कासरोदनकिंश्चास्य धरो भ्रातृमीलनोरकमवधुरीणं चतुश्छां संप्रचक्षते पायसं त्रिविधोपेतं तैः ॥  
 प्रसमन्तितं च छर्षिधेन ॥ सेनपीतवसोपज्ञो नित्यं ॥ वामे करंयमाश्रित्य सदा देवलिमादरे शनव  
 गोदंतधूपस्यात्र तोचुं वं लिसगृही ॥ नारायणीये तु काशखेरोदनमिति वेष्यात्संयां विशेषतः ॥ वलौ

३०२

उणीतवसंदिशेद्रुक्खरांधेतैलदीपकाः ॥ त्रिभिः पायसं मद्यंतिलसं सचतुर्धिमिति विशेषः क्रियाकाल  
 युणोत्ररेखासूतनाशकुनेति यदीनामधेयं हृपये मे प्रश्नं गोपि ॥ वलिदानकाले मध्याह्न इति विशेषः मध्या  
 दिखुयस्य वर्णस्य या निनिव्विज्ञानितेपि वाज्यानि एवमान्यत्रापि ॥ अत्र वलिदानादिपत्रीनकर्मसु प्रथ  
 मदिवसगृहीतबालयदहस्योक्तामंत्रायाद्या ॥ इति प्रथममासगृहीतबालयदहस्य ॥ अथ प्रथमवर्ष  
 गृहीतबालयदहस्य ॥ अथ प्रथमवर्ष ॥  
 ह्यरोदनम ॥ पतनं पसदास्सौ चेषितं तत्र लक्ष्येश ॥ गुडान्नेदधिकुल्माषवोलिकामत्यका ॥ सवै ॥  
 तिलवृषीः ॥ मिषोपेतं प्रायां दिशि वलिदरे शक्रिशगो ॥ गृहोदंतः ॥ हृपये मुंचतियही ॥ नारायणीये तु  
 गुडान्नादिकमभिधया कुल्माषजालौ गंधादिभिः प्रायां वलिमादरे शानं पंचदलेरिति शेषः ॥ पंच  
 दलानि च प्रथमदिवसगृहरेति हितानि तथा वलिदानादियंत्रोद्धारणात्कर्मसु प्रथमदिवसगृ  
 हरोक्तामंत्रायाद्याः ॥ इति प्रथमवर्षगृहीतबालयदहस्य ॥ अथ प्रथमदिवसमासवर्षेण गृही

तद्वतनादयः शत्रुणामुद्योके कुमारतंत्रे ॥ अथनेदिवसोमासवर्षयोगमास्यथा अथवर्षानंदनाम  
 मीयतनाक्रमतेशिखीतं गृहीतस्यवाक्यस्य ब्रह्मरस्यप्रथमतः गात्रेशीघ्रस्वेदश्नाह्निसौम्ये  
 ब्रह्मिष्ठो अकंपश्चदीनस्वरसुतस्रथा ॥ विधाने तत्रवक्ष्यामि यं न संवतिष्ठतना नदीमृत्तिकाया कुर्यात् शो  
 सनेषुत्रिकांततः शुक्रोदनं सुक्रगंधस्यथा शुक्रोऽलेपनमांशुक्रपुष्पाणिवेपथ्वजापेचनदीपकायं च  
 मृद्धी चर्वाङ्गेष्टवस्यादिशिसंयतः ॥ विलिंदत्वाद्यथा राजशर्षपोशीरमेव चाशिवनिर्मोल्पताजातान्केश  
 निवृत्तकंगव्यदंतं नेवष्टपयेत्त्रैवालकं ॥ एवं दिनत्रयं कृत्वा च चुर्यशीतिवारिणां प्रापकं ये ह  
 लकंपश्चाद्ब्राह्मणं वापि तिडुकां द्वारिणते नयेद्वं स्वस्थो भवति बालकः ॥ शीतिवारिणेति शतैर्द्वारि  
 शत्रो वा तस्यादिकैः स्वस्वशाखापरिपठितैः मंत्रैरभिर्मंत्रितां वारिशीतिवारि एते मंत्राणो वर्षादिपरि  
 नाषायं दर्शितम् ॥ अथवह्नामाणमंत्रेण शतकृत्वेषु निर्मितसुदकं शीतिवारि अथवह्नाष्टजायं  
 लिदानो उदकाडिति मंत्रणे प्रापने च मंत्रमाह ॥ ईं श्रीं श्वेतत्वाह ॥ इति प्रथमादिवशात् सप्तम्युह्ये ॥

३०२

तद्वतनादयः ॥ अथद्वितीयदिवसमासवर्षे शुद्धीतवालस्य ज्ञातिवदहराणि ॥ तत्रद्वितीयदिवसगृह  
 तमांशुल्लङ्घनं प्रकश्यते ॥ कासते अस्ते चैव गात्रसंकोचते क्षवं अपामार्गं सुशीरं च पिप्पलीबीजकं  
 तथा ॥ अजाद्वारिणपिष्ठासुततोत्राले प्रलेपयेत् ॥ दूषणोऽशुगृह्णेन केशो सुनरवसंयुतो ॥ नमो लगवति  
 वाले सर्ध्वस्तप्रमर्दिनी स्वव्रजदपिणी वलिष्टज्ञास्य बालमुं च सं च फ इत्याहो तो गदत्वा तु माहो  
 ततो मुंचेति सायही ॥ इति द्वितीयदिवसगृह्णै बालस्य दहरम् ॥ अथद्वितीयमासगृहीतवालस्य  
 दहराणि ॥ प्रयोगसारे ॥ द्वितीयमासि गृह्णाति बालकं मुकुटाग्रही ॥ श्रीवानिर्द्विनिष्पं देवपुष  
 पतसीतसा ॥ वक्रसंशोषणो ह्यारोचना नितदाशुतैयो ह्यीरात्रकशराद्यंतिलतंडुलसंयुतमांशु  
 क्षुष्प्यांशुकांते पेसत्रमास्यलिंदरे शं कुसुं सलमुनानिवेधं पयं मुंचतियही ॥ नारायणीये तु ॥  
 वालोपायसंते लेन दीपश्चेति विशेषतः ॥ असुलेपनादिषु मंत्रायत्राचदिक्यानादिविशेषाश्च प्रथमादि  
 वसगृहीतवालस्य दहरं दृष्टव्यम् ॥ इति द्वितीयमासगृहीतवालस्य दहरम् ॥ अथद्वितीयवर्ष

गृहीतवालग्रहदरम् ॥ प्रयोगसारा ॥ द्वितीयेदिवसंवालेग्रहीतज्ञातिरोदन्तीरक्षाग्रहदरीधान  
 पयकेसरवर्णतारोदनेदृशकंपेववेष्टितत्रलक्ष्येशितिलाएककुल्माणुडानंदधिमोदकेःस  
 फलंसातेहृदंयाच्योदितिवलिहरेत्राधूपयेत्सर्पनिर्मोकिरपिस्पंलं वतियही ॥ अथद्वंदंभ्रुवुण्यादि  
 सहितामिसर्थः ॥ सापयेत्सर्वेष्वमिति नारायणीयोपंपत्राणिपंपत्रपलावाः ॥ अथ्याचीतिदिशीतिदिशि  
 शोषोतवदित ॥ अमुलेफादिसुसंत्रास्रथाकालादिविशेषाश्चप्रथमदिवसगृहीतवालग्रहदरम् ॥ तत्र  
 दृष्टव्याः ॥ इतिद्वितीयेदिवसंवालेग्रहीतवालग्रहदरम् ॥ अथद्वितीयदिवसमासवर्षेगृहीतघटनादरमा  
 रावणसुब्रह्मोकेकुमारतंत्राः ॥ द्वितीयेदिवसमासेवायनेवासुनंदनागृज्ञातिघटनावालयोगिनीनां  
 नोपियाततोत्वेद्वरःघर्षेसंकोचोदृशपादयोर्नंदनाग्रवादात्मनिर्नामिलयतिवदुष्पी ॥ आहारंनय  
 ज्ञातिदिवारात्रंरोदती ॥ अक्षिरोगच्छुद्धेनचवेदीतिधुनः ॥ सुनःसकृशत्वंप्रजायेतद्रापयेच्छिषुलक्षणं  
 तंडुलप्रस्थपिष्ठेनविनिर्मायाथउत्रिकोत्रयोदराध्रजादीपास्वस्त्रिकारयलोदबंध्यस्यप्रमाणपिष्ठेन

सिद्धाष्टपाश्चमस्यकांमंसेवेत्येतदखिलेपश्चिमायांदिशिद्विपेत्रापश्चमायांचसंध्यायमेवंदद्यादिनत्रयश्रा  
 वापिधृपशांतिस्नानंअत्रमंत्राश्चप्रथमदिवसमासवर्षेगृहीतघटनादरोक्ताःरावणसुब्रह्मोकेकुमारतंत्र  
 त्रय्यायाहाः ॥ इतिद्वितीयदिवसमासवर्षेगृहीतवालग्रहदरम् ॥ अत्रतीयदिवसमासवर्षेसु  
 गृहीतवालग्रहदराणि ॥ तत्रतृतीयदिवसगृहीतवालग्रहदरम् ॥ अथयोगसारे ॥ तृतीयेदनिगृज्ञाति  
 घंवालीवालकयदोहृदं वैतेश्चसतेवालीरोदतेचषुद्धर्षुङ्गः ॥ नोमीलयतित्राणिआहारंवनरोचतेगो  
 दंतंगजदंतं वतथावैकसरांजनी ॥ अजाह्वरिणपिष्ठाउततोवालंप्रलेपयेत् ॥ धूपयेनिंवपुत्रेश्रतथासर्प  
 पसंशुतोलेपितंघृपितंवालंतोमुंचेतिमायुही ॥ इतिद्वितीयदिवसगृहीतवालग्रहदरम् ॥ अ  
 थतृतीयमासगृहीतवालग्रहदरम् ॥ अथयोगसारे ॥ तृतीयमासिगृज्ञातिवालकंगोमतीयहीत  
 यागृहीतमासुवालीरोदतिनिश्चसम् ॥ अवेन्मूत्रपुरीषेनिद्रांवेवप्रजायते ॥ मधुरंमधुमाधातेगो  
 गंधश्चप्रजायते ॥ इदंनंदीरसाकंचयवानेवास्त्वमेववाक्कुल्माणुतिलघृष्णपिउंवेवप्रजायते ॥

पयस्पर्षयेच्चतेस्नापयेच्चविशेषतः स्नापनं पंचसंगेन तिलतैलेन द्वापकां घर्षस्यादिविमाश्रियमथाङ्गे वलि  
 द्दशेत् ॥ एतेन लिदानेनाततो मुंचंति सायदी ॥ इति तृतीयमासगृहीतवालग्रहहरणम् ॥ अथ तृतीयवर्ष  
 गृहीतवालग्रहहरणम् ॥ प्रयोगे सारे ॥ कुमारो ध्विनीनाम गृह्णते वष्टवर्षिकीं तया गृहीतमात्रसुचदुस्ये  
 नैव पशुपति सीदंति सर्घगात्राणि ॥ इत्यंशोऽप्यजायतो कपते वामदक्षं वा आहारं च नरोचते ॥ ३ ॥ दने क  
 शराश्चेव पायसं कशरायुतम् ॥ कुमारं दधिराजाश्रयो धृष्यं प्रजायतो फलेन प्रतिमां कुर्यावलिं तत्र न  
 कारयेत् ॥ द्रुपधं नवहिपिह्वे नगोदंते च नखेन वा स्नापनं पंचगव्येन रात्रौ चैव तत्रादिशि ॥ संततं च चने च वा  
 वलिकर्म समाचरेत् स्नापितं घृणितं वानंततो मुंचंति सायदी ॥ इति तृतीयवर्षतवालग्रहहरणम् ॥ अथ तृती  
 यदिवसमासवर्षे गृहीतवालग्रहहरणम् ॥ रावणसुप्रीके ॥ कुमारं तत्र ॥ तृतीयं हनिमासे यावर्षं वा  
 मतीयदी ॥ तस्या गृहीतकृष्णं घजावलिधूपदीपो प्रथमदिवसगृहीतेषु ३ ॥ अथ चतुर्थदिवस  
 मासवर्षे गृहीतवालग्रहहरणम् ॥ तत्र चतुर्थदिवसगृहीतवालग्रहहरणम् ॥ चतुर्थं हनि गृह्णातिकाको

लीसामहप्रहीतया गृहीतमात्राणिकेनं मुहृदते तु सा च द्वे जयति गात्राणि रोक्षते च पुनः पुनः माजुदंतो  
 हि निम्भकिसर्षयेः सह द्रुपयेत्वा गोमूत्रेण विनिश्चिष्यत तो वानं यले पयेत् ॥ सर्षपे निव पत्रे अन्तरे के शो अर्ध  
 पयेत् ॥ तो गदत्वा तु मादृणोऽङ्गुलमात्रे सुसमांशके ॥ अनेनैव विधुनेन ततो मुंचंति सायदी ॥ इति चतुर्थदिवस  
 गृहीतवालकयदहरणम् ॥ अथ चतुर्थमासगृहीतवालग्रहहरणम् ॥ प्रयोगे सारे ॥ एतं गलाघृतनाम गृह्णते च  
 कुमारसि को तया गृहीतमात्रसुके पिते दक्षिणं करं ॥ हीरं पितृति विप्रदं विकारं वैवदारुणं श्वेतवर्णं शरीरं च सु  
 खं च परिशुष्यतोऽतिगंधं सवेत्तस्य गात्रं वैवालकस्य चानमंत्रे नौषधंतत्र वलिं तस्य नकारयेत् ॥ इति च  
 तृथमात्रसुद्धरेण परितप्यतो सीदंति सर्घगात्राणि ॥ वमनं तद्गुणं तवेत्तरो दते वदिवारात्रैश्च सते च पुनः  
 पुनः ॥ तिलकृष्णान्वासोऽपिः साहंतत्र वलिं हरत् ॥ मेषु गेन द्रुपस्यात्र तो मुंचंति सायदी ॥ नारायणीया  
 वलि स्यात्तिलकृष्णान्वासोऽपिः ॥ द्रुपयेत्मेषु गेन स्नानं स्यात्पंचपत्रसुक्रामलाशोडं वरो  
 ख्यवटविल्वदलं दितम् ॥ वलिदानादिषु मंत्रायां त्रादिविरीणाश्च प्रथमदिवसगृहीतवालग्रहरे ३ ॥



॥१॥ इति चतुर्थं वर्षं गृहीतवाल गृहहरम् ॥ अथ चतुर्थं दिवसमासवर्षं गृहीतघतनाहरम् ॥ राव  
 एषु चतुर्थे कुमारतंत्रे ॥ चतुर्थे हनिवामासे वर्षे गृहीतवालकम् ॥ मुखमंडनिकानां निघतनास्या  
 थयोगिनी तस्या वैलक्षणालक्ष्मिजायते प्रथमं द्वारं ॥ गात्रं संयोमतिर्हृद्दीर्घं चोच्यते ॥ तत्रैव  
 मत्तश्वासकासो रुचिरितीति ॥ तिलपिष्टमयी कृत्वा उत्रिकां विवृक्तं कंठके ॥ अष्टांगं रेखयेत्स्युष्यं सुक  
 ध्रजोत्तमः ॥ चक्षुःकोट्टं प्रस्थासिद्धं सक्तं दारदण्डकम् ॥ त्रिसंभं पश्चिमाशायवलिदद्यात्प्रयत्नतः ॥ नावद्वय  
 का इति ॥ अर्हं प्रस्थासिद्धं परिमितान्नेन कृत्वा इत्यर्थः ॥ गोशृंगलसुनेसर्पनिर्माको निवपत्रकं मण्डप्याकेश  
 माज्जीरलोमन्वाङ्गं च गोसूत्र्या ॥ एतेषु प्रययेदेकं त्रीणि संभ्यात्रयमिवा ॥ अत्रापि शांतिस्नानं च ब्राह्मणसो  
 जनानि प्रथमं दिवसमासवर्षं गृहीतघतनाहरो कानियाद्याणि ॥ अथ विज्ञापकस्मिन्नेव दिने व  
 लिरिति ॥ इति चतुर्थं दिवसमासवर्षं गृहीतवाल गृहहरम् ॥ अथ पंचमः दिवस गृहीतवाल गृह  
 हरम् ॥ प्रयोगसारे ॥ पंचमे हन्यहंकारी यद्गीतकृत्वा तिलकम् ॥ तत्रैवाज्जलपश्चात्सुखं वंद्यं वीह

३०५

यां शिलातालवचालो भ्रमे स्वशृंगोऽपलेपयेत्तलसुनानि वसिद्धर्थे ॥ इत्येवम् ॥ चतुर्थं पंचमं चतुर्थं नारायणीया ॥ इहं  
 मां विकस्यां वमिस्यात्तं वलिं मत्स्यादिना हरेत् ॥ अत्रापि वत्याऽनुलेपना विषमं चार्यं ॥ दिविशोषाश्च प्रथमं दिव  
 स गृहीतवाल गृहहरं कादृष्ट्या ॥ चतुर्थं हनिहृत्कृत्वा तवाल गृहहरं कोवा वलिं चेतति ॥ इति पंचमं दिवस गृ  
 हीतवाल गृहहरम् ॥ अथ पंचममास गृहीतवाल गृहहरम् ॥ पंचमे मासि गृहीतवाल कंठ वदवायुही  
 तश्चेष्टारो र्दकं काशं सुस्वीषणरो दनेशाकाक्षमत्सपिसितापिष्ठिसेदे वलिं हरेत् ॥ अथ पंचममास गृ  
 हो चेतिसा गृहीतवाल गृहहरं नारायणीया लटने तु गृहीतान्ये वस गृहीतवाल गृहहरं हरेत् ॥ इति पंचममास गृ  
 हीतवाल गृहहरम् ॥ अथ वाल्प्यादि मंत्राये त्रापंचपुस्तवादिषु विशेषाश्च प्रथमं दिवस गृहीतवाल गृहहरं  
 रदृष्ट्या ॥ अथ पंचमवर्षं गृहीतवाल गृहहरम् ॥ प्रयोगसारे ॥ पंचमे वत्सरे वालेय गृहीतवाल गृहहरं  
 कीर्त्तयेत् ॥ अथ पंचमवर्षं गृहीतवाल गृहहरं ॥ अथ पंचमवर्षं गृहीतवाल गृहहरं ॥ अथ पंचमवर्षं गृहीतवाल गृहहरं ॥  
 निपक्वानि कृत्वा रांपयः पायसं च सुरामधुतिलकं केवलं हरेत् ॥ सफलं सप्रतिष्ठं देसप्ररात्रं तु कारयेत् ॥

केशराजीसगोदंतलमुणेरपिष्टुपयेश्रिसंभ्यंवल्लिदानेनततोमुंचंतिसायहीनारायणीयेदुधस्वनीद्वयहीना  
 मावह्यादिष्टुमंत्रास्रयापंचपल्लवमानयंत्रादिविशेषप्रथमदिवसगृहीतवालयदहरोक्रात्रापिविद्विया॥  
 इतिपंचमवर्षगृहीतवालयदहरो॥ अथपंचमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरो॥ रावणसुव्रते  
 कुमारतंत्रे॥ पंचमेदिवसेमासवर्षेवाघतनाशिष्टुवियलिकाख्यारुद्धीयात्यथमंजयतेद्वारः॥ दिक्काश्वास्य  
 लश्रगात्रंलंगोसुविस्त्रया॥ तंडुलप्रस्थसष्टेननिर्मायथुत्तविकोशुक्रोदनंभ्रजाःपंचस्वसिकाःपंचवोहल  
 पंचप्रदीपाःशुक्लानिकुसुमानिचंद्रनम्राअपरान्नेष्टुमलेपश्चिमायादिविनिपेवधूपसुचतुर्थदिवसमा  
 सवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रागोश्रंगंलसुनंमियादिकोयाद्याःशातिमानमंत्राहाणनोअनानितुप्रथम  
 दिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रायाद्याः॥ इतिपंचमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरो॥ अथ  
 षष्ठमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालयदहरो॥ तत्रषष्ठमदिवसगृहीतवालयदहरो॥ प्रयोगसारे॥  
 षष्ठेदनिवषद्वारीप्रयहीरुक्तातिवलकमातत्रैष्टुगात्रविद्विपेहप्ररोदनमोदनम्राकुष्टुगुलसिद्धय

३०६

गजदंतैर्हृताश्रितैः॥ अथपंचमवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रागोश्रंगंलसुनंमियादिकोयाद्याःशातिमानमंत्राहाणनोअनानितुप्रथम  
 षष्ठमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रायाद्याः॥ इतिपंचमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरो॥ अथ  
 षष्ठमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालयदहरो॥ तत्रषष्ठमदिवसगृहीतवालयदहरो॥ प्रयोगसारे॥  
 षष्ठेदनिवषद्वारीप्रयहीरुक्तातिवलकमातत्रैष्टुगात्रविद्विपेहप्ररोदनमोदनम्राकुष्टुगुलसिद्धय  
 गजदंतैर्हृताश्रितैः॥ अथपंचमवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रागोश्रंगंलसुनंमियादिकोयाद्याःशातिमानमंत्राहाणनोअनानितुप्रथम  
 षष्ठमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरोक्रायाद्याः॥ इतिपंचमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालादहरो॥ अथ  
 षष्ठमदिवसमासवर्षेष्टुगृहीतवालयदहरो॥ तत्रषष्ठमदिवसगृहीतवालयदहरो॥ प्रयोगसारे॥  
 षष्ठेदनिवषद्वारीप्रयहीरुक्तातिवलकमातत्रैष्टुगात्रविद्विपेहप्ररोदनमोदनम्राकुष्टुगुलसिद्धय

पंचदलेरिसपसिद्धिता क्रिया कालगुणोत्तरे तु वलिद्रव्येषु वटकाश्च धारिकाश्च तिनतैस्त्रिजदीपाचोक्ताश्च योगोरे  
 चनापि श्रेयसीता ॥ अत्रापि वलिदानादिमंत्रायां त्रादि विरोजाश्च प्रथमदिवसस्य हीतवालप्रदहरोका विधिषा  
 ॥ इति प्रथमवर्षे हीतवालप्रदहरोका ॥ अथ प्रथमदिवसमासवर्षे सुगृहीतप्रतनादहरोका रावणसुखो  
 के कुमारतंत्रे ॥ अथ हनितश्यामासहायने वापि वलकृष्णप्रतनादहरोका निर्माणां मष्टकृत्यात्प्रदने त्रय ॥  
 अथ हननं गात्रेशोषः श्वासोऽसुविषयाः कासश्च हस्तपादादिसंकोत्स्थितिलक्षणो तंडुलप्रस्तापिष्ठेन विनिर्मा  
 याथ उत्रिका कृष्णोदने घृणाः पंचकृष्णाः स्वस्तिकपंचकृष्णकृष्णमेवाथ मव्याश्रुपायसंढाधुमेवामासं  
 एपकास्वर्द्धस्थापिष्ठविनिर्मिता अत्रां पश्चिमाया दिशि मानिर्दिष्टे पदलि उत्रिकाश्च वक्रवृत्तपले  
 लपाचितघोमस्याः पप्यटिकाश्च वक्रचक्रप्रस्थसंमितघोमदीप्यांश्च वक्रवृत्तध्वजलिहया प्रशांतयो अत्र  
 निदानकाजयोः ईपोदेयोः सचचलार्थदिवसमासवर्षे सुगृहीतप्रतनादहरोका गोशृंगलसुनमिसादिको  
 योः तथा ज्ञांतिज्ञानं ब्राह्मणचो ज्ञानं च त्रौकरिस्य वामं त्रसुतिनस्तदथा ॥ इति प्रथम ३०

मद्विसमासवर्षे हीतप्रतनादहरोका ॥ अथ सप्तमदिवसमासवर्षे हीतवालप्रदहरोका ॥ अत्र सप्तमदिवसस्य  
 हीतवालप्रदहरोका ॥ अयोगसारा ॥ सप्तमे हनिष्टकृतिमुक्तके शिष्टोदंतवेष्टकासङ्गं धनारो  
 नञ्च सण्णालिये त्वयामयोगा सिपिष्ठागो म्वसंयुतमनस्वेन साङ्गं धूपस्य प्रतो मुं वंति सायं ही क्रियाका  
 लगुणोत्तरे तु वेष्टायाका कवड्रीदनमणलिध्या कुष्टकुं गुवचस्वेतमोष्टत्रे तु पण्ये वा एतेः प्रालेपयेद्वा  
 लेष्टपोव्याघ्रनखेन च सागंदवा तु माहृणो मुच्यते नात्र संशयः ॥ रागो वलि ॥ सचमस्यमाससुरातद्वा  
 गंधः स्रग्धय दीपैर्च वति अत्र लेपनादिषु मंत्रास्तथा यत्रादिकिरोपाश्च प्रथमदिवसस्य हीतवालप्रदहरो  
 दहरोका ॥ इति सप्तमदिवसस्य हीतवालप्रदहरोका ॥ अथ सप्तममासस्य हीतवालप्रदहरोका ॥ अथ योगस  
 रो ॥ सधमेमासिष्टकृतिवालकशीतलाग्रही निराहारांगविष्टेपजातिसौगंधकासनमरोदनं दंतवा  
 चतत्रेष्टाश्वास एवामोसान्नाशा ककुम्भाषसुराद्यपतिलैः शमघातवरात्रौ वलिदद्यात्ततो मुं वंति साय  
 दी ॥ रागारयणियो ॥ पंचादिषु ष्यफुत्माषपिष्ठया कैर्वालिहरे वा इति विशेषः ॥ क्रिया कालगुणोत्तरे ॥

मोसोदनेमुरामत्याकुल्लाम्पंचतिलानपिचक्रवाकस्यविहनेनकुसुमानिविशेषताशिशंसमानोअत्रापिबलिद  
 नादिशुभंत्रायंत्रादिक्रियोषाअथप्रथमदिवसवात्प्रहरोक्राविहिया॥ इतिसप्तममासगृहीतवालयदह  
 रम्॥ अथसप्तमवर्षेगृहीतवालयदहरम्॥ अथोगसरे॥ सप्तमेवत्सरेवापिजातवेदायद्दीशिभ्यंयद्गाति  
 चेष्टितत्रहासाह्वारविरक्ततामत्स्यमासद्विशोद्वृत्ताक्रंपायसेपयः॥ कृशरामोदकश्रेतिप्रोक्तैरेव  
 लिहरेशकृत्वाचतुष्पथेकुंडंमंत्रेणनेमंत्रवित्रात्रिपंचरात्रेवासद्वसंजुज्यात्रिलोः॥ इत्थमांडितग  
 वतिसुरागणिसुखंडितेकुंड्यान्वृत्संश्वालकादप्यगच्छत्स्वाहाराजीतिवहदास्यां चधूप्येन्मुव  
 तियद्दीनामातथावलौसकु।पोलिकाप्रपाःप्रिकारःतथास्नानंपंचदलैर्धूपोशंगस्वरोमनिरितिविशेष  
 क्रियाकालगुणोत्तरे॥ सुष्कतेचदिवारात्रमितिविषयांविशेषेमलिधयद्दीमेमंत्रोदरितातद्यथा॥ इ  
 कृष्मांडिनितगवतिराजनिष्ठितकुंड्यान्वृत्संश्वालिकेगच्छत्स्वाहासर्वदुष्टग्रहाणां  
 ह्यतमंभुविभनतः।धूपसर्पसनिवेनसत्ररात्रेवहोमयेति॥ अथशिशंसमानोप्रयोगसारेण॥ अखला

२०८

मेविशेषमंत्रविधानाद्वलिहरणादिशुभंत्रास्त्रथायंत्रादिविशोषाअथप्रथमदिवसगृहीतवालयदहरोक्रायाहा  
 इतिसप्तमवर्षेगृहीतवालयदहरम्॥ अथसप्तमदिवसमासवर्षेगृहीतवहनाहरम्॥ रावयुसुखो  
 कौकुमारवेत्रे॥ सप्तमदिवसवर्षेवाशुश्रुत्स्वती॥ यद्गातिरुत्तनावालंतस्यात्प्रथमंहराणांरात्रसंगोथविहने  
 दारकंपरोदनेइत्येतन्नक्षणं तत्रवलिहयप्रशांतयोःप्रस्थसंमितपिष्टेनसम्पकृत्वाथयुविका।सप्तधजासप्तद्दी  
 पास्त्रिकाःसप्तवैस्रथा।वुष्पाणिमस्यमासवैलक्रंवेसुदगाहरेव।धूपसुचवर्थदिवसमासवर्षेगृहीतवह  
 नाहरोक्रोगोशंगलसुनमियादिकोयाहाः।शांतिस्नानेन्राक्षणंनोजनंचप्रथमदिवसादिमसवर्षेगृहीतवह  
 नाहरोक्रोयाहांवल्लिदानेनराज्यांमंत्रसु॥ इत्थंफदस्वाहा॥ इतिसप्तमदिवसमासवर्षेगृहीतवहनाह  
 रम्॥ अथाष्टमदिवसमासवर्षेगृहीतवालयदहराणि॥ तत्रष्टमदिवसगृहीतवालयदहरम्॥ अथ  
 गसारे॥ अष्टमेहनिगृह्णातियद्दीवालेनिदडिका।तत्रैवरोदनीद्देगदिगालोकनकासमर॥ घवालसुसिद्ध  
 थंइत्यनिर्हूपलेपनाशंसद्योसुंवाततंवालेपीतादिवलिनप्रही॥ क्रियाकालगुणोत्तरे॥ अतीवश्रसनेजि

ज्ञानालनं वेतिष्ठया विशेष उद्धारिता नारायणीये तु मत्स्यमांससु गालस्य गंधस्य गंधपदी पौर्णमिरेरिक्तं धृष्टं  
 पादिषु मंत्रास्तथा मंत्रादि विशेषाश्च अथ मदिवस एहीतवाल ग्रह हरो क्रात्रा पिरा घा ॥ इत्याश्च मदिव  
 स एहीतवाल ग्रह हरस्य ॥ अथाश्च ममास एहीतवाल ग्रह हर विधनस्य ॥ इत्याश्च ममदिवस एहीत  
 वाल ग्रह हरस्य ॥ अथाप्रयोगसरो ॥ अथमेमांसिदं ज्ञातिवाल कय सुनाय ही ॥ गात्रेषु स्फोटका स्त्रस्य  
 कं पोमोहास्पशोषणांतं ब्रह्मसंज्ञया तावना सितत्र प्रतिक्रिया ॥ क्रियाकालयुगोत्तरे त्वापतनाराजनीनामस्य  
 तेवाश्च मासिकेति विशेषः ॥ इत्याश्च ममास एहीतवाल ग्रह हर विधनस्य ॥ अथाश्च ममवर्ष एहीतवाल ग्र  
 ह हरस्य ॥ अथासरो ॥ अथमेव तस्मैवालं एहीतनि लिनो यही वदारे स्फोटनं त्रासो गज्जने तत्र वेहित म  
 कशराप्रपकुल्लाभपायसं वलिमाहरे रागजीनिवदत्तरे वैधपये न चतिय ही ॥ क्रियाकालयुगोत्तरे ॥  
 खसरु वेमुकुम्भं डरिखुका पायसं कशरावेव स्वस्त्रिकं सक्तवस्यथा विविधं तु वलिदद्या नैधं धपस्य गादि  
 लि अहं रात्र संयतसु सुचि रत्वा विचक्षण ॥ इत्युच्यते च दहश्च यस्वा लिके स्वाहा यत्र च्यपे दिवा रा

३०९

ज्ञानं च निन्कारयेत् शस्त्रापि तं ह्यपि तं वलंततो सुं वं तिसाय ही नानं तु पंचमं पल्लवैः होमे मंत्र विशेष स्यात्  
 हितवा इति दाना दिषु मंत्रायं त्रादि विशेषाश्च अथ मदिवस मासवर्षे एहीत प्रतनाहरे इष्टव्यम् ॥ इति अ  
 थमवर्षे एहीतवाल ग्रह हरस्य ॥ अथाश्च मदिवसे मासे वर्षे वा क्रमते शिष्टो विद्यालिकानामध्ये एहीत  
 नास्या त्रतो हारः गात्रसे द्वा अत्र दिनेने त्रमीलनस्य ॥ जिह्वा शोषः शिरसो दे आहारे द्वेष एव च ॥ अक्षिरो गोस  
 वेदे तदि गितं तद्गृहा ह्यि शो तं दुल प्रस्थ पिष्टे न सुत्रिको कारयेत्तः पायसं मधुसपि अहीरं लाजाश्च  
 युक्तली ग्यु सुर्ममं प्रमांसं च तथा पप्यं हि का अर्पि धृजा दी पाश्च च त्वारि गंधना नाविश अर्पि सुमानां सि  
 चरुका निवेव मंत्रो दितो वलि ॥ अथ संमाहरे त्वर्ष संध्यायां दक्षिणादिशि ॥ कृष्णाश्च म्यं वद्दमा ए मंत्रेण  
 नेन संयस्य ॥ इत्युच्यते नारायणाय त्रे लोका विद्रावणाय हल हल इन्द्रो फ इन्द्रावा अनेनेव मंत्रेण सजादि  
 वलिहरणांतं कर्म कुर्वाता धृप सुगोष्ठं गल सुनमि यादिक अथुर्थ दिवस मासवर्षे एहीत प्रतनाहरे  
 क्रियाद्याः शोति नानं त्राक्षणो जने तु प्रथम दिवस मासादि एहीत प्रतनाहरो क्रात्रा घा ॥ अत्र कृष्णाश्च

म्यां वलिदर एमुक्तं व्यति संवे प्राशस्याः सि प्रायेणानु तत्रैवेति नियमाः सि प्रायेणाय तो नि मित्रानत्र  
 रमेवा ॥ इति अथ म दिव समास वर्षे षु गृहीत एतनाहरम् ॥ अथ नय म दिव समास वर्षे षु गृही  
 तवाल्य ह हराणि ॥ तत्र नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नय म दिव समास वर्षे षु गृही  
 यद्दीशिषी तत्रैषा त्रसने द्वे गस्व सुष्टि द्वय वादनं ॥ ककार क चंदन कुद्योय स र्ण पे स्र त्र ले पये त्रान् ख वार  
 रामा स्यां धृपये न्यु चति गृहीतारयणी ॥ महाम हिषी ति गृहीनाम ध्रै यो ऊर्ध्व निः स्वास वेष्टायाम धि कः ॥  
 लिङ्गा काल गुणो त्ररे त्र ले पन इ व्ये ख तरो गश्च त स र्ण पान प्य लि धय ता गं द त्वा नु मा दृणा मि ति विशेषो दि  
 हितः ता गो वलिः सत्र म त्प मां स सुरा ल ह्य गं धु स गृह प दी पका अत्र ले पना दि षु मे त्रा दि विशेषा अत्र  
 थ म मा स गृहीत वाल्य ह हरो क्रायाद्या ॥ इति नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास  
 गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥  
 हारः पाटल गंधता कुलमाषपलल हीरम त्प मां स स म ब्रितः ॥ इति नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥

२१०

ही ॥ क्रिया काल गुणो त्ररे ॥ हीरं पिवति किं च ॥ इति नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास  
 विशेषो दिशि तः ॥ हारः पाटल गंधता कुलमाषपलल हीरम त्प मां स स म ब्रितः ॥ इति नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥  
 दिशि समाप्ति स म ध्या न्ने वलि मा हरे त्वा पते नैव वि ध्र वे न मु च्य ते ना त्र सं सया अत्रापि वलि दाना दि षु मे त्रा  
 यं त्रा दि विशेषा अत्र म दिव स गृहीत वाल्य ह हरो क्रायाद्या ॥ इति नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥  
 अथ नवम वर्षे गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥  
 वेष्टा त्र स्याद्द ही गं ता हारः पोलिका घृ प द ध्या न्नेः पंचरात्रं वलिं हरेत् कुक्षीयारा जिल सु नैर्ले पये द पि ध  
 प्ये त्वा नि वे त दं त गी रो स्वा वा ले सं च ति सा ग्र ही ॥ क्रिया काल गुणो त्ररे ॥ इति नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥  
 (त्र ले पनं शु न कु छे न व स्याः स र्ण पेः सह गज दत्तो नि व प त्रै के वा त्रै के रा ज त म पंच रा त्रं व लि द द्या त्तो सं वे ति  
 सा ग्र ही ॥ अत्र वलि दाना दि षु मे त्रा यं त्रा दि विशेषा अत्र म दिव स गृहीत वाल्य ह हरो क्रायाद्या ॥ इति नवम मास  
 ति नवम वर्षे गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम दिव स गृहीत वाल्य ह हराणि ॥ अथ नवम मास गृहीत वाल्य ह हराणि ॥

सर्व

के कुमार तंत्रे ॥ नवमे षड्विसे मासे द्वायने वापि वालकां गृह्णात् ॥ नानी घृतना तदंकरं ॥ १ ॥  
 सनी ध्यानं का सञ्चा सञ्च निद्राया गात्र तंग्र प्रलक्ष विज्ञान्ये तानि ॥ सका प्रस्य मात्रेण ॥ न विनिर्मा  
 या च सुत्रे को ईदं न मत्पमां संवपपटी ॥ अद्वापो लिकां निश्चिपे ॥ न भाया सुश्रु ॥ संवलि शिदिशि ॥ ॥  
 अरमंत्रः ॥ ॥ इतमो तगवते वासुदेवाय ॥ कृष्ण मंडले वलिमा दीयद न सं ॥ ॥ इफ इत्ये ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 नमासा दिष्ट गृहीत रतना हरो कात्रो शं ग सु न मिया दिका द्विया ॥ शं ॥ ति ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 मासवर्षे सुगृहीत वालय हरण ॥ ॥ त ॥  
 दनि यज्ञाति वालकं रोदनाय ही ॥ तद्वेद्या कास नं च्राससौ गंधं नील वर्णता ॥ कुशो यास र्जं सि हार्यं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 वेन धूपयेत् ॥ सधो मुंचंति सा देवी प्राक्का एते दिनय हा मत्पमां स सु रा सु कं स त्रा ता सं वलि हर वा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 शदिने कुया वि दिष्ट क दिका क्रिया ॥ मत्पमां स इत्या दिनाय ड कं तत्सर्वा सां ता सं व्रथमा दि व्रथमा त्रा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 दीनां यहाणिसा धरणं ॥ यत्र सु विशेषतो सिहितं ॥ तत्र तदेवा अत्रापि लेपना दिष्टु प्रथम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

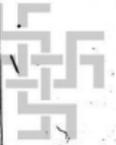
३१

लयद हरो क्ता मंत्रा दि विशेषा श्रया हा ॥ क्रिया काल गुणो तरे तु लेपन द्रव्येषु वाम धिक म सि श्रया ॥ ध  
 पा दो विशेषा द शितः ॥ धूपये नि वपत्रेषु मां स्या वै लहा या सह सा गो द वा त्र मा टणां मशनं को द्रवी  
 दने ति ॥ ॥ सा गो वलि ॥ ॥ नारायणी ये व लो विशेषः ॥ वालं च नि व लि च नि र्द रे ला ज कुल्मा ष वर को द न  
 प्रया वत्रयो दशाहः स्या देवं च पादिका क्रिये ति ॥ ॥ इति दशम दिवस गृहीत वालयद हरस्य ॥ ॥ अथ द  
 शम मास गृहीत वालयद हरस्य ॥ ॥ प्रयोग सारो ॥ ॥ दशमे मासि र्गृह्णाति वालकं ता पसी य ही ॥ तत्रे च हा  
 रद्वेषा क्षिमी लन म्पा पी तर को द ना प्रप मत्पमां स सु रा स वै ॥ पिष्ट धं टाप ता का स्या मु दी च्यो वलि मा ह रे  
 वां म्प ॥ ॥ स मये त्त वत्र तो छं स ति प्रा य ही ॥ पिष्ट म्प यी धं टाप प्थ मयी प ता का वा ॥ क्रिया काल गुणो तरे तु  
 ता म सी ति य ही ना म धे यो शि षं समा नो अत्र व लि दाना दि मंत्रा यं वा दि विशेषा श्र प्रथम दिवस वालयद  
 हरा क्रो या हा ॥ इति दशम मास गृहीत वालयद हरस्य ॥ ॥ अथ दशम वर्ष गृहीत वालयद हरस्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
 प्रयोग सारो ॥ ॥ दशमेशं वत्सरं वा लं देव हनी र्गृही स्मृ ता ॥ ॥ गृह्णाति किल तत्रे चारत वालान संव

नां विष्णुसर्ववनें श्रीडाहसेनं चरुद्विज्ञां धर्मयामा निवचनेनेत्रे गोग्रसादनसादापानसनप्रदानिपुरा  
लापने तथा कोद्वेदोदनकुस्मापपोलिकादधि मोक्षोस्विन्नमत्स्याऽमिषापितैः साद्वैरक्रान्तसाधनेः स्वा  
समारप्रसूते अत्रिसंध्रवलिमाहरेत्वा इषुवशवियोजश्राद्धश्वालिकेखादा। मंत्रेणानेन उड्यत्प्रवैव  
मुंचति यद्दी। प्रवैवत्रा विरात्रं पंचरात्रं वा तिलैः उड्यत्प्रवैव। क्रिया कालगुणैश्चरो ॥ पश्चिमीसानिमत्स्या  
श्वस्त्रिका कोद्वेदोदनघादधि कुस्मापलाजां श्वस्त्रकापोलिकोस्तथा। कर्बीरस्पुष्पाणि। पयं कुं  
ममेव चातगरं गुणैश्च पनवं कुं कुं कुं ममेव चातगरं गुणैश्च पनवं कुं कुं कुं ममेव चातगरं गुणैश्च पनवं कुं कुं कुं  
गेन तिलतेलेन दीपकां अनेनैव विधानेन दिनं मुंचति वालकं अत्र होमे मंत्रविशेषा विधानाद्दोमय  
तिरिक्तेषु वलिदानादिषु मंत्रास्तथायं त्रादिविशेषा अथ मयदिवसगृहीतवालयदहरोक्तग्राह  
॥ इति दशमवर्षगृहीतवालयदहरोक्तग्राह ॥ अथ दशमदिवसमासवर्षगृहीतवालयदहरोक्तग्राह ॥ रावण  
सुतप्रोक्तं सुक्तमारतंत्रे ॥ दशमदिवसमासे हायने चाथवालकां धत्तनोरिवती नाम्नी गृह्णीयाद्वालकं

३१२

ततः इतरद्विश्वासकसोश्चलेनेमेतदिगितां अन्नद्वेषश्चतत्रायं वदिर्दिया विचक्षणोः प्रस्थप्रमाणपिष्टे म  
विकोपरिकल्पतां ॥ अर्घ्यो गेलेख्ये इलिविचके पीकं टके सता ॥ यडोदनं अमर्षिभ्रुजानां पंचविंशति ॥  
स्वस्त्रिकानो प्रदीपापानो पंचविंशतिरेव च। चत्वारिंशत्सुष्पाणि ये तदक्षिणदिशु विसेध्यात्रयेव द्दमा  
मंत्रेण श्रावनिनिष्पेत्वा। ईं नमो तगवते वासुदेवायाह नहनं कुं फदस्वाहा। ध्रुवो त्रगोष्टं गल्लुनमिति  
इसादिकश्च सुत्र्येदिसमासवर्षादिषु गृहीतप्रतनाहरोक्ता एव ग्राह्याः ॥ शोतिस्वानं ब्राह्मणतो जने  
तुअथमदिवसमासवर्षगृहीतप्रतनाहरेषु दृष्टव्यम् ॥ इति दशमदिवसमासवर्षगृहीतप्रतनाह  
रोक्तग्राह ॥ निवृत्तादि साधिकारः ॥ तस्मादेकादशवर्षगृहीतवालयदहरोक्तग्राहकर्मण्यति सिध्यते ॥ त  
त्रैकादशमासगृहीतवालयदहरोक्तग्राह ॥ अथैकादशवर्षगृहीतवालयदहरोक्तग्राह ॥ अथोगसरो ॥  
वर्षाण्येकादशवालयदहरोक्तग्राहतिवालिकाकासश्चासाद्विरोगश्चकाकारावश्चतद्गुणापोलिकायुडकु  
स्मापशङ्कुलीशोकमोदकैः। पक्वमत्स्याऽमिषशीरसंयुक्तं वलिमाहरेत्वा विरात्रं निवसिद्वायं द्वैपानु



तिसप्तही ॥ क्रियाकालगुणोत्तरे तु वलिदाने मञ्जुति मते लेन दीपश्चेत्यं विशेषां अत्र वलिदानादिषु  
 मंत्रां यंत्रादिविशेषां अथ प्रथमदिवसगृहीतवालयदहरोक्ता एव याद्याः ॥ इति एकादशवर्षगृहीत  
 वालयदहरो ॥ अथ एकादशदिवसमासवर्षे सुगृहीतघृतनाहरो ॥ रावणसखप्रोक्तो कुमारतंत्र  
 त्र ॥ एकस्मिन्दिने मासे वर्षे वा घृतमात्रिकां गृह्णाति वालिकं पञ्चाशद्द्वारस्य प्रजापतेः अत्र द्वेषो  
 मुखोत्रो प्रोगात्रसंगश्च रोदना ऊर्ध्वं दृष्टि रपीत्येतत्कुरुणेतद्गृह्णात्तिसोः उत्रिकां माषपिष्टेन रितोश्च  
 कृमोदनम्रां शुष्णां पपिच सुकानिध्वजानां पंचविंशतिः स्वस्तिकानां प्रदीपानां पंचविंशतिमेव च ॥  
 एतत्सर्वं यमाशयां संभ्रायां घातरोदरेत् ॥ अत्र मंत्रः ॥ उं नमो नगवते नारायणाय ॥ चंद्रहास  
 वद्धस्त्राय हनडुप्रदाय ॥ श्रीं फट् स्वाहा ॥ धूपसुगोष्ठं गलसुनमित्यादिकश्च त्र्यं दिवसमास  
 वर्षे सुगृहीतवालयदहरोक्ता याद्याः शान्तिस्नानं ब्राह्मणसौजन्यं प्रथमदिवसमासवर्षे सुगृही  
 तघृतनाहरोक्तं द्रष्टव्यम् ॥ इति एकादशदिवसमासवर्षे सुगृहीतघृतनाहरो ॥ अथ द्वादशदिव ३१३

समासवर्षे सुगृहीतवालयदहरो ॥ तत्र द्वादशमासगृहीतवालयदहरो ॥ प्रयोगसारोऽहदमेमा  
 सि गृह्णाति वालिकं वालिकाप्रहीतत्रेष्ठारोक्त्वा सन्नोदनानियथोदिता तथ्यात्र तिलकुंदायमो  
 दको नैर्धर्निहरोत्वा मध्याह्नसमये वाच्यं हि शिशुं वतिसप्तही ॥ मासिकास्येयहाः प्रोक्ता इति मंत्रादि  
 र्घकांतिनां युथेदिते द्रव्येर्धर्निहर्त्वा विधमनतः शीरश्च कृणायनास्नापयेत् तत्र शान्तयो नारायणाय  
 क्रियाकालगुणोत्तरे च पलेतियहीनामावलो त्तिलघृतं सप्तपक मिति विशेषः ॥ अत्रापि वलिदानादिषु  
 मंत्रां यंत्रादिविशेषां अथ प्रथमदिवसवालयदहरोक्ता द्रष्टव्याः ॥ इति द्वादशमासगृहीतवालयदहरो ॥ राव  
 णसखप्रोक्तो कुमारतंत्र ॥ द्वादशदिवसमासवर्षे वा घृतनाशिखीं अङ्गुताख्यां पृष्ट्वा तिहरोत्वा सत्र  
 मंततः रोदनं वादनं देतस्वादमंनेत्रककथा ॥ रोमां च स्नापयेत् सैतदखिले तस्य लक्षणं तंडुलप्रस्थपि  
 ष्टेन कृत्वा तत्राय उत्रिकां त्रयोदशस्वस्तिकां वधजादीपां अयोक्ताः अथ पामत्पमो सं च तथाप्यंदि

कात्रपि एतत्सर्वं दक्षिणस्यादिदिशि मंत्रेण निश्चिपेत् ॥ मंत्रस्तु ॥ ॐ नमो रावणाय प्रहलदहलद्वया  
 यहनहनशोषयशोषयमर्हयमर्हयपातयपातयहंङ्गेहनहनदंनदुष्टमत्वानीङ्गेफइखादा ॥ ॥ इ  
 पशोतिस्नानं ब्राह्मणो जनं वैकादशदिवसमासवर्षेष्टुहीतप्रतनादरोक्तानिदृष्टयानि ॥ इति द्वादश  
 दिवसमासवर्षेष्टुहीतप्रतनाहरम् ॥ निवृत्तौ मासाधिकारः ॥ तस्मात्त्रयोदशवर्षेष्टुहीतवाल  
 यदहराणिकर्माण्यनिश्चिदंते ॥ तत्रत्रयोदशवर्षेष्टुहीतवालयहहरविधानम् ॥ प्रयोगसारी  
 वर्षेष्टुहीतवालयदीष्टकृति यज्ञशिपीतत्रेष्टा किल कुरुलक्ष्मणरोदनदासनमाशाब्द्यावनसुरा  
 मांसमत्स्यकुल्माषपायसौः दद्यात्सक्तशरांशो क्रमध्याक्ते त्रिदिने वलिं । पिवेत्वास्यां ज्येष्ठ्याप्येत्  
 तोषं चंति सायही ॥ क्रियाकालगुणोत्ररेचपलोपायसंज्ञाजगेषुष्याण्यपि वैति विशेषमतिश  
 यस्नापनपंचसंगेन तिलतैलेन दीपकमिसुकुम्भमंत्रयत्समानं अत्रापि वलिदानादिषु मंत्रायंत्रादि  
 विशेषप्रथमदिवसष्टुहीतवालयहहरविधानं ॥ इति त्रयोदशवर्षेष्टुहीतवालयहदस्म ॥

अथ चतुर्दशवर्षेष्टुहीतवालप्रददस्म ॥ प्रयोगसारी वर्षेष्टुहीतवालश्रद्धदानामतोयहीष्टकृति  
 चेष्टातत्रस्याहोणितश्रवणेतदाश्रुलेचनातिदेशस्यात्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ क्रियाकालगुणोत्ररे  
 सुन्देतिष्टहीनमनिवेशः शिष्टसमानं ॥ इति चतुर्दशवर्षेष्टुहीतवालप्रददरविधानम् ॥ अथप  
 चदशवर्षेष्टुहीतवालप्रददस्म ॥ वर्षेष्टुहीतवालयदीष्टकृति यज्ञशिपीतत्रेष्टा किल कुरुलक्ष्मणरोदनदासनमाशाब्द्यावनसुरा  
 हरोनिद्राविद्वेष्टताकुल्माषकृशराष्टपपोलिकापायसाः सवैसफल्युलो वलिदद्याविरात्रं च  
 पिष्टपयेशचंदनेनाज्यसंयुक्ततोषं चंति सायही ॥ क्रियाकालगुणोत्ररे ॥ इति पंचदशव  
 र्षेष्टुहीतवालप्रददस्म ॥ प्रयोगसारी ॥ कपीपंचदशवर्षेष्टुहीतवालकंसदा ॥ तथाष्टुहीतमा  
 त्रस्तुत्समापतवृनिःश्वनः ॥ हरेश्चजायते तत्रोनिद्रास्यंतं प्रजायतोपायसंज्ञाशरांसां कुल्माषं  
 वसुराः सवाष्टपकापोलिकांश्चैव षष्पाणि पांडुराणि वाऽस्नापनपंचसंगेन घृणमंमत्स्यकुल्माषादि  
 नत्रयप्रदोषेत्तु वलिदद्याद्विचक्षणः ॥ अत्र वलिदानादिषु मंत्रायंत्रादि विशेषप्रथमदिवसष्टु

हीतवालप्रदहरोकोविज्ञेया ॥ इतिपंचदशवर्षेष्टहीतवालप्रदहरमा ॥ अथजोडशवर्षेष्टहीतवालप्रद  
 रमा ॥ अथयोगशारे ॥ जोडशेवत्सरेवालंयदीष्टज्ञातिवृद्धेया तत्रेष्टादसनेकं पोयास्यमीतिवृद्धेयुक्तं  
 कुल्माषंशरारुपतिलपिधानफल्युषैः दधानासद्वलिदद्यात्साद्योदिशिदिनत्रयं धूपयेन्नेखगोश्रं  
 गंलसुनेमुंचतिग्रही ॥ नारायणीये ॥ ध्वनिंतिग्रहीनामवलिदानकालोमध्याह्ने धूपयेन्नेखगोश्रंगेशितिव  
 शेषाक्रियाकालयुगात्रेः कुमारीधनदानमष्टशेषादशवर्षिकः ॥ तथाष्टहीतवालस्पविकाराणिनि  
 वोधमोहसतेवदिवारात्रोमुंचामीतिवद्वतः ॥ उद्वेजयतिगात्राणिसदतेचसुद्धसुद्धेः उद्वेगंनंकरारामा  
 संतिलपिहंघट्टकाः दधिकुल्माषकेशिबुगंधुष्य्यालिहाप्येत् ॥ धूपयेन्नेखगोश्रंगेनगोश्रंगेननखेनच  
 न्नापनेंपंचतंगेनतिलतेलेनदीपकशाष्टुर्वादिशंसमाश्रित्यमित्रसन्नहवियदादिनात्रिणिमध्याह्नेव  
 लितस्पप्रदाययेत् ॥ अत्रपिवलिदानादिषुसंत्रयंत्रादिषिशेषाष्टमदिवस्यष्टहीतवालप्रदहरो  
 काएवग्राह्या ॥ इतिजोडशवर्षेष्टहीतवालप्रदहरमा ॥ अथसप्तदशवर्षेष्टहीतवालप्रदहरमा ॥

॥ अथयोगशारे ॥ ॥ वर्षेसप्तदशवालंयदीष्टज्ञातिवालकात्त्रापिचेष्टादृष्ट्याद्वर्षेगवककंपकांका  
 शश्रासौचविज्ञेयोतत्रनास्तिप्रतिक्रिया ॥ संवत्सरयहाद्येतेकुमारीपदष्टके ॥ क्रियाकालयुगात्रे  
 एकालिकैतिग्रहीनामथेयो ॥ अत्रपिष्टसमानं ॥ इतिसप्तदशवर्षेष्टहीतवालकप्रदहरमा ॥ समाशा  
 निवदिनंमाससंवंधीनिग्रहदराणि ॥ अथवालकाविकारश्चदिनमासवर्षविशेषादिविकारपरित्यागेन  
 वयदहराणि ॥ कर्मोपपत्तिधीयते ॥ तत्रकर्मविपाकसमुच्चये ॥ अदृष्टदंडनाडाजोदंडमनामप्युदंड  
 नात्वाजमातरेसंकलितोमहाप्रतनयासवेराततो ॥ स्वितिसारीसवतिवलिहैयः प्रशांतैयोतिलपिष्टहरि  
 दानंदधिसंगंधः सकांवनत्राष्टुर्कुंलइतिलेषवलिरत्रप्रशस्यतोप्रदोषेनुतर्ही ॥ डागस्यसेतोदद्याद्विचह  
 ए ॥ अत्रमंत्रा ॥ नीलांबरधरधरेदेविप्रतनेविकृतानने ॥ शिशुविकारानुंचाद्यष्टज्ञाधवलित्विमां  
 इतिमहाप्रतनारख्यवालप्रदहरमा ॥ अथसप्तदशवर्षेष्टहीतवालप्रदहरमा ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ ॥ क्राव  
 यन् ॥ अन्योद्देशेनदत्रस्यवलेह्यारसकं ॥ समुद्रप्रतनाम्नी ॥ अष्टौष्टज्ञातितच्छृणात्प्रतोखपलप्रहृतेगि

निशिजागर्त्रिरोदतिप्रतीशारीसतवतिप्रद्विक्रं वलिमाहरेत् ॥ प्रवेकिसमनत्रमाह ॥ प्रतनारम्यदहरे  
 क्रमा ॥ इतिसमुद्रतनाक्षम्यदहरेत् ॥ अथप्रतनाप्रदहरेत्शाकायायणः ॥ अथप्रतिमालिनास्त्रीम्यथ  
 नेनिर्जनस्थलेस्वपतंष्टतनानामयदोयुक्तातिवालकम् ॥ ततोदिक्काउक्काउतश्चासीत्तनद्वेषीचक्रं  
 वासुधेदेनश्चप्रजायेतनिशिजागर्तिसेरुदरास्वपोदवारोमहर्षीवध्याम्यासचशोषवात्रजायतेः सुहरे  
 गाचवलिदेयोः त्रशांतयोक्तागाराभेष्टकृतः सहेमखिलदृष्टकं ॥ अतोगंधश्चउष्पाणिघृणादीपाक्यं  
 लिवलानांकीडणंस्थानेदेयोमंत्रेणमंत्रेण ॥ नीलांबरधरेदेविष्टतनविकृताननेशिष्टविकारमुंच  
 यप्रष्टकीश्वलिंविमं ॥ इतिप्रतनाप्रदहरेत् ॥ अथप्रकारोः ॥ तरेणमहाष्टतनामयदहरेत् ॥ क  
 र्मविपाकसंयदे ॥ ताडितः सन्यतेघसुहृदीवियःपतेदमुंवालेमहाष्टतनाख्यागुक्काययसमहरे  
 जागर्त्रिचयमीश्विवारात्रोस्रनंसुकेश्वव्यपिकासन्निरोगीसवतिप्रतिगंधश्चजायतेः अन्मोसंवरतां  
 वगंधउष्पाणवाससी ॥ घृपदीपोदिरण्येनयुक्तःपेणघटस्थथासुहृद्वहस्पष्टलेतुवलिमंत्रेणनिशि

पितृकारलेत्रेडिकामंडेकजायंकरणीरकाउष्टतनादिप्रिप्रष्टकीयावलिखिमं ॥ इतिप्रकारोः ॥ तरेणमहाष्टतनाप्रद  
 हरेत् ॥ अथोद्विष्टतनामयदहरेत् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ नेताठदिनातयः ब्रह्मंनिकुर्यादन्यजन्मनितंघृष्ट  
 नानात्रीवास्तेसंक्रमतेग्रहःततोहरीवाक्षिरोगीसनिष्टेदशदिवासवेशाविनिशोपनिवायांतुकासयुश्चप्रजा  
 यतोऽन्नमोसं वसधिरं वस्रं क्रवचंदनमासदिरण्यः सर्णकुं ससु सुहृदीलेनिशामुखेदद्यादनेनमंत्रेणसु  
 तक्रेशोतयोत्वसुहृष्टतनेदिप्रिप्रष्टकीश्वलिंविमं ॥ शिष्टविकारामुंचाद्यश्चतदरेकदरीना ॥ इत्सुहृ  
 तनाहरेत् ॥ अथवालकारमयदहरेत् ॥ कर्मविपाकसमुच्चय ॥ अतोस्वदारागमनं कृत्वाचानादिवर्ज  
 तः अतोशोचदीनः सत्रस्वपेज्जनांतररुतोवाल्पीयदः संक्रमतेवालकाव्योमहाप्रदः ॥ ततपद्मासिघातीम्या  
 इकनेत्रश्चजायतोपायसंसकृवीमेस्वकुंकुटश्चागलोदितः ॥ रक्रवखं रक्रगंधोरक्रउष्पाणियेषवदि ॥ घृ  
 पदीपोदिरण्येनयुक्तः ॥ एतघटस्थथा ॥ एतघटस्थशुलेवायत्रकुत्रापिचाक्षिपवो ॥ अथप्रष्टकी  
 वलिंचेमंवालकारममहाप्रदः ॥ शिष्टविकारामुंचाद्यकुमारस्यप्रियतनी ॥ इतिवालकारमयदहरे

यः अथरेवतीयदहरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ कात्यायनः ॥ दृषणेर्ध्वर्द्धिर्दुर्कंगंभविस्त्रिलं कृतो वा  
 कंरेवतीनाम्नीयदः संक्रमतेततः अथवाः श्रीधनयादीकुडंवायेदनेवलाव्यसंजन्मानरेवान्नाः अह  
 र्दृक्तीतिरेवतीहरिश्रद्धविष्विप्रीपीतस्फोटीचनायतेअभिदग्धाः कृतिस्पोयसवेदुर्ध्वततः अनां निरेत  
 रं प्ररुद्याच्चवलिर्द्वयोः प्रशांतयोपायसाष्टपतीनाश्चसकवोगंधएवचौषध्याणिधूपदीपोचमांसकानोचग  
 र्दितः ॥ अर्षकुं चश्चनद्यावागोपोतायविनिक्षिपेत् ॥ अत्रमेव ॥ चित्रंवरधरेदेविचित्रमात्प्युत्तेपनेवत्तु  
 उतरत्नीयेरेवतीमंडलप्रियो ॥ अहंकारघयेदेविमात्रिकायदरूपिणी ॥ शिष्टं विकारान्मुंचान्यरेवतीप्रिय  
 दृषणे ॥ इतिरेवतीयदहरम् ॥ अथप्रकारोत्तरणरेवतीयदहरम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ संध्याकाले  
 मयानंतसुच्छिष्टंमूर्द्धजांरेवत्याख्यसंक्रमतेतत्कृणाद्वालकयद्मत्रास्पशोषातवेन्नस्पदाहः कं पृथ्वममि  
 णिकृत्तवर्षश्चनयेतवलिर्द्वयोः प्रशांतयोलातपायसंसर्पिकुडुकेमेष्णाववारकवस्त्रंरुद्रगंधः प्रष  
 कुंतः सकाचनीवटस्पष्टलेशम्यात्राप्रदीपनिक्षिपेद्दलिं ॥ अत्रमेव ॥ चित्रंवरधरेदेविचित्रमात्प्युत्ते ३७

लिपनः शिष्टं विकारान्मुंचाद्यरेवंतिबं महायदः ॥ इतिप्रकारोत्तरणरेवतीयदहरम् ॥ अथषष्परवतीयदह  
 रम् ॥ कर्मविपाकसमुच्चये ॥ कात्यायनः ॥ दृमौ अयानं संध्यायां निद्रितं पुष्करेवती ॥ यदः संक्रमतेव  
 लंतेनागेशीततात्तवेवाअशपस्पशोषश्चदादश्चकंपस्यादेगुलीखुवांनरेवसुकृश्वर्षत्वंदातमः शोक्त्या  
 दलिः मधुमुक्तं पायसं व्रगंधुष्पाणिसासमीधूपदीपोहिरण्येनसुकः प्रषधटसुथासुष्पायतनंकापित  
 लिंमंत्रेणनिक्षिपेत्सुष्पाण्यरेवतीदेविप्रदृक्तीभवलिंविमोवावलकस्यसुखंलिद्धिं प्रयच्छत्वमहावत् ॥  
 इतिषष्परवतीयदहरम् ॥ अथसुष्करेवतीयदहरम् ॥ कर्मविपाकसंयदे ॥ इमेनिपातितंवाले  
 रुदंतं ब्रह्मिंतं तथा ॥ अथसुष्कालितमात्रं चट्नीयालुष्करेवती ॥ ततोद्गरुखिशोषीहृष्टोष्पापिचक्षुष्पिः सु  
 रोगाः निरुत्तस्पमजीर्णन्युतोत्तवेवासुजांनश्चतुष्पाणिसुत्तवस्त्रादींश्चवंदनां धूपदीपसुष्कचूतदृशसुले  
 वलिंहरेत्वामलेवापनसस्यात्यतत्राः तुंमंत्रसुष्करेत्वासुष्काख्यरेवतीदेवीत्रितरूपियशाश्विनी ॥ करालव  
 दनेद्योरेप्रदृक्तीभवलिंविमो ॥ इतिषुष्करेवतीयदहरम् ॥ अथशकुनियदहरम् ॥ शकुनियह

वशिष्ठशकुनीयद्वयद्विद्विधीयते ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ कात्यायनः ॥ उच्छिष्टतोजनं देवाः स्वये  
 त्रादिकारिणः शकुनीनामष्टक्रातिततो जागृन्निशुस्विकं अपानं चरणीः तीसारघ्नसवेत्वाङ्गरीक  
 स्मृद्विर्घातरोगात्तवतिवालकाः प्रममांसंपक्वमांसहरिद्रान्नप्यातृत्तया तिलपिष्टं तथा धृपावखण्डादि  
 कंतयाः हिरण्यसहितः प्रसक्तः स्मशाने निक्षिपेद्विनिर्घोगोष्ठ्यवातत्रमंभंमंत्रमदीरयेत्प्रतृत्नीध  
 वलिं च मंत्राङ्ग्याख्यमहायद्वाशिष्ठविकारमुंचाद्यश्चतुर्गोकामरूपिणः ॥ इति शकुनीयद्वयम् ॥ ३५ ॥  
 यशिसुं डिकायद्वयम् ॥ कर्मविपाकसंग्रहः ॥ ॥ नित्यकर्मविहीनानां पोषकानां च प्रतिष्ठां ॥ ३६ ॥  
 लयमतेतद्वृणाङ्गि सुं डिकाततोरदीतिपाणी च पादोवाक्षिसकंपतेवमेहस्विजायेतातवद्वयं वलिस  
 तं हरिद्रानं तिलान् च पिष्टं चाष्टपरिकासपिष्टं विमधुचरंगं धृषण्यानिवाससी ॥ धृपदीपौ हिरण्येन यु  
 क्तः सुषुंघ्रसुयाः चरातनघटापर्षा निक्षिपेन्मंत्रतो वलिं ॥ मंत्रमाह ॥ ॥ स्वर्गं कृते रूपवतिरद्वाब्धिः शिष्टमु  
 डिकाशिष्टविकारमुंचाद्यचं डिके च यद्विक्रमः ॥ इति शिष्टमुडिकायद्वयम् ॥ इति दिवसमातवर्षेषु ३१

मन्त्रेण सामान्यमेयाग्रद्वराणिकर्मणि ॥ अथ सामान्यसोवालयहाविष्वाद्ये वा लोवालयहाविष्  
 सतिक्ताविषमद्वयक्रयोद्घर्तनाहतिशिष्टग्रहार्त्रिसप्तक्रदाः अथ मधुकसेलुपकक्रुथोपस्रप  
 रीताश्च ॥ वंशखड्गनुसंयुतेसलसुनेसाश्चिपत्रैवृत्तौ निर्मथ्यं नरकेः सार्पसुरगव्यगोरराजीतु  
 र्नामिद्यर्थे जडनिवपत्रसहिते शत्रुगाद्याजितौ धृपानात्रयमेतदाशुसकलीत्रालयहान्नासयेत् ॥ कियो  
 लयणोत्ररोधिलेपनमंत्रः ॥ ३७ ॥ शंखशवरङ्गीशंखगेश्वरशुलाः कर्षणं स्वाहा ॥ अत्रिषेचनेमंत्रः ॥ ३८ ॥ नमः स  
 ॥ हृणाहृदये मोदयस्ते नरकटशफोटयस्सरश्चक्रश्चकेदयश्चिविकत्सयश्चोदयस्मोदयश्चवंसि  
 शोत्रापयतिज्जश्चस्वादानिर्हंसेकुरुवालकंवालिंकंवा ॥ अथ धृपमंत्रः ॥ ३९ ॥ वासेडेनमोदयेत्  
 शीशप्रसरं वृद्धयद्दरं क्रूरतया गच्छं क्रूरघकायवस्वरस्थानं तु सिद्धसुद्रोत्रापयतिस्वाहा ॥ इति  
 लयहसाधारणाश्रुतेपनेनानघृपमंत्रः ॥ समाप्तमिति ॥ ३९ ॥ संस्रणं सकलकर्मविपाकसंग्रहं समाप्तं ॥  
 हास्यव्याख्ये महिते प्रबंधे मां धातवनामोर्मदनात्मजस्य ॥ सकर्ममालिकागणैतप्रहं प्रहं समसामखिल

॥ माता पुण्यवर्ति कीर्तिविलवायस्यां विकानामेतः स कल्याण  
मोयंकोशिकटं रूपमणिः प्रसद्विश्वेश्वरो वेदस्मात्तमनेनसे  
प्रांशास्त्रेप्रकर्ति मणीव्याव्यवहृतिपराशीलं प्राद्यंजर तिस्रंजव  
तलवृतेस्त्रितिमियादियं व्यासारण्यः प्रवरमुनिशिषिष्यज्जा  
एतकद्वारमलेत्यादिविरुदराजी विराजमानश्रीमन्मन्पालपुत्रस्यमं  
कर्मविपाकपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ७ ॥ ॥ शुद्धमस्तु ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

त्रिगर्जन्वर्तिः श्रीपेद्दिश्व  
सपदेधाक्येकताद्द्वेते ॥  
कतिपयोचिरं चित्तंतेषां  
ने ॥ ७ ॥ ॥ इतिप्रापंडितय  
तुर्निबंधमहास्रवालिः  
७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

